वन्देमातरम्

पाली जिला स्वतत्रता सग्राम से विकास के सोपान तक

प्रेरक-प्रणेता
श्री मोहनराज जैन

सम्पादक मण्डल
डॉ जवाहरचन्द्र पटनी डॉ माधोसिह इन्दा
चन्दनसिह एडवोकेट रामलाल मोहबारशा
प्रकाशनारायण मोहनोत

सम्पादक
महेन्द्र जैन

प्रकाशक
वन्देमातरम् ग्रथ प्रकाशन समिति
बाली-306 701 (पाली-राजस्थान)

वन्देमातरम्

प्रकाशक

न्देमातरम् ग्रथ प्रकाशन समिति

बाली-306 701 (पाली-राजस्थान)

फोन 2039

1993

मूल्य दो सो रुपये मात्र

मुद्रण

मे पॉपुलर प्रिन्टर्स, जयपुर-4

मे सर्वेश्वर प्रिन्टर्स, जयपुर-3

आवरण मुद्रण

मे जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर-1

मुख पृष्ठ एवं अन्य चित्रो के आकल्पक एव रचनाकार

मोहनलाल शर्मा व्याख्याता

पो लाठाडा सादडी



मेरे प्रेरणा-स्त्रोत

गुलामी ता एक मन स्थिति की परिचायक हे पर उससे भी अधिक भयावह हे- शोषण, भय, आतक और पराधीनता से उत्पन्न दारुण निर्धनता, जो एक जीवन की ही नही पीढिया की हे, एक गाव की नहीं हजारा गावा मे फैली अधेरी झोंपडियो की हे सेकडा-हजारो गावा मे बसे उन अनाम लोगो ने, विशेषकर किसाना और पिछडी जाति के निरीह लोगो ने मुक्त भाव से जो सहन की हे, वे ही हें मेरी प्रेरणा के असली स्त्रोत। उनकी अर्न्तज्वाला ने ही इस कथानक के नायको मे गुलामी के विरुद्ध क्राति की - सघर्ष की चिनगारिया पेदा की।

ऐसी ही अर्न्तज्वाला ने पैदा किया जबाली ग्राम के मूला जी चोधरी को, जिन्होंने इन्दरवाडा मे सीना तान कर गोलिया खायीं और शहीद हो गये, देवली-पाबूजी के मास्टर रामेश्वरजी को, जो ठाकुर की पिस्तोल के सामने सीना खोलकर खडे हो गये सोजत के हरिभाई किकर को, जो स्वय अत्याचारो के विरोध स्वरूप चिता मे जल कर स्वाहा हो गये, गूदोज के रामप्रतापजी शर्मा ओर पाली के रामप्रसादजी गाधी को जिन्हे मेंने लहू-लुहान होते देखा नीमाज के क्रातिकारी माधालालजी सुथार को जिनको अत्याचारी ने भरी सभा मे पीट-पीट कर हड्डी-पसली तोड दी चण्डावल के हीरागर श्री छेलारामजी को, जिनके सिर पर जूता की मार पडी ओर हर चोट पर वे 'भारत माता की जय' का घाष करते रहे।

क्राति की वह अर्न्तज्वाला सैकडो दिलो मे धधकने लगी थी। उसकी दास्तान सुनकर रोगटे खडे हो जाते हैं। 85 वर्षीय मास्टर पूरणमलजी जब श्री छेलारामजी की दास्तान सुना रहे थे तो मेरे साथ उपस्थित जानेमाने छायाकार श्री काति राका, लेखक व इतिहासकार डॉ जवाहरचन्द्रजी पटनी, पत्रकार श्री सुभाप रावल तथा यशवन्तजी रुचिर की आखो में आसू छलछला आये थे। उसी क्रम मे बगडी की बृहद् जनसभा मे जब गोलिया चलीं तो अनेक लोग तो शहीद हुए ही, जेल मे सड-सडकर श्री मीठालाल काठेड सरीखे हानहार युवक को अपनी जान से भी हाथ धोना पडा।

मुझे आज भी आश्चर्य होता है यह सोचकर कि जब में विद्यार्थी जीवन मे अपने गाव देवली-पाबूजी मे जागीरी जुल्मो के विरुद्ध हाथ मे तिरगा लेकर लोकनायक जयनारायण जी व्यास द्वारा सिखाये गये गीत-''मत दूध लजाइ जे पाछो मत आई जे बेटा राड सू''

गाता हुआ ठाकुर द्वारा निषिद्ध क्षेत्र गोचर म गाया को चराने के लिए रवाना हुआ तो गाव के भाले भाले, अनपढ मजदूर और उपेक्षित वर्ग के बालक और बूढे स्त्री-पुरुष ठट्ट के ठट्ट वही गीत गाते हुए मेरे साथ हो गये थे। जागीरी जुल्मा के विरुद्ध उठी यह आवाज असाधारण थी, उत्प्रेरणा से ओत-प्रात थी और वही शक्ति थी जो दारुण कष्टा मे भी एकजुट होकर आजादी मिलने तक सघर्ष करती रही।

ये तो कतिपय छुटपुट उदाहरण हैं जो प्रेरणा बन कर उस समय यहा वहा उभरे थे। वस्तुत अन्याय और शोषण लाग-बाग और बैठ-बेगार तथा बेदखलिया का इतिहास तो बहुत लम्बा है। 'उछाला' और 'गधारोपण' जैसे क्रूर आदेश मिलने पर ता खेत-घेर मकान-जानवर माल-असबाब आदि सबकुछ छोडकर सेकडो परिवारा का गाव छाडकर अनजानी दिशाआ मे पलायन करना पडा था।

काग्रेस के रूप मे पाली जिले के गाव-गाव म जाकर तथ्य एकत्र करने का अवसर तो मुझे मिला ही था पर इस ग्रथ के लिए सामग्री सकलन का यथेष्ट कार्य किया ह ब्लाक और तहसील स्तरीय सयाजका ने जिसका सम्पादक मण्डल के सदस्या ने जाचा, परखा ओर सवारा हे। फिर भी एक कमी मुझे हमेशा खटकती रही है और रहेगी कि बावजूद अथक प्रयत्नो और पत्र व्यवहार के भी बहुत सी अमूल्य जानकारी, चित्र आदि मुझे उपलब्ध नहीं हो पाये। मुझे विश्वास ह इस कमी की पूर्ति मेरे अन्य इतिहासकार साथी अवश्य करेगे। प्रस्तुत ग्रथ के पीछे मेरे प्रेरणा-स्रोता की अटूट शृखला रही हे तो इसमे सकलित सामग्री का एक प्रमुख उद्देश्य भी यही रहा है कि हमारी भावी पीढी का अन्याय आर शोषण के विरुद्ध निर्भय होकर सघर्ष करने को उद्दाम प्ररणा मिल सके। मेरा विश्वास हे यदि यह सम्भव हुआ तो भारत का भविष्य सुखी, समृद्ध और गौरवपूर्ण होगा।

'वन्देमातरम्' का समर्पण इस ग्रथ के प्रेरणा-स्रोत उन अमर शहीदा और स्वतत्रता सेनानिया को पूरा श्रद्धा के साथ करता हू जिनके महान् त्याग कठोर तपस्या एव यशस्वी बलिदान के फलस्वरूप गुलामी की शृखलाआ मे जकडी जनता को सदिया बाद निरकुश शासन ओर सामन्ती व्यवस्था की क्रूर प्रताडनाआ से मुक्ति मिली।

आर, अन्त म कविवर माखनलाल चतुर्वेदी की इन पावन पक्तिया के साथ में अपने भावा को विराम देना चाहूगा

चाह नही मै सुरबाला के गहनो मे गूथा जाऊ
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिध प्यारी को ललचाऊ !
चाह नहीं सम्राटा क शव पर हे हरि डाला जाऊँ !
चाह नहीं दवा क सिर पर चढू भाग्य पर इठलाऊ।
मुझे तोड लेना वन माली उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढाने जिस पथ जाए वीर अनेक॥

❑ मोहनराज

सम्पादकीय

राजस्थान का इतिहास शौर्य, त्याग और साधना का इतिहास है। यह वीर भूमि अपनी यशस्वी ऐतिहासिक परम्पराओ मातृभूमि की रक्षार्थ अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले वीर सपूतो तथा भोली-भाली जनता द्वारा किये गये उत्कट सघर्षो के लिए विश्व-विख्यात है। अत यह कहना गलत नहीं होगा कि राजस्थान के इतिहास की गौरवमयी गाथा के अभाव मे भारतीय इतिहास का ज्ञान अपूर्ण ही होगा।

'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'-लोकमान्य तिलक के इस उद्‌घोष ने भारत की आजादी के युद्ध मे एक नया जोश पैदा कर दिया था। देश के कोने-कोने मे स्वतत्रता-सग्राम मे उतरे हजारो-लाखो क्रान्तिकारियो की भाति पाली जिले के सैकडो वीर सपूतो को भी आजादी की चाह ने त्याग और बलिदान हेतु प्रेरित किया। उन वीरो की यश गाथाए आज भी चारो ओर प्रेरणा-दीप की भाति जगमगा रही हैं।

सन् 1857 के प्रथम स्वातन्त्र्य युद्ध मे पाली जिले की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी, जहा आऊवा के ठाकुर खुशालसिहजी ने अग्रेजी फौजो के विरुद्ध कडा मोर्चा लिया और उसे हरा दिया। इस विजय की गूज "झले आऊवा" नामक लोकगीत मे जिले के हर गाव मे सुनी जा सकती है। मारवाड का 'मानखा' प्राचीन काल से ही अपनी आन पर अडने वाला तथा प्राण न्योछावर करने वाला रहा है। श्रम और साहस उसके जन्मजात गुण है। धुन का धनी, वचन का पक्का, भयकर से भयकर मुसीबत और प्रलयकारी तूफान से जूझते रहना तथा जुझारू की तरह हसते-हसते प्राण दे देना उसकी प्रकृति रही है। सामती जुल्मो दमना और अत्याचारो के विरुद्ध शोषण के शिकार उन भोले-भाले किसानो तथा गरीब वर्ग के लोगो ने विरोध स्वरूप अनेक 'उठाला' आयोजित किये थे। वे अपने खेत, बेरे, मकान माल-असबाब आदि सब कुछ छोडकर 'गधारोपण' की रस्म अदा करते हुए, धन-धान्य उत्पादन के साधनो को निष्प्रभावी करते हुए रजवाडे की सीमा से बाहर अनजानी राह पर कूच कर जाते थे। वे अन्याय के आगे झुकते नहीं थे अपितु आततायी को घुटने टेकने पर मजबूर कर देते थे।

पाली जिले के अनगिनित ग्रामो में हुए इन्हीं सघर्षो के ऐतिहासिक आकलन एव सर्वांगीण विवेचन का एक विनम्र प्रयास है- **'वन्दमातरम्'**, जिसमे स्वतत्रता आन्दोलन समाज सेवा, नवनिर्माण एव विकास की गाथा को पाँच चरणो में गूथा गया है। ये पाँच चरण हैं 1 क्रान्ति चरण, 2 सेनानी चरण, 3 सेवा चरण, 4 विकास चरण तथा 5 अशेष चरण।

'क्रान्ति चरण' मे पाली जिले के तत्कालीन सामन्ती शासन व परतत्र भारत मे पीडित जनता की करुण कहानी है। जिसमें एक ओर उस क्रूर युग की भू-व्यवस्था, लगान, लाग-बाग, लाटा-कूता, बेठ-बेगार आदि की बानगिया हैं तो दूसरी ओर गाव-गाव मे घटित क्रान्ति की लोमहर्षक घटनाओ का चित्रण हुआ है। आजादी के आदोलन मे अहिसा की डोर पकडकर बढने वाले गाधीजी के अनुयायियो की भी पाली जिले में एक लम्बी फहरिस्त है, जिन्होंने स्वतन्त्रता के बाद बद्धमूल सामन्ती व्यवस्था तथा अग्रेजो की दमन नीति का डटकर विरोध किया तथा अनेक शारीरिक, मानसिक एव आर्थिक यातनाए

सहीं। इन सबका विवेचन किया गया है-'पाली जिले में स्वतत्रता आन्दोलन के बढते चरण' नामक अध्याय मे और इसी प्रकार रोगटे खडे करने वाली जानकारी देता है, 'ऐसा भी जमाना था ' नामक अध्याय, जो स्वय ग्रथ के प्रेरक-प्रणेता श्री मोहनराज जी की लेखनी से नि सृत है।

'**सेनानी चरण**' मे पाली जिले के सेनानियो के जीवन-वृत्त हैं, जिनमें उनके द्वारा स्वतत्रता आन्दोलन मे किये गये योगदान, उनके व्यक्तित्व तथा सघर्षमय जीवन से जुडे प्रेरक घटना-प्रसगो का विवेचन है। 'सेनानी चरण' को पूर्णता प्रदान करने की दृष्टि से जिले के राजनैतिक कार्यकर्ता एव जन प्रतिनिधियो के सक्षिप्त परिचय भी दिये गये है जो स्वतत्रता सग्राम से लेकर नव निर्माण के सहयोगी-साक्षी रहे हैं।

जिले के सामाजिक विकास एव जन जागृति मे सेवाभावी सस्थाओ और व्यक्तियो का विशेष योगदान रहा है। '**सेवा चरण**' के अन्तर्गत जिले की प्रमुख समाजसेवी सस्थाओ, प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ताओ तथा युवा प्रतिभाओ की चित्रमय झाकी प्रस्तुत की गयी है । '**विकास चरण**' प्रारम्भ होता है- जिले के प्राचीन वैभव, सास्कृतिक सम्पदा एव साहित्य-सृजन परम्परा के सचित्र विवरण से, जिसमे उद्योग, कृषि शिक्षा, स्वास्थ्य, सिचाई, सहकारिता आदि के क्षेत्र मे हुयी विकास-क्रान्ति के विविध सोपानो का विवेचन है।

'**अशेष चरण**' मे जिले के महत्वपूर्ण आकडे, ग्राम और नगरो के नाम जनसख्या तथा अन्य उपयोगी सूचनाए दी गयी हैं। ग्रथ के अन्त मे जिले का मानचित्र देकर इसको और अधिक उपयोगी एव सग्रहणीय बनाने का विनम्र प्रयास किया गया है।

'**वन्देमातरम्**' के निर्माण का मूल उद्देश्य जहा एक ओर भारतीय स्वतत्रता आदोलन मे पाली जिले का योगदान एव स्वाधीनता सेनानियो का परिचय देना रहा वहीं दूसरी ओर जिले के ऐतिहासिक एव भौगोलिक महत्व को रेखाकित करते हुए यहा के सामाजिक सास्कृतिक धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक पर्यटन कला एव औद्योगिक क्षेत्रो मे हुयी प्रगति का सचित्र विस्तृत लेखा-जोखा प्रस्तुत करना भी रहा है। यह कहे कि हमने 'वन्देमातरम्' को पाली जिले का एनसाइक्लोपीडिया बनाने का विनम्र प्रयास किया है । हम अपने उद्देश्य में कहा तक सफल रहे हैं, इसका निर्णय तो इतिहासविद् एव सहृदयी पाठकगण ही करेगे।

ग्रथ की सामग्री का सचयन साधारण कार्य नहीं था । जिले की युवाशक्ति से लेकर बडे-बुजुर्गो तक ने इस कार्य मे पूरी रुचि के साथ योगदान किया है। और, उन समस्त प्रतिभाओ को एकजुट करने का श्रेय है जिले के प्रखर स्वाधीनता सेनानी, युवाहृदय कर्मयोगी श्रीमान् मोहनराज जी जैन को, जो 'वन्देमातरम्' के सबल प्रणेता एव नियामक हैं । ऐसे ऐतिहासिक व्यक्तित्व के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सम्पादक मण्डल उन सभी जानी-अनजानी प्रतिभाओ तथा विज्ञापनदाताओ का आभारी है जिनके सहयोग से ग्रथ इस रूप मे आपके हाथो में पहुच सका है ।

❑❑❑

वन्देमातरम्

स्वतन्त्रता आन्दोलन के ज्योति-पुज

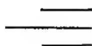


प जवाहर लाल नेहरू





नेताजी सुभाषचन्द्र बोस





महात्मा गाधी





सरदार वल्लभभाई पटेल





मौलाना

सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत



आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरीश्वर
जिन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं के
द्वारा शिक्षा जगत में क्रान्ति की



मरुधर केसरी मिश्रीमलजी महाराज
स्वतन्त्रता के प्रेरक एवं प्रखर शक्ति
एवं जनोपयोगी संस्थाओं के संस्थापक



अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी
अणुव्रत के द्वारा समाज में नयी
क्रान्ति के सूत्रधार

स्वामी रामानन्द जी महाराज
आदिवासी क्षेत्र में शिक्षा एवं
नशाबन्दी आन्दोलन के प्रणेता



महामण्डलेश्वर श्री महेशानन्दजी गिरि
काशी निवासी अमरिका में उच्च शिक्षा
प्राप्त आबू में अभिनव शिक्षण
संस्थान के संस्थापक

फक्कड़ बाबा के नाम से विख्यात
मुनिभूषण वल्लभदत्त विजयजी
जिन्होंने समाज सुधार और शिक्षा
के क्षेत्र में क्रान्तिकारी कार्य किये

वन्दे-मातरम्

वन्दे मातरम् ।
सुजला सुफला मलयज - शीतला
शस्य - श्यामला मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्स्ना - पुलकित - यामिनीम्
फुल्ल - कुसुमति - द्रुमदल - शोभिनीम्
सुहासिनी सुमधुर - भाषिणीम्
सुखदा वरदा मातरम् ॥

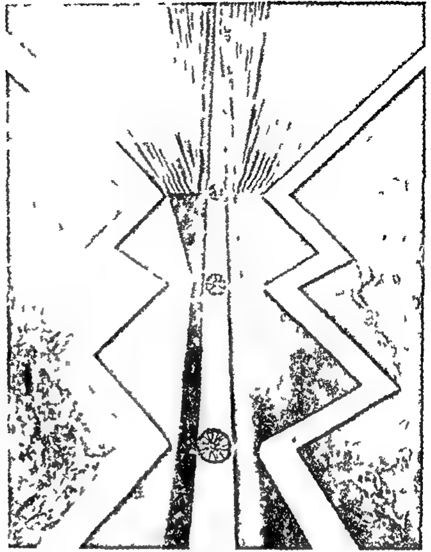
कोटिकोटि - कण्ठ - कलकल - निदान - कराले
कोटिकोटि - भुजै धृ त - खरकरवाले
के वले मा तुमि अवले ।
बहुबल - धारिणी नमामि तारिणी
रिपुदल - वारिणी मातरम् ॥

तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदि तुमि मर्म
त्व हि प्राणा शरीरे ।
बाहुते तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति
तोमारइ प्रतिमा गडि
मदिरे मदिरे ।

त्व हि दुर्गा दशप्रहरण - धारिणी
कमला कमल - दल - विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी
नमामि त्वा ।

नमामि कमला अमला अतुला
सुजला सुफला मातरम्,
वन्दे मातरम् ।
श्यामला सरला सुस्मिता भूषिता
धरणी भरणी मातरम् ॥

—बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय



एक:

प्रशान्त चरण

- स्वतन्त्रता आन्दोलन
- पाली जिले की स्वाधीनता क्रान्ति
- ऐसा भी जमाना था
- चित्र वीथी

क्रान्ति चरण



:1:

स्वतत्रता आन्दोलन की पूर्व पीठिका

हमारा दश भारत सभ्यता और सस्कृति की परपरा की ष्टि से विश्वपटल पर आज भी श्रेष्ठ एव पथ प्रदशक माना जाता । भारत की इस प्रसिद्धि मे राजस्थान राज्य की भागीदारी कम हत्वपूर्ण नही है। 'वीर भोग्या वसु धरा' की बात को उजागर करने ला यह राजस्थान हमारे राष्ट्र के इतिहास मे शूरवीरता और ाग की कर्मभूमि रहा है। शताब्दियो तक इस भूमि पर तिहासिक युद्ध लडे गय और इस धरती के वीर पुत्रा न देश के तिहास म अनेक पृष्ठ जोडे है, जिनमे स्वर्णाक्षरो मे उनकी गाथाए कित हुई है। राजस्थान के इतिहास के लेखक कनल टाड अपनी प्रसिद्ध कृति– एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ग्राफ राजस्थान' लिखा है कि राजस्थान मे काई ऐसा छोटा राज्य भी नही है समे थर्मोपोली (यूरोप का एक स्थान) जसी रणभूमि नही हो। ायद ही ऐसा कोई नगर मिले, जहा लियाडिनाक्ष (एक यूनानी र) क समान मातृ भूमि पर बलिदान होन वाला वीर पुरुष पन्न न हुआ हो

Rajasthan is the collective and classical denomi ation of that portion of India which is the abode of inces in the familiar dialect of these countries it is rmed 'Rajwada but by the more refined Raithaena rrected to Rajputana the Common designation nongst the British to denote the principalities

या प्राचीनता की दष्टि से भी राजस्थान बहुत समृद्ध रहा । राजस्थान म प्राचीन सभ्यता के अनेक ऐसे अवशेष मिले है, नके आधार पर इस क्षेत्र को मोहनजादडो के समकक्ष और उससे पूव का माना जान लगा है। आज राजस्थान कहे जाने वाले ा म कभी प्रागतिहासिक काल मे सरस्वती घाटी सभ्यता पुष्पित पल्लवित हा रही थी। इस मान्यता की साक्षी पीलीबगा म ाई से प्राप्त अवशेष दे रहे है और अब भी यह सारा प्रदेश तिहासकारा व पुरातत्वविदा के लिए अनुसधान का चित्ताकषक ल बना हुआ है।

इसके बाद राजस्थान के क्षितिज पर सामतकालीन व्यवस्था उदय होता है। राजस्थान छोटे-छोटे अनेक राज्यो मे विभक्त था जहा राजा महाराजा अथवा नरश शासन करत थ। इन प्रदशा को और भी छोटे छोटे भागा म बाट लिया गया था, जिनका शासन प्रबध जागीरदारा और सामन्त-सरदारा द्वारा सचालित होता था। ग्रामीण अचला म बिखरे इन छुटभैया का बडा दबदबा था। आतक और शोषण का खुला नत्य था। निरकुश अत्याचार व गुलामी के बोझ स ग्रामीण जनता की कमर टूट गई थी। बाद मे अंग्रेजी राज्य के उदयकाल म राजपूताना की य रियासतें जा अपन शासका की जातिगत सत्ता से राजपूता की भूमि 'राजपूताना नाम से अभिहित की जाती थी, अग्रेजी राज्य की सत्ता को नकारन के लिए सघष करन लगी। लेकिन इनमे पारस्परिक कलह के कारण एकता का और राष्ट्र के साथ अगीभूत होने की भावना का अभाव था। फलस्वरूप य सभी रियासत अग्रेजी सत्ता क समक्ष नतमस्तक हो गइ और राजस्थान की जनता दाहरी तिहरी गुलामी का भार वहन करने लगी।

सन् 1857 के स्वतन्त्रता-सग्राम के दौरान, हालाकि राजस्थान के प्राय सभी राजाश्रा न अग्रेजा का साथ दिया था, परतु इसके बाद अनेक राजा अग्रेजो के खिलाफ हो गए। 21 अगस्त, 1857 को जोधपुर राज्य मे स्थित एरिनपुरा छावनी मे ब्रिटिश फौज के भारतीय दस्तो न बगावत कर दी। बागी सनिक ए जी जी के सदर मुकाम आबू पहुच गए और वहा पर कनल हाल और कई अग्रेज अधिकारियो का मार डाला। फिर वहा से, 'चलो दिल्ली मारो फिरगी' के नारे के साथ दिल्ली के लिए कूच किया। माग मे पडने वाले मारवाड क एक बडे ठिकाणे आउवा के ठाकुर कुशालसिंह चापावत न इन बागी-सैनिका का नतृत्व सभाल लिया। फिर 13 सितम्बर,1857 को बागी-सैनिका न मारवाड की जनता के नाम एक अपील निकाली, जिसम साफ लिखा गया कि मारवाड और मेवाड के कई ठिकाने–आउवा आसोप अलनियावास गूलर सलूम्बर, कोठारिया कानोड आसीन्द लसाणी इत्यादि उनके साथ हैं इसलिए सारी जनता एक जुट हाकर उनका साथ द।

मारवाड के जागीरदारो और सलूम्बर रावत क बीच हुए पत्र-व्यवहार स इस बात की पुष्टि होती है कि आसाप-ठाकुर की अगुवाई म दिल्ली जाकर 25 हजार सैनिका के साथ अजमेर पर



हमला करने की योजना थी। इसकी भनक लगने पर अजमेर के चीफ कमिश्नर सर पट्रिक लारेन्स ने जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह से मदद मांगी। महाराजा ने अपने किलेदार ओनाडसिंह पवार के नेतृत्व में एक दर्जन तोपों के साथ 10 हजार सैनिक भेजे। पर बागी फौजियों ने उनके छक्के छुड़ा दिए। सेनापति पवार मारा गया। भारी तोपें युद्ध सामग्री एवं एक लाख रुपये विद्रोहियों के कब्जे में आ गए। अब सर पट्रिक लारेन्स और जोधपुर के पोलिटिकल एजेन्ट मेसन दल-बल समेत आउवा पहुंचे। 18 सितम्बर को फिर घमासान युद्ध हुआ। मेसन का सिर काटकर आउवा के गढ़ के दरवाजे पर लटका दिया गया और सर लारेन्स उलटे पांव अजमेर दौड़ पड़ा। तभी से आउवा क्षेत्र में जो लोक गीत प्रचलित हुआ वह आज भी इस तरह गाया जाता है–

ढोल बाजे चंग बाजै, भलो बाजे बांकियो।
एजेण्ट को मारकर, दरवाजे पर टांकियो ॥

1858 के जनवरी (माघ महीने) माह की 20 तारीख को कर्नल होम्स फिरंगियों की करारी हार का बदला लेने की नीयत से अपने 1800 सैनिकों के लश्कर लवाजमे के साथ आउवा आ धमका। यद्यपि खुशालसिंह होम्स के अचानक आने से सकते में आ गए मगर उन्होंने अपने पास मौजूद मात्र 700 सैनिकों के साथ पूरे जोश व आत्म विश्वास से अपनी पिछली मातों से जल फुफकारते होम्स का मुकाबला चार दिनों तक किया।

राशन और साधनों की सीमित मात्रा को मध्येनजर रखते हुए अपने सरदारों और कामदारों की सलाह पर 23 जनवरी की रात के घने अंधकार में बरसात की मौसम का लाभ उठाते हुए कुशालसिंह भाग निकले और तात्या टोपे से मिलने मेवाड़ जा पहुंचे। मगर तात्या टोपे उन दिनों जनरल रोज की फौज से घिरी लक्ष्मीबाई की सहायतार्थ गए हुए थे। अन्ततः फिरंगियों ने अपनी दक्षता और चातुर्य के बूते पर किलेदार को प्रलोभित कर किले का दरवाजा खुलवा दिया और आउवा के गढ़ पर अपना अधिकार जमा लिया। इस तरह देखते ही देखते आउवा अब फिरंगियों की जघन्य सोच और पंगु मानसिकता की आग में झुलसने लगा। गोरी चमड़ी में बह रहे काले लहू में बदले और आतंक की भावना इतनी उग्र थी कि आदमी से लेकर पेड़-पौधे तक रौंदे जाने लगे। बदहवास कत्ले आम शुरू हो गया। मंदिरों की दीवारें ध्वस्त की जाने लगी मूर्तियां खंडित की जाने लगी।

आउवा ठाकुर कुशालसिंह अब भी अपने पूरे जोश-खरोश और आत्म विश्वास के साथ अपनी जागीर की पुनः प्राप्ति संघर्ष करते रहे। तात्या टोपे से सम्पर्क में असफल रहने पर मेवाड़ में कोठारिया के रावत जोधसिंह के यहां शरण ल। 1860 तक कोठारिया में रहने के बाद नीमच में ब्रिटिश रियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। तत्पश्चात् एक अदालत में लीजियन बागियों और फिरंगियों के खिलाफ रहे सामन्तों पर मुकद्दमे ठोक दिए गए। गवाही के लिए ठाकुर और शेष बचे रणबांकुरे योद्धा भी सनिक अदालत में हुए। इस अदालत में वे अधिकांश आरोपों से बरी कर दिए

कोई पांच हजार घरों की बस्ती वाले इस गांव के ध्वस्त खंडित दीवारें, इसमें रखी तोपें, जीर्ण शीर्ण ... किले के ऐन सामने जुझारू वीरों की याद में बना मंदिर की ध्वस्त दीवारें और खंडित मूर्तियां अपने ... की कहानी आज भी कहती हैं।

पाली जिला पश्चिमी राजस्थान का प्रवेशद्वार ... सकता है। यह मारवाड़ रियासत का भाग रहा है। स्वतन्त्रता संग्राम में पाली जिले में आउवा ठिकाने के ... सिंह चांपावत की भूमिका अविस्मरणीय रही है।

इस के आन्दोलन में अहिंसा की डोर को पकड़कर गांधी जी के अनुयायियों की भी एक बड़ी संख्या रही है जीवन पर्यन्त संघर्ष करते हुए सामन्ती-व्यवस्था व अंग्रेजों लिया था। छुआछूत, बठ-बेगार आदि के उन्मूलन हेतु ... शारीरिक यातनाएं सहनी पड़ी, क्योंकि अत्याचार, शोषण के इस अंधकारपूर्ण युग में सामन्तों शासन में की कामना करना व्यर्थ था। अनेक छुटभइयों की तथा अंग्रेजों की कन्नीयतों ने लोकहित की आर्थिक नीति का ... नहीं होने दिया। देश की आजादी के बाद भी ... राजनैतिक अव्यवस्था देश के सपूतों को दिखाई दी तो ... स्थानीय स्तर पर विरोध किया। सामन्ती व्यवस्था को करने के लिए जो जिले व्यापी आन्दोलन हुए उनमें ... अग्रगण्य रहा है। पाली जिले में आजादी के आन्दोलन के ... आजादी के बाद सुव्यवस्था हेतु संघर्ष में भाग लेने वाले सेनानियों की एक लम्बी सूची है, जिसमें प्रमुख है—स्व० ... किकर, मांगीलालजी आलीशान मीठालालजी त्रिवेदी फूलचन्दजी बाफना, यशवन्तरायजी रुचिर, माधोलालजी मीठा लालजी काठेड, रामप्रसादजी गांधी, धनराजजी



: 2 :

पराधीनता बनाम स्वाधीनता

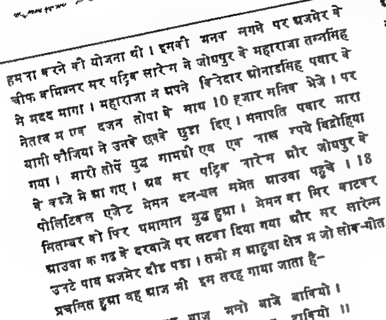
□ प्रो0 माधोसिंह इन्दा □

पराधीनता सब दु खो की जननी है भयानक मानसिक पीडाओ का उद्भव-स्थान है पतन की पराकाष्ठा है अनात जीवित चिन्ताओ की रात्रि है तथा असावधानी का बढाने वाली प्रमादभरी सतापकारिणी नीद है। पराधीनता से मानव सतापो का घर बन जाता है। बुद्धि कुण्ठित हो जाती है, पराधीन इन्द्रिया सुप्त हो जाती है और हृदय-कमल सूखने लगता है पराधीन जन कभी शाति मे नही रहता, सुख-समृद्धि के निमित्त तडपता रहता है कर्त्तव्यपालन हेतु तरसता है और अच्छे बुरे के विवक से वचित हो जाता है। कौन मूढ होगा जो इस सब प्रभावमयी परतन्त्रता की चाहना करेगा ? कौन अभागा जीवन का जर्जरित करने वाली इस दास्य वृत्ति से जीवन को निर्जीव और शून्य बनाकर सन्तुष्ट होगा ? शक्ति तथा सम्मान का विनष्ट करने वाली इस पराधीनता से क्या कोई स्वप्न म भी सुख का अनुभव कर सकता है ? भक्त प्रवर कवि तुलसी न इन सभी विसगतिया को अनुभव करत हुए रामचरित मानस म लिखा है कि 'पराधीन सपनहू सुख नाही।' वास्तव मे युगदृष्टा कवि, चतुर चितेरे चिन्तक और समाज सुधारक भक्त की यह सामाजिक सकट से रक्षा करने के लिए यह मानवोचित चेतावनी है। ये शब्द भक्त के शुद्ध हृदय स निकले हुए प्रेरणाप्रद उद्गार हैं।

मानव के लिए पराधीनता के विविध प्रकार दु खदायक होते हैं। शारीरिक पराधीनता मे व्यक्ति कारागार म बन्द कर दिया जाता है तथा उसका मन स्वतन्त्र बना रहता है। मानसिक पराधीनता बडी भयकर होती है। मानसिक रूप से पराधीन मानव पशु-तुल्य जीवन व्यतीत करता है। महान आत्माए अपने मन को अपने वश म रखती हैं मन के वशीभूत नही होती। जो मन पर असवार है-सो कोई साधु एक' कहकर सुधी जना ने मानव के लिए मन पर विजयी होना आवश्यक बताया है। परतन्त्रता का एक और रूप है—सामाजिक परतन्त्रता। इसमे एक देश, एक जाति, एक समुदाय का दास बना लिया जाता है। इस पराधीनता मे मानव के गुणो का शनै शन ह्रास होता है। मनुष्य परमुखापेक्षी, पराश्रित और हतोत्साही बन जाता है। इस पराधीनता को नष्ट करने के लिए सघर्ष होते हैं, ससार के इतिहास का निर्माण होता है। सभी प्रकार की पराधीनता को दूर करने के लिए ससार के धर्मवक्ता, सामाजिक महामानव और चिन्तक युगा से मानव को प्रेरित करते आ रहे हैं।

'पराधीन सपनेहू सुख नाही' उक्ति है तो पुरानी पर स्वाधीनता की अमिट ललक अपने अन्तस्तल मे छिपाए हुए है। सोने के पिंजरे मे बन्द तोता भी सुखी नही रहता। वह मुक्त आकाश मे स्वतन्त्रतापूर्वक अपने पख फडफडाने क लिए हमेशा विकल रहता है। इसी भावना से अनुप्राणित होकर वह अपने पख और सिर बार-बार पिंजरे की सलाखो स टकराता है ताकि उन्हे तोडकर दूर गगन मे बनालियो की हरियावल मे उड जाए और सघन डालिया पर बैठकर उन्मुक्त मधुर स्वरा म गीत गाए। जब एक अकिंचन पक्षी मे स्वाधीनता की इतनी ललक दिखाई देती है तो फिर बुद्धिमान और सशक्त मनुष्य का तो कहना ही क्या! उसकी स्वाधीनता की ललक का भला शब्दा के तान-बाने मे रूपायित कैसे किया जा सकता है ?

स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए मनुष्य न काल-कोठरियो की नारकीय यातनाए सही हैं, लाठिया और गालिया खाई है फासी के तख्तो पर प्राणो को सावनिया झूलो के समान झुलाया है। कौन मनुष्य यो ही अकाल मृत्यु का शिकार होना चाहता है या अपने यौवन को जेलो की काल-कोठरियो म सडाना चाहता है ? सामान्यत कोई भी नही। लेकिन जब स्वाधीनता की आग उसके हृदय मे, उसकी प्राण चेतना म सुलग जाती है, तब वह बडे स बडे कष्ट की तो क्या, प्राण तक की परवाह नही करता। भारतीय स्वतन्त्रता-सग्राम के दौरान उठाए गए कष्ट और किए गए प्राणो के होम इसी कारण तो आज भी अनुकरणीय एव प्रेरणा का अजस्र स्रोत माने जाते हैं क्योकि उसम सहज मानवीय स्वाधीनता की अमर ललक अन्तर्निहित थी। इस प्रकार की अमर ललक ही सस्कृतियो और राष्ट्रो का निर्माण किया करती है। यह ललक ही देशो और जातियो की स्वाधीनता का भी कारण बनती है। आज जो विश्व के देशो ने आशातीत प्रगति की है उसके मूल म भी यही ललक विद्यमान है। इस ललक के अभाव म कोई भी व्यक्ति समाज और राष्ट्र अपने अस्तित्व तक को बनाए नही रख सकता। यह वह ज्योति है जो चेतना के रूप म हमेशा प्रज्ज्वलित रहकर राष्ट्रो का



हमला करने की योजना थी। इसकी भनक लगने पर अजमेर के चीफ कमिश्नर सर पैट्रिक लारेन्स ने जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह से मदद मागा। महाराजा ने अपने किलेदार ओनाडसिंह पवार के नेतृत्व में एक दर्जन तोपों के साथ 10 हजार सैनिक भेजे। पर बागी फौजियों ने उनके छक्के छुड़ा दिए। सेनापति पवार मारा गया। सारी तोपें युद्ध सामग्री एवं एक लाख रुपये विद्रोहियों के कब्जे में आ गए। अब सर पैट्रिक लारेन्स और जोधपुर के पोलिटिकल एजेन्ट मेसन दल-बल समेत आउवा पहुचे। 18 सितम्बर को फिर घमासान युद्ध हुआ। मेसन का सिर काटकर आउवा के गढ़ के दरवाजे पर लटका दिया गया और सर लारेन्स उलटे पाव अजमेर दौड़ पड़ा। तभी से आहुवा क्षेत्र में जो लोक-गीत प्रचलित हुआ वह आज भी इस तरह गाया जाता है—

गोरा बाज चग बाज मनो बाजे बाकियो।
एजेण्ट को मारकर, दरवाजे पर टाकियो॥

1858 के जनवरी (माघ महीने) माह की 20 तारीख को कर्नल होम्स फिरगियों की करारी हार का बदला लेने की नीयत से अपने 1800 सैनिकों के लश्कर लवाजमे के साथ आउवा आ धमका। यद्यपि खुशालसिंह होम्स के अचानक आने से सकते में आ गए मगर उन्होंने अपने पास मौजूद मात्र 700 सैनिकों के साथ पूरे जोश व आत्म विश्वास से अपनी पिछली माता से जन फुफकारते होम्स का मुकाबला चार दिनों तक किया।

राशन और साधनों की सीमित मात्रा को मध्येनजर रखते हुए अपने सरदारों और कामदारों की सलाह पर 23 जनवरी की रात के घने अधकार में बरसात की मौसम का लाभ उठाते हुए कुशालसिंह भाग निकले और तात्या टोपे से मिलने मेवाड़ जा पहुचे। मगर तात्या टोपे उन दिनों जनरल रोज की फौज से घिरी लक्ष्मीबाई की सहायतार्थ गए हुए थे। अन्तत फिरगियों ने अपनी दक्षता और चातुर्य के बूते पर किलेदार को प्रलोभित कर किले का दरवाजा खुलवा दिया और आऊवा के गढ़ पर अपना अधिकार जमा लिया। इस तरह देखते ही देखते आउवा अब फिरगियों की जघन्य सोच और पशु मानसिकता की आग में झुलसने लगा। गोरी चमड़ी में बह रहे काले लहू में बदले और आतक की भावना इतनी उग्र थी कि आदमी से लेकर पेड़-पौधे तक रौंदे जाने लगे। बदहवास कत्ले आम शुरू हो गया। मदिरों की दीवारें ध्वस्त की जाने लगी मूर्तिया खडित की जाने लगीं।

आउवा ठाकुर कुशालसिंह अब भी अपने पूरे जोश-खरोश और आत्म विश्वास के साथ अपनी जागीर की पुन प्राप्ति के लिए सघर्ष करते रहे। तात्या टोपे से सम्पर्क में असफल रहने पर उन्होंने मेवाड़ में कोठारिया के रावत जोधसिंह के यहा शरण ली तथा 1860 तक कोठारिया में रहने के बाद नीमच में ब्रिटिश अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। तत्पश्चात् एक सैनिक अदालत में लीजियन बागियों और फिरगियों के खिलाफ जग कर रहे सामतों पर मुकद्मे ठोक दिए गए। गवाही के लिए खरवा ठाकुर और शेष बचे रणबाकुरे योद्धा भी सैनिक अदालत में उपस्थित हुए। इस अदालत में वे अधिकाश आरोपों से बरी कर दिए गए।

इस गाव के किले... करीब पाच हजार घरों की बस्ती वाले इस गाव के किले ... और ध्वस्त खडित दीवारें, इसमें रखी तोपें, जीर्ण शीर्ण घुड़साल और किले के ऐन सामने जुझारू वीरों की याद में बना कीर्ति-स्तभ मदिर की ध्वस्त दीवारें और खडित मूर्तिया अपने गौरवमयी अतीत की कहानी आज भी कहती हैं।

पाली जिला पश्चिमी राजस्थान का प्रवेशद्वार माना जा सकता है। यह मारवाड़ रियासत का भाग रहा है। भारतीय स्वतत्रता-सग्राम में पाली जिले में आऊवा ठिकाने के ठाकुर कुशाल सिंह चापावत की भूमिका अविस्मरणीय रही है।

इस के आदोलन में अहिंसा की डोर को पकड़कर बढ़ने वाले गाधी जी के अनुयायियों की भी एक बड़ी सख्या रही है जिन्होंने जीवन-पर्यन्त सघर्ष करते हुए सामन्ती-व्यवस्था व अग्रेजों से लोहा लिया था। छुआछूत बठ-बेगार आदि के उन्मूलन हेतु उन्हें अनेक शारीरिक यातनाए सहनी पड़ी क्योंकि अत्याचार उत्पीड़न और शोषण के इस अधकारपूर्ण युग में सामती शासन में जन-कल्याण की कामना करना व्यर्थ था। अनेक छुटभइयों की तथा ऊपर से अग्रेजों की बदनीयती ने लोकहित की आर्थिक नीति का निर्माण भी नहीं होने दिया। देश की आजादी के बाद भी सामाजिक एव राजनैतिक अव्यवस्था देश के सपूतों को दिखाई दी तो उन्होंने इसका स्थानीय स्तर पर विरोध किया। सामती व्यवस्था को समूल नष्ट करने के लिए जो जिले व्यापी आदोलन हुए उनमें पाली जिला अग्रगण्य रहा है। पाली जिले में आजादी के आदोलन के दौरान एव आजादी के बाद सुव्यवस्था हेतु सघर्ष में भाग लेने वाले स्वतत्रता सेनानियों की एक लम्बी सूची है जिसमें प्रमुख हैं—स्व० हरिभाई किकर मागीलालजी आलीशान मीठालालजी त्रिवेदी बाबा, फूलचदजी बाफना यशवतरायजी रुचिर माधोलालजी क्रातिकारी मीठा लालजी काठेड़ रामप्रसादजी गाधी धनराजजी वर्मा आदि। □



: 2 :

पराधीनता बनाम स्वाधीनता

□ प्रो० माधोसिंह इन्दा □

पराधीनता सब दु खो की जननी है भयानक मानसिक पीडाम्रो का उद्भव-स्थान है, पतन की पराकाष्ठा है, प्रज्ञात जीवित चिन्ताम्रो की रात्रि है तथा प्रसावधानी को बढाने वाली प्रमादभरी सतापकारिणी नीद है। पराधीनता से मानव सतापो का घर बन जाता है। बुद्धि कुण्ठित हो जाती है, पराधीन इन्द्रिया सुप्त हो जाती है और हृदय-कमल सूखने लगता है पराधीन जन कभी शाति से नही रहता, सुख-समृद्धि के निमित्त तडपता रहता है, कर्त्तव्यपालन हेतु तरसता है और अच्छे बुरे के विवेक से वचित हो जाता है। कौन मूर्ख होगा जो इस सब प्रभावमयी परतन्त्रता की चाहना करेगा ? कौन प्रभागा जीवन को जर्जरित करने वाली इस दास्य वृत्ति से जीवन को निर्जीव और शून्य बनाकर सन्तुष्ट होगा ? शक्ति तथा सम्मान को विनष्ट करने वाली इस पराधीनता से क्या कोई स्वप्न मे भी सुख का अनुभव कर सकता है ? भक्त प्रवर कवि तुलसी ने इन सभी विसगतियो का अनुभव करते हुए रामचरित मानस मे लिखा है कि 'पराधीन सपनेहु सुख नाही'। वास्तव मे युगद्रष्टा कवि चतुर चितेरे चिन्तक और समाज सुधारक भक्त की यह सामाजिक सकट से रक्षा करने के लिए यह मानवोचित चेतावनी है। ये शब्द भक्त के शुद्ध हृदय से निकले हुए प्रेरणाप्रद उद्गार है।

मानव के लिए पराधीनता के विविध प्रकार दु खदायक होते हैं। शारीरिक पराधीनता मे व्यक्ति कारागार मे बन्द कर दिया जाता है तथा उसका मन स्वतन्त्र बना रहता है। मानसिक पराधीनता बडी भयकर होती है। मानसिक रूप से पराधीन मानव पशु-तुल्य जीवन व्यतीत करता है। महान आत्माए अपने मन को अपने वश मे रखती हैं मन के वशीभूत नहीं होती। जो मन पर असवार है-सो कोई साधु एक कहकर सुधी जनो ने मानव के लिए मन पर विजयी होना आवश्यक बताया है। परतन्त्रता का एक और रूप है—सामाजिक परतन्त्रता। इसमे एक देश, एक जाति, एक समुदाय को दास बना लिया जाता है। इस पराधीनता मे मानव के गुणो का शनै शनै ह्रास होता है। मनुष्य परमुखापेक्षी, पराश्रित और हतोत्साही बन जाता है। इस पराधीनता को नष्ट करने के लिए सघर्ष होते है, ससार के इतिहास का निर्माण होता है। सभी प्रकार की पराधीनता को दूर करने के लिए ससार के धर्मवेत्ता सामाजिक महामानव और चिन्तक युगो से मानव को प्रेरित करते आ रहे है।

'पराधीन सपनेहु सुख नाही' उक्ति है तो पुरानी पर स्वाधीनता की अमिट ललक अपने अन्तस्तल मे छिपाए हुए है। सोने के पिंजरे मे बन्द तोता भी सुखी नही रहता। वह मुक्त आकाश मे स्वतन्त्रतापूर्वक अपने पख फडफडाने के लिए हमेशा विकल रहता है। इसी भावना से अनुप्राणित होकर वह अपने पख और सिर बार-बार पिंजरे की सलाखो मे टकराता है ताकि उन्हे तोडकर दूर गगन मे बनालियो की हरियावल मे उड जाए और सघन डालियो पर बैठकर उन्मुक्त मधुर स्वरो मे गीत गाए। जब एक अकिंचन पक्षी मे स्वाधीनता की इतनी ललक दिखाई देती है तो फिर बुद्धिमान और सशक्त मनुष्य का तो कहना ही क्या ! उसकी स्वाधीनता की ललक को भला शब्दो के ताने-बाने मे रूपायित कैसे किया जा सकता है ?

स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए मनुष्य ने काल-कोठरियो की नारकीय यातनाए सही हैं, लाठियां और गोलियां खाई हैं, फासी के तख्तो पर प्राणो को सावनिया झूलो के समान झुलाया है। कौन मनुष्य यो ही प्रकाल मृत्यु का शिकार होना चाहता है या अपने यौवन को जेलो की काल-कोठरियो मे सडाना चाहता है ? सामान्यत कोई भी नही। लेकिन जब स्वाधीनता की आग उसके हृदय मे उसकी प्राण चेतना मे सुलग जाती है तब वह बडे से बडे कष्ट की तो क्या प्राण तक की परवाह नही करता। भारतीय स्वतन्त्रता-सग्राम के दौरान उठाए गए कष्ट और किए गए प्राणो के होम इसी कारण तो आज भी अनुकरणीय एव प्रेरणा के अजस्र स्रोत माने जाते हैं क्योकि उसमे सहज मानवीय स्वाधीनता की अमर ललक अन्तर्निहित थी। इस प्रकार की अमर ललक ही सस्कृतियो और राष्ट्रो का निर्माण किया करती है। यह ललक ही देशो और जातियो की स्वाधीनता का भी कारण बनती है। आज जो विश्व के देशो ने आशातीत प्रगति की है उसके मूल मे भी यही ललक विद्यमान है। इस ललक के अभाव मे कोई भी व्यक्ति समाज और राष्ट्र अपने अस्तित्व तक को बनाए नही रख सकता। यह वह ज्योति है जो चेतना के रूप मे हमेशा प्रज्ज्वलित रहकर राष्ट्रो का

स्थिर हो जाती है उन्हें प्रगति-पथ पर प्रायशः अग्रसर भी करती रहती है।

पराधीनता का प्राणी विविध रूपों में अनुभव करता है। इनमें राजनीतिक पराधीनता सब पराधीनताओं का कारण मानी गई है। राजनीति का प्रश्न प्रधान रखकर ही हम व्यक्तिगत रूप में स्वाधीन रहते हैं। हमारी अर्थनीति हमारे लिए फलदायक होती है। हम धार्मिक, सामाजिक और जातिगत स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाती है। हम स्वतन्त्र होकर धर्म का पालन करें, हम विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता हो, यह सभी की इच्छा है। पराधीन का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं होता। चाहे कोई कितना सुन्दर हो, बुद्धिमान हो, कर्मठ हो और बलशाली हो, यदि वह स्वाधीन नहीं है तो उसकी सुन्दरता, उसकी बुद्धिमत्ता, उसकी कर्मठता, उसका धन और उसका मान-सम्मान किसी भी काम का नहीं। ऐसे प्राणी की बुद्धि विषाद में पड़ जाती है। कर्मठता उसे सामर्थ्य नहीं देती। दूसरे लोग ही उसका लाभ उठाते हैं। धन-सम्पत्ति दूसरों के उपभोग में आती है तथा उसका बल पराधीन व्यक्ति का घातक अस्त्र बन सकता है। हमारे पराधीन युग में हमारी धन-सम्पत्ति को नष्ट किया गया अथवा विदेश भेज दिया गया। हमारा सारा कच्चा माल कौड़ियों के मूल्य लेकर विदेश भेजा जाता था और वहां से जो बनकर आता था उसके बदले भारी रकम ली जाती थी। सरोजनी नायडू जैसी भारत-कोकिला को अंग्रेजी साहित्यकारों में स्थान न मिल सका। पराधीनता के कार्यकाल में हमारे कलाकारों व कारीगरों के हाथ पांव काटकर उन्हें पंगु बना दिया गया था और भारतीय कला कौशल को मिटा दिया गया था। पराधीन देश का वातावरण वर्गभेद पैदा करके ईर्ष्या, द्वेष और मारकाट जैसे अशिव वातावरण की सृष्टि करता है। अतः पराधीनता संसार में सबसे बड़ा अभिशाप सिद्ध हुई है।

महात्मा गांधी के अनुयायी श्री वियोगी हरि ने एक स्थान पर कहा है—

पराधीन जे जन, नहीं स्वर्ग नरक ता हेत।
पराधीन जे जन, नहीं स्वर्ग नरक ता हेत॥

जो लोग पराधीन हैं उनके लिए कहीं स्वर्ग है ही नहीं, स्वर्ग भी उनके लिए नरक बन जाता है, दुःखों का घर सिद्ध होता है। सब सुख-सुविधाओं को प्राप्त करके भी वे सदा दुःखी रहते हैं। पराधीनों की भावनाएं ऐसी अपवित्र और द्वेष आदि से लिप्त रहती हैं कि व्यक्ति सब कुछ प्राप्त होने पर भी अपने आपको हीन समझने लगता है। वह तलवार पाकर अपना ही हाथ काट लेता है। रूप उसको चरित्रहीन बना डालता है, धन उसे कंजूस, लोभी व स्वार्थी बनाकर सुख से वंचित कर देता है। शक्ति पाकर वह मदमस्त बना अपने को सुख से दूर कर लेता है। वह स्वर्ग में भी सुख का अनुभव नहीं कर सकता। ऐसा प्राणी परमुखापेक्षी बनकर राष्ट्र को अधीन बनाए जाने के कलिमा पर ला सकता है।

पराधीनता के पाश काटने के लिए सतत संघर्ष से इतिहास की पुनरावृत्ति हुई है। पराधीन लोगों में कुछ ऐसे भी व्यक्ति हुए हैं जिन के हृदयों में तरिक में सुख व आत्म-सम्मान की ज्योति विद्यमान थी। उन अन्तर्निहित भावों ने उन्हें बलिदान के लिए प्रेरणा दी। रोम देश के दासों ने विद्रोह कर दिया। फलस्वरूप इटलीवासियों ने करवट ली। रूस की जारशाही का नाश हुआ। फ्रांस की राज्य क्रान्ति ने समता आदि भावों को जगाया। भारत ने भी वर्षों तक अत्याचार सहकर स्वाधीनता प्राप्त की। दूसरे के पंजों से छूटने के लिए चींटी तक भी संघर्ष करती रही है। पशु-पक्षी सब प्राणों की बाजी लगा देते हैं। सांप, सिंह आदि प्राणी स्वयं तो बोलकर कुछ कह नहीं सकते पर अपने पर आक्रमण करने वालों को प्राण रहते जीवित नहीं रहने देते। जीवमात्र में एक ऐसी स्वाभाविक सहज बुद्धि होती है कि जो उन्हें किसी के बन्धन से छूटने की प्रेरणा देती है।

यह भी वर्तमान युग स्वतन्त्रता प्राप्ति का युग है। भारत के समान ही यूरोप की कई जातियों ने अफ्रीका, एशिया तथा आस्ट्रेलिया की आदिम जातियों के देशों पर अधिकार किया हुआ था। उनका वर्षों से शोषण होता रहा था। भारत की स्वाधीनता के पश्चात् उससे प्रेरणा प्राप्त कर विभिन्न छोटे-छोटे देशों को भी मुक्ति मिल गई। इसमें संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं ने क्रियात्मक सहयोग दिया। मानव मात्र को मुक्ति दिलाने के लिए विचार-स्वातन्त्र्य में प्रगति हुई। क्योंकि मानवता की चतुर्दिक प्रगति स्वतन्त्रता में ही संभव थी। स्वतंत्र वातावरण द्वारा सभ्यता और संस्कृति का विकास होता है। स्वतन्त्र व्यक्तित्व के धारक ही दानवीय भावनाओं व आक्रान्ताओं से संघर्ष करने की क्षमता रखते हैं। मानव-मानव में सद्भावना व सदइच्छाओं के प्रवेश की बात स्वतन्त्रता का समर्थन करने वाले स्वाधीन व्यक्ति ही कर सकते हैं। देश में शान्ति, विशाल कला-कौशल, साहित्य आदि सब स्वतन्त्र वातावरण में ही पनप सकते हैं। देशों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक वातावरण का सुन्दर ढंग से निर्माण स्वतन्त्रता के वातावरण में ही हुआ है। निःसन्देह अभी स्वतन्त्रता प्राप्त देशों में परस्पर संघर्ष चल रहा है परन्तु आम नागरिक आशान्वित है कि शीघ्र ही स्वाधीनता सभी बाधाओं को दूर कर देगी।

राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त कर लेने के पश्चात् भी हमें अन्य कई बुराइयों की पराधीनता को नष्ट करने के लिए अपने स



ही संघर्ष करना पड रहा है। भारत मे पराधीनता की बेडिया कटने के बाद महगाई और भ्रष्टाचार से संघर्ष आरम्भ हुआ, पर 42 वर्षों तक प्रयास कर लेने पर भी सफलता प्राप्त नही हो सकी। हीनता, अन्धविश्वास, अपव्यय चरित्रहीनता आदि रोग पराधीनता के युग मे ही घर कर चुके थे। इनसे मुक्ति होने पर ही पराधीनता से सच्ची मुक्ति कहलायेगी, अन्यथा हम मानसिक दासता के पाश मे बधे ही रहगे। देशवासियो ने पराधीनकाल मे अग्रेजो के अनेक कार्यों का अनुकरण किया। अनेक अवगुण हममे प्रविष्ट हो गये और गुणो के अनुकरण की प्रवृत्ति न रही। गुणो के अनुकरण मे हमारी गुलामी बाधक बनी।

पराधीन काल मे हम अवगुणो को न छोड सके। हमने अपने गुणो को भी त्याग दिया। धैय निष्ठा त्याग शक्ति आदि सदवृत्तियों ने हमे गुलामी मे छोड दिया और अग्रेजो के गुणो पर ध्यान न देकर उनकी भाषा व वेशभूषा की ही हम नकल करते रहे। इसका भयानक परिणाम हमे अब भोगना पड रहा है। भारतेन्दुजी ने काफी वर्ष पूर्व इस दोष को बता दिया था—

> परभाषा, परभाव पर भूषण, पर-परधान।
> पराधीन जन की अहै, यही एक पहचान॥

इस पराधीन अवगुण के कारण आज हमारा जीवन कृत्रिम बन गया है। हमारे यहा स्वार्थियो द्वारा जो भ्रष्टाचार और घोटाले आदि हो रहे हैं वह युगो पराधीन रहने के कारण हैं। पराधीनता ने हमारा रहन-सहन, वेश भूषा, खान-पान आदि सब बदल कर रख दिया। विदेशी शासन ने हमारे सदगुणो को मिटा दिया। गुलामी का प्रभाव आज भी सर्वत्र देखा जा सकता है। बहुत से भारतवासी आज अग्रेजो के समान भावो का आदान प्रदान करते हैं। उन्हे रूसी, जापानी, अग्रेजी, अमरीकी और हिप्पी भाव इतने सुरुचिपूर्ण प्रतीत होते है कि अपने देशीय भावो के प्रति उनके मन मस्तिष्क मे कोई स्थान नही रहा है। बोल चाल, हाव भाव नाच रग, गायन आदि पर परायो का पूर्ण प्रभाव पडा हुआ है। इस दास वृत्ति के कारण देश मे हत्या, मारकाट, तलाक, छीना झपटी सभी का बाजार गरम है। जब तक अपनी मातृभूमि मे सम्बधित व्यवहार व वातावरण को नहीं पनपाया जायगा, जब तक हम अपने को विचारधारा से स्वतत्र नही रखत, तब तक देशप्रेम और राष्ट्रहित की बातें करना बेमानी है। पराधीनता मे दर्शित आज का युवक दुराग्रही दुवृत्ति और दुर्विनीत हो गया है। उसका मातृभूमि से कैसे लगाव हो सकता है? वह तो देश, देशवासियो, देश के नियमो प्रवृत्तियो आदि से घबरा कर विदेशो की ओर भागने की तयारी कर रहा है। अपने देश को ठगने और दूसरो की सेवा करने की उसकी लालसा उसके स्वय के जीवन के लिए घातक है।

भारतीयो ने अभी तक राजनीतिक स्वतत्रता प्राप्त की है, अग्रेजो के चगुल से अपने आपको छुडवाया है। अभी उसे आर्थिक, मानसिक आदि अनेक क्षेत्रो मे स्वाधीनता प्राप्त करनी है। यह तभी सभव है जब प्रत्येक भारतीय यह समझने लगे कि स्वाधीनता की नमक रोटी ही वास्तव मे अमृत होती है, जबकि पराधीनता की माखन-मलाई जहर से कम नही होती। जब भारतवासी स्वाधीनता के मूल्य को ठीक ढग से समझेंगे, तभी वे समाज देश और विश्व के लिए उपयोगी सिद्ध होगे। तभी वे वास्तविक मानव पद प्राप्त कर सकेंगे।

अन्तत, सार रूप मे कहना यह है कि स्वाधीनता सभी प्रकार की प्रगति और व्यावहारिक सुखो का द्वार है। इसके विपरीत पराधीनता तो सपने मे भी सुखो के द्वार के आगे लोहे का ऊचा फाटक लगाकर उसे बद कर देती है। अर्थात् पराधीन व्यक्ति कभी सपने मे भी वास्तविक सुखो की कल्पना नही कर सकता।

□

□□□

स्वाधीनता राष्ट्र का प्रथम चरण हैं।
—स्वामी विवेकानन्द

स्वतत्रता राष्ट्र का अक्षत यौवन हैं।
—कोय



: 3 :

सामन्ती युग की भू-व्यवस्था, लगान, लाग-बाग और बैठ-बेगार

□ श्री चवदल सिंह एडवोकेट □

मारवाड़ राज्य की स्थापना व उसके पूर्व किसानों से लगान प्रति हल रुपया (नगदी) में लिया जाता था पर 17वीं शताब्दी में यह व्यवस्था लटाई में बदल गई और कहीं 1/6 तो कहीं-कहीं 1/5, 1/3 और 1/2 तक पैदावार का हिस्सा लगान के रूप में लिया जाने लगा था। उस युग में भूमि के कोई पट्टे नहीं थे। जितनी भूमि काश्तकार बोता था और पैदावार लेता था उसी आधार पर लगान देना पड़ता था। खालसा गांवों में यानी जोधपुर दरबार के गांवों में तो सन् 1912 में भू-प्रबन्ध करके स्थायी (खातेदारी) पट्टे काश्तकारों को देकर नकदी लगान मुकर्रर कर दिया था, पर जागीरी गांवों में वही लटाई की पूर्ववत् स्थिति बनी रही।

लगान वसूली में लटाई व कूंता में किसान बहुत परेशान होते थे। जागीरदारों के कामदार हवालदार कर्मचारियों की मनमानी व भ्रष्ट तरीकों के कारण किसान की पैदावार की ताली महीनों लाटों में पड़ी रहती। लटाई-व्यवस्था में सभी काश्तकार अपनी कुल पैदावार स्यालू एवं उनालू फसल गांव के बाहर एक जगह लाटों में लाते। वहीं पर अपनी अपनी पैदावार साफ करके लाटी बनाते, फिर जागीरदार अपनी सुविधा व मर्जी पर वहां आकर लगान का हिस्सा—जो भाग कहलाता था अलग करता और रावले में पहुंचाता तब कहीं बचा हुआ अनाज व पैदावार किसान अपने घर ले जा सकता था। लेकिन अपना हिस्सा ले जावे उसके पूर्व तो लाग-बाग की वसूली साहूकार के कर्ज की वसूली शुरू हो जाती थी। इसलिए अधिकतर किसान तो खाली हाथ पछेवड़ा झटककर ही घर लौटने को मजबूर होते थे।

लटाई-व्यवस्था में ठाकुरों जागीरदारों की मनमानी इस हद तक बढ़ गई थी कि उनालू फसल की लटाई श्रावण भादवे तक नहीं होती थी। वर्षा से भीगकर सारी पैदावार बरबाद हो जाती थी। उसे दीमक लग जाती थी। चोरियां तो होती ही थी कभी-कभी आग भी लग जाती थी। रात दिन का पहरा देना पड़ता था। अपनी फसल पैदा करने से किसान महरूम रहता और आश्चर्य होगा यह जानकर कि इस स्थिति से उबरने का कोई उपाय-कानून नियम सुनवाई करने वाला नहीं था। आखिर लोक-परिषद के व्यापक आन्दोलन और काश्तकारों में व्याप्त भारी असन्तोष को देखकर मई सन् 1941 में तत्कालीन चीफ मिनिस्टर डोनाल्ड फील्ड ने जागीरदारों के नाम निम्न आदेश जारी किया— 'हाकिमों को यह हिदायत दी जाती है कि ज्यों ही उनके पास प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यह शिकायत आवे कि लाटे समय पर नहीं किये जा रहे हैं तब उन्हें मौजूदा रिवाज के माफिक इस काम को शीघ्र पूरा करने के लिए अमीन भेज देना चाहिए। अगर हालात से यह मालूम हो कि लाटा करने में अन्यायपूर्ण देरी हो रही है तो सम्बन्धित हाकिम सब हालात की रिपोर्ट चीफ मिनिस्टर को भेजे और यह भी सुझाव दे कि किसानों का जो अनुचित नुकसान हुआ है उसके लिए कितना हरजाना जागीरदार दे। किसानों को उस रकम को दिलाने की मंजूरी महकमा खास देगा।

'मारवाड़ के सभी जागीरदारों—बजरिये हुक्म हाजा यह जता दिया जाता है कि वे इस हुक्म की पूरी-पूरी तामील करें। अगर ऐसा नहीं किया गया तो जो तरीका ऊपर बताया गया है, अख्तियार किया जावेगा।' इसका भी विशेष नतीजा नहीं हुआ क्योंकि जागीरदारों ने संगठित होकर जोधपुर दरबार पर दबाव डाला और परगनों के हाकिम भी जागीरदारों का पक्ष लेने वाले ही अधिकतर थे इसी कारण लटाई को लेकर चाणोद भाटून्द राडावास चण्डावल निम्बाज धावड़ी पोमावा खारड़ा आदि अनेक स्थानों पर आन्दोलन हुए। हालात इतने बदतर थे कि यदि किसान उसकी स्त्री व बच्चे अपने खेत में एक ककड़िया मिर्च फली होला या साग भाजी भी चोरी छिपे घर लाने की या खाने की कोशिश करते तो जागीरदार के कारिन्दे ओढ़े टोकरे व कपड़ों तक की तलाशी लेते व अपमानित करते और जूतों व बेंतों से पिटाई होती।

मारवाड़ की 3/4 भूमि जागीरी क्षेत्र थी और पाली जिले के तत्कालीन परगने—देसूरी, बाली, सोजत और जैतारण में सर्वाधिक गांव जागीरी के थे। यहां के किसानों की स्थिति तो वास्तव में दयनीय थी। इसी कारण दो फसली क्षेत्र होते हुए भी यहां के किसान गरीब और फटे हाल थे। जागीरदार जब चाहे किसान को

उसकी भूमि से बेदखल कर सकता था। कई गावो के किसानो ने कभी न खत्म होने वाले इन जागीरी जुल्मो से परेशान होकर उस जमाने म सगठित निष्क्रमण 'उच्छाला' (गधारोपण) कर गाव, घर, बेरे, खेत छोड दिये। ऐसे अनेक उदाहरण आज भी वृद्ध लोगो की याद म ताजा हैं।

सन् 1920–21 मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस ने किसान को सामन्ती शोषण से मुक्त करने के लिए आवाज बुलन्द कर दी थी। काग्रेस ने सन् 1929 मे कराची अधिवेशन म यह घोषणा की थी कि भारतीय जनता की गरीबी दूर करने और दशा सुधारने के लिए आवश्यक है कि समाज के वतमान आर्थिक व सामाजिक ढाचे मे क्रान्तिकारी परिवतन किये जावें और घोर असमानताओ को दूर किया जावे। इसके लिए आवश्यक है— देश के जागीरदारा जमीदारा व पूजीपतिया के शोषण स यहा के किसाना को मुक्त कराना। महात्मा गाधी ने हरिजन के 2 जनवरी 1936 के अक म लिखा—हमारे पूवजो द्वारा हम वास्तविक समाजवाद प्राप्त हुआ है। जिन्होने हमे सिखाया कि 'सभी भूमि गोपाल की' है तब सीमा की रेखा कहा है? मनुष्य ही उस रेखा को बनाने वाला है, वही उसे मिटा सकता है। काग्रेस द्वारा श्री जे सी कुमारप्पा की अध्यक्षता म गठित 'भूमि सुधार समिति' की सन् 1948 की रिपोट मे स्पष्ट उल्लेख है—(1) भूमि पर जोतने वाले का ही अधिकार हो। (2) मध्यस्था के लिए कोई स्थान न हो। सिवाय विधवाओ, विकलागो नाबालिगो व अन्य अपाहिज व्यक्तिया के भूमि को शिकमी काश्त पर देने का अधिकार नही होना चाहिए। (3) जो व्यक्ति 6 वष तक लगातार भूमि जोतता आ रहा है, उसको स्वाभाविक रूप से खातदारी अधिकार प्राप्त हो जाना चाहिए। समिति का सुझाव था कि खातेदार को इस शत के साथ पट्टा दिया जावे कि वह स्वय काश्त करेगा और भूमि शिकमी काश्त पर नही देगा।

सन् 1947 म स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजशाही और सामन्तशाही के उन्मूलन की ओर जनप्रतिनिधिया का ध्यान गया। सन् 1952 म राजस्थान म जागीरदारी उन्मूलन कानून बना और शनै शनै राजस्थान मे 6 09,575 जागीरें और पाली जिले मे 10 हजार 433 जागीरें जब्त कर ली गई। इनम जागीर जूना जागीर, भौम, धर्माथ, इनाम, सेवा, अनुदान, घुम-चाडोली सभी प्रकार की जागीरें शामिल थी। लेकिन आज भी देवस्थान मन्दिरा की डोली जागीरें जब्त नही हुई है और महन्त-पुजारी जागीरदार बने हुए है।

राजस्थान काश्तकारी कानून 1955 के लागू होने पर रिकार्ड मे जिनके नाम दज थे, वे सभी खातेदार मान लिये गये। इससे किसाना को स्थाई लाभ और कई अधिकार प्राप्त हो गये। पर इस कानून से अनेक ऐसे लोगो को भी खातेदारी अधिकार प्राप्त हो गये जो स्वय काश्त न करके भूमिहीन मजदूरो से, शिकमी काश्तकारा व नौकरो से अथवा अल्पकालीन किराया–चिट्ठी पर काश्त करवाते थे। ऐसे लोग जिनमे जागीरदार अफसर, राजनेता, पूजीपति अधिकतर है, वे वास्तविक काश्तकारो का बन्धुआ मजदूर रखकर या 1/2 हिस्सा लटाई पर काश्त करवा रहे हैं। ऐसे बडे लोग नगरा म रहते हैं और केवल लगान वसूली करने गावा मे खेत पर आते है। ये भ्रष्ट तरीको से धन किया काला धन सफेद करते है।

सीलिंग कानून बनने मे भी बडे-बडे भू-पतिया स अतिरिक्त भूमि प्राप्त नही की जा सकती—बेनामी दस्तावेज बनाकर अथवा अदालती अडचन पैदा करके आज भी हजारा बीघा सिंचित भूमि बडे-बडे जागीरदार दबाये बैठे है और सही काश्तकार बीघा दो बीघा भूमि के लिए तरस रहे है।

किसानो से लाग-बाग

'लगान (भाग) अच्छा पर लाग बुरी', यह पुरानी कहावत है। ज्यो ज्यो लोभ व शोषण वृत्ति बढती गई, लगान के अलावा लाग लगती गई और बढती रही। किसान से उसकी पदावार का हिस्सा लगान मे लेने के बाद बची हुई पैदावार से सैकडा तरह की लागें वसूल की जाती थी। इस तथ्य का प्रमाण तो इसी स मिल जाता है कि दिनाक 22 जून, 1947 को राजतिलक होने के पश्चात् महाराजा हनुवन्तसिंह जी द्वारा घोषित सन्देश मे लाग-बाग के रूप म वसूल की जा रही हुकूमत की 85 लागें माफ करने का ऐलान किया था। बडी सख्या मे लाग बाग माफ करने के बाद भी जागीरदारी क्षेत्रो मे विभिन्न प्रकार की अनेक लागें प्रचलित थी और राजस्थान के काश्तकारी कानून, 1955 के लागू होने तक भी कुछ न कुछ वसूलिया की जाती रही थी। लटाई के बाद इस प्रकार की लागें वसूल करने का आम रिवाज जागीरी गावा मे था।

'पल्ला-लाग' म रेजे के पछेवडे के पल्ले पर अनाज लिया जाता था, इसलिए इसका नाम 'पल्ला-लाग' हो गया। 1 जागीरदार का पल्ला, 2 ठकुरानीजी का पल्ला 3 माजी सा० का पल्ला, 4 कुवर सा० का पल्ला 5 बाईजी लाल का पल्ला 6 कुवरानीजी का पल्ला 7 कामदार का पल्ला, 8 फौजदार का पल्ला 9 हवलदार का पल्ला 10 कणवारिया का पल्ला, 11 पावणा-मेहमाना का पल्ला, 12 गाव साम्बी का पल्ला, 13 सियातर (गाठे-गूगरो) का पल्ला, 14 मोम-लाग, 15 चौकीदारी लाग 16 देवताओ की लागें-दश 26 कमीणा की लाग



जिगम नाई, दर्जी ढोली, सरगरा, मेघवाल, हरिजन भंगी, माली कुम्हार ग्वाला 27 मलबा लाग, 28 पूला लाग (ये पूल जागीरदार के बीस व करीब कारिंदा व कमीणा को दिये जाते थे) 29 खरडा (राकडे स) 30 भुंगी लाग, 31 परली, 32 लाल रंगी (सुथार-लुहार पर) 33 हाटडा (मोची मेघवाल पर) 34 घाणी 35 उबरिया 36 चहीला (बलगाडी) 37 गाजक (रायका पर बकरा लाग) 38 गा या उगरडी लाग (रायका पर) 39 गरिया या गड्डा (रायका स ऊन व धागा के बदले) 40 तलावट (ऊन की बिक्री पर रायका स) 41 रजा लाग (मेघवाला स) 42 पादूरी (मवेशी की प्राप्ति लाग) 43 प्रावल (चमडा रंगने वाले मेघवाला स) 44 बदगा (रस्सी) लाग 45 प्राडा-लाग (साग-सब्जी बेचने वाले माली स) 46 मटका (कुम्हार स) 47 कुरिया लाग (ऊंटो के टोला वाला स प्रतिवर्ष एक या दो टोडिया ऊंट) 48 चावलिया (दूध-लाग) प्रति सप्ताह हर रोज वाले किसान की बारी प्राती थी। मेहमान प्राने पर ज्यादा वसूल होता था। 49 पाडा रातब (इस लाग मे किसाना स दूध मक्खन, घी पाडा व बछडा के लिए लिया जाता था) 50 हमली-कुंडलिया कुंवर या कंवर के जन्म पर 51 कासा लाग (गाव के किसी के घर जीमण सामूहिक मिष्ठान्न भोजन-शादी त्योहार मोसर आदि पर होता था तब जागीरदार स नेकर सभी कारिंदा व कमीणा के करीब बीस कास लगते थ। दस सेर स लेकर ढाई मण तक मिठाई के नाम वसूल किये जाते थे। 52 सलाका लाग (शादी की बन्दोला पर) 53 जुहारी लाग (शादी के बाद जुहार करने जाने पर नजराना देना पडता था) 54 हुक्मनामा लाग (जागीरदार के देहान्त पर) 55 मवीया (कातीसरा साल के मुद्र), 56 घास मारी (मवेशी चराई) 57 जवारिया (घोडा के लिए हरी घास का चारा), 58 कजावा व माटी लाग (कुम्हारा स) 59 फदका (यह अनाज की लाग थी) और करीब 20 तरह के कर लगते थ। कम चारिया महमाना त्योहारा व अमल-तम्बाकू के नाम पर वसूल किये जाते थ। 60 लूण-पापडी (रायका स) 61 हल लाग 62 माच 63 होली 64 उछाला लाग 65 कूडा कमाई, 66 जाडी लाग 67 मामला लाग 68 तलवटी 69 रंगरेज, 70 धावी 71 खरडाकर लाग 72 मुगलमट लाग 73 मेला लाग 74 खेरणी पर लाग, 75 परवाना या शुकराना बारात, 76 दरख्त काटने की लाग 77 तल लाग (दीपावली पर) 78 ताला छपाई (व्यापारी स) 79 तवारी लाग 80 नाता लाग 81 नानर 82 गज छपाई 83 हुकुम बाब 84 घाणी लाग 85 खडला कड, 86 मेहलराई 87 चौकी लाग 88 नीवा लाग 89 जगडा लाग, 90 नजराना लाग 91 गूगरी लाग 92 हाथी लाग 93 दाता लाग, 94 बिगधा लाग, 95 माल चौथाई, 96 झडूला लाग, 97 होला लाग, 98 बिवाडी लाग, 99 दहेज लाग, 100 सरणा लाग, 101 हाटडी लाग 102 पिवाई लाग 103 पाग लाग, 104 बकरा लाग 105 दापा लाग, 106 कुवारा लाग 107 चौपर लाग 108 बगरायत ताला पनरियान लाग, 109 बखरा लाग 110 धुंगी लाग 111 रामा-शामा लाग, 112 पडाव लाग, 113 पन्नीया लाग 114 घरराई लाग, 115 चमडा लाग 116 कोठारी गध लाग 117 भरगड़ी या गध की लाग 118 चौधरी लाग 119 घी लाग 120 घोडा की पैर लाग 121 कागोरा परवाना लाग, 122 चीला लाग, 123 चावनी लाग 124 पूडा लाग 125 जाजम रा रुपया लाग 126 काल लाग 127 डोरी पूजन लाग 128 धेवडी या छाणा लाग, 129 पाणायत की लाग 130 नूता लाग 131 पीनाणी लाग 132 परिया लाग 133 कन्दोला लाग 134 भरोती लाग 135 माहिरा लाग 136 मुजरा लाग 137 हजूर फरमाइश लाग 138 गाड लाग 139 राली लाग 140 ग्वाल लाग।

और भी अनगिनत लागें कहीं कुछ और कहीं कुछ मनमानी दर स वसूल होती थी और किसान व ग्रामजन का बेबसी की हालत म अपनी सारी कमाई स हाथ धोने को मजबूर कर दिया जाता था। सचमुच ही उस जमाने का काश्तकार दासता, दरिद्रता दुख पराधीनता और असहायता का पशुवत जीवन बिता रहा था। न उसके खेता के और न घरा के ही मुस्तकिल पट्टे थ। खेत एवं घर स बेदखल किया जाना आमबात थी। इसलिए उसे जागीरदार व कारिंदा की दया पर ही रहना पडता था। स्पष्ट है लडाई

'लाग-बाग' का एक रोचक पर सही उदाहरण

एक ठाकुर साहब घोडी पर सवार हो गाव के चारो ओर दौड रहे थे। तभी एक चबूतरे से टकरा कर ठाकुर गिर पडे। घोडी मर गई और ठाकुर घायल हो गये। गांव के लोग एकत्रित हो ठाकुर साहब से कुशल पूछने रावले मे गये। ठाकुर साहब ने कराहते हुए घोडे के मरने पर बहुत शोक व्यक्त किया और कहा—रुपये भी नहीं है नयी घोडी कहां से लाऊं? इस पर गाव वाला ने प्रेमवश उन्हें 500 रुपया उधार देना स्वीकार कर लिया। और, इस तरह तभी से 'घुडचढी' नाम की लाग गाव के प्रत्येक परिवार से वसूल होने लग गई।



से लाग-बाग की मार अधिक थी। लूकड स लूकड की दुम भारी थी।

कहन का तो यह कहा जाता है कि देशी राजा रजवाडो के वक्त म कोई टैक्स नहीं था पर य लागें तथा बेगार बेनामी टक्स ऐसे थे जिनसे ब्राह्मण व राजपूतो के अलावा शायद ही कोई बचा हो। किसानो के अलावा भी अन्य कौमो पर या तो कतिपय लागें लगी हुई थी या बेगारी म अपने आपको खपाना पडता था। महाजन और व्यापारी वग को भी कई लागें नकदी के रूप मे देने के अलावा जागीरदार के यहा मेहमानो के लिए रसोडा का सामान तोलकर पहुचाना पडता था। उसके लिए बिस्तर, पलग, खाट पहुचाने होते थ, और कासा भाणा लाग तो थी ही। ये सारी लागें व जबरन वसूली जागीरी प्रथा समाप्त होने पर गाव गाव मे हुए आन्दोलन के फलस्वरूप बन्द हुइ।

सामन्ती युग और बेगार प्रथा

हकीकत म तो बेगार प्रथा दास प्रथा का ही एक रूप है। जागीरी गावो मे ज्यो ज्यो जागीरदार की आवश्यकता बढती गई, त्यो-त्यो प्रजा स बेगार म काम लेने की मात्रा भी बढती गई। बिना मजदूरी या एवजाना दिये काम लेने की प्रथा का नाम ही बेगार है। जागीरी गावो म हर व्यक्ति को न्यूनाधिक मात्रा मे बेगार म काम करना पडता था। पर कुछ जातियाँ तो ऐसी थी जिन्हे बेगार मे दिन रात पिसना पडता था। मेघवाल सरगरा आदि वग जो भूमिहीन मजदूर थ उन्हे तो बेगारी ही माना जाता था। रावले के काम के लिए जब चाहे बुला लिया जाता था। जागीरदार की फसल कटाई का काम हो, सभी के लिए मुफ्त जूते सिलाई एव अन्य चमडे का काम हो, ऊँट घोडो के लिए रिजका, घास चारा लाने का काम हो, घोडो के लिए दाना दलिया तैयार करना हो, रसोडे के लिए अनाज पिसाई का काम हो सन्देश चिट्ठी पत्री लाने ले जाने का काम हो, कपडे धोने का काम हो घोडा व मवेशी की देख रेख एव सफाई का काम हो वह सब इन्ही लोगो को बारी-बारी से बेगार म करना पडता था।

किसानो की बैलगाडियां जागीरदार का सामान लाने व ले जाने एव मेहमानो के लिए रात दिन बारी-बारी से बेगार म बुलाई जाती थी। इसी तरह दर्जी मुफ्त मे सभी के—जागीरदार के परिवार एव उनके कमचारी-कारिन्दो के कपडे सीते थ। नाइयो को न केवल हजामत बनाने का काम करना पडता था वरन् रसोई बनाने व बरतन साफ करने का काम भी करना पडता था। कुम्हार मिट्टी के घडे व बरतन देता और मकान बनाने व मरम्मत के लिए इटें देने के अलावा सारा पानी भरता था। सुथार न केवल खाट बाजोट पाट फर्नीचर आदि लकडी का सामान मुफ्त म बनाकर देता था, वरन् रसोडा की नित्य काम आने वाली लकडी भी फाडता था। कारीगर मकान बनाते या मरम्मत का काम करते थे, लुहार लोहे का सारा सामान बनाकर देते एव मरम्मत करते। सुनार सोने के जेवर बनाते और मजदूरी बेगार म करते थ। रायका लोग जागीरदार की मवेशी रेवड आदि मुफ्त मे चराते ग्वाले का काम करते दूध दुहने का काम करते और मेहमानो के आने पर अथवा त्यौहारो पर बकरा देते और खाल व ऊन भी मुफ्त म देनी पडती थी। मेणा चौकीदारी करते उन्हे रोज हाजरी देनी पडती थी। हरिजन सफाई-बुहारी करते और धावी कपडे धोने का काम करते और माली रोज देवताओ के लिए रावले म फूल लाता। उस रसोडे के लिए साग-

अहिंसक शक्ति की अपूर्व विजय

बाली मे जोहड की 7000 बीघा गोचर भूमि को महाराजा जोधपुर ने अपनी निजी सम्पत्ति घोषित कर अपने चहेते लोगों को हाईकोट के स्थगन आदेश के विपरीत इनायत कर दी। बाली की मवेशी को चरने से रोक दिया गया। जन-आन्दोलन को दबाने और आतंकित करने के उद्देश्य से पूर्व-महाराजा हनवतसिंहजी के द्वितीय पुत्र हुकमसिंह जी 50–60 कारिन्दो सहित शस्त्रो से सज्जित हो गोचर भूमि मे जा पहुचे। वहा बाली के प्रमुख क्रान्तिकारी मोहनराजजी पशुपालको के एक बृहद सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। जब लोगो को भय से विचलित होते नहीं देखा तो हुकमसिंह जी आव देखा न ताव मोहनराजजी पर पीछे से तलवार से वार करने के लिए आगे बढे। सभी ग्राम जनता उत्तेजित हो गई। तत्काल मोहनराजजी ने पीछे मुडकर गजब का साहस व फुर्ती दिखायी और हुकमसिंहजी के तलवार पकडे हाथ की कलाई को इतनी ताकत के साथ पकडा कि उठा हुआ तलवार वाला हाथ वहीं का वहीं रह गया और जन आक्रोश के आगे तलवार वापिस म्यान मे चली गई। उन्हे अपने घर का रास्ता लेना पडा।

श्री छोटमलजी सुराणा बद्रीनारायणजी शर्मा असलम भाई, बुधारामजी डागी, बाबूभाई रावल आदि बाली नगर के अनेक मुखियाओं ने एकत्रित जन समूह को शांत और अनुशासन मे बनाये रखा अन्यथा कुछ भी घटित हो सकता था। हिंसक आक्रमण पर अहिंसक शक्ति की वह एक उल्लेखनीय विजय थी।



जिनमें नाई, दर्जी, ढोली, सरगरा, मेघवाल, हरिजन, मेणा, माली, कुम्हार, ग्वाला, 27 मलवा लाग 28 पूला लाग (ये पूले जागीरदार के बीस व करीब कारिंदों व कमीणों को दिये जाते थे) 29 खरडा (रोवड़े में), 30 मुर्गी लाग 31 चरली 32 खातरली (सुथार-लुहार पर) 33 हाटडी (मांगी मेघवाल पर) 34 घाणी 35 उबरिया 36 चट्टीला (बैलगाड़ी), 37 खाजरू (रायका पर बकरा लाग) 38 खाद या उगरडी लाग (रायका पर), 39 गरिया या गड्डा (रायका से ऊन के धागे के बंडल) 40 कतावट (ऊन की बिक्री पर रायका से) 41 रजा लाग (मेघवालों से) 42 पाद्गरी (मवेशी की आधी खाल) 43 आवल (चमड़ा रंगने वाले मेघवालों से) 44 कम्बल (रम्गी) लाग 45 भाडा-लाग (साग-सब्जी उगाने वाले माली से) 46 मटका (कुम्हार से) 47 पुरिया लाग (ऊंटों के टोला वालों से प्रतिवर्ष एक या दो टोडिया ऊंट) 48 चावलिया (दूध-लाग) प्रति सप्ताह हर दौजे बार किसान को बारी आती थी। मेहमान आने पर ज्यादा वसूल होता था। 49 घोड़ा रातब (इस लाग में किसानों से दूध, मक्खन, घी, घोड़े व बछड़ों के लिए लिया जाता था) 50 हगली-कुदनिया कुंवर या भंवर के जन्म पर 51 कामा लाग (गांव के किसी के घर जीमण सामूहिक मिष्ठान्न भोजन-शादी, त्यौहार, मौसर आदि पर होता था तब जागीरदार से लेकर सभी कारिंदों व कमीणों के करीब बीस काम लगते थे। दस सेर से लेकर ढाई मण तक मिठाई के काम वसूल किये जाते थे। 52 शलोका लाग (शादी की बन्दोली पर) 53 जवारी लाग (शादी के बाद जुहार करने जाने पर नजराना देना पड़ता था), 54 हुकमनामा लाग (जागीरदार के देहान्त पर), 55 मकीया (कातीसरा साख के भुट्टे), 56 घास भारी (मवेशी चराई) 57 जवारिया (घोड़ों के लिए हरी घास का चारा), 58 कजावा व माटी लाग (कुम्हारों से) 59 फडका (यह अनाज की लाग थी), और करीब 20 तरह के पडके लगते थे। कमचारिया मेहमानों, त्यौहारों व अमल-तम्बाकू के नाम पर वसूल किये जाते थे। 60 लूग-पापडी (रायका से) 61 हल लाग 62 माव 63 हाली 64 उछाला लाग 65 कूडा थपाई 66 जाडी लाग 67 मावली लाग 68 तलवटी, 69 रंगरेज 70 धाबी 71 खरडाकर लाग 72 मुकनमा लाग 73 मेला लाग 74 खेरणी पर लाग, 75 परवाना या शुकराना बारात 76 दरखत काटने की लाग 77 तेल लाग (दीपावली पर) 78 ताला छपाई (व्यापारी से) 79 तवारी लाग 80 नाता लाग 81 नालेर, 82 गज छपाई 83 हुकम बाब 84 घाणी लाग, 85 खड़ला कड 86 मेहनराई 87 चौकी लाग 88 नीवा लाग, 89 जगडा लाग 90 नजराना लाग 91 डूंगरी लाग, 92 हाथी लाग 93 दानी लाग, 94 किमया लाग 95 मान चौथाई 96 कमूला लाग, 97 होमा लाग, 98 किवाड़ी लाग, 99 दहेज लाग, 100 सगणा लाग 101 हाटडी लाग 102 पिराई लाग, 103 पाग लाग, 104 चवरी लाग, 105 दापालाग 106 धुवाड़ा लाग 107 चौधर लाग 108 बसवायन सामा पंसेरियान लाग 109 धवण लाग 110 धूंगी लाग 111 रामा-सामा लाग 112 पड़ाव लाग 113 कमीया लाग, 114 अगराई लाग, 115 कमठा लाग 116 कोठारी खर्च लाग 117 गरगड़ी या गधे की लाग 118 खोखडी लाग 119 घी लाग 120 घोड़ा की कर लाग, 121 वापारा परवाना लाग 122 बीला लाग, 123 चावली लाग 124 मूछा लाग 125 जाजम रा रुपया लाग 126 काल लाग 127 हारी पूजन लाग, 128 पेपड़ी या छाणा लाग, 129 भागवत की लाग 130 नूता लाग 131 पीलाणी लाग 132 परिया लाग 133 कम्बला लाग 134 अरोमी लाग, 135 माहिरा लाग 136 मुजरा लाग 137 हजूर करमाइश लाग 138 गाह लाग 139 राखी लाग 140 रुमाल लाग।

और भी अनगिनत लागें कहीं कुछ और कहीं कुछ मनमानी दर से वसूल होती थी और किसान व आमजन को बेबसी की हालत में अपनी सारी कमाई से हाथ धोने को मजबूर कर दिया जाता था। सचमुच ही उस जमाने का काश्तकार दासता, दरिद्रता, दुःख, पराधीनता और असहायता का पशुवत जीवन बिता रहा था। न उसके खेत थे और न घरों के ही मुस्तकिल पट्टे थे। खेत एवं घर से बेदखल किया जाना आमबात थी। इसलिए उसे जागीरदार के कारिन्दों की दया पर ही रहना पड़ता था। स्पष्ट है लड़ाई

'लाग-बाग' का एक रोचक पर सही उदाहरण

एक ठाकुर साहब घोड़ी पर सवार हो गांव के चारों ओर दौड़ रहे थे। तभी एक चबूतरे से टकरा कर ठाकुर गिर पड़े। घोड़ी मर गई और ठाकुर घायल हो गये। गांव के लोग एकत्रित हो ठाकुर साहब से कुशल पूछने रावले में गये। ठाकुर साहब ने कराहते हुए घोड़े के मरने पर बहुत शोक व्यक्त किया और कहा—रुपये भी नहीं है नयी घोड़ी कहां से लाऊं? इस पर गांव वालों ने प्रेमवश उन्हें 500 रुपया उधार देना स्वीकार कर लिया। और, इस तरह तभी से 'घूडचड़ी' नाम की लाग गांव के प्रत्येक परिवार से वसूल होने लग गई।



स लाग-बाग की मार अधिक थी। लूकट स लूकड की दुम भारी थी।

कहने का ता यह कहा जाता है कि देशी राजा रजवाडा क वक्त म कोई टक्स नही था पर ये लागें तथा बेगार बेनामी टैक्स ऐसे थ, जिनस ब्राह्मण व राजपूता के अलावा शायद ही कोई बचा हो। किसाना क अलावा भी अन्य कौमा पर या तो कतिपय लागें लगी हुई थी या बेगारी म अपन आपका खपाना पडता था। महाजन और व्यापारी वग का भी कई लागें नक्दी के रूप म देने के अलावा जागीरदार के यहा मेहमाना के लिए रसोडा का सामान तोलकर पहुचाना पडता था। उसके लिए बिस्तर, पलग खाट पहुचाने होत थ और कांसा मारणा लाग ता थी ही। ये सारी लागें व जबरन वसूली जागीरी प्रथा समाप्त होने पर गाव-गाव म हुए आदोलन के फलस्वरूप बद हुई।

सामन्ती-युग और बेगार-प्रथा

हकीकत म तो बेगार प्रथा दास प्रथा का ही एक रूप है। जागीरी गावा म ज्या ज्यो जागीरदार की आवश्यकता बढती गई त्या-त्या प्रजा स बेगार म काम लने की मात्रा भी बढती गई। बिना मजदूरी या एवजाना दिय काम लने की प्रथा का नाम ही बेगार है। जागीरी गावा मे हर व्यक्ति का न्यूनाधिक मात्रा म बेगार म काम करना पडता था। पर कुछ जातियाँ ता एसी थी जिन्ह बेगार मे दिन रात पिसना पडता था। मेघवाल सरगरा आदि वग जो भूमिहीन मजदूर थे उन्ह तो बेगारी ही माना जाता था। रावले के काम के लिए जब चाहे बुला लिया जाता था। जागीरदार की फसल कटाई का काम हो सभी के लिए मुफ्त जूत सिलाई एव अन्य चमडे का काम हो ऊँट घाडा के लिए रिजका, घास चारा लाने का काम हो घोडो के लिए दाना दलिया तैयार करना हो रसोड के लिए अनाज पिसाई का काम हो, सन्देश, चिट्ठी-पत्री लाने ल जाने का काम हो कपडे धाने का काम हो घाडा व मवेशी की देख रेख एव सफाई का काम हो वह सब इन्ही लोगा को बारी-बारी से बेगार म करना पडता था।

किसाना की बैलगाडिया जागीरदार का सामान लाने व ले जाने एव मेहमाना के लिए रात दिन बारी-बारी से बेगार म बुलाई जाती थी। इसी तरह दर्जी मुफ्त म सभी के—जागीरदार के परिवार एव उनके कमचारी-कारिन्दा के कपडे सीते थे। नाइयो को न केवल हजामत बनाने का काम करना पडता था वरन् रसोई बनाने व बरतन साफ करने का काम भी करना पडता था। कुम्हार मिट्टी के घडे व बरतन देता और मकान बनाने व मरम्मत के लिए ईटें देने के अलावा सारा पानी भरता था। सुथार न केवल खाट बाजोट, पाट फर्नीचर आदि लक्डी का सामान मुफ्त मे बनाकर देता था, वरन् रसोडा की नित्य काम आने वाली लक्डी भी फाडता था। कारीगर मकान बनात या मरम्मत का काम करत थे, लुहार लाहे का सारा सामान बनाकर देत एव मरम्मत करत। सुनार साने के जेवर बनात और मजदूरी बेगार म करते थ। रायका लाग जागीरदार की मवेशी रेवड आदि मुफ्त मे चरात ग्वाले का काम करत दूध दुहने का काम करत और मेहमाना के आने पर अथवा त्यौहारा पर बकरा देत और खाल व ऊन भी मुफ्त म देनी पडती थी। मेणा चौकीदारी करत उन्ह रोज हाजरी देनी पडती थी। हरिजन सफाई बुहारी करते और धोबी कपडे धाने का काम करत और माली रोज देवताओ के लिए रावले म फूल लाता। उसे रसोड के लिए साग

अहिंसक शक्ति की अपूर्व विजय

बाली मे जोहड की 7000 बीघा गोचर भूमि को महाराजा जोधपुर ने अपनी निजी सम्पत्ति घोषित कर अपने चहेते लोगो को हाईकोर्ट के स्थगन आदेश के विपरीत इनायत कर दी। बाली की मवेशी को चरने से रोक दिया गया। जन-आन्दोलन को दबाने और आतंकित करने के उद्देश्य से पूर्व-महाराजा हनवंतसिंहजी के द्वितीय पुत्र हुकमसिंह जी 50–60 कारिन्दो सहित शस्त्रो से सज्जित हो गोचर भूमि मे जा पहुचे। वहा बाली के प्रमुख क्रान्तिकारी मोहनराजजी पशुपालको के एक बृहद सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। जब लोगो को भय से विचलित होते नहीं देखा तो हुकमसिंह जी आव देखा न ताव मोहनराजजी पर पीछे से तलवार से वार करने के लिए आगे बढे। तभी आम जनता उत्तेजित हो गई। तत्काल मोहनराजजी ने पीछे मुडकर गजब का साहस व फुर्ती दिखायी और हुकमसिंहजी के तलवार पकडे हाथ की कलाई को इतनी ताकत के साथ पकडा कि उठा हुआ तलवार वाला हाथ वहीं का वहीं रह गया और जन आक्रोश के आगे तलवार वापिस म्यान मे चली गई। उन्हें अपने घर का रास्ता लेना पडा।

श्री छोटमलजी सुराणा बद्रीनारायणजी शर्मा असलम भाई, बुधारामजी डागी, बाबूभाई रावल आदि बाली नगर के अनेक मुखियाओ ने एकत्रित जन समूह को शात और अनुशासन मे बनाये रखा अन्यथा कुछ भी घटित हो सकता था। हिंसक आक्रमण पर अहिंसक शक्ति की यह एक उल्लेखनीय विजय थी।



जिसम नाई, दर्जी, ढोली, सरगरा, मघवाल, हरिजन, मणा माली, कुम्हार ग्वाला 27 मलवा लाग 28 पूला लाग (ये पूल जागीरदार के बीस के करीब कारिंदा व कमीणा को दिय जाते थ), 29 खरडा (रोकडे म), 30 मुगी लाग 31 चरली, 32 खात रली (सुथार-लुहार पर) 33 हाटडी (माची मेघवाल पर) 34 घाणी, 35 उबरिया 36 चहीला (बलगाडी), 37 खाजरू (रायका पर बकरा लाग), 38 खाद या उखरडी लाग (रायका पर), 39 गरिया या गड्डा (रायका स ऊन क घाणा के बडल) 40 तलावट (ऊन की बिक्री पर रायका स) 41 रजा लाग (मघवाला स) 42 भादूरी (मवशी की ग्राधी खाल), 43 ग्रावल (चमडा रगने वाल मेघवाला स) 44 वदणा (रस्सी) लाग, 45 ग्रोडा लाग (साग-सब्जी बेचन वाल माली म) 46 मटका (कुम्हार स) 47 कुरिया लाग (ऊटा क टाला वालो स प्रतिवष एक या दा टोडिया ऊट) 48 चावलिया (दूध-लाग) प्रति सप्ताह हर दाज वाल किसान की बारी ग्राती थी। मेहमान ग्रान पर ज्यादा वसूल हाता था। 49 घोडा रातब (इस लाग म किसाना स दूध मक्खन घी घाडा व बछडा क लिए लिया जाता था) 50 हसली-कु डलिया, कु वर या कवर क जन्म पर 51 कासा लाग (गाव के किसी क घर जीमण सामूहिक मिष्ठान्न भोजन-शादी त्यौहार मासर ग्रादि पर होता या तब जागीरदार स लकर सभी कारिंदा व कमीणा क करीब बीस कास लगत थ। दस सेर स लकर ढाई मण तक मिठाई क कासे वसूल किये जात थ। 52 गलोका लाग (शादी की बन्दौला पर) 53 जवारी लाग (शादी के बाद जुहार करन जाने पर नजराना दना पडता था), 54 हुकमनामा लाग (जागीरदार क दहान्त पर), 55 मकीया (कातीसरा साख क भुट्टे) 56 घास मागी (मवेशी चराई), 57 जवारिया (घोडा क लिए हरी घास का चारा) 58 कजावा व माटी लाग (कुम्हारा स) 59 फडका (यह ग्रनाज की लाग थी) ग्रौर करीब 20 तरह क फन्दे लगत थ। कम धारिया मेहमाना त्यौहारा व ग्रमल-तम्बाकू क नाम पर वसूल किय जात थ। 60 लूग-पापडी (रायका स) 61 हल लाग 62 माच, 63 हाली 64 उछाला लाग 65 कूडा थपाई 66 जाडा लाग 67 भावली लाग 68 तलवटी 69 रगरज 70 धावी 71 खरडाकर लाग 72 सुगनमट लाग 73 मला लाग, 74 मेरणी पर लाग, 75 परवाना या सुकराना बागत, 76 दरखत काटने की लाग 77 तल लाग (दीपावली पर) 78 ताला छपाइ (व्यापारी स) 79 तवारी लाग 80 नाता लाग 81 नालर, 82 मन छाप 83 हुकुम बाच 84 घाणी लाग 85 सडला कड 86 मेहतराई 87 चौका लाग 88 नीवा लाग 89 जगडा लाग, 90 नजराना लाग 91 गूगरी लाग, 92 डावी लाग 93 दाती लाग, 94 बिसवा लाग, 95 खात चौथाई, 96 झडूला लाग, 97 होला लाग, 98 विवाडी लाग, 99 दहज लाग, 100 मेरणा लाग 101 हाटडी लाग 102 पिवाई लाग, 103 पाग लाग, 104 पवरी लाग, 105 दापा लाग, 106 धुवाडा लाग, 107 चौधर लाग 108 बसरायत ताला पसरियान लाग, 109 धवणा लाग 110 चुगी लाग 111 रामा-सामा लाग, 112 पडाव लाग, 113 पदीया लाग 114 ग्रसराई लाग, 115 कमठा लाग, 116 कोठारी खच लाग 117 खरगनी या गध की लाग 118 खोचडी लाग, 119 घी लाग 120 घोडा की फेर लाग, 121 पायोरा परवाना लाग 122 चीला लाग, 123 चावनी लाग 124 चूडा लाग 125 आजम रा रुपया लाग 126 भार लाग 127 डारी पूजन लाग 128 पेपडी या छाणा लाग, 129 थाणायत की लाग 130 नूता लाग 131 पीलाणी लाग, 132 पेरिया लाग 133 बन्दोला लाग 134 मरोती लाग, 135 माहिरा लाग 136 मुजरा लाग 137 हजूर फरमाइश लाग 138 साड लाग 139 रासी लाग 140 रसाल लाग।

ग्रौर भी ग्रनगिनत लागें कहीं कुछ ग्रौर कहीं कुछ मनमानी दर स वसूल हाती थी ग्रौर किसान व ग्रामजन को बेबसी की हालत म ग्रपनी सारी कमाई स हाथ धोने को मजबूर कर दिया जाता था। सचमुच ही उस जमान का काश्तकार दासता दरिद्रता, दुख, पराधीनता ग्रौर ग्रसहायता का पशुवत जीवन बिता रहा था। न उसके खेता के ग्रौर न घरो के ही मुस्तकिल पट्टे थे। खेत एव घर स बेदखल किया जाना ग्रामबात थी। इसलिए उस जागीरदार के कारिन्दा की दया पर ही रहना पडता था। स्पष्ट है लटाई

'लाग-बाग' का एक रोचक पर सही उदाहरण

एक ठाकुर साहब घोडी पर सवार हो गाव के चारो ग्रोर दौड रहे थे। तभी एक चबूतरे से टकरा कर ठाकुर गिर पडे। घोडी मर गई ग्रौर ठाकुर घायल हो गये। गाव के लोग एकत्रित हो ठाकुर साहब से कुशल पूछने रावल मे गये। ठाकुर साहब ने कराहते हुए घोडे के मरने पर बहुत शोक व्यक्त किया ग्रौर कहा-रुपये भी नहीं हैं नयी घोडी कहा से लाऊँ? इस पर गाव वालो ने प्रेमवश उन्हें 500 रुपया उधार देना स्वीकार कर लिया। ग्रौर, इस तरह तभी से 'घुडचडी' नाम की लाग गांव के प्रत्येक परिवार से वसूल होने लग गइ।



से लाग-बाग की मार अधिक थी। लूकड से लूकड की दुम मारी थी।

कहने को तो यह कहा जाता है कि देशी राजा रजवाड़ों के वक्त में कोई टैक्स नहीं था पर ये लागें तथा बेगार बेनामी टैक्स ऐसे थे, जिनसे ब्राह्मण व राजपूतों के अलावा शायद ही कोई बचा हो। किसानों के अलावा भी अन्य कौमों पर या तो कतिपय लागें लगी हुई थी या बेगारी में अपने आपको खपाना पड़ता था। महाजन और व्यापारी वर्ग को भी कई लागें नकदी के रूप में देने के अलावा जागीरदार के यहां मेहमानों के लिए रसोडा का सामान तोलकर पहुंचाना पड़ता था। उसके लिए विस्तर, पलंग खाट पहुंचाने होते थे और कांसा भाणा लाग तो थी ही। ये सारी लागें व जबरन वसूली जागीरी प्रथा समाप्त होने पर गांव गांव में हुए आन्दोलन के फलस्वरूप बन्द हुई।

सामन्ती युग और बेगार-प्रथा

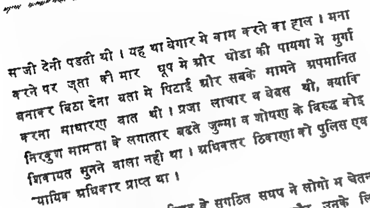
हकीकत में तो बेगार प्रथा दास प्रथा का ही एक रूप है। जागीरी गांवों में ज्यों ज्यों जागीरदार की आवश्यकता बढ़ती गई, त्यों-त्यों प्रजा से बेगार में काम लेने की मात्रा भी बढ़ती गई। बिना मजदूरी या एवजाना दिये काम लेने की प्रथा का नाम ही बेगार है। जागीरी गांवों मे हर व्यक्ति को न्यूनाधिक मात्रा मे बेगार मे काम करना पड़ता था। पर कुछ जातियाँ तो ऐसी थी जिन्हें बेगार मे दिन रात पिसना पड़ता था। मेघवाल सरगरा आदि वर्ग जो भूमि हीन मजदूर थे उन्हें तो बेगारी ही माना जाता था। रावले के काम के लिए जब चाहे बुला लिया जाता था। जागीरदार की फसल कटाई का काम हो सभी के लिए मुफ्त जूते सिलाई एवं अन्य चमड़े का काम हो ऊँट घोड़ों के लिए रिजका, घास चारा लाने का काम हो घोड़ों के लिए दाना, दलिया तैयार करना हो, रसोड़े के लिए अनाज पिसाई का काम हो, सन्देश चिट्ठी पत्री लाने ले जाने का काम हो कपड़े धोने का काम हो घोड़ों व मवेशी की देख रेख एवं सफाई का काम हो वह सब इन्हीं लोगों को बारी-बारी से बेगार में करना पड़ता था।

किसानों की बैलगाड़ियां जागीरदार का सामान लाने व ले जाने एवं मेहमानों के लिए रात दिन बारी-बारी से बेगार मे बुलाई जाती थी। इसी तरह दर्जी मुफ्त मे सभी के—जागीरदार के परिवार एवं उनके कर्मचारी-कारिन्दों के कपड़े सीते थे। नाइयों को न केवल हजामत बनाने का काम करना पड़ता था वरन् रसोई बनाने व बरतन साफ करने का काम भी करना पड़ता था। कुम्हार मिट्टी के घड़े व बरतन देता और मकान बनाने व मरम्मत के लिए ईंटें देने के अलावा सारा पानी भरता था। सुथार न केवल खाट, बाजोट, पाट फर्नीचर आदि लकड़ी का सामान मुफ्त मे बनाकर देता था वरन् रसोडा की नित्य काम आने वाली लकड़ी भी फाड़ता था। कारीगर मकान बनाते या मरम्मत का काम करते थे लुहार लोहे का सारा सामान बनाकर देते एवं मरम्मत करते। सुनार सोने के जेवर बनाते और मजदूरी बेगार में करते थे। रायका लोग जागीरदार की मवेशी रेवड़ आदि मुफ्त मे चराते ग्वाले का काम करते दूध दुहने का काम करते और मेहमानों के आने पर अथवा त्यौहारों पर बकरा देते और खाल व ऊन भी मुफ्त में देनी पड़ती थी। मेणा चौकीदारी करते उन्हें रोज हाजरी देनी पड़ती थी। हरिजन सफाई बुहारी करते और धोबी कपड़े धोने का काम करते और माली राज देवताओं के लिए रावले में फूल लाता। उसे रसोड़े के लिए साग

अहिंसक शक्ति की अपूर्व विजय

बाली मे जोहड़ की 7000 बीघा गोचर भूमि को महाराजा जोधपुर ने अपनी निजी सम्पत्ति घोषित कर अपने चहेते लोगों को हाईकोर्ट के स्थगन आदेश के विपरीत इनायत कर दी। बाली की मवेशी को चरने से रोक दिया गया। जन-आन्दोलन को दबाने और आतंकित करने के उद्देश्य से पूर्व-महाराजा हनवतसिंहजी के द्वितीय पुत्र हुकमसिंह जी 50–60 कारिन्दों सहित शस्त्रों से सज्जित हो गोचर भूमि मे जा पहुंचे। वहां बाली के प्रमुख क्रान्तिकारी मोहनराजजी पशुपालकों के एक बृहद सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। जब लोगों को भय से विचलित होते नहीं देखा तो हुकमसिंह जी आव देखा न ताव मोहनराजजी पर पीछे से तलवार से वार करने के लिए आगे बढ़े। तभी आम जनता उत्तेजित हो गई। तत्काल मोहनराजजी ने पीछे मुड़कर गजब का साहस व फुर्ती दिखायी और हुकमसिंहजी के तलवार पकड़े हाथ की कलाई को इतनी ताकत के साथ पकड़ा कि उठा हुआ तलवार वाला हाथ वहीं का वहीं रह गया और जन-आक्रोश के आगे तलवार वापिस म्यान मे चली गई। उन्हें अपने घर का रास्ता लेना पड़ा।

श्री छोटमलजी सुराणा बद्रीनारायणजी शर्मा असलम भाई, कुपारामजी डागी, बाबूभाई रावल आदि बाली नगर के अनेक मुखियाओं ने एकत्रित जन समूह को शांत और अनुशासन मे बनाये रखा अन्यथा कुछ भी घटित हो सकता था। हिंसक आक्रमण पर अहिंसक शक्ति की वह एक उल्लेखनीय विजय थी।



सब्जी देनी पडती थी। यह था बेगार मे काम करने का हाल। मना करने पर जूता की मार धूप मे और घोडा की पायगा मे मुर्गा बनाकर बिठा देना यता मे पिटाई और सबके सामने अपमानित करना साधारण बात थी। प्रजा लाचार व बेबस थी, क्योंकि निरकुश सामन्ता के लगातार बढते जुल्मा व शोषण के विरुद्ध कोई शिकायत सुनने वाला नही था। अधिकतर ठिकाणा को पुलिस एव न्यायिक अधिकार प्राप्त था।

काग्रेस एव लोक परिषद के सगठित सघष ने लोगो म चेतना जागृत की उन्ह अपने अधिकारो का बोध हुआ और उनके लिए गाव-गाव मे आन्दोलन हुए और जागीरी प्रथा की समाप्ति के साथ ही शोषण की ये तीना प्रक्रियाए– लटाई लाग बाग और बेगार प्रथा समाप्त हुई।

भूमि-सुधार आन्दोलन

लटाई लाग-बाग व बेगार प्रथा के विरुद्ध तीव्र जन आन्दोलन के फलस्वरूप सवत 2005 म मारवाड के जागीरी गावा म भी भू प्रबन्ध का काय प्रारम्भ करना पडा था ताकि किसानो को खालसा गावा की भाँति काश्तकारी (खातेदारी) पटटे मिल सकें लगान रोकड म निश्चित हो तथा बेदखलिया से उनको छुटकारा मिल सके। पर जागीरदारा ने भू प्रबन्ध (सेटलमेन्ट) के विरुद्ध मोर्चा कायम किया और खिवसर ठाकुर की अध्यक्षता मे सगठित होकर सेटलमेन्ट का काय ही रोक दिया। जोधपुर महाराजा को खिवसर ठिकाने पर फौज व घुडसवार भेजकर रुका हुआ काय करवाना पडा। इधर माण्डराव ठाकुर एव कुवर ने मिन्दह गाव के पास जवाई बाँध की नहर का काम यह कहकर बलपूवक रोक दिया कि हमारी जागीरी की भूमि म सरकार का नहर नही खोदन देंगे। इन सरदारो को भी बाली किले म बद रखा गया तभी काय आगे बढा। पर जागीरदारो द्वारा निकट भविष्य म राजशाही एव जागीर प्रथा का अन्त होते देखकर सन् 1948 म सखवास ठाकुर के नेतृत्व म एक विशाल जुलूस दस हजार स भी अधिक सशस्त्र लोगा का जोधपुर शहर मे आयोजित किया गया जिसमे सखवास ठाकुर माधोसिंह हाथ म तलवार लिये घोडे पर सवार थे और अन्य जागीरदार तथा उनके सहयोगी राजपूत पदल थे, लेकिन इस बल प्रदशन का मारवाड की ग्रामीण जनता के दिल पर भारी उल्टा प्रभाव हुआ और प्रगतिशील ताकतों और लोक-परिषद् को अपना आन्दोलन तेज करने का अवसर मिल गया।

केन्द्र म काग्रेस की राष्ट्रीय सरकार बन चुकी थी, अत धीरे धीरे जागीरदारो पर भी देशी राज्या म अकुश लग रहे थे। लोग जागरूक होकर मुकाबला कर रहे थे। भूमि-बन्दोबस्त की प्रगति के साथ-साथ पाली जिले म बेदखलियो का जुल्म बढ रहा था। काश्तकारा को उनकी अच्छी उपज देन वाली कब्जाशुदा पुश्तनी भूमियो-बेरा मे बेदखल कर जागीरदार स्वय अपने नाम खातेदारी म लिखाना चाहते थे। इसी सिलसिले म ग्राम इदरवाडा मे चौधरी मूलाराम को मारा गया और उसकी मदद म दौडे देवली पाबूजी के काग्रेस कायकर्ता रामेश्वरजी रामगोपालजी, रामजीलालजी आदि पर बन्दूको से हमला कर उन्ह घायल कर दिया गया। ऐसी अनेक घटनाओ के फलस्वरूप जोधपुर राज्य म उन्ही दिना म बनी लोक प्रिय सरकार ने बेदखलियो को रोकने से पूव एक एक परिपत्र परगना हाकिमा के नाम जारी किया और फिर मारवाड टिनेन्सी प्रोटेक्शन आर्डिनेन्स जारी किया। इससे किसानो को कानूनी सरक्षण प्राप्त हुआ। सन् 1948 म ही लटाई लाग-बाग एव बेगार प्रथा समाप्ति हेतु आदेश जारी हुए। गावा म कायलाना दरबार तथा जागीरदारा के सुरक्षित शिकार क्षेत्र भी समाप्त किये गये। सभी ठिकानो मे हो रहे अमानुषिक जुल्मा एव अत्याचार के पीछे कामदार व उनके मातहत काम करने वाले कारिन्दा की विकृत बुद्धि काम करती थी और अधिकतर ठाकुर लोग ऐश आराम, नशा-पत्ता सर-सपाटा या शिकार मे मशगूल रहते थे। कामदार और कमचारी मनमाना शोषण करते थे। इसने कई जागीरदारा की पूव-पीढिया के भारी त्याग व बलिदाना पर पानी फेरकर जागीरदार वग को हमेशा के लिए लोगा की नजरा से गिरा दिया था।

सन् 1952 मे जागीरदारी उन्मूलन कानून बना तो जागीरदारो ने भूस्वामियो का आन्दोलन छेड दिया। बाली जिले मे निम्बोरानाथ महादेव स्थान पर इन्होने अपना शिविर स्थापित किया जहाँ से प्रतिदिन सत्याग्रहिया का एक जत्था नारे लगाता हुआ बाली बाजार म निकलता और गिरफ्तारियाँ देकर जेल भेज दिया जाता। इस आन्दोलन के प्रतिक्रिया-स्वरूप बाली स मोहनराजजी ने भूमि-पुत्र नामक हस्तलिखित एक पृष्ठीय दनिक पर्चा निकालना शुरू किया जिसका सम्पादन विजयमलजी कुराणा करते थे। उसम जागीरी प्रथा समाप्ति के पक्ष म लेख होते थे और सत्याग्रहियो तथा अन्य प्रमुख लोगा म उसकी प्रतिया वितरित की जाती थी। □

□□

वन्दे मातरम्



:4:

पाली जिले मे भूमि-सुधार तब और अब

□ श्री सुखवीरसिंह गहलोत □

प्रथम विश्व महायुद्ध क पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस यह समझ गई थी कि केवल विदेशी गुलामी से छुटकारा पाना ही उसका उद्देश्य नही होना चाहिये बल्कि वास्तविक स्वराज्य के लिए देश के जमीदारा, जागीरदारा पूंजीपतिया आदि मे भी छुटकारा दिलाने पर ही भारतीय जनता को असली स्वतन्त्रता प्राप्त हा सकती है। वास्तव म भारतीय स्वतन्त्रता की समस्या किसाना का जमीदारो, जागीरदारा आदि स मुक्त कराने से गुथी हुई थी। नवजाग्रत किसान वग का साथ लेन के लिये यह आवश्यक था कि उनका आश्वासन दिया जावे कि विदेशी शासन के अन्त के साथ साथ जमीदारी व जागीरदारी प्रथा का अन्त करना भी आवश्यक होगा। अत मई 1929 मे अखिल भारतीय काग्रेस समिति न यह प्रस्ताव पारित किया कि—'भारतीय जनता की गरीबी व बुरी हालत को दूर करन के लिए और जनता की दशा सुधारन के लिए आवश्यक है कि समाज के वतमान आर्थिक व सामाजिक ढाचे म क्रातिकारी परिवतन किये जावें और घोर असमानताए दूर की जावें।" इसी कारण काग्रेस के कराची अधिवेशन म महात्मा गाधी ने यह प्रस्ताव पारित कराया कि किसाना के मूल अधिकारा म 'कृषि-लगान अथवा कृपक द्वारा दिये जाने वाल राजस्व म पर्याप्त कटौती और अमितव्ययी क्षेत्रो म ऐसे काल तक के लिए, जितना आवश्यक समझा जावेगा लगान माफी और जहा कही आवश्यक समझा जावगा—छाटे जमीदारा को जो इस कटौती स प्रभावित होगे सहायता दी जावेगी।

बाद के वर्षों म गाधीजी न एक नया नारा लगाया कि समस्त भूमि गोपाल की है। हरिजन" के 2 जनवरी 1936 के अक मे उन्होंने लिखा कि हमारे पूवजो द्वारा हम वास्तविक समाजवाद प्राप्त हुआ है जिन्होने हमे सिखाया कि समस्त भूमि गोपाल की है। तब सीमा की रेखा कहा है? मनुष्य ही उस रेखा को बनाने वाला है तथा वही उसे मिटा भी सकता है। गोपाल का शाब्दिक अथ ग्वाले से है लेकिन इसका अथ भगवान से भी है। आधुनिक भाषा मे इसका तात्पय राज्य अथवा जनता स है। यह कहना कि आजकल भूमि जनता की नही है यह भी सत्य ही है। इसी कारण 1942 म "भारत छोडा' प्रस्ताव मे यह घोषणा भी की गई कि काग्रेस का उद्देश्य देश म एसी सरकार की स्थापना करना है जो कि किसाना मजदूरो व अन्य वर्गो की सही सेवा कर सके और सर्वोच्च सत्ता भी उसी म निहित हो।

"भारत छोडा प्रस्ताव पारित करने के बाद ही काग्रेस के सभी नेता गिरफ्तार कर लिय गय और जब वे छोडे गय तब शीघ्र ही सरकार न चुनावा की घोषणा कर दी। अत 1946 के चुनावा के समय काग्रेस ने अपन घोषणापत्र म बतलाया कि भूमि पद्धति म सुधार, जो कि हिंदुस्तान म अत्यावश्यक है, के लिए आवश्यक है कि राज्य व किसान के बीच मध्यस्था को हटाया जाव और इसलिए ऐसे मध्यस्था क अधिकार उनका उचित मुआवजा देकर छीन लिए जावे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् काग्रेस ने जी सी कुमारप्पा की अध्यक्षता मे एक भूमि सुधार समिति बनाई जिसन काफी जाच-पडताल के पश्चात् जुलाई 1948 मे अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसकी कुछ मुख्य सिफारिशें निम्नलिखित थी—

1 भारत की ग्रामीण अथ-व्यवस्था म मध्यस्था क लिए कोई स्थान नही रहना चाहिए। भूमि पर भूमि जोतने वाले का ही अधिकार रहना चाहिए।

2 सिवाय विधवाआ नाबालिगा अथवा अन्य अपाहिज व्यक्तिया के भूमि को किसी को शिकमी काश्त पर देने स रोका जाना चाहिये।

3 जो व्यक्ति 6 वष तक लगातार भूमि जोतता चला आ रहा है उसका स्वाभाविक रूप से खातेदारी अधिकार प्राप्त हो जाना चाहिये।

समिति ने यह भी सिफारिश की कि भूमि जोतन वाले का भूमि पर स्थाई हस्तातरण करने योग्य व पैतक अधिकार केवल निम्न शर्तों पर प्राप्त होने चाहियें—

(क) भूमि शिकमी काश्त पर नहीं दी जाव।

(ख) केवल उसी व्यक्ति को भूमि दी जाय जो वास्तव म काश्त करता हो।



बाद के वर्षों म कई प्रस्तावा व उद्गारा म काग्रेस द्वारा इन भूमि सम्बधी प्रस्तावा का बार बार दोहराया गया और राज्यो की काग्रेसी सरकारा को इन सुधारा का कार्यान्वित करने के लिये कहा गया। नासिक काग्रेस के अधिवेशन मे स्पष्ट शब्दा म घोषणा की गई कि जमीदारी जागीरदारी व अन्य प्रकार के सामन्तवाद का शीघ्रातिशीघ्र उन्मूलन किया जाय।

यह थी काग्रेस की नीति भूमि सुधारा के लिय। उसकी क्रियान्विति तो राज्य को ही करनी थी। अत अब हम राजस्थान की भूमि सम्बधी समस्याओ की ओर ध्यान देवें।

स्वातन्त्र्य-पूर्व राजस्थान में जागीर-प्रथा का स्वरूप

सन् 1949 के पूर्व राजस्थान विभिन्न छोटी-बडी रियासता म बटा हुआ था। इन रियासता की भूमि दो बडे भागा—खालसा व जागीरा म बटी थी। खालसा भूमि म काश्तकार का सीधा सबध रियासत से था लेकिन जागीर क्षेत्रा म काश्तकार का सीधा सबध जागीरदार स था। जागीर भूमि धारण प्रणाली को आठ श्रेणिया मे विभक्त किया जा सकता था—जागीर जूना जागीर, ग्राम, धर्मार्थ अनुदान भोमियाचारा ईनाम सेवा अनुदान तथा स्थायी लगान मुक्त जागीरें व भूमियां भुम्बा मुकौती मूबा इस्तमरारी आदि। राजस्थान म तब 50 126 वग मील भूमि खालसा के अन्तगत थी तो 77 118 वग मील भूमि जागीरो के अन्तगत थी।

जागीरदारा व शासको के बीच म सम्बन्ध विभिन्न रियासता म विभिन्न प्रकार के थे। कही-कही तो उनको अपने क्षेत्र म पूर्ण अधिकार प्राप्त थे और अन्य स्थाना पर उनको बिना किसी राजनतिक प्रभाव के अथवा जनपदाय सत्ता के केवल राजस्व अभिहस्तान्तरियो की श्रेणी म खदेड दिया गया था। समस्त भूमि राजा अथवा जागीरदार को राजस्व प्रदान करती थी। भूमि म कृषक का व्यक्तिगत अधिकार नही के बराबर था। जहा पर बन्दोबस्त नही हुआ था वहा पर कृषको के भूधारण अधिकारा की व्याख्या सही रूप से करना आसान नहा था। यद्यपि कानून स काश्तकार के कोई सुरक्षित अथवा मान्य अधिकार नही थे फिर भी विधि या प्रथा के अनुसार वह अपनी भूमि म स्थायी व वशानुगत अधिकार रखता था जब तक कि वह लगान देता था। जिन क्षेत्रा म भू धारण शिथिल और अस्पष्ट था और जहा अधिक लगान प्रचलित था वहा काश्तकार की स्थिति खेत जोतने वाले नौकर के समान थी। काश्तकार की स्थिति उन स्थाना म और भी खराब थी जहा पर लगान जिन्स म (लाटकर) लिया जाता था। जहा पर राजस्व फसल की अनुमानित मात्रा पर (कूंतकर) लिया जाता था वहा उसका अनुमान मनमाने ढग से लगाया जाता था और कही-कही बीघा की मात्रा पर और कही-कही हल क आधार पर भी लिया जाता था। इन सबके अलावा काश्तकारा को कई प्रकार की लाग बागें देनी पडती थी, जिनका दन के बाद काश्तकार के पास उपज का आधा हिस्सा भी नही रहता था। इनके अलावा काश्तकारा से बेगार भी ली जाती थी। बेगार का कोई समय नियत नही था। खालसा क्षेत्र म सरकारी कर्मचारी सरकारी काय म तथा जागीरी गावा के जागीरदार व उनके कारिन्दे मनचाहे जब काश्तकारा को बेगार निकालने को विवश कर दत थ। जो उनके आदेशा का नही मानता था उसके लिए काठ की सजा या जूता की मार तैयार थी। इससे किसान बडे परेशान थ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति क कुछ वर्षों पहले काफी लाग बागें समाप्त कर दी गइ लकिन जागीरी गावा म ये चलती ही रही। य लाग-बागे पूर्णतया राजस्थान टिनेंसी एक्ट के 1955 म लागू होन के बाद ही समाप्त हुई। बेगार के विषय म आन्दोलन स्वतन्त्रता पूर्व काल म काफी चला और रियासती सरकारा ने बेगार प्रथा को गरकानूनी भी घोषित कर दिया, लकिन बेगार सरकारी अधिकारी लेते ही रहे। इसी प्रकार जागीरी गावा म भी बेगार ली जाती रही। यह अवश्य हुआ कि उच्च जातियां काफी सीमा तक बेगार से छूट पा गइ लेकिन पिछडी जातियो से, और वह भी गरीबो से, बेगार ली जाती रही।

सन् 1952 म राजस्थान मे जागीरदारी उन्मूलन कानून बना और उसके फलस्वरूप सन् 1965 के अत तक 6,09 575 जागीरा का उन्मूलन कर दिया गया। कुछ जिला म जमीदारिया व बिस्वेदारिया भी थी। ऐसी 3,18,860 जमीदारिया सन् 1960 तक समाप्त कर दी गई।

पाली जिले मे भूमि सुधार

इस प्रकार काग्रेस की भूमि सुधार सम्बन्धी नीतिया का पालन करते हुए राजस्थान म भूमि सुधार लागू किये गये और वह प्रक्रिया अब भी चालू है। इन भूमि सुधारा के कारण काश्तकार कितने लाभान्वित हुए, यह हम देखना है। राजस्थान क 27 जिला म काश्तकारो की स्थिति को देखकर यहा हम केवल एक जिला पाली के ही भूमि सुधारो पर गौर करेंगे।

पाली जिल का निर्माण 1949 म हुआ था। तब इसका केवल 23 प्रतिशत भाग खालसा था, शेष 77 प्रतिशत भाग जागीर भूमियो मे बटा था। ऐसी जागीरें 10 433 थी जो बाद म



पुनगहीत कर ली गइ । जागीरा के पुनग्रहण के बाद सभी जागीरी भूमियो पर सीधा नियन्त्रण सरकार का हो गया लेकिन मन्दिरा की डोली भूमिया मन्दिरो के पुजारिया के ही नियन्त्रण म रही। राजस्थान काश्तकारी अधिनियम के तहत अधिनियम लागू होने क समय काश्त करन वालो को खातेदार घोषित कर दिया गया लेकिन मन्दिरा की डोली भूमि के काश्तकार खातदार नही माने गये। इस कारण वे पुजारियो की मर्जी स ही काश्त कर सकते है और उनकी इच्छा के अनुसार उपज का हिस्सा लगान के रूप म देते आ रहे ह। अत मन्दिरो के पुजारी अभी भी उन भूमिया के नियन्त्रक बने बैठ हैं।

राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 म लागू हो गया और तब जो भी रेकाड म काश्तकार दज थे वे खातेदार बन गय। तब यह नही देखा गया कि रेकाड म दज काश्तकार वास्तव म काश्त करते है या भूमिहीन मजदूरा म काश्त कराते है। अत हजारा मजदूर काश्तकार भी शिकमी काश्तकार ही रह गए। उन भूमिया के खातेदार नये जागीरदार बन गय हैं जो अपने शिकमी काश्तकारो से मनमाना लगान (ज्यादातर उपज का तिहाई या चौथाई भाग) लेते गये। ये नय जागीरदार या तो बडे-बडे राजनेता या उद्योगपति हैं या अफसर है जो ज्यादातर नगरा म रहते है और केवल लगान लेने गावा मे चले आते हैं। काश्तकार बने ये लोग अपने को खातेदार काश्तकार बतलाकर अपना काला धन सफेद करते रहत है। इस प्रकार हजारा वास्तविक काश्तकार अभी भी गरीब व भूमिहीन हैं।

जागीरी उन्मूलन के समय जागीरदारा के पास हजारा बीघा भूमि खुदकाश्त म रहने दी गई। इनके काश्तकार भी भूमिहीन होने पर भी खातेदार नही बन सके। वे अभी भी भूतपूर्व जागीरदारो को उपज का काफी बडा भाग देकर ही खेती कर पात है। या सीलिंग कानून बनाकर काफी भूमि बडे जागीरदारा व खातदारो से लेने का प्रयत्न किया गया लेकिन बहुत कम भूमिहीन काश्तकार लाभ उठा सके। आज भी वे भूमिहीन काश्तकार अपने भूतपूर्व जागीरदारा (वड खातेदारा) के मजदूर बन हुए ह।

जहा तक लागबागा व बेगार का सवाल है पहले जैसी बात नही है। फिर भी पाली जिले के गावा म पिछडी जाति क काश्तकारा की आर्थिक व सामाजिक स्थिति विशप सुधरी नही ह। गावा म अब भी सामन्तीकाल के समय म प्रचलित छुआछूत व अन्य उत्पीडन चलता आ रहा ह और इसके प्रमाण है साडराव मणिहारी बिरामी आदि के तथाकथित सामन्ता के अत्याचार जो प्रतिदिन हम समाचार पत्रा म पढ़ते आ रहे ह। सन् 1949 म साडेराव के सामन्त की सामन्तवादी नीति की सभी नता भत्सना करते थे और अब भी (1986 म) नता उसी प्रकार भत्सना कर रहे ह। तब क्या इन 40 वर्षों म भूमि पर स्वय काश्त करन वाल इन ग्रामीणा की सामाजिक व आर्थिक दशा सुधरी है ? यह एक चुनौती है हम सबके लिए।

जागीरदारा के नौकरा—कामदार नयाब कणवारिया आदि का काश्तकारा क साथ दुर्व्यवहार पहल होता था तथा उनके द्वारा नाजायज बेदखलिया होती था। वह अब अवश्य कम हो गया है लेकिन पिछडी जाति के काश्तकारा के साथ अब भी पटवारिया गिरदावरा आदि का जैसा व्यवहार होता ह वह भुक्तभोगी काश्तकार ही जानते ह। इस विषय म न लिखना ही उचित है। आज भी ऊपर करतार है तो नीचे पटवार कहावत गाव-गाव म प्रचलित है। आज आवश्यकता इस बात की है कि भूमि पर काश्त करन वाले का सरकार से सीधा सम्बन्ध हो। बन्धुआ मजदूर हाली भूमिहीन काश्तकार शिकमी काश्तकार आदि नाम के काश्तकार होने ही नही चाहिए। वतमान कानून के अनुसार काश्तकारा की श्रेणिया होनी चाहिए—खातदार या गरखातदार। सभी पटवारी ग्राम पचायत के नियन्त्रण म काम करें। तब ही भूमि सुधारा से वास्तविक काश्तकार पूणतया लाभान्वित हो सकेंगे। तब ही समाजवाद का नारा सफल हो सकेगा। □

सुनने वाला कौन था ?

ग्राम दांतीवाडा के चौधरी टीकमजी को कालना ठाकुर ने बलगाडी लेकर चाणोद ठाकुर की सेवा मे बेगार मे भेजा। वहा पहुचने पर टीकमजी को दूसरे काम म लगा दिया गया। टीकमजी ने बताया—उस बेगार से ६ माह बाद वे घर लौटे। लगभग साल भर उनका खेत-कुआं सूना पडा रहा। परिवार की हालत खस्ता हो गई, पर सुनने वाला और देखने वाला कौन था ?



: 5 :

पाली जिले मे स्वतन्त्रता-आन्दोलन के बढते चरण

आऊवा के प्रथम स्वातंत्र्यवीर खुशालसिंहजी

सन 1857 का प्रथम ऐतिहासिक आजादी का युद्ध ग्राम आऊवा और बिठोड़ा की भूमि पर अंग्रेजी फौजो और आऊवा तथा आस-पास की जागीरी सेनाओ के बीच आऊवा के ठाकुर खुशालसिंहजी के नेतृत्व मे लड़ा गया था। अंग्रेजी सेनापति मेसन का सिर काट कर आऊवा गाव के दरवाजे पर लटकाया गया था। यह इस बात का द्योतक था कि अंग्रेजी साम्राज्यवाद के प्रति लोगो मे कितना रोष था, क्योकि अंग्रेजी साम्राज्यवाद ने सारे देश व देशी रियासतो के राजाओ के स्वाभिमान को कुचल दिया था। आऊवा के स्वातन्त्र्य युद्ध के इस गीत को गाव-गाव मे लोग झूम झूम कर गाते है —

1

भल्ले आऊवो

वाणियो वाली गावर माय कालो लोग पड़ियो ओ
राजाजी रे मैला तो फिरगी लड़िया ओ
काली टोपी रो।

हं ओ काली टोपी रो, फिरगी फलाव कीधो ओ
काली टोपी रो।

बारला तोपां रा गोला धूड़गढ़ मे लागे ओ
मायली तोपा रा गोला तंबू तोड़े ओ
भल्ले आऊवो।

हं ओ भल्ले आऊवा आऊवो धरती रो धाको–२ ओ,
भल्ले आऊवो।

मायला तोपा तो छूटे आडावला–२ धूजे ओ,
आऊवे रा नाथ तो सुगाली–४ पूजे ओ
झगड़ो आदरियो।

हे ओ झगड़ो आदरियो आऊवो झगड़ा ने बाको ओ
झगड़ो आदरियो।

राजाजी रा मोतिया काला रे सार चौड़ ओ
आऊवो रा घोड़ा तो पछाड़ी तोड़े ओ,
हे ओ झगड़ो हुवे न दो, झगड़ो हुवे न दो थारो जीत हुवे ला ओ
झगड़ो हुवे न दो।

2

मुजरो ले लेनी

मुजरो ले लेनी बावलिया होली रग राची
मुजरो ले लेनी।

मायां री सिकारमा थारो हाकम चढ़िया ओ
गोली रा मांगेड़ा भाई भाखर मिलायो ओ,
मुजरो ले लेनी।

मुजरो ले लेनी, बावलिया होली रग राची,
टोलो रो टीकायत टल मे गोरा लेने आया ओ
कोट री बुरजा रे माथ ढोल घुराया ओ
मुजरो ले लेनी।

मुजरो ले लेनी बावलिया होली रग राची
मुजरो ले लेनी।

भाला रा भलकासु बेल्या गोरा टोव म आया ओ
धाड़ा री टापा सु टणक तोप चलाया ओ,
मुजरो ले लेनी।

मुजरो ले लेनी बावलिया, होली रग राची।
मुजरो ले लेनी।

टोली रा टिकायत टल मे, गोरा सामा आया ओ,
कोट रे कगूरे–२ बठया आया, गोला खाया ओ,
मुजरो ले लेनी।

मुजरो ले लेनी बावलिया, होली रग राची,
मुजरो ले लेनी।



भाल र भलका मे भाया, तरवारा न तोली स्रो,
धरती रा दुश्मन सू भिडया, चाली गोली स्रो,
मुजरो ले लेनी ।

लोह र निठिया सू भाया, चादी गोली चाली स्रो,
तोरा रा तरणाटा सू, स्रा धरती हाली–2 स्रो,
मुजरो ले लेनी ।।

एरिनपुरा छावनी मे विद्रोह

स्राऊवा के युद्ध के पूव एरिनपुरा (छावनी), मौजूदा सुमेरपुर व शिवगज शहर म स्थित अग्रेजी फौज की छावनी के जोधपुर रीजन के सिपाहिया ने विद्रोह कर स्राग लगा दी स्रौर शस्त्रागार लूट कर खाड के रास्ते स्राऊवा पहुचे जहा उन्ह ठाकुर कुशालसिहजी का नेतृत्व मिला, जिससे अग्रेजा के इशारे पर जोधपुर महाराजा ने स्रपनी फौज स्राऊवा के ठाकुर से लडने के लिए रवाना कर दी, पर पाली के निकट हुए युद्ध म जोधपुर की सेना के दो सेनापति स्रनारसिंह एव राजमल मारे गये । तब अग्रेजा ने स्रजमेर से स्रपनी फौज रवाना की पर ठाकुर कुशालसिंह की फौज ने स्राक्रमण कर उसे हरा दिया । जोधपुर महाराजा ने अग्रेजा के स्रादेश पर स्राऊवा की जागीरी जब्त कर ली । अग्रेजा ने पुन भारी सेना लेकर हमला किया स्रौर भीषण गोलाबारी के कारण भारी नर-सहार हुस्रा । स्राऊवा गाव तहस नहस हा गया । ठाकुर कुशालसिंह व उनके साथी पहाडिया म छिपकर अग्रेजो से बदला लेने की योजनाएँ बनान लगे, पर वे सफल नही हो सके ।

बाली क्षेत्र के स्रादिवासी भील-गरासियों का विद्रोह

बाली क्षेत्र से लगे हुए मेवाड (उदयपुर जिला) के स्रादिवासी ग्रामा म मोतीलालजी तजावत न लाग-बाग व शोषण के विरुद्ध स्रान्दोलन छेड रखा था । उसका प्रभाव बाली क्षेत्र के नाना बेडा जागीरी गावो पर पडना स्वाभाविक था । स्रादिवासी गावो मे शोषण के विरुद्ध सवप्रथम विद्रोह का शख बजाया । सन् १९२१ २२ म श्री छोटमलजी सुराणा (बाली) ने उन्ह स्रौर सहयोग दिया । पाली के प भूलचन्दजी भटट ने गरासियो के सहयोग से इन गावो मे विद्रोह इतना तेज हो गया कि स्थानीय ठाकुर-जागीरदार भी भयभीत हो गये । तब जोधपुर महाराज श्री उम्मेदसिंह ने ७ जनवरी १९२२ को स्रपनी फौज (रिसाला) भेजकर उस विद्रोह को दबा दिया ।

पाली मे सेवा-मण्डल की स्थापना

सन् १९३१ मे पाली म श्री जेठमल राठी व श्री भुवनचन्द जैन के नेतृत्व म सेवामण्डल की स्थापना हुई । इस सस्था का उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए काय करना था । इन्होने पाठशालाम्रो एव वाचनालया की स्थापना कर वडा महत्वपूण काय किया । इसके पूव श्री जयनारायण व्यास तथा स्रानन्दराजजी सुराणा द्वारा स्थापित मारवाड हितकारिणी सभा के प्रतिनिधि के रूप म छोटमलजी सुराणा (बाली) मूलचन्दजी भट्ट (पाली) व हरिभाई किकर ने काय प्रारभ कर दिया था ।

मारवाड प्रजा-मण्डल की स्थापना

स्व जयनारायण व्यास द्वारा पुष्कर मे गठित मारवाड प्रजा-मण्डल की एक शाखा सन् 1934 म पाली मे खोली गयी । यह विशुद्ध राजनीतिक मच था । इसकी स्थापना म स्व० स्रभयमल जन (जोधपुर), श्री मानमल जन (जोधपुर) तथा स्व० स्रचलेश्वर प्रसाद शर्मा (जोधपुर) का विशेष सहयोग रहा । पर यह सस्था शुरू मे ही सरकार के दमन का शिकार बन गयी स्रौर इसकी गतिविधियो को दबा दिया गया ।

उद्योग मण्डल की स्थापना

क्रान्तिकारी विचारा के धनी श्री फतेहराज पुरोहित कराची (स्रब पाकिस्तान) से पाली स्राये स्रौर छद्म रूप से राजनतिक गतिविधिया चलाने की दृष्टि स उद्योग मदिर, पाली नामक सस्थान की स्थापना की । पाच छतरिया नामक स्थान पर सवश्री फतहराज जोशी जेठमल राठी चिमनीराम कुमावत, मूलचन्द भट्ट, मुजफ्फर करीम रामचन्द्र स्राय स्रादि कायकर्ता मिलते स्रौर मीटिंगा मे राजनैतिक गतिविधियो के विभिन्न कायक्रमो की योजनाएँ बनात ।

मारवाड लोक परिषद् की स्थापना

सन् 1938 मे मारवाड लोक परिषद् की स्थापना हुई स्रौर तत्काल ही पाली सादडी, सुमेरपुर, बाणेराव, सोजत चण्डावल, निमाज, बगडी, रायपुर म मारवाड लोक परिषद् की शाखाएँ स्थापित कर उत्तरदायी शासन की माग रखी गयी स्रौर सारे जिले म प्रमुख कायकर्ताम्रो ने प्रचार का काय तेज कर दिया । बाली म स्व० छोटमल सुराणा सादडी मे श्री फूलचन्द बाफना एव सुमेरपुर म श्री बी एल राजगुरु, बाणेराव म कन्हैयालालजी वदिक सोजत-बगडी म माठालालजी काका चण्डावल म मागीलालजी स्रालीशान निमाज जतारण म श्री माधोलाल क्रान्तिकारी ने नेतत्व प्रदान कर जन-जागृति पैदा की ।

रायपुर, सोजत, बगडी, चण्डावल, निमाज स्रादि राष्ट्रीय चेतना स्रौर सामन्तशाही के विरुद्ध विद्रोह के सशक्त केन्द्र बनत चले गये । पूरे पाली जिले म क्राति की लहर जाग उठी स्रनेको बलिदान हुए तो सघष की लोम हषक घटनास्रो ने जन्म लिया । स्रागे के पृष्ठा म उन्ही प्रमुख घटनाम्रो को विस्तार मे दिया जा रहा है—



स्वतन्त्रता-संघर्ष की प्रमुख घटनायें

पाली जिले में स्वाधीनता आन्दोलन की गतिविधियाँ दिनों दिन बढ़ती गयी और ग्राम ग्राम में ज्यों ज्यों नये कार्यकर्ता जुड़ते गये लोक परिषद् की शाखाएं स्थापित होती गयी और सामन्ती जुल्मों के खिलाफ आन्दोलन जोर पकड़ता चला गया। पाली जिले में मुख्य तया बगडी, सोजतरोड, चण्डावल, रायपुर, निमाज, चाणोद, दयाली, पाबूजी आदि ऐसे गांव थे जहां संगठित रूप से लम्बी अवधि तक आन्दोलन चले और मारवाड़ लोक परिषद् के नेताओं के अलावा पाली, सादड़ी, सोजत, सूदाज, खारेराव, बाली, निमाज, सोजत रोड, चण्डावल आदि ग्रामों के प्रमुख कार्यकर्ताओं से सामन्ती प्रथा विरोधी आन्दोलनों को मार्गदर्शन एवं नेतृत्व मिलता था। इन आन्दोलनों और इनमें भूमिका निभाने वाले सेनानियों तथा कार्यकर्ताओं का संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है

रायपुर

जनता का ऐतिहासिक कूच

रायपुर की दमन और शोषण से पीडित जनता जब ठिकाने के अत्याचारों से तंग आ गई तब सैकड़ों की तादाद में ग्रामवासी जोधपुर दरबार श्री उम्मेदसिंहजी को जो उन दिनों सरदारसमन्द आये हुए थे अपनी दुःख भरी दास्तान सुनाने दिनांक 17.11.41 को पैदल ही चल पड़े। इस पद-यात्रा में स्त्री-पुरुष मिलकर 400 से अधिक व्यक्ति थे और नेतृत्व कर रहे थे गांव रायपुर के सेठ फूसालाल जी और लालचन्दजी पगारिया। दरबार ने जोधपुर जाकर प्रधानमंत्री डोनाल्ड फील्ड से मिलने को कहा। वहां से काफी लोग पैदल ही जोधपुर पहुंचे पर वहाँ नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुने? तीन दिन तक रायपुर के लोग भटकते रहे। फिर मारवाड़ लोक परिषद् के तत्वावधान में 21.11.41 को गिरदीकोट में इस उपलक्ष्य में सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री जयनारायण व्यास, मथुरादास माथुर, अचलमल महता आदि नेताओं के भाषण हुए और सुनवाई न होने पर रायपुर ठिकाणे के जुल्मों के खिलाफ सत्याग्रह करने का एलान किया। फलस्वरूप चीफ मिनिस्टर ने तारीख 25.11.41 को 'लाग-बाग जांच कमेटी' को रायपुर भेजा।

कार्यकर्ताओं को देश निकाला

रायपुर जागीरदार का शोषण चरमसीमा पार कर गया था। मनमाने ढंग से मुकद्दमे बनाकर जुर्माना, मवेशियों को फाटक में डाल देना, काश्तकारों का मरद छीनकर बेगार में गाडी लेकर मेहमानों की खातिर तवज्जह में कई दिनों तक बाहर भेज देना सुथारों से दिन भर लकड़ी फड़वाना, कुम्हारों से पानी भरवाना, रेगरों से दिन-रात ऊंट घोड़ों के चारा मंगवाना और इस बेगार के लिये गांव का कामदार लठ लिये सारे दिन घूमता रहता। लोगों को रोटी भी पूरी नसीब नहीं थी। इन हालातों को बदलने के लिये कमर कसी सर्वश्री मखदुमबक्शजी, सरदारबक्शजी, भगवतीप्रसादजी, गफ्फारबक्षजी, पूसालालजी, लालचन्दजी, जमालुद्दीनजी, जब्बार बक्षजी, सिरवी हीराजी परिहार, जीयाजी रावणाराजपूत, गंगारामजी माली, सदारबक्षजी, रसीदबक्षजी आदि कार्यकर्ताओं ने। इन लोगों को न केवल गुण्डों द्वारा पिटाई करायी गई और झूठे मुकद्दमे चलाये गये वरन जागीरदार की शिकायत पर छः प्रमुख कार्यकर्ताओं– सर्व श्री भगवतीप्रसादजी, जमालुद्दीनजी, लालचन्दजी, पूसालालजी, गफ्फारबक्सजी, मखदुमबक्षजी को जोधपुर दरबार ने जरिये आदेश सं 4952 सी बी दिनांक 27 मई, 1944 को डिफेंस ऑफ इण्डिया रूल्स की धारा 26 (1) डी के तहत रायपुर ठिकाणे के ग्रामों में प्रवेश न करने का आदेश जारी कर दिया। कई दिनों तक तो कुछ कार्यकर्ता जंगल में स्थित फतहगढ़ के किले और कोटवास के गढ़ में चोरी छिपे रहे फिर भारत के आजाद होने पर ही रायपुर लौट सके।

मृतकों को श्मशान घाट ले जाने की मनाई

रायपुर में मृतकों को श्मशान तक ले जाने का कदीमी रास्ता रोककर उस रास्ते से न ले जाने का आदेश ठिकाणे ने दिनांक 19.3.41 को जारी किया और आम रास्ते पर फाटक लगाकर रास्ता रोक दिया। इस नादिरशाही आदेश ने सारे गांव में असन्तोष की आग फैला दी। धारा 144 जाब्ता फौजदारी लगा दी गई। रायपुर के मुखिया आगेवानों को गढ़ में बुला कर बिठा दिया, पर लोग नहीं माने।

रायपुर लोक परिषद की शाखा स्थापित

ऐसी विकट परिस्थितियों में दिनांक 28.3.41 को मारवाड़ लोक-परिषद् के नेता सर्वश्री जयनारायणजी व्यास, मथुरादासजी माथुर आदि रायपुर आये और लोक-परिषद् की शाखा स्थापित कर श्री गणेशमलजी को अध्यक्ष एवं श्री किशनलालजी को मंत्री चुना गया। अगले दिन रेल्वे स्टेशन से रायपुर तक विशाल जुलूस निकालकर सभा की गई। इसके बाद तो दमनचक्र जोर से चला।

गुण्डों द्वारा हमला और सभा भंग

परेशान होकर लोक-परिषद् के प्रमुख कार्यकर्ता श्री गफ्फारबक्षजी ने मारवाड़ लोक-परिषद् नेता श्री जयनारायणजी



व्यास को आमंत्रित किया। दिनाक 22-4-41 को दरवाजे के बाहर 5000 से अधिक लोगो की विराट सभा श्री गणेशमलजी की अध्यक्षता मे हुई। रायपुर ठाकुर गोविंदसिंह जी ने आसपास के ग्राम करमावास निम्बडा, लिलाम्बा, सवलपुर, चावडिया से अपने पिटठू व भाडे के गुण्डो को इकट्ठा किया। ज्यो ही जयनारायणजी व्यास भाषण देने खडे हुये करीब 200 गुण्डो ने सभा मच पर हमला कर दिया। गफ्फारबक्षजी व उनके भाइयो सहित अनेक कायकर्ता घायल हुये, पर श्री जयनारायण जी व्यास को सुरक्षित बचा लिया गया। सभा मे एकत्रित जनसमूह ने हिम्मत रखी और हमलावरो को लाठिया और तलवारें छोडकर भागना पडा। ठाकुर के आदमियो ने श्री मोहनदास साद व उनकी पत्नी पर भी हमला कर बुरी तरह घायल कर दिया। इनका इलाज जोधपुर मे विडम अस्पताल मे कराया गया। मारपीट के विरोध-स्वरूप रायपुर मे दिनाक 29 4 41 को सम्पूर्ण हडताल रखी गई।

प्रमुख कार्यकर्ता

रायपुर क्षेत्र के जिन कार्यकर्ताओ ने सामन्ती जुल्मो से टक्कर ली उनमे कतिपय अन्य प्रमुख कायकर्ता श्री रामस्वरूपजी वद्य, राणीलालजी, घीसूलालजी, पुखराजजी गुप्ता, श्रीरामजी माहेश्वरी, घीसूलालजी छीपा रामाजी सीरवी मणदरामजी दरजी, शकरलालजी (बाबरा), दामोदरजी कच्छवाह (सेंदडा), अमरचदजी बोहरा, लालचदजी बोहरा श्री गेनारामजी चौधरी भूरा रामजी सुथार कानमलजी जैन आदि प्रमुख थे।

पीपलिया गाव मे लोक-परिषद के अध्यक्ष थे श्री प्रेमराजजी बोहरा और प्रमुख कायकर्ता रतनलालजी चौधरी। श्री सुखलालजी सणचा भू० पू० विधायक रायपुर ने आजादी के पश्चात् इस क्षेत्र के निर्माण मे जागृति लाने मे साहस व लगन से काय किया है। स्वर्गीय सम्पतराजजी शाह ने न केवल पीपलिया को एक उद्योग नगरी बना दिया अपितु रायपुर पचायत समिति के प्रधान पद पर रहते हुए अनेक विकास काय करवाये।

बर के श्री देवराजजी चौहान (प्रधान पचायत समिति रायपुर) व स्वर्गीय श्री बाबूलालजी (पूव सरपच) ने बडी लगन व परिश्रम से सामन्ती तत्वो का मुकाबला किया। सेन्दडा के प० नन्दलालजी नानणा गाव के गजराजजी जन पेमारामजी सेन, किशनारामजी सेन रूघारामजी सुथार, पूनारामजी सुथार एव गिरी गाव के श्री रामसुखजी सानार, बिजारामजी छीपा, अमरचन्दजी सवग जीवराजजी ताराचन्दजी रेगर तथा श्री अलीभाई व शकरलालजी बाबरा गाव (चाग) की सेवायें भी नही भुलाई जा सकती।

देवली रायपुर मे नगर काग्रेस कमेटी के सन् 1948-49 के लिए निम्नानुसार चुनाव हुए —सभापति-श्री मिश्रीलाल कटारिया, मत्री—श्री चपालाल कालानी प्रचार मत्री — श्री पुष्पेन्द्र भाला कोषाध्यक्ष — श्री रामजस।

सोजत-बगडी-चण्डावल

लोक जागृति की राजधानी—सोजत

स्वाधीनता के आन्दोलन मे सोजत की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इस क्षेत्र ने सर्वाधिक स्वतन्त्रता सनानी दिये है और वर्षों तक लगातार आन्दोलन को चलाये रखने का श्रेय भी लगभग इसी नगर के कार्यकर्ताओ को जाता है।

दि० 26 1 41 की शाम को कचहरी के पास श्री गुमानमल सिंघी के सभापतित्व मे आयोजित आम-सभा मे मारवाड लोक परिषद के नेता जयनारायणजी व्यास मथुरादासजी माथुर, किशोरमलजी मेहता के भाषण हुए। लोक परिषद की काय शैली एव जिम्मेवार हुकूमत की माग पर प्रकाश डाला गया। इसी समय मे म्यूनिसीपेलिटी की माग रखी गई और सोजत परगना लोक-परिषद के निम्नानुसार चुनाव हुए

> अध्यक्ष— श्री अनराजजी सिंघी मत्री— श्री मुन्नालालजी वद्य (सोजत) कोषाध्यक्ष-श्री विजयशकरजी शर्मा (सोजत रोड) सदस्यगण— श्री मीठालालजी त्रिवेदी, श्री नटवरलालजी, श्री रूपचन्दजी वद्य, श्री हरिरामजी ओझा, श्री भरूलालजी स्वणकार व श्री मागीलालजी व्यास।

लोक-परिषद का विस्तार

सोजत मे ही सन् 1941 की मारवाड लोक-परिषद की प्रतिनिधि-सभा का प्रथम अधिवेशन हुआ, जिसमे मारवाड के विभिन्न हिस्सो से सैकडो प्रतिनिधि एव सदस्य एकत्रित हुए। पाली से सवश्री सुमेरराज जी डागा, सोजत से हरिशकरजी ओझा व मागीलालजी आय सेंदडा से मीठालालजी त्रिवेदी, बाली से छोटमलजी सुराणा एव मोडारामजी, जतारण से अमरचन्दजी बोहरा, गणेशमलजी सक्लेचा, शकरलालजी माहेश्वरी तथा देसूरी से कन्हैयालालजी वदिक व अनोपचन्दजी पूनमिया ने प्रतिनिधित्व किया।

उस वर्ष लोक-परिषद् का विस्तार निम्न स्थानो पर किया गया—सोजत शहर, सोजत रोड, बगडी राणावास कन्टालिया चन्डावल मारवाड जक्शन, जैतारण, निम्बाज दवली, गिरी नानणा, खिनावडी, बाली, मुण्डारा सुमेरपुर कोट खीमेल, सादडी घाणेराव, नाडोल, रानी, पाली एव सेन्दडा।



स्वतन्त्रता-सघर्ष की प्रमुख घटनायें

पाली जिल म स्वाधीनता आदालन की गतिविधियाँ दिना दिन बढती गयी और ग्राम ग्राम मे ज्या-ज्या नय कायकर्ता जुडत गय लोक परिषद् की शाखाए स्थापित हाती गयी और सामन्ती जुल्मा क खिलाफ आन्दालन जार पकडता चला गया। पाली जिल म मुख्य तया बगडी भोजतरोड चण्डावल रायपुर, निमाज चाणोद दवली पाबूजी आदि एस गाव थ जहा सगठित रूप स लम्बी अवधि तक आन्दोलन चल और मारवाड लाक परिषद् क नताआ क अलावा पाली सादडी साजत गुदाज घाणेराव बाली, निमाज, साजत रोड चण्डावल आदि ग्रामा क प्रमुख कायकर्ताआ स सामन्ती प्रथा विरोधी आन्दालना का मार्गदर्शन एव नतृत्व मिलता था। इन आन्दालना और इनम भूमिका निभान वाल सनानिया तथा कायकर्ताआ का सक्षिप्त विवरण यहा दिया जा रहा ह

रायपुर

जनता का ऐतिहासिक कूच

रायपुर की दमन और शाषण स पीडित जनता जब ठिकाणे क अत्याचारा स तग आ गई तब सकडा की तादाद म ग्रामवासी जोधपुर दरबार श्री उम्मदसिहजी का जा उन दिना सरन्दरसमन्द आय हुए थ अपनी दु ख भरी दास्तान सुनाने दिनाक 17 11 41 का पदल ही चल पडे। इस पद-यात्रा म स्त्री-पुरुष मिलकर 400 स अधिक व्यक्ति थ और नतृत्व कर रहे थ गाव रायपुर क सेठ पूनालाल जी और लालचन्दजी पगारिया। दरबार न जोधपुर जाकर प्रधानमत्री डोनाल्ड फील्ड स मिलन का कहा। वहा स काफी लाग पैदल ही जाधपुर पहुच पर वहाँ नक्कारखान म तूती की आवाज कौन सुन ? तीन दिन तक रायपुर क लाग भटकत रह। फिर मारवाड लाक परिषद् क तत्वावधान म 21 11 41 का गिरदीकाट म इस उपलक्ष्य म सावजनिक सभा का आयाजन किया गया जिसम सवश्री जयनारायण व्यास मथुरादास माथुर अभयमल महता आदि नताआ के भाषण हुय और सुनवाई न हान पर रायपुर ठिकाण क जुल्मा के खिलाफ सत्याग्रह करन का एलान किया। फलस्वरूप चीफ मिनिस्टर न तारिख 25 11 41 का 'लाग-बाग जाच कमटी' का रायपुर भेजा।

छ कायकर्ताओ को देश निकाला

रायपुर जागीरदार का शाषण चरमसीमा पार कर गया था। मनमान ढग स मुकदम बनाकर जुमाना मवशिया का फाटक म डाल दना काश्तकारा का अरट छुडाकर बगार म गाडी लकर मेहमाना की खातिर तवज्जह म कई दिना तक बाहर भेज दना सुथारा से दिन भर लकडी फडवाना, कुम्हारा से पानी भरवाना, रेगरो स दिन रात ऊट घोडा के चारा मगवाना और इस बेगार क लिये गाव का भाम्बी लठ लिये सारे दिन घूमता रहता। लोगा का राटी भी पूरी नसीब नही थी। इन हालाता को बदलने के लिय कमर कसी सवश्री मखदुमबक्शजी, सरदारबक्शजी, भगवतीप्रसादजी गफ्फारबक्शजी पूनालालजी, लालचन्दजी, जमालुद्दीनजी, जब्बार बक्शजी सिरवी हीराजी परिहार, जीयाजी रावणाराजपूत,गगारामजी माली, सदाबक्शजी रसीदबक्शजी आदि कायकर्ताआ ने। इन लागा को न केवल गुण्डा द्वारा पिटाई करायी गई और झूठे मुकद्दमे चलाये गय, वरन जागीरदार की शिकायत पर छ प्रमुख कायकर्ताओं– सव श्री भगवतीप्रसादजी, जमालुद्दीनजी लालचन्दजी पूनालालजी, गफ्फारबक्शजी मखदुमबक्शजी को जोधपुर दरबार ने जरिये आदेश स 4952 सी बी दिनाक 27 मई 1944 को डिफेन्स आफ इण्डिया रूल्स की धारा 26 (1) डी के तहत रायपुर ठिकाण के ग्रामा म प्रवेश न करन का आदेश जारी कर दिया। कई दिना तक ता कुछ कायकर्ता जगल म स्थित फतहगढ क किले और दीपवास के गढ म चोरी छिप रहे, फिर भारत के आजाद हाने पर ही रायपुर लौट सके।

मृतकों को श्मशान घाट ल जाने की मनाई

रायपुर म मृतका का श्मशान तक ल जान का कदीमी रास्ता रोककर उस रास्त स न ल जान का आदेश ठिकाण ने दिनाक 19 3 41 का जारी किया और आम रास्ते पर फाटक लगाकर रास्ता राक दिया। इस नादिरशाही आदेश ने सारे गाव म असन्तोष की आग फला दी। धारा 144 जाब्ता फौजदारी लगा दी गई। रायपुर के मुखिया आगवानो का गढ मे बुला कर बिठा लिया, पर लोग नही माने।

रायपुर लोक परिषद की शाखा स्थापित

इसी विकट परिस्थितिया मे दिनाक 28 3 41 को मारवाड लाक-परिषद् के नता सवश्री जयनारायणजी व्यास मथुरादासजी माथुर आदि रायपुर आय और लोक-परिषद् की शाखा स्थापित कर श्री गणेशमलजी को अध्यक्ष एव श्री किशनलालजी का मत्री चुना गया। अगले दिन रेल्वे स्टेशन स रायपुर तक विशाल जुलूस निकालकर सभा की गई। इसके बाद तो दमनचक्र जार से चला।

गुण्डों द्वारा हमला और सभा भग

परेशान हाकर लाक-परिषद् के प्रमुख कायकर्ता श्री गफ्फारबक्शजी ने मारवाड लोक-परिषद् नेता श्री जयनारायणजी



व्यास को आमन्त्रित किया। दिनाक 22–4–41 को दरवाजे के बाहर 5000 से अधिक लोगो की विराट सभा श्री गणेशमलजी की अध्यक्षता मे हुई। रायपुर ठाकुर गोविन्दसिंह जी ने आसपास के ग्राम करमावास, निम्बेडा लिलाम्बा, सबलपुर, चावडिया से अपने पिटठू व भाडे के गुण्डो को इकट्ठा किया। ज्यो ही जयनारायणजी व्यास भाषण देने खडे हुये करीब 200 गुण्डो ने सभा मच पर हमला कर दिया। गफ्फारबक्शजी व उनके भाइयो सहित अनेक कार्यकर्ता घायल हुये पर श्री जयनारायण जी व्यास को सुरक्षित बचा लिया गया। सभा मे एकत्रित जनसमूह ने हिम्मत रखी और हमलावरो को लाठिया और तलवारे छोडकर भागना पडा। ठाकुर के आदमियो ने श्री मोहनदास साद व उनकी पत्नी पर भी हमला कर बुरी तरह घायल कर दिया। इनका इलाज जोधपुर मे विडम अस्पताल मे कराया गया। मारपीट के विरोध-स्वरूप रायपुर मे दिनाक 29 4 41 को सम्पूर्ण हडताल रखी गई।

प्रमुख कार्यकर्ता

रायपुर क्षेत्र के जिन कार्यकर्ताओ ने सामन्ती जुल्मो से टक्कर ली उनमे कतिपय अन्य प्रमुख कार्यकर्ता श्री रामस्वरूपजी वैद्य, रागीलालजी घीसूलालजी, पुखराजजी गुप्ता, श्रीरामजी माहेश्वरी घीसूलालजी छीपा रामाजी सीरवी अणदरामजी दरजी, शकरलालजी (बावरा) दामोदरजी कच्छवाह (सेंदडा) अमर चदजी बोहरा लालचदजी बोहरा, श्री गेनारामजी चौधरी, भूरा रामजी सुथार कानमलजी जैन आदि प्रमुख थे।

पीपलिया गाव मे लोक-परिषद के अध्यक्ष थे श्री प्रेमराजजी बोहरा और प्रमुख कार्यकर्ता रतनलालजी चौधरी। श्री सुखलालजी सेणचा भू० पू० विधायक रायपुर ने आजादी के पश्चात् इस क्षेत्र के किसानो मे जागृति लाने मे साहस व लगन से कार्य किया है। स्वर्गीय सम्पतराजजी शाह ने न केवल पीपलिया को एक उद्योग नगरी बना दिया, अपितु रायपुर पचायत समिति के प्रधान पद पर रहते हुए अनेक विकास कार्य करवाये।

बर के श्री देवराजजी चौहान (प्रधान पचायत समिति, रायपुर) व स्वर्गीय श्री बाबूलालजी (पूर्व सरपच) ने बडी लगन व परिश्रम से सामन्ती तत्वो का मुकाबला किया। सेन्दडा के प० नन्दलालजी, नानणा गाव के गजराजजी जैन, पेमारामजी सेन किशनारामजी सेन रुघारामजी सुथार पूनारामजी सुथार एव गिरी गाव के श्री रामसुखजी सोनार, बिजारामजी छीपा अमर चन्दजी सेवग, जीवराजजी, ताराचन्दजी रेगर तथा श्री अलीभाई व शकरलालजी बावरा गाव (चाग) की सेवायें भी नही भुलाई जा सकती।

देवली रायपुर मे नगर काग्रेस कमेटी के सन् 1948–49 के लिए निम्नानुसार चुनाव हुए –सभापति–श्री मिश्रीलाल कटारिया मत्री–श्री चपालाल कालानी प्रचार मत्री – श्री पुष्पेन्द्र भाला कोषाध्यक्ष – श्री रामजस।

सोजत-बगडी-चण्डावल

लोक जागृति की राजधानी–सोजत

स्वाधीनता के आन्दोलन मे सोजत की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इस क्षेत्र ने सर्वाधिक स्वतन्त्रता-सेनानी दिये है और वर्षो तक लगातार आन्दोलन को चलाये रखने का श्रेय भी लगभग इसी नगर के कार्यकर्ताओ को जाता है।

दि० 26 1 41 की शाम को कचहरी के पास श्री गुमानमल सिंघी के सभापतित्व मे आयोजित आम-सभा मे मारवाड लोक परिषद के नेता जयनारायणजी व्यास, मथुरादासजी माथुर किशोरमलजी मेहता के भाषण हुए। लोक परिषद की कार्य शैली एव जिम्मेवार हुकूमत की माग पर प्रकाश डाला गया। इसी समय मे म्यूनिसीपेलिटी की माग रखी गई और सोजत परगना लोक-परिषद के निम्नानुसार चुनाव हुए

अध्यक्ष– श्री अनराजजी सिंघी मत्री– श्री मुन्नालालजी वैद्य (सोजत) कोषाध्यक्ष–श्री विजयशकरजी शर्मा (सोजत रोड), सदस्यगण– श्री मीठालालजी त्रिवेदी, श्री नटवरलालजी श्री रूपचन्दजी वैद्य श्री हरिरामजी ओझा श्री मरुलालजी स्वर्णकार व श्री मागीलालजी व्यास।

लोक-परिषद का विस्तार

सोजत मे ही सन् 1941 की मारवाड लोक-परिषद की प्रतिनिधि-सभा का प्रथम अधिवेशन हुआ, जिसमे मारवाड के विभिन्न हिस्सो से सैकडो प्रतिनिधि एव सदस्य एकत्रित हुए। पाली से सर्वश्री सुमेरराज जी डागा, सोजत से हरिशकरजी ओझा व मागीलालजी व्यास, सेंदडा से मीठालालजी त्रिवेदी, बाली से छोटमलजी सुराणा एव मोडारामजी जैतारण से अमरचन्दजी बोहरा गणेशमलजी सकलेचा, शकरलालजी माहेश्वरी तथा देसूरी से कन्हैयालालजी वदिक व अनोपचन्दजी पूनमिया ने प्रतिनिधित्व किया।

उस वर्ष लोक-परिषद् का विस्तार निम्न स्थानो पर किया गया–सोजत शहर, सोजत रोड, बगडी राणावास कन्टालिया, चन्डावल, मारवाड जक्शन जैतारण, निम्बाज देवली, गिरी, नानणा, खिनावडी, बाली मुण्डारा, सुमेरपुर कोट, खीमेल, सादडी, घाणराव, नाडोल, रानी, पाली एव सेन्दडा।



विद्रोह का केन्द्र-बिन्दु बगडी नगर

स्वाधीनता आन्दोलन में बगडी का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। सन् 1926 की गर्मियों की एक दोपहर, नगर के प्रमुख व्यवसायी गणेशमलजी कांठेड, सौभाग्यमलजी लोढा, अमोलकचन्दजी लोढा गाँव के मुख्य मार्ग पर स्थित भैरजी सोनी की दुकान पर बैठे थे। इतने में गांव के ठाकुर भैरूसिंहजी का उधर से निकलना हुआ। दुकान पर बैठे सेठ व भैरजी सोनार ने खड़े होकर 'घणी खम्मा एवं जय माताजी की' नहीं की। फिर क्या था, रावले में बुलाकर सभी की पिटाई की गई। नगर के प्रमुख व्यापारियों की पिटाई से गांव में तो सनसनी फैली ही पर मन ही मन विद्रोह की भावना भी बलवती हो गई और प्रारम्भ हो गया–बगडी नगर में सामन्तशाही के विरुद्ध ग्रामवासियों का आन्दोलन।

बगडी के वयोवृद्ध नागरिक श्री मुकलचन्दजी बरडिया ने संस्मरण सुनाते हुए आगे बताया कि इसी आन्दोलन के सिलसिले में उनके पिता श्री रूपचन्दजी बरडिया तथा पुरषोत्तमजी वैष्णव की बुरी तरह से पिटाई की गई। गम्भीर चोटों के कारण जब पुरषोत्तमजी को लोग सोजत अस्पताल में ले जा रहे थे तो घुडसवार भेजकर ठाकुर ने घायलों को ले जाने वालों को पीटा। हर जुल्म और उत्पीडन विद्रोह की आग में घी का काम करता है। सन् 1930 में इसी बगडी नगर में विद्रोह का वातावरण फैलाने वालों की सरेआम पिटाई कर उनकी प्रतिष्ठा गिराने की दृष्टि से ठाकुर ने बीस लठैतों को बाजार में भेजकर सर्वश्री जावन्तराजी कांठेड, रूपचन्दजी बरडिया, शोभमलजी मूथा सहित अनेक लोगों की पिटाई की। अब तो ये वारदातें रोजमर्रा की घटनाएं होने लगीं। बगडी के कई परिवार दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे इन सामन्ती जुल्मों के कारण बगडी के निकट ही स्थित सोजत रोड पर आकर आबाद हो गये। श्री गणेशमल जी कांठेड व मीठालालजी कांठेड ने सोजत रोड को केन्द्र बनाकर राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिविधियां तेज कर दीं।

7 5 41 को दिन मारवाड लोक-परिषद् के तत्वावधान में रावले के बाहर मैदान में ही लोकनायक जयनारायण व्यास की अध्यक्षता में एक वृहत् सभा का आयोजन किया गया। हजारों की संख्या में गाँव के लोग एकत्रित हुए। गणेशमलजी व उनके पुत्र मीठालालजी कांठेड ने सारी व्यवस्था की। इस सभा में मौलाना रियाजुद्दीन, मथुरादासजी माथुर तथा श्री जयनारायणजी व्यास के भाषण हुए। व्यासजी का भाषण प्रारम्भ होते ही सामन्ती गुण्डों ने लाठीचार्ज शुरू कर मारपीट शुरू कर दी। सभा भंग हो गई। अनेक लोग घायल हुए। मीठालालजी कांठेड एवं भैरजी सोनार के भारी चोटें आयीं।

जुल्मों की कहानी का गोपनीय पत्र

दिनांक 14 5 42 को स्वतन्त्रता सेनानी रणछोडदासजी गट्टानी के सभापतित्व में बगडी में जागीरी जुल्मों के विरुद्ध एक महती सभा हुई। इसका सारे क्षेत्र पर इतना व्यापक प्रभाव पडा कि मारवाड राज्य के इंसपेक्टर जनरल आफ पुलिस ने तत्कालीन मुख्यमंत्री डी०एम० फील्ड को दिनांक 20 5 42 को गोपनीय पत्र लिखकर जानकारी दी। वह पत्र इस प्रकार है—

Confidential

GOVERNMENT OF JODHPUR

No –1769 *Jodhpur Dated*–20 5 1982

From–

The Inspector General of Police Jodhpur

To–

The Chief Minister Jodhpur

Subject –Meeting of Lok Parishad at Bagri

In a meeting of the Lok Parishad held at Bagri on 14 5 1942 Ranchor Dass Gattani said that he had been to Chandawal to *defy orders under section* 144 Cr P C but as ill luck would *have it the ban was removed before his arrival*

Referring to the State of affairs in Jagir villages he said –that *Zulams were being perpetrated by the* Jagirdars on the poor *people* who did not get even handful of grain to feed themselves He was sure he said that if an impartial committee was appointed 95 of the Lags realised by the Jagirdars would be *held illegal* He remarked that *although His Highness* the Maharaja Sahib Bahadur and the Chief Minister were aware of the alleged high-handedness of the Jagirdars in Gundoj Nadol and Chandawal they still kept silent and instead of making an enquiry into the matter promulgated orders under section 144 Cr P C banning all meetings at Chandawal for a period of one month He added that the Jagirdars who were being defended by the Government wanted to annihilate the existence of the Lok *Parishad* but neither they nor even the Government itself could ever crush it Continuing he said that the Jagirdars in Pargana Phalodi were not doing Latai but on the contrary were demanding unwarranted Lags from the cultivators The *Jodhpur Government* he said *had not paid any heed to this* grievance of the cultivators

He further remarked that the small Jagirdars would soon *perish* Leader like Mahatma Gandhi he said considered it to be a hell to live in 1262 jagir villages of Marwar The Chief Minister he said was under the impression that the Jagirdars were contributing a lot towards war fund but infact all money *came out of the pockets of the poor people He added* that the function of the Government was to ensure safety of the lives and



property of the people and suggested that some steps against the Jagirdars were necessary for the same He said that the Government realised its mistake in promulgating orders under section 144 Cr P C and ultimately lifted the ban

One Hira Lal said that Ranchor Dass Gattani held a public meeting at Chandawal where nothing untoward happened but on the contrary the Kunwar kept himself quite aloof The loose administration of the Jodhpur Government he said had given an encouragement to the Jagirdars to raise their heeds

Sd –
Inspector General of Police Jodhpur

लोगो का आन्दोलन और तेज हो गया। जागीरी-जुल्मो के विरुद्ध मारवाड राज्य द्वारा जाच हुयी और ठिकाणो की व्यवस्था कोर्ट आफ वार्ड्स के अन्तर्गत ली गयी। इसी दौरान मारवाड लोक-परिषद् का उत्तरदायी शासन के लिये आन्दोलन चला और बगडी नगर के स्वतन्त्रता सेनानी श्री मीठालाल खाटेड को इसी आन्दोलन के सिलसिले मे गिरफ्तार किया गया और जेल हुई। जेल की भयकर यातनाओ के कारण युवक मीठालालजी खाटेड अस्वस्थ ही नही हो गये उनका शरीर ही जैसे टूट गया। जेल से बाहर आने के पश्चात् भी लगातार बीमार रहे और युवावस्था मे ही उन्होने प्राणो की आहुति दे दी।

चण्डावल

भीषण लाठी प्रहार व गिरफ्तारिया

चण्डावल ग्राम सामन्ती जुल्मो के विरुद्ध सघर्ष मे अग्रणी रहा है। यहाँ जनजागृति का शख फूका सन् 1934 मे स्व० मगी लालजी आलीशान ने। श्री आलीशान महात्मा गाधी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे भाग लेकर मध्यप्रदेश की एक जेल मे, जहा उन्हे तेल घाणी मे बैल की जगह जोतकर अमानवीय यातनाएँ दी गयी थी, छूटकर अपने गाँव चण्डावल आये थे। उन्हे वहाँ कर्मठ कार्यकर्ता के रूप मे मिल गये सर्वश्री छैलारामजी हिरागर, नथमलजी मूथा, जुगराजजी रामसुखजी पुरोहित, डॉ० दयालसिंहजी गहलोत तेजारामजी जाट, मास्टर पूरणमलजी, चान्दमलजी गादिया मगराजजी पोकरणा प्रभुजी जाट, पाबूरामजी जाट धनराजजी भारती, टिकमारामजी मास्टर जिन्होने बेठ बेगार व लाग बाग मे फसे लोगो को सगठित करने का सफल प्रयास किया।

छैलारामजी पर जूतो की मार

गाँधी टोपी पहनने के अपराध मे श्री छैलारामजी हिरागर को चण्डावल रावले मे बुलाकर सिर पर जूतो से 101 बार पिटाई की गई और छैलारामजी हर मार पर 'वन्देमातरम्' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाते रहे।

28 मार्च, 1942 को उत्तरदायी शासन-दिवस

सन् 1942 की 28 मार्च को मारवाड लोक-परिषद् के तत्वावधान मे उत्तरदायी शासन माग दिवस मनाने का निश्चय किया गया, पर चण्डावल मे धारा 144 जाब्ता फौजदारी लगा दी गयी। 27 मार्च की शाम को ही 250 जागीरी लठैतो ने, जो तलवारो भालो व बन्दूको से लैस थे, सभास्थल तथा गाव मे आने के सभी रास्तो पर नाकाबन्दी कर दी थी। पूरे गाव मे आतक का वातावरण छा गया था। किसी को सभास्थल पर पहुचने नही दिया गया। देवली से श्री शकरलाल कालानी दलबल सहित चण्डावल पहुँच थे, पर उन्हे भी पीटा गया और गाव मे नही जाने दिया। इसी प्रकार सोजत रोड कन्टालिया बगडी कर्माबास सोडिया आदि गाँवो से आये लोगो की भी पिटाई कर उन्हे भगा दिया गया। श्री रामसुखजी पुरोहित का उनके घर मे घुसकर बुरी तरह से पीटा गया। वे बेहोश हो गये। फिर मागीलालजी त्रिवेदी ने सोजत से आये सर्वश्री मीठालालजी काका व विजयशकरजी दवे, मोहन लालजी भट्ट जसवन्तराजजी सिंघवी को आते देखा तो भारत माता की जय के नारे लगाने शुरू कर दिये। फिर क्या था लाठियो एव भालो से लैस ठिकाणे के कारिन्दे लोक परिषद् के इन कार्यकर्ताओ पर टूट पडे। श्री मीठालालजी काका की आख के पास भाला घुस गया। विजयशकरजी की पसलिया तोड दी गयी। सारे गाव मे हाहाकार मच गया। लाठीचार्ज मे अनेक घायल हुए। चान्दमलजी गादिया, महिमादेवी किंकर हरिभाई किंकर, माधोलालजी सुथार (निमाज) को भी बेरहमी से पीटा गया। इन घायलो को सोजत व जोधपुर ले जाने मे व मारवाड लोक-परिषद् के सहयोगी—पिपलिया के सेठ श्री प्रेमराजजी बोहरा ने वक्त पर मदद की। अपनी कार मे घायलो को पहुचाया। इस कार्य मे चण्डावल के सेठ मिश्रीमलजी ने सक्रिय सहयोग दिया। इस दमन व आतक के बावजूद भी कार्यकर्ताओ का जोश ठण्डा नही पडा। धारा 144 को तोडने के लिए मारवाड लोक-परिषद् के अध्यक्ष श्री रणछोड दासजी गट्टानी के नेतृत्व मे कार्यकर्ताओ का जत्था चण्डावल मे उसी सभास्थल पर एकत्रित हुआ और सभा की गयी। लोगो ने इसे विजयोत्सव के रूप मे मनाया।

गाव-गाव मे आन्दोलन

ग्राम बिलावास मे जागीरदार द्वारा वक्त पर लाटे नही करने के कारण आन्दोलन छिड गया और सर्वश्री चिमनारामजी सीरवी, नारायणदासजी वैष्णव, भवरलालजी सोनी पनजी सीरवी ने गाँव के किसानो को सगठित कर आधे हिस्से की लटाई को चौथाई बट करवाकर ही दम लिया। इस सत्याग्रह मे सोजत के



डॉ० अभिनन्दनमलजी व श्री मोहनलालजी भट्ट का सक्रिय सहयोग रहा।

बिलावास ठाकुर ने लोगों में भय एवं आतंक पैदा करने के लिए कोट के सामने सवा हाथ लम्बी नाप का जूता बनवाकर लटका रखा था। दिनांक 27 4 41 व 8 5 41 को वृहद् ग्राम सभाओं का आयोजन किया गया, जिसमें नाहरमलजी पगारिया, भवर लालजी योगेश्वर, सुन्दरनाथजी, गुरुचरणदासजी रावत ने लोक परिषद् के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और श्री बजरंगलालजी गोयल, (सोजत रोड) ने चरखा कताई का प्रदर्शन किया। लोक-परिषद् के निम्नानुसार चुनाव हुए

सभापति - श्री पुखराजजी लूणिया, उपसभापति योगेश्वर सुन्दरनाथजी, मंत्री भवरलालजी स्वर्णकार, उपमंत्री मोतीलालजी गानच्छा, कोषाध्यक्ष-पन्नालालजी नाग, सदस्य-लूणारामजी चौधरी, गोरधनजी, हस्तीमलजी ग्राछा हुकमारामजी मास्टर, मांगीलालजी।

ग्राम बोयल एवं साड़िया में 21 5 41 व 25 5 41 को चण्डावल के कार्यकर्ता श्री मांगीलालजी त्रिवेदी व डा० दयालसिंह जी गहलोत ने आमसभाओं का आयोजन किया जिसमें श्री आशारामजी भूतड़ा (साड़िया) व श्री मंगलसिंहजी (बोयल) ने उत्साह पूर्वक कार्य किया। ग्राम खुशालपुरा में 5 5 41 को श्री नरसिंह दासजी वैष्णव के सभापतित्व में हुई सभा में निम्बाज के श्री माधो लालजी क्रान्तिकारी अमरचन्दजी जैन, लालचन्दजी मिश्रीमलजी, गणेशमलजी सकलेचा ने ओजस्वी भाषणों द्वारा लोगों को जागृत किया।

ग्राम धाकड़ी में काश्तकारों की सामूहिक बेदखली के विरुद्ध श्री हमराजजी बांठिया गुमनाजी सीरवी मोहनजी मेघवाल, किशना जी ब्राह्मण ने लोगों को संगठित कर मोर्चा लिया और सफलता प्राप्त की। इसी प्रकार वारियातीव में श्री मोणारामजी जाट एवं श्री मकूतमलजी ने जागीरदार के विरुद्ध मोर्चा सभाला।

दिनांक 28 3 41 को सोजत धानमण्डी के चौक में श्री धनराजजी साथी की अध्यक्षता में एक विराट सम्मेलन में जिम्मेवार हुकूमत कायम करने की प्रतिज्ञा हजारों लोगों ने ली। धनराजजी ने स्पष्ट शब्दों में भाषणों की कि जिम्मेवार हुकूमत कायम कराके रहूंगा। उन्होंने जिम्मेवार हुकूमत का अर्थ भी स्पष्ट किया।

सोजत नगर

सोजतनगर लोक परिषद् के नये चुनावों में सभापति माणक लालजी मोदी एडवोकेट मंत्री दयाशंकरजी व्यास, कोषाध्यक्ष रामपालजी नन्दा एवं सदस्य चुन्नीलालजी मूंदड़ा, वैद्य छोगालालजी, दुर्गाचन्दजी सिंघवी, रंगराजजी मेहता चुने गये और परगना लोक-परिषद् के लिए श्री माणकलालजी सिंघवी के अलावा मुन्नालालजी वैद्य तथा रिखबदासजी सेठिया चुने गये।

सोजत की महिला सत्याग्रही

पाली जिले में महिला स्वतन्त्रता सेनानियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस प्रसंग में श्रीमती सुशीलादेवी सिंघी (सोजत) का नाम सदैव स्मरण किया जाता रहेगा। इन्होंने कलकत्ता में स्वतन्त्रता आन्दोलन में नेतृत्व प्रदान कर महिलाओं में जागृति पैदा की और सत्याग्रह के दौरान कई बार जेल भी गई। सन् 1942 में जोधपुर में लोक-परिषद् द्वारा चलाये जा रहे सत्याग्रह में भाग लेने के लिए महिलाओं का एक जत्था श्रीमती महिमादेवी किंकर (सोजत) एवं श्रीमती सुशीलादेवी गोयल (सोजत रोड) के नेतृत्व में जोधपुर पहुँचा और आन्दोलन में भाग लिया।

श्रीमती महिमादेवी किंकर और श्रीमती सुशीलादेवी गोयल ने सन् 1942 के अंग्रेजो 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सोजत रोड पर एक जुलूस का नेतृत्व किया। पुलिस ने लाठीचार्ज किया। ये दोनों महिलाएं घायल हो गई पर इन्होंने हाथ से झण्डा नहीं गिरने दिया। इन्होंने सोजत व पाली में अनेक सभाओं का आयोजन कर महिलाओं में जागृति पैदा की।

लोक-परिषदों के चुनाव

बगड़ी नगर दिनांक 14 6 41 को बगड़ी नगर लोक परिषद के चुनाव निम्नानुसार हुए—

सभापति श्री भवरलालजी व्यास, उपसभापति श्री शुभकरणजी श्रीमाली मंत्री– श्री माठालालजी जैन, प्रचारमंत्री– श्री भंवरलालजी स्वर्णकार, कोषाध्यक्ष– श्री लालारामजी श्रीमाली सदस्य– श्री मोहनलालजी सोनी श्री कल्याणमलजी श्रीमाली।

राणावास राणावास में लोक परिषद् के सभापति श्री रूपचन्दजी भण्डारी व मंत्री श्री फूलचन्दजी बांठिया चुने गये।

देवली कलां दिनांक 28 3 41 को ग्राम देवली कलां में लोक-परिषद् के पदाधिकारी ये चुने गये सभापति– श्री शंकरलालजी कालानी मंत्री– श्री कृष्णजी शर्मा कोषाध्यक्ष– श्री मांगीलालजी खारीवाल।

चण्डावल दिनांक 29 4 41 को चण्डावल लोक-परिषद् के निम्नांकित पदाधिकारी चुने गये सभापति– श्री देवरामजी काग मंत्री– श्री दयालसिंहजी गहलोत प्रचारमंत्री– श्री मांगी-



लालजी त्रिवेदी, कोषाध्यक्ष– श्री नथमलजी मूथा सदस्य– श्री पूरणमलजी शर्मा, श्री अमरलालजी जाशी व श्री रामसूरजजी पुरोहित।

सोजत परगना लोक परिषद के सन् 1948–49 के लिए समापति श्री मीठालालजी 'काका' एव प्रतिनिधि श्री मोहन लालजी भट्ट एव डॉ० श्री अभिनन्दनमलजी मेहता चुने गये।

सामन्ती आतक

गाधी-टोपी वालो को सजा

कुशालपुरा ठाकुर ने एक फरमान जारी कर एलान किया कि जो भी गाधी टोपी पहनेगा उसे ग्यारह रुपये जुर्माना और 11 जूता की सजा दी जावेगी।

अढाई मण लापसी की माग

श्री भाईदान जी जाट के घर मोसर के आयोजन पर चण्डावल के ठाकुर न ढाई मण लापसी का कासा मागा और न देने पर सारी लापसी धूल मे मिलाने की धमकी दी।

बिठौडा के वीर सेनानी

मारवाड जक्शन के पास स्थित बिठौडा गाव मे जागीरी आतक के विरुद्ध सघर्ष करने वाले सेनानी स्व० गौरीशकरजी व्यास एव लालदासजी वष्णव का नाम मारवाड लोक-परिषद् के इतिहास मे सदैव याद किया जाता रहेगा। इन्होने इस क्षेत्र के जागीरदारो के हाथो बडी यातनाए सही हैं। व्यापक सहयोग के अभाव मे भी ये अटल रहे। इस क्षेत्र के अन्य प्रमुख कायकर्ता थे–सवश्री चन्दुलालजी जैन (खारची), श्री पदमसिंहजी गुडा, श्री दुर्गासिंह श्री नगारामजी चौधरी (लाखिया), श्री चुन्नीलालजी मेघवाल (काराडी) श्री छोगालालजी चौधरी (देवली आऊवा) सोहनराजजी घोका (देवली आऊवा), देवीलालजी दूदोड, कालूरामजी धामली, ईश्वरलालजी धामली, सूरजकरणजी खारची, गुलाबसिहजी पुरोहित (देवली आऊवा) छोटूरामजी (आऊवा) जिन्होने जागीरी जुल्मो के विरुद्ध सघर्ष जारी रखा।

प्रमुख कायकर्ता

इसके अलावा सोजत क्षेत्र के प्रमुख कायकर्ता जिन्होने स्वाधीनता आन्दोलन को आगे बढाया और सामन्ती जुल्मो के विरुद्ध आन्दोलन को तेज किया उनमे प्रमुख रहे सवश्री भवरलालजी व्यास (बगडी) मिश्रीलालजी कातरेला (बगडी) शुभकरणजी श्रीमाली (बगडी) लालारामजी श्रीमाली (बगडी), मोहनलालजी सोनी (बगडी), कल्याणमलजी श्रीमाली (बगडी) मोतीलालजी राका (बगडी), बजरगलालजी गोयल (सोजत रोड) मुन्नालालजी वद्य (सोजत रोड), कृपाशकरजी व्यास (सोजत) यशवतजी रुचिर जमालदीनजी (सोजत रोड), हरिसिहजी (रूपावास) पोकररामजी माखला (सोजत), हीरालालजी टाक (सोजत) जबरजी मेहता (सोजत रोड), सूरारामजी (हीगावास) जसवतराजजी सिघवी (सोजत), घेवरजी परिहार, रामेश्वरजी (सोजत), श्रीमती लालजी राका (बगडी), अमरलालजी जोशी (चन्द्रावल), श्रीमती भटनागर (सोजत), मदनलालजी जोशी (सोजत) श्रीमती सुशीला सिघवी (सोजत), पुखराजजी, सुखराजजी लूणिया (बिलावास) नारमलजी पगारिया (बिलावास), योगेश्वर सुरेन्द्रनाथजी (बिलावास) भवरलालजी स्वणकार (बिलावास), मोतीलालजी गालछा (बिलावास) चौधरी पन्नालालजी काग (बिलावास) लूम्बारामजी चौधरी (बिलावास) गोरधनजी (बिलावास) हस्तीमलजी आछा (बिलावास), हुकमारामजी मास्टर (बिलावास), आशारामजी भूतडा (बिलावास), भारतजी, नथमलजी मूथा (चण्डावल), चादमलजी गादिया (चण्डावल), रामसुखजी पुरोहित (चण्डावल) वदारामजी जाट (चण्डावल), प्रभुजी जाट (चण्डावल), फूलजी जाट (चण्डावल) जुगराजजी जाट (चण्डावल) भँवरलालजी पुरोहित (चण्डावल) प्रेमराजजी बाहरा (पीपलिया) रतनलालजी चौधरी (पीपलिया) श्रीमती जसवतराजजी (सोजत) श्री अनराजजी सिंघी (सोजत), श्री रूपचन्दजी वद्य (सोजत), श्री अब्दुल रहमानजी (मारवाड जक्शन), श्री मागीलालजी ममाली (जोजावर) हरिसिंहजी चौधरी (मारवाड जक्शन) प्रेमराजजी जैन (वोपारी) प्रेमारामजी (धनला), खेंगारारामजी मेघवाल (पाचेटिया)।

क्रान्ति व सघर्ष की धरती निमाज

जतारण क्षेत्र म मुख्यत निमाज राम नलूण्डा वड, डिगरना, सवरिया, निम्बाल बिराटिया बाबरा, काणेचा, दवराया कुशालपुरा, आमरसाई आकेलाई हाजीवास गावो म जागीरदारो का बडा आतक था। मनमाने ढग की लदाइ, लाग-बाग तथा बैठ-बेगार के कारण लोग बडे दुखी थे। इस क्षेत्र म सवप्रथम सगठित रूप मे जन जागृति का काय प्रारम्भ किया निमाज के श्री माधोलाल सुथार क्रान्तिकारी और बिराटिया निवासी मोहनलाल जोशी ने। इन्होने गाँव गाव घूमकर लोक-परिषद् की शाखाए स्थापित की और कायकर्ताओ की टोलियाँ बनाइ।

दिनाक 5 1 41 को श्री जयनारायणजी व्यास ने निमाज म एक किसान-सम्मेलन को सम्बोधित किया। इसके पूव फरवरी सन् 1940 म रणछोड दासजी भट्टानी ने निमाज म लोक-परिषद् की शाखा की स्थापना की जिसके माधोलालजी अध्यक्ष, श्री



अमरचन्दजी बोहरा–मन्त्री और सेठ लालचन्दजी कोषाध्यक्ष चुने गये। मारवाड़ लोक परिषद् के अध्यक्ष श्री मथुरादासजी माथुर, किशोरमलजी मेहता अचलेश्वर प्रसादजी शर्मा और नरसिंहदासजी लूंकड़ ने दिनांक 3 4 41 को एक विराट सभा को सम्बोधित कर लोक-परिषद् के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और लोगों से संगठित होकर जागीरी जुल्मों का मुकाबला करने का आह्वान किया। इससे प्रेरित होकर दिनांक 22 5 41 तथा 23 5 41 को श्री अमरचन्दजी जैन के सभापतित्व में सभा हुई। इसमें ब्यावर के मौलाना अख्तर मोहम्मद जी मिश्रीमलजी गांधी, सेठ सालमचन्दजी व माधोलालजी सुथार के ओजस्वी भाषण हुए। ठिकाणे की बदइन्तजामी का पर्दाफाश किया गया। निमाज में म्युनिसिपल्टी की स्थापना का प्रस्ताव भी पास हुआ। इन सफल सभाओं से जागीरदार निमाज व अन्य जागीरदारों का दबदबा कम होने लगा। अब जागीरदार गुण्डागर्दी पर उतर आये और दिनांक 3 11 41 को श्री अमरचन्दजी बोहरा के सभापतित्व में आयोजित सभा में जब श्री छगनलालजी चोपासनी वाला के भाषण के बाद श्री मथुरादासजी माथुर भाषण देने खड़े हुए तो निमाज ठाकुर के पचास से अधिक लठैतों ने सभा मंच पर हमला बोल दिया और अमरचन्दजी बोहरा को मारपीट करके बेहोश कर दिया अनेक कार्यकर्ताओं के गम्भीर चोटें आयी। लेकिन श्री माधोलालजी सुथार आखिर तक यही नारा लगाते रहे—'मार मुसीबत सभी सहेंगे—गुलाम बनकर नहीं रहेंगे।

प्रथम सत्याग्रही

निमाज के उत्साही कार्यकर्ता श्री नेमीचन्दजी रांका ने महात्मा गांधी के आदेशानुसार दिनांक 17 2 41 को मद्रास में सत्याग्रह किया और तीन माह के कठोर कारावास की सजा हुई। इस घटना ने निमाजवासियों में दूना उत्साह भर दिया। श्री नेमीचन्द की जय बोलते हुए एक बड़ा जुलूस आयोजित किया गया।

जैतारण परगना लोक परिषद

जैतारण परगना लोक परिषद् के मार्च 1941 में निम्नानुसार पदाधिकारी चुने गये—

सभापति —श्री गुणेशमलजी सकलेचा
मन्त्री —श्री मोहनलालजी चौधरी
कोषाध्यक्ष—श्री भंवरलालजी
सदस्यगण—सर्वश्री रामभुजजी सुनार (गिरी), शंकरलालजी कोलानी (देवली), माधोलालजी (निमाज) मिश्रीलालजी (निमाज), चम्पालालजी (निमाज)।

मारवाड़ लोक परिषद् के लिए निम्न प्रतिनिधि चुने गये—सर्व श्री गुणेशमलजी सकलेचा (जैतारण), श्री अमरचन्दजी बोहरा (निमाज) श्री शंकरलालजी माहेश्वरी (देवली)।

ग्राम बिराटिया, बलून्दा व कुशालपुरा में मारपीट

ग्राम बिराटिया के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मोहनलालजी जोशी द्वारा ग्राम बलून्दा व कुशालपुरा में सभा आयोजित करने पर जागीरी गुण्डों द्वारा मारपीट की गई। बलून्दा में श्री घीसूलालजी बोरडिया को उनके घर में घुसकर रात को एक बजे इतना मारा कि बेहोशी की हालत में उन्हें जैतारण अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। ग्राम कुशालपुरा के कार्यकर्ता श्री दधीमल तथा उनकी पत्नी को रात के समय उनके मकान की छत फोड़कर इतनी बुरी तरह जागीरदार के लठैतों ने पिटाई की कि उन्हें भी विंडम अस्पताल जोधपुर में भर्ती करवाना पड़ा।

कुम्हारों ने गाँव छोड़ा

ग्राम आकलाई व गिरदा के कुम्हारों ने जागीरदार द्वारा रात दिन ली जाने वाली बेगारों से तंग आकर अपना गाँव ही छोड़ दिया।

जागीरदारों की सभायें

श्री मोहनलालजी जोशी ने गाँव गाँव जाकर जागीरदारों को लाग-बाग नहीं देने हेतु किसानों को संगठित किया फलस्वरूप जागीरदार भी संगठित होने के लिए सभायें करने लगे। उन्होंने हाजीवास बिराटिया व गोपालद्वारे में मीटिंगें की और तय किया कि लोक परिषद् के किसी भी कार्यकर्ता को गाँव में घुसने ही नहीं दिया जावे और आ जायें तो मारपीट कर भगा दिया जाय। षडयन्त्र रचकर जागीरी गुण्डों ने श्री मोहनलालजी जोशी पर रात को हमला बोल दिया और बुरी तरह से पिटाई की। लोकनायक श्री जयनारायणजी व्यास को सूचना मिलते ही वे दिनांक 26 7 41 को बिराटिया पहुँचे। गाँव वालों ने संगठित होकर व्यासजी का स्वागत किया और जागीरदारों के लठैतों ने सभा में शोरगुल व तूफान मचाया पर सभा भंग नहीं होने पाया। बिराटिया के अनेक प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री दुलराजजी जैन पन्नालालजी जैन फकीर मोहम्मदजी रंगरेज व धूलारामजी चौधरी मुखिया थे।

इस क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्ताओं में अन्य प्रमुख नाम थे—सर्वश्री वासुदेवजी शास्त्री एडवोकेट बंशीलालजी व्यास रिखबराजजी मुणोत, रहीमबक्शजी शंकरलालजी व्यास पुखराजजी चौहान, पुखराजजी पटवा, चुन्नीलालजी माटो, श्री पाल हाऊजी चौहान,



धनराजजी एडवोकेट भवरलालजी भाटी, गुणेशमलजी सकलेचा व मोहनलालजी चौधरी जतारण निवासी, बलुन्दा के सब श्री गोकुलजी जाट, सूरजकरणजी छलानी सेठ भीकमचन्दजी, हापू महाराज पानीया, दयालदासजी वष्णव, हीरालालजी कलाल, हीरादासजी महाराज केसारामजी मेघवाल, मूलारामजी सन, हस्तीमल जी सन, रामरखजी माली बद्रीलाल जी व्यास, श्री घीसूलालजी बोरडिया, श्री गिरधारीजी व बलुन्दा के सेठ श्री भीकमचन्दजी । भुम्बा वाले महाराज श्री हीरादासजी को तो जेल की यातनायें भी भुगतनी पडी ।

कुशालपुरा म चान्दमलजी गादिया, श्री मोतीलालजी गुरासा, श्री हरिशकरजी नरसिंहदासजी वष्णव, बालूरामजी सुथार व दघीमलजी, कालू आनन्दपुर के बालाबक्षजी मोहनलालजी सिंघी, अमरचन्दजी सेवक, शकरलालजी जैन, बाबूलालजी सुथार व मांगूजी जाट, डिगरनाके के लालूजी जाट, बावरा म श्री शकर नाइ, रास म श्री शकरलालजी सुथार, मालूरामजी गुजर, थोडवाड म श्री थानारामजी जाट, गाँव गरणिया म श्री रामारामजी जाट, पाल का गाव म श्री गोपारामजी मेघवाल, काणेचा ग्राम मे श्री बस्ती रामजी जाट अल्फूजा जी व ननारामजी मेघवाल, दवरिया मे श्री सूरारामजी सिरवी, हरीरामजी माली अबेदूलसखाजी, कालूजी दवासी, मालूरामजी कुम्हार, लच्छीरामजी चौकीदार डूगारामजी चौकीदार तेजारामजी माम्बी, उजीरखाजी तली, गाव आगेवा मे घीमाजी रंगर ग्राम सागावास म गोरधनजी नाई, पूनारामजी चौधरी ।

किसानों के प्रभावशाली नेता सेठ श्री रिखबदासजी

पूरे जतारण क्षेत्र के किसाना मे अत्यधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे निमाज के सेठ श्री रिखबदासजी राका, बडे निर्भीक व साहसी । श्री राकाजी जागीरदारो के पूरे आतक व जोर के बाव जूद भी मारवाड एसेम्बली के सदस्य चुन गये और एसेम्बली म सामन्ती बहुमत होते हुए भी उन्होने जागीरदारा की तीखी आलोचनायें की थी । निमाज कस्बे मे लोक परिषद् के कार्यकर्ताओ का एक सगठित निष्ठावान दल था, जिसम सवश्री मिश्रीलालजी गोघा, अमरचन्दजी बाहरा सठ लालचन्दजी मिश्रीलालजी घोखा श्रीमोहन लालजी फूलफर जालारामजी मेघवाल भवरलालजी कडारा चपालालजी ठोलिया, छलारामजी, हरिजन ढगलूरामजी मेहतर जालारामजी माली डूगरमलजी खाडप, रतनचन्दजी राका, सालमचन्दजी राका थे जो लगातार सामन्ती जुल्मो के विरुद्ध लडते रहे । गाँव आसरलाई के सेसमलजी जन, गूजररामजी बागडी गणेशलालजी जोशी व हापूजी जाट प्रमुख थे ।

निम्बोल के सेठ लूणकरणजी

निम्बोल गाव के प्रमुख कार्यकर्ता सेठ लूणकरणजी का नाम मारवाड के स्वतन्त्रता आन्दोलन म सदा याद किया जाता रहेगा । जिन्हें जागीरदार की भयकर शारीरिक यातनाएँ सहनी पडी । जागीरी गुण्डा ने इनके नाक को चोट पहुँचाई । निम्बोल म अन्य प्रमुख कार्यकर्ता थे श्री शकरलालजी घाची, जेठारामजी चौकीदार, सूरजमलजी सुथार । ग्राम डिगरणा के श्री हुकमसिंहजी ने इस क्षेत्र म सामती तत्वो का प्रभाव समाप्त करन का महत्वपूर्ण काय किया था ।

पाली

पाली परगने की राजनतिक हलचल

पाली परगना म आजादी के सघष की हलचला की कहानी काफी पुरानी है । मारवाड राज्य की प्रमुख मण्डी होने स यहा पर जागृति की ज्योति प्रकट करन का श्रेय सवश्री जेठमलजी राठी, मुकनचन्दजी जन, मूलचन्दजी भट्ट भौर' व श्री फतहराजजी पुरोहित (अब महात्मा हरिहरनाथजी दिल्ली कट) को है । जेठमल जी व मुकनचन्दजी ने पाली सेवा मडल की स्थापना कर काय पारभ किया और श्री फतेहराजजी पुरोहित, जो क्रातिकारी थ और पूरे अंग्रेजी राज्य से निष्कासित थे—ने कराची से आकर उद्योग मण्डल नामक सस्था स्थापित कर स्वतन्त्रता सग्राम हेतु लोगो को तयार किया । इस काय मे इन्ह सवश्री पन्नालालजी व्यास श्री मुजफ्फर करीमजी व श्री जेठमलजी राठी का सहयोग भी प्राप्त हुआ । जोधपुर के समीप होन स जोधपुर के तत्कालीन नता सवश्री जयनारायणजी व्यास, आनन्दराजजी सुराणा, अभयमलजी जन रणछोडदासजी गट्टानी मानमलजी जैन, छगनराजजी चौपासनी वाला भवरलालजी सर्राफ व अचलेश्वर प्रसादजी शमा शिव करणजी, किस्तूरकरणजी आदि का सक्रिय सहयोग एव मागदशन मिलता रहा ।

कुछ ही समय पश्चात् 1938 मे मारवाड लोक परिषद् की शाखा सवप्रथम पाली म व तत्पश्चात् परगने के अन्य ग्रामा म स्थापित हो गई । श्री चिमनीरामजी कुमावत, रामचन्द्रजी आय, बरकतअलीजी असारी, रामप्रतापजी शमा उन दिनो अग्रिम पक्ति के कायकर्ता थे ।

सन् 1939 मे पाली शहर की धानमण्डी मे जोधपुर म आय श्री मानमल जन व श्री छगनराजजी चौपासनीवाला ने सामती जुल्मो के विरुद्ध सघष छेडने तथा मारवाड म उत्तरदायी शासन कायम करन के उद्देश्य स एक आम सभा आयोजित की । इस आम सभा ने लोगो मे अपार जोश भरा । उत्तेजित भीड को तितर बितर



करने के लिए पुलिस ने लाठी चार्ज किया जिसमें श्री चौपासनी वाला व मानमलजी जैन घायल हो गये।

पाली परगना लोक परिषद 1941 के चुनाव

पाली परगना लोक परिषद् के चुनाव सन् 1941 के लिए निम्नानुसार हुए —

सभापति–सर्वश्री सुमेरराजजी डागा एडवोकेट, उपसभापति–मूलचन्दजी भट्ट मन्त्री—गिरधारीलालजी गग उपमन्त्री–मुजफ्फर खां जी कोषाध्यक्ष—रामप्रसादजी गांधी संयुक्त कोषाध्यक्ष—जेठमलजी राठी सदस्य—चिमनीरामजी कुमावत माधोसिंहजी भागव एडवोकेट।

लोक परिषद की प्रथम ग्राम सभा

दि० 25 2 41 को श्री शौकतअली (समद) की अध्यक्षता में गांधी कटला में बृहद् ग्रामसभा का आयोजन हुआ जिसमें श्री सुमेरराजजी डागा एवं श्री मूलचन्दजी भट्ट के ओजस्वी भाषण हुए। सभा में सर्वसम्मति से जो प्रस्ताव पास किया गया वह अविकल रूप से यहां दिया जा रहा है —

प्रस्ताव सं० 1— आज की सभा पाली शहर की तरक्की के लिए महाराजा साहब एवं चीफ मिनिस्टर सा० से प्रार्थना करती है कि मिल के मालिकों ने किराया कमाने की गरज से कोटडियां बनानी शुरू की है जिससे पाली शहर की कोई तरक्की नहीं होगी और राज्य के पटटे सीग की आमदनी मारी जायेगी। ऐसी हालत को देखते हुए राज्य और पाली पब्लिक के इंटरेस्ट (जनहित) में कोटडियां का बनना एकदम बन्द किया जावे। इसके अलावा कोई जमीन स्टेशन पर दी जावे तो पाली पब्लिक को कन्सेशन रेट पर दी जाय। पाली की तरक्की के लिए जो मिल खुलाने की पब्लिक की मंशा था उस मध्य नजर रखते हुए पाली की आबादी एवं उन्नति के बाधक उपाय बन्द किये जावें।

मिल मैनेजमेंट को पाली के लोगों को नौकरियां देने के लिए मजबूर किया जाय और जो लोग काम नहीं जानते है उनके लिए ट्रेनिंग की व्यवस्था मिल मालिक से करवाई जावे।

गुन्दोज, डेन्डा एवं खरवा लोक-परिषदों के चुनाव

माह अक्टूबर, 1941 में सर्वश्री सुमेरराजजी डागा, मूलचन्द जी भट्ट व रामप्रसादजी गांधी ने खरवा डेन्डा एवं गुन्दोज का दौरा किया और लोक-परिषदों की स्थापना कर नियमानुसार चुनाव करवाये —

ग्राम खरवा सभापति—श्री पुखराजजी नाहर, मन्त्री—श्री मोतीलालजी स्वर्णकार, कोषाध्यक्ष—श्री मिश्रीमलजी जैन, सदस्य–श्री पुन्नीलालजी श्रीमाली, श्री नेनमलजी सुनार चौधरी जेठाजी (रामपुरा), चौधरी बुधाजी (रामपुरा) मोतीजी (बडेरवास), मूलाजी केनपुरा नवाजी जोधाजी (विशपुर)।

ग्राम गुन्दोज सभापति—ठाकुर अमरसिंहजी, मन्त्री—श्री रामप्रताप जी शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री डूंगरमलजी जैन, सदस्य–श्री गुवनारामजी, पुन्नीलालजी श्री बस्तीरामजी।

ग्राम डेन्डा सभापति—ठाकुर जवाहरसिंहजी, मन्त्री—श्री मुलतानमलजी जैन कोषाध्यक्ष—श्री पुन्नीलालजी जैन।

पाली परगना लोक परिषद् (1942) के चुनाव

सन् 1942 के लिए पाली परगना लोक-परिषद् के चुनाव निम्नानुसार हुए —

सभापति—श्री मूलचन्दजी भट्ट, उपसभापति—श्री रामप्रसाद जी गांधी मन्त्री—श्री मुजफ्फरखांजी उपमन्त्री—श्री गंगाराम जी माटी कोषाध्यक्ष—श्री चिमनीरामजी, सदस्य—श्री सुमेरराजजी डागा व श्री कुंजबिहारीजी। श्री बरकतअलीजी असारी काफी सक्रिय रहे।

दि० 5 व 6 मई सन् 1946 को मारवाड लोक परिषद् की ऐतिहासिक प्रतिनिधि सभा में पाली जिले के निम्न पदाधिकारियों ने भाग लिया था—सर्वश्री रामप्रसाद गांधी (पाली) फूलचन्द बाफना (सादडी) निहालचन्द परमार (देवली पाबूजी) मीठालाल त्रिवेदी (सोजत) मांगीलाल थालीशान (चण्डावल), धनपतिराज भण्डारी (सोजत) माधोलाल सुथार (निमाज), माधोसिंह भागव (पाली)।

8 2 48 को पाली परगना लोक परिषद् के चुनाव

सभापति—श्री रामप्रताप शर्मा गुन्दोज तथा मारवाड लोक परिषद् के निम्न प्रतिनिधि चुने गये —

सर्वश्री माधोसिंह भागव इब्राहीम, रामप्रसाद गांधी पन्नालाल व्यास, अर्जुन जोशी डूंगरमल लोढा मोतीलाल स्वर्णकार।

गुन्दोज, लाम्बिया एवं खरवा आतंक के शिकार

श्री रामप्रताप शर्मा मगारामजी जांगिड एवं अमरसिंहजी जागीरदारों के विरुद्ध गुन्दोज में बहुत लम्बे अरसे तक संघर्ष करते रहे। उनके साथ मारपीट, मुकद्मेबाजी व गिरफ्तारी की अनेक घटनाएं घटी। इनकी जमीनें जब्त की गई पर इन्होंने कभी भी



हिम्मत नही हारी और जिले भर मे आदोलन की धूम मचाते रहे। गुदाज के श्री डूगरमलजी लाढा को जागीरदारो ने बहुत यातनाएँ दी, पर इन्होने कडा सघर्ष किया। इसी तरह सरवा मे श्री मोतीलाल स्वर्णकार और लाबिया मे श्री लालूराम शर्मा को अनेक यातनाएँ जागीरदारो द्वारा दी गई। श्री लालूरामजी शर्मा सन् 1935 के पूर्व मे ही स्वाधीनता आदोलन के विचारो से प्रभावित होकर जन जागृति का कार्य करने लग गये थे। इनके घर-घेरे पर कई बार चोरिया करवायी गई। खलिहानो मे आग लगवा दी गई पर धुन के धनी श्री लालूरामजी लगातार सघर्ष करते रहे।

प्रमुख कार्यकर्ता

पाली परगना क्षेत्र के स्वतन्त्रता सेनानियो के साथ-साथ, प्रमुख कार्यकर्ताओ मे सर्वश्री मूलचन्दजी डागा, वल्लभदासजी अरोडा शकरलालजी (मासद) बरकतअली अमारी, चम्पालालजी बाफना दानमलजी बोहरा माधोसिहजी मागव श्रीमती रानीदेवी मागव, चिमनीरामजी कुमावत, जसराजजी धाची करुणाशकरजी व्यास रामनिवासजी शर्मा हरीरामजी देवरतनजी व्यास, विजयकिशनजी व्यास डा० गगारामजी माटी मुजफ्फरअलीजी चूडीगर बसीराम जी पशवा मोहम्मद शरीफ गणपतलालजी फोफलिया गगारामजी माली हुन्नर साहब शौकत साहब छागालालजी गादिया, चम्पालाल जी सुराणा एव ग्राम गुडा ऐंदला के लिखमारामजी मेणा सोनी भवरजी बिनावरा दिलदार खा, देवराजजी भावरी कुन्दनमलजी, धीमूलालजी जैन ग्राम खारडा के शिवरतनजी वैद्य गूदोज के गोरधनजी शर्मा डूडा के जवाहरसिहजी धीसूलालजी शर्मा रामपुरा के जेठाजी चौधरी पडासला के भीकारामजी चौधरी नीमला के रत्तारामजी चौधरी खुमारामजी आड काशीरामजी गुजराती, भभूतरामजी चौधरी सुभापजी रावल राणमलजी मणियारी रामाजी मघवाल (गूदाज), अमरसिहजी (गूदोज) कानमलजी डासी भवरलालजी महता, पीरसिहजी गूदोज भरूलालजी जैन ने सामन्ती तत्वो के विरुद्ध आदोलन मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

बाली

आजादी का सघर्ष

आजादी की लडाई मे बाली परगने की भूमिका विशेष महत्व पूर्ण रही है। मेवाड इलाके के अन्तर्गत आदिवासी गरासिया क्षेत्र मे तो सामन्ती और निरकुश राजाशाही के विरुद्ध सन् 1920–21 मे ही आन्दोलन छिड गया था, जिसके प्रमुख सूत्रधार थे श्री छोटमलजी सुराणा (बाली) और श्री मूलचन्दजी भट्ट 'गौर' (पाली)। इस आदोलन का विस्तृत वर्णन पूर्व मे किया जा चुका है, पर आजादी के इस आदोलन की गम्भीरता को इसी से आका जा सकता है कि इसे दबाने के लिए जोधपुर महाराजा को अपनी फौज (रिसाला) भेजनी पडी थी।

सघर्ष के नायक श्री सुराणा

बाली परगना मे स्वाधीनता आदोलन के प्रमुख नायक रहे है स्वर्गीय छोटमलजी सुराणा। इनके त्याग और सघर्षमय जीवन की कहानी इसी ग्रन्थ मे अन्यत्र आपको पढने को मिलेगी। इन्होने सन् 1920–21 के आदिवासी आदोलन से लेकर अपने जीवन की अन्तिम सास तक राष्ट्र और दरिद्रनारायण की सेवा के प्रति समर्पित भाव से जो कार्य किया वह अपने आप मे एक आदर्श है। बाली परगना के गाव माडून्त और देसूरी परगना के ग्राम खरोकडा मे सामन्ती तत्वो के अत्याचारो के विरुद्ध इन्होने जो सफल सघर्ष किया, उससे दबी हुई शोषित जनता की हिम्मत बढी। बाली किले मे सन् 1939–40 मे जब इन्हे नजरबन्द रखा गया तो स्थानीय लोगो मे से सर्वश्री विजयमल सुराणा, द्वारकादास गुप्ता आटाराम चौधरी मागीलाल अग्रवाल आदि आगे आये और आजादी के आदोलन से जुड गये।

धुन के धनी श्री राजगुरु

उधर सुमेरपुर मे श्री बाबूलाल राजगुरु ने स्वाधीनता आदोलन का झण्डा गाड दिया था जिन्हे समय-समय पर सिरोही प्रजामण्डल के नेता गोकुलभाई भट्ट और शिवगज के श्री देवीचन्द सागरमलजी सक्रिय रूप से सहयोग एव मार्ग दर्शन देते रहे थे। जन जागृति के साथ साथ लोक-परिषद् की शाखाएँ गाँवो मे स्थापित की गई और जागीरी जुल्मो, विशेषकर बैठ-बेगार व लाग-बाग को लेकर अनेक स्थानो पर आदोलन खडे हुए।

खुडाला फालना पर विशाल प्रदर्शन

खुडाला फालना पर श्री फूलचन्दजी बाफना के नेतृत्व मे 13 अप्रेल, 1946 के दिन एक विशाल प्रदर्शन आयोजित हुआ। जागीरी-गुण्डो द्वारा भारी पथराव हुआ। सर्वश्री चम्पालाल राणावत, तेजराज राणावत, गोकुल मोदी, गोमाराम छीपा, रूपचन्द बागरेचा, भीकमचन्द गोरधनसिंह परमार करीम बक्स, उमराव खाँ, पृथ्वीराज भीकमचन्द, पुखराज गुलाब आदि स्थानीय कार्यकर्ताओ का बहुत सहयोग मिला। इस प्रदर्शन मे गोडवाड के अनेक ग्रामो के कार्यकर्ता शरीक हुए। रात के समय श्री फूलचन्दजी बाफना और श्री देवीचन्दजी सागरमलजी (शिवगज) को फालना पुलिस चौकी मे ले जाकर पिटाई की गई। इससे असन्तोष की आग और अधिक भडक गयी। बाबा मे पुरोहितो को दरख्तो से बाध दिया गया। उनके परिवारो पर हाय जागीरी जुल्म की

लगते रहे परन्तु बाली तहसील इस पथ में अन्य पड़ोस की बनिस्बत पर लोगों की संगठन शक्ति और श्री मोहनराजजी जैन के नेतृत्व के कारण वे उस में अपूर्व विजय मिला। जागीर जब्ती के जाने बाद प्राप्त यादगार में गुप्त की गई।

थाणाद क्षेत्र में बहुत सामन्ती शोषण था। यहाँ की समस्या को लेकर किसान आन्दोलन छिड़ा जिसमें श्री पुखराजजी सीरा के नेतृत्व में सर्वश्री पेमाजी जोधाजी दलपतसिंहजी नाथमलजी जठमलजी मोहनराजजी आदि कार्यकर्ताओं ने सक्रिय सहयोग दिया। सामलाय गाँव में थाणाद ठाकुर के गिरफ्तार (कामदारों) के कारण लोग आतंकित थे। इस समाप्त करने के लिए श्री देवीचन्दजी सागरमलजी (सियाणा) के आह्वान पर श्री मोहनराजजी ने लोगों को संगठित किया और स्थानीय कार्यकर्ता सर्वश्री भीकमचन्दजी जैन (धारी) जालारामजी राणेचा आदि के सहयोग से हमेशा के लिए कामदारों को समाप्त किया गया। गोव ढाणा में भेराजी नगाजी एव नवराजी भैराजी तथा मोटरमलजी प्रमुख कार्यकर्ता थे।

हिन्दूजी भील को जिन्दा जलाया

थाणाद में हिन्दूजी भील को जिन्दा जलाने की घटना ने सारे मारवाड़ की पिछड़ी जातियों में रोष एवं असन्तोष पैदा कर दिया। हिन्दूजी पुत्र धनाजी जाति भील को बेगार नहीं करने से मना करने पर थाणाद जागीरदार के कारिन्दों ने पकड़ कर छिड़ककर जिन्दा जला दिया। इस हत्याकाण्ड की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। कानून और पुलिस सर्वशक्तिमान जागीरदार का कुछ न बिगाड़ सका। पर इन सब हुए वर्ग के लोगों ने सामन्तों के विरुद्ध बगावत का झण्डा खड़ा कर दिया।

प्रमुख कार्यकर्ता

मारवाड़ क्षेत्र में श्री विनयचन्दजी महता सक्रिय कार्यकर्ता थे। दुजाने में श्री देवशंकरजी व्यास ने सामन्तों तथा के विरुद्ध जन जागृति पैदा की। सुमेरपुर में प्रमुख कार्यकर्ता थे– सर्वश्री गणेशजी भौथर्जी इन्द्रजी माली बनेसिंह चौधरी मगाराम सुगनराजजी सुराणा पुखराजजी तावनीवाल विरदीचन्द बोरणा मनसुखजी पवेल आदि। पामाचा में अग्रवायी रहे सेठ रामचन्दजी राठी और श्री किशोरसिंह ने। वहां नाणा क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्ता थे– अनन्त रामजी व्यास जिन्होंने आदिवासियों और गरीब लोगों को संगठित कर अनेक सफल आन्दोलनों का नेतृत्व किया। दूदनी के श्री अब्दुर रज़ाकभाई सेणा व श्री जयसिंह चामुण्डेरी के श्री नन्दकिशोर अग्रवाल मधुतसिंहजी मोहनलालजी शर्मा मानपुर के श्री तातराम नाणा के श्री इस्माइल भाई अब्दुल रहमानजी बाबूलालजी रावल रहीमभाई भाटू के शिवलालजी रणछोड़जी दलपतजी भूरा रामजी जगरामजी कोसेलाव के मोहनराजजी शर्मा मगराजजी मानारामजी भण्डारी नाडोल के रूपचन्दजी बोहरा चिमनारामजी धनराजजी गिरधारीजी के सागरचन्दजी माली तखतगढ़ के मानमलजी पुरोहित सागरचन्दजी थाउराजजी श्रीमाली पन्नालाल श्रीमाली शिवगढ़ से सालारामजी जणियाँ मालाणी के भूरारामजी राणेचा खुडाला से अमृतलालजी मेहता तिलोकचन्दजी मेहता माणकमलजी चौधरी किशनराजजी मेहता लालजी बोपाा धनराजजी बागा, थाउराजजी श्रीमाली ताराचन्दजी राव बाली सागरमलजी एव बिरदीचन्दजी माली हमाजी सुथार बलाजी चौधरी नवारामजी मगराम बाट के माडीरामजी ब्राह्मण नाडोल के जगराजजी राव कुड़ालाम के बनारामजी चौधरी धारारामजी मगराज हजारामजी चौधरी आन्दोलन में प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं।

जालोर जुल्म से मोहन के साथ कोई दल वाले रहे प्रेम राजजी महता सीयल जिलाणा का वाली जिला भूल नहीं सकता है जिन्होंने जीवन भर सामन्ती सत्ता से न केवल संघर्ष किया वरन शोषित और पीड़ित गरीब वर्ग के लोगों को तन मन धन से मदद की और उन्हें हर प्रकार से सहयोग दिया। पावना गाँव के चिमनारामजी माली इनके प्रमुख सहयोगी और आज़ादी की लड़ाई में कभी हार नहीं मानने वाले सिपाही रहे हैं।

बाली जिले में नजरबन्द थे भट्टानीजी

सन् 1940 के बाद मारवाड़ के युवा वर्ग में आज़ादी की प्राप्ति के लिए गज़ब का उत्साह जगा। उन्हीं दिनों मारवाड़ लोक परिषद् के युवा अध्यक्ष श्री रणछोड़दासजी भट्टानी का तूफानी दौरा इस क्षेत्र में हुआ और इन्हें बाली किले में करीब 2 वर्ष के लिए नज़रबन्द रखा गया। उन दिनों की याद ताज़ा करते हुए अभी पिछले वर्ष स्वतंत्रता शताब्दी समारोह समिति द्वारा बाली किले के मैदान में आयोजित स्वतन्त्रता सेनानी समारोह का उद्घाटन करते हुए श्री भट्टजी ने अनेक रोचक संस्मरण सुनाये और वहाँ के सभी कार्यकर्ताओं विशेषकर द्वारकादासजी गुप्ता मागीलालजी अग्रवाल बंशीनारायणजी शर्मा और छोटमलजी सुराणा और विजय मलजी सुराणा के सहयोग की सराहना की। बाली के अन्य प्रमुख कार्यकर्ताओं में पुखराजजी भीकमचन्दजी मगनजी गजराजजी सिसोदिया भगवतीदासजी वैष्णव बालचन्दजी प्रभुदयाल बसा रामजी चौधरी चम्पालालजी चोपड़ा असलम भाई रहे हैं।

जागीरदार द्वारा दूल्हे के विरुद्ध जुहारी लाग का दावा

उस ज़माने में कैसी कैसी विचित्र लागें वसूली की जाती थी उस का एक नमूना देखिए—गाँव में शादी के बाद वर राजा जुहार



(नमस्कार) करके आशीर्वाद लेने के लिए जाता था और रिश्तेदार और वरिष्ठ लोग आशीर्वाद के साथ रुपया नारियल देते थे पर जागीरदार को जुहार करते वक्त मरराजा को रुपये भेंट करने पड़ते थे। यह जवारी लाग' नहीं देने पर ठाकुर मुण्डारा ने तेजमलजी चेलाजी जैन के विरुद्ध बाली हकूमत में एक रुपये का दावा दायर किया। हाकिम बाली ने दिनांक 7 4 41 को दावा तो खारिज किया ही उल्टे जागीरदार पर खरच के रुपये 25 और 6 आने की डिग्री दी। इससे मारवाड़ भर में तहलका मच गया।

मुण्डारा गांव में श्राद्ध के दिनों में किसान से दूध की लाग का भी लोगों ने जमकर विरोध किया। इस कर विरोधी आन्दोलन में श्री अमृतलालजी मेहता ने सक्रिय भाग लिया और जागीरी गुण्डों द्वारा उनकी पिटाई करवायी गई। विरोध करने पर लक्ष्मीचन्दजी मेहता को भी पीटा गया।

दुजाना का आधा हिस्सा लटाई में

सन् 1940–41 में लटाई के मामले को लेकर एक जबरदस्त आन्दोलन चला। परम्परागत नियमानुसार जागीरदार पैदावार का सातवां हिस्सा लटाई में लेता था पर उसने आधा हिस्सा लटाई का हुक्म जारी कर दिया। महीनों तक लाटों में अनाज पड़ा रहा। किसानों को भारी क्षति उठानी पड़ी। मारवाड़ लोक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने लोगों में काफी जागृति पैदा कर दी थी। श्रीमीठालालजी दुजाणा इस वक्त प्रमुख कार्यकर्ता रहे।

बाकली जागीरदार का आतंक

दिनांक 5 12 41 की घटना है। बाली लोक परिषद् के कार्यकर्ता प० श्री मोतीलाल शास्त्री व द्वारकादासजी गुप्ता प्रचारार्थ बाकली पहुंचे जहां युवकों ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया। श्री लक्ष्मीचन्दजी के सभापतित्व में सभा का आयोजन कर 21 रुपये की थैली भेंट की गई। लेकिन मीटिंग का ऐलान करने वाले गाँव भावी की बुरी तरह से पिटाई की गई और लोगों को रावले में बुलाकर धमकाया गया। जागीरदार की इन हरकतों से जनता में जोश उमड़ पड़ा और लोक परिषद् की शाखा की स्थापना की गई

1 जमराजजी चिमनाजी सभापति
2 उम्मेदचन्दजी मंत्री
3 पुखराजजी जवानमलजी उपमंत्री
4 पृथ्वीराजजी चिमनाजी कोषाध्यक्ष

सदस्यगण—सवश्री वीरचन्दजी रतनाजी घांची भबूताजी लूबाजी सुथार मनरूपजी, सरेमलजी, जसराजजी वीरचन्दजी, टेकाजी किशनलालजी भादानी मेघवाल सदारामीगेजी। ये चुनाव घाणेराव निवासी श्री चान्दमलजी सिंघवी के सभापतित्व में आयोजित ग्राम सभा में सम्पन्न हुए। इसी सभा में बाढ़ में क्षतिग्रस्त मकानों की मरम्मत के लिए मिट्टी लाने पर लगाये टैक्स का भी विरोध किया गया।

साण्डेराव में लोक-परिषद की प्रथम सभा

दिनांक 16 5 41 को साण्डेराव में घांचियों के चौक में स्थानीय कार्यकर्ता श्री महादत्तजी श्रीमाली ने एक सभा का आयोजन किया जिसमें श्री लक्ष्मीनारायणजी छोटमलजी सुराणा द्वारकादासजी गुप्ता अमृतलालजी मेहता के जोशीले भाषण हुए। निम्बाडानाथ के मेले में उस वर्ष हुए भीषण हुल्लड़ के फलस्वरूप लाखों रुपयों की हानि के लिए पुलिस की निन्दा की गई। श्री महादत्तजी के प्रयत्नों से अनेक सदस्य बनाये गये। साण्डेराव के प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री चुन्नीलालजी वैद्य तथा श्री गुमनारामजी मारू कुम्हार थे।

बाली परगना लोक-परिषद के चुनाव

वर्ष 1940–41 के लिए बाली परगना लोक-परिषद् की कार्यकारिणी का चुनाव निम्नानुसार सम्पन्न हुआ—सभापति सवश्री मोडारामजी ओटाजी (कोट), उपसभापति छोटमलजी सुराणा, प्रधानमंत्री द्वारकादास गुप्ता संयुक्त मंत्री श्री अमृतलालजी वदनराजजी मेहता, (मुण्डारा), कोषाध्यक्ष श्री मांगीलालजी अग्रवाल, सदस्य–बद्रीनारायणजी शर्मा, मुकनराजजी सुराणा प्रेमराजजी महता, ओटारामजी चौधरी हमाजी रूपाजी सुथार लूबकाजी रूपाजी चौधरी तथा बाली नगर की ओर से ये प्रतिनिधि और चुने गये— सवश्री मीकमचन्दजी मगाजी भगवतीदासजी वैष्णव, भबूतमलजी, वालचन्दजी, प्रेमचन्दजी, हिम्मतमलजी।

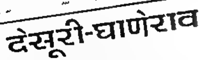
मुण्डारा के निम्नानुसार प्रतिनिधि चुने गये—

सवश्री फाऊलालजी हंसाजी श्रीमाली बद्रीनारायणजी केशवजी दवे, लक्ष्मीचन्दजी ताराचन्दजी महता नवाजी छीपा, धनारामजी वैरागी, कस्तूरचन्दजी जोशी कमाजी भीमाजी सुथार।

बाली नगर लोक-परिषद के चुनाव

दिनांक 18 2 41 को श्री छोटमलजी सुराणा की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में निम्नानुसार चुनाव हुए —

सभापति—सवश्री मीकमचन्दजी, मंत्री–विजयमलजी सुराणा, खजांची–मांगीलालजी अग्रवाल उपमंत्री—द्वारकादासजी गुप्ता।



देसूरी-घाणेराव

परगना देसूरी मे जन जागृति

राजस्थान एवं भारत के बड़े क्रान्तिकारियों की शरणस्थली घाणेराव का राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में महत्वपूर्ण स्थान है। श्री कन्हैयालालजी वैदिक घटगांव बम केस में हुई जेल से छूटकर अपने गाँव घाणेराव में ही बस गये थे। उनके यहाँ न केवल अजमेर मेरवाड़ा व मेवाड़ क्षेत्र में कार्यरत क्रान्तिकारियों का आनाजाना रहा वरन् क्रान्तिकारियों ने शस्त्रागार भी यहाँ कायम किया। सर्वश्री मोतीलालजी विजयसिंहजी पथिक जयनारायणजी व्यास माणिक्यलालजी वर्मा रामनारायणजी चौधरी आदि नेताओं का तो आवागमन होता ही रहता था पर कहते हैं कि चन्द्रशेखर आजाद सरीखे राष्ट्रीय स्तर के क्रान्तिकारी नेता भी यहाँ कुछ दिन भूमिगत रहे थे। जानकार सूत्रों ने बताया कि वैदिकजी के पुराने मकान में एक कोटरी (कमरा) है जिसमें हल्दीघाटी के युद्ध से पूर्व महाराणा प्रताप भी कुछ समय के लिए भूमिगत रहे थे। वैदिकजी एवं उनके अनुज स्वतन्त्रता सेनानी श्री महीधरजी शर्मा घाणेराव नाडोल व आस पास के गाँवों में जागीरी जुल्मों के विरुद्ध किसानों में जागृति पैदा करने का कार्य करते थे फलस्वरूप इनके साथ कई बार मारपीट की गई और इनकी माफी की भूमियाँ जब्त भी कर ली गई।

पर व्यापक स्तर पर इस क्षेत्र में जनजागृति का कार्य प्रारम्भ किया श्री फूलचन्दजी बाफना ने। इनके साथ जुड़े सादड़ी के प्रमुख कार्यकर्ताओं में सर्वश्री अनोपचन्दजी पुनमिया धीरजमलजी बच्छावत अमृतलालजी सोनी केसरीमलजी तलेसरा नगराजजी बच्छावत अमृतलालजी रांवटिया बस्तीमलजी बच्छावत नन्दकिशोरजी पुनमिया मोहनजी रांवटिया गम्भीरमलजी चान्दमलजी पुनमिया मोहनकुमारजी पुनमिया कपूरचन्दजी बाफना बोहरा जगन्नाथजी सोनी जुगराजजी पुनमिया कन्हैयालाल मिया जगन्नाथजी सोनी जुगराजजी पुनमिया पारवाल कन्हैयालाल मदारजी जाट, पुखराजजी कोठारी हस्तीमलजी पारवाल कन्हैयालाल जी वोहरा पूनमचन्दजी राठौड़ विरदीचन्दजी गोलछा, देवीलालजी व्यास चुन्नीलालजी जाधावत बंशीलालजी अमानी, गणेशजी सुथार रामलालजी जैन जगदीशजी व्यास आदि। इन्होंने मिटिंगों जुलूसों से गाँवों में आजादी के आन्दोलन को गति प्रदान की।

सादड़ी में बाफनाजी की प्रेरणा से नवयुवक मण्डल की स्थापना हुई और उसी के इर्दगिर्द कार्यकर्ता जमा हुए जो समाज सुधार कार्यक्रम से राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की ओर अग्रसर हुए।

खून के हस्ताक्षर

लोक-परिषद द्वारा स्वाधीनता आन्दोलन प्रारम्भ किये जाने पर सादड़ी के युवा कार्यकर्ता सर्वश्री नगराजजी पुनमिया, केसरीमलजी तलेसरा, मोहनकुमारजी पुनमिया, मण्डलदत्तजी बोहरा सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने अपने नेता और मारवाड़ लोक-परिषद् में स्वाधीनता आन्दोलन के आठवें डिक्टेटर श्री फूलचन्दजी बाफना को निर्भय रहकर त्यागपूर्ण जीवन जीकर राष्ट्र सेवा में लगे रहने की प्रतिज्ञा-स्वरूप अपने खून से हस्ताक्षर कर एक पत्र दिया था।

सादड़ी स्कूल में सफेद टोपी

आजादी के संघर्ष के दौरान छात्रों में भी अपार उत्साह था। श्री मोहनकुमारजी पुनमिया ने बताया कि मारवाड़ के शिक्षा विभाग के डायरेक्टर मि. ए. पी. कॉक्स के निरीक्षण के दौरान 20 छात्र गाँधी टोपी पहनकर स्कूल गये। ये टोपियाँ जोधपुर से विशेष तौर पर मंगवायी जाकर विद्यार्थियों को दी गई थी।

ऊन के बोरों में दीमक

सन् 1942 में बाफनाजी जेल में थे और सादड़ी से चार कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह करने की स्वीकृति दी थी। पर, जब शेष कार्यकर्ता सत्याग्रह करने जोधपुर नहीं पहुँचे तो बाफनाजी ने जेल से अपने घर सांकेतिक भाषा में इस प्रकार पत्र व्यवहार किया था—

बाफनाजी का पत्र—चार बोरे ऊन के जोधपुर भेजने के लिए थे। एक बोरा तो मैं यहाँ लेकर आया था। शेष तीन बोरों को भी शीघ्र भेजें क्योंकि जोधपुर में अभी माँग है। गोदाम की चाबी श्री केसरीमलजी के पास है।

उत्तर—एक बोरा ठीक है। शेष दो बोरों में दीमक लग गई है। आप लिखें तो वह एक बोरा भेज देवें।

बाफनाजी का पत्र—एक बोरे को आप शीघ्र भेज देवें। शेष दो बोरे जिनके दीमक लग गई है, उन्हें धूप में रखकर ठीक करके बिक्री लायक बनाकर जोधपुर भेज देवें। दीमक वाले बोरों को अच्छे बोरों से दूर रखें अन्यथा उसमें भी दीमक लग जायगी।

उत्तर—उसको भी दीमक लग गई है जोधपुर भेजने की स्थिति में नहीं है।

प्रमुख कार्यकर्ता

घाणेराव में सर्वश्री महीधरजी शर्मा के साथ वंशीलालजी जैन, लालचन्दजी जैन देसूरी में बालचन्दजी बाफना व चन्दनमल पटवारी बालराई में अचलचन्दजी छीपा व नवारामजी कुम्हार, बागोल में चुन्नीलालजी जाट कोट में धीरामजी वैष्णव, मादा में नारायणसिंह जी राजपुरोहित पीलोवणी में पुखराजजी छीपा ढालोप में दीपचन्दजी चौहान ग्राम कोटडी में लादाजी सुथार, चमनाजी सिरवी, खतराजी सिरवी, मोतीरामजी वैष्णव सगरतालाब में पोकरजी छीपा

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्



गजनीपुरा के मनरूपरामजी (पूर्व विधायक) व भराजी चौधरी, खूमारामजी चौधरी (राजपुरा), घाणेराव के ही श्री नथमल ताराचन्द सिंघवी ने अहमदाबाद में महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये सत्याग्रह में भाग लेकर जेल यातनाएं सहीं। श्री नथमल का व्यापार अहमदाबाद में था पर अपने कारोबार की परवाह न करते हुए इन्होंने राष्ट्र प्रेम से प्रेरित हो सत्याग्रह में भाग लिया।

नारलाई में सवश्री रेवाशंकर, नाडोल में चौधरी लिखमाराम, मांगीलाल आर्य, पीथाजी, मालाजी चौधरी, गुर्रां प्रसाद रतन, हस्तीमल सानीगरा, फतेहचन्द जैन, फौजमल रामचन्द खारडा में लालरामजी धाची हीरालालजी धाची, सावलता में जटाशंकरजी श्रीमाली पिलावणी में पुखराजजी छीपा खीमाडा में रामदत्तजी परिहार, मास्टर व मशारामजी महाराज, लच्छीरामजी पुरोहित पमारामजी चौधरी सुकनराजजी लाटेड चुन्नीलालजी वैष्णव व लालचन्दजी गादिया बुसी में रामनिवासजी परिहार, रामराजजी मेहता, सोमसर मादरलाऊ एवं इन्द्रवाडा में जोरावरमलजी, रामगोपालजी राम लालजी, चम्पालालजी भण्डारी, मांगीलालजी अरोडा पनजी लुहार, निम्बाडा में तेजसिंहजी पुरोहित, खोड में नथमलजी लाढा बख्तावर मलजी जैन, खीमराजजी चौधरी, लक्ष्मणपुरीजी आदि कार्यकर्ता सक्रिय थे। विजोवा में चन्दनमलजी भभूमलजी पालरेचा केसरी मलजी चौधरी इटदडा में गुमनारामजी चौधरी, रानी में अनन्तरामजी दवे प्रेमराजजी मेहता चोचोडी में मानमलजी जैन एवं रामारामजी चौधरी कीरवा में डूंगरमलजी बाफना व देवली पाबूजी में निहालचन्दजी परमार सोहनराजजी जैन, बजाजी चौधरी मास्टर रामेश्वरजी, पंडित पुरुषोत्तमजी श्रीमाली पंडित विद्याधरजी श्रीमाली, चम्पालालजी श्रीमाली श्री बंशीलालजी श्रीमाली, श्री मुन्नारामजी चौधरी रूपारामजी चौधरी तथा मोहनराजजी जैन सक्रिय कार्यकर्ता थे। पाली जिले में सिरवी समाज प्रमुख काश्तकारी कौम है और सामन्ती लटाइ, लाग-बाग व वेठ बेगार से ये अत्यधिक पीड़ित थे। इनके धर्मगुरु श्री मातीबाबाजी (रानी) पूर्व विधायक वाली ने इस जाति को सामन्ती जुल्मों के विरुद्ध संगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था।

संघर्ष की प्रमुख रणस्थली देवली-पाबूजी

पाली जिले में सामन्ती जुल्मों के विरुद्ध लडे गये संघर्षों में सर्वाधिक संगठित संघर्ष देवली-पाबूजी की धरती पर लडे गये और वहाँ की जनता ने लगातार सात वर्षों तक सन् 1944–45 से लेकर 1951–52 तक संघर्ष चलाया। इस संघर्ष के नायक थे– श्री मोहनराज जैन, जो विद्यार्थी-जीवन से ही (सन् 1939–40 से ही) राजनीति में सक्रिय हो गये थे। देवली में सन् 1941–42 में ही लोकनायक जयनारायण व्यास द्वारा लोक परिषद् की शाखा स्थापित हो गई थी।

गोचर भूमि के लिए सत्याग्रह

जोधपुर दरबार के प्रमुख सरजीवान श्री माधोसिंह को देवली पाबूजी एवं तीन अन्य ग्रामों की नई जागीर इनायत की गई थी। उन्होंने देवली में नगद लगान के स्थान पर लटाई की घोषणा की। गांववालों के नहीं मानने पर जागीरदार ने गोचर भूमि पर कब्जा कर ग्राम मवेशियों को चरने से रोक दिया और गोचर भूमि में नये बेरे खोदकर कब्जा कर लिया। श्री मोहनराज, जो उन दिनों इन्दौर होलकर कालेज में पढते थे उन्होंने जागीरी जुल्मों के विरुद्ध आन्दोलन की बागडोर सम्भाली। गांव की पूरी जनता कांग्रेस के झण्डे के नीचे संगठित हो गई। इनके प्रमुख साथी थे श्री निहालचन्दजी मास्टर श्री रामेश्वरजी चौधरी गजाजी एवं सोहनराजजी जैन। इस लम्बे संघर्ष के दौरान जागीरदार द्वारा बाहर से बुलाये गुण्डों द्वारा बन्दूकों लाठियों से हमले किये गये। छोटे से गांव में 200 घुडसवारों की परेड करवायी गई, आगजनी एवं फसलों को नष्ट करने की कई वारदातें की गई 100 से भी अधिक ग्रामवासियों पर अनेक फौजदारी मुकदमे बनाकर रात दिन देसूरी एवं बाली में पेशियों पर बुलाकर हैरान किया गया। जोधपुर दरबार का संरक्षण प्राप्त होने के कारण पुलिस ने भी गांवों में आतंक का राज्य कायम कर रखा था। कई दिनों तक मवेशी को घरों में रोक रखा गया। कई किसानों के खेत एवं कुएँ छुडवा दिये पर ग्रामवासियों ने लाखों रुपयों की हानि उठाकर भी हिम्मत नहीं हारी। संगठित शक्ति असम्भव को भी सम्भव बना सकती है यह ग्रामवासियों ने करके दिखा दिया। जागीरदार का सम्पूर्ण बहिष्कार सफल हुआ। उन्हें नौकर एवं मजदूर मिलना तो दूर रहा हरिजनों ने भी सफाई करना बन्द कर दिया। जागीरदार को मजबूरन देवली छोडकर जोधपुर तथा जालोर परगने के गांव तीरवी में निवास करना पडा। श्री बंशीलाल श्रीमाली ने गोचर छुडाने के लिए 11 दिन की भूख हडताल की।

रावला कोटडी में स्कूल की स्थापना

देवली गांव के मध्य में ठिकाने की एक 'बडी कोटडी' नामक भवन स्थित था। मास्टर रामेश्वरजी शर्मा ने विद्यार्थियों को उस भवन में प्रवेश कराकर स्कूल खोल दिया। जागीरदार का सारा सामान गांव वालों के सहयोग से बाहर फेंक दिया गया। कुंवर सज्जनसिंह जो कि बाद में विधायक एवं प्रमुख रहे घोडे पर सवार हो पिस्तौल लेकर आये पर मास्टरजी सीना तानकर खडे हो गये। तत्काल ही गांववालों ने कुंवर सा० एवं उनके नौकरों को घेर लिया और उन्हें जान बचाकर भागना पडा। उन्होंने भवन के नाजायज



कब्जे का दावा भी न्यायालय में प्रस्तुत किया जो सबूत के अभाव में खारिज हो गया। उस भवन में ही नया स्कूल भवन बना।

मोहनराजजी पर बन्दूक से हमला

मोहनराजजी ने कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर कई महीनों तक गांव के मवेशी चराने का काम स्वयं किया। एक दिन कुंवर सज्जनसिंह बन्दूकों से एवं लाठियों से लैस चन्द नौकरों को लेकर गोचर भूमि से मवेशी बाहर खदेड़ने के लिए हमलावर होकर आ गए। गांव के 50–60 कार्यकर्ताओं ने निडर होकर बाहर निकलने से मना कर दिया। श्री सज्जनसिंहजी ने सम्मुख खड़े मोहनराजजी पर बन्दूक का निशाना साधा, पर उसी क्षण ईश्वरीय चमत्कार ही कहिए चौप की गायें भड़क गई। घोड़ा चमक गया और बन्दूक छूटने के पूर्व ही हाथ से गिर गई और हमलावरों को भागना पड़ा। फिर तो ग्रामवासियों ने गोचर भूमि में खोदे गए दो कुओं को अरट व कचाड़े सहित मिट्टी से भर दिया और उनकी खड़ी फसलें चरा दी।

मारवाड़ के कृषि व राजस्व मंत्री नाथूराम मिर्धा दवली आये

इन्हीं दिनों फालना स्टेशन पर आयोजित किसान-सम्मेलन में श्री मोहनराज ने लोक-परिषद् के नेता श्री जयनारायण व्यास एवं किसान-नेता श्री बलदेवराम मिर्धा के सम्मुख दवली ग्राम के जागीरदार के जुल्मों की दर्दभरी कहानी रखी। थोड़े ही दिनों बाद मारवाड़ में लोक-परिषद् एवं दरबार का मिला-जुला मंत्रिमण्डल बना। कृषि एवं राजस्व मंत्री श्री नाथूरामजी मिर्धा दवली आए और ग्रामवासियों की दर्दभरी शिकायतें सुनी। उन्होंने स्वयं सारे हालात को नजरों से देखा और तत्काल ही गोचर भूमि सम्बन्धी घोषणा कर जागीरदार को किसी भी प्रकार का दखल न देने हेतु पाबन्द किया। ग्राम दवली के इस पांच वर्षीय लम्बे संघर्ष में ग्रामवासियों ने अनूठी एकता एवं संगठित शक्ति का प्रदर्शन किया। इसके प्रमुख नायक थे श्री मोहनराजजी जैन और सहयोगी थे श्री निहालचन्द जी परमार, सोहनराजजी, बजाजी चौधरी, बदाजी चौधरी, रूपारामजी चौधरी, पुरखारामजी श्रीमाली, मास्टर रामेश्वरजी परमार, चम्पालालजी श्रीमाली व विरधराजी मार्गी। इस आन्दोलन में स्त्री पुरुष बच्चे सभी शरीक हुए। स्त्रियों ने गीत गा-गाकर पुरुषों का उत्साह बढ़ाया। रोज प्रातः मवेशी लेकर चराने के लिए स्वयं सेवकों का दल निकलता तो यह गीत गाया जाता—

मत दूध लजाइजे पाछो मत आईजे बेटा राड सू ।
जो जायो सो जावसी, कोई निर्भिक मरे कपूत
करतब करतो जो मरे, सच्चो वीर सपूत ।
जिन धरती रे धान सू औ प्रबल बणियो शरीर,
उन धरती पर टुकड़ा पड़ियो, वीर न छोड़े धीर ॥
पाछो फिरजे जीत ने पू, या रहिजे रण खेत,
जा बेटा मैदान मे सब तज दे घर री हेत ॥

एक गीत और—

मुलक ने मोट्यारां माथा देना पड़सी,
देश ने मोट्यारों, माथा देना पड़सी ॥
मरधरा भूखा मारणिया, काजसरे सिर भूखा
करिया रण रा राज सजावो,
जुलम जोर री जड़ ने काटो, फूट मूठ री खाई पाटो
हिलमिल हाथ लगाओ।
आओ अपणो देश उबारो, भारत मा रो भार उतारो,
सर दे नाव बचाओ ॥

मूलाजी चौधरी की हत्या

जवाली ग्राम के निवासी श्री मूलाराम चौधरी का वाणी का एक बेरा इन्दरवाड़ा ग्राम में था। जागीरदार उसे बेदखल करना चाहता था। देवली-पाबूजी के कांग्रेसी कार्यकर्ता सर्व श्री निहालचन्द जी परमार, मास्टर रामेश्वरजी, रामलालजी घांची सामसर, रामगोपालजी इन्दरवाड़ा व मूलाजी चौधरी की मदद में बेरे पर रात भर रहे। जागीरदारों ने रात के समय बन्दूकों से हमला किया। मूलारामजी वहीं मारे गये और अन्य सभी कार्यकर्ता बुरी तरह से घायल हुए जिनका जोधपुर में इलाज करवाया गया।

ग्राम कोटड़ी में नई लहर

जागीरदार गाँव कोटड़ी (नाडोल) के आतंक, जुल्म एवं बेगार से परेशान होकर मेघवालों के 40 परिवार मकान-खेत छोड़कर अन्य गावों में जा बसे। दवली कांग्रेस के कार्यकर्ताओं का एक दल श्री मोहनराजजी के नेतृत्व में वहाँ पर पहुंचा और जन-आन्दोलन छेड़ दिया। फलस्वरूप सारे मकानों एवं खेतों से जागीरदार का कब्जा हटाकर मेघवाल-परिवारों को पुनः आबाद किया गया। गाँववालों ने वेठ-बेगार एवं लाग-बाग बन्द कर दी। इस कार्यक्रम में गाँव कोटड़ी के प्रमुख कार्यकर्ता लादाजी व भीमारामजी सुथार, मोतीराम जी तथा चतराजी व चिमनाजी चौधरी प्रमुख सहयोगी हैं।

ग्राम खोड़ में राजनीतिक सम्मेलन

ग्राम खोड़ राष्ट्रीय आन्दोलन में अग्रणी स्थान रखता है। यहाँ के प्रमुख जननेता श्री नथमलजी लोढ़ा के प्रयत्नों से खोड़ में मारवाड़ लोक-परिषद का विशाल पैमाने पर सम्मेलन हुआ जिसमें जिम्मेवार हुकूमत कायम करने का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया गया। इस सम्मेलन को मारवाड़ लोक-परिषद के प्रमुख नेता सव



श्री जयनारायणजी व्यास, मथुरादासजी माथुर, रणछोडदास जी गट्टानी, मानमल जी जन फूलचन्द जी बाफना आदि ने सबोधित किया। पाली के सब श्री रामप्रसादजी गाँधी, रामप्रतापजी शर्मा (गुन्दोज), मीठालालजी काका (सोजत), मूलचन्दजी भट्ट (पाली) खाड के नथमलजी लाढा के अतिरिक्त सब श्री बख्तावरमल, लक्ष्मणपुरी, खीमाराम चौधरी तथा पनेचन्दजी मेहता ने भी इस सम्मेलन को सफल बनाने म अथक परिश्रम किया।

श्री नवारामजी माली पर जुल्म

चाणाद ठिकाणे के ग्राम वालराइ म लोक परिषद के कायकर्ता श्री नवाराम माली कुम्हार के साथ ठिकाणे के कमचारियो न मारपीट एव बेजा हरकतें करने मे कोई कसर नही रखी, कई झूठे मुकदमे भी बनाये। इसी प्रकार श्री अचलचन्दजी छीपा को भी सामन्ती जुल्मो के विरुद्ध लडने के कारण परेशान किया गया, पर ये कायकर्ता अडिग रहे।

ग्राम खरोकडा मे आन्दोलन का श्रीगणेश

ग्राम खरोकडा माफी जागीरदारो का गाव था, अत चौधरियो, कुम्हारो मेघवालो, सरगरो आदि कौमो को बेगार निकालन के लिए भयकर यातनाएँ दी जाती थी। गाव के लोग घर खेत छोडकर अन्यत्र जाने को मजबूर हो गये थे पर बाली के स्वतत्रता सेनानी श्री छोटमलजी सुराणा न वहा जाकर लोगो को सगठित किया, उनम जागृति पदा की और बठ-बेगार व लाग बाग के विरुद्ध एक सफल आन्दोलन चलाया। इसका प्रभाव सारे गावो पर हुआ।

लोक परिषदो के चुनाव

सन् 1940 म लोक-परिषद की शाखाओ के चुनाव हुए। खरोकडा मे निम्नानुसार पदाधिकारी चुने गये–

सभापति– सवश्री नन्दकिशोरजी शर्मा उपसभापति– हिम्मतमलजी परमार मत्री– अमृतलाल जी सोनी कोषाध्यक्ष– फूलचन्दजी राठौड, सदस्यगण– कन्हयालालजी वैदिक, प्रमोदकुमारजी गुरा, धीरजमलजी बच्छावत, अनोपचन्दजी व नगराजजी पुनमिया।

परगना कमेटी क प्रतिनिधि –

सादडी स अनोपचन्दजी पुनमिया, फूलचन्दजी राठौड फूलचन्दजी बाफना अमृतलालजी सोनी पुखराजजी कोठारी देवीचन्दजी शर्मा राजमलजी तलीसरा, नन्दकिशोरजी शर्मा, चान्दमलजी पुनमिया, बिरदीचन्दजी गोलेच्छा, घाणेराव स कन्हयालालजी वदिक, नाडोल म हिम्मतमलजी परमार व अमरचन्दजी।

इन्दरवाडा लोक-परिषद के चुनाव

दिनाक 15 2 41 को ग्राम इन्दरवाडा (सामसर) म लोक-परिषद् के निम्नानुसार चुनाव सम्पन्न हुए –

सभापति– सवश्री रामगोपालजी मत्री– जोरावरमलजी जन सयुक्त मत्री रघुनाथजी कोषाध्यक्ष– मागीलालजी अरोडा सदस्य– रामलालजी आय, बनजी लौहार, पनजी चौधरी, बनजी सिरवी चतराजी, मायारामजी, मोतीजी गुमनाजी (प्रतापगढ) घूलजी (निम्बोडा), बालमुकन्दजी अरोडा (सामेसर) खुरशीद हुसनजी अली माहम्मदजी।

देसूरी परगना लोक परिषद के चुनाव

दिनाक 22 11 41 को देसूरी परगना लोक-परिषद क चुनाव इस प्रकार हुए–

सभापति – सवश्री अनोपचन्दजी पुनमिया उपसभापति– हिम्मतमलजी परमार प्रधानमत्री– फूलचन्दजी बाफना प्रचारमत्री– कन्हयालालजी वदिक, कोषाध्यक्ष– पुखराजजी कोठारी सदस्यगण– फौजमलजी (नाडोल) प्रेमराजजी महता (रानी) मगनारामजी सोनार (सादडी), प्रमोदरतनजी गुरा (नाडोल) दानमलजी इदाजी (घाणेराव), देवीलालजी व्यास (सादडी) सुमरमलजी वकील (देसूरी), चन्दनमलजी (बिजोवा)।

देवली-पाबूजी मे लोक-परिषद

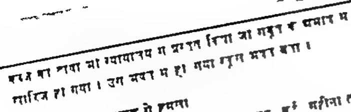
सन् 1942 के लिए देवली पाबूजी मे मत्री श्री मोहनराजजी द्वारा आयोजित किसान-सम्मेलन म सैकडो सदस्य लोक-परिषद के बनाये गये। इस सम्मेलन को श्री जयनारायणजी व्यास व श्री बशीधर जी पुरोहित जोधपुर न सम्बोधित किया। इसी सम्मेलन म देवली ग्राम के विकास की योजना बनाई गई और लोक-परिषद् के निम्न पदाधिकारी चुन गये –

सभापति – श्री निहालचन्दजी परमार उपसभापति– बजाजी चौधरी, मत्री – रामेश्वरजी शर्मा कोषाध्यक्ष– सोहनराजजी जन सदस्य – मोहनराजजी, पुरुषोत्तमजी रूपारामजी चौधरी चम्पालालजी श्रीमाली, बुधारामजी चौधरी विद्याधरजी महाराज चुन्नीलालजी वष्णव।

सामती तत्वो से सघर्ष

नाडोल मे श्री कन्हैयालालजी वदिक की पिटाई

सन् 1941 के अक्टूबर माह मे श्री कन्हैयालालजी वदिक (घाणेराव) नाडोल मे किसानो का ठिकाने की ज्यादतियो के विरुद्ध आन्दोलन करन हेतु समझा रहे थे कि सामन्ती गुण्डा-तत्वो ने उन पर हमलाकर बुरी तरह स पिटाई की। सोमाजी घाची एव अन्य किसानो के बलो को जबरन फाटक मे डालकर मनमाने फाटक शुल्क वसूल किये जाते थे। ठिकाणे के फौजदार का इतना आतक था कि श्री धीरजमलजी बच्छावत, सादडी का उनके मित्र श्री राजमलजी नाडोल वालो के यहाँ ठहरने से भी रोक दिया गया।



करने का न्याय या न्यायालय म प्रयत्न किया जो गढ़ने के समार म
शामिल हो गया। उन समय म ही सभा शुरू करना था।

मोहनराजजी पर बन्दूक से हमला

मोहनराजजी ने करिश्र का पदार्पण ... बहे महिना तक
गाव के सारा परग ना बाल स्वय किया। एक दिन अचार गजार
लिए बन्दूको म तथा लाठिया म लस कर ... बा नगर ...
भूमि म नयना बाहर ... के लिए हमलावर होकर ... ।
गाव के 50–60 कायकर्ताओ ने जिनके बाहर निकल म मना
कर दिया। श्री गजरानजी ने अमुख ... मोहनराजजी पर
बन्दूक का निशाना साधा पर उसी दम ... चमत्कार हो गया
बन्दूक की नली ऊपर ... घोड़ा दबा और बन्दूक ... के
चोर की गोली मदद ... । हमलावरो का आशा नहा । फिर तो
पुत ही हाथ म गिर गई और हमलावरों का ... जर्ज के कवार
ग्रामवासियो ने शाकर भूमि म लाद दब दाबया का काट के
सहित लिट्टा म भर लिया और उनकी ... गर्म करा ... ।

मारवाड़ के कृषि व राजस्व मंत्री नाथूराम मिर्धा देवली ग्राम

... दिया ... पर ... किसान-सम्मेलन म
श्री मोहनराज ने लोक-परिषद् के ... श्री जयनारायण व्यास एव
किसान-नेता श्री बलदेवराम मिर्धा के सम्मुख ... ग्राम के जागार
दार के जुल्मो का ... बताया गया। ... दिन बाद मार
वाड़ म लोक-परिषद् एव दरबार का मिला जुला मंत्रिमण्डल बना।
कृषि एव राजस्व मंत्री श्री नाथूरामजी मिर्धा ... ग्राम और
ग्रामवासियो का ... दिखायी हुआ। उन्होंने स्वय ... हालात
को नजरो से देखा और तत्काल ही ... भूमि सम्बन्धी ...
कर जागीरदार का ... इस प्रकार का ... म ... गाव
किया। ग्राम दयला के इस ... वर्षीय ... म ग्रामवासियो
ने अनूठी एकता एव संगठित शक्ति का प्रदर्शन किया। इसके प्रमुख
नायक थे श्री मोहनराजजी जन और सहयोगी थे श्री निहालचन्द जी
परमार मोहनराजजी बजाजी चौधरी ... चौधरी ... रामजी
चौधरी ... मास्टर रामेश्वरजी परमार
धनालालजी श्रीमाली व विद्याधरजी ... । इस आन्दोलन म स्त्री
पुरुष बच्चे सभी शरीक हुए। स्त्रियो ने गीत गा गाकर पुरुषों
का उत्साह बढ़ाया। राज प्रात ... वक्त पर घरान के लिए स्वय
सबका ... निकलता तो यह गीत गाया जाता—

मत दूध लजाइजे पाछो मत आईजे बेटा ... सू ।
जो जायो सो जावसी, कोई ... मरे सपूत ।
करतब करतो जा मरे, सच्चो वीर सपूत ।
जिन धरती रे धान सू ओ प्रबल बणियो शरीर,
उन धरती पर ... पड़ियो, वीर न छोड़े धीर ॥

पाछो फिरजे ... के सू, ... रहिजे ... ...
आ देस ... म ... ... के घर रो ... ॥

एक गीत और—

मुगल म मोट्यारो माथा देना पड़सी,
देस मे मोट्यारो माथा देना पड़सी ॥
मरघट सा मारवाड़, ... लिए मूंघा
... रत ना ... ...
जुल्म ओर री जड़ ने काटो ... री ... काटो
... हाथ लगाओ।
थाने ... देस उबारो भारत मां रो भार उतारो
... ... ॥

मूलाजी चौधरी की हत्या

... ग्राम के ... मूलाराम चौधरी का ... का
... देस ... ग्राम म था। जागीरदार उन ... करना
चाहता था। ... के कावना कार्यकर्ता गर्म था ...
... परमार मास्टर रामेश्वरजी ... चौधरी ...
... व मूलाजी चौधरी की ... म ... पर
... के ... बन्दूको स हमला
... । जागीरदारो म ... और अन्य सभी कायकर्ता घुरी
... । मूलारामजी वही मार ... और ... न्याय करवाया गया।
... म ... जोधपुर म ... ।

ग्राम कोटड़ो म नई लहर

जागीरदार गाव कोटड़ा (मारोल) के ... जुल्म ...
... ने 40 परिवार ...
बेगार म परेशान होकर ... । इसकी ... के कार्यकर्ताओ का
... गांवो म जा बसे। ... वहा पर पहुंचा और जन
एक दम श्री मोहनराजजी के ... म ... सभाएं ... म
आन्दोलन ... दिया। फलस्वरूप सारे ... परिवारो का पुन आबाद
जागीरदार का कब्जा हटाकर ... बन्द कर दी।
किया गया। गांववालो ने बेठ बेगार एव लाग-बाग ...
इस कार्यक्रम म गांव कोटड़ो के प्रमुख कार्यकर्ता ... व विगनाजी
चीमारामजी सुथार मोतीरामजी तथा ...
चौधरी प्रमुख सहयोगी हैं।

ग्राम सोड़ म राजनीतिक सम्मेलन

ग्राम सोड राष्ट्रीय आन्दोलन म अपना स्थान रखता है।
यहाँ के प्रमुख जननेता श्री नथमलजी ... के प्रयत्नो स सोड म
मारवाड़ लोक-परिषद् का विशाल पैमान पर सम्मेलन हुआ, जिसम
जिम्मेदार हुकूमत कायम करने का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया
गया। इस सम्मेलन का मारवाड़ लोक-परिषद् के प्रमुख नेता सब

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्



श्री जयनारायणजी व्यास मथुरादासजी माथुर रणछोडदास जी गट्टानी मानमल जी जैन फूलचन्द जी बाफना आदि ने सबोधित किया। पाली के सव श्री रामप्रसादजी गाधी रामप्रतापजी शर्मा (गुदाज) मीठालालजी काका (सोजत) मूलचन्दजी मटट (पाली) खाड के नथमलजी लोढा के अतिरिक्त सव श्री बरतावरमल लक्ष्मणपुरी खीमाराम चौधरी तथा पनचन्दजी मेहता ने भी इस सम्मेलन को सफल बनाने म अथक परिश्रम किया।

श्री नथारामजी मारू पर जुल्म

चाणोद ठिकाणे के ग्राम बालराड म लोक परिषद के कायकर्ता श्री नथाराम मारू कुम्हार के साथ ठिकाणे के कमचारियो ने मारपीट एव बेजा हरकतें करने मे कोई कसर नही रखी कई भूठे मुकदमे भी बनाये। इसी प्रकार श्री अचलचन्दजी छीपा को भी सामन्ती जुल्मो के विरुद्ध लडने के कारण परेशान किया गया पर ये कायकर्ता अडिग रहे।

ग्राम खरोकडा मे आन्दोलन का श्रीगणेश

ग्राम खरोकडा माफी जागीरदारो का गाव था अत चौधरियो कुम्हारो मघवालो सरगरो आदि कौमो को बेगार निकालने के लिए भयकर यातनाएँ दी जाती थी। गाव के लोग घर खेत छोडकर अन्यत्र जाने को मजबूर हो गये थे पर बाली के स्वतनता सनानी श्री छोटमलजी सुराणा ने वहा जाकर लोगो को सगठित किया उनमे जागृति पदा की और बैठ बेगार व लाग बाग के विरुद्ध एक सफल आन्दोलन चलाया। इसका प्रभाव सारे गाँवो पर हुआ।

लोक परिषदो के चुनाव

सन् 1940 मे लोक-परिषद की शाखाओ के चुनाव हुए। खरोकडा म निम्नानुसार पदाधिकारी चुने गये–

सभापति– सवश्री नन्दकिशोरजी शर्मा उपसभापति– हिम्मतमलजी परमार मत्री– अमृतलाल जी सोनी कोषाध्यक्ष– फूलचन्दजी राठौड सदस्यगण– कन्हयालालजी वैदिक प्रमोदकुमारजी गुरा धीरजमलजी बच्छावत अनोपचन्दजी व नमराजजी पुनमिया।

परगना कमेटी के प्रतिनिधि –

सादडी स अनोपचन्दजी पुनमिया फूलचन्दजी राठौड फूलचन्दजी बाफना अमृतलालजी सोनी पुखराजजी कोठारी देवीचन्दजी शर्मा राजमलजी तलीसरा नन्दकिशोरजी शर्मा चान्दमलजी पुनमिया बिरदीचन्दजी गोलच्छा धाणराव स कन्हयालालजी वैदिक नाडोल से हिम्मतमलजी परमार व अमरचन्दजी।

इन्दरवाडा लोक-परिषद के चुनाव

दिनाक 15 2 41 को ग्राम इन्दरवाडा (सोमसर) म लोक परिषद् के निम्नानुसार चुनाव सम्पन्न हुए –

सभापति– सवश्री रामगोपालजी मत्री– जोरावरमलजी जन सयुक्त मत्री रघुनाथजी कोषाध्यक्ष– मागीलालजी अरोडा सदस्य– रामलालजी आय बनजी लौहार पनजी चौधरी बनजी मिरवी चतराजी मायारामजी मोतीजी गुमनाजी (प्रतापगढ) धूलजी (निम्बोडा) बालमुकन्दजी अरोडा (सोमसर) खुरशीद हुसनजी अली मोहम्मदजी।

देसूरी परगना लोक परिषद के चुनाव

दिनाक 22 11 41 को देसूरी परगना लोक परिषद के चुनाव इस प्रकार हुए–

सभापति – सवश्री अनोपचन्दजी पुनमिया उपसभापति– हिम्मतमलजी परमार प्रधानमत्री– फूलचन्दजी बाफना प्रचारमत्री– कन्हयालालजी वदिक कोषाध्यक्ष– पुखराजजी कोठारी सदस्यगण– फौजमलजी (नाडोल) अमराजजी मेहता (रानी) मगनारामजी सोनार (सादडी) प्रमोदरतनजी गुरा (नाडोल) दानमलजी इन्दाजी (धाणराव) देवीलालजी व्यास (सादडी) सुमेरमलजी वकील (देसूरी) चन्दनमलजी (बिजोवा)।

देवली-पाबूजी मे लोक-परिषद

सन् 1942 के लिए देवली पाबूजी म मत्री श्री मोहनराजजी द्वारा आयोजित किसान-सम्मेलन म सकडो सदस्य लोक-परिषद के बनाये गये। इस सम्मेलन को श्री जयनारायणजी व्यास व श्री बशीधर जी पुरोहित जोधपुर ने सम्बोधित किया। इसी सम्मेलन म देवली ग्राम के विकास की योजना बनाई गई और लोक-परिषद् के निम्न पदाधिकारी चुने गये

सभापति – श्री निहालचन्दजी परमार उपसभापति– बजाजी चौधरी मत्री – रामेश्वरजी शर्मा कोषाध्यक्ष– मोहनराजजी जैन सदस्य – मोहनराजजी पुरुषोत्तमजी रूपारामजी चौधरी चम्पालालजी श्रीमाली बुधारामजी चौधरी विद्याधरजी महाराज चुन्नीलालजी वष्णव।

सामती तत्वो से सघर्ष

नाडोल मे श्री कन्हैयालालजी वदिक की पिटाई

सन् 1941 के अक्टूबर माह म श्री कन्हयालालजी वदिक (धाणराव) नाडोल म किसानो को ठिकाने की ज्यादतियो के विरुद्ध आन्दोलन करने हेतु समझा रहे थ कि सामन्ती गुण्डा-तत्वो ने उन पर हमलाकर बुरी तरह से पिटाई की। सामाजी घाची एव अन्य किसानो के बलो को जबरन फाटक म डालकर मनमाने फाटक शुल्क वसूल किये जाते थे। ठिकाणे के फौजदार का इतना आतक था कि श्री धीरजमलजी बच्छावत सादडी को उनके मित्र श्री राजमलजी नाडोल वालो के यहाँ ठहरने से भी रोक दिया गया।

कस्बे की शाखा भी ग्रामालय में प्रस्तुत किया जो समूल के प्रभाव में शामिल हो गया। उस भवन में ही नया स्कूल भवन बना।

मोहनराजजी पर बन्दूक से हमला

मोहनराजजी ने कोठ के पड़ोस ... कई गांवों तक गांव के सवर्णों पर ... का काम शुरू किया। एक दिन ठाकुर गजसिंह बन्दूकों से लैस साथियों के साथ ... भूमि में सवर्णों बाहर ... के लिए हमलावर होकर आ गए। गांव के 50-60 कार्यकर्ताओं ने ... होकर बाहर निकल के ... कर लिया। श्री गजसिंहजी ने सम्मुख खड़े मोहनराजजी पर बन्दूक का निशाना साधा पर उसी क्षण ईश्वरीय चमत्कार ही कहिए चोट का ... बदल गए। साथी जमा लिया और बन्दूक छूटने के पूर्व ही हाथ से गिर गई और हमलावरों को भागना पड़ा। फिर तो ग्रामवासियों ने जागीर भूमि में ... का कब्जा के बजाय सहित मिट्टी से भर दिया और उनका नशा उतार दिया।

मारवाड़ के कृषि व राजस्व मंत्री नाथूराम मिर्धा देखने आये

इस लिखा धामली स्थल पर आयोजित किसान-सम्मेलन में श्री मोहनराज ने लोक-परिषद् के नेता श्री जयनारायण व्यास एवं किसान-नेता श्री बलदेवराम मिर्धा के सम्मुख इस गांव के जागीरदार के जुल्मों का दर्दभरा बखान किया। थोड़े ही दिनों बाद मारवाड़ में लोक-परिषद् एवं दरबार का मिला जुला मंत्रिमण्डल बना। कृषि एवं राजस्व मंत्री श्री नाथूरामजी मिर्धा इस गांव और ग्रामवासियों की दर्दभरी शिकायतें सुनी। उन्होंने स्वयं सारे हालात को नजरों से देखा और तत्काल ही जागीर भूमि सम्बन्धी कागजात कर जागीरदार का ... इस प्रकार का ... हेतु ... किया। ग्राम देवता के इस पांच वर्षीय सत्व संघर्ष में ग्रामवासियों ने अनूठी एकता एवं संगठित शक्ति का प्रदर्शन किया। इसके प्रमुख नायक थे श्री मोहनराजजी जैन और सहयोगी थे श्री निहालचन्दजी परमार मोहनराजजी भगाजी चौधरी ... चौधरी रूपारामजी चौधरी गुलाबचन्दजी श्रीमाली मास्टर रामचन्द्रजी परमार रूपलालजी श्रीमाली व विद्याधरजी मामा। इस आन्दोलन में स्त्री पुरुष बच्चे सभी शरीक हुए। स्त्रियों ने गीत गा-गाकर पुरुषों का उत्साह बढ़ाया। राज प्रात मुकदमे लेकर घरों के लिए स्वयं सेवकों का दल निकलता तो यह गीत गाया जाता—

मत दूध लजाइजे पाछो मत आईजे बेटा राड सूं ।
जो जायो सो जायसी, कोई रिबरिब मरे कपूत
करतब करतो जा मरे, सच्चो वीर सपूत ।
जिन धरती रे धान सूं थो प्रबल बलियो शरीर,
उन धरती पर कुलडो पड़ियो, वीर न छोड़े धीर ।।
पाछो फिरजे जीत ने थ, मत रहिजे रण लार
मा बैठी मैदान में कब लगे घर री हैर ।।

एक गीत और—

मुलक मे मारवाड़ी भाषा देवा पड़सी,
देश मे मोटवाड़ी, भाषा देवा पड़सी ।।
मरघरा कोना मारवाड़िया कायमरे जिद मुखा
वरिया राज रा राज गमाओ
जुलम जोर री जड़ ने काटो ऊंच नीच री खाई पाटो
हिलमिल हाथ लगायो ।
मायो मरतो देश उबारो, भारत मां रो भार उतारो
सर है साथ बचायो ।।

भूणाजी चौधरी की हत्या

बड़ाणी ग्राम के निवासी श्री भूणाराम चौधरी का खातो का एक खेत इन्दवाड़ा ग्राम में था। जागीरदार उस हिस्से पर कब्जा करना चाहता था। ... के खिलाफ ... थे निहालचन्दजी परमार मास्टर रामचन्द्रजी रामनारायणजी ... भूणाजी चौधरी के खेत में रहे थे। जागीरदारों ने रात के समय बन्दूकों से हमला किया। भूणारामजी वहीं मारे गये और अन्य सभी कार्यकर्ता बुरी तरह से घायल हुए जिनका जोधपुर में इलाज करवाया गया।

ग्राम कोटड़ी में नई लहर

जागीरदार गांव कोटड़ा (सादाम) के ठाकुर जुल्म एवं बेगार से परेशान होकर मेघवालों के 40 परिवार मकान छोड़कर अन्य गांवों में जा बसे। इसकी खबर के कार्यकर्ताओं का एक दल श्री मोहनराजजी के नेतृत्व में वहाँ पर पहुँचा और जन आन्दोलन शुरू किया। फलस्वरूप सारे मकानों एवं खेतों से जागीरदार का कब्जा हटाकर मेघवाल-परिवारों को पुनः आबाद किया गया। गांववालों ने बेठ बेगार एवं लाग-बाग बन्द कर दी। इस कार्यक्रम में गांव कोटड़ा के प्रमुख कार्यकर्ता लालजी व मागारामजी सुथार मातीराम जी तथा पतराजी व चिमनाजी चौधरी प्रमुख सहयोगी हैं।

ग्राम सोढ में राजनीतिक सम्मेलन

ग्राम सोढ राष्ट्रीय आन्दोलन में अग्रणी स्थान रखता है। यहाँ के प्रमुख जननेता श्री नथमलजी सोढ़ा के प्रयत्नों से सोढ में मारवाड़ लोक-परिषद् का विशाल पैमाने पर सम्मेलन हुआ जिसमें जिम्मेवार हुकूमत कायम करने का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया गया। इस सम्मेलन को मारवाड़ लोक-परिषद् के प्रमुख नेता सब



री जयनारायणजी व्यास, मथुरादासजी माथुर, रणछोडदास जी गट्टानी, मानमल जी जन, फूलचन्द जी बाफना आदि ने सबोधित किया। पाली के सब श्री रामप्रसादजी गाघी रामप्रतापजी शर्मा (गुन्दाज), मीठालालजी वाका (सोजत), मूलचन्दजी मटट (पाली) खोड के नथमलजी लाढा के अतिरिक्त सब श्री बरतावरमल लक्ष्मणपुरी, खीमाराम चौधरी तथा पनेचन्दजी मेहता न भी इस सम्मलन का सफल बनान मे अथक परिश्रम किया।

श्री नवारामजी मारू पर जुल्म

थाणाद ठिकाणे के ग्राम बालराई म लोक परिषद के कार्यकर्ता श्री नवाराम मारू कुम्हार के साथ ठिकाणे के कर्मचारिया न मारपीट एव बेजा हरकतें करन म कोई कसर नही रखी, कई झूठे मुकदम भी बनाय। इसी प्रकार श्री अचलचन्दजी छीपा को भी सामन्ती जुल्मो के विरुद्ध लडने के कारण परेशान किया गया, पर य कार्यकर्ता अडिग रह।

ग्राम खरोकडा मे आन्दोलन का श्रीगणेश

ग्राम खरोकडा माफी जागीरदारा का गाव था अत चौधरिया कुम्हारा मेघवाला सरगरो आदि कौमा को बगार निकालन क लिए भयकर यातनाएँ दी जाती थी। गाव के लोग घर खेत छाडकर अन्यत्र जान को मजबूर हो गय थे पर बाली के स्वतन्त्रता-सनानी श्री छोटमलजी सुराणा न वहाँ जाकर लोगा को समठित किया उनमे जागृति पदा की और बठ-बेगार व लाग बाग के विरुद्ध एक सफल आन्दोलन चलाया। इसका प्रभाव सारे गावा पर हुआ।

लोक परिषदो के चुनाव

सन् 1940 म लोक परिषद की शाखाओ के चुनाव हुए। खरोकडा म निम्नानुसार पदाधिकारी चुन गय—

सभापति— सवश्री नन्दकिशोरजी शर्मा उपसभापति— हिम्मतमलजी परमार मन्त्री— अमृतलाल जी सोनी कोषाध्यक्ष— फलचन्दजी राठौड, सदस्यगण— कन्हैयालालजी वैदिक, प्रमोदकुमारजी गुरा, धीरजमलजी बच्छावत अनोपचन्दजी व नगराजजी पुनमिया।

परगना कमेटी के प्रतिनिधि —

सादडी स अनोपचन्दजी पुनमिया, फूलचन्दजी राठौड फूलचन्दजी बाफना अमृतलालजी सोनी पुखराजजी कोठारी दवीचन्दजी शर्मा, राजमलजी तलीसरा, नन्दकिशोरजी शर्मा चान्दमलजी पुनमिया, बिरदीचन्दजी गालच्छा, घाणेराव स कन्हयालालजी वदिक, नाडोल स हिम्मतमलजी परमार व अमरचन्दजी।

इन्दरवाडा लोक-परिषद के चुनाव

दिनाक 15 2 41 को ग्राम इन्दरवाडा (सोमेसर) मे लोक-परिषद् के निम्नानुसार चुनाव सम्पन्न हुए —

सभापति— सवश्री रामगोपालजी मन्त्री— जोरावरमलजी जैन सयुक्त मन्त्री रघुनाथजी, कोषाध्यक्ष— मांगीलालजा अरोडा सदस्य— रामलालजी आय बनजी लौहार पनजी चौधरी बनजी मिरवी चतराजी मायारामजी मातीजी, गुमनाजी (प्रतापगढ) धूलजी (निम्बोडा) बालमुकन्दजी अरोडा (सोमसर), खुरशीद हुसनजी अली मोहम्मदजी।

देसूरी परगना लोक-परिषद के चुनाव

दिनाक 22 11 41 को देसूरी परगना लाक परिषद के चुनाव इस प्रकार हुए—

सभापति — सवश्री अनोपचन्दजी पुनमिया उपसभापति— हिम्मतमलजी परमार, प्रधानमन्त्री— फूलचन्दजी बाफना प्रचारमन्त्री— कन्हयालालजी वदिक कोषाध्यक्ष— पुखराजजी काठारी सदस्यगण— फौजमलजी (नाडोल) प्रेमराजजी मेहता (रानी) मगनारामजी सोनार (सादडी) प्रमोदरतनजी गुरा (नाडोल) दानमलजी इदाजी (घाणराव) दवीलालजी व्यास (सादडी) सुमरमलजी वकील (देसूरी) चन्दनमलजी (बिजोवा)।

देवली पाबूजी मे लोक-परिषद

सन् 1942 के लिए देवली पाबूजी म मन्त्री श्री मोहनराजजी द्वारा आयोजित किसान सम्मलन म सकडो सदस्य लाक-परिषद क बनाय गये। इस सम्मेलन को श्री जयनारायणजी व्यास व श्री बशीधर जी पुराहित जाधपुर ने सम्बोधित किया। इसी सम्मलन म देवली ग्राम के विकास की याजना बनाई गई और लाक-परिषद् के निम्न पदाधिकारी चुन गये -

सभापति — श्री निहालचन्दजी परमार, उपसभापति— बजाजी चौधरी मन्त्री — रामेश्वरजी शर्मा काषाध्यक्ष— साहनराजजी जन, सदस्य — मोहनराजजी, पुरषोत्तमजी रूपारामजी चौधरी, चम्पालालजी श्रीमाली बुधारामजी चौधरी, विद्याधरजी महाराज चुनीलालजो वष्णव।

सामती तत्त्वो से सघष

नाडोल मे श्री कन्हैयालालजी वदिक की पिटाई

सन् 1941 के अक्टूबर माह मे श्री कन्हयालालजी वदिक (घाणेराव) नाडोल मे किसाना को ठिकाने की ज्यादतिया क विरुद्ध आन्दोलन करने हेतु समझा रहे थे कि सामन्ती गुण्डा-तत्वा न उन पर हमलाकर बुरी तरह स पिटाई की। सामाजी घाची एव अन्य किसानो के बलो को जबरन फाटक म डालकर मनमान फाटक शुल्क वसूल किय जात थे। ठिकाणे के फौजदार का इतना आतक था कि श्री धीरजमलजी बच्छावत सादडी को उनके मित्र श्री राजमलजी नाडाल वाला के यहाँ ठहरन से भी रोक दिया गया।



विश्वयुद्ध के लिए चन्दा-वसूली का विरोध

विश्व-युद्ध 1940-41 में चल रहा था। सारे देश में युद्ध के लिए चन्दा-वसूली हो रही थी। [illegible] पुलिस [illegible] श्री [illegible]जी [illegible] ने इसका कड़ा विरोध किया और पुलिस [illegible] हाथ नहीं आए।

बिजोवा में हवलदार की ज्यादती

दिनांक 30-3-41 को ग्राम बिजोवा में हवलदार [illegible] लोक-परिषद् [illegible] श्री [illegible]जी [illegible] लोक-परिषद् [illegible] हवलदार की [illegible] के आह्वान किया।

खाटडी में मिडिल स्कूल की मांग

दि० 4-2-41 को गांव में श्री [illegible] पुनमिया [illegible] लोक-परिषद् के [illegible] में [illegible] ए० वी० सी० स्कूल को मिडिल स्कूल में [illegible] की मांग की गई क्योंकि मिडिल स्कूल [illegible] बाहर दूर-दूर भेजना पड़ता था। [illegible] व्यवस्था के लिए म्युनिसिपैलिटी की मांग की गई। गांव में वसूल की जाने वाली [illegible] उपयोग [illegible] में किए जाने की मांग भी की गई।

भादरलाऊ गांव में मावठु फसल के लाटे

सन् 1941 की मावठु फसल [illegible] भादरलाऊ जागीरदार ने [illegible] लिए। [illegible] निरीक्षण पर मारवाड़ लोक-परिषद् के [illegible] श्री [illegible] भादरलाऊ-गामसर [illegible] और [illegible]। [illegible] फसल [illegible] किसानों को हानि उठानी पड़ी थी। मारवाड़ लोक-परिषद् ने [illegible] जागीरदारों द्वारा लाटे नहीं करने के मामले को [illegible] उठाया और तत्कालीन चीफ मिनिस्टर मिस्टर डी०एम० फील्ड ने एक आदेश जारी किया।

जागीरदारों को सरकार की चेतावनी

मारवाड़ के प्रधानमंत्री मि० डी०एम० फील्ड का आदेश था कि लाटे वक्त पर करें अन्यथा हरजाना दिलाया जायेगा —

दि० 20-5-41

[illegible] किसानों [illegible] के खिलाफ [illegible] शिकायतें [illegible] है [illegible] और [illegible] किया गया है। [illegible] किसानों का नुकसान [illegible] है [illegible] किसानों [illegible] है कि [illegible] शिकायतें [illegible] है [illegible] किसानों के [illegible] है [illegible] है कि किसानों [illegible] जागीरदार [illegible]। किसानों [illegible]।

और अब यह [illegible] जागीरदारों के लिए [illegible] जागीरदारों को [illegible] हुक्म [illegible] है कि [illegible] हुक्म की पूरी-पूरी तामील करें। [illegible] तरीका [illegible] किया जायेगा।

दस्त०

डी० एम० फील्ड, चीफ मिनिस्टर,

गवर्नमेंट ऑफ जोधपुर।

बावजूद इन सरकारी [illegible] के भी गांवों में [illegible] जागीरी समाप्ति के बाद भी [illegible] सिलसिला जारी रहा पर स्वाधीनता प्राप्ति के बाद [illegible] जागृति [illegible] प्रकार के [illegible] में [illegible]। इस क्षेत्र में [illegible] जागृति [illegible] वालों की [illegible] में प्रमुख भूमिका निभाई सर्वश्री गणपतजी सुनार, मूलचन्दजी पुनमिया (बालूरी), [illegible] राठौड़, दुर्गाजी [illegible] ([illegible]), [illegible]मलजी पटवारी ([illegible]), [illegible]जी (नारलाई), [illegible]जी [illegible] ([illegible]), पूनमचन्दजी पुनमिया ([illegible]), [illegible]सिंहजी ([illegible]), नारायणसिंहजी ([illegible]), [illegible]मलजी पालरेचा व [illegible]मल जी चौधरी (बिजोवा), [illegible]जी ([illegible]), [illegible]मलजी पुनमिया ([illegible]), [illegible]मलजी ([illegible]), [illegible]जी भण्डारी (रानी), [illegible]जी (रानी), [illegible]जी पारेख (रानी), बाबूलालजी ([illegible]), [illegible]जी ([illegible]) ने।



: 6 :

ऐतिहासिक 28 मार्च, 1942 · एक संस्मरण

□ श्री दयालसिंह गहलोत ब्यावर □

तत्कालीन मारवाड़ लोकपरिषद् द्वारा 28 मार्च के दिन मारवाड़ में पूर्ण उत्तरदायी स्वराज्य की मांग की गयी थी अतः यह दिन उत्साहपूर्वक मनाया जाना स्वाभाविक था। सन् 1942 में सोजत परगने में राष्ट्रीय नेताओं ने यह दिवस किसान आन्दोलन व जन-जागृति के अग्रणी कस्बे—चण्डावल में मनाने का निश्चय किया। उस समय उसमें सम्मिलित होने वाले सभी नेताओं व कार्यकर्ताओं की हत्या के षड्यन्त्र की लोमहर्षक कहानी वाले इस काण्ड में सज्जनों कार्यकर्ताओं व राष्ट्रीय नेताओं को गंभीर चोटें आयी।

समारोह की पूर्व संध्या पर जागीरदार की ओर से आतंक की दृष्टि से बन्दूकों, भालों व लाठियों से लैस लगभग ढाई सौ भाड़े के टट्टुओं की घोड़ों पर तथा पैदल सारे गांव में आतंक फैलाने की दृष्टि से एक प्रदर्शन यात्रा निकली। उनकी हिट लिस्ट में अंकित सारे कार्यकर्ताओं पर नजर रखने के लिए कहीं वे भागकर बच न निकलें, अनेक घरों पर कड़ा पहरा बैठाया गया।

प्रायः समारोह के लिए निश्चित समय से दो घंटे पूर्व लठैतों व भाला-बन्दूकधारियों ने सभा स्थल को घेर लिया और सामने आकर बैठ गये। यह प्रदर्शन और आतंक कुछ हद तक किसी को कहीं से वहां न आने देने में सफल हो गये। सभा-स्थल पर केवल इन पंक्तियों का लेखक ही श्रोता के रूप में उपस्थित था।

यह स्मरणीय है कि जागीरदार को प्रथम श्रेणी का मजिस्ट्रेट होने व अपनी स्वयं की पुलिस रखने का अधिकार प्राप्त था। इसी पुलिस के थानेदार ने मुझे एकान्त में ले जाकर समझाने का प्रयत्न किया कि इस तरह के माहौल में किसी भी तरह की मीटिंग होने की कोई सम्भावना नहीं है, तथा उस मीटिंग में सम्मिलित होना खतरे से खाली नहीं है। यह सम्मति भी दी कि एक भला आदमी होने के नाते मेरा वहां बैठना मुझे व्यर्थ परेशानी में डाल देगा। मैंने उत्तर में थानेदार साहब को मेरे प्रति उनकी इस शुभकामना के लिए धन्यवाद दिया और बताया कि मैं वहां मीटिंग करने नहीं, वरन् यदि कुछ कहा जाय तो सुनने आया हूं। फिर भी यदि वे लोग मेरे साथ मारपीट करेंगे तो मैं यह जानते हुए शिकायत भी नहीं करूंगा कि वे बेचारे शराब पीकर अपने आप में नहीं हैं। और, मैं पुनः अपनी जगह आकर बैठ गया।

इतने में आपसी खुर-फुसाहट से ऐसा ज्ञात हुआ कि बाहर के मेहमान आ गये हैं और वे बाहर ही रोक दिये गये हैं। लेखक उठ कर उनसे मिला और सारी परिस्थिति से उन्हें अवगत कराया।

लेखक गांव के विद्यालय में प्रधानाध्यापक होने के साथ ही पोस्ट मास्टर भी था। डाक चण्डावल रेल्वे स्टेशन रवाना करनी थी अतः सीधा पोस्ट ऑफिस गया। संयोग की बात स्कूल भवन की चाबी चपरासिन के पास रहा करती थी जो ठिकाणे के कर्मचारी की पत्नी थी। कर्मचारी वर्ग भी सारा का सारा इस षड्यन्त्र से जुड़ा हुआ था या जोड़ दिया गया था। विवश होकर बाहर ही बैठना पड़ा। गांव का रास्ता घटना केन्द्र बना हुआ था। ठाकुर साहब सड़क पर झांकती हुई सीढ़ियों पर आकर इस सारे काण्ड का संचालन कर रहे थे। बीसियों लोग इधर उधर भाग-दौड़ कर रहे थे। इनमें से कुछ ने शराब पी रखी थी। मुझे बाद में मालूम हुआ, बाहर मार-पीट या मार-काट आरम्भ हो गई थी। मुझे डाक बन्द करने के लिए अन्दर जाना था। पास में ही स्थित जैन मन्दिर से एक मार्ग स्कूल में आने का था। मैं उधर से भीतर आया, डाक रवाना की ही थी कि आततायियों की 'चामुण्डा माता की जय' की आवाज सुनाई दी।

डाकखाने की खिड़की सड़क पर खुलती थी। मैं वहां बैठा हुआ था कि भीड़ में से आवाज आई कि मास्टर को बाहर निकालो इसने बहुत तार चिट्ठियां दी हैं। मुझे उनकी मद्यप अवस्था में उन्मत्तता का आभास तब हुआ जब मेरे बहुत से स्नेही भी उस समय ऊल-जलूल बोल रहे थे जिन्हें बाद में बहुत खेद भी हुआ। मैं खिड़की से देख रहा था कि भीड़ परिषद् के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रामसुख पुरोहित पर अन्धाधुंध लाठियां बरसा रही थी।

जब मुझे बाहर जाते देखा तो श्री मांगीलाल त्रिवेदी उर्फ आलीशानजी, जो स्थानीय लोकपरिषद् के मंत्री तथा इस सभा के संयोजक थे सभा स्थगित करने की घोषणा करने बाहर की तरफ रवाना हुए। ज्यों ही उन्होंने आगत महानुभावों को देखा, उनका हृदय प्रेमाधिक्य से आन्दोलित हो उठा और जोर से 'जय हिन्द' बोलकर उनका अभिनन्दन किया।

'जयहिन्द' का घोष पूरा होते-होते उन पर लाठियों की वर्षा
प्रारम्भ हो गई। एक सवार ने घोड़े को दौड़ाकर ठाकुर साहब को
सूचना दी कि लाठी चल गई है। ठाकुर साहब का आदेश हुआ—
बहुत अच्छा किया, अब बाकी सब को भी सम्भालो। बाहर से आये
सज्जनों में मोजत सोजत रोड, कंटालिया, बगड़ी, देवली, कर्मावास,
सोडिया आदि अनेक गावों के लोग थे। सबको ही न्यूनाधिक रूप में
हमले का शिकार बनाया गया। मीठालालजी वावा की आँख के
पास भाले की चोट लगी। विजयशंकरजी दवे की पसलियों की
हड्डियों में फ्रेक्चर हो गया। वकील साहब जसवन्तराजजी सिंघवी
तथा मोहनराजजी भी अछूते नहीं रहे।

गाव में भी आततायी काम कर रहे थे। आलीशानजी पर
प्रहार करके यह दल गाव के चुने हुए कार्यकर्ताओं को देखने गया।
परशुराम आमेटा जो अपना खेत हड़पे जाने का प्रबल प्रतिरोध कर
रहे थे का मकान सबसे पहले पड़ता था। वहां रात के पहरे से
सजग होकर आमेटा-वर्ग उन्हें अपने बीच में लेकर बैठा था। आगे
श्री चांदमलजी गांदिया, जिनका दोष था केवल एक भी मिनट में कुछ
बोलना, को पीटा गया। वहां से यह दल रामसुखजी के यहां पर
पहुंचा।

यह सत्य है कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है।
एक कार्यकर्ता किसी तरह पीपलिया पहुंचा और स्वर्गीय सेठ श्री प्रेम
राजजी बोहरा (प्रेम केबल वाले) से मिला और घायलों को इलाज
के लिए अन्यत्र ले जाने के लिए उनकी गाड़ी मांगी। बोहराजी
समाज सुधारक तो दर्जे के थे ही, उदारता व राष्ट्रीयता भी उनमें
कूट-कूट कर भरी थी। उनकी गाड़ी के पहुंचते ही घायलों को लेकर
चण्डावल के स्वर्गीय सेठ मिश्रीलाल लूणिया हर प्रकार के सहयोग के
लिए कमर कस कर साथ गये। सोजत अस्पताल वालों के ना
कहने पर घायलों को जोधपुर ले जाया गया, जहां उनके उपचार की
समुचित व्यवस्था हुई।

चण्डावल में 144 धारा लगा दी गई। लोक परिषद् ने इसे
तोड़ने का निर्णय लिया। प्रथम सत्याग्रही बनने का श्रेय मिला
युवक नेता श्री रणछोड़दास गट्टानी को, जो बाद में हाईकोर्ट के जज
भी रहे। श्री गट्टानी के प्रवेश के ठीक पहले धारा 144 व 116
उठा ली गई और आंशिक विजयोल्लास में जब श्री गट्टानी के नेतृत्व
में कार्यकर्तागण उसी स्थान पर सलाह करने जा रहे थे, जहां कि
घटना घटी थी, कहते हैं जागीरदार का खून खौलने लगा और
वह मरने मारने पर उतारू हो गये, पर ठिकाणे के समझदार लोगों ने
उन्हें पकड़े रखा।

उन्हीं दिनों एक मिशन लेकर स्टेफर्ड क्रिप्स दल-बल सहित यहां
आये हुए थे। चण्डावल-काण्ड की गूंज ने उनके कान खोल दिये और
भारत की स्वतन्त्रता में हो रही देर को उन्होंने थोड़ा समेटा। ❖





:7:

ऐसा भी जमाना था

☐ श्री मोहनराज जैन ☐

लेखक ने पाली जिले के अपने गाव—देवली पाबूजी मे तो लम्बे समय तक ठिकानेदारा से सघर्ष किया ही था, मगर अन्य जागीरदारा—जाणोद, बाणेराव बोया, खीमाडा आदि के जागीरी जुल्मों के विरुद्ध भी अनेक आन्दोलनो का सफल नेतृत्व किया था। उन्हीं की लेखनी से दिल दहलाने वाले ऐतिहासिक प्रसग तथा उन दिना पत्र पत्रिकाओ मे छपे समाचारो की कतरणें यहां प्रस्तुत हैं—
—सम्पादक

1 कोल्हू मे बैल की जगह जोत कर छ माह की यातना

अग्रेजा का साम्राज्य और उन्ही की जेल। पाली जिले के चण्डावल ग्राम के स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय मागीलालजी त्रिवेदी सन् 1931–32 मे असहयोग आन्दोलन के दौरान मध्य प्रदेश की बुलढाणा जेल म ठूस दिये गये थे। वहाँ विभिन्न प्रकार की यातनाए—पत्थर की कक्रीट कूटना, आटा पीसने की चक्की चलाना तो दी ही जाती थी मगर त्रिवदीजी को लगातार छ माह तक तेल की घाणी (कोल्हू) म बैल के स्थान पर जोतकर दिन मे आठ आठ घटे तक अमानुषिक यातनाए भी दी गइ। फिर भी पाली जिले का यह नौजवान सपूत माफी मागने को तयार नही हुआ।

2 एक सौ एक जूतो की मार हर चोट पर 'भारत माता की जय!'

सन् 1939–40 का किस्सा। चण्डावल (सोजत) ग्राम म मारवाड लोक परिषद् की सभा को जागीरदार के घुडसवारा ने लाठी प्रहार कर भग कर दिया था जिसम परिषद् के शीर्षस्थ नेता घायल हुए। इस सभा को आयाजित करने म श्री मागीलाल त्रिवेदी व मीठालालजी काका का हाथ था। उनके साथ ही वहीं का अनुसूचित जाति (सरगरा) के एक नौजवान—छलाराम चौहान ने बडे साहस स जागीरी-हमलावरो का मुकाबला किया था। उसके बाद ठाकुर का हुक्म हुआ जिससे उसके आदमी छलाराम को एक दिन रावले म पकड कर ले आये। देखत ही देखते वहा रावले म सकडो की सख्या म ग्रामीण इकट्ठे हो गय। ठाकुर का हुक्म हुआ—इस हरामजादे को 101 जूते लगाये जायें। उस नौजवान को रावले के चौक मे बठा दिया गया और ठाकुर के टुकडा पर पलने वाले कारिन्दे एक एक कर करने लगे छलाराम के सिर पर जूता की वर्षा। पूरे एक सौ एक जूतो की मार और हर मार पर छलाराम 'भारत माता की जय ऽऽ का नारा बुलन्द करता रहा।

आखिर उस भारत माता के लाडले सपूत का मकान, खेत सभी कुछ जब्त कर चण्डावल से देश निकाला देकर निकाल दिया गया। वह टूट गया पर झुका नही।

3 बोया (वाली) के राजपुरोहितो को अमानुषिक यातनाए

यह हादसा अधिक पुराना नही, भारत के आजाद होन के साथ ही जागीरी प्रथा की समाप्ति की आवाज अधिक जार से बुलन्द हुई जिसमे गाव गाव मे जागीरी जुल्म बढने लग। बोया गाव के ठाकुर ने उसी गाव के डोलीदार माफीदार राजपुराहिता स अन्य काश्तकारो के समान ही बठ बेगार व लाग बाग वसूल करन की ठानी। मना करन पर हुक्म हुआ कि सभी राजपुरोहिता—मद, औरत बच्चे सभी को रावले मे बन्द कर दो। घुडसवारो ने रात को घेरा डालकर सभी को खदेडा और गाव से तीन किलोमीटर दूर रावले मे औरता व बच्चा को कोठरी म बन्द कर दिया तथा पुरुष वग को पडौस के जगल (ओड) म खजडे के वृक्षो मे लटका कर रस्सी मे बाध दिया। गाव म केवल वे ग्रामीण ही इस अत्याचार के शिकार नही हुए जिनक पास जमीनें नही थी।

4 ठाकुर के हाथ से पिस्तौल गिरी गाव वालो ने बन्दूक छीनी।

श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा देवली पाबूजी म 'मास्टर साहब क नाम से जाने जाते थ। दवली मे विद्यालय के लिये कोई उपयुक्त



जागीरी जुल्मों से पीड़ित ग्राम जनों द्वारा गाँव छोड़ कर उछाला करने तथा गाँव के दरवाजे पर गधा रोपण करने का एक दृश्य ।

मकान नहीं था जिसमें शर्माजी को अपनी पाठशाला एक चबूतरे पर धूप में लगाना पड़ती थी । गाव के बीचोबीच ठाकुर की एक पुरानी कोठड़ी थी—पुराना लम्बा चौड़ा खाली मकान । ठाकुर और गाव वालों के बीच संघर्ष तो चल हो रहा था । उस दौरान गाव वालों ने उस कोठड़ी का ताला तोड़कर ठाकुर का पुराना पड़ा सामान बाहर खेत में डाल दिया तथा प्रात ही ढोल बाजों के साथ उसमें स्कूल का उद्घाटन करके बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया तथा बाहर "आयस भवन" का बोर्ड लगाकर तिरंगा झण्डा फहरा दिया । ठाकुर बाहर गवन में रहते थे सुनते ही आग बबूला हो गये । कुवर ने घोड़े पर सवार होकर चन्द कारिन्दों के साथ कोठड़ी में प्रवेश कर वहा बैठे शर्माजी व बच्चों को धमकाना शुरू किया । इतने में ही बिजली की तरह गाव में खबर फैल गई । सैकड़ों ग्रामवासी इकट्ठे हो गये और घेर लिया कुंवर साहब को । कुवर साहब ने पिस्तौल निकाली तो शर्माजी सीना तान कर सामने आ गये—चलाओ तुम्हारी पिस्तौल ! उस माहौल में पिस्तौल हाथ से गिर गई और कुवर साहब डरकर सिर पर पैर रखकर भागे । आज उसी स्थान पर शानदार स्कूल भवन बना हुआ है ।

देवली पाबूजी में गोचर का लम्बा संघर्ष चला

इन पंक्तियों के लेखक ने अपनी कालेज की पढ़ाई स्थगित कर सम्पूर्ण गांव के मवेशी को साल भर तक चराने का काम किया । एक दिन जब मैं व अन्य साथी कार्यकर्ता—निहालचन्दजी परमार रामेश्वरजी धनाजी चौधरी मोहनराजजी चम्पालालजी श्रीमाल आदि 100 के लगभग कार्यकर्ता हाथों में लाठियां लिये गीत गाते हुए मवेशी चरा रहे थे सहसा कुंवर साहब शस्त्रों से लैस व घोड़े पर सवार हो अपने कारिन्दों के साथ आ धमके । ज्यों ही हम सम्भल



ग्राम चण्डावल के नौजवान छलारामजी पर ग्राम जनता के सामने 101 जूता की मार और हर मार पर सेनानी द्वारा 'भारत माता की जय' का उदघोष।

कर खडे हुए और उन्होंने बन्दूक सम्भाली कि गोघर में चर रही गायें भड़क उठीं। इसी भगदड में घोडे चमक गये और हमारे सामने तनी हुई बन्दूक कुंवर साहब के हाथ से गिर गई।

यह सब इतना जल्दी घटित हुआ कि सारे ही लोग हमारे दल के निकट पहुच गये। कुंवर साहब के लिये भागना भी मुश्किल हो गया।

5 चालीस मेघवशी परिवारो को घरो से निकाला

घटना 1945–46 की है। गर्मियों में दवली ग्राम (गाव कोटरी) के लादाजी सुथार ने अपने गाव के ठाकुर के जुल्मों की दास्तान सुनाते हुए बताया कि किस प्रकार 40 मेघवंशी परिवारों को उनके घरों से बेदखल कर उनके घरों में घास भरवा दी है और मेघवालों को गाव छोडकर भागना पडा है। हमने गाव कोटरी में कांग्रेस की ओर से सभा करने का निश्चय किया और कहा कि निश्चित तारीख को उन सभी मेघवालों को जरूर बुलाया जाय और गाव कोटरी में, डरते और सहमते हुए ही सही, पर आधी रात तक सभी लोग इकट्ठे हो जायें।

6 हिन्दूजी भील को जिन्दा जला डाला

चाणोद ठाकुर के ट्रैक्टर पर वहीं के हिन्दूजी भील से बेगार का काम लिया जाता था। जब उसने बिना वेतन काम करने से मना किया तो ठाकुर और उसके कारिन्दे आग बबूला हो गये। चाणोद ठिकाना मारवाड के ठिकानों में अग्रणी था। उन्हें भला यह कैसे बर्दाश्त होता? एक सुबह हिन्दूजी पर पैट्रोल छिड़ककर ठाकुर के कारिन्दों ने आग लगा दी। हिन्दूजी तत्काल ही जलकर राख का ढेर हो गया।



चाणोद मे हिन्दूजी भील को सामन्ती तत्वो ने ट्रैक्टर का तेल डालकर जिन्दा जला दिया।

इस राक्षसी कृत्य के विरोध म काग्रेस की ओर स गाँव म जुलूस निकाला गया जिस पर जागीरी गुण्डो न भारी पथराव कर उसे तितर बितर करना चाहा। आक्रमण म कई कार्यकर्ता गम्भीर रूप स घायल हुए, जिनम रामप्रतापजी शर्मा (गुन्दोज) रामप्रसादजी गाधी (पाली) व पुखराज जी परिहार (चाणोद) मुख्य थे।

7 साण्डेराव ठाकुर ने जवाई बाँध की नहर रोकी

बात कुछ पुरानी है। तत्कालीन ठाकुरो की हठधर्मी, उनकी तुनक मिजाजी और सनक के यो तो गाव-गाव म हजारो किस्से प्रचलित हैं पर अपने गाव म आने वाली काश्तकारो व स्वय के लिए खुशहाली लाने वाली नहर को धौंस धमकी स रोकने का उदाहरण अन्यत्र शायद ही मिले।

जवाई नहर क खुदने का काय सिन्दरू व साण्डेराव के समीप पहुचा। साण्डेराव के कुवर अपने दल-बल सहित खुदती नहर के बीच मे बैठ गये और एलान किया—कौन मेरी भूमि म नहर खोद सकता है? वे मरने मारने पर आमादा हो गये। आखिर जोधपुर स पुलिस पहुची और उन्हें गिरफ्तार कर बाली के किले मे नजर बन्द रखा गया।

मैंने (मोहनराज) साण्डेराव की उसी घटना का उल्लेख सन् 1952 म श्री गोकुलभाई भट्ट की अध्यक्षता म आयोजित एक सभा म किया तो उसी दुराग्रही दल न लाठियो स श्री गोकुल भाई भट्ट व मेरे ऊपर हमला बोल दिया। सभा म अशान्ति फैलाने व भग करने के आरोप म साण्डेराव कुवर पर एक मुकदमा चला और बाली हाकिम न उस ठाकुर कुवर को दण्डित किया।

8 मूलारामजी चौधरी को गोलियो से भूना

यह दिल दहलाने वाली घटना सन् 1946 47 की है। जवाली



ग्राम इन्दरवाड़ा (सोमेसर स्टेशन) में चौधरी मूलारामजी को उसके बेरे से बेदखल करने पहुंचे ठाकुर ने बन्दूक की गोली मार कर हत्या कर दी । कांग्रेसी कार्यकर्ता मास्टर रामेश्वरजी (देवली) रामलालजी तथा रामप्रसादजी माली बुरी तरह घायल हुए ।

निवासी मूलाराम चौधरी ग्राम इन्दरवाडा (सोमेसर स्टेशन) में अपनी खातेदारी के बेरे पर काश्तकारी करता था तभी गुढा जैतसिंह के जागीरदारों ने उसे बेदखल करने की धमकियां दी । मूलाराम ने देवली-पाबूजी कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्ताओं को अपनी दुःख भरी दास्तान सुनाई । देवली से निहालचन्द जी परमार रामेश्वर जी शर्मा सोमेसर से रामलालजी घांची इन्दरवाडा से श्रीराम गोपालजी माली आदि मूलाराम को सहयोग देने का आश्वासन देने उसके बेरे पर गये और रात को वहीं ठहरे । उसी रात जागीरदारों ने बन्दूकों से हमला कर मूलाराम को वहीं ढेर कर दिया । रामेश्वर जी राम लाल जी तथा रामगोपालजी उस घटना में गम्भीर रूप से घायल हो गये जिन्हें जोधपुर के विण्डम अस्पताल (अब महात्मा गांधी अस्पताल) में भर्ती कराया गया । इस हत्याकाण्ड की तीव्र प्रतिक्रिया हुई । देवली कांग्रेस के अध्यक्ष मोहनराज जैन ने काश्तकारों का सम्मेलन आयोजित कर उस समय मारवाड़ में नये भूमि बन्दोबस्त के फलस्वरूप बड़े पैमाने पर हो रही बेदखलियों को रोकने के लिये एक सशक्त आन्दोलन खड़ा किया । मारवाड़ लोक परिषद् के दबाव व प्रभाव के कारण जोधपुर स्टेट से एक सरक्यूलर निकालकर परगना हाकिमों को बेदखलियां रोकने के आदेश दिये गये । आखिर कुछ समय पश्चात् ही सरकार ने मारवाड़ टीनेन्ट्स प्रोटेक्शन आर्डिनेंस जारी कर बेदखलियां करने पर पाबन्दी लगा दी ।

इस प्रकार स्वर्गीय मूलारामजी चौधरी की शहादत ने लाखों किसानों के हितों की रक्षा की ।



चाणोद मे हिन्दूनी भील को सामन्ती तत्त्वो ने ट्रेक्टर का तेल डालकर जिन्दा जला दिया।

इस राक्षसी कृत्य के विरोध म काग्रेस की ओर स गाँव म जुलूस निकाला गया जिस पर जागीरी गुण्डा न भारी पथराव कर उस तितर बितर करना चाहा। आक्रमण स कई कार्यकर्ता गम्भीर रूप स घायल हुए, जिनम रामप्रतापजी शर्मा (गुन्दोज), रामप्रसादजी गाधी (पाली) व पुखराज जी परिहार (चाणाद) मुख्य थे।

7 साण्डेराव ठाकुर ने जवाई बाँध की नहर रोकी

बात कुछ पुरानी है। तत्कालीन ठाकुरा की हठधर्मी, उनकी तुनक मिजाजी और सनक के या तो गाव गाव म हजारा किस्स प्रचलित हैं पर अपन गाव म आन वाली काश्तकारा व स्वय के लिए खुशहाली लाने वाली नहर को धौंस धमकी स रोकन का उदाहरण अन्यत्र शायद ही मिले।

जवाई नहर के खुदन का काय मिन्डू व साण्डराव के समीप पहुचा। साण्डेराव क कुवर अपने दल-बल सहित खुदती नहर के बीच मे बैठ गये और एलान किया—कौन मेरी भूमि म नहर खोद सकता है? वे मरने मारने पर आमादा हो गये। आखिर जोधपुर स पुलिस पहुचा और उन्ह गिरफ्तार कर बाली के किले मे नजर बन्द रखा गया।

मैंने (मोहनराज) साण्डेराव की उसी घटना का उल्लेख सन् 1952 म श्री गोकुलभाई भट्ट की अध्यक्षता म आयोजित एक सभा म किया ता उसी दुराग्रही दल ने लाठियो स श्री गोकुल भाई भट्ट व मेरे ऊपर हमला बोल दिया। सभा म अशान्ति फलाने व भग करने क आरोप म साण्डेराव कुवर पर एक मुकदमा चला और बाली हाकिम न उस ठाकुर कुवर को दण्डित किया।

8 मूलारामजी चौधरी को गोलियो से भूना

यह दिल दहलाने वाली घटना सन् 1946 47 की है। जवाली



ग्राम इन्दरवाडा (सोमेसर स्टेशन) मे चौधरी मूलारामजी को उसके बेरे से बेदखल करने पहुचे ठाकुर ने बन्दूक की गोली मार कर हत्या कर दी । कांग्रेसी कार्यकर्ता मास्टर रामेश्वरजी (देवली) रामलालजी तथा रामप्रसादजी माली बुरी तरह घायल हुए ।

निवासी मूलाराम चौधरी ग्राम इन्दरवाडा (सोमेसर स्टेशन) मे अपनी खातेदारी के बेरे पर काश्तकारी करता था तभी गुन्दा जैनसिंह के जागीरदारा ने उसे बेदखल करने की धमकियाँ दी । मूलाराम ने देवली-पाबूजी कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्ताओ को अपनी दुःख भरी दास्तान सुनाई । देवली से निहालचन्द जी परमार, रामेश्वर जी शर्मा, सोमेसर से रामलालजी घाची इन्दरवाडा से श्रीराम गोपालजी माली आदि मूलाराम को सहयोग देने का आश्वासन देने उसके बेरे पर गये और रात को वही ठहरे । उसी रात जागीरदारा ने बन्दूको से हमला कर मूलाराम को वही ढेर कर दिया । रामेश्वर जी राम लाल जी तथा रामगोपालजी उस घटना मे गम्भीर रूप से घायल हो गये जिन्हे जोधपुर के विण्डम अस्पताल (अब महात्मा गाधी अस्पताल) मे भर्ती कराया गया । इस हत्याकाण्ड की तीव्र प्रतिक्रिया हुई । देवली कांग्रेस के अध्यक्ष मोहनराज जैन ने काश्तकारो का सम्मेलन आयोजित कर उस समय मारवाड मे नये भूमि बन्दोबस्त के फलस्वरूप बडे पैमाने पर हो रही बेदखलियो को रोकने के लिये एक सशक्त आन्दोलन खडा किया । मारवाड लोक परिषद् के दबाव व प्रभाव के कारण जोधपुर स्टेट से एक सरक्यूलर निकालकर परगना हाकिमो को बेदखलिया रोकने के आदेश दिये गये । आखिर कुछ समय पश्चात् ही सरकार ने मारवाड टीनेन्टस प्रोटेक्शन आर्डिनेंस जारी कर बेदखलियाँ करने पर पाबन्दी लगा दी ।

इस प्रकार स्वर्गीय मूलारामजी चौधरी की शहादत ने लाखो किसानो के हितो की रक्षा की ।



चाणोद मे हिन्दूजी भील को सामन्ती तत्वो ने ट्रक्टर का तेल डालकर जिन्दा जला दिया।

इस राक्षसी कृत्य के विराध म कांग्रेस की आर स गांव मे जुलूस निकाला गया, जिम पर जागीरी गुण्डा ने भारी पथराव कर उम तितर बितर करना चाहा। आक्रमण स कई कायकर्ता गम्भीर रूप म घायल हुए जिनम रामप्रतापजी शर्मा (गुन्दोज) रामप्रसादजी गाधी (पाली) व पुखराज जी परिहार (चाणाद) मुख्य थे।

7 साण्डेराव ठाकुर ने जवाई बांध की नहर रोकी

बात कुछ पुरानी है। तत्कालीन ठाकुरा की हठधर्मी उनकी तुनक मिजाजी और सनक के यो तो गाव गाव म हजारा किस्स प्रचलित है पर अपने गाव म आने वाली काश्तकारा व स्वय के लिए खुशहाली लाने वाली नहर को धौंस धमकी स रोकने का उदाहरण अन्यत्र शायद ही मिल।

जवाई नहर क खुदने का काय भिन्दरू व साण्डेराव के समीप पहुचा। साण्डेराव क कुवर अपने दल-बल सहित खुदती नहर के बीच म बठ गये और एलान किया—कौन मेरी भूमि मे नहर खोद सकता है? वे मरने मारन पर आमादा हा गय। आखिर जोधपुर स पुलिस पहुची और उन्ह गिरफ्तार कर बाली क किले म नजर बन्द रखा गया।

मैंने (मोहनराज) साण्डेराव का उसी घटना का उल्लख सन् 1952 म श्री गोकुलभाई भट्ट की अध्यक्षता म आयोजित एक सभा म किया तो उसी दुराग्रही दल न लाठियो स श्री गोकुल भाई भट्ट व मेर ऊपर हमला बोल दिया। सभा म अशान्ति फलाने व भग करने क आरोप म साण्डेव कुवर पर एक मुकदमा चला और बानी हाकिम ने उस ठाकुर कुवर को दण्डित किया।

8 मूलारामजी चौधरी को गोलियो से भूना

यह दिल दहलाने वाली घटना सन् 1946 47 की है। जवाली



ग्राम इन्दरवाडा (सोमेसर स्टेशन) मे चौधरी मूलारामजी को उसके बेरे से बेदखल करने पहुचे ठाकुर ने बन्दूक की गोली मार कर हत्या कर दी । काग्रेसी कार्यकर्ता मास्टर रामेश्वरजी (देवली) रामलालजी तथा रामप्रसादजी माली बुरी तरह घायल हुए ।

निवासी मूलाराम चौधरी ग्राम इन्दरवाडा (सोमेसर स्टेशन) मे अपनी खातेदारी के बेरे पर काश्तकारी करता था, तभी गुढा जेतसिंह के जागीरदारो ने उसे बेदखल करने की धमकियाँ दी । मूलाराम ने देवली-पाबूजी काग्रेस कमेटी के कार्यकर्ताओ को अपनी दुख भरी दास्तान सुनाई । देवली से निहालचन्द जी परमार, रामेश्वर जी शर्मा, सोमेसर से रामलालजी घाची, इन्दरवाडा से श्रीराम गोपालजी माली आदि मूलाराम को सहयोग देने का आश्वासन देने उसके बेरे पर गये और रात को वही ठहरे । उसी रात जागीरदारो ने बदूको से हमला कर मूलाराम को वही ढेर कर दिया । रामेश्वर जी राम लाल जी तथा रामगोपालजी उस घटना मे गम्भीर रूप से घायल हो गये जिन्हे जोधपुर के विण्डम अस्पताल (अब महात्मा गाधी अस्पताल) मे भर्ती कराया गया । इस हत्याकाण्ड की तीव्र प्रतिक्रिया हुई । देवली काग्रेस के अध्यक्ष मोहनराज जैन ने काश्तकारो का सम्मेलन आयोजित कर उस समय मारवाड मे नये भूमि बन्दोबस्त के फलस्वरूप बडे पैमाने पर हो रही बेदखलियो को रोकने के लिये एक सशक्त आन्दोलन खडा किया । मारवाड लोक परिषद् के दबाव व प्रभाव के कारण जोधपुर स्टेट से एक सरक्यूलर निकालकर परगना हाकिमो को बेदखलियाँ रोकने के आदेश दिये गये । आखिर कुछ समय पश्चात् ही सरकार ने 'मारवाड टीनेन्टस प्रोटेक्शन आर्डिनेंस' जारी कर बेदखलियाँ करने पर पाबन्दी लगा दी ।

इस प्रकार स्वर्गीय मूलारामजी चौधरी की शहादत ने लाखो किसानो के हितो की रक्षा की ।





आउवा के ठाकुर कुशालसिंह जी →

सन 1857 मे अंग्रेज कमाण्डरों व जोधपुर रिसाले की फौज से आउवा ठाकुर कुशालसिंहजी के नेतृत्व में लड़े गये स्वातन्त्र्य युद्ध मे अंग्रेज कप्तान का सिर काटकर मुख्य द्वार पर लटका दिया गया।



लोमहर्षक घटनाओ की खबरे जो उन दिनो अखबारो मे छपी थी

9 महाराजा के भाई के गाव लिलिया मे काग्रेस जुलूस पर तलवारो से हमला

लिलिया ग्राम म हाथो म तिरगा लिये शात नागरिको के जुलूस पर जागीरदारो के मशस्त्र गुण्डो न तलवारो स हमला बोल दिया । जुलूस का नतृत्व कर रहे जतारण काग्रेस के प्रधानमत्री श्री माधोलालजी सुथार का सिर बुरी तरह से फट गया है । अनेक कायकत्ता घायलावस्था मे विडम्ब अस्पताल जोधपुर म लाये गये है, जहा उनकी हालत चिताजनक है । दूसर कायकत्ता श्री मदनलालजी का किसी गुप्त स्थान पर ले जाकर उन्ह कतल करने की आशका की जाती है । श्री माधोलालजी का शरीर तलवारो की चोटो स लहूलुहान हो गया था व अभी तक अचेत है ।

(लोकमत – 5 नवम्बर 1948)

10 निम्बोल के लूणकरणजी पर प्राणघातक हमला

कुछ समय पूव निम्बोल मे जागीरी गुण्डो ने, जिनम ठाकुर के लडके भी शामिल थ, वहा के प्रमुख काग्रेसी कायकर्ता श्री लूणकरणजी पर भरी सभा म हमला कर उनके नाक कान काट लिये थ । इस हमल म जतारण परगना के सभी जागीरदारो की साजिश थी । और, जहा-जहा भी काग्रेस कमटिया थी वहा इस प्रकार मशस्त्र आक्रमण हुए थे । अभी दो रोज पहने ही जोधपुर सरकार ने निम्बोल ठाकुर के अपराधी लडके को गिरफ्तार करवाया था । अब पता चला है कि सरकार ने इस ठिकाणे का अपन प्रबन्ध म लेन का हुक्म निकाल दिया है । और महकमे कोट ग्राफ वाड को सुपुर्द ठिकाणा कर दिया जावेगा । (लोकमत–1 दिसम्बर 1948)

11 पोमावा (सुमेरपुर) के ठाकुर ने खडी फसल चरा दी

15 जून 1948 का समाचार है कि पोमावा के ठाकुर न जोरा सुथार को बेदखल करन की नीयत स काफी फसल जबरन कटवाकर अपन रावल मे मगवाली और बाकी मे खुल मवशी छोडकर सारी फसल बरबाद कर दी । ज्ञात हुआ है कि श्री जोरा न 2000/– रुपये खच करके अपना कुआ तैयार करवाया है, पर जागीरदार उस हर प्रकार स तग कर अपने कब्जे म लेना चाहता है । सुमेरपुर काग्रेस कमेटी के मत्री श्री बा० एल० राजपुर किसान की मदद कर रहे है ।

12 सोजत मे गोचररक्षा के लिए श्री मोतीसिहजी द्वारा भूख हडताल

गाव रढावास के ठाकुर ने गोचर जमीन पर कब्जा करके गाव म आतक फला रखा है और मवशी भूखे मर रहे है । माह मई 1949 म गाव वालो ने कई रिपोर्टें की पर सरकार द्वारा कोई सुनवाई नही हुई । इस पर प्रेमसिह के गुडे के ही प्रमुख राजपूत कायकत्ता श्री मोतीसिहजी भूख हडताल पर डटे हुए है । उनकी भूख हडताल का चालीसवा दिन है और व बहुत ही कमजोर हो गये है । (जनमत दि० 21 जून 1950 मगलवार)

13 खारडा मे किसान कायकर्ताओ पर हमला

1 माच, 1950 को ग्राम देवली-पाबूजी नगर काग्रेस कमेटी के कायकर्त्ता खारडा निवासी श्री सादूरामजी एव हीरालालजी घाची पर जागीरी गुण्डो ने रात का हमला करके उनके साथ मारपीट की है, साथ ही जागीरदार के प्रभाव से नाडोल पुलिस चौकी के मुशी हसराजजी न इन दोनो भाइयो को पुलिस चौकी म बन्द कर दिया और कहा कि तुम ठाकुर साहब का विरोध करना छोड दो वरना तुम्हारे खिलाफ मुकद्दमा चलाया जावगा । देवली काग्रेस कमेटी के कायकर्ता श्री निहालचन्दजी न इस मामले की शिकायत उच्च अधिकारियो से की है ।

14 लोकनायक की घोषणा

दिनाक 10 जून, 1947 को पाली के मिल मजदूरो की एक सभा मे लोकनायक श्री जयनारायण व्यास न घोषणा करत हुए कहा "चाहे मिल मालिक मजदूरो की मागो के बारे मे मुझे पच स्वीकार करें या नही करें मैं मारवाड के लोक परिषद् के अध्यक्ष के नाते स्वत ही इस मामले मे पच हू और पचायत करन का मुझे अधिकार है । यह नतिक रूप से मेरा कर्तव्य हो जाता है कि मैं मजदूरो को आठ घण्टे के दिन की माग के बारे म उपयुक्त निणय दू और उस मिल अधिकारियो स भी मजूर करवाऊ । यद्यपि मैं मारवाड म औद्योगीकरण को उन्नतशील देखना चाहता हू पर मैं किसी भी शत पर मजदूरो के हित को कुचलत हुए देखन पर राजी नही हो सकता ।

15 बगडी ठिकाने मे मीठालालजी काठेड की निमम पिटाई

28 सितम्बर 1948 का सोजत परगने के प्रमुख काग्रेसी नेता श्री गणेशमल काठेड के सुपुत्र श्री मीठालाल काठेड एव उनके भतीजे श्री अमृतलाल काठेड को बगडी ठिकाने के कोट म बुलाकर निमम पिटाई की गयी । श्री मीठालाल काठेड स्वतन्त्रता-आन्दोलन म हुई जेल की सजा के बाद लगातार बीमार ही रह हैं—लेकिन काग्रेस का प्रचार गावो म करते रहते है । इसी स नाराज होकर ठिकाने के कारिन्दा न यह हरकत की है । इन कायकर्ताओ की हालत चिन्ताजनक बताई जाती है । इस घटना स जनता म भारी रोष व्याप्त हो गया है ।



थानेदार श्री बजरंगराजजी लोढा पर ग्राम बाजार में लाठियों से हमला कर उनकी बुरी तरह पिटाई की क्योंकि मंत्री हाल ही सम्पन्न हुए किसान सम्मेलन के वक्त उन्होंने श्री नाथूराम मिर्धा श्री मीठालालजी काका व अन्य नेताओं को अपने यहां ठहराने का अपराध किया था। चोणाद के बाजार में लोग यदि श्री लोढाजी को नहीं छुड़ाते तो उनका जीवित बचना मुश्किल था। लवतगढ़ के पुलिस थानेदार को इसकी शिकायत की गयी पर ठिकाने की मिली भगत के कारण कोई कार्यवाही नहीं हुई। श्री लोढा ने प्रधानमंत्री जोधपुर राज्य के पास शिकायत भेजी है।

(लोकमत—9 दिस० 1948)

22 निम्बाज ठाकुर के नौकरों की नादिरशाही

जतारण परगना कांग्रेस कमेटी के मंत्री श्री माधालालजी सुथार पर लीलिया गांव में एक प्राणघातक हमले के बाद अब स्वस्थ होकर लौटने पर निम्बाज सिपाठ चण्डावल बलून्दा नालिया बकिन लाम्बिया बांवरू निम्बाल आदि गांवों की जनता ने उनके स्वागत में समारोह की तथा जुलूस निकाले।

निम्बाज में श्री अमरचन्दजी बोहरा के सभापतित्व में स्वागत सभा आयोजित हुई। उस सभा भंग करने के लिए ठाकुर के आदमी श्री भीमसिंह नामक कामदार सरदारमल ठिकाना आडिटर श्री बंशीदास व मदनलाल भण्डारी कामदार लाडिजी बेसालाल नाई तथा सब इन्सपेक्टर के भाइयों ने लाठियों और हथियारों से लैस होकर हमला किया और हुल्लड़बाजी की। लेकिन कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के साहस दृढ़ता एवं सहिष्णुता के कारण ये गुण्डे सभा भंग नहीं कर सके। (लोकमत — 9 दिस० 1948)

23 पिपलिया कलां में किसान-सम्मेलन

10 सितम्बर 1948 को ग्राम पिपलिया (रायपुर) में सेठ कानमलजी के सभापतित्व में किसानों का एक विशाल सभा का आयोजन किया गया जिसमें जतारण परगना कांग्रेस कमेटी के मंत्री श्री माधालालजी सुथार ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि जागीरी जुल्मों के कारण गांवों में लोग परेशान हैं भयभीत हैं। उन्हें संगठित होकर आपसी सहयोग से जुल्मों से लड़ना चाहिए। नगर कांग्रेस के मंत्री श्री रतनलालजी चौधरी ने भी किसानों को संगठित होने की सलाह दी और प्रौढ़ शिक्षा के द्वारा निरक्षरता मिटाने पर जोर दिया। (लोक परिषद् बुलेटिन)

24 बगड़ी में लाश के लिए कफन नहीं

27 अक्टूबर 1946 को सोजत रोड पर आयोजित एक सभा में श्री मथुरादासजी माथुर, द्वारकादासजी पुरोहित धनपतराजजी भण्डारी के भाषण होने के पश्चात् ज्योंही श्री जयनारायणजी व्यास भाषण देने खड़े हुए तो एक कार्यकर्ता ने खड़े होकर कहा कि बगड़ी में एक मेघवाल भाई की लाश बिना कफन के पड़ी है। कन्ट्रोल के कारण एक व्यक्ति को केवल आधा गज कपड़ा देने का ही सरकारी हुक्म है यह भी जिन्दा आदमी के लिये ही दिया जा सकता है, मुर्दा लाशों के लिए नहीं।

सभा में सरकार के हाकिमों के इस रवैये की तीव्र निन्दा की गई।

25 मुकदमे और मारपीट

गेजड़सा ठाकुर के गांव धावड़ी (सोजत) में कांग्रेस के सदस्यों के विरुद्ध मुकदमे और मारपीट की गई है। जबसे इस गांव में कांग्रेस की शाखा खोली गई है अधिकांश निवासी सदस्य बन गये हैं। सामन्ती तत्वों की बेजा हरकतों के विरुद्ध संघर्ष छिड़ा हुआ है। अभी अभी स्थानीय कांग्रेस के सदस्य श्री पन्नाराम ब्राह्मण और सांगी गोपाल के विरुद्ध झूठे बलात्कार के मुकदमे चलाये गये हैं। लोगों को उनके घर जलाने और मारपीट की धमकियां कोट में बुलाकर दी जाती हैं। सांवतरामजी किसान को कोट में बुलाकर उनसे मारपीट कर फर्जी दस्तावेज पर अंगूठा करवाया है। जागीरदार के आतंक से समस्त जनता परेशान और आतंकित है।

(लोकमत—29 सितम्बर 1948)

26 कपड़े व शक्कर के लिए अर्जी दो

28 10 46 को पिपलिया की एक विशाल जनसभा में लोक परिषद् के नेता सर्वश्री जयनारायणजी व्यास माथुर सा०, द्वारकादासजी मीठालालजी काका का ध्यान हाकिम साहब के उस हुक्म की ओर दिलाया गया जिसमें लिखा था कि हर शख्स को आधा गज कपड़े व आठ आने की शक्कर के लिए लिखित अर्जी देनी पड़ेगी। गांव में अर्जी लिखाई के एक आने से चार आने तक देने पड़ते हैं। इस हुक्म को जन विरोधी कहकर कड़ी निंदा की गई। सभा में ही पिपलिया के सेठ श्री प्रेमराजजी ने कहा कि गांव वालों की सुविधा के लिए वे अर्जियों के ड्राफ्ट छपवाकर लोगों को वितरण कर देंगे।

27 महाराजा अजीतसिंहजी के गांव नारलाई में नादिरशाही

नारलाई (देसुरी परगना) में कामदार की बेजा हरकतों से गांव वाले परेशान हो गये हैं। कांग्रेस के कार्यकर्ता श्री रेवाशंकर दवे के विरुद्ध कामदार ने कई झूठे मुकदमे बनाकर उन्हें फंसाने की कार्यवाही की है, क्योंकि श्री रेवाशंकरजी ने ठिकाणे की ज्यादतियों के विरुद्ध शिकायतें की हैं और किसानों को गैर कानूनी लाग-बाग देने से रोका है। जागीरदार ने गांव भर की गोचरभूमि रोक दी है और मवेशी को फाटक में डालकर मनमाना जुर्माना वसूल करते हैं।



किसानो से मलबा वसूल कर कामदार और हवालदार खुद हड़प रहे हैं। इतना ही नही, स्थानीय कांग्रेस कार्यालय से बोर्ड की चोरी करवा दी है और गांधी स्मारक कोष के पोस्टर फाड़ दिये हैं। कामदार और हवालदार की हरकतो से ग्राम जनता त्रस्त है।

(लोकमत—25 नवम्बर 1948)

28 रुघा जाट और उसकी गाय तीन दिन से भूखे-प्यासे रावले मे बन्द

जोधपुर महाराजा के भाइ के जागीर गांव आसरलाई (जैतारण) मे प्रजा पर भयंकर अत्याचार किये जा रहे हैं। रुघा पुत्र हीरा जाट अपनी गाय को फाटक से छुड़ाने गया तो उससे कामदार ने पचास रुपये मांगे। देने से इन्कार करने पर उसे रावले की एक ओरड़ी मे बन्द कर खूब पिटाई की गई। रुघे का भतीजा मामा गाय और रुघा को छुड़ाने गया तो उससे तीन सौ रुपये मांगे। जैतारण हाकिम ने दोनो को छोड़ने का हुक्म दिया पर कामदार ने कोई परवाह नही की। आज तीन दिन से गाय और रुघा भूखे-प्यासे रावले मे बन्द हैं।

(लोकमत—28 नवम्बर, 1948)

29 स्पेशल गजट (मारवाड़ राज पत्र) मे छपी आज्ञा के विरुद्ध लोगो से वसूली

20 अक्टूबर, 1948 के दिन स्पेशल गजट मे जोधपुर दरबार ने आज्ञा जारी कर पूरे मारवाड़ मे सारी लाग-बाग माफ कर दी, फिर भी जागीरदार जबरन लागें वसूल करने पर आमादा है। खैरवा ठिकाणे के कामदार लोढा मुकनमलजी को लाटा के वक्त गजट दिखाया गया तो उन्होने कहा—इस पर दरबार के दस्तखत नही हैं, जोधपुर दरबार के दस्तखतो से यह हुक्म लाओ कि खैरवा ठिकाणे की सारी लागें माफ कर दी है तभी मानेगे।

(लोकमत—6 नवम्बर, 1948)

30 श्री मांगीलालजी की हालत चिंताजनक

श्री मांगीलालजी सुथार, मंत्री–परगना कांग्रेस कमेटी जैतारण जिन पर लीलिया मे जागीरी गुण्डो द्वारा प्राणघातक हमला हुआ है उनकी हालत बड़ी गम्भीर है। उनके तलवार का बहुत गहरा घाव लगा है। उनकी स्थिति खराब होती जा रही है। कल रात जोधपुर राज्य के लोकप्रिय मंत्री श्री द्वारकादासजी पुरोहित ने अस्पताल जाकर उनकी देखभाल की और डाक्टरो से इलाज के बारे मे जानकारी ली। सन्त लादूरामजी सभापति–जोधपुर परगना, कांग्रेस कमेटी उनकी रात दिन देखभाल कर रहे है।

(लोकमत–6 नवम्बर 1948)

31 जुलूस पर पत्थरबाजी और जनता मे नई चेतना

चाणोद ठिकाने का आतंक इतना था कि सभाओ मे आना तो दूर, कोई कांग्रेस कार्यकर्ता भी यदि गांव मे आ जाता तो रिश्तेदार पानी पिलाने से भी डरते थे। जब मारवाड़ लोक परिषद् की ओर से एक सम्मेलन बुलाया गया तो पाली के कार्यकर्ता सर्वश्री रामप्रसाद जी गांधी, रामप्रताप जी शर्मा—गुन्दोज तथा न्दली से गये हुए लोग सर्वश्री मोहनराज जी, निहालचन्द जी रामेश्वर जी बजाजी चौधरी रूपाजी चौधरी के सिवा वहां सभा स्थल पर कोई आने को तैयार नही हुआ। आखिर गांव मे जुलूस निकालने की योजना बनाई गयी और स्थानीय कार्यकर्ता श्री पुखराज जी परिहार अचलदास जी, केसा जी चौधरी, भैराजी ढोली, मोहनराज जी आदि के सहयोग से काफी लोग जमा हो गये। जुलूस नारे लगाता हुआ रावले के चौक मे पहुचा तो चारो तरफ से पत्थरो की वर्षा होने लगी। जुलूस के लोग नारे लगाते हुए बाजार की दुकानो के बरामदो मे खड़े हो गये, पर कुछ कार्यकर्ता बराबर चौक मे नारे लगाते रहे। इसी पत्थरबाजी मे श्री रामप्रताप जी शर्मा (गुन्दोज) के सिर पर गम्भीर चोटें आइ और वे खून मे लथपथ हो गये। इस एक ऐतिहासिक घटना से पूरे गांव मे ही नही पूरे क्षेत्र की जनता मे नया जोश और नई आशा का संचार हो गया और चाणोद मे कांग्रेस का बड़ा मजबूत संगठन श्री पुखराज जी परिहार के नेतृत्व मे बन गया जिसने बाद के कई आन्दोलनो मे सफलता प्राप्त की।

32 आखिर केसाजी कुम्हार टूट गये

बालराइ गांव के केसा जी मारू कुम्हार को टूटे हुए हाथ के पट्टी बांधकर घूमते हुए गांव वालो ने ही नही बाली व दूसरा हुकूमत की कचहरियो मे हजारो लोगो ने देखा है। श्री केसाजी को कांग्रेस की सभाओ मे आने-जाने के कारण न केवल बेरो व खेतो से बेदखल किया गया था, वरन् बुरी तरह पिटाइ कर उनके हाथ भी तोड़ दिये गये थे। फिर अचलचन्द जी परिहार, सरपंच ने उनको सहयोग दिया लेकिन तब तक तो संघर्ष करते-करते केसा भाइ टूट चुके थे।

33 संगठन ही शक्ति बना

एक बार दूजाना ग्राम के ब्राह्मण जागीरदारो ने ठाकुर मानदेव को लाटा लटाना व लाग-बाग देना बन्द कर दिया। फिर क्या था संघर्ष छिड़ना ही था। गांव मे सभा-सम्मेलन आयोजित हुए। कई मुकद्दमे सैंकड़ो किसानो पर ठिकाने की तरफ से चलाये गये पर श्री देवीकिशन जी व्यास, नेबोलाल जी ब्राह्मण और गना जी मेणा ने बड़ी हिम्मत से गांव को संगठित किया और सबको शोषण से मुक्त किया।



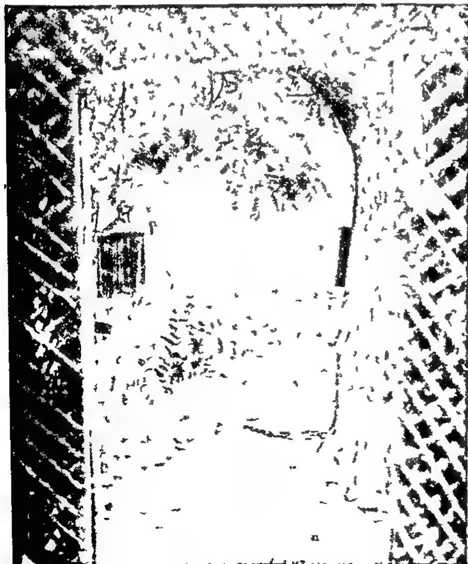
34 अनोखा जोश—अपूर्व साहस

सुमेरपुर के श्री बी एल राजगुरु, गणेश जी चौधरी (माली) और मनसुखभाई पटेल को एक हाथ म लाठी और दूसरे हाथ म लालटेन लकर छोटे छोटे गावा म मीटिंग करके लोगा को जाग्रत करते अनेका न देखा है। गावा म खान पीन का तो क्या प्रश्न, बैठन व ठहरने का स्थान देन स भी लाग घबरात थे क्योंकि जागीरदारा के गुण्ड लोगा के साथ मारपीट कर उनको अपमानित करते थ। एक बार ग्राम बारटा म श्री मोहनराज जी एडवोकेट (बाली) एक मीटिंग लने गय। व ताना साथी भी साथ थ। ठाकुर के डर म जैन धर्मशाला की चबूतरी पर भी उनका बैठा नही दिया गया। मीटिंग म सुनने तो कौन आता ? पर, श्री राजगुरु और भाई गणेश जी ने हिम्मत की और हमने प्रत्येक मोहल्ले म जाकर भाषण दिये। लाग घरा म बैठे सुनते रहे। जब हम गाव से रवाना हुए तो हमारे ऊपर पत्थर और धूल मिट्टी फेंक कर हम सचमुच घायल ही कर दिया। रात का दो बजे सुमेरपुर पहुच कर मरहमपट्टी करवाई और मघारामजी ‑दा के यहा खाना खाया। पर उत्साह ऐसा था कि दूसरे ही दिन फिर उसी जोश के साथ हाथो म लालटेन लेकर निकल पडे गावा म जन जागरण के लिए।



सोजत के विख्यात स्वतन्त्रता सेनानी श्री हरिभाई 'किंकर' ने आजादी के पश्चात बढते हुए भ्रष्टाचार, पक्षपात शोषण व दयनीय गरीबी से त्रस्त होकर आत्मदाह कर लिया।

पाली का ऐतिहासिक किला ↑ जहाँ स्वतन्त्रता सेनानियों को बंद मे रखा जाता था। प्रमुख रूप से रणछोड़दासजी गट्टानी छगनराजजी चोपासनी वाला और छोटमलजी सुराणा को यहा कारावास मे रखा गया।



गांधी बाग (पाली) की यह झोंपडी जहाँ मारवाड़ लोक परिषद् की गुप्त मन्त्रणाएँ होती थी। ←

स्वाधीनता-संघर्ष के बोलते चित्र

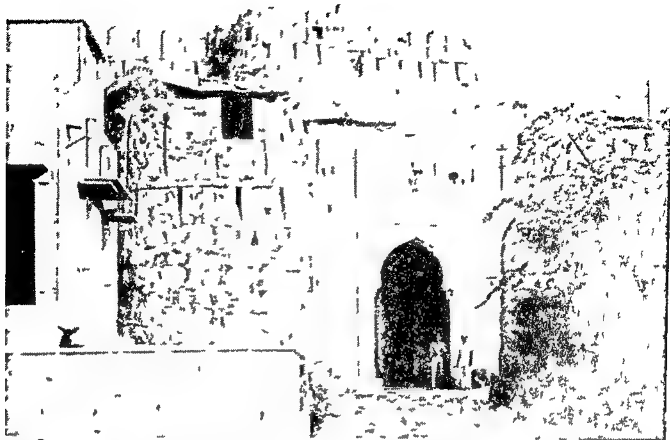


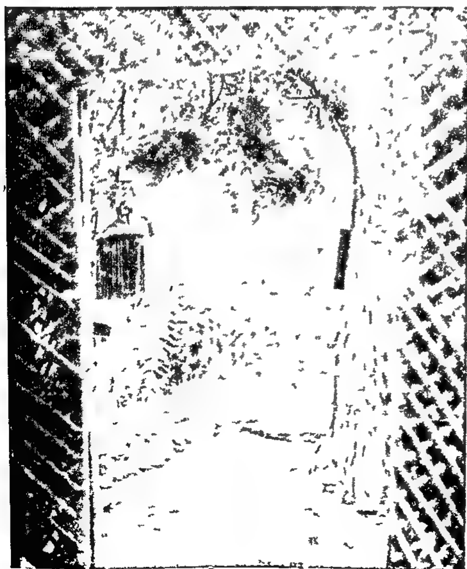
34 अनोखा जोश–अपूर्व साहस

सुमेरपुर के श्री बी एल राजगुरु, गणेश जी चौधरी (माली) और मनसुखभाई पटेल का एक हाथ म लाठी और दूसरे हाथ म लालटेन लेकर छोटे छोटे गावा म मीटिंगें करके लोगों को जाग्रत करते अनको ने देखा है। गावा म खान पीन का तो क्या प्रश्न, बैठने व ठहरने को स्थान देने से भी लोग घबराते थे क्योंकि जागीरदारों के गुण्डे लोगों के साथ मारपीट कर उनको अपमानित करते थे। एक बार ग्राम कोरटा म श्री मोहनराज जी एडवोकेट (बाली) एक मीटिंग लेने गये। वे तीनों साथी भी साथ थे। ठाकुर के डर से जन धर्मशाला की चबूतरी पर भी उनको बैठने नहीं दिया गया। मीटिंग म सुनने तो कौन आता ? पर, श्री राजगुरु और भाई गणेश जी ने हिम्मत की और हमने प्रत्येक मौहल्ले म जाकर भाषण दिये। लोग घरों म बैठे सुनते रहे। जब हम गाव से रवाना हुए तो हमारे ऊपर पत्थर और धूल मिट्टी फेंक कर हमें सचमुच घायल ही कर दिया। रात को दो बजे सुमेरपुर पहुंच कर मरहमपट्टी करवाई और मछारामजी इन्दा के यहा खाना खाया। पर उत्साह ऐसा था कि दूसरे ही दिन फिर उसी जोश के साथ हाथों म लालटेन लेकर निकल पड़े, गावों म जन जागरण के लिए।



सोजत के विख्यात स्वतंत्रता सेनानी श्री हरिभाई किंकर' ने आजादी के पश्चात बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, पक्षपात शोषण व दयनीय गरीबी से त्रस्त होकर आत्मदाह कर लिया।





बाली का ऐतिहासिक किला ↑ जहाँ स्वतन्त्रता सेनानियों को कैद मे रखा जाता था। प्रमुख रूप से रणछोड़दासजी गट्टानी छगनराजजी चोपासनी वाला और छोटमलजी सुराणा को यहाँ कारावास मे रखा गया।

गांधी बाग (पाली) की वह झौंपड़ी जहाँ मारवाड़ लोक परिषद् की गुप्त मन्त्रणाएँ ← होती थी।

स्वाधीनता-संघर्ष

के

बोलते चित्र

छोटमल सुराणा मैदान (बाली किले का मदान) मे आयोजित

कांग्रेस शताब्दी समारोह

के उपलक्ष मे स्वतन्त्रता सेनानियो का अभिनन्दन

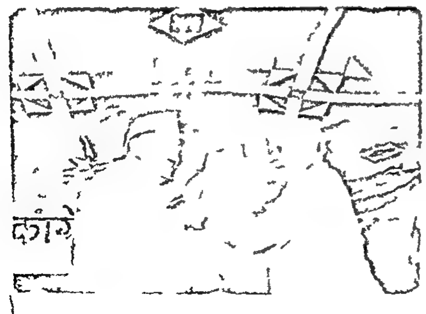
●



श्री रणछोड़दास जी गट्टानी बाला किले मे नजरबन्दी काल के संस्मरण सुनाते हुए।



श्री मथुरादास जी माथुर अपने अन्तरग साथी श्री गट्टानी जी का स्वागत करते हुए।



श्री पूनमचन्द जी बापना (सादड़ी) का स्वागत करते हुए मारवाड़ लोक परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री मथुरादास जी माथुर।



मारवाड लोक परिषद के कार्यकर्ताओं के साथ पं० जवाहरलाल नेहरू, लोकनायक श्री जयनारायण व्यास, शेरे कश्मीर श्री शेख अब्दुल्ला और उनके पुत्र श्री फारूख अब्दुल्ला। साथ खडे हैं सर्वश्री फूलचन्द बाफना, विजयमल सुराणा, मथुरादास माथुर, रणछोडदास गट्टानी आदि।



मारवाड लोक परिषद की प्रतिनिधि सभा ने लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास के नेतृत्व मे मारवाड राज्यो मे प्रथम लोकप्रिय सरकार बनाने की स्वीकृति प्रदान की—उस समय जोधपुर के शिप हाउस म लिया गया ऐतिहासिक चित्र ।



दो:

सेनानी पद्म

- पाली जिले के स्वाधीनता सेनानी
- पाली जिले के राजनैतिक कार्यकर्ता
- पाली जिले के जन प्रतिनिधि





पाली जिले के स्वाधीनता सेनानी

[संक्षिप्त परिचय]





नींव की ईंट

श्री हरिभाई किंकर

□

विषम आर्थिक सकट स उलझे हुए परिवार मे जन्मे, पल और तरह-तरह का सघषमय जीवन बिताते हुए ही मृत्यु को आलिंगन करने वाले स्वर्गीय हरिभाई जी किंकर का जन्म सोजत मे आडा बाजार मे बोनया श्रीमाली जेठमलजी के पुत्र हिम्मतराम जी दवे के घर मे कार्तिक वदी 6, विक्रमी सम्वत् 1950 तदनुसार तारीख 31-10 1893 को हुआ। इनकी माता का नाम सुखिया देवी था। विधि विडम्बना से इनके दादाजी के वक्त मे खाते-पीते और भरे-पूरे समृद्ध परिवार पर जब मुसीबत के बादल छाये तब सोजत मे जेल म मरे दादा के बाद इनके पिताजी का भी कर्जा न चुकाने पर जेल हुई। इनके पिताजी निम्बाहेडा के पास ग्राम विनोता के कारकून थे। पिता की मृत्यु के बाद बालिग कहलाने पर इनको फिर भी बकाया कर्जा न चुकाने के कारण एक माह जेल की सजा भोगनी पडी। बताया जाता है कि इनके किसी बिरादरी भाइ ने सोजत म 623) रु० कलदार देकर, लेनदार के हाथ से मकान छुडवाया था। इनके पिता की मृत्यु के समय इनकी आयु 17 वष की थी और इससे 4 वष पूव इनकी माताजी का देहात हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा निम्बाहेडा मे ही हुई।

बडे होन पर यह पुठोली (जिला चित्तौड) म सन् *1914* म अध्यापक हुए। इनका परिचय पुठोली ठाकुर रामप्रतापसिंह जी और आछडी ठाकुर भोपालसिंह जी से हुआ। ठाकुर रामप्रतापसिंह जी के कारण ही यह सन् 1916 मे वतमान राजस्थान के प्रणेता विजयसिंह जी पथिक के भी सम्पक म आये। पथिकजी टाडगढ किले मे फरार होकर मेवाड गये थ। यही से हरिवल्लभजी की राज नीतिक चेतना प्रारम्भ हुई। कई बार अपने जीवन मे इन्होने स्वी कार किया था कि इनके राजनीतिक गुरु पथिक जी ही हैं।

पुठोली म कानपुर का 'प्रताप' अखबार यह बरा पढा करते थे। *प्रताप' के जन्मदाता एव सम्पादक गणेशशकर विद्यार्थी* के लखा का इनके ऊपर विशेप प्रभाव पडा और दश सवा की भावना इनम अधिक बलवती हुई। पथिक जी स नजदीकी सम्बध बनाये रखत हुए यह विद्या प्रचारिणी सभा चित्तौड द्वारा सचालित पुठोली पाठशाला मे पढात रह। सावा, नगरी और खोट आदि गावा म इन्होने पाठशालाएँ भी खाली।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मलन क आठव अधिवेशन म यह 1918 मे प्रतिनिधि के रूप म सभा की आर स इन्दौर भेज गय। इनके साथ सेवारामजी अग्रवाल और खूबचदजी भी थ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा गाधी ने की थी। सन् 1919 म विद्या प्रचारिणी सभा की तरफ स यह ओकारलाल जी काबरा क साथ नवम् अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मलन के बम्बई अधिवशन म गये। सम्मलन म इन्हान एक भजन सुनाया। उसकी दो पक्तियाँ इस प्रकार हैं—

न चाहू मान दुनिया मे, न चाहू स्वग को जाना।
यही वर द मुझे माता रहूँ भारत पर दीवाना॥

बिजोलिया आन्दोलन

गुजरात के बारडोली किसान आन्दोलन-कारियो की तरह *मेवाड राज्य का किसान जब जागीरी कष्टो स मुक्ति पान के लिए* सघष पर उतारू हुआ और जब पथिकजी ने अपने शिष्य—ब्रह्मचारी हरिजी एव रामनारायणजी चौधरी शाभालालजी गुप्त, माधु सीता रामदासजी आदि के साथ बिजोलिया मे सत्याग्रह का बिगुल बजाया तभी सन् 1921 म राजस्थान सवा सघ की स्थापना की गइ। मेवाड के महाराणा, बिजोलिया के ठाकुर और अग्रेजी हुकूमत को जबरदस्त सिर दद का सामना करना पडा। उस वक्त पथिकजी क नेतृत्व मे ऊपरमाल के गाव गाव मे शखनाद फूकत हुए आजादी का पाठ पढात हुए ब्रह्मचारी हरिजी न पहाड पहाड घूम कर ग्राम वासियो का तयार किया था। इन्हे न भूख सताती थी, न प्यास। यह गाव-गाव घूमत हुए किसानो की हिम्मत बधाते हुए उन्ह आग बढा रहे थे। पथिकजी फरार, स्वय ब्रह्मचारीजी फरार और फरार दसो आजादी के सिपाही जिनका एक दूसर स सीधा सम्पक महिला कायकर्त्रियो द्वारा बना हुआ था, जागीरदार का एक एक कुचाल का पता रखते थे।



सिर पर जटा और मुँह पर दाढ़ी मूँछों से सुशोभित हरिजी, जो उन दिनों ब्रह्मचारी हरिजी के नाम से जाने जाते थे, बिजोलिया आंदोलन के कार्यकर्ताओं के साथ कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लेने जाते रहे और मेवाड़ के दीन दुःखी ग्रामवासियों की करुण पुकार पुरजोर आवाज के साथ कांग्रेस के मंच से देश भर के आये हुए प्रतिनिधियों को सुनाते थे। नतीजा यह हुआ कि बिजोलिया आन्दोलन की धूम देश भर में मच गई और तरुण राजस्थान व अन्य बड़े-बड़े अखबारों ने इस आन्दोलन की खबरों को छापना शुरू किया।

ब्रह्मचारी हरिजी और राजस्थान सेवा संघ के मन्त्री राम नारायणजी चौधरी आदि कार्यकर्ताओं की मेहनत सफल हुई। मेवाड़ में महात्माजी के नाम से मशहूर राजस्थान में किसान आन्दोलन के जन्मदाता विजयसिंहजी पथिक का आशीर्वाद रंग लाया और सन् 1922 के जून माह में अंग्रेजी हुकूमत, महाराणा उदयपुर, बिजोलिया के ठाकुर और आन्दोलन के कार्यकर्ताओं—रामनारायणजी चौधरी व माणिक्यलालजी वर्मा आदि के बीच समझौता हुआ जिसमें लाग बाग-बेगार आदि की समाप्ति के साथ किसानों की जीत हुई।

पहली गिरफ्तारी

जिन दिनों बिजोलिया का आन्दोलन चरम सीमा पर चल रहा था उन्हीं दिनों ब्रह्मचारीजी सन् 1922 के फरवरी माह में पारसोली में गिरफ्तार किये गये। नवीन राजस्थान का पहला अङ्क भी उक्त गिरफ्तारी का कारण बना। उस वक्त 15 सेर वजन की बेड़ियाँ इनके पाँवों में डाली जाती थीं और इन्हें 15 सेर अनाज रोजाना पीसने को दिया जाता था। कारण यह था कि माण्डलगढ़ (मेवाड़) के हाकिम बिन्दुलाल भगानी द्वारा भेजी गई 200 फौजियों की टुकड़ियों ने 63 किसानों सहित ब्रह्मचारीजी को, सुरास गाँव में सभा करने पर पारसोली में गिरफ्तार किया था। बयान करने पर, 6 माह की सजा भुगतने के बाद इन्हें रिहा किया गया। इनके मेवाड़ प्रवेश पर निषेध आज्ञा लागू की गई। यह आज्ञा सन् 1947 में हटी।

सीकर (जयपुर राज्य) में किसानों और राजा में तनाव उत्पन्न होने पर जनवरी 1924 में राजस्थान सेवा संघ के मन्त्री रामनारायणजी चौधरी द्वारा भेजे जाने पर एक सम्वाददाता के नाते, वहाँ की पूरी जानकारी लेने के लिए ब्रह्मचारीजी सीकर गये। ठिकाने को मालूम होने पर इन्हें ऊँट पर बिठा कर देश निकाला दे दिया गया।

सन् 1925 में अलवर के नीमूचाणा गाँव में राजपूत किसानों पर महाराजा की आज्ञा से गोली चलाई गई थी। लगभग 95 आदमी मारे गये थे और 250 के लगभग घायल हुए थे। राजस्थान सेवा संघ की ओर से सर्वश्री कन्हैयालाल कलयन्त्री सादूराम जोशी के साथ ब्रह्मचारी हरिजी भेष बदल कर, वहाँ की पूरी जानकारी लेने के लिये नीमूचाणा गये थे।

दूसरी गिरफ्तारी

मेवाड़ छोड़ने के बाद ब्रह्मचारी हरिजी सन् 1930 में ब्यावर में नमक सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार किए गये। आपको अजमेर जेल में डण्डा-बेड़ी और काल कोठरी की सजा भी हुई। गांधी इरविन पैक्ट के आधार पर 10 माह जेल में रहने पर वे रिहा किये गए। औरों के साथ भुवनेश्वरप्रसाद शर्मा (मामा) भी जेल में थे।

सन् 1931 से 1934 तक ब्रह्मचारी जी हाड़ौती शिक्षा मण्डल के प्रचार मन्त्री रहे। इन्होंने बून्दी के गरड़दा ग्राम को अपना केन्द्र बनाया और लगभग 32 विद्यालय सञ्चालित किये जो कालान्तर में माणिक्यलाल जी वर्मा की सरकार को सौंप दिये गये। सरकार ने सभी अध्यापकों को शिक्षा विभाग के अध्यापक मान लिया था। बून्दी से भी आपको देश निकाला दिया गया था।

सन् 1931 में ब्रह्मचारी हरिवल्लभ जी ने जयपुर आर्य समाज में एक विधवा स्त्री महिमादेवीजी से अन्तर्जातीय विवाह किया। शादी के बाद ब्रह्मचारी हरिजी हरिभाई किंकर कहलाए। सन् 1932 में महिमाजी अजमेर जेल में भी रहीं। वे सन् *1934* में सपत्नीक गिरफ्तार भी हुए।

हरिभाईजी सौम्यमूर्ति थे। वे गीतकार, गायक कवि, विचारक आन्दोलक वक्ता व पत्रकार भी थे। वे कई पत्रों में प्रकाशनार्थ समाचार भेजा करते थे। राजस्थान और राजस्थान से बाहर बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली पंजाब गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य भारत में इन्होंने अपने गानों से लोगों को मोह लिया था। बड़े-बड़े मारवाड़ी सम्मेलनों में बड़े आदर के साथ बुलाये जाते थे। वे पक्के समाज सुधारक थे और उनकी बातों का सीधा असर जनता पर पड़ता था।

हैदराबाद, सिकन्दराबाद, हिंगनघाट वर्धा, अमरावती, धामणगाँव, आकोला, मलकापुर जलगाँव, एरंडोल धूलिया आदि गाँवों में ब्याह सगाई और अन्य सामाजिक उत्सवों में हरिभाईजी बड़े प्रेम से सपत्नीक बुलाये जाते थे। यह साबरमती आश्रम में गांधीजी के साथ भी रहे।



उनकी छोटी छोटी, लोक हितकारी नद किताबें आज भी उनकी याद दिलाती है। इन किताबा म हरिभाईजी ने जन-साधारण का सामाजिक कुरीतिया स दूर रहन का पाठ सिखाया था।

तीसरी गिरफ्तारी

मध्य भारत क गोपीकृष्ण विजयवर्गीय, राजस्थान के माणिक्यलाल वर्मा शोभालाल गुप्त, रामनारायण चौधरी, चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय प्रकाशचन्द्र कविरत्न और हरिभाऊ उपाध्याय आदि के साथ हरिभाईजी न अजमेर म जेल यात्रा की। महिमादेवी जी भी जेल गई। यह सन् 1932 की बात है। महात्मा गांधी के गोलमेज कान्फ्रेन्स स लौटन क बाद भारत भर मे आम गिरफ्तारियाँ हुई थी। चन्द्रभान शर्मा भी इनके साथ थे। इन दोनो को 30 सेर अनाज पीसन क लिय रोजाना दिया जाता था।

सन् 1937 म इनके दाहिने पर की हड्डी टट जाने पर इन्ह अजमेर क विक्टोरिया अस्पताल म बडी मुश्किल स भर्ती कराया गया। सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं स एक एक रुपया इकट्ठा कर माणिक्यलालजी न इलाज कराया। शोभालालजी गुप्त न भी मदद दिलवाई। यह छ महीने बाद ठीक हुए।

सन् 1940 के लगभग खीचन फलौदी मे इन्होने विद्यालय चलाया। सन् 1941 म सूरसागर जोधपुर म बालिका पाठशाला को जन्म दिया। उस समय आप केवल 40) रु० मासिक निर्वाह हेतु लेत थे। छ महीन म आपने 10000) रु० जनता से इकट्ठा कराया और पक्का विद्यालय बनाकर अच्छे अध्यापक व अध्यापिकाओ को रखकर विद्यालय जनता को सौप दिया। मण्डोर म भी आपन कन्या विद्यालय चलाया।

अंतिम दो गिरफ्तारिया

सन् 1942 म मारवाड लोक परिषद् के कार्यकर्ताओ को सहयोग देते हुए उन्होने उत्तरदायी शासन की माग को लेकर जोधपुर आन्दोलन म भाग लिया। उन्ह सन्टल जेल म रखा गया। छूटने पर वह सोजत रोड आये और गिरफ्तार किये गये। इन्ह मोचिया किला (विजय तालाव पलेस जोधपुर) मे रखा गया। इसी आन्दोलन म हरिभाईजी की पत्नी महिमादेवी जी सोजत की सुशीलादेवी और जतारण की झलकार देवी आदि ने औरतो का जत्था लेकर जोधपुर म आन्दोलन म भाग लिया था।

महिमाजी, हरिभाइजी के लिए वरदान बनकर आई थी। उन्होने इनके सुख दुःख म पूरा साथ दिया। जिन्दगी भर वे प्रचार कार्यों म इनके साथ घूमती थी। 20 सितम्बर 1944 के दिन ब्यावर म महिमादेवी जी का स्वर्गवास हो गया। उन दिनो हरिभाईजी की आर्थिक स्थिति का सहज अन्दाजा इस बात स लगाया जा सकता है कि महिमाजी की श्मसान यात्रा का सारा व्यय हरिभाईजी के एक मित्र ने वहन किया था।

हरिभाईजी कहा करते थे कि जब जब वे जेल गये इनका सारा माल असबाब जिसक हाथ लगा लूट कर ले गये और जेलो स छूटन पर इन्ह घर गृहस्थी चलाने और पुस्तको को खरीदन क लिए हमेशा परेशान रहना पडा।

सन् 1942 44 के आन्दोलनो के बाद वे राजस्थान गश्ती पुस्तकालय का सचालन करत रह। अपने कन्धो पर सकडो रुपया की पुस्तकें लादे हुए व गाव-गाव घूम घूम कर धार्मिक, सामाजिक सद्‌ग्रन्थ बेचत रह। इन पुस्तको की बिक्री से जो कमीशन इन्ह मिलता, उसस यह अपना गुजारा करत थे।

समाज और राजनेताओ स अपेक्षित सत्कार इन्ह कम ही मिला। निरभिमान व निःस्वार्थ भाव मे काम करन की इनकी प्रवृत्ति ने इन्ह किसी के आग झुकन नही दिया। अपने हाथ पर चलत व अपन जीवन काल तक सदव परोपकारी ही बन रहे। सन् 1955 म जब हरिभाईजी बीमार पडे तब शोभालालजी गुप्त को मालूम होने पर उन्होने रामनारायणजी चौधरी को दिल्ली पत्र लिखा। चौधरीजी ने तत्कालीन प्रधानमन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू को हरिभाईजी की बीमारी की सूचना दी। नेहरूजी न 500) रु० हरिभाईजी को भेजे जो इन्होने लौटा दिये। सन् 1960 म हरिभाईजी ने प० नेहरू को एक पत्र मे लिखा था कि मैं 70 वर्ष का हू और अस्वस्थ हूँ। सुना जाता है कि एक बार तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया न इन्ह 250) रु० सहायतार्थ भेजे थ वह भी इन्होने वापिस कर दिये। हरिभाईजी कुछ समय भारत सवक समाज के वेतन भोगी सगठक भी रहे।

वे पद के भूखे नही थ। नेताओ की चाटुकारिता उन्ह बिलकुल पसन्द नही थी। अन्तिम दिनो म अपने स्वर्गीय छोटे भाई की पत्नी मथुराबाई की सेवाओ से सन्तुष्ट थ। शरीर से वे काफी कमजोर हो चुके थे।

सन् 1967 म हरिभाईजी को सान्निपातिक ज्वर हुआ। इस बुखार न इनके सारे शरीर को झकझोर दिया। वह युवको मे चरित्र की कमी अनुभव करते थे और उन्ह भारतीयता स परे जाते हुए समझन लगे थे। देश दिशा भी उनकी चिन्ता का कारण था। देश किधर जा रहा है इस विषय पर भी मिलने वालो स वह चर्चा चलाया करत थे। हरिभाईजी इस बात से भी चिन्तित थे कि उनके



सिर पर जटा और मुंह पर दाढ़ी मूंछों से सुशोभित हरिजी, जो उन दिनों ब्रह्मचारी हरिजी के नाम से जाने जाते थे विजोलिया आंदोलन के कार्यकर्ताओं के साथ कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लेने जाते रहे और मेवाड़ के दीन दुःखी ग्रामवासियों की करुण पुकार पुरजोर आवाज के साथ कांग्रेस के मंच से देश भर से आये हुए प्रतिनिधियों को सुनाते थे। नतीजा यह हुआ कि विजोलिया आन्दोलन की धूम देश भर में मच गई और तरुण राजस्थान व अन्य बड़े बड़े अखबारों ने इस आन्दोलन की खबरों को छापना शुरू किया।

ब्रह्मचारी हरिजी और राजस्थान सेवा संघ के मंत्री रामनारायणजी चौधरी आदि कार्यकर्ताओं की मेहनत सफल हुई। मेवाड़ में महात्माजी के नाम से मशहूर राजस्थान में किसान आन्दोलन के जन्मदाता विजयसिंहजी पथिक का आशीर्वाद रंग लाया और सन् 1922 के जून माह में अंग्रेजी हुकूमत महाराणा उदयपुर विजोलिया के ठाकुर और आन्दोलन के कार्यकर्ताओं— रामनारायणजी चौधरी व माणिक्यलालजी वर्मा आदि के बीच समझौता हुआ जिसमें लाग बाग बेगार आदि की समाप्ति के साथ किसानों की जीत हुई।

पहली गिरफ्तारी

जिन दिनों विजोलिया का आन्दोलन चरम सीमा पर चल रहा था उन्हीं दिनों ब्रह्मचारीजी सन् 1922 के फरवरी माह में पारसोली में गिरफ्तार किये गये। नवीन राजस्थान का पहला अङ्क भी उक्त गिरफ्तारी का कारण बना। उस वक्त 15 सेर वजन की बेड़ियां इनके दोनों पैरों में डाली जाती थीं और इन्हें 15 सेर अनाज रोजाना पीसने को दिया जाता था। कारण यह था कि माण्डलगढ़ (मेवाड़) के हाकिम बिहुलाल बंगाली द्वारा भेजी गई 200 फौजियों की टोलियों ने 63 किसानों सहित ब्रह्मचारीजी को मुरास गांव में सभा करने पर पारसोली में गिरफ्तार किया था। अपील करने पर 6 माह की सजा भुगतने के बाद इन्हें रिहा किया गया। इनके मेवाड़ प्रवेश पर निषेध आज्ञा लागू की गई। यह आज्ञा सन् 1947 में हटी।

सीकर (जयपुर राज्य) में किसानों और राजा में तनाव उत्पन्न होने पर जनवरी 1924 में राजस्थान सेवा संघ के मंत्री रामनारायणजी चौधरी द्वारा भेजे जाने पर एक सम्वाददाता के नाते वहाँ की पूरी जानकारी लेने के लिए ब्रह्मचारीजी सीकर गये। ठिकाने को मालूम होने पर इन्हें ऊँट पर बिठा कर देश निकाला दे दिया गया।

सन् 1925 में अलवर के नीमूचाणा गांव के राजपूत बिस्वेदारों पर महाराजा की आज्ञा से गोली चलाई गई थी। लगभग 95 आदमी मारे गये थे और 250 के लगभग घायल हुए थे। राजस्थान सेवा संघ की ओर से सर्वश्री कन्हैयालाल कलयंत्री लादूराम जोशी के साथ ब्रह्मचारी हरिजी भेष बदल कर, वहां की पूरी जानकारी लेने के लिये नीमूचाणा गये थे।

दूसरी गिरफ्तारी

मेवाड़ छोड़ने के बाद ब्रह्मचारी हरिजी सन् 1930 में ब्यावर में नमक सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार किये गये। आपको अजमेर जेल में डण्डा-बेड़ी और काल कोठरी की सजा भी हुई। गांधी इरविन पैक्ट के आधार पर 10 माह जेल में रहने पर वे रिहा किये गये। औरों के साथ अचलेश्वरप्रसाद शर्मा (मामा) भी जेल में थे।

सन् 1931 से 1934 तक ब्रह्मचारी जी हाड़ौती शिक्षा मण्डल के प्रचार मंत्री रहे। इन्होंने बूंदी के गरडदा ग्राम को अपना केन्द्र बनाया और लगभग 32 विद्यालय सचालित किये जो कालान्तर में माणिक्यलाल जी वर्मा की सरकार को सौंप दिये गये। सरकार ने सभी अध्यापकों को शिक्षा विभाग के अध्यापक मान लिया था। बूंदी से भी आपको देश निकाला दिया गया था।

सन् 1931 में ब्रह्मचारी हरिवल्लभ जी ने जयपुर आर्य समाज में एक विधवा स्त्री महिमादेवीजी से अन्तर्जातीय विवाह किया। शादी के बाद ब्रह्मचारी हरिजी हरिभाई किंकर कहलाए। सन् 1932 में महिमाजी अजमेर जेल में भी रहीं। वे सन् 1934 में सपत्नीक गिरफ्तार भी हुए।

हरिभाईजी सौम्यमूर्ति थे। वे गीतकार, गायक कवि, विचारक, आन्दोलक, वक्ता व पत्रकार भी थे। वे कई पत्रों में प्रकाशनार्थ समाचार भेजा करते थे। राजस्थान और राजस्थान से बाहर बंगाल, बिहार उत्तर प्रदेश दिल्ली पंजाब गुजरात महाराष्ट्र और मध्य भारत में इन्होंने अपने गीतों से लोगों को मोह लिया था। बड़े-बड़े मारवाड़ी सम्मेलनों में बड़े आदर के साथ बुलाये जाते थे। वे पक्के समाज सुधारक थे और उनकी बातों का सीधा असर जनता पर पड़ता था।

हैदराबाद सिकन्दराबाद हिंगनघाट वर्धा अमरावती धामणगांव आकोला मलकापुर जलगांव, एरंडोल धूलिया आदि गांवों में ब्याह सगाई और अन्य सामाजिक उत्सवों में हरिभाईजी बड़े प्रेम से सपत्नीक बुलाये जाते थे। यह साबरमती आश्रम में गांधीजी के साथ भी रहे।



उनकी छोटी छोटी, लाभ हितकारी कई किताबें आज भी उनकी याद दिलाती है। इन किताबों में हरिभाईजी ने जन-साधारण को सामाजिक कुरीतियों से दूर रहने का पाठ सिखाया था।

तीसरी गिरफ्तारी

मध्य भारत के गोपीकृष्ण विजयवर्गीय राजस्थान के माणिक्यलाल वर्मा शोभालाल गुप्त, रामनारायण चौधरी, चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय, प्रकाशचन्द्र कविरत्न और हरिभाऊ उपाध्याय आदि के साथ हरिभाईजी ने अजमेर में जेल यात्रा की। महिमादेवी जी भी जेल गई। यह सन् 1932 की बात है। महात्मा गांधी के गोलमेज कान्फ्रेंस से लौटने के बाद भारत भर में आम गिरफ्तारियाँ हुई थी। चन्द्रभान शर्मा भी इनके साथ थे। इन दोनों को 30 सेर अनाज पीसने के लिये रोजाना दिया जाता था।

सन् 1937 में इनके दाहिने पैर की हड्डी टूट जाने पर इन्हें अजमेर के विक्टोरिया अस्पताल में बड़ी मुश्किल से भर्ती कराया गया। सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं से एक एक रुपया इकट्ठा कर माणिक्यलालजी ने इलाज कराया। शोभालालजी गुप्त ने भी मदद दिलवाई। यह छः महीने बाद ठीक हुए।

सन् 1940 के लगभग खीचन फलौदी में इन्होंने विद्यालय चलाया। सन् 1941 में सूरसागर जोधपुर में बालिका पाठशाला को जन्म दिया। उस समय आप केवल 40) रु० मासिक निर्वाह हेतु लेते थे। छः महीने में आपने 10000) रु० जनता से इकट्ठा कराया और पक्का विद्यालय बनाकर अच्छे अध्यापक व अध्यापिकाओं को रखकर विद्यालय जनता को सौंप दिया। मण्डार में भी आपने कन्या विद्यालय चलाया।

अन्तिम दो गिरफ्तारियां

सन् 1942 में मारवाड़ लोक परिषद् के कार्यकर्ताओं को सहयोग देते हुए उन्होंने उत्तरदायी शासन की मांग को लेकर जोधपुर आन्दोलन में भाग लिया। उन्हें सेन्ट्रल जेल में रखा गया। छूटने पर वह सोजत रोड आये और गिरफ्तार किये गये। इन्हें मोचिया किला (विजय तालाब पेलेस जोधपुर) में रखा गया। इसी आन्दोलन में हरिभाईजी की पत्नी महिमादेवी जी, सोजत की सुशीलादेवी और जतारण की भलकार देवी आदि ने औरतों का जत्था लेकर जोधपुर में आन्दोलन में भाग लिया था।

महिमाजी हरिभाइजी के लिए वरदान बनकर आई थी। उन्होंने इनके सुख-दुःख में पूरा साथ दिया। जिन्दगी भर वे प्रचार कार्यों में इनके साथ घूमती थी। 20 सितम्बर 1944 के दिन ब्यावर में महिमादेवी जी का स्वर्गवास हो गया। उन दिनों हरिभाईजी की आर्थिक स्थिति का सहज अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि महिमाजी की श्मसान यात्रा का सारा व्यय हरिभाइजी के एक मित्र ने वहन किया था।

हरिभाईजी कहा करते थे कि जब जब वे जेल गये इनका सारा माल असबाब जिनके हाथ लगा, लूट कर ले गये और जेल से छूटने पर इन्हें घर गृहस्थी चलाने और पुस्तकों को खरीदने के लिए हमेशा परेशान रहना पड़ा।

सन् 1942-44 के आन्दोलनों के बाद वे राजस्थान गश्ती पुस्तकालय का सञ्चालन करते रहे। अपने कन्धों पर मनों रुपया की पुस्तकें लादे हुए वे गांव-गांव घूम घूम कर धार्मिक, सामाजिक सद्ग्रन्थ बेचते रहे। इन पुस्तकों की बिक्री से जो कमीशन इन्हें मिलता उसमें यह अपना गुजारा करते थे।

समाज और राजनेताओं से अपेक्षित सत्कार इन्हें कम ही मिला। निरभिमान व निःस्वार्थ भाव से काम करने की इनकी प्रवृत्ति ने इन्हें किसी के आगे झुकने नहीं दिया। अपने हाथ पर चलते वे अपने जीवन काल तक सदैव परोपकारी ही बने रहे। सन् 1955 में जब हरिभाईजी बीमार पड़े तब शोभालालजी गुप्त को मालूम होने पर उन्होंने रामनारायणजी चौधरी को दिल्ली पत्र लिखा। चौधरीजी ने तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू को हरिभाईजी की बीमारी की सूचना दी। नेहरूजी ने 500) रु० हरिभाईजी को भेजे जो इन्होंने लौटा दिये। सन् 1960 में हरिभाईजी ने पं० नेहरू को एक पत्र में लिखा था कि मैं 70 वर्ष का हूं और अस्वस्थ हूं। सुना जाता है कि एक बार तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया ने इन्हें 250) रु० सहायतार्थ भेजे थे वह भी इन्होंने वापिस कर दिये। हरिभाईजी कुछ समय भारत सेवक समाज के वेतन भोगी संगठक भी रहे।

वे पद के भूखे नहीं थे। नेताओं की चाटुकारिता उन्हें बिल्कुल पसन्द नहीं थी। अन्तिम दिनों में अपने स्वर्गीय छोटे भाई की पत्नी मथुराबाई की सेवाओं से सन्तुष्ट थे। शरीर से वे काफी कमजोर हो चुके थे।

सन् 1967 में हरिभाईजी को सान्निपातिक ज्वर हुआ। ज्वर [illegible] ने इनके सारे शरीर को झकझोर दिया। वह युवकों में चरित्र की कमी अनुभव करते थे और उन्हें भारतीयता में [illegible] समझने लगे थे। देश दिशा भी उनकी चिन्ता का कारण था। [illegible] किधर जा रहा है इस विषय पर भी मिलने वालों में वह [illegible] चलाया करते थे। हरिभाईजी इस बात में भी चिन्तित [illegible]



जीते जी उनके पास मौजूद साहित्य का सदुपयोग करने वाला उन्हें मिल नहीं रहा था।

मृत्यु का आलिंगन

जीवन के आखिरी दिन, 74 वर्ष की आयु में 30 11 67 को जब मथुराबाई राशन की चीनी लेने गई हुई थी हरिभाईजी ने इहलीला समाप्त करने के लिए मकान के भीतरी कमरे में सब्जी रखने की टोकरियाँ बिछा कर, उन पर घास और मिट्टी का तेल छिड़क कर (तन की धोती दूर हटा कर) आग लगा ली और उसी पर बैठकर जीवन-लीला समाप्त कर दी। लोगों ने उन्हें समाधिस्थ बैठे पाया।

हरिभाईजी का जीवन देश के लिए समर्पित था। वे अपने पास आने वालों का साहस बढ़ाते थे लेकिन स्वयं आत्मदाह करके वे इस संसार से चल बसे।

—श्री भगवत 'सरिर'



सेवामूर्ति

श्री फूलचन्द बाफना



'सादा-जीवन और उच्च विचार' के प्रतीक श्री फूलचन्द बाफना सरल, कर्मठ एवं निश्छल व्यक्ति हैं। जैसी उनकी बाह्य निर्मल छवि है, वैसा ही मन है। वे स्वतन्त्रता-संग्राम में विदेशी शासन, राजाशाही एवं सामन्तशाही के विरुद्ध जूझते रहे तथा अनेक यातनाएं सहन करने पर भी कभी नहीं झुके। अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहने वाले अहिंसात्मक क्रान्ति के सेनानी तथा मानवता के पुजारी बाफनाजी आज भी दरिद्रनारायण की सेवा में संलग्न हैं।

आपका जन्म पाली जिले के सादड़ी नगर में 14 मार्च, 1913 को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा भाईन्दर (बम्बई), तत्पश्चात् सादड़ी और जोधपुर में हुई। जोधपुर में आपको ऐसे शिक्षक मिले जो पाठ्यक्रम के साथ-साथ स्वतन्त्रता-संग्राम की वीर-गाथाएं भी सुनाते थे। इससे आपके मन में राष्ट्र प्रेम जाग्रत हुआ। ऐसे अध्यापकों में श्रद्धेय गणेशीलालजी मथोला तथा साधुरामशरण्जी पाठक उल्लेखनीय हैं। आपने सन् 1932 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। दो वर्ष आप अध्यापक रहे। आपने सन् 1934 में खादी पहननी प्रारम्भ की। मिल के कपड़ों में चर्बी का उपयोग होता है जब आपको यह ज्ञात हुआ तब से अहिंसा की पुनीत भावना से आपने खादी धारण की।

बाफना जी विद्यार्थी जीवन में ही सामाजिक तथा कार्यों में भाग लेने लग गये थे। जोधपुर में मारवाड़ लोक-परिषद् की स्थापना होने पर आप इसके सदस्य बन गये और आपने देसूरी, सादड़ी, घाणराव, सुमेरपुर, फालना और बाली क्षेत्र में लोक-परिषद् की शाखाओं की स्थापना की। सन् 1940 में मारवाड़ लोक-परिषद् के पहले सत्याग्रह में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया। सन् 1942 में स्वतन्त्रता आन्दोलन में आप गिरफ्तार कर लिये गये और करीब दो वर्ष तक जेल में रहे। जेल की अवधि में आपके पुत्र महेन्द्रकुमार को धनुर्वात (टिटेनस) की प्राणघातक बीमारी हो गई फिर भी आप विचलित नहीं हुए। जेल अधिकारियों ने क्षमायाचना पत्र लिखने पर पैरोल पर छोड़ने की शर्त रखी परन्तु आपने तथा आपकी गृहलक्ष्मी ने यह स्वीकार नहीं किया। यह घटना आपके राष्ट्रप्रेम और दृढ़ चरित्र की द्योतक है।

सन् 1944 में जेल से मुक्त हो जाने के बाद आप स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए पूर्णरूपेण सक्रिय हो गये। आपने जनता को जागृत करने के लिए व्यापक दौरा किया। आप मारवाड़ लोक-परिषद् के प्रधानमन्त्री निर्वाचित हुए और अपने मन्त्रित्व-काल में राज्य भर में लोक-परिषद् के संगठन-पक्ष और आन्दोलन-पक्ष को व्यवस्थित और गतिशील बनाया। विशाल राजस्थान के निर्माण के समय आप मारवाड़ लोक-परिषद् के प्रधानमन्त्री थे और राजस्थान निर्माण के बाद पंडित हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व में जो राजस्थान का पहला मन्त्रिमण्डल बना उसमें आप स्वायत्त शासन मन्त्री बने। आपने लगभग दो वर्ष तक राजस्थान में स्वायत्त शासन मन्त्री का कार्य कुशलतापूर्वक किया।

सन् 1951 के बाद से आपका झुकाव भूदान और सर्वोदय की ओर होने लगा। आपने सर्वोदय का सन्देश गांव-गांव में पहुंचाया। आपने सिरोही, जालोर, बाड़मेर तथा पाली के अनेक भूमिहीनों को भूदान के अन्तर्गत भूमि वितरित करवाई। आपने भूदान यज्ञ हेतु पद यात्राएं की तथा जनता को नैतिक और मानवीय आदर्शों के प्रति सजग किया। आप दो बार प्रमुख जिला परिषद् पाली तथा दो बार प्रधान रानी और देसूरी के लिए चुने गये। इन पदों पर रहते हुए आपने जनता की निष्ठापूर्वक सेवा की।



आप अनेक शिक्षण संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। श्री पार्श्वनाथ उम्मेद महाविद्यालय फालना श्री पार्श्वनाथ विद्यालय वरकाणा तथा मरुधर बालिका विद्यापीठ विद्यावाडी आदि संस्थाओं के निर्माण एवं विकास मे आपकी महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय भूमिका रही। मरुधर बालिका विद्यापीठ विद्यावाडी के आप संस्थापक सदस्या मे हैं, जिसमे आपने जीवनदान देने की घोषणा की थी। आज विद्यावाडी का जो रूप है उसको सवारने व सजाने मे आपका योगदान अविस्मरणीय है।

समाज कल्याण, समाज शिक्षा और रचनात्मक कार्यों मे आप आज भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहे हैं।

आप स्वतन्त्रता सेनानी, समाज-सुधारक, शिक्षा प्रेमी और अहिंसात्मक क्रान्ति के अग्रदूत है। आप राष्ट्रपिता गाधी के दर्शन से विशेष प्रभावित रहे हैं। आपने महावीर और गाधी दर्शन से अहिंसा और प्रेम का पीयूष पीकर अपने जीवन का निर्माण किया। फलस्वरूप आपने सर्वप्रथम सदाचार का दीपक अपने भीतर प्रज्वलित किया और बाद मे समाज मे प्रकाश फैलाने का संकल्प किया। आप गाधीजी के दर्शन का उल्लेख करते हुए कहते है कि वे कथनी और करनी मे समानता के पक्षपाती थे। इस सम्बन्ध मे गाधीजी के जीवन का एक प्रेरणास्पद प्रसंग सुनाते हुए आप कहते है—'गाधी जी के पास एक बुढिया अपने लडके को लेकर आई। उसने गाधी जी से कहा कि मेरा बेटा बीमार है, डाक्टरो ने कहा कि इसे गुड मत खिलाओ परन्तु मेरा बेटा मानता नही और गुड खा लेता है। अत आप इसे समझाकर गुड खाना बन्द करवाओ।" बापूजी ने कहा सात दिन बाद आना, इसका उपाय करूगा। सात दिन बाद वह बुढिया अपने बेटे को लेकर उपस्थित हुई। तब गाधी जी ने उसके लडके को गुड नही खाने के लिए समझाया। गाधीजी की वाणी मे ऐसा प्रभाव था कि लडका मान गया। बुढिया ने झुझला कर कहा—"आप यह बात उसे उसी समय कह देते जब मैं पहली बार आपके पास आई थी। मुझे इसके लिए दुबारा आना पडा। इस पर गाधीजी ने कहा—"बहिन मैं स्वय पहले गुड खाता था। जो काम मैं स्वय करता था, उसके लिए इस लडके को कैसे मना कर सकता था? अब मैंने गुड खाना बन्द कर दिया, तब मैं इसे कह रहा हू।'

यह कथा प्रसंग अनुकरणीय है। आधुनिक युग मे नेता, समाज सुधारक एवं धर्माचार्य लच्छेदार भाषण तो करते हैं परन्तु उनका प्रभाव नही पडता। कारण स्पष्ट है, इनकी कथनी और करनी मे अत्यन्त अन्तर है। इसलिए वे सब प्रभावहीन हैं।

बाफनाजी ने स्वतन्त्रता संग्राम मे जो बलिदान दिया है वह स्वर्णाक्षरो मे अकित करने योग्य है। उनके अहिंसात्मक समाज रचना के कार्यक्रम अनुकरणीय है। वे सादगी से रहते है। वे दहेज प्रथा और सामाजिक धार्मिक आडम्बरो के विरुद्ध हैं तथा इसे प्रदूषण एवं अन्याय कहते है।

ऐसे दरिद्रनारायण की सेवा करने वाले स्वतन्त्रता सेनानी, निर्भीक वक्ता, भारतमाता के चरित्रवान सपूत के जीवन से यदि हम निस्वार्थ सेवा का पाठ सीख लें तो हमारा जीवन सफल हो जायगा। हमारा मस्तक उनके सद्गुणो का स्मरण कर नत मस्तक हो जाता है। अन्त मे उनके जीवन दर्शन को इन शब्दो मे अभिव्यक्त कर उनको स्नेह सुमन अर्पित है—

'मन्दिर है, मस्जिद है, चर्च है, पुजारी है पुरोहित है सन्यासी है, लेकिन पृथ्वी धार्मिक नही हो सकी है—क्योकि धर्मोपासक जो उपदेश देते हैं वह उनके जीवन मे चरितार्थ नही हुआ है उनकी करनी और कथनी मे अन्तर है।'

—प्रो० जवाहरचन्द पटनी, फालना



गरीबो के मसीहा
श्री मीठालाल काका

पाली के स्वतन्त्रता सेनानियो मे स्वर्गीय मीठालाल काका का मुख्य स्थान रहा है। काका का जन्म श्रीमाली ब्राह्मण समाज मे हुआ था। उनके पिता साहिबरामजी तथा माता सोनाबाई जाति प्रथा ऊच-नीच वर्ग भेद, सवर्णता आदि के कट्टर समर्थक थे, जबकि काका छुआछूत मिटाकर आम आदमी को मानव होने का हक दिलाने के पक्षधर रहे हैं। जब काका मेघवाला, भीलो व अन्य निम्न जातियो से मन्य वार्ता व दुख-दर्द को सुनकर घर मे भोजन हेतु प्रवेश करते तो उनको रसोई मे प्रवेश नही करने दिया जाता। अपने ही घर मे उन्हे 'अछूत' सम्बोधन व वैसा ही व्यवहार मिलता था। छुआछूत का सबसे बडा प्रमाण यह रहता है कि उन्हें भोजन भी ऊपर से परोसा जाता तथापि सहनशील



संघर्षशील राष्ट्र के राही बाबा इस अपमानजनक व्यवहार को भी कभी नासमझ शब्द का प्रयोग करके हँस कर टाल देते थे। दूसरी तरफ हम विचार करें कि इससे बड़ा कोई पाप नहीं है कि एक मानव अपने जैसे दूसरे मानव को जानवर से भी हेय माने। अपने घर में कुत्ते बिल्ली आ सकते हैं उनको हम प्यार से स्पर्श करते हैं हमारे बच्चे गोदी में उठाकर उनके साथ खेलते हैं लेकिन इन्सान को छूने में उनकी परछाई से मानव का धर्म भ्रष्ट होता है। इस सम्बन्ध में बाबा की मान्यता थी कि अस्पृश्यता से आपस में भेदभाव और कटुता का भाव उत्पन्न होता है। साथ ही वे इस बात पर बल देते थे कि समय के साथ प्रत्येक आदमी को बदलना होगा।

गरीबों के मसीहा—बाबा प्रतिदिन दलित वर्ग के मौहल्लों में जाते थे। वहाँ अगर कोई बीमार होता था—उसके दुःख दर्द निवारण हेतु उसे चिकित्सा सुविधा या आर्थिक सहायता, जो भी होता था—अनाज, कपड़ा या दवाइयाँ उपलब्ध करवाते थे। अगर किसी दलित के साथ अन्याय अत्याचार होता तो बाबा उन्हें कानूनी प्रक्रिया द्वारा विधि-वेत्ताओं और सम्बन्धित अधिकारियों के माध्यम से मुक्ति सम्भव करवाते।

बाबा के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने अपनी जमीन भी जो जागीरी से प्राप्त हुई थी काश्तकारों को दे दी और उन्होंने यह नारा दिया— 'जमीन किसकी जोते जिसकी।'

स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान बाबा स्थानीय सामन्तशाही के शिकार हुए। जिस समय बाबा मारवाड़ लोक-परिषद् के अध्यक्ष थे उस समय का चण्डावल हत्याकाण्ड चर्चित रहा है। चण्डावल के किसानों को अपनी मेहनत का हक दिलाने के लिए बाबा मांगीलालजी त्रिवेदी आलीशान के साथ जब चण्डावल पहुँचे तो तत्कालीन ठाकुर भोपालसिंह द्वारा गाँव की सीमा पर ही रोक दिये गये और ठाकुर के गुर्गों (भाड़ेता गुण्डों) ने उन पर लाठियों और भालों से हमला किया जिसमें बाबा गम्भीर रूप से घायल ही नहीं हुए वरन् अपनी एक आँख की रोशनी भी खो बैठे। घायल अवस्था में बाबा को सोजत अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जब यह खबर इस रूप में उनकी माताजी को मिली कि बाबा की पिटाई हरिजनों द्वारा की गयी है तो धार्मिक कट्टरता की अनुमोदक उनकी माताजी ने बड़ सकड़ा जो उस समय उनके हाथ में थी अस्पताल पहुँच कर उसी से उनकी पिटाई शुरू कर दी। उस समय बाबा को गाली-गलौच देते हुए महात्मा गाँधी को भी धर्म भंजक कहकर भला-बुरा कहा। क्रोध शान्त होने पर ही बाबा माँ से बच पाये क्योंकि माँ के लिए सबसे बड़ा असहनीय कारण यह था कि बाबा एक ब्राह्मण थे और उनकी पिटाई हरिजनों द्वारा की गयी थी।

सन 1970 में बाबा अचानक पक्षाघात की चपेट में आ गये। उस समय उनके पास अपनी बीमारी के इलाज के लिए धन का पूर्णतः अभाव था। इसलिए तत्कालीन चिकित्सा मन्त्री श्री मोहन छंगाणी और मुख्यमन्त्री बरकतुल्लाखाँ ने दवाइयाँ मुहैया करवायी। बीमार अवस्था में तत्कालीन मुख्यमन्त्री बरकतुल्लाखाँ ने जब सरकारी सहायता की धनराशि उन्हें देने की पेशकश की और कहा कि आपने देश के लिए बहुत कुछ किया है आप लोगों की बदौलत देश आजाद हुआ है क्या राज्य सरकार आपके लिए इतना सा भी नहीं कर सकती? तो बाबा का उत्तर था—क्या मेरी सेवाओं की कीमत सरकार चन्द रुपयों में आँक कर मुझसे उऋण होना चाहती है? इस पर मुख्यमन्त्री निरुत्तर थे।

स्वर्गीय बाबा को स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकार ने उन्हें ताम्रपत्र और पेंशन की स्वीकृति प्रदान की जिसको भी गरीबों के इस मसीहा ने लेने से इन्कार कर दिया। ताम्रपत्र के विषय में उनका कहना था कि इसके भ्रष्ट नौकरशाही के हाथ लगे हुए हैं और इसमें भ्रष्टाचार की बू आ रही है।

स्वर्गीय बाबा बहुभाषाविद् थे। वे मारवाड़ी गुजराती मराठी हिन्दी संस्कृत अंग्रेजी में धाराप्रवाह अपने विचारों को अभिव्यक्त कर देते थे। वे वक्तव्य में इस बात पर बल देते थे कि शोषित-वर्ग, पीड़ित वर्ग को दुःखों से छुटकारा दिलाना ही मानव मात्र की सेवा है। इसलिए बाबा गोड़वाड़ अंचल में गरीबों के मसीहा के नाम से जाने जाते थे।

वीर पुत्र

श्री मांगीलाल त्रिवेदी 'आलीशान'



श्री मांगीलालजी 'आलीशान' का जन्म चण्डावल ग्राम में पंडित बंशीलाल त्रिवेदी के सुपुत्र रामेश्वरजी एवं माता मगीबाई के यहाँ विजयादशमी विक्रमी संवत् 1956 तदनुसार 14 अक्टूबर सन् 1899 को हुआ। बचपन में उनके दादा बंशीलालजी ने इन्हें वेदान्त ज्योतिष और हिन्दी की शिक्षा दी। आयुर्वेद का भी साधारण ज्ञान इन्दौर के वैद्य हनुरामजी से मिला।

नौ वर्ष की आयु में मांगीलालजी अपने मामा जसकरणजी के साथ तालुका बरार जिला बुलडाना के आसलगाँव गये और पूजा पाठ का काम करने लगे। कुछ वर्षों के बाद इनके माता पिता भी पीपलगाँव आकर बस गये। मांगीलालजी अपनी माता के पास से पीपलगाँव आ गये और पिता के साथ पूजा पाठ के काम में लग गये।



11 वष की आयु मे मा से लकर पाच रुपयो की जमा पूजी म सुगन्धित द्रव्या की दुकान खोली, जो अच्छी चल पडी। धीरे धीरे कुछ एजेसिया भी ल ली और इनकी आर्थिक स्थिति मे सुधार आने लगा।

14 वष की आयु मे जब अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के अध्यक्ष सेठ गोविन्ददास थे, तब यह महासभा के प्रचारक नियुक्त हुए। वे अपनी दुकान भी चलाते रहे और प्रचारक का काय भी करत रहे।

इन्ही दिना मागीलालजी खामगाव के प्रताप अखाडा के व्यायाम शिक्षक पन्नालालजी व्यास के सम्पक म आये और आय समाज म काम करन लगे। गाव एवतमाल मे 135 मुस्लिम परिवारो को शुद्ध किया और हिन्दू धम म लौटाया।

सेठ बालकिशन दास भट्टड और सेठ तेजनाथ चण्डक के आग्रह मे सुगन्धित सामान की दुकान उठाकर कपास का धधा शुरू किया। इस काय म उक्त दोना सेठा ने उन्हे सहायता दी।

सन् 1917–18 म लोकमान्य बालगगाधर तिलक के भाषणो का आप पर विशेष प्रभाव पडा और बाबासाहब पराजपे के नेतृत्व मे होमरूल आन्दोलन म भाग लिया। पडित हरिवल्लभ दवे की ज्येष्ठ पुत्री त्रिवेदीजी की पत्नी हीरादेवी देश सेवा मे इनकी सहयोगिनी बनी। 1919 म इनके एक बच्चा पैदा हुआ। यह व्यापार के साथ साथ देश सेवा भी करते रहे। इनकी मा, पत्नी और बच्चा बीमार रहते। 1924 म उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। उसके 4 दिन बाद उनका पुत्र भी चल बसा।

आलीशानजी सन् 1924 म कांग्रेस के प्राथमिक सदस्य बने जो आजीवन रहे। पत्नी और पुत्र का क्रियाकम चण्डावल आकर किया। बीमार पिता का इलाज इन्ही दिना जोधपुर म कराने के बाद उन्हें पीपल गाव ले गय जहा उनके पिता का देहान्त हो गया। 7 2 27 को गाधीजी के खामगाव आने पर इन्हे उनकी सुरक्षा का काय सौपा गया। वे इन दिना हरिजन उत्थान के काम म लगे थ।

सन् 1930 म गाधीजी की दाडीयात्रा म शामिल हुए और जलगाव जामोद कांग्रेस के तहसील मत्री बनाये गये। तहसील कार्यालय पीपल गाव रखा। इन्होने जगल सत्याग्रह म भाग लिया और छिपकर काम करते रहे। आखिर सन् 1931 म गाधी इरविन समझौते के बाद जब नमक-सत्याग्रह व जगल सत्याग्रह स्थगित हुए तब यह जनता मे प्रकट हुए और आमलगाव कस्बे म दारू की दुकाना पर पिकेटिंग किया। शराब के ठेकेदारा न गुण्डा द्वारा इनकी जमकर पिटाई करवाई। गले के पास की हड्डी-हसली टूट गई। पीपल गाव म इलाज कराया गया तब ठीक हुए। विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन मे 5 7 बार पकडे गये और छोड दिये गये।

सन् 1932 म गोलमेज कान्फ्रेस से लौटने पर महात्मा गाधी को गिरफ्तार किया तब देश भर मे आन्दोलन चल पडा। 26 जनवरी को इद के दिन भाटरगाव मे भाषण देने पर त्रिवेदीजी 28 को गिरफ्तार किये गये। इन्हे 9 माह की सजा हुई। इनका डाक्टरी मुआयना भी नही कराया गया। इन्हे एक के बाद एक कोल्हू स तेल पेरन पत्थर फोडने और चक्की पीसने के काम म लगाया गया। इन्होने तीन चक्किया तोड दी। इसके अपराध म इनके आडा डण्डा तीन महीने तक लगाया गया। जेल म साधारण कैदियो को खराब खाना मिलता था। इस के लिए कैदियो मे सत्याग्रह करवाया। 12 दिन बाद गेहू की बाटिया मिलन लगी। अधिकारियो ने इस सबके लिए उनको और भी कई यातनाए दी।

त्रिवेदीजी जेल म छूटने पर खामगाव आ गये और कांग्रेस क रचनात्मक कार्यो म भाग लेने लगे। सन् 1933 मे आकोला जिला कांग्रेस क डिक्टेटर बन और सवा माह फरार रहे। सन् 1934 म बालापुर तहसील क एक गाव म पुलिस ने गिरफ्तार किया। एक साल की इन्हे सजा दी गई और आकोला जेल भेज दिया गया। मध्य प्रदेश के गवनर और कांग्रेस म समझौता होन पर साढे चार माह बाद छोडे गये।

सन् 1934 म ये पीपलगाव आये। उन दिना हैजा फैलने पर घर घर जाकर जनता की सेवा की। सन् 1934 के अन्त म इनके ताऊजी के लडके रूपदत्तजी पीपलगाव आये और इन्हे चण्डावल ले आये। इन्होने अपने लिए काम ढूढ निकाला। महावीर मडल और महावीर वाचनालय प्रारम्भ किया। दयालसिहजी नथमलजी मेहता, जुगराजजी भट्ट मीठालाल काका पूरणमल शमा शकरलाल माथुर, मुख्त्यार अहमद असारी आदि सभी इनके सहयोगी थे।

बठ-बेगार बेरोजगारी आदि के खिलाफ जागीरदार म सघष मोल लिया। मागीलालजी न कहा—मैं बेकार हू मुझे काम दो। उन दिना मारवाड लोक परिषद् के नेता जयनारायण व्यास जोधपुर राज्य म निर्वासित थे। मागीलालजी न देवारामजी क सहयोग म और महावीर मण्डल क कायकर्ताओ मे मिलकर 15 मई 1934 म मुख्त्यार अहमद की अध्यक्षता म एक सभा सदर बाजार चण्डावल म की। श्री दयालसिंह गहलोत, पूरणमलजी और मागीलालजी आलीशान के भाषण हुए। जागीरी जुल्मो के खिलाफ डटकर बोला



संघर्षशील राह के राही काका इस अपमानजनक व्यवहार को भी केवल 'नासमझ' शब्द का प्रयोग करके हंस कर टाल देते थे। दूसरी तरफ हम विचार करें कि इससे बड़ा कोई पाप नहीं है कि एक मानव अपने जैसे दूसरे मानव को जानवर से भी हेय माने। अपने घर में कुत्ते बिल्ली आ सकते हैं उनको हम प्यार से स्पर्श करते हैं हमारे बच्चे गोदी में उठाकर उनके साथ खेलते हैं लेकिन इन्सान को छूने में उनकी बराबरी में मानव का धर्म भ्रष्ट होता है। इस संदर्भ में काका की मान्यता थी कि अस्पृश्यता से आपस में भेदभाव और कटुता का भाव उत्पन्न होता है। साथ ही वे इस बात पर बल देते थे कि समय के साथ प्रत्येक आदमी को बदलना होगा।

गरीबों के मसीहा—काका प्रतिदिन दलित वर्ग के मोहल्ला में जाते थे। वहां अगर कोई बीमार होता था—उसके दुःख दर्द निवारण हेतु उसे चिकित्सा सुविधा या आर्थिक सहायता, जो भी होता था—अनाज कपड़ा या दवाईयां उपलब्ध करवाते थे। अगर किसी दलित के साथ अन्याय अत्याचार होता तो काका उन्हें कानूनी प्रक्रिया द्वारा विधि-वेत्ताओं और सम्बन्धित अधिकारियों के माध्यम से मुक्ति सम्भव करवाते।

काका के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने अपनी जमीन भी, जो जागीरों में प्राप्त हुई थी, काश्तकारों को दे दी और उन्होंने यह नारा दिया—'जमीन किसकी जोते जिसकी।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान काका स्थानीय सामन्तशाही के शिकार हुए। जिस समय काका मारवाड़ लोक-परिषद के अध्यक्ष थे उस समय का चण्डावल हत्याकाण्ड चर्चित रहा है। चण्डावल के किसानों को अपनी मेहनत का हक दिलाने के लिए काका मांगीलालजी त्रिवेदी आलीशान के साथ जब चण्डावल पहुंचे तो तत्कालीन ठाकुर भोपालसिंह द्वारा गांव की सीमा पर ही रोक दिये गये और ठाकुर के गुर्गों (भाड़ेती गुण्डों) ने उन पर लाठियों और भालों से हमला किया जिसमें काका गम्भीर रूप से घायल ही नहीं हुए वरन् अपनी एक आंख की रोशनी भी खो बैठे। घायल अवस्था में काका को सोजत अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जब यह खबर इस रूप में उनकी माताजी को मिली कि काका की पिटाई हरिजनों द्वारा की गयी है तो धार्मिक कट्टरता की अनुयायी उनकी माताजी ने वह लकड़ी जो उस समय उनके हाथ में थी अस्पताल पहुंच कर, उसी से उनकी पिटाई शुरू कर दी। उस समय काका को गाली गलौच देते हुए महात्मा गांधी को भी धर्म भंजक कहकर भला-बुरा कहा। क्रोध शान्त होने पर ही काका मां से बच पाये क्योंकि मां के लिए सबसे बड़ा असहनीय कारण यह था कि काका एक ब्राह्मण थे और उनकी पिटाई हरिजनों द्वारा की गयी थी।

सन 1970 में काका अचानक पक्षाघात की चपेट में आ गये। उस समय उनके पास अपनी बीमारी के इलाज के लिए धन का पूर्णतः अभाव था। इसलिए तत्कालीन चिकित्सा मन्त्री श्री मोहन छंगानी और मुख्यमन्त्री बरकतुल्लाखां ने दवाइयां मुहैय्या करवायी। बीमार अवस्था में तत्कालीन मुख्यमन्त्री बरकतुल्लाखां ने जब सरकारी सहायता की धनराशि उन्हें देने की पेशकश की और कहा कि आपने देश के लिए बहुत कुछ किया है, आप लोगों की बदौलत देश आजाद हुआ है, क्या राज्य सरकार आपके लिए इतना सा भी नहीं कर सकती? तो काका का उत्तर था—क्या मेरी सेवाओं की कीमत सरकार चन्द रुपयों में आंक कर मुझसे उऋण होना चाहती है? इस पर मुख्यमन्त्री निरुत्तर थे।

स्वर्गीय काका को स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकार ने उन्हें ताम्रपत्र और पेंशन की स्वीकृति प्रदान की जिसको भी गरीबों के इस मसीहा ने लेने से इन्कार कर दिया। ताम्रपत्र के विषय में उनका कहना था कि इसके भ्रष्ट नौकरशाहों के हाथ लगे हुए हैं और इसमें भ्रष्टाचार की बू आ रही है।

स्वर्गीय काका बहुभाषाविद थे। वे मारवाड़ी, गुजराती, मराठी, हिन्दी संस्कृत अंग्रेजी में यथास्थान अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर देते थे। वे वक्तव्य में इस बात पर बल देते थे कि शोषित वर्ग पीड़ित वर्ग को दुःखों से छुटकारा दिलाना ही मानव मात्र की सेवा है। इसलिए काका ग्राम्य अंचल में गरीबों के मसीहा के नाम से जाने जाते थे।

वीर पुत्र
श्री मांगीलाल त्रिवेदी 'आलीशान'



श्री मांगीलालजी 'आलीशान' का जन्म चण्डावल ग्राम में पंडित वंशीलाल त्रिवेदी के सुपुत्र रामेश्वरजी एवं माता मगीबाई के यहां विजयादशमी विक्रमी संवत् 1956 तदनुसार 14 अक्टूबर सन् 1899 को हुआ। बचपन में उनके दादा वंशीलालजी ने इन्हें वेदान्त ज्योतिष और हिन्दी की शिक्षा दी। आयुर्वेद का भी साधारण ज्ञान इन्दौर के वैद्य हेतुरामजी से मिला।

नौ वर्ष की आयु में मांगीलालजी अपने मामा जसकरणजी के साथ तालुका बरार जिला बुलडाना के आसलगांव गये और पूजा पाठ का काम करने लगे। कुछ वर्षों के बाद इनके माता पिता भी पीपलगांव आकर बस गये। मांगीलालजी अपनी माता के पास से पीपलगांव आ गये और पिता के साथ पूजा पाठ के काम में लग गये।



11 वर्ष की आयु में मां से लेकर पांच रुपयों की जमा पूंजी से सुगन्धित द्रव्यों की दुकान खोली, जो अच्छी चल पड़ी। धीरे धीरे कुछ एजेंसियां भी ले लीं और इनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आने लगा।

14 वर्ष की आयु में जब अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के अध्यक्ष सेठ गोविन्ददास थे, तब यह महासभा के प्रचारक नियुक्त हुए। वे अपनी दुकान भी चलाते रहे और प्रचारक का कार्य भी करते रहे।

इन्हीं दिनों मांगीलालजी खामगांव के प्रताप अखाड़ा के व्यायाम शिक्षक पन्नालालजी व्यास के सम्पर्क में आये और आर्य समाज में काम करने लगे। गांव एकतमाल में 135 मुस्लिम परिवारों को शुद्ध किया और हिन्दू धर्म में लौटाया।

सेठ बालकिशन दास मटृड और सेठ तेजनाथ चण्डक के आग्रह से सुगन्धित सामान की दुकान उठाकर कपास का धंधा शुरू किया। इस कार्य में उक्त दोनों सेठों ने उन्हें सहायता दी।

सन् 1917–18 में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के भाषणों का आप पर विशेष प्रभाव पड़ा और बाबासाहब पराजपे के नेतृत्व में होमरूल आन्दोलन में भाग लिया। पंडित हरिवल्लभ दवे की ज्येष्ठ पुत्री त्रिवेदीजी की पत्नी हीरादेवी देश सेवा में इनकी सहयोगिनी बनी। 1919 में इनके एक बच्चा पैदा हुआ। यह व्यापार के साथ साथ देश सेवा भी करते रहे। इनकी मां पत्नी और बच्चा बीमार रहते। 1924 में उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। उसके 4 दिन बाद उनका पुत्र भी चल बसा।

आलीशानजी सन् 1924 में कांग्रेस के प्राथमिक सदस्य बने जो आजीवन रहे। पत्नी और पुत्र का नियाकर्म चण्डावल आकर किया। बीमार पिता का इलाज इन्हीं दिनों जोधपुर में कराने के बाद उन्हें पीपल गांव ले गये जहां उनके पिता का देहान्त हो गया। 7 2 27 को गांधीजी के खामगांव आने पर इन्हें उनकी सुरक्षा का कार्य सौंपा गया। वे इन दिनों हरिजन उत्थान के काम में लगे थे।

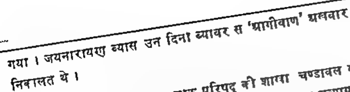
सन् 1930 में गांधीजी की दांडीयात्रा में शामिल हुए और जलगांव जामोद कांग्रेस के तहसील मंत्री बनाये गये। तहसील कार्यालय पीपल गांव रखा। इन्होंने जंगल-सत्याग्रह में भाग लिया और छिपकर काम करते रहे। आखिर सन् 1931 में गांधी इरविन समझौते के बाद जब नमक-सत्याग्रह व जंगल सत्याग्रह स्थगित हुए तब यह जनता में प्रकट हुए और आसलगांव कस्बे में दारू की दुकानों पर पिकेटिंग किया। शराब के ठेकेदारों ने गुण्डों द्वारा इनकी जमकर पिटाई कराई। गले के पास की हड्डी–हंसली टूट गई। पीपल गांव में इलाज कराया गया, तब ठीक हुए। विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन में 5 7 बार पकड़े गये और छोड़ दिये गये।

सन् 1932 में गोलमेज कान्फ्रेंस से लौटने पर महात्मा गांधी को गिरफ्तार किया तब देश भर में आन्दोलन चल पड़ा। 26 जनवरी को ईद के दिन माटरगांव में भाषण देने पर त्रिवेदीजी 28 को गिरफ्तार किये गये। इन्हें 9 माह की सजा हुई। इनका डाक्टरी मुआयना भी नहीं कराया गया। इन्हें एक के बाद एक कोल्हू से तेल पेटने, पत्थर फोड़ने और चक्की पीसने के काम में लगाया गया। इन्होंने तीन चक्कियां तोड़ दीं। इसके अपराध में इनके आड़ा डण्डा तीन महीने तक लगाया गया। जेल में साधारण कैदियों को खराब खाना मिलता था। इस के लिए कैदियों से सत्याग्रह करवाया। 12 दिन बाद गेहूं की बोरियां मिलने लगीं। अधिकारियों ने इस सबके लिए इनको और भी कई यातनाएं दीं।

त्रिवेदीजी जेल से छूटने पर खामगांव आ गये और कांग्रेस के रचनात्मक कार्यों में भाग लेने लगे। सन् 1933 में आकोला जिला कांग्रेस के डिक्टेटर बने और सवा माह फरार रहे। सन् 1934 में बालापुर तहसील के एक गांव में पुलिस ने गिरफ्तार किया। एक साल की इन्हें सजा दी गई और आकोला जेल भेज दिया गया। मध्य प्रदेश के गवर्नर और कांग्रेस में समझौता होने पर साढ़े चार माह बाद छोड़े गये।

सन् 1934 में वे पीपलगांव आये। उन दिनों हैजा फैलने पर घर घर जाकर जनता की सेवा की। सन् 1934 के अन्त में इनके ताऊजी के लड़के रूपनतजी पीपलगांव आये और इन्हें चण्डावल ले आये। इन्होंने अपने लिए काम ढूंढ निकाला। महावीर मंडल और महावीर वाचनालय प्रारम्भ किया। दयालसिंहजी, नथमलजी मेहता, जुगराजजी मट्टू, मीठालाल काका, पूरणमल शर्मा, शंकरलाल माथुर, मुख्त्यार अहमद जसानी आदि सभी इनके सहयोगी थे।

बेठ-बेगार बेरोजगारी आदि के खिलाफ जागीरदार से संघर्ष मोल लिया। मांगीलालजी ने कहा—मैं बेकार हूं, मुझे काम दो। उन दिनों मारवाड़ लोक परिषद् के नेता जयनारायण व्यास जोधपुर राज्य में निर्वासित थे। मांगीलालजी ने देवारामजी के सहयोग से और महावीर मण्डल के कार्यकर्ताओं से मिलकर 15 मई 19?4 में मुख्त्यार अहमद की अध्यक्षता में एक सभा मन्दर बाजार चण्डावल में की। श्री दयालसिंह गहलोत, पूरणमलजी और मांगीलालजी आलीशान के भाषण हुए। जागीरी जुल्मों के खिलाफ डटकर बोला



गया । जयनारायण व्यास उन दिना ब्यावर स 'आगीवाण' अखबार निकालत थे ।

सन् 1934 म मारवाड लाक परिषद् की शाखा चण्डावल म कायम की गई । सन् 1940 मे मारवाड लाक परिषद् का सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ । आलीशानजी जोधपुर म गिरफ्तार किय गये । पुलिस ने उनकी पिटाई की और गुप्तागा को नाखूना स नोचा । झूठ मुकद्मा चलने पर सजा सुना दी गई और जेल भेज दिया गया । छूटने पर चण्डावल आये और 11 फरवरी, 1942 का जागीरी अत्याचारा के विरुद्ध खुली जाच की माग का लकर भूख-हडताल शुरु कर दी । तत्कालीन चीफ मिनिस्टर के आदेश पर साजत हाकिम सिद्धेश्वरनाथ चण्डावल पहुचे । मारवाड लाक परिषद् के महामत्री किशोरमल महता भी चण्डावल आय । दोना के आश्वासना पर उन्हान भूख हडताल तोडी । इस काम म चण्डावल ठिकाणे की जनता न पूरा समथन दिया । जागीरदार की ओर स श्री मागीलालजी आलीशान और छलजी को वदल म चण्डावल ठिकाणे स बाहर निकाल दिया गया ।

28 माच सन् 1942 को चण्डावल म सभा बुलान पर जागीरदार द्वार भगिया व ठिकाणे के भाडे के आदमिया स मारवाड लोक परिषद् के कायकर्ताओ का पिटवाया गया और खदेडा गया । लगभग 27 कायकर्ता घायल हुए । आलीशानजी और छला रामजी निवासित किय गये ।

18 मई 1942 को लाक परिषद् क अध्यक्ष श्री रणछोडदास गट्टानी चण्डावल आये और सफल सभा हुई जिसम ठिकाणे वाला के हौसल पस्त हा गय ।

मारवाड लाक परिषद् क आन्दालन के 15वें डिक्टटर विष्णुदत्त पुरोहित 16वें डिक्टेटर श्री मागीलालजी आलीशान व श्री यशवन्त जी रुचिर का दिनाक 5 2 43 का जाधपुर म अलग अलग स्थाना म गिरफ्तार किया गया और तत्कालीन स्पशल मजिस्ट्रेट हसराज सिंघवी द्वारा इनका भिन्न भिन्न सजायें दी गइ । मागीलालजी की गिरफ्तारी के साथ उन्हान अपना उत्तराधिकारी विजयशकर दवे को 17वा डिक्टेटर घाषित किया । दवे के कायकाल म मारवाड लाक परिषद् और जाधपुर राज्य म समझौता हुआ और सभी राज नतिक कायकता और जिन्ह नजरबन्द रख हुए थे रिहा कर दिय गये । आलीशानजी परिषद् क कार्यो म रुचि लत रह और व चण्डावल म ही कायरत रह ।

देश विभाजन के बाद व मारवाड जक्शन पर शरणार्थी शिविर म सहायता काय करत रहे । व उम्मद मा शाला साजत क दो वष व्यवस्थापक रह । अपने अन्तिम दिना म ग्राम विकास कार्यों म, विशेषकर तालाब व बाध कार्यो म दिलचस्पी लेत रह और नेहरु वाचनालय चलात रह । दिनाक 5 अगस्त, 1976 का चण्डावल म आलीशान जी का देहान्त हा गया । वे जीवन के अन्तिम कुछ वर्षो म लकवे स पीडित भी रह ।

टूट गये पर झुके नहीं

श्री कन्हैयालाल वैदिक

□

पाली जिल क प्रथम क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता सनानी के रूप म विख्यात् है–श्री कन्हैयालाल वदिक, घाणेराव । वैदिकजी क्रांतिकारी आन्दोलन म कलकत्ता म शामिल हुए । यह भी तथ्य सही है कि उन दिना म भारतीय विशेषकर बगाल के क्रान्तिकारिया की गतिविधियो स अग्रेज सरकार आतकित थी । चटगाव म कायरत क्रान्तिकारिया की टोली म वदिकजी की अहम् भूमिका रही थी । इस टोली का प्रमुख काय था—सभी प्रकार के सरकारी शस्त्रागारा का लूटकर उन्ह अलग अलग केन्द्रा पर पहुचाना और जहा मौका मिल वहा अग्रेज व उनके सिपाहिया का सफाया करना । यह टोली भारत मे 7–8 वष तक निरन्तर काय करती रही । सन् 1919–20 मे अपन दल के अन्य साथियो सहित आप गिरफ्तार कर लिये गये और आपको जैसूर म नजरबन्द रखा गया । उन्ह कारावास के दौरान अमानवीय यातनाए दी गइ फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य बिलकुल गिर गया । स्वास्थ्य की गिरावट न परिवारजना और सम्बन्धियो का चिन्तित किया । उन्ह चटगाव स अपने पतक गाव घाणेराव (मारवाड) आना पडा । यहा आकर जब उन्हान गाव और आसपास मे देखा तो पाया कि मारवाड म भी राजाशाही और सामन्तशाही के अत्याचार पराकाष्ठा पर है तो चटगाव की वह लौ, जो उनके मन म जोर-जुल्म के विरुद्ध प्रज्वलित हुई थी वह अब सामन्तशाही के विरुद्ध लोहा लेते हुए दैदीप्यमान हा उठी ।

कन्हैयालालजी के पिता श्री चुन्नीलालजी श्रीमाली ज्योतिष के अच्छे ज्ञाता थ । तत्कालीन जागीरदारा एव धनाढय व्यक्तिया म इनकी प्रतिष्ठा थी । इनक पूवजा को बहुत समय पहले घाणेराव नाडाल दादाई घाणोद भगवानपुरा आदि गावो म माफी जागीर क बेरे एव भूमि मिली हुई थी । परन्तु, बगाल से लौटने के बाद स्थानीय पुलिस को तो उनकी गुप्त गतिविधिया की भनक तक नही पडी । पर अग्रेजो राज की पुलिस ता इन्ह ढूढ ही रही थी । उन्ही

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्



प क हैयालालजी वदिक
युवावस्था मे

दिनो राजस्थान क अग्रणी स्व तन्त्रतासनानी श्री विजयसिंहजी पथिक माणिक्यलालजी वर्मा आदि कई नता विचार विमश हेतु तथा पुलिस की आखा स ओझल होकर भूमिगत होन की दष्टि से कन्हैया लालजी के यहा आते रहते थे। शहीद चन्द्रशेखर आजाद को एक बार चार दिन के लिए श्री रामनारायणजी चौधरी न अनातवास म इन्ही के साथ रहने के लिए भेजा था। इन सभी गुप्त हरकता का राज आखिर खुल ही गया। इनक घर की तलाशी ली गई। बहुत सारे पत्र कागजात पुस्तक जब्त की ग.। एक अन्य तलाशी म कुछ शस्त्र और बम बनान की सामग्री भी बरामद की गई। उक्त सम्पूण घटनाक्रम स स्थानीय पुलिस भी सतक हो गई। सन् 1940 म कन्हैयालालजी का उनके छोट भाई स्वतन्त्रता सेनानी महिपरजा के साथ नाडाल म नजरबन्द कर दिया गया तथा इन लोगा की माफी की जमीनें तत्कालीन स्टेट की आज्ञा स ठिकाना घाणेराव ने जब्त कर ली। इन सारी परिस्थितिया म कन्हयालालजी वदिक और उनके परिवार की आर्थिक स्थिति का कमजोर कर दिया मगर य तो टूट जाना–पर झुकना नही जानते थे। अभावा की जिन्दगी इनका स्वभाव बन गया था।

आप जागीरी जुल्मा, बठ बगार लाटा व जागीरदारा के कमचारिया द्वारा मनमाने ढग के अमानुषिक अत्याचारा क विरुद्ध सघषशील जीवन व्यतीत करन लगे। अब तो राष्ट्रीय चेतना की लहर दूरस्थ गावा मे भी व्याप गयी। वदिकजी ने कई बार बडी हानि उठायी, पर वे सघष के पथ पर डटे रहे, हटे नही। यह कहना सही है कि पाली क स्वतन्त्रता सेनानी वदिकजी उग्रवादी थे। गाधी वाद मे उनकी आस्था नही थी। यह उसे गतिहीन तथा अव्याव-हारिक समझते थे। आजादी की प्राप्ति के बाद उन्हाने राजनीतिक गतिविधिया स सन्यास ले लिया था और भारत माता का वह सपूत सन् 1973 मे अपनी जन्मभूमि घाणेराव म ही काल-कवलित हो गया।

जीवन दीप जले ऐसा, सब जग को ज्योति मिले।



बहादुर और सत

श्री छोटमल सुराणा

☐

समाज की वास्तविक सेवा के लिए कभी एस सवाभावी व्यक्ति भी जन्म लेत है जिन पर न केवल एक प्रात वल्कि सम्पूण राष्ट्र एव इतिहास बाद मे गव करता है। सब पर प्यार लुटान वाल और अपने लिए कुछ न चाहने वाले लोग इस युग म बडी कठिनाई स मिल पाते है। एस ही लागो की पक्ति म श्री छोटमल सुराणा थ। आपका जन्म नागौर के एक मध्यम श्रेणी परिवार म श्री सौभाग्यमलजी सुराणा क घर 7 जून 1902 ई के दिन हुआ। आपके पिता बाली (जिला पाली) म वकील थ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा यहा पीपल के वक्ष के नीच छप्पर म हुई जहा गुरासा सारे लडका को एकत्र करके पढाया करत थे।

आप प्रारम्भ म ही दृढ प्रतिज्ञ साहसी एव आत्म विश्वासी हान के साथ सत्यवक्ता थ। उस समय भारत अग्रेजो का गुलाम था और अग्रेजी शासका के दुव्यवहार स सभी भारतीय अत्यन्त दु खी थे। सुराणाजी की चढती उम्र थी। उनके मानस म देश प्रेम हिलोरें ले रहा था। 17 वष की उम्र म आपको कस्टम विभाग मे सरकारी नौकरी मिली। उन दिनो सरकारी नौकरी का बडा ही महत्व था। सरकारी नौकरी मे हान के कारण सुराणाजी क परिवार का समाज मे काफी आदर-सत्कार हुआ करता था।

एक दिन सरकारी अफसर ने निरीक्षण के दौरान सुराणाजी स ऊपरी आमदनी का प्रतिशत मागा तो उन्हाने तपाक स कहा— श्रीमान्! न मै रिश्वत लता हूँ और न ही देता हूँ। यह सुनकर अफसर बडा क्षुब्ध हुआ। पर धुन के धनी व देश प्रेम के दीवान का क्या परवाह। रिश्वत वाली नौकरी उन्ह रास नही आयी, उन्होंने बिना सोच विचार उस नौकरी का ठोकर मारकर घर की राह ली। आपक मित्र व घरवाल बहुत चिन्तित हुए।

सरकारी नौकरी का तिलाजलि दकर आप देश क स्वतन्त्रता सग्राम म कूद पडे। उस समय राजनीति क आकाश म गाधीजी उज्ज्वल नक्षत्र के समान चमक रहे थ। सुराणाजी न मन ही मन अपने को गाधी के आदर्शो का अनुयायी मान लिया। सन् 1920 ई



मे गाधीजी असहयोग आन्दोलन म रत थ और अग्रेजो को सही तथ्यो स अवगत कराने के लिए सत्याग्रह कर रहे थे। सुराणाजी ने अपन दो आजादी के उस सघष को कडी मानत हुए गोडवाड को अपना कायक्षेत्र बनाया और उसी क्षण अपन विचारो के अनुकूल समाज के स्वस्थ निर्माण हेतु लोक सगठन के काय म जुट गए।

वह सामन्तकाल था। सम्पूण भारत म जागीरी प्रथा जोरो पर थी। जागीरदार तथा सरकारी कारिन्दे किसानो से मनमाना टक्स वसूलकर अपना ऐश्वयमय जीवन जी रह थ। राजपूताना रियासत की गोडवाड म जागीरी का सबस बडा ठिकाना बेडा गाव था। ये जागीरदार किसानो के हितो की उपेक्षा कर गांवो म नाटा बाटा, बेठ बगार लाग बाग की जबरन वसूली करते थ जिससे किसान अत्यधिक दु खी थे।

आजादी के इस दुलारे न सवप्रथम किसानो की इस दुखती हुई रग पर हाथ रखा। इन्होने किसानो का इस भीषण समस्या स उभारन क लिए सत्याग्रह असहयोग व अहिंसावादी नीतियो का सहारा लिया। किसानो की गदन लम्बे अर्से म जागीरदारो के पावो के नीचे दबी हुई थी और व अपनी गदन को साबुत रखने के लिए उनके पावो को सहला रह थ। सुराणाजी ने भाटून्द म खेतीहर किसानो (ब्राह्मणो) का सगठित किया उनमे अपनी ओजस्वी वाणी स नइ प्ररणा भरी उन्ह ललकारा अपने अधिकारो के प्रति सचत किया। नई जागृति भरत समय यह उदाहरण दिया कि मन म्हाणी चारो-दादा म्हाणी जमावणो बिलावणो माणी भर घी जागीरदार खावें आ केडी रीत है?' किसान भाइयो यह बताओ कि फिर घी पर किसका अधिकार है? किसानो का समवेत स्वर सुनाई दिया— म्हाणो। दूसरे उदाहरण ने तो किसानो की आखें खोल दी कि खेत म्हाणा हल म्हाणो बीज म्हाणा, बिजरो निनाण म्हाणो मेहनत म्हाणी, लाटो आयो तो धान रुपय म 12 आना उणारो (जागीरदारा रा)! आ कठारो न्याव है? किसानो की ही वाणी म उन्होन एक नई चेतना भरी।

जिस समय सुराणाजी गावो म जाग्रति का अलख जगा रह थ उस समय जागीरदार अग्रजो के सरक्षण म एश्वयमय जीवन जीत हुए मदहोश हो रह थ। गाव बेडा जो उस समय सन् 1924 ई० क आसपास गणमान्य ठिकाना माना जाता था, के विरुद्ध उन्होने जमकर मोर्चा लिया। भाटून्द क काश्तकारो को सलकार कर सगठित किया और सत्याग्रह म धरना देकर बैठ गए। किसानो ने जागीरदारो स असहयोग किया, अन्ततोगत्वा जागीरदारो ने जोर जुल्म की आजम उठाली किसानो की गदन पर स बेरहमी का पांव उठा लिया। इस भाटून्द क सत्याग्रह न सुराणाजी को गोडवाड क्षत्र म विख्यात कर दिया।

सुराणाजी अनवरत सघष के लिए कृतसकल्प थे। आपन जहा जहा जोर-जुल्म देखा, उसी क्षण वही पालथी लगाकर सत्याग्रह के लिए अड गये। अनाकानी हुई तो भिड गये। कोई लडने को उतारू हुआ तो लड गये, पर मैदान हाथ स नहीं जाने दिया। इस आजादी के दीवाने ने गोडवाड की भूमि म घूमत समय जब यह पाया कि तहसील देसूरी क गाव खरोकडा पर अन्याय और अत्याचार का घटाटोप है, सेठो ने गरीबो को आजीवन गुलाम बनाये रखने के लिए ऋणो की जजीरो से जकड दिया है सरकारी कारिन्दो ने सेठो की मिलीभगत स अपनी ही जेबें भरनी प्रारम्भ कर दी हैं और दूसरी तरफ बेचारा किसान सेठ जागीरदार तथा सरकारी कारिन्दा–इन तीनो का कमर पर चढाये ढो रहा है जिसके कारण उसकी कमर और गदन झुक गई है, वह कमर सीधी करन क लिए गिडगिडा रहा है किन्तु इस तिकडी का पत्थर दिल पसीजन का नाम नही ले रहा है उस समय सुराणाजी स्वतन्त्रता का अलख जगान के लिए गाव खरोकडा गये और गिरी हुई लाठी को उठाकर किसानो के हाथो म थमा दी। इसस उस तिकडी को एक धक्का लगा। दूसरी ओर सुराणाजी कृषको के मसीहा बन गये। सुराणाजी न कजदारो व काश्तकारो को सगठित कर इस अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध मोर्चा लिया। इस मोर्चे से सेठ-साहूकार तथा सरकारी तन्त्र सुराणाजी के विरुद्ध हो गया। फिर भी सुराणाजी सत्याग्रह पर अडे रहे। अतत खरोकडा गाव के किसानो और गरीब गुरबो को जागीरदारो व सरकारी तन्त्र द्वारा सरक्षण प्राप्त हुआ और बेरहमी का ताण्डव नत्य समाप्त हुआ। किसानो को तो आपके मोर्चे स राहत मिल गई, पर स्वय के लिए एक प्रतिद्वन्द्वी मोर्चा बन गया। इससे उन्ह व्यक्तिगत रूप स अनेक यातनाए भी सहन करनी पडी।

गोडवाड के किसानो और शोषण पीडित जनता के यह मसीहा अपनी ख्याति स अजमर, मेवाड और मारवाड के क्रांति कारियो स असम्पृक्त नही रह सके। पत्र व्यवहार क सूत्र स वे अन्य प्रान्तो स भी जुडे रह। मारवाड लोक-परिषद्' तथा "मारवाड हितकारिणी सभा क सक्रिय सदस्य क रूप म जुडे रहे और वे गोडवाड की धरा का शोषणमुक्त करने क लिए सामाजिक तथा राजनतिक जाग्रति का प्रचारित एव प्रसारित करन म जी जान स जुट गए। आपके प्रेरक के रूप म श्री आनन्दराज सुराणा श्री मवरलाल सर्राफ तथा श्री जयनारायण व्यास क नाम प्रमुख हैं। सुराणाजी को अपनी मित्र मडली पर नाज था, क्योकि सब हर समय सहयोग एव जन-सवा क लिए तत्पर रहन थ।

बेडा एव खरोकडा क जागीरदार सुराणाजी के लम्बे सघष म यो ही नाराज थ, दूसरी ओर आपकी बिरादरी म ही पनपने



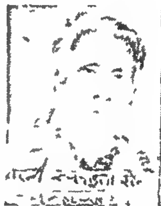
हुए सठ भी इनकी प्रसिद्धि स ईर्ष्या रखते थे एव इनकी उन्नति पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाने के लिए बेताब थे। अत एक बार जब यह सपरिवार बैलगाडी म सवार हो, बाली को लौट रहे थे, तो कतिपय विरोधियो ने इन्हे व्यक्तिगत प्रताडना देन के लिए इनके परिवार को लुटवाया। जब लुटेरे बैलगाडी की तरफ आते दिखायी दिये, तो स्वय अपनी एक मात्र तलवार ले, पत्नी से धीरज बधवाते गाडी से कूद पडे। घटा सघर्ष के बावजूद गाडी तो लूटी गई पत्नी ने सहज भाव स जेवर लुटेरो को सौंप दिये। आजादी की दीवानगी म सारा समय बीत जाने के कारण घर की आमदनी मद रही और एक स्थिति म आकर घर का आर्थिक ढाचा गडबडाया पर धन के लिये सुराणाजी कभी विचलित नही हुए। न ही उन्होने सठो की तरह अहमद की टोपी मेहमद को पहनाने की चेष्टा की—अर्थात् धन म धन कमाने की नीति म उनका विश्वास नही रहा।

सुराणाजी स्वावलम्बी होने के कारण हमेशा अपने हृदय म स्थायी शान्ति को ही अधिक महत्व देते हुए अपने हाथ से ही शबत और चूर्ण बनाकर बेचने लगे। इस शबत और चूर्ण की स्तरीय बनावट को लेकर उनके जीवित उपभोक्ता आज भी उन्हे याद किया करते है। कहने का अभिप्राय यह है कि गोडवाड की धरा का यह लाडला सपूत हाथ के हुनर म भी माहिर था।

वैसे, जहा आपने सरकारी तत्र और जागीरदारो को आडे हाथो लिया वहा जमाखोरो मुनाफाखोरो तथा भ्रष्ट सठो को भी नही बख्शा। इसी सदर्भ मे उनकी ईमानदारी के अनेक सटीक उदाहरण भी मिलते है।

एक उदाहरण सुराणाजी की जिन्दादिली बताने लायक है। एक बस मालिक और सुराणाजी के बीच कस्टम के माल के विवाद के प्रश्न को लेकर बहस हो गई। बस मालिक ने टायर के नीचे कुचल कर मारने की धमकी के साथ उनका खादी का कुर्ता और गाधी टोपी को फाडकर फक दिया। जान से मारने की धमकी पर उन्हे इतना क्रोध नही आया जितना गाधी टोपी के अपमान पर। उनका जहा झगडा हुआ था, उसी स्थान पर भूख हडताल कर दी। इनके इस अपमान की बात बाली की जनता को सहन न हो सकी और एक उग्र भीड उस बस मालिक को जहा कही भी हो पकडने के लिए उसका पीछा करने को तयार हुई लेकिन तत्कालीन जिलाधीश ने आश्वासन द दिया कि दोषी व्यक्ति को शीघ्र ही पकड कर लाया जायगा व 3 4 दिन म उसे पकड कर लाया भी गया। बस मालिक ने सुराणाजी स क्षमायाचना करते हुए कहा—जो भी दण्ड आप मुझे देंगे मुझे मजूर है। इस पर सुराणाजी ने उन्हे दण्ड के रूप मे एक खादी का कुर्ता व टोपी काग्रेस कार्यालय को भेंट करने का दण्ड सुनाया। कुर्ता व टोपी काग्रेस कार्यालय को भटकर, किसी की बात से भ्रमित होकर एक आदर्श पुरुष के साथ वसा घिनौना व्यवहार करने पर पश्चाताप करता हुआ बस मालिक नतमस्तक हो गया।

निरतर सघर्ष की आवाज बुलन्द करने वाले सुराणाजी कब तक खर मनाते अन्तत सरकार ने अपने कानून न सन् 1940 ई० म दफा 6 ए०एम०जी० राजद्रोह का मुकदमा चलाकर इन्हे बाली के किले को जल म डाल दिया। जल मे इन्हे कई प्रकार की शारीरिक यातनायें तथा धमकिया भी मिली किन्तु व अपने पक्ष स नही हटे और न इन्हे डिगा पाई गरीबी, भुखमरी और बच्चो की बेबसी। टूटना मजूर है पर झुकना आपने कभी सीखा नही। इसी जेल म उनके साथ स्वतन्त्रता सेनानी श्री रणछोडदासजी गट्टानी जोधपुर वाले भी थे। गट्टानी सा द्वारा रचित स्वतन्त्रता प्रेरित गीतो से सुराणाजी प्रभावित थे।



स्वातन्त्र्यवीर

श्री छैलाराम

☐

श्रद्धेय पूरनमल जी मास्टर (चण्डावल) पुरानी स्मृतियो के भण्डार म स अनमोल ससमरण सुना रहे थे। यकायक उत्तेजित हो कहने लगे—हमारे गाव के इस छैलजी हीरागर की बहादुरी सहनशक्ति और राष्ट्रभक्ति की तुलना मे राजस्थान का आज का कोई नेता खडा नही रह सकता। इनके शरीर की एक एक हड्डी-पसली तथा इन्च इन्च चमडी कोडो लाठियो व जूतो की मार के निशानो स भरी पडी है। इनका साहस तो देखिय—सन् 1935 की बात होगी चण्डावल ठिकाने म छैलजी को बुलाकर ठाकुर न अपने नौकरो को आदेश दिया—इनको 108 जूते लगाये जाए। बस हुक्म की देर थी—धडाधड पडने लगे सिर पर जूते। जूते मारने वाला एक थकता तो दूसरा आदमी बुलाया जाता पर छैलजी का देखिये—हर जूते की मार पर इनके मुह से निकलता भारत माता की जय का उद्घोष। गाव के सकडो लोग विस्मित थ और आपस म वार्तालाप भी करते कि छैलजी म इतनी शक्ति कहा स आ गई! सचमुच, यह तो 'भारतमाता' और "महात्मा गाधी के नाम का चमत्कार है।



77 वर्षीय छैलारामजी का जन्म अहमदाबाद अजमेर मुख्य मार्ग पर स्थित पाली के चण्डावल ग्राम में सन् 1913 में हुआ। ये जाति के हीरागर (अनुसूचित जाति) है अतः उस जमाने में अधिक पढ़ाई भी नहीं कर सके। लेकिन बाल्यकाल से ही जागीरी जुल्म, बेठ बेगार व लाग-बाग की अमानवीय यातनाएं इन्होंने स्वयं अपनी नजरों से देखी थी और किसानों तथा भूमिहीन मजदूरों, विशेषकर अनुसूचित जाति के लोगों के दुःख-दर्द का चित्र स्वयं इनकी आंखों के आगे सजीव नाचता था। इस पृष्ठभूमि ने युवक छैलाराम में तत्कालीन व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह की भावना भर दी और इस जोर जुल्म की सामन्ती-व्यवस्था को समाप्त करने हेतु उनका युवक हृदय छटपटाने लगा।

उस समय स्वर्गीय मांगीलालजी त्रिवेदी 'आलीशान' चण्डावल के ही नहीं सारे क्षेत्र में (ब्यावर से लेकर पाली तक के) आजादी के संघर्ष में कार्यरत सभी कार्यकर्ताओं के अगुवा थे। उन्होंने छैलारामजी में एक साहसी, संघर्ष करने वाला और समर्पित राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत व्यक्तित्व देखा और सन् 1934 में मारवाड़ लोक परिषद् के महान् नेता जयनारायणजी व्यास को चण्डावल बुलाकर छैलारामजी को मारवाड़ लोक परिषद् का सदस्य बनाकर स्थानीय भाषा में दीक्षित कर दिया। अब क्या था, छैलारामजी रात दिन अंग्रेज-साम्राज्यशाही राजाशाही और सामन्तशाही के विरुद्ध संघर्ष करने की योजना बनाने, सभाएं करने आम जनता को संगठित करने में लग गये। भला जागीरदार चण्डावल को ये हरकतें कब बर्दाश्त होती? उन्होंने भी छैलजी तथा इनके नवजवान उत्साही साथियों को कुचलने का कुचक्र रचा। और वही सामन्ती हथकण्डे—मारपीट निष्कासन, जब्ती फौजदारी मुकद्दमे आदि छैलजी पर भी चलाये जाने लगे।

सन् 1934 में सर्वप्रथम छैलजी को चण्डावल जागीरदार ने अपने कोट में बुलाकर बांध दिया और बुरी तरह पिटाई की। सारे इलाके में इस घटना से बड़ा आतंक पैदा हो गया। रिश्तेदारों और परिवारजनों ने इन्हें राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग होने की सलाह दी पर छैलजी तो निराली धातु के ही बने हुए हैं—उन्होंने दूने उत्साह से इस काम को करना शुरू किया। सौभाग्य से इन्हें जोधपुर के तत्कालीन नेता जयनारायणजी व्यास, रणछोड़दासजी गट्टानी, मथुरादासजी माथुर, अचलेश्वरप्रसादजी शर्मा तथा सोजत के मीठालालजी 'काका', हरिभाईजी किंकर आदि का प्रोत्साहन और सक्रिय सहयोग मिला। इनके विश्वसनीय साथी थे इनके ही ग्रामवासी मांगीलालजी 'आलीशान', नाथाजी, नथमलजी मूथा, चान्दमलजी गादिया, रामसुखजी पुरोहित, देदारामजी जाट, प्रभूजी जाट, शंकरलालजी कालानी (देवली वाले), धूलजी जाट, जुगराजजी भट्ट, भंवरलालजी पुरोहित। ये सभी स्वतन्त्रता-सेनानी मिल जुलकर आन्दोलन की रूपरेखा तैयार करते, एक-दूसरे का पूरा सहयोग देते और लोगों में प्रचार कर एक अभूतपूर्व वातावरण बनाते। पाली जिले में मारवाड़ी बगड़ी व पाली की तरह ही चण्डावल भी क्रांतिकारियों का एक प्रमुख गढ़ था और यहां के कार्यकर्ता दूर-दूर तक गांवों में जाकर जन जागृति पैदा करते और संगठन बनाते थे।

छैलारामजी के साहस और कार्यशक्ति के कारण चण्डावल तथा आसपास के सारे जागीरदार व्याकुल हो गए थे। सन् 1935–36 की मार्मिक घटना है। छैलारामजी को पकड़ कर चण्डावल रावले में लाया गया और गांव के लोगों के सामने ठाकुर चण्डावल ने अपने नौकरों को आदेश दिया कि छैलाराम की सफेद टोपी फाड़कर जूतों-तले कुचल दो। वैसा ही किया गया और पिटाई शुरू की तथा रस्सों से बांधकर जेल में पटक दिया। पर यह तो कभी नहीं झुकने वाला छैलाराम ही तो था—जोर जोर से 'महात्मा गांधी की जय' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाता रहा। सारे गांव में तनाव बढ़ गया। जागीरदारों ने गांव की जनता को आतंकित करने के लिए गांव में घोड़े दौड़ाये पर जनता का रोष बढ़ता ही गया। आखिर छैलारामजी को जेल से छोड़ना ही पड़ा। इसी घटना में मीठालालजी 'काका' (सोजत) तथा अन्य कई कार्यकर्ता जागीरी गुण्डों के हमले से घायल हुए, कइयों को चोटों से खून बहा, सारा शरीर लहूलुहान हो गया पर सभास्थल छोड़कर कोई नहीं भागा। घायलों को सोजत अस्पताल पहुंचाया गया।

सन् 1942 में मारवाड़ लोक-परिषद् द्वारा चलाये गये जिम्मेवार हुकूमत के आन्दोलन में छैलारामजी ने फूलचन्दजी बाफना (सादड़ी) के नेतृत्व में सत्याग्रह किया। जोधपुर राज्य के तत्कालीन चीफ मिनिस्टर सर डानाल्ड फील्ड का जनाजा निकालते हुए जुलूस निकाला। घुड़सवारों ने जुलूस को तितर बितर करने के लिए लाठी प्रहार किया जिससे छैलारामजी की पसलियां टूट गई और दाहिने हाथ में चोटें आने से हड्डियां टूट गई। इसी सत्याग्रह के सिलसिले में इन्हें चार माह तक जेल में रखा गया। ये ज्यों ही जेल से छूटकर अपने ग्राम चण्डावल आये कि जागीरदार के आदमियों ने घेर लिया और रात को जब सारा गांव सो रहा था, छैलजी को पकड़कर घर से निकाल कर गांव से निष्कासित कर दिया और रहने के दो प्लाट तथा काश्त की 20 बीघा भूमि भी जब्त कर ली। अब तो छैलजी का न तो घर था—न गांव और न ही रोजी रोटी का कोई साधन। लेकिन वे तो इसे ही ईश्वरीय प्रसाद मान कर दूने उत्साह से आजादी के संघर्ष में जुट गये। गांव-गांव



जाकर लोगो को सगठित करना, आन्दोलन कराना और मारवाड लोक-परिषद् की शाखाए स्थापित कर सदस्य बनाना इनका रात दिन का काय हो गया। ये 15 अगस्त, 1947 के आजादी के स्वर्णिम प्रभात तक यही काय निरतर करते रहे।

इनके त्यागमय जीवन सतत् परिश्रम और राष्ट्र की आजादी प्राप्त करने के उच्च ध्येय के प्रति समर्पित भाव ने इन्हे पाली जिले का एक जनप्रिय नेता बना दिया और ऐसे ही कमठ स्वतन्त्रता सेनानियो की कमस्थली चण्डावल ग्राम बन गया क्रातिकारियो का तीर्थ-स्थल।



जन जाग्रति के अग्रदूत

श्री मूलचन्द भट्ट



श्री मूलचन्द भट्ट 'भौर' पाली जिले के उन अग्रणी नेताओ मे से है जिन्होने राष्ट्रीय चेतना जगाने मे नीव के पत्थर का काम किया है। भट्टजी का जन्म 7 दिसम्बर सन् 1904 को पाली मे हुआ था। उनका प्रारम्भिक शिक्षण यही पर हुआ पर सन् 1918 से 1921 तक का कायकाल बनारस व कानपुर मे रहा। उसी दौरान ये अनेक प्रसिद्ध साहित्यकारो और कवियो के सपक मे आये और विरासत मे प्राप्त उनकी काव्य रुचि जाग्रत हो गई। वे कविताए और लेख लिखने लगे। भारत मे इन्ही दिनो राष्ट्र को आजाद करवाने के आन्दोलनो ने जोर पकड रखा था और सभी प्रबुद्ध लोगो की शक्ति और ध्यान इस ओर लगना स्वाभाविक था। भट्टजी राजस्थान के अग्रणी किसान नेता श्री मोतीलालजी तेजावत के सपक मे आये। वे भीलो गिरासियो को सगठित करने मे लग गये, पर पुलिस की आतककारी गतिविधियो के कारण पाली लौट आये और साहित्य-सेवा मे लग गये।

सन् 1929 मे भट्टजी सवप्रथम श्री जयनारायण व्यास के सपक मे आये और ब्यावर मे उन्होने तरुण राजस्थान तथा आगीवाण पत्रो मे सवाददाता-सम्पादक का काय किया। इसी दौरान सन् 1932 मे देश मे सवत्र नमक-सत्याग्रह चला और भट्टजी को भी श्री हरिभाई किंकर तथा अमोलकचन्दजी सायरचन्दजी सुराणा के साथ अजमेर सेन्ट्रल जेल मे तीन माह की जेल भुगतनी पडी। सन् 1934 35 मे पुन पाली उनकी कायस्थली बनी और राष्ट्र की आजादी के लिए सघषशील व्यक्तियो से बराबर रखते हुए साहित्य-साधना करने लगे। पर गावो मे तो जुल्मो की आग लगी हुई थी। बैठ बेगार लाटा कूता व ... लाग-बाग के कारण किसान व गरीब वग दुखी थे। मारवाड लोक परिषद् की स्थापना के साथ ही पाली मे भी उसकी शाखा खोली गई और अपने साथी सवश्री सुमेरराज डागा रामप्रसाद गाधी रामप्रताप शर्मा के साथ सक्रिय होकर काय प्रारम्भ कर दिया। लोक परिषद् के सदस्य बनाना, सभा-सम्मेलन करना और लोगो मे जागृति पैदा करना अब इनका रात दिन का मुख्य काय हो गया। इसी सिलसिले मे खैरवा, चाणोद आदि अनेक स्थानो पर इनके साथ जागीरी गुण्डो ने मारपीट की, लाठियो से इन पर हमला किया और मरणासन्न घायल अवस्था मे लोगो ने इन्हे घर पहुचाया। पर यह वीर तो अदम्य उत्साह और लगन लिये हुए था। फिर से ये इन कार्यों मे दूने उत्साह से जुट गये।

पाली मे बालिग मताधिकार के आधार पर चुनी हुई नगर पालिका के लिए चले आन्दोलन का आपने श्री सुमेरराज डागा व रामप्रसादजी गाधी के साथ नेतृत्व किया। इन्ही दिनो मारवाड मे हो रही मर्दुमशुमारी के लिए प्रति घर आठ आने (आज के 50 पैसे) का टैक्स लगाया गया था। उसके विरोध मे आन्दोलन खडा किया और टैक्स माफ कराकर सफलता प्राप्त की। इससे लोक परिषद् की लोकप्रियता बढी और सगठन मजबूत हुआ।

सन् 1942 के आन्दोलन मे इन्हे कविता, सवाद व लेखो द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रचार करने का काय सौंपा गया था जिसे इन्होने बखूबी पूरा किया। फलस्वरूप तत्कालीन महाराजा जोधपुर श्री उम्मेदसिंह ने भट्टजी को राजकवि के पद से हटाकर इन्हे प्रतिमाह मिलने वाली रु 201 00 की राशि देना बन्द कर दिया और मारवाड के 14 ठिकानो मे मिलने वाली प्रति ठिकाना रुपय 201 00 की भेंट भी बन्द कर दी। इससे परिवार पर आर्थिक सकट बढ गया, अभावो ने घेर लिया किन्तु इनकी लेखनी मे छिपी शक्ति और अधिक निखरकर सामने आई। भट्टजी वर्षों तक पाली जिला पत्रकार सघ के अध्यक्ष रहे और समय-समय पर इनके लेख व कविताए भारत के सभी प्रमुख समाचार-पत्रो व पत्रिकाओ मे छपती रहीं।

श्री जयशकरप्रसाद बाबू गुलाबराय माखनलाल चतुर्वेदी आचाय विश्वेश्वर दयाल, गणेशशकर विद्यार्थी नाननायक जयनारायण व्यास गणशीलाल व्यास उस्ताद नसिंहराम बाबा, जगदीशसिंह गहलोत हरिभाई किंकर, माणकलाल वर्मा, अम्बिकादत्त कवि आदि अनेक प्रसिद्ध साहित्यकारो व राजनतिक नेताओ के साथ इनका निकट का सम्पक रहा है। भट्टजी जीवन भर साहित्य-साधना और राष्ट्र सेवा मे लगे रहे।





कर्मनिष्ठ सेनानी

श्री मोहनराज जैन



26 जनवरी 1939 के शुभ प्रभात में सरदार हाई स्कूल जोधपुर की प्रार्थना सभा वन्दे मातरम् के राष्ट्रीय गीत से गूंज उठी। एक विद्यार्थी ने गांधी टोपी में सजधज कर चालीस गांधी टोपी पहने विद्यार्थियों की टोली के नायक के रूप में मंच पर वन्देमातरम् गीत गाया तब वहां के प्रधानाचार्य एवं अध्यापकगण अवाक् रह गये। इस तथाकथित दुष्कृत्य के लिए जोधपुर के तत्कालीन शिक्षा निदेशक श्री ए० पी० कॉक्स ने जसवन्त कालेज के प्राचार्य श्री साइनी को यह लिखकर भेजा कि उस विद्यार्थी को कालेज में प्रवेश नहीं दिया जाए और फलस्वरूप उसे कालेज शिक्षा के लिए प्रवेश नहीं मिला। जोधपुर ही नहीं अजमेर के राजकीय कालेज में भी प्रवेश नहीं दिया गया।

यह विद्यार्थी और कोई नहीं आज के कर्मनिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी श्री मोहनराजजी जैन थे जो राजस्थान के पाली जिले के अन्तर्गत एक छोटे से ग्राम देवली-पाबूजी में एक प्रबुद्ध परिवार में जन्मे थे। मोहनजी की माता श्रीमती नन्दा देवी और पिता श्री मूलचन्दजी धार्मिक और उदार प्रकृति के थे। ग्राम में इस श्रेष्ठि दम्पत्ति का विपुल सम्मान और स्नेह था, क्योंकि सुख दुःख में उनका वरदहस्त जनता के लिए सदा खुला रहता था। माता प्रायः बीमार रहती थी। बालक मोहन के मन में उसकी वेदना थी जो आगे चलकर राष्ट्र वेदना के रूप में मुखरित हुई। आठ नौ वर्ष के मोहन को छोड़कर माता स्वर्ग सिधार गई। चारों भाइयों सर्वश्री सोहनराज हस्तीमल मोहनराज एवं वस्तीमल को अपार दुःख हुआ। पिताश्री की कारुणिक छाया में धीरे-धीरे ये बड़े होने लगे।

मोहनजी का जन्म 15 अगस्त 1920 को हुआ था। यह संयोग है कि इसी पावन दिन सन् 1947 में हमें राष्ट्रपिता गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता मिली थी।

मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है यह कथन मोहनराज जी के जीवन पर खरा उतरता है। बात यह बनी कि इनके परिवार के कुलगुरु श्री प्रतापरतनजी ने इनकी जन्म पत्री देखकर इनके पिता को बताया था कि बालक के विद्या का योग नहीं है। इस पर बालक मोहनराज ने उसी क्षण वह जन्म-पत्री फाड़कर फेंक दी और वह स्वयं अपनी नयी जन्म-पत्रिका बनाने में सक्रिय हो गया। यह घटना प्रेरणा देती है कि ज्योतिषियों के चक्कर में आने की अपेक्षा मनुष्य को पुरुषार्थ कर अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करना चाहिए।

मोहनराजजी ग्राम्य-पोशाल में श्री जठमलजी पुरोहित पिलोवणी से पढ़े। फिर वरकाणा विद्यालय में प्रवेश लिया। वरकाणा में 1934 में मारवाड़ के विद्यालयों की वाद विवाद प्रतियोगिता में मोहनराजजी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विषय था ग्राम्य जीवन का महत्व।' इन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। वरकाणा में सर्वश्री भागवतजी शुक्ल, नत्थीलालजी हरिशंकरजी आदि गुरुजनों ने इस मेधावी छात्र के जीवन निर्माण में विशेष योगदान दिया।

निर्भीक स्वतन्त्रता सेनानी

स्वतन्त्रता आन्दोलन की चिनगारियां भारत के कोने-कोने में फैलने लगी। जोधपुर में सन् 1939 में लोक परिषद् की बैठक श्री सुमनेशजी जोशी की अध्यक्षता में गिरदी कोट प्रांगण में हुई। एक सज्जन के भाषण देने के बाद लाठी चार्ज हुआ। उसमें एक डण्डा मोहनराजजी पर भी पड़ा। यह स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रथम प्रसाद था। हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों ने इस कड़ुवे प्रसाद को मीठे मोदक के समान चखा है।

सन् 1940 की एक क्रांतिकारी घटना उल्लेखनीय है। स्वामी कुमारानन्द के नेतृत्व में ब्यावर में जब तिरंगा झण्डा फहराया गया तो श्री मोहनराजजी ने निर्भय होकर गाया—

Up up the National flag
Down down the Union Jack

इस पर इन्हें तथा श्री ऋषभराज जैन (जैतारण) को गिरफ्तार कर लिया गया था।

मोहनराजजी का विद्यार्थी-जीवन उस तूफान के समान था जो पीछे नहीं मुड़ता। न तो उन्हें अपने अध्ययन की चिन्ता थी और न धन-संचय की। वह लालच व गुलामी के उस वट वृक्ष का उन्मूलन के लिए आतुर थे जिसने भारत माता को दुःखी और हीन बना दिया था। सन् 1942 में जब मोहनराजजी होलकर कॉलेज इन्दौर में स्नातक कक्षा में पढ़ते थे, उस समय श्री तेजबहादुर सप्रू जो वायसराय की एक्जीक्यूटिव काउन्सिल के सदस्य थे, भाषण देने आये। कार्यक्रम का श्रीगणेश होने ही वाला था कि मोहनराज



जो तूफान की तरह मच पर पहुचे और व देमातरम्' के नारे से सभा को गूजा दिया। उस समय श्री मोहनराजजी छात्र यूनियन के अध्यक्ष भी थे। सभा म सप्रू साहब का 'युद्ध प्रयास' पर भाषण सुनने के लिये 200 अग्रेज अधिकारी भी आये थे। इस हगामे मे सप्रू साहब अपना भाषण नही द पाय। वे तुर त कार से चले गये। श्री सप्रू के जान के बाद मोहनराजजी के नेतृत्व मे विद्यार्थीगण हाल के बाहर निकले और उ होन अनक अग्रेजा के गालो पर चपतें लगायी। इस हगामे म मोहनराजजी के विरुद्ध गिरफ्तारी वारन्ट निकला और कितना सुखद आश्चय कि होलकर कालेज के राष्ट्र-प्रेमी प्राचाय श्री राजू और उनकी अग्रेज पत्नी ने स्वय के आवास म 11 दिना तक उ ह अपने बच्चे के समान छिपाकर रखा। थोडे ही दिनो पश्चात् 'अग्रेजा भारत छोडो' आ दोलन के पश्चात् विद्यार्थिया का नतृत्व करत हुए इ ह इ दौर म गिरफ्तार कर लिया गया और सात विद्यार्थी नेताओ के साथ नगरपालिका की आवारा कुत्तो की फाटक के कटघरे मे ठूम दिया गया। कि तु तीसर दिन ही रात मे जेल तोडकर य मुक्त हा गये तथा कस्ब मे भूमिगत रहकर काय करने लगे।

जुझारू क्रा तिकारी

श्री मोहनराजजी के विद्यार्थी जीवन की दो क्रान्तिकारी घटनाए उल्लखनीय हैं। एक बार उनक ग्राम क ठाकुर श्री माधोसिह न नय सिर से लटाई व लाग-बाग वसूल करने का आदेश जारी किया और पूरी गाचर भूमि को खुदकाश्त मे परिवर्तित कर दो कुए खुदवा दिये। गाव का पशुधन घरा म ही ब द हो गया। तार से सूचना मिलते ही यह स्वत त्रता सेनानी कालेज छाडकर इन्दौर स गाव देवली पहुँचा। उसके नतृत्व म ग्रामवासियो ने ढोल नगाडे बजाते हुए गाचर भूमि मे प्रवेश किया और जागीरदार के कुएँ को पुन गाचर भूमि मे परिणत कर दिया। यह आ दोलन आठ माह चला। दो बार गाव के कुवर सज्जनसिह अपने नौकरा के साथ ब दूकें व तलवारें लेकर आय पर उनके वार निष्फल गये। एक बार ता भारतमाता का यह वीर सिपाही उनक सामन सीना तानकर खडा हो गया। वे निशाना चूक गये और ब दूक भी नीचे गिर पडी। यह घटना उस स्वत त्रता प्रेमी युवक की याद दिलाती है जिसने अपने जीवन का महत्व नही दिया जिसका आत्मा की अमरता म गहरा विश्वास है तथा जिसकी रग रग मे अमर शहीद भगतसिह और नेताजी सुभाषच द बोस की जैसी देश भक्ति की ऊर्जा प्रवाहित थी। दूसरी घटना है ग्राम के रावले की कोठडी भवन पर जबरन कब्जा कर स्कूल खोलने की।

एक अ य घटना है जब कोटडी ग्राम के ठाकुर की ज्यादतिया से तग आकर चालीस मेघवाल परिवार गाव छाडकर चले गये। मोहनराजजी व उनके साथी कायकर्ता कोटडी गाव पहुच। उन मेघवाला को सगठित किया। अपने घरो से निष्कासित मेघवाला के घरा म जागीरदार की भरी हुई घास को उ होन जला दिया तथा लोगा को पुन उनके घरा म बसाया।

श्री मोहनराजजी न बी० ए०, एल० एल० बी० तक शिक्षा प्राप्त की तथा स्वतत्रता प्राप्ति के बाद बाली म आकर वकालात करने लगे। इसके साथ-साथ वे साम ती एव नौकरशाही जुल्मा स त्रस्त जनता को मुक्त करन क लिये कांग्रेस के सक्रिय कायकर्ता क रूप म निर तर प्रयत्नशील रहे। उनके स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् के जुझारू सस्मरण भी कम रोचक नही है।

सन् 1948 म देश आजादी की प्रथम वषगाठ मना रहा था, पर तु बाली के पास बोया ग्राम के जागीरदार का वहा के पुरोहित परिवारा से बगार लन हतु किय जान वाला अत्याचार मानवता पर गहरा काला धब्बा था। एक बार रात्रि म पुरोहित पुरुष वग को चाकलाई के पास जगल म खेजडी के वृक्षो स बाध दिया गया और महिलाओ का रावले की पाल म बिठा दिया गया। निर्भीक मोहनराजजी न दृढता व हिम्मत के साथ जागीरदार के भारी आतक के बावजूद पुरोहित परिवारा को उसके चगुल स छुडाया ही नही—वरन् जाच करवाकर ठिकाना बोया को कोट आफ वाडस म जब्त करवा लिया।

जागीरदार चामुण्डरी ने जागीर की जब्ती के भय स गावाई जगल ठेकेदारा का बच दिये। यह घटना सन् 1949 की है। गाव के जन प्रतिनिधिया ने मोहनराजजी का सूचना दी। वृक्षा क प्रेमी, पर्यावरण रक्षक मोहनराजजी सामा य जनता की रोजी रोटी का बचाने हेतु चामु डरी जनता के बीच पहुचे और आसपास क गावा की जनता को सगठित किया। जागीरी गुण्डा तत्वा व जनता के बीच सघष चला। ग्रामवासिया न वृक्ष न काटन व न कटन दन की प्रतिज्ञा की। फलस्वरूप गावाई वनो को बचा लिया गया। मोहनराजजी का यह महान् सघष खेजडली की ऐतिहासिक गाथा एव वतमान चिपको आ दोलन की याद दिलाता है।

चाणोद ठिकान का कोसेलाव गाव के कायराना शिकार खाना काण्ड को भी भुलाया नही जा सकता। सन् 1948 की बात है। सामती लोग अपन मनोरजन हेतु कोसलाव गाव क पास ही पहाडी के चारा ओर ऊची ऊची काटा की बाड बनाकर जगली सुअरा और अ य जगली जानवरा को रखत थे। इच्छानुसार चाणोद कुवर अपने अ य ठाकुरा के साथ यहा आत शिकार खेलत और मनोरजन करत पर तु इस मनोरजन का मूल्य गरीब ग्राम-वासिया का अपने पशुधन की बलि देकर चुकाना पडता था। जगली जानवरा का पशुधन पर आक्रमण प्रतिदिन बढने लगा। यह





कर्मनिष्ठ सेनानी

श्री मोहनराज जैन



26 जनवरी, 1939 के शुभ प्रभात में सरदार हाई स्कूल, जोधपुर की प्रार्थना सभा 'वन्दे मातरम्' के राष्ट्रीय गीत से गूंज उठी। एक विद्यार्थी ने गांधी टोपी में सजधज कर चालीस गांधी टोपी पहने विद्यार्थियों की टोली के नायक के रूप में मंच पर 'वन्देमातरम्' गीत गाया तब वहां के प्रधानाचार्य एवं अध्यापकगण अवाक् रह गये। इस तथाकथित दुष्कृत्य के लिये जोधपुर के तत्कालीन शिक्षा निदेशक श्री ए० पी० कॉक्स ने जसवन्त कॉलेज के प्राचार्य श्री साहनी को यह लिखकर भेजा कि उस विद्यार्थी को कॉलेज में प्रवेश नहीं दिया जाए और फलस्वरूप उसे कॉलेज शिक्षा के लिए प्रवेश नहीं मिला। जोधपुर ही नहीं अजमेर के राजकीय कॉलेज में भी प्रवेश नहीं दिया गया।

यह विद्यार्थी और कोई नहीं आज के कर्मनिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी श्री मोहनराजजी जैन थे जो राजस्थान के पाली जिले के अन्तर्गत एक छोटे से ग्राम देवली पाबूजी में एक प्रबुद्ध परिवार में जन्मे थे। मोहनजी की माता श्रीमती नन्दा देवी और पिता श्री मानमलजी धार्मिक और उदार प्रकृति के थे। ग्राम में इस श्रेष्ठि दम्पत्ति का विपुल सम्मान और स्नेह था, क्योंकि सुख दुःख में उनका वरदहस्त जनता के लिए सदा खुला रहता था। माता प्रायः बीमार रहती थी। बालक मोहन के मन में उसकी करुणा थी जो आगे चलकर राष्ट्र-करुणा के रूप में मुखरित हुई। आठ नौ वर्ष के मोहन को छोड़कर माता स्वर्ग सिधार गई। चारों भाइयों सर्वश्री सोहनराज, हस्तीमल, मोहनराज एवं कस्तामल का अपार दुःख हुआ। पिताश्री की कारुणिक छाया में धीरे धीरे ये बड़े होने लगे।

मोहनजी का जन्म 15 अगस्त 1920 को हुआ था। यह संयोग है कि इसी पावन दिन सन् 1947 में हमें राष्ट्रपिता गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता मिली थी।

मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है यह कथन मोहनराज जी के जीवन पर खरा उतरता है। बात यह बनी कि इनके परिवार के कुलगुरु श्री प्रतापरतनजी ने इनकी जन्म पत्री देखकर इनके पिता को बताया था कि बालक के विद्या का योग नहीं है। इस पर बालक मोहनराज ने उसी क्षण वह जन्म पत्री फाड़कर फेंक दी और वह स्वयं अपनी नयी जन्म-पत्रिका बनाने में सक्रिय हो गया। यह घटना प्रेरणा देती है कि ज्योतिषियों के चक्कर में आने की अपेक्षा मनुष्य को पुरुषार्थ कर अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करना चाहिए।

मोहनराजजी ग्राम्य-पोशाल में श्री जेठमलजी पुरोहित पिलोवणी से पढ़े। फिर वरकाणा विद्यालय में प्रवेश लिया। वरकाणा में 1934 में मारवाड़ के विद्यालयों की वाद विवाद प्रतियोगिता में मोहनराजजी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विषय था 'ग्राम्य जीवन का महत्त्व'। इन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। वरकाणा में सर्वश्री भागचन्दजी शुक्ल, नत्थीलालजी, हरिशंकरजी आदि गुरुजनों ने इस मेधावी छात्र के जीवन निर्माण में विशेष योगदान दिया।

निर्भीक स्वतन्त्रता सेनानी

स्वतन्त्रता आन्दोलन की चिनगारियां भारत के कोने-कोने में फैलने लगी। जोधपुर में सन् 1939 में लोक परिषद् की बैठक श्री सुमनेशजी जोशी की अध्यक्षता में गिरदी कोट प्रांगण में हुई। एक सज्जन के भाषण देने के बाद लाठी चार्ज हुआ। उसमें एक डण्डा मोहनराजजी पर भी पड़ा। यह स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रथम प्रसाद था। हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों ने इस कटुवे प्रसाद को मीठे मोदक के समान चखा है।

सन् 1940 की एक क्रान्तिकारी घटना उल्लेखनीय है। स्वामी कुमारानन्द के नेतृत्व में ब्यावर में जब तिरंगा झण्डा फहराया गया तो श्री मोहनराजजी ने निर्भय होकर गाया—

'Up up the National flag
Down down the Union Jack

इस पर इन्हें तथा श्री ऋषभराज जैन (जैतारण) को गिरफ्तार कर लिया गया था।

मोहनराजजी का विद्यार्थी-जीवन उस तूफान के समान था जो पीछे नहीं मुड़ता। न तो उन्हें अपने अध्ययन की चिन्ता थी और न कैरियर-संवार की। वह लालच व गुलामी के उस वट वृक्ष का उत्पाटन के लिए आतुर थे जिसने भारत माता को दुःखी और हीन बना दिया था। सन् 1942 में जब मोहनराजजी होल्कर कॉलेज इन्दौर में स्नातक कक्षा में पढ़ते थे, उस समय श्री तेजबहादुर सप्रू जो वायसराय की एक्जीक्यूटिव काउन्सिल के सदस्य थे, भाषण देने आये। कार्यक्रम का श्रीगणेश होने ही वाला था कि मोहनराज



जो तूफान की तरह मच पर पहुचे और 'वन्देमातरम्' के नारे से सभा को गूजा दिया। उस समय श्री मोहनराजजी छात्र यूनियन के अध्यक्ष भी थे। सभा म सप्रू साहब का 'युद्ध प्रयास' पर भाषण सुनने के लिये 200 अग्रेज अधिकारी भी आये थे। इस हगामे मे सप्रू साहब अपना भाषण नही द पाये। वे तुरन्त कार से चले गये। श्री सप्रू के जाने क बाद मोहनराजजी के नेतृत्व म विद्यार्थीगण हाल के बाहर निकले और उन्होने अनक अग्रेजो के गालो पर चपतें लगायी। इस हगामे म मोहनराजजी के विरुद्ध गिरफ्तारी वारन्ट निकला और कितना सुखद आश्चर्य कि होलकर कॉलिज के राष्ट्र-प्रेमी प्राचार्य श्री राजू और उनकी अग्रेज पत्नी ने स्वय के आवास मे 11 दिनो तक उन्हे अपने बच्चे के समान छिपाकर रखा। थोडे ही दिनो पश्चात् 'अग्रेजो भारत छोडो' आन्दोलन के पश्चात् विद्यार्थियो का नेतृत्व करते हुए इन्हे इन्दौर म गिरफ्तार कर लिया गया और सात विद्यार्थी नेताओ के साथ नगरपालिका की आवारा कुत्तो की फाटक के कटघरे मे ठूस दिया गया। किन्तु, तीसरे दिन ही रात मे जेल तोडकर य मुक्त हो गय तथा कस्बे म भूमिगत रहकर काय करने लगे।

जुझारू क्रान्तिकारी

श्री मोहनराजजी के विद्यार्थी जीवन की दो क्रान्तिकारी घटनाए उल्लेखनीय हैं। एक बार उनके ग्राम के ठाकुर श्री माधोसिह ने नये सिरे स लटाई व लाग-बाग वसूल करने का आदेश जारी किया और पूरी गोचर भूमि को खुदकाश्त म परिवर्तित कर दो कुए खुदवा दिये। गाव का पशुधन घरो म ही बन्द हो गया। तार स सूचना मिलते ही यह स्वतन्त्रता सेनानी कॉलिज छोडकर इन्दौर स गाव दवली पहुँचा। उसके नेतृत्व मे ग्रामवासियो ने ढोल नगाडे बजाते हुए गोचर भूमि म प्रवेश किया और जागीरदार के कुएँ को पुन गोचर भूमि म परिणत कर दिया। यह आन्दोलन आठ माह चला। दो बार गाव के कुवर सज्जनसिह अपने नौकरो के साथ बन्दूकें व तलवारें लेकर आये पर उनके वार निष्फल गये। एक बार तो भारतमाता का यह वीर सिपाही उनके सामने सीना तानकर खडा हो गया। वे निशाना चूक गये और बन्दूक भी नीचे गिर पडी। यह घटना उस स्वतन्त्रता प्रेमी युवक की याद दिलाती है, जिसने अपने जीवन को महत्त्व नही दिया, जिसका आत्मा की अमरता मे गहरा विश्वास है तथा जिसकी रग रग म अमर शहीद भगतसिह और नेताजी सुभाषचन्द बोस की जैसी देश भक्ति की ऊर्जा प्रवाहित थी। दूसरी घटना है ग्राम के रावले की कोठडी भवन पर जबरन कब्जा कर स्कूल खोलने की।

एक अन्य घटना है जब कोटडी ग्राम के ठाकुर की ज्यादतियो से तग आकर चालीस मेघवाल परिवार गाव छोडकर चल गये। मोहनराजजी व उनके साथी कार्यकर्ता कोटडी गाव पहुचे। आपने मेघवालो को सगठित किया। अपने घरो स निष्कासित मेघवालो के घरो म जागीरदार की भरी हुई घास को उन्होने जला दिया तथा लोगो को पुन उनके घरो म बसाया।

श्री मोहनराजजी ने बी० ए० एल० एल० बी० तक शिक्षा प्राप्त की तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद बाली मे आकर वकालात करने लगे। इसके साथ साथ वे सामन्ती एव नौकरशाही जुल्मो स त्रस्त जनता को मुक्त करने के लिये काग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप म निरन्तर प्रयत्नशील रहे। उनके स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् के जुझारू सस्मरण भी कम रोचक नही हैं।

सन् 1948 म देश आजादी की प्रथम वर्षगाठ मना रहा था, परन्तु बाली के पास बोया ग्राम के जागीरदार का वहा के पुरोहित परिवारो से बेगार लेने हेतु किये जाने वाला अत्याचार मानवता पर गहरा काला धब्बा था। एक बार रात्रि मे पुरोहित पुरुष वर्ग को चाकलाई के पास जगल म खेजडो के वृक्षो स बाध दिया गया और महिलाओ को रावले की पोल मे बिठा दिया गया। निर्भीक मोहनराजजी ने दृढता व हिम्मत के साथ जागीरदार के भारी आतक के बावजूद पुरोहित परिवारो को उसके चगुल स छुडाया ही नही—वरन् जाच करवाकर ठिकाना बोया को कोर्ट आफ वार्डस म जब्त करवा लिया।

जागीरदार चामुण्डेरी ने जागीर की जब्ती के भय से गावाद जगल ठेकेदारो को बच दिये। यह घटना सन् 1949 की है। गाव के जन प्रतिनिधियो ने मोहनराजजी को सूचना दी। वृक्षो के प्रेमी, पर्यावरण रक्षक मोहनराजजी सामान्य जनता की रोजी रोटी को बचाने हेतु चामुन्डेरी जनता के बीच पहुचे और आसपास के गावो की जनता को सगठित किया। जागीरी गुण्डा तत्त्वो व जनता के बीच सघर्ष चला। ग्रामवासियो ने वृक्ष न काटने व न कटने देने की प्रतिज्ञा की। फलस्वरूप गावाई वनो को बचा लिया गया। मोहनराजजी का यह महान् सघर्ष खेजडली की ऐतिहासिक गाथा एव वर्तमान चिपको आन्दोलन की याद दिलाता है।

चाणोद ठिकाने का कोसेलाव गाव के कायलाना शिकार-खाना काण्ड को भी भुलाया नही जा सकता। सन् 1948 की बात है। सामन्ती लोग अपने मनोरजन हेतु कोसेलाव गाव के पास ही पहाडी के चारो ओर ऊची ऊची काटो की बाड बनाकर जगली सुअरो और अन्य जगली जानवरो को रखते थे। इच्छानुसार चाणोद कुवर अपने अन्य ठाकुरो के साथ यहा आते, शिकार खेलते और मनोरजन करते परन्तु इस मनोरजन का मूल्य गरीब ग्राम वासियो को अपने पशुधन की बलि देकर चुकाना पडता था। *जगली जानवरो का पशुधन पर आक्रमण प्रतिदिन बढने लगा। यह*



दुःखद सूचना गोकुलभाई भट्ट व दवीच दर्जी, सागरमलजी व पाम पहुची। उनके आदेशानुसार गरीबों के सेवक मोहनजी तिरंगा हाथ में लेकर जय हिन्द व 'भारत माता की जयघोष के साथ गांव के लोगों सहित कायलाना (शिकारखाना) स्थल पर पहुंचे। उन्होंने वहां लगी बाड़ को ढाली जला दी तथा सदा-सदा के लिये शिकार स्थान को समाप्त कर दिया। इस कार्य में आजाद हिन्द फौज के पूर्व सिपाही श्री जोताराम राईका तथा श्री भाकमचन्द जैन का बहुत बड़ा सहयोग उन्हें मिला।

सफल सत्याग्रही

आजादी के अनेक वर्षों के बाद भी सामन्ती आतंक नष्ट नहीं हुआ था। मोहनराजजी की जन्म कुण्डली में शायद यह लिखा है कि वे सामन्ती नाग के उठते हुए फण को हमेशा कुचलने में विजय श्री प्राप्त करेंगे। इसी क्रम में दस में वाला गोचर का संघर्ष समय तथा सभी संघर्षों में अपना विशेष महत्व रखता है। बाली जोहड़ की सात हजार बीघा भूमि सदियों से गोचर भूमि रही है जिस पर मवेशी चरते आये हैं। विवाद का विषय उस समय बना जब भूतपूर्व जोधपुर दरबार ने इस भूमि को निजी सम्पत्ति दर्ज करवाकर अपने मर्जीदानों को बख्शीश कर मवेशी की स्वतंत्र चराई पर रोक लगा दी। यह बाली के पशुपालकों और समाज सेवकों के लिए चिन्ता का विषय बन गया। मोहनराजजी ने लोगों का नेतृत्व किया। संघर्ष प्रारम्भ हुआ 101 पुरुष व महिलाओं की भूख हड़ताल के साथ। मोहनराजजी ने सैकड़ों की संख्या में जनता के साथ पूरा मवेशी को लेकर जोहड़ में प्रवेश किया। राज्य की पुलिस ने भारी दखल किया परन्तु उसके प्रयास विफल रहे। फिर तो प्रतिदिन 500 से 1000 तक पुरुषों के साथ मवेशियों को जोहड़ में चराने का कार्यक्रम बनता गया। इससे जागीरदारों ने अपनी हार पर क्षिप्त होकर संगठित होना प्रारम्भ किया। जोधपुर के भू. पू. दरबार श्री गजसिंह के छोटे भाई श्री हुकमसिंह उर्फ टूटू बना के नेतृत्व में एक दल तलवारों-बन्दूकों व अस्त्र शस्त्र से सजधज कर मरने मारने के लिये उतारू हो गया। एक ओर हिंसक दल था जिसका लक्ष्य मोहनराजजी की हत्या कर अहिंसक पशुपालकों के अधिकारों के आन्दोलन को समाप्त करना था तो दूसरी ओर अपने अधिकारों की रक्षा करने वाला संगठित अहिंसक दल था।

आखिर हुआ वही कि सत्य, अहिंसा व आत्म-बल के सामने टूटू बना की नंगी तलवार उठी अवश्य परन्तु तलवार के हाथ को मोहनजी द्वारा पकड़ कर ललकारने मात्र से तलवार नीचे गिर पड़ी। राजा के 40-50 लोगों के मुंह लटक गये। बन्दूकों की नालें नीची हो गयी। उन सभी ने अपने घोड़े जायें मोड़ ली और लौट गये। यह दृश्य याद दिलाता है श्री मोहनलाल द्विवेदी की उन पंक्तियों की जो उन्होंने गांधीजी द्वारा अंग्रेजों से लड़ी जा रही अहिंसक लड़ाई के सम्बन्ध में लिखी थी।

है अस्त्र शस्त्र कुण्ठित लुण्ठित
सेनायें करतीं गृह प्रयाण,
रण भेरी तेरी बजती है
उठता है तेरा भव्य भाल।

उक्त घटना में जो साहस का परिचय युवक मोहनराजजी जैन ने बाली की गोचर भूमि (जोड़) में दिया इससे पूर्व केवल 20 वर्ष के युवक मोहनजी ने गांव देवली की गोचर भूमि में कुंवर सज्जन सिंह और 30-40 बन्दूकधारी लोगों के समक्ष इसी प्रकार दे चुके थे। उस समय कुंवर सज्जनसिंह (भूतपूर्व जिला प्रमुख, पाली) ने फौजदारी व दीवानी मामले भी बनाये थे जो असफल रहे।

हरिजन उद्धार की भावना से प्रेरित श्री मोहनराजजी 1950-51 में शास्त्री मंत्री मण्डल द्वारा घोषित 'हरिजन दिवस' कार्यक्रम पर श्री छोटमल सुराणा के साथ आगे आये। बाली हाई स्कूल के प्रांगण में आयोजन हुआ। मेहतरों द्वारा चाय बनाकर परोसी गई। अनेक झूठे धर्मानुयायी वहां से खिसक गये परन्तु श्री मोहनराजजी ने सहर्ष चाय-पान ही नहीं किया वरन् प्रत्येक से गले मिले। हरिजनों के घर आंगन की सफाई अपने हाथों से की। फलस्वरूप एक ओर उन्होंने हरिजनों के दिलों में स्थान प्राप्त किया तो दूसरी ओर उनके जन समाज ने उन्हें तिरस्कृत किया।

निष्ठाशील नेतृत्व

मोहनराजजी जिस किसी पद या क्षेत्र में रहे उन्होंने पूर्ण निष्ठा, लगन एवं उत्साह की भावनाओं को लेकर कार्य किया। सन् 1950 से 1980 की अवधि में उन्होंने पांच बार पाली जिला कांग्रेस के अध्यक्ष पद को सुशोभित करने के साथ-साथ संस्था को सुसंगठित किया। इनकी सेवा भावना व कांग्रेस दल के प्रति निष्ठा व ईमानदारी के कारण ही 1950 से अब तक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। केवल प्रदेश के ही नहीं वरन् 1954 से 1970 तक इन्हें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का सदस्य भी चुना गया।

सन् 1984-85 में सम्पूर्ण भारत में कांग्रेस शताब्दी के वर्ष भर आयोजन चले। इस हेतु अधिकांश मंत्री, एम. पी., एम. एल. ए. या पदेन कांग्रेस कमेटी के सदस्यों को ही नियुक्त किया गया। वहां अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा मोहनराजजी को पाली जिला कांग्रेस शताब्दी समारोह का संयोजक बनाना अपने आप सिद्ध करता है कि श्रेष्ठ कार्य की पूछ अवश्य होती है। आपने उक्त दायित्व को विभिन्न गोष्ठियों, प्रदर्शनियों, सम्मेलनों, प्रशिक्षण शिविरों, साहित्य प्रकाशनों आदि के आयोजन द्वारा बखूबी निभाया तथा जिले का नाम रोशन किया।

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्



पचायत समिति वाली के प्रधान के रूप म सन् *1960* स 1964 तक ग्राम विकास के कार्यों मे सलग्न रहकर आपने दूर गाव म विशेषकर आदिवासी क्षेत्रा म स्कूला की व पेयजल की सु यवस्था की। आदिवासी बालका के अध्ययन हतु स्कूल के साथ छात्रावासा की स्थापना की। रोजगार सुलभ करवाय।

वाली क्षेत्र की जनता न आपकी सवा भावना से प्रभावित होकर 1962 म 1967 एव 1972 म 1977 दो वार राजस्थान विधान सभा का सदस्य चुनकर भेजा। विधायक-काल म अपने व्यक्तिगत प्रयत्ना स अपन क्षेत्र के गावा का विद्युतीकरण करवाया खेता म विद्युत-पपा से सिंचाई सुलभ होन लगी। कच्ची सडकें पक्की व तारकोल की बनी। केन्द्र की सहायता से हरिश्चन्द्र माथुर उद्योग क्षेत्र फालना मे बनवाकर फालना का कायाकल्प कर दिया तो वाली नदी पर राज्य सरकार द्वारा विशाल पुल बनवाकर वर्षाकालीन यातायात को सुलभ करवाया। आज भी वाली नदी का पुल आपके काय की यशोगाथा गा रहा है।

कृषि एव भूमि-सुधार विधयका का पास करवान म बहुत बडी भूमिका निभान क साथ श्री जन न उन्ह लागू करवाने मे अपना बहुत बडा योगदान दिया। विधायक काल म इनके द्वारा किय गय रचनात्मक काय भी भुलाय नहा जा सकत। शराब बन्दी हतु सव प्रथम राजस्थान सरकार के विधानसभा पटल पर 77 काग्रेसी विधायका का हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन प्रस्तुत किया तथा पशु बलि निषध विधेयक को पास करवाने म भी प्रमुख भूमिका निभाइ।

श्री माहनराजजी ने अब तक अनेक सामाजिक सास्कृतिक शक्षणिक व साहित्यिक सस्थाओ के सस्थापक, सदस्य पदाधिकारी रहकर जनता की अटूट सवा की है तथा सतत् कर रह ह। इनम कुछ सस्थाए हैं —

मरुधर बालिका विद्यापीठ विद्यावाडी—खीमल शैक्षणिक सस्था स पाठक परिचित हाग। सस्था का नाम सम्पूर्ण राजस्थान म प्रसिद्ध है साथ ही देश की प्रसिद्ध शक्षणिक सस्थाओ म विद्या वाडी का अपना स्थान है। उक्त सस्था के सस्थापक सदस्या म श्री माहनराजजी एक हैं जिन्हान तन मन धन से सस्था की सवा की व अब भी कर रहे हैं।

श्री पार्श्वनाथ उम्मद जन कालज फालना श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा जैसी शक्षणिक सस्थाओ की काय-समिति क सदस्य एव मत्री रहकर आपन शिक्षा के प्रति अपनी गहरी रुचि का परिचय दिया। वरकाणा सस्था के तो 1940 स लगातार काय समिति के सदस्य एव गत 15 वर्षों स आप मत्री चुन जात रह हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि श्री जन की काय शली एव सवा भावना स लाग अत्यन्त प्रभावित हैं।

साहित्यिक एव सास्कृतिक गतिविधियो मे गहरी रुचि रखन वाल माहनजी ने एक अनूठी सस्था का बाली म जन्म दिया जा 'विद्योत्तमा' क नाम स राजस्थान म विख्यात है। विद्योत्तमा आज फल फूल रही है तो इसका मुख्य कारण यही है कि इस आप जस सस्थापक सदस्य एव अध्यक्ष न स्वाथ रहित दलगत मे दूर रहकर साहित्यिक एव सास्कृतिक भावना से सिंचित किया है।

सच्चे अर्थो म भारत क दरिद्रनारायणा क पुजारी मोहनजी न विकलागा एव असहाया की सवा करन का सकल्प लिया और विकलाग प्रशिक्षण केन्द्र फालना और भगवान श्री महावीर मडिकल रिलिफ सेन्टर के सस्थापक-सदस्य मानव कल्याण सवा सघ, वाली के सस्थापक-सदस्य एव मत्री सर्वोदय केन्द्र खीमल क मत्री एव राजस्थान प्रदश नशाबदी समिति की कायकारिणी के सदस्य हैं तथा प्रत्यक क्षेत्र म काय कर जन-जन के हृदया म बस गय है। इस समय आप राजस्थान ग्रामदान बोर्ड के अध्यक्ष पद पर आसीन है।

कृत्रिमता एव नतिक मूल्या के ह्रास के युग म श्री माहनराज जन जस निश्छल और निष्कपट कर्मयोगी का जीवन सचमुच प्रेरणा स्पद है। आज भी यह कर्मयोगी राष्ट्रपिता महात्मा गाधी क आदर्शों का अनुगमन करत हुए शराब बन्दी सर्वोदय राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की अलख जगात हुए भारत के दरिद्रनारायण की सवा मे सलग्न है। यह स्वतन्त्रता सनानी आज भी शक्षणिक और साहित्यिक काय कलापा स नयी पीढी का सस्कारित करते हुए मानवता की फुलवारी का सींच रहा है। विनोबाजी के सर्वोदय म सम्बद्ध और विद्योत्तमा जसी साहित्यिक सास्कृतिक सस्था क प्राणरूप म श्री माहनराजजी महाकवि जयशकर प्रसाद का इन पक्तिया को साथक कर रहे है —

यह नीड मनाहर कृतिया का यह विश्व कम रग-स्थल है।

—श्री बाऊलाल शर्मा



सतत सघर्षशील

श्री माधोलाल 'क्रातिकारी'

☐

'मार मुसीबत सभी सहेंगे—गुलाम बनकर नहीं रहेंगे" — इस नार क साथ जनारण दुश्मन क प्रत्यक गाव म ही नहीं,



जेल मे थे, बराबर सम्पर्क करते रहे और गुप्त सन्देश पहुचाने म बडी कारगर भूमिका निभाई। माधोलालजी की राष्ट्रीय गति विधिया से क्षेत्र के सारे जागीरदार परेशान थे और उनके विरुद्ध कई षड्यन्त्र रचे गये। निमाज ठिकाने द्वारा घाडो के लिए घास की बीसवा लाग' का विरोध करने के फलस्वरूप ठिकाने न इनको जेल म डाल दिया। इन्होने जेल मे 11 दिन का अनशन किया फिर शिकायतें होने पर तत्कालीन पुलिस अधीक्षक श्री मेहदी हुसैन द्वारा जाच हाने के पश्चात् ही इन्हे छोडा गया। लीलिया गाव की सभा म इन पर तलवार से हमला किया गया। घायलावस्था म साथी गोकुलरामजी चौधरी भवरजी कण्डारा तथा बलू दा व कालू क कायकर्ताओ न इन्हे जाधपुर पहुचाया जहा इनका उपचार हुआ।

आजादी के पश्चात् श्री माधोलालजी निमाज के सरपच चुन गये और क्षेत्र के विकास म जुट गये। माधोलालजी वृद्ध होत हुए आज भी बडे उत्साह स गावो मे रचनात्मक कार्यो मे लग हुए हैं और लागो को सगठित कर भ्रष्टाचार व अनैतिकता क विरुद्ध सतत सघर्ष कर रहे है। पर राष्ट्र की राजनीति म भ्रष्टाचार व सामाजिक मूल्यो मे गिरावट स ये बडे खिन्न है। अकसर लोक नायक श्री जयनारायण व्यास के शब्द—'काग्रेस रूपी साधुओ की जमात म कालबलिये पाखण्डी साधु घुस आये है। काग्रेस के घर को खोखला करने के लिए इस पार्टी म ठाकुर व पूजीपति आ गये है जिससे यह पार्टी पतन के कगार के ओर बढ रही है।' व दुहराते है।

आजकल श्री माधोलालजी अपने बेरे पर एक झोपडी बनाकर रहते हैं। स्वय खेती व गोपालन कर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं।

त्याग की प्रतिमूर्ति

श्रीमती महिमादेवी किंकर



स्वर्गीया महिमादेवी किंकर पाली जिले के सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सनानी एव समाज-सुधारक श्री हरिभाई किंकर की धर्मपत्नी थी और युवावस्था स ही क्रातिकारी विचारो स ओत प्रोत थी। स्वर्गीय हरिभाई किंकर मारवाड के उन अग्रणी स्वतन्त्रता सेनानियो म से थे जिन्हाने सामाजिक और राजनैतिक क्राति हेतु महात्मा गाधी के अहिंसक एव रचनात्मक आन्दोलन मे सम्मिलित होकर मारवाड मे जन जागृति की अलख जगाई थी।

यह विधि की विडम्बना ही थी कि श्रीमती महिमादेवी बाल विधवा हो गई, लेकिन उन्हे क्रातिकारी विचारो के अनुकूल मिल गये श्री हरिभाई किंकर जिन्होने खोखली सामाजिक मर्यादाओ व प्रतिबधो की परवाह नही करते हुए महिमादेवी से विधवा विवाह कर विधवा विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया। अब पति पत्नी की इस सत्याग्रही जोडी न गाव गाव जाकर स्कूलो के छात्रो म चरित्र निर्माण की शिक्षाप्रद कहानियाँ कहकर राष्ट्र प्रेम के गीत गाकर एक नया वातावरण बनाने की शुरुआत की। श्रीमती महिमादेवी स्वय बडे सुरीले स्वर म गाती थी और श्री हरिभाइ तो प्रसिद्ध गायक व कवि थे ही। इनके प्रचार ने सोजत व ब्यावर क्षेत्र के गावो म धूम मचादी।

श्रीमती महिमादेवी न सोजत रोड बगडी मारोत पाली आदि अनेक स्थानो पर सभाए करके मारवाड लोक परिषद् की शाखाए स्थापित की तथा महिलाओ का सगठित कर उन्हे सत्याग्रह व आन्दोलन के लिए तैयार किया। बगडी तथा चण्डावल म आन्दोलन के दौरान हुए लाठी चार्ज म लोक परिषद् के अनेक नेताओ के साथ, जिनमे इनके पति श्री हरिभाई किंकर भी थ इन्हे भी मार पडी और इलाज के लिए अस्पताल मे रहना पडा।

मारवाड लोक परिषद् द्वारा चलाये गये उत्तरदायी शासन आन्दोलन के सिलसिले म महिलाओ के एक जत्थे के साथ जोधपुर मे महिमादेवी गिरफ्तार की गई और उन्हे जेल की यातनाए सहनी पडी। पति पत्नी दोनो ही इतने त्यागी, निस्पृह वृत्ति के तथा राष्ट्र क प्रति समर्पित कार्यकर्त्ता थे। इन्होने जिन्दगी म पैसे को कभी महत्त्व नही दिया और वृद्धावस्था के लिए कुछ भी जोड कर नही रखा फलस्वरूप इन्हे बुढापे म बडी कठिन आर्थिक परिस्थितियो म स गुजरना पडा। श्रीमती महिमा देवी अभावो स ग्रस्त जीवन-यापन करते हुये स्वर्ग सिधारी और श्री हरिभाई किंकर को तो स्वतन्त्र भारत म आत्मदाह करना पडा। मारवाड के विशेषकर पाली जिले के स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास म स्वर्गीया श्रीमती महिमादेवी का नाम अविस्मरणीय रहेगा।

वतन हमेशा रहे शादकाम और आजाद,
हमारा क्या है, हम रहे न रहे।



हर व्यक्ति के मन में प्रश्न पैदा होता है कि भाई माधोलालजी ने केवल 17 वर्ष की अल्पायु में ही जागीरी जुल्मों से जूझना शुरू कर दिया था। पाली जिले की जैतारण तहसील के निमाज ग्राम के एक सुनार परिवार में आपका जन्म सन् 1917 में हुआ। उस जमाने में शिक्षा का कोई विशेष प्रबन्ध गांवों में नहीं था, अतः मामूली पढ़ना लिखना सीख कर सन्तोष करना पड़ा। उन दिनों ब्यावर राष्ट्रीय जागृति व आन्दोलनात्मक गतिविधियों का केन्द्र था। माधोलालजी ब्यावर के श्री अमर माइमन्द जी तथा चण्डावल के श्री गणीनाथ ब्रह्मचारी के सम्पर्क में आये और इतने में महात्मा गांधी द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रीय आन्दोलन में हो गये। फिर तो गांव में जागृति का संचार करने लगे। सन् 1934 में ही श्री शर्मा त्यागी ब्यावर में कांग्रेस के सदस्य बन गये और अपने गांव निमाज को केन्द्र बनाकर जागीरी जुल्मों व शोषण से ग्रामीण जनता को मुक्त कराने के अभियान में लग गये।

उन दिनों गांवों में जागीरदारों के विरुद्ध प्रचार कर लोगों को संघर्ष के लिए तैयार करना आसान नहीं था। बहुत से लोग यह मानने को ही तैयार नहीं होते थे कि जागीरी कभी समाप्त होगी और लाग-बाग, बेठ-बेगार तथा लाटा-कूंता से मुक्ति मिलेगी। और दूसरे ठाकुर लोग अपने कारिन्दों से राजनैतिक कार्यकर्ताओं के साथ मारपीट कराने से नहीं चूकते थे। मीटिंग करना तो दूर रहा विरोध की थोड़ी सी गन्ध पड़ते ही लाठियों से पिटाई, झूठी मुकदमबाजी, थानों के चालानों में सजा, मुंह काला करके गधे बिठाये रखना, मकान व खेत से बेदखल कर देना आम बात थी। माधोलालजी के जीवन में ये घटनाएं एक बार नहीं अनेक बार हुईं पर यह सचमुच का क्रान्तिकारी इन मुसीबतों में कहां हिम्मत हारने वाला था। इतिहास साक्षी है हर मुसीबत ने इनके हौसले बुलन्द किये हैं। सन् 1937 में जब पण्डित जवाहरलाल नेहरू और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ब्यावर आये तो बड़ी संख्या में साथी कार्यकर्ताओं को लेकर ये वहां पहुंचे। इसी दौरान निमाज कांग्रेस की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन गया था और सेठ सालमचन्दजी राका, रिखबचन्दजी राका, अमरचन्दजी बाहेती आदि कई कार्यकर्ता आगे आये। सन् 1940 में मारवाड़ लोक-परिषद् के प्रमुख नेता श्री रणछोड़दास गट्टानी (रिटायर्ड जस्टिस राजस्थान हाई कोर्ट) ने निमाज में लोक-परिषद् की शाखा खोलकर उस क्षेत्र में राजनैतिक गतिविधियों को और तेज कर दिया। लोक-परिषद् की शाखा की स्थापना के उपलक्ष में निमाज में रात्रि को आम-सभा का आयोजन किया गया। जागीरी गुण्डों ने सभा को भंग करने के लिए पत्थरबाजी की, लाठी प्रहार किया, हुल्लड़ हंगामा कराया पर सभा रात्रि को 11 बजे तक चलती रही। आखिर में ठिकाने के कारिन्दे श्री रणछोड़दास गट्टानी पर हमला करने के लिए बन्दूक लेकर आ गये, लेकिन इसके पूर्व कि बन्दूक चले, लोक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने हमलावर के हाथों से बन्दूक गिरा दी और गट्टानीजी बच गये। इस घटना ने गांवों में दूना जोश भर दिया और जैतारण के श्री गणेशमलजी मकराणा, पुखराजजी पटवा, शिवकरणजी सुनार, धूलचन्दजी माली, श्रीचन्दजी सेठ, बगड़ी के मोहनलालजी छलाणी, हीरालालजी कटारा, मातुररामजी राठ, हीरालालजी सुनार, रामकरणजी खीमावत, कन्हैयालालजी व्यास, रूपलालजी पालड़, निमाज के श्री पुखराज जैन, श्री मदनलाल पांडी व श्री जटाराम चौधरी, बाबू के श्री बालाबक्स, श्री गणपतलाल जैन, कुम्भावास के श्री चन्दनमलजी भाटिया, सिरियारी के श्री भेंवरलालजी बाहेती, चण्डावल के श्री चौथमलजी जैन, भूरालालजी सुनार (उण्डवाल) के श्री भंवरलाल बामासी, मुन्नालाल आसा गिरी के अमरचन्दजी मकर, लादूरामजी जैन, तारामन्दजी सेन, चानणा के श्री मदनलाल लम्बरिया, सिरोटिया के श्री मोहनलाल शर्मा (कटम्बरी), पुखराजजी जैन, पन्नालालजी जैन, पदमसिंहजी राठौड़, चूनीलालजी चौधरी, रायपुर के श्री मन्नूदेवगजी, पूनमचन्दजी नाहटा, सालमचन्दजी बाहेती, रामस्वरूपजी वैद्य, गणपतदेवजी, हरलिया के श्री रामाराम चौधरी आगे आये और लोक परिषद् के नेतृत्व में गांवों में जागीरी जुल्मों के विरुद्ध आन्दोलन में जुट गये तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग देने लगे।

इस तरह क्षेत्र में जागृति की एक नई लहर उठी। 1940 की 4 अप्रेल को जोधपुर में लोक परिषद् के सत्याग्रह में शामिल होने के लिए जाते हुए निमाज में ही माधोलालजी गिरफ्तार कर लिए गए। फिर जैतारण, सोजत तथा जोधपुर सेन्ट्रल जेल में बंद रखे गये। जेल में भी भयंकर यातनाएं दी जाती थीं। जेल से छूटते ही ब्यावर को केन्द्र बनाकर इन्होंने पुनः ग्रामों में प्रचार कार्य शुरू कर दिया। इसमें इन्हें गणेशमलजी राठौड़, मीठालालजी राठौड़ (बगड़ी) मन्नालालजी जोशी (सोजत सिटी) व रतनलालजी राका (निमाज) का भरपूर सहयोग मिला। अब अगस्त, 1942 का करो या मरो तथा अंग्रेजो भारत छोड़ो का महा संघर्ष प्रारम्भ हो गया था। माधोलालजी को 18 अगस्त 1942 को गिरफ्तार कर सेन्ट्रल जेल जोधपुर में भेज दिया गया, जहां से वे जनवरी 1943 में रिहा किये गये। तत्पश्चात् ये मारवाड़ लोक परिषद् के कार्यालय में तथा ब्यावर कांग्रेस के कार्यालय में काम करते रहे।

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास, श्री मथुरादास माथुर व श्री रणछोड़दास गट्टानी से जो उन दिनों जोधपुर सेन्ट्रल



जेल मे थे, बराबर सम्पर्क करते रहे और गुप्त संदेश पहुचाने में बडी कारगर भूमिका निभाई। माधोलालजी की राष्ट्रीय गतिविधियों से क्षेत्र के सारे जागीरदार परेशान थे और उनके विरुद्ध कई षडयन्त्र रचे गये। निमाज ठिकाने द्वारा घोडो के लिए घास की बीसवा भाग का विरोध करने के फलस्वरूप ठिकाने ने इनको जेल में डाल दिया। इन्होने जेल मे 11 दिन का अनशन किया फिर शिकायतें होने पर तत्कालीन पुलिस अधीक्षक श्री मेहदी हुसैन द्वारा जाच होने के पश्चात् ही इन्हें छोडा गया। लीलिया गाव की सभा में इन पर तलवार से हमला किया गया। घायलावस्था में साथी गोकुलरामजी चौधरी, भवरजी कण्डारा तथा बलूदा व कालू के कार्यकर्ताओं ने इन्हें जोधपुर पहुंचाया जहा इनका उपचार हुआ।

आजादी के पश्चात् श्री माधोलालजी निमाज के सरपंच चुने गये और क्षेत्र के विकास में जुट गये। माधोलालजी वृद्ध होते हुए आज भी बडे उत्साह से गावो मे रचनात्मक कार्यों मे लगे हुए हैं और लोगो को संगठित कर भ्रष्टाचार व अनैतिकता के विरुद्ध सतत संघर्ष कर रहे हैं। पर राष्ट्र की राजनीति मे भ्रष्टाचार व सामाजिक मूल्यो में गिरावट से ये बडे खिन्न हैं। अकसर लोकनायक श्री जयनारायण व्यास के शब्द—'कांग्रेस रूपी साधुओं की जमात मे कालबेलिये पाखण्डी साधु घुस आये हैं। कांग्रेस के घर को खोखला करने के लिए इस पार्टी में ठाकुर व पूंजीपति आ गये हैं जिससे यह पार्टी पतन के कगार के ओर बढ रही है।' वे दुहराते है।

आजकल श्री माधोलालजी अपने बेरे पर एक झोपडी बनाकर रहते हैं। स्वय खेती व गोपालन कर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं।

त्याग की प्रतिमूर्ति

श्रीमती महिमादेवी किंकर



स्वर्गीया महिमादेवी किंकर पाली जिले के सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एवं समाज-सुधारक श्री हरिभाई किंकर की धर्मपत्नी थी और युवावस्था से ही क्रांतिकारी विचारो से ओतप्रोत थी। स्वर्गीय हरिभाई किंकर मारवाड के उन अग्रणी स्वतन्त्रता सेनानियो में से थे जिन्होने सामाजिक और राजनैतिक क्रांति हेतु महात्मा गाधी के अहिंसक एव रचनात्मक आन्दोलन मे सम्मिलित होकर मारवाड में जन जागृति की अलख जगाई थी।

यह विधि की विडम्बना ही थी कि श्रीमती महिमादेवी बाल विधवा हो गई, लेकिन उन्हें क्रांतिकारी विचारो के अनुकूल मिल गये श्री हरिभाई किंकर जिन्होने खोखली सामाजिक मर्यादाओं व प्रतिबंधो की परवाह नही करते हुए महिमादेवी से विधवा विवाह कर विधवा विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया। अब पति पत्नी की इस सत्याग्रही जोडी ने गाव गाव जाकर स्कूलो के छात्रो में चरित्र निर्माण की, शिक्षाप्रद कहानिया कहकर राष्ट्र प्रेम के गीत गाकर एक नया वातावरण बनाने की शुरूआत की। श्रीमती महिमादेवी स्वयं बडे सुरीले स्वर में गाती थी और श्री हरिभाई तो प्रसिद्ध गायक व कवि थे ही। इनके प्रचार ने सोजत व ब्यावर क्षेत्र के गावो में धूम मचादी।

श्रीमती महिमादेवी ने सोजत रोड, बगडी सोजत पाली आदि अनेक स्थानो पर सभाएं करके मारवाड लोक-परिषद् की शाखाएं स्थापित की तथा महिलाओं को संगठित कर उन्हें सत्याग्रह व आन्दोलन के लिए तैयार किया। बगडी तथा चण्डावल मे आन्दोलन के दौरान हुए लाठी चार्ज में लोक परिषद् के अनेक नेताओं के साथ जिनमे इनके पति श्री हरिभाई किंकर भी थे इन्हें भी मार पडी और इलाज के लिए अस्पताल मे रहना पडा।

मारवाड लोक परिषद् द्वारा चलाये गये उत्तरदायी शासन आंदोलन के सिलसिले मे महिलाओं के एक जत्थे के साथ जोधपुर में महिमादेवी गिरफ्तार की गई और उन्हें जेल की यातनाएं सहनी पडी। पति पत्नी दोनो ही इतने त्यागी निस्पृह वृत्ति के तथा राष्ट्र के प्रति समर्पित कार्यकर्ता थे। इन्होंने जिन्दगी में पैसे को कभी महत्त्व नही दिया और वृद्धावस्था के लिए कुछ भी जोड कर नही रखा फलस्वरूप इन्हें बुढापे में बडी कठिन आर्थिक परिस्थितियो में से गुजरना पडा। श्रीमती महिमा देवी अभावो से ग्रस्त जीवन यापन करते हुये स्वर्ग सिधारी और श्री हरिभाई किंकर को तो स्वतंत्र भारत में आत्मदाह करना पडा। मारवाड के विशेषकर पाली जिले के, स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में स्वर्गीया श्रीमती महिमादेवी का नाम अविस्मरणीय रहेगा।

वतन हमेशा रहे शादकाम और आजाद,
हमारा क्या है, हम रहे न रहे।



जीवत कांग्रेस कार्यालय

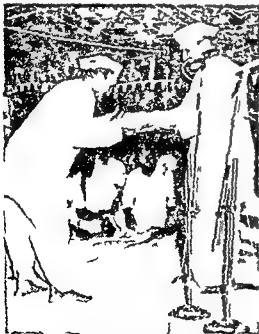
श्री रामप्रसाद गांधी

श्री रामप्रसाद गांधी उन विरले स्वातन्त्र्य योद्धाओं में से हैं जिनका पूरा जीवन संघर्षमय रहा है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध राजशाही की निरंकुशता के विरुद्ध और सामन्ती शोषण के विरुद्ध अनवरत युद्ध करके पाली जिले के गांव गांव में विजयी तिरंगा प्यारा फहराने वाले श्री गांधी से छोटे बड़े सब परिचित हैं। सारे भौतिक सुख साधनों का तिलांजलि देकर स्वयं सादगी और गरीबी का वरण कर आज भी समाज के गरीब तबकों की गरीबी हटाने के अभियान के पाली जिले में अग्रणी नेता हैं और सर्वोदय शराबबन्दी आदिवासी कल्याणकार्य सरीखे रचनात्मक कार्यों के प्रचारार्थ रात दिन एक करते हुए ग्रामों में घूमते हुए इन्हें देखा जा सकता है। कोई भी राष्ट्रीय महत्व का समारोह सभा सेमिनार शिविर सत्याग्रह अथवा आन्दोलन ऐसा नहीं होता जिसमें इनकी उपस्थिति नहीं होती।

श्री रामप्रसाद जी गांधी का जन्म सन् 1913 में 26 नवम्बर को श्री मुरलीधर विजयवर्गीय (बीकानेर) के घर हुआ और स्थानीय पाठशाला में ही शिक्षा दीक्षा हुई। लेकिन बाल्यकाल से ही इनकी पढ़ने में विशेष रुचि थी और अखबार और पुस्तक पढ़ते रहते थे। आप पाली में गोद आये। पाली में इनका इत्र का बड़ा व्यापार तथा कारखाना था और दूर दूर तक माल जाता था। आप बड़ी चल व अचल सम्पत्ति के मालिक थे पर इन्हें तो राष्ट्र प्रेम और आजादी प्राप्त करने की लौ लग गई थी। इनका राजनैतिक जीवन सिन्ध हैदराबाद (अब पाकिस्तान में) में सन् 1930 में ही शुरू हो गया और राष्ट्रीय स्तर के तत्कालीन नेता श्री चोइथराम गिडवानी कुन्दनमल मलकानी मोहम्मद सद्दीक मदनलाल त्रिपाठी से उन्हें प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त कर कांग्रेस के सदस्य बनकर कार्य शुरू कर दिया और लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया। उनका सम्पर्क मारवाड़ राज्य में कार्य कर रहे श्री जयनारायण व्यास से हुआ और सन् 37 38 में मारवाड़ के गांवों में इनका सक्रिय रूप में प्रवेश हुआ और जनजागृति का कार्य प्रारम्भ कर दिया। सन् 38 में लुधियाना (पंजाब) में देशी रियासतों के संगठन हेतु आयोजित एक वृहद् सम्मेलन में इन्होंने भाग लिया। मारवाड़ राज्य में लोक परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय चेतना का कार्य कर रही मारवाड़ हितकारिणी सभा और यूथ लीग के माध्यम से जनता में काम किया। मारवाड़ लोक परिषद् के प्रमुख कार्यकर्ता श्री रणछोड़दास गट्टाणी श्री मथुरादास माथुर श्री छगनराज चौपासनीवाला श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा सुमनेशजी जोशी श्री भंवरलालजी सर्राफ आदि का सहयोग और मार्ग दर्शन इन्हें मिला और पाली जिले में जनजागृति के अग्रणी नेता बनकर इन्होंने त्याग व देशभक्ति का एक उदाहरण पेश किया।

28 मार्च 1942 को पाली जिले के ग्राम चण्डावल में मारवाड़ लोक परिषद् के तत्वावधान में उत्तरदायी शासन दिवस मनाया गया और अनेक कार्यकर्ताओं के साथ आपने मारवाड़ में उत्तरदायी शासन स्थापित करने की प्रतिज्ञा ली। इस सभा में चण्डावल ठिकाने के सामन्तों तत्वों ने लाठी प्रहार किया जिसमें सर्व श्री मीठालालजी काका मांगीलालजी आलीशान माधोलालजी शान्तिकारी और इनके गम्भीर चोटें आई और अनेकों लोग घायल हुए। मारवाड़ में अप्रेल 1942 में सर्वत्र 144 धारा लागू कर दी गई और सभा सम्मेलनों पर पाबन्दी लगा दी गई लेकिन विरोध बढ़ता गया। स्थान स्थान पर पाली सूरदास सोजत चण्डावल बगड़ी सादड़ी आदि में सभा-सम्मेलन हुए।

मई 1942 तक मारवाड़ में बड़े पैमाने पर आन्दोलन छिड़ गया और सभी नेता गिरफ्तार हो गये। मारवाड़ लोक-परिषद् कार्यालय का संचालन ब्यावर से तुलसीदासजी राठी के साथ प्रारम्भ हुआ। इधर पाली जिले में श्री फूलचन्दजी बाफना के नेतृत्व में पाली सूरदास सुमेरपुर मारवा साण्डेराव बाली गुड़ाला सादड़ी रानी तखतगढ़ आदि स्थानों का दौरा कर जन जागृति का कार्य आप



भारत के उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा से सम्मान पत्र प्राप्त करते हुये।



करते रहे । इसी दौरान श्री रामप्रसाद जी गाधी को मारवाड की पुलिस ने गिरफ्तार कर 18 दिन तक हवालात मे रखा । इसी काल मे बगडी (सोजत रोड) निवासी मीठालालजी राठौड को गिरफ्तार कर काल कोठडी मे रखकर भयकर यातनाए दी गई, फलस्वरूप जेल से छूटने के कुछ ही समय बाद उनका स्वर्गवास हो गया । सन् 1944 मे मारवाड लोक परिषद् के अधिकतर नेता जेलो से रिहा किये गये और पाली मे एक वृहद् सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमे आप ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और योगदान किया । सन् 1945 के सितम्बर माह मे एक और सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमे आपने उल्लेखनीय योगदान किया । फिर 23 सितम्बर, 1945 को युवाहृदय सम्राट प. जवाहरलाल नेहरू, लोकनायक जयनारायण व्यास, शेरे-कश्मीर शेख अब्दुल्ला के पाली आगमन पर श्री गाधी की पहल पर रु० 5100/– की थैली काग्रेस के लिये भेंट की गई ।

उन्होने पाली परगना लोक परिषद् के अध्यक्ष की हैसियत से सगठन को सबल बनाने हेतु उस समय भारी परिश्रम किया और किसानो की बेठ-बेगार, लाग-बाग, लाटा-कूता तथा शोषण से मुक्ति दिलाने हेतु पाली जिले के सैकडो ग्रामो मे सभा-सम्मेलन आदि आयोजित किये । कई स्थानो पर सामन्ती तत्वो द्वारा प्राणघातक हमले किये गये पर आप अपने ध्येय पर अडिग रहे । मारवाड लोक परिषद् का एक वृहद अधिवेशन खोड ग्राम मे आयोजित हुआ जिसमे मारवाड के दरबार को उत्तरदायी शासन देने की चेतावनी दी गयी ।

श्री गाधी बुनियादी तौर पर रचानात्मक कार्यकर्ता हैं । आजादी के पश्चात् हुए राष्ट्र के बटवारे के फलस्वरूप विकराल शरणार्थी समस्या के दौरान आपने सेवा कार्य किया । हरिजन सेवा नशामुक्ति प्रौढ शिक्षा कताई बुनाई प्रशिक्षण कार्य आदिवासी कल्याण कार्य इनकी प्रिय प्रवृत्तिया रही हैं और आज भी इन्ही कार्यों मे गाधीजी का अधिकाश समय जाता है ।

श्री गाधी का नाम पाली जिले के स्वतन्त्रता सग्राम की एतिहासिक कहानी मे स्वर्णाक्षरो मे लिखा जायगा । इनकी लगन, कर्त्तव्य-परायणता राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना और त्याग-तपस्या हमेशा के लिए याद की जाती रहेगी ।

—मोहनराज जैन

अफसोस क्यो नहीं है, वह रूह अब वतन मे,
जिसने हिला दिया था, दुनिया को एक पल मे ।



पत्रकार सेनानी

श्री धनराज वर्मा

श्री धनराजजी वर्मा का जन्म 8 अक्टूबर सन 1916 को महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले के एक छोटे से ग्राम मे हुआ । आपका परिवार आर्यसमाज का कट्टर समर्थक रहा था इसलिए आप बचपन से ही जाति भेद और छुआछूत के विचारो से रहित थे । एक उदार मानव के सस्कार प्रारम्भ से ही आपको अपने परिवार से प्राप्त होते रहे । जब आपने अपनी प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर माध्यमिक स्कूल की पाचवी कक्षा मे प्रवेश लिया तब एक महत्वपूर्ण घटना घटी । महात्मा गाधी मौ शोकेतअली और मौ मोहम्मदअली के भाषण सुनने के लिए वर्माजी अपने दो सहपाठियो के साथ मलकापुर गये । इन नेताओ के भाषणो का प्रभाव आप पर इतना अधिक हुआ कि आपने उसी समय देश की आजादी के लिए कार्य करने की प्रतिज्ञा कर ली ।

आगे चलकर आपने अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी करके अकोला के टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल मे प्रवेश ले लिया । अकोला मे तिलक महाविद्यालय के प्राचार्य श्री बुढेजी के सम्पर्क मे आकर वर्माजी क्रातिकारी विचारो के कट्टर समर्थक हो गये और प्रतिदिन रात्रि मे ट्रेनिंग स्कूल के तीन साथियो के साथ उनसे मिलने लगे । उस समय अकोला विदर्भ मे था तथा उसे सी पी एण्ड बरार नाम से जाना जाता था । उस समय उसका गवर्नर बटलर नामक एक अग्रेज था । वर्माजी और उनके साथियो ने अग्रेज बटलर की हत्या करने की एक गुप्त योजना बनायी परन्तु उनकी यह योजना अचानक रद्द करनी पडी । उधर इनकी गतिविधियो की भनक पुलिस को पड गई, जिसके कारण इन पर पुलिस की कडी निगरानी रहने लगी ।

अकोला मे आपका सम्पर्क लोकनायक बापूजी अणे श्री ब्रजलालजी बियाणी डा मावरकर आपडे सेनापति अवारी आदि नेताओ से लगातार बना रहा और उनके विचारो से वे प्रेरणा लेते रहे । आप समय समय पर गावो मे जाकर खादी-ग्रामोद्योग और शराबबन्दी का प्रचार भी किया करते थे ।



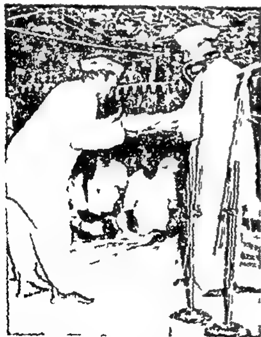
जीवत कांग्रेस कार्यालय

श्री रामप्रसाद गांधी



श्री रामप्रसाद गांधी उन विरले स्वातंत्र्य योद्धाओं में से हैं जिनका पूरा जीवन संघर्षमय रहा है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध राजाशाही की निरंकुशता के विरुद्ध और सामंती शोषण के विरुद्ध अनवरत युद्ध करके पाली जिले के गांव गांव में विजयी विश्व तिरंगा प्यारा फहराने वाले श्री गांधी से छोटे बड़े सब परिचित हैं। सारे भौतिक सुख साधनों को तिलांजलि देकर स्वयं सादगी और गरीबी का वरण कर आज भी समाज के गरीब तबके की गरीबी हटाने के अभियान के पाली जिले में अग्रणी नेता हैं और चर्खा, खादी, शराबबन्दी आदिवासी कल्याणकार्य सरीखे रचनात्मक कार्यों के प्रचारार्थ रात दिन एक करते हुए ग्रामों में घूमते हुए इन्हें देखा जा सकता है। कोई भी राष्ट्रीय महत्व का समारोह सभा सेमिनार शिविर सत्याग्रह अथवा आन्दोलन ऐसा नहीं होता जिसमें इनकी उपस्थिति नहीं होती।

श्री रामप्रसाद जी गांधी का जन्म सन् 1913 में 26 नवम्बर को श्री मुरलीधर विजयवर्गीय (बीकानेर) के घर हुआ और स्थानीय पाठशाला में ही शिक्षा दीक्षा हुई। लेकिन बाल्यकाल से ही इनकी पढ़ने में विशेष रुचि थी और अखबार और पुस्तकें पढ़ते रहते



भारत के उपराष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा से सम्मान पत्र प्राप्त करते हुये।

थे। आप पाली में गोद आये। पाली में इनका इत्र का बड़ा व्यापार तथा कारखाना था और दूर-दूर तक माल जाता था। काफी बड़ी चल व अचल सम्पति के मालिक थे पर इन्हें तो राष्ट्र प्रेम और आजादी प्राप्त करने की लौ लग गई थी। इनका राजनैतिक जीवन सिंध हैदराबाद (अब पाकिस्तान में) में सन् 1930 में ही शुरू हो गया और राष्ट्रीय स्तर के तत्कालीन नेता श्री चोइथराम गिडवानी, दुर्गादास मलकानी मोहम्मद सद्दीक, मन्नलाल त्रिपाठी, पं. उदयभान से प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त कर कांग्रेस के सदस्य बनकर काम शुरू कर दिया और लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया। उनका सम्पर्क मारवाड़ राज्य में काम कर रहे श्री जयनारायण व्यास से हुआ और सन् 37 38 में मारवाड़ के गांवों में इनका सक्रिय रूप में प्रवेश हुआ और जनजागृति का काम प्रारम्भ कर दिया। सन्-38 में लुधियाना (पंजाब) में देशी रियासतों के संगठन हेतु आयोजित एक वृहद् सम्मेलन में इन्होंने भाग लिया। मारवाड़ राज्य में लोक-परिषद के पूर्व राष्ट्रीय चेतना का काम कर रही मारवाड़ हितकारिणी सभा और यूथ लीग के माध्यम से जनता में काम किया। मारवाड़ लोक परिषद के प्रमुख कार्यकर्ता श्री रणछोड़दास गट्टाणी, श्री मथुरादास माथुर श्री छगनराज चौपासनीवाले श्री अचलेश्वर प्रसाद शर्मा, सुमनेशजी जोशी, श्री भंवरलालजी सर्राफ आदि का सहयोग और मार्गदर्शन इन्हें मिला और पाली जिले में जनजागृति के अग्रणी नेता बनकर इन्होंने त्याग व देशभक्ति का एक उदाहरण पेश किया।

28 मार्च 1942 को पाली जिले के ग्राम चण्डावल में मारवाड़ लोक परिषद के तत्वावधान में उत्तरदायी शासन दिवस मनाया गया और अनेक कार्यकर्ताओं के साथ आपने मारवाड़ में उत्तरदायी शासन स्थापित करने की प्रतिज्ञा ली। इस सभा में चण्डावल ठिकाने के सामंती तत्वों ने लाठी प्रहार किया जिसमें सर्वश्री मीठालालजी काका भागीलालजी 'आलीशान' माधोलालजी क्रांतिकारी और इनके गम्भीर चोटें आईं और सैकड़ों लोग घायल हुए। मारवाड़ में अप्रेल 1942 में सर्वत्र 144 धारा लागू कर दी गई और सभा सम्मेलनों पर पाबंदी लगा दी गई लेकिन विरोध बढ़ता गया। स्थान-स्थान पर पाली गूंदोज सोजत चण्डावल, बगड़ी सादड़ी आदि में सभा-सम्मेलन हुए।

मई 1942 तक मारवाड़ में बड़े पैमाने पर आन्दोलन छिड़ गया और सभी नेता गिरफ्तार हो गये। मारवाड़ लोक परिषद् कार्यालय का संचालन ब्यावर से तुलसीदासजी राठी के साथ प्रारम्भ हुआ। इधर पाली जिले में श्री फूलचन्दजी बाफना के नेतृत्व में पाली, गूंदोज, सुमेरपुर खरवा, साण्डेराव, बाली, खुडाला सादड़ी रानी तखतगढ़ आदि स्थानों का दौरा कर जन जागृति का काम आप



करते रहे। इसी दौरान श्री रामप्रसाद जी गाधी को मारवाड की पुलिस ने गिरफ्तार कर 18 दिन तक हवालात म रखा। इसी काल म बगडी (सोजत रोड) निवासी मीठालालजी कोठेड को गिरफ्तार कर काल कोठडी म रखकर भयकर यातनाए दी गइ फलस्वरूप जेल से छूटने के कुछ ही समय बाद उनका स्वगवास हो गया। सन् 1944 म मारवाड लोक-परिषद् के अधिकतर नेता जेलो स रिहा किये गये और पाली मे एक वहद् सम्मेलन आयोजित हुआ जिसम आप ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और योगदान दिया। सन् 1945 के सितम्बर माह म एक और सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसम आपने उल्लेखनीय योगदान दिया। फिर 23 सितम्बर, 1945 को युवाहृदय-सम्राट प जवाहरलाल नेहरू लोकनायक जयनारायण व्यास शेरे-कश्मीर शेख अब्दुल्ला के पाली आगमन पर श्री गाधी की पहल पर रु० 5100/– की थैली काग्रेस के लिये भेंट की गई।

उन्होने पाली परगना लोक-परिषद् के अध्यक्ष की हैसियत स सगठन को सबल बनाने हेतु उस समय भारी परिश्रम किया और किसानो की बेठ-बेगार, लाग-बाग लाटा-कूता तथा शोपण स मुक्ति दिलाने हेतु पाली जिले के सकडो ग्रामो म सभा-सम्मेलन आदि आयोजित किये। कई स्थानो पर सामन्ती तत्वो द्वारा प्राणघातक हमले किय गये पर आप अपने ध्येय पर अडिग रहे। मारवाड लोक परिषद् का एक वहद अधिवेशन खोड ग्राम म आयोजित हुआ जिसम मारवाड के दरबार को उत्तरदायी शासन देन की चेतावनी दी गयी।

श्री गाधी बुनियादी तौर पर रचानात्मक कार्यकर्ता हैं। आजादी के पश्चात् हुए राष्ट्र के बटवारे के फलस्वरूप विकराल शरणार्थी समस्या के दौरान आपने सेवा काय किया। हरिजन सेवा, नशामुक्ति प्रौढ शिक्षा कताई बुनाई प्रशिक्षण काय आदिवासी कल्याण काय इनकी प्रिय प्रवृत्तिया रही है और आज भी इन्ही कार्यों म गाधीजी का अधिकाश समय जाता है।

श्री गाधी का नाम पाली जिल क स्वतन्त्रता-सग्राम की ऐतिहासिक कहानी म स्वर्णाक्षरो म लिखा जायगा। इनकी लगन, कत्तव्य-परायणता राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना और त्याग-तपस्या हमेशा के लिए याद की जाती रहेगी।

—मोहनराज जन

अफसोस क्यो नहीं है, वह रूह अब वतन मे,
जिसने हिला दिया था, दुनिया को एक पल मे।



पत्रकार सेनानी

श्री धनराज वर्मा

श्री धनराजजी वर्मा का जन्म 8 अक्टूबर सन 1916 को महाराष्ट के बुलढाणा जिल के एक छोटे स ग्राम म हुआ। आपका परिवार आयसमाज का कट्टर समथक रहा था इसलिए आप बचपन स ही जाति भेद और छुआछूत के विचारो से रहित थ। एक उदार मानव क सस्कार प्रारम्भ म ही आपको अपने परिवार म प्राप्त होत रहे। जब आपन अपनी प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर माध्यमिक स्कूल की पाचवी कक्षा मे प्रवेश लिया तब एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी। महात्मा गाधी मो शौकतअली और मो मोहम्मदअली क भाषण सुनने के लिए वर्माजी अपने दो सहपाठियो के साथ मलकापुर गये। इन नताओ के भाषणो का प्रभाव आप पर इतना अधिक हुआ कि आपने उसी समय देश की आजादी के लिए काय करन की प्रतिज्ञा कर ली।

आगे चलकर आपने अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी करके अकोला के टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल म प्रवेश ले लिया। अकोला म तिलक महाविद्यालय के प्राचाय श्री बुद्धेजी के सम्पक म आकर वर्माजी क्रातिकारी विचारो के कट्टर समथक हो गये और प्रतिदिन रात्रि म ट्रेनिंग स्कूल क तीन साथियो के साथ उनस मिलन लग। उस समय अकोला विदभ म था तथा उसे सी पी एण्ड बरार नाम स जाना जाता था। उस समय उसका गवनर बटलर नामक एक अग्रेज था। वर्माजी और उनके साथियो ने अग्रेज बटलर की हत्या करने की एक गुप्त योजना बनायी परन्तु उनको यह योजना अचानक रद्द करनी पडी। उधर इनकी गतिविधियो की भनक पुलिस को पड गई, जिसके कारण इन पर पुलिस की कडी निगरानी रहने लगी।

अकोला म आपका सम्पक लोकनायक बापूजी अणे श्री ब्रजलालजी बियाणी, डा सावरकर आपटे, सेनापति बवारी आदि नताओ स लगातार बना रहा और उनके विचारो स व प्रेरणा लेत रहे। आप समय समय पर गावो म जाकर खादी-ग्रामोद्योग और शराबबन्दी का प्रचार भी किया करते थे।



महात्मा गांधी के सन् 1942 के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में वर्माजी ने सक्रिय भाग लिया और 9 अगस्त 1942 की रात्रि के 1 बजे आप दोनों को जाब्ता फौजदारी धारा 151 के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया। आप लोगों को एक माह तक जेल में रखकर कुमनाला के जिला मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। वर्माजी को भारत सुरक्षा अधिनियम के तहत एक वर्ष की सजा दी गई और उनकी सम्पत्ति को जब्त किया गया।

दिसम्बर 1942 के पूर्व तक श्री वर्माजी का कार्यक्षेत्र मारवाड़ ही रहा, परन्तु इसके बाद आप राजस्थान के पाली नगर में आ गए। आपने यहाँ उम्मेद मिल में एक क्लर्क की नौकरी करली और राजस्थान के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने लगे। पाली में रहते हुए आपने राजस्थान के तत्कालीन नेताओं से सम्पर्क स्थापित किया। जननायक श्री जयनारायण व्यास, श्री मथुरादास माथुर, श्री भगवतेश्वर प्रसाद शर्मा (भारत) आदि के साथ आपका निरन्तर सम्पर्क रहा और आपने इनके साथ सक्रिय सहयोग करते हुए राजस्थान में और विशेष रूप से पाली जिले में स्वतन्त्रता आन्दोलन को आगे बढ़ाया। पाली जिले के जन नेताओं से भी आपके घनिष्ठ सम्बन्ध रहे, उनमें सर्वश्री रामप्रसाद गांधी, रामप्रताप शर्मा, हरिभाई किंकर, गुमरराज डागा आदि प्रमुख हैं। आपने इन लोगों के साथ पाली जिले में स्वतन्त्रता आन्दोलन को फलने-फूलने में पूरा पूरा सहयोग प्रदान किया।

आप मारवाड़ लोकपरिषद् और परगना परिषद् के अध्यक्ष तथा मंत्री भी रह चुके हैं। इन पदों पर रहते हुए आपने दोनों संस्थाओं की गतिविधियों को जिले के गांव गांव में फैलाने का विशेष कार्य किया है। राजस्थान राज्य के निर्माण के बाद से आप जिला कांग्रेस के महामंत्री तथा प्रदेश कांग्रेस के सदस्य हैं। आपने पाली जिले में इंटक की स्थापना में भी पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया है।

वर्माजी सक्रिय स्वाधीनता सेनानी के साथ-साथ एक पत्रकार भी रहे हैं। आपने 'प्रजा सेवक' पत्र के संवाददाता के रूप में कार्य किया था। आगे चलकर आप राजस्थान के लोकवाणी, अमर भारत, राष्ट्रदूत आदि पत्रों के संवाददाता के रूप में भी कार्य करते रहे।

स्वतन्त्रता के बाद आपने जिले में अनेक महत्वपूर्ण कार्य सर्वश्री मोहनराजजी जैन, शंकरलालजी, बाबूलालजी, धीरजमलजी बछावत, धीरजमलजी जैन, अभिनन्दनमलजी जैन, माधोलालजी सुथार, वासुदेवजी शास्त्री आदि मित्रों के साथ मिलकर सम्पन्न किये। आपके द्वारा किये गये कार्य पाली जिले के स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में अविस्मरणीय रहेंगे।



संघर्ष पथ के पथिक

श्री रामप्रताप शर्मा

भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति रहे हैं गुन्दोज के श्री रामप्रताप शर्मा जिनका सम्पूर्ण जीवन संघर्षों से लड़ते हुए व्यतीत हुआ। बाल्यकाल में ही पिता की छाया उनके सिर से उठ गयी थी। दादा का साथ भी अधिक दिन तक नहीं रहा। बचपन में ही गुन्दोज ठाकुर द्वारा श्री शर्मा की पैतृक जमीन पर कब्जा कर लेने के कारण उन्हें अनेक प्रतिरोध—बाधाओं में रहना पड़ा। उन्होंने यहाँ तक भी पाया कि ब्राह्मणों की जमीन पर बाली के ठाकुर अनधिकृत रूप से आधिपत्य करता है। इतना ही नहीं जब श्री शर्मा ने सन् 1933-34 में बाली के गुरु दरबार में सुनी पाली के माधो भट्ट, गन्धमलजी भाटी, अमोलकचन्दजी लोढ़ा, गणेशमलजी मेहता के साथ जागीरदारों की मारपीट करने की बात तो श्री शर्मा का रक्त इस पर खौल उठा। आन्दोलन द्वारा विरोध की हूक उठी और अपना व ब्राह्मणों की जमीन का आन्दोलन करने की ठान ली। यह तभी सम्भव था जब वह स्वयं सशक्त होते या संगठन की जिम्मेदारी में शामिल होते। उसके लिए श्री शर्मा ने भारतीय सेना में शामिल होकर एक शक्तिशाली सिपाही बनना तय कर लिया। लेकिन उस समय भारतीय सेना में ब्राह्मणों को लेने का रिवाज नहीं था अतः श्री शर्मा ने पुलिस में हैड-कान्स्टेबल का पद स्वीकारा। हैड कान्स्टेबल की सेवा के दौरान सन् 1938 में जोधपुर की आम सभा में विलायत से लौटे हुए प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री सुभाषचन्द्र बोस का व्याख्यान सुना तो श्री शर्मा का सोया हुआ हृदय राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत हो गया और उन्होंने अगले ही वर्ष 1939 में पुलिस पद को तिलाञ्जलि दे अपने ही गांव गुन्दोज को अपना कर्मक्षेत्र बना लिया जहाँ उन्होंने जागीरदारों व ठाकुरों के जुल्मों का डटकर मुकाबला किया।

सन् 1939 में मारवाड़ लोक परिषद् के सदस्य बन कर सर्वश्री रामप्रसाद गांधी, गुमरराज डागा, कवि मट्टूजी, अमरसिंहजी, बाबा हजारीलालजी शर्मा, रूपचन्दजी आदि के साथ सक्रिय भूमिका अदा करने लगे। इस सक्रियता के फलस्वरूप 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के दौरान इन्हें जोधपुर पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और हिरासत में रखा गया। तत्कालीन पुलिस सुपरिटेण्डेंट



श्री बलदवराम मिर्धा ने श्री शर्मा व सहयोगिया को क्षमा मागने और भविष्य मे आन्दोलन नही करने के लिए विवश किया तो उन्होने निर्भीक होकर स्पष्ट शब्दो मे क्षमा मागने से इकार कर दिया। इस सत्याग्रह आन्दोलन के तहत श्री शर्मा का सन् 1943 म 392 आई पी सी का मुकदमा तथा 420 आई पी सी इसके तत्काल बाद दफा 353 आइ पी सी, सन 1945–46 मे दफा 145, 420 353 के तहत गिरफ्तार किया गया। मुकदमा चलने के बाद हाकिम श्री रूपसिंह राठौड व गोरधनसिंह भण्डारी ने इनको उन दफाओ से बरी किया।

श्री शर्मा के व्यक्तित्व की दूसरी झलक है श्री विनोबा भावे के हरिजन आन्दोलन का प्राण प्रण से समर्थन। उन परिस्थितियो म गुन्दोज की पाठशाला मे हरिजन या अनुसूचित जाति क बच्चो का प्रवेश नही मिलता था। इसलिए श्री शर्मा ने सर्वप्रथम एक शिक्षा समिति गठित कर हरिजन पाठशाला की स्थापना की। हर्ष का विषय यह है कि वही हरिजन पाठशाला आज रा उ मा विद्यालय गुन्दोज के नाम से जानी जाती है। श्री शर्मा पाली मे आयोजित किसान सम्मेलना के दौरान मारपीट के शिकार हुए परन्तु इस सघर्ष म उनका व्यक्तित्व निखर उठा। उनको श्री जयनारायण व्यास के मार्ग निर्देशन मे जोधपुर जिला काग्रेस सेवा दल का नायक बनाया गया तथा जोधपुर नागौर, पाली, जालौर बाडमर आदि जिला के कार्यकर्ताओ का प्रशिक्षित करन का काम सौपा गया। श्री शर्मा इसी कडी म राजस्थान प्रान्तीय काग्रेस समिति के सदस्य भी रहे और 1954–55 म पाली जिला काग्रेस के अध्यक्ष भी।

पाली जिले मे छूआछूत निवारण हतु श्री शर्मा ने श्री वर्माजी व श्री भट्ट साहब के साथ प्रत्येक गाव तक पदल जाकर अभियान चलवाया। इसका सशक्त उदाहरण तो उनके स्वय क परिवार म प्राचुकी नाम की लडकी है जो मेघवाल—माची जाति की है और उसको आपन अपनी पुत्री की तरह घर म पालन पोषण शिक्षित कर विप्र धर्म की पालना करत हुए उसके हाथ पीले किये। वह आज भी श्री शर्मा के परिवार की सदस्या एव पुत्रीवत स्नेह पाती है।

सारत श्री शर्मा के इस जीवन सघर्ष को प्रसिद्ध कवि निराला के शब्दो म यो कह सकते है

दुख ही जीवन की कथा रही।
क्या कहू आज जो कही न गयी॥

तप पूत कर्मवीर

श्री देवीचन्द सागरमल

☐

अपना कार्यक्षेत्र पाली तक सीमित न रखकर उसको बम्बई मद्रास एव सिरोही तक विस्तीर्ण करने वाले श्री देवीचन्द सागरमल जैन पाली जिले के उन स्वतन्त्रता सेनानियो म अग्रगण्य है जो पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए सतत् प्रयत्नशील रहे और जो मन कर्म और वचन से सदव स्वतन्त्र रहकर सत्य और निष्ठा पर बिना किसी भी प्रकार का समझौता किये विपरीत परिस्थितियो से जूझते हुए सदव अडे रहे। आपका सम्पूर्ण जीवन अपने आप म त्याग तपस्या एव दर्शन का मूर्तरूप रहा है। बाली नगर को ऐसे सपूत की जन्मभूमि होने पर गर्व है साथ ही इस बात का खेद भी रहेगा कि ऐसे क्रान्तिकारी पुरुष का तत्कालीन राजाशाही द्वारा बाली से निष्कासन अन्यायपूर्ण होते हुए भी वहा की जनता इनको अपने साथ नही रख सकी और इन्हे सिरोही राज्य के शिवगज नगर म जाकर स्थाई निवास बनाना पडा।

श्री देवीचन्द जैन का जन्म पाली जिले क बाली नगर क चौपडा परिवार म विक्रम सवत् 1959 की भाद्रपद बदी 14 को हुआ था। पिताजी का नाम श्री सागरमल था। आठ वर्ष की उम्र म आपको पिताजी का और नौ वर्ष म ही मातुश्री का विछोह सहना पडा। अतएव आपका लालन-पालन बुआजी श्रीमती पापूबाई एव उदार हृदय श्री जेठमलजी मुथा द्वारा किया गया।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा बाली जाकोडा तथा गुजरात म हुई। आप देश की विभिन्न अग्रणी पत्रिकाओ क सवाददाता बन और विद्वानो क लगातार सम्पर्क म रहे। इसी से आपकी व्यावहारिक विद्या बुद्धि और ज्ञान का प्रकाश बढ़ता गया जिसम आप स्वय की प्रतिभा स एक योग्य लेखक और पत्रकार बन गये। स्वतन्त्रता सग्राम की लम्बी अवधि म त्याग तपस्या समाज-सुधार देश सेवा व आन्तरिक दुर्दशा तथा स्वतन्त्रता-सग्राम क सेनानि सम्बन्धी अनेक सुरुचिपूर्ण एव अमूल्य लेख आपने लिखे। बाल्यकाल की जिन घटनाओ न आपको जन-स्वातन्त्र्य क प्रति जागरूक किया उनम म मुख्य है—साठम्बा क ठाकुर विजयसिंह द्वारा दान्तर क निर्धन महिला का चादी क कडे पहनने क कारण जेल म ठगा जाना, बागाल (मारवाड) क जागीरदार क पुत्र क मामा होकर उनका झान्तर निकलने के कारण आपने साथ दुर्व्यवहार शिवगज (सिरोही) की छावनी के एक सदर अफसर के बगल क सामने

हावर इनका आदर्श पुरुष के बारे आपको स्पष्ट मान्यता और परामर्श करना चाहिए । इन घटनाओं ने आपको मारवाड़ सामान्य नागरिक का पतन स्थानीय तब सामान्य व्यवस्था के प्रति गठन किया तथा आपने माता को स्वभावतः तब स्पष्ट प्रभाव पाकर इन आपकी प्रवृत्ति को तब विशेष रूप तब दाखिल का प्रसार किया । इसके कारण था । वह वह बलि और विशाल गति स्थितियों में भी आप अधिक रहकर स्वतन्त्रता संग्राम और समाज सुधार में लग रह गए ।

आप विक्रम संवत् 1963 के आसपास 16 वर्ष के बाद के ... प्रचार किया और मारवाड़ी दुकानदारों व्यावसायिक जीवन चालित भाषा में प्रचलित रह गए तु ... आप और अधिक रूप में दक्षिण रहे । रह गया जमा गए । आप और अधिक गहरा और इनको लगभग 10 वर्ष के उन पार समाचार ... अधिक और मी प्रसार ... जीवन के प्रारम्भ ... का और भी प्रसार ... में बाह्य प्रचार सन् 1927 28 का समय था जब राष्ट्र में बाह्य प्रचार आरम्भ हो गया था ।

प्रवृत्ति न हो इसलिए ... के उत्साही स्वयंसेवक तथा ... सन् 27 से 30 के कारण आप आन्दोलन में ... जब विभिन्न आन्दोलन ... 1930 के नमक-सत्याग्रह आन्दोलन में गुजरात हुए आप सन् 1930 के ... और उन के साथ ... जेल में ... आप बम्बई में वायुयान ... युवक ... और ... उस जीवित ... और ... प्रति ... आन्दोलनों के विरुद्ध प्रथम शत्रुता उत्पन्न कर दी । ... और ... निरन्तर जुड़ाव का ... किया और ... तौर पर ... द्वारा संचालित राष्ट्रीय आन्दोलनों में स्पष्ट ... । आपका पूरा समय बम्बई में ही रहकर सक्रिय रूप से भाग ... और आप स्वतन्त्रता संग्राम ... के कारण आप उस ... और आप आर्थिक चिन्ता से मुक्त नहीं हो गए तब आपको ... आर्थिक अभावों से ग्रस्त व अस्थिर रहा । परन्तु इस कारण आपने स्वतन्त्रता संग्राम व समाज सेवा के कार्यों में कभी भी शिथिलता नहीं आने दी और न इसी शान्ति हुए ।

नमक-सत्याग्रह के बाद असहयोग आन्दोलन ... आन्दोलन ... में भाग लिया । इस अवधि में आप बम्बई में सक्रिय रूप से भाग लिया । ... की कार्यवाहियों तथा गुप्त आप कई बार भूमिगत रहे । ... शासन की कार्यवाहियों तथा गोपनीय विधि से कांग्रेसी पुस्तिकाओं का सम्पादन व्यक्तियों तक

... – समाने का कार्य ... किया । 1934 में ... बम्बई के ... प्रारम्भ ... कराने ... बम्बई शाखा ... साथ ... में ... लिया जिसमें बम्बई ... प्रान्तों ... समाज ... और बम्बई में ... और ... अखबार द्वारा ... प्रसारित ... किया गया । इसी ... बम्बई का आन्दोलन ... मारवाड़ और ... राज्य में ... किया ... । ... सन् 1934 में बम्बई ... और समाज के ... के विरुद्ध ... और ... मुनियों ... बम्बई ... समाज में ... किया । इस ... समाज में ... किया गया ।

बम्बई में ही ... मजदूर-संघ के ... और तब ... हड़ताल और ... के बाद मजदूरों ... के ... में और भी ... कार्य किया । ... मजदूर-नेताओं के साथ काम किया ।

1934 के बम्बई-वासी ... अधिवेशन में ... कार्यकर्ता ... समिति के ... में और ... । इसी अधिवेशन में आपने ... के साथ ... ।

इसके पश्चात् ... बम्बई ... युवक परिषद् और ... मारवाड़ का प्रतिनिधित्व ... किया । इसके दौरान ... सिंघी ... मारवाड़ में ... कार्यकर्ताओं के ... विधवा विवाह का प्रबल समर्थन करती रही ।

1935 में आपने समाज-सुधार का प्रचार घर घर करने के लिए बम्बई से मारवाड़ की ... की ... विधवा विवाह प्रारम्भ करने के लिए समर्थन जुटाया । ... और विधवा विवाह प्रारम्भ ... और ... उठाकर ... इस यात्रा में ... शारीरिक कष्ट ... गुजरात सिरोही मारवाड़ ... महाराष्ट्र ... आचार्य ... का दौरा किया । यह यात्रा ... और आशीर्वाद के साथ पूर्ण की । ... विजयवल्लभसूरिजी की ...

इसके तुरंत बाद 1939 में आपने पूरे एक साल तक मारवाड़ जालोर व सिरोही राज्यों की पदयात्राएं की । यह पद यात्रा आपने ... से पूर्ण की जिसमें ...

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्



जयनारायण व्यास, श्री मणीलाल कोठारी व श्री आर जी वद, जो आगे चलकर मद्रास काय क्षेत्र मे स्वामीजी के नाम से प्रसिद्ध नता हुए के सम्पर्क म आय। श्री चुनीलालजी कास्टिया ने ही श्री देवीचद को जयनारायणजी व्यास के साथ मारवाड म ही काय करने की प्रेरणा दी। य पूज्य बापू के निकटतम साथिया मे से थ।

मारवाड म काय शुरू किया ही था कि सन् 1935 म पूज्य स्वामी ऋषभदासजी के आग्रह स आपको लौंग आयात-बहिष्कार के लिए सत्याग्रह मे भाग लेने वापिस मद्रास जाना पडा। वहा आपने जजीबार अफ्रीका से आयात होने वाले लौग के जहाजो को खाली नही होन दिया, जिसस जहाजा को वापिस लौटने को बाध्य होना पडा। फलस्वरूप भारत का लौग-व्यवसाय मृत होन से बच गया। यहा पर आपने 1937 की भयानक बाढ म सहायता और जीवदया समिति मे भी काय किया, मद्रास के हरिपुरा अधिवेशन म भाग लिया, मारवाड जैन युवक मण्डल की स्थापना की और स्थानीय तामिलनाडु एव आध्र की काग्रेस समितियो म सक्रिय भाग लकर काय किया। यही पर आपने प्रसिद्ध मद्रास चेरिटीहोम की शुरूआत की, जहा गरीबा को खाना, कपडा और आवास मुफ्त मिलता ह।

अपन कार्यो स मद्रास मे आपको चारो ओर स कीर्ति मिली। लोकनायक जयनारायण व्यास और गोकुलभाई भट्ट न आपको वापिस मारवाड म काय करन के लिए बुला लिया।

उधर सिरोही राज्य म तत्कालीन पुलिस थानदार शालिग्राम काग्रेस आदोलन को कुचलने के लिए बेरहमी से जुल्म और दमन कर रहा था। स्थानीय कायकर्ताओ को मँजे हुए ठोस नेता की आवश्यकता थी। श्री देवीचद जी ने आते ही उस दमन और जुल्म क खिलाफ आदोलन व सत्याग्रह करवाया, जिससे हारकर सिरोही राज्य न थानदार धीर को बर्खास्त किया।

फिर देवीचदजी का वापिस बम्बई या मद्रास जाना नही हो सका। यहा पर राजनतिक कार्यो की गतिविधिया इस कदर बढ गई थी कि इन्ह अपनी बम्बई की दुकान बद करनी पडी और ये आर्थिक सकट से ग्रस्त हो गये। अपन साथ-साथ श्रीमती मगनीबाई जो स्वय राजनैतिक व सामाजिक कार्यो मे सक्रिय थी श्री देवीचद के कार्यो के साथ जुड गइ। परिवार का भरण-पोषण एक समस्या बन गया परन्तु श्री देवीचदजी तनिक भी विचलित नही हुय और राजनतिक आदोलन को यथाविधि सचालित करते रहे।

सिरोही राज्य देवीचदजी को अपने ऊपर एक भारी खतरा समझता था क्याकि इनके द्वारा ही यहां की शिकायतें बम्बई दिल्ली आदि के अखबारा तक पहुचती थी और राजनतिक गतिविधिया तेजी म बढ रही थी अत 3 सितम्बर 1939 का सिरोही राज्य ने इन्हे 6 वष क लिए राज्य मे निष्कासित कर दिया। इस पर सिरोही प्रजामण्डल का आदोलन और भडक उठा। लाचार होकर सिरोही राज्य का प्रजामण्डल से समझौता करना पडा, जिसकी शत के अनुसार यह हदपार निर्वासन-आदेश एक साल बाद 1940 म ही समाप्त कर दिया गया।

ज्योंही कुछ शाति हुई सिरोही राज्य सरकार पुन सक्रिय हो गई और दमन चक्र सीधा श्री देवीचदजी क खिलाफ मुड गया। 1940 म काले झण्डे दिखलान, आदोलन करन आदि का लकर आपको 1942 के अप्रेल माह म गिरफ्तार कर एक वष की व एक सौ रुपये जुर्माने की सजा दी गई। फिर यह सजा तीन माह क लिये और बढा दी गई। उस सजा के दौरान सिरोही जेल मे आपको डडा-बेडिया पहनाई गइ और आपको समय समय पर दमन के विरुद्ध भूख हडतालें करनी पडी।

1942 क अगस्त माह मे 'अंग्रेजो! भारत छोडो' आदोलन तज होने से सिरोही जल म अन्य काग्रेसी कायकता भी कद कर लिए गये। इनमे सवश्री पुखराजजी सिन्घी धनराजजी तातेड सौभाग्यमलजी सिन्घी व दुलीचदजी बाबूजी आदि मुख्य थे। इन सभी पर जल मे निदयतापूवक जुल्म किय गये। उनको डण्डा बेडिया लगाकर कष्ट दिया जाता, राशन पूरा नही दिया जाता या खराब दिया जाता था। देवीचदजी ने लगातार भूख हडताल कर जेल के कष्टो से कुछ राहत अपन साथिया को दिलवाइ व भोजन सामग्री म सुधार करवाया। 1943 मे एक वष तीन माह की कद पूरी भुगत कर आप रिहा हुय।

जब आप जेल मे रहे तो पीछे स श्रीमती मगनीबाई और चार पुत्रो पर सरकार अत्याचार करन लगी। आपके जेल स लौट आन के बाद भी दमन चक्र बन्द नही हुआ। शीघ्र ही आपको फिर गिरफ्तार कर लिया गया। साथ ही लखमावा म मगनीबाई व पुत्रो को भी गिरफ्तार कर लिया गया। उनके मकान व कुएँ का जब्त कर लिया गया। यद्यपि आपकी जमानत हो गई पर आपको सिरोही राज्य स पुन निर्वासित—हदपार कर दिया गया व राज्य की सीमा के पास दस मील क्षेत्र म आने पर भी पाबन्दी लगा दी गइ। 20 जनवरी सन् 1943 को कडाके की सर्दी और बरसत मौसम मे आप सभी को बाहर खदेड दिया गया। किन्तु इस निर्वासन आज्ञा की अवमानना करत हुय देवीचदजी अपन सत्याग्रह और आदोलन पर अडे रहे। फलस्वरूप 21 फरवरी 1943 का आपको फिर डिफेन्स आफ इण्डिया एक्ट की धारा 346 ज जे क तहत एक वष की सख्त कद की सजा दी गई।



जेल में आपने फिर भूख हड़ताल की और साथ ही धार्मिक उपवास भी करते रहे जिससे आपका स्वास्थ्य बिगड़ गया और आठ माह में ही आपको परोल पर रिहा कर दिया गया। स्वास्थ्य-लाभ कर आपने पुनः मारवाड़ और सिरोही के गांवों में औषधि वितरण का कार्य शुरू किया। मुख्य कार्य मीणा, मोणा आदि तथाकथित जरायम पेशा जातियों की पुलिस द्वारा दैनिक हाजरी व रजा चिट्ठी की माफी आन्दोलन था। इस आन्दोलन में भी आपको सफलता मिली और आपके प्रयास से सिरोही राज्य और मारवाड़ राज्य में सरकारों ने यह हाजरी बन्द कर दी जिससे इन जातियों के लोगों को नित्य हाजरी देना और एक गांव से दूसरे गांव जाने से पूर्व पुलिस से आज्ञा पत्र लेने की दुविधा खत्म हो गयी और उनको सामाजिक स्वतन्त्रता और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

सिरोही की सीमा से लगते थाने मारवाड़ के क्षेत्र वासी के किसान राज्य के जागीरदारी दमन से विशेष परेशान थे, अतः श्री जयनारायण व्यास आदि नेताओं के अनुरोध पर आपने इस क्षेत्र के गांवों में जाकर कांग्रेस का जो इस क्षेत्र में लोक-परिषद् के नाम से जानी जाती थी प्रचार करना शुरू कर दी। एक बार आपने बुड़ाला व पालना में सभा की थी वहां के जागीरदार के अत्याचारों का भण्डाफोड़ किया और फिर दूसरे दिन वाली में भारी सभा की। इससे स्थानीय जागीरदार एवं राज्य के अधिकारी बौखला गये व दूसरे दिन शाम को पालना से गुजरते वक्त आपको पालना पुलिस चौकी में अन्य कार्यकर्ताओं—श्री फूलचन्दजी बापना श्री तेजराजजी राणावत आदि के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। जब पुलिस मुंशी नथूराम बापनाजी पर हाथ उठाने लगा तो श्री देवीचन्दजी बीच में आ गये फलस्वरूप मुंशी ने उन्हें बुरी तरह पीटा जिससे आप भी सख्त घायल हो गये। उपरान्त पुलिस मुंशी ने सभी कार्यकर्ताओं को छोड़ दिया पर आपके उपचार के लिए रात के वक्त फूलचन्द जी बापना को वाली से डाक्टर बुलाना पड़ा जिससे आपकी जान बच पायी। सर्वश्री मोहनराजजी तेजराजजी राणावत रूपचंदजी सागरमा चम्पालाल राणावत गोमाराम चौधरी आदि के साथ आपने दूसरे ही दिन गुड़ा में आम हड़ताल कराके ठाकुर के रावले के आगे होकर जुलूस निकाला। इस पर जागीरदार के गुन्डों के ऊपर से पत्थर व जलती हुई लकड़ियां आदि बरसाई गयीं जिससे कई कार्यकर्ता घायल हो गये।

इस प्रकार आपने कौसलाव गांव में जागीरदार द्वारा सूअरों को कायदाना शिकार खाने में बाड़ की बाड़ में शिकार हेतु रखने और सूअरों द्वारा किसानों की फसल को नष्ट किये जाने पर किसानों के पक्ष में आन्दोलन कर सत्याग्रह किया, जिसमें जोधपुर के श्री छगनलाल चौपासनीवाला गुन्दोज के श्री रामप्रतापसिंह गांधी व साली के श्री मोहनराज जैन आदि नेता प्रमुख थे। इन्होंने किसानों के दल के साथ जाकर कायदाना क्षेत्र की बाड़ उखाड़ फेंकी और सूअरों को भगा दिया। जब जागीरदार के घुड़सवार व सिपाही विरोध में आये तो उनका सामना किया। फिर कोसलाव गांव व कायदाना क्षेत्र से लगते चार गांव में लगातार जनसभाओं एवं प्रचार के द्वारा सरकार को कायदाना उठाने पर बाध्य किया। बाली क्षेत्र में आपने छगनमलजी सुराणा मोहनराजजी दवसी, धारजमलजी बलावत तेजराजजी राणावत, फूलचन्दजी बापना, सौभागमलजी जैन आदि के साथ स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

1945 में राजनेताओं को धीरे धीरे जेल से मुक्ति मिलने लगी। श्री गोकुलभाई भट्ट और श्री जयनारायण व्यास के मुक्त होने पर आपने शिवगंज नगर में देशी राज्य लोक परिषद्, राजपूताना और प्रजामण्डल सिरोही का मिला जुला अधिवेशन आयोजित किया, जिससे समस्त राजपूताने के स्वतन्त्रता-सेनानी और कार्यकर्ता एक कांग्रेसी झण्डे के नीचे आ गये। इसके कारण आगे चलकर राजपूताने की रियासतों का भारत में विलय संभव हो सका।

भारत स्वतन्त्र हो गया। सिरोही व मारवाड़ में भी जनता की सरकारें बनी। श्री जयनारायण व्यास और श्री गोकुलभाई भट्ट व अन्य सभी साथी कार्यकर्ता जनता के नुमायन्दे बनकर मंत्री पदों पर आसीन रहे पर स्वतन्त्रता का यह निर्लिप्त पुजारी हमेशा समाज और देश की सेवा में ही लगा रहा और उसने कभी भी सत्ता की कुर्सी को स्वीकार नहीं किया। इनका समस्त जीवन लगातार संग्राम और तपोमय व त्याग व बलिदान से ओत प्रोत ही रहा। सरल गांधी का वेष भूषा में तकली कातते और शराब आदि कुरीतियों से निरन्तर लोहा लेते शराब खराब है का नारा लगाते गांधी टोपी पहने भारत के इस तप पूत कर्मवीर को देखा जा सकता है।



स्वाधीनता प्रेमी
श्री महीधर शर्मा



पण्डित महीधरजी शर्मा का जन्म पाली जिले के धाणराव में 23 नवम्बर 1914 को पण्डित टूनालालजी के घर हुआ था। वैदिक कर्मकाण्ड में दक्ष श्रीमाली



जाति के ब्राह्मण वंश मे जन्म लेने से प्रारम्भ से ही आपकी रुचि शास्त्रों की उच्च शिक्षा प्राप्त करने में थी। उन दिनों घाणेराव जागीरी गांव था। गांव में और आस पास भी शिक्षा का प्रबन्ध नहीं के बराबर ही था परन्तु आपने अपने प्रयत्नों से विभिन्न स्थानों पर रहकर कर्मकाण्ड ज्योतिष वैद्यक एवं महाजनी लेखा आदि का समुचित अध्ययन किया।

स्वतन्त्रता-संग्राम एवं स्वदेशी आन्दोलन में बड़े भाई श्री कन्हैयालाल वैदिक के विचारों एवं कार्यों से आपको प्रेरणा मिली। कन्हैयालालजी का बंगाल के क्रान्तिकारियों से गहरा सम्बन्ध रहा था। आपके इस ओर झुकाव का काफी श्रेय आपके उस पैतृक मकान का भी है जिसे जनश्रुति के अनुसार महाराणा प्रताप ने आपके पूर्वजों को दिया था एवं जिसमें 1857 की क्रांति के सेनापति तात्या टोपे श्री माणिकलाल वर्मा श्री जयनारायण व्यास, आऊवा के ठाकुर कुशालसिंह चांपावत, विजयसिंह पथिक, ठाकुर जोरावर सिंह बारहठ एवं प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री चन्द्रशेखर आजाद एवं अन्य कई स्वतन्त्रता सेनानी अतिथि रहे थे। 1927 से 1933 के बीच चटगांव एवं काकोरी-काण्ड से सम्बन्धित रहने के संदेह में पुलिस ने आपके घर की कई बार तलाशी ली थी एवं आपके भाई को गिरफ्तार कर ले गये थे।

सामन्ती प्रथा के अत्याचारों एवं लगान, बेगार आदि के विरुद्ध आपने भी अपने भ्राता के साथ आवाज उठायी और लोगों को उनके उचित अधिकारों के बारे में बताने के लिए आप उस इलाके के गांवों में घूमने लगे। इस तरफ का सारा प्रदेश उन दिनों मारवाड़ एवं मेवाड़ के जागीरदारों की सम्पत्ति थी। उनके कारिंदे सामान्य नागरिकों को गुलामों से ऊंचा नहीं समझते थे। हरिजनों एवं जनजातियों की दशा तो और भी खराब थी।

श्री महीधरजी ने इन अत्याचारों के विरुद्ध अपना काम प्रारम्भ किया। जागीरदारों को उनका यह काम नागवार लगा और इसकी सजा भी समय-समय पर उन्हें भोगनी पड़ी। कई बार जागीरदारों के नौकरों ने आपको पकड़कर कचहरी में पेश किया जहां जूते मारने की सजा दी गई। लेकिन बाद में ब्राह्मण जानकर छोड़ दिया गया। एक बार तो इन लोगों ने वन्य पशुओं से भरे अरावली के बीहड़ में आपको एवं आपके साथी कार्यकर्ताओं को बांधकर पटक दिया। जंगल से बड़ी मुश्किल से आप वापस बस्ती में पहुंचे। पैतृक सम्पत्ति में आपकी जो कृषि भूमि, कुआ आदि थे, वे सभी घाणेराव ठाकुर ने जप्त कर लिए एवं समाज में ऐसा वातावरण पैदा कर दिया कि एक बार तो आपके एवं आपके परिवार के लिए दो जून रोटी की भी समस्या हो गई। हरिजनों के लिए पाठशाला खोलने के कारण जाति एवं समाज ने एक प्रकार से आपका बहिष्कार ही कर दिया था। समाज में जागृति पैदा करने की आपकी गतिविधियों के कारण घाणेराव ठाकुर ने 1940 में आपको कैद कर लिया। आपसे क्षमा मांगने एवं भविष्य में इन कार्यों में न पड़ने का लिखित इकरार करने को कहा गया, परन्तु आप ने स्पष्ट मना कर दिया। आखिर करीब 6–7 महीने के बाद वहां से बिना शर्त आपको छोड़ दिया गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने 1972 में आपको आपकी सेवाओं के लिए ताम्रपत्र एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किये। आपका जीवन सभी व्यसनों से पूर्णतः मुक्त रहा है एवं जीवन यापन का मुख्य स्रोत कर्मकाण्ड एवं धर्म आदि सात्विक कर्म रहे हैं। जीवन पर्यन्त आपका सम्बन्ध केवल कांग्रेस से रहा है। हरिजन सेवक संघ एवं सर्वोदय आन्दोलन में भी आपने उत्साहपूर्वक भाग लिया था।

—ज्ञानचन्द वैद, दुर्गादास चारण घाणेराव

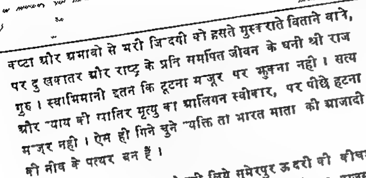
सुमेरपुर के शिल्पी
श्री बी०एल० राजगुरु





"आज सुमेरपुर में भी मेरे अपने रहने का मकान नहीं है। सरकारी जमीन पर झोंपड़ा बनाकर रहता हूं, वह भी सरकारी अधिकारी अब छुड़ाने वाले हैं। कहते हैं—कीमत दो जमीन दो या किराया दो वरना छोड़कर निकलना होगा। आज हालत यह है कि घर में बच्चों के खान-पीने पहनने ओढ़ने और रहने की भी व्यवस्था नहीं है। घर के बाल बच्चों के पोषण का काम गृहिणी पर निर्भर है। वह एक भैंस रखती है। दूध बेचकर अपना जीवन बसर करते हैं। मेरा सारा समय कांग्रेस के कार्यों, ग्राम पंचायत व परियोजना क्षेत्र में लग जाता है।

क्या आप विश्वास करेंगे कि उपयुक्त वाक्यांश राजस्थान की समृद्ध और विकासशील सुमेरपुर ग्राम पंचायत का एक दशक से भी अधिक समय तक सरपंच पद पर रहने वाला व्यक्ति लिख सकता है? सन् 1955 में अपने एक साथी को लिखे पत्र में स्वर्गीय श्री बाबूलाल राजगुरु ने व्यथा को वर्णन उपयुक्त शब्दों में किया है। ऐसे थे हमारे स्वतन्त्रता-सेनानी, धुन के पक्के गरीबों के मसीहा,



कष्टों और अभावों से भरी जिन्दगी को हसते मुस्कराते बिताने वाले, पर दु खकातर और राष्ट्र के प्रति समर्पित जीवन के धनी श्री राज गुरु। स्वाभिमानी इतने कि टूटना मंजूर पर झुकना नहीं। सत्य और न्याय की खातिर मृत्यु का आलिंगन स्वीकार, पर पीछे हटना मंजूर नहीं। ऐसे ही गिने चुने व्यक्ति तो भारत माता की आजादी की नींव के पत्थर बने हैं।

हाथ में लालटेन की रोशनी लिये सुमेरपुर ऊंदरी की कीचड़ भरी गन्दी गलियों में दूर दराज गांव के बाहर अनधिकृत राजस्व भूमि में बनी झुग्गी झोंपड़ियों में बसे अनुसूचित व जनजाति के लोगों को आबादी भूमि में आवासीय भूखण्ड आवंटित करने का निश्चय लेकर बगल में अखबार में लिपटा कागजों का पुलिन्दा लिये श्री राजगुरु की घूमती हुई तस्वीर आज भी अनेक वृद्ध लोगों की आंखों में बसी हुई है। बेघर गरीब लोग कहते— सरपंच साहब। एक अरजी आपरी भी लिखो। आपरे भी तो मकान कोनी किराया रा मकान में रेवो हो। और राजगुरु जी कहते— 'पहले थाने पट्टा दे दूं पछे मारी बारी।"

श्री राजगुरु बड़े रोबीले और आकर्षक व्यक्तित्व वाले थे। उनका जन्म सन् 1911 में ग्राम पलासिया (जिला जालौर) के श्री मोतीसिंह पुरोहित के घर हुआ था। साधारण पढ़ाई लिखाई के बाद इन्होंने पुस्तकों और स्टेशनरी की एक दुकान खोल ली। इससे इनका लोक सम्पर्क तो बढ़ा ही साथ ही विविध विषयों का ज्ञान भी बढ़ता गया। नियमित अखबार वाचन से राष्ट्रीय आन्दोलन की ओर आकर्षित हुए और स्थानीय समस्याओं–काश्तकारों पर लटाई, लाग बाग बेठ-बेगार के रूप में हो रहे शोषण ने इनको आन्दोलित किया और सक्रिय होकर काम करने लगे। फलस्वरूप आस-पास के जागीरदार लोग नाराज हो गये और इनकी डोली की जमीन भी जब्त कर ली गयी। इन्हें सुमेरपुर से भी भगाने के षडयन्त्र होने लगे। इसी बीच इनका सम्पर्क अजमेर कांग्रेस के प्रमुख नेता श्री राम नारायण चौधरी से हुआ और ये कांग्रेस के सदस्य बनकर काम करने लगे। कांग्रेस संगठन के साथ जुड़ जाने से इनका हौसला बढ़ा और ये उत्साह के साथ कार्य करने लगे।

सर्वप्रथम सन् 1936 में इन्होंने सुमेरपुर की एक जिनिंग फैक्ट्री में हो रहे मजदूरों के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई और मजदूरों का संगठन कर एक आन्दोलन खड़ा कर दिया। पर उस जमाने में पुलिस और हुकूमत तो मालिकों के हितों की रक्षा के लिए ही थी, मजदूरों का कोई रक्षक ही नहीं था। फलस्वरूप राजगुरुजी पर झूठा मुकदमा बनाया गया और उसमें इन्हें जेल की सजा भी भुगतनी पड़ी। इसके बाद सुमेरपुर की सीमा से लगे सिरोही राज्य के शिवगंज कस्बे के निवासी श्री देवीचन्द सागरमल के माध्यम से राजगुरुजी का सम्पर्क सिरोही प्रजामण्डल के प्रमुख नेता श्री गोकुलभाई भट्ट से हुआ और श्री गोकुल भाई के साथ इन्होंने सिरोही राज्य के गांवों में जागीरी जुल्मों के विरुद्ध आवाज उठाई। इनके प्रचार ने संगठन में अपूर्व शक्ति पैदा की। सन् 1939 में तत्कालीन सिरोही दरबार ने श्री गोकुल भाई तथा अन्य कार्य कर्ताओं के साथ साथ राजगुरुजी को भी राज्य से निष्कासित कर दिया। अब पुनः सुमेरपुर ही इनका केन्द्रीय कार्यस्थल बन गया। सन् 1940 में राजगुरुजी लोकनायक जयनारायण व्यास के नेतृत्व में काम कर रही मारवाड़ लोक-परिषद् के सदस्य बने और सुमेरपुर शाखा स्थापित कर उसके अध्यक्ष चुने गये। लेकिन इसके पूर्व ही वे तो पूरी शक्ति से राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद चुके थे। सन् 1938 के नवम्बर में विश्व प्रसिद्ध नेता कामरेड एम०एन० राय की अध्यक्षता में फतेहपुर-सीकरी में 'उत्तरभारत देशी राज्य लोक प्रतिनिधि सम्मेलन' में सम्मिलित होकर इस क्षेत्र की जनता की आवाज को बुलन्द किया। जागीरदारों से प्रभावित सामन्ती पुलिस ने सन् 1943 में इन्हें लोगों में बगावत फैलाने का आरोप लगाकर 'हिस्ट्री शीटर' की सूची में दर्ज किया और लगातार थाने में बुला कर इनको डराते धमकाते रहे।

सुमेरपुर में राजगुरुजी को अपने राजनैतिक जीवन के प्रारम्भिक काल में अपूर्व सहयोग मिला सर्वश्री इन्दाजी माली, मन सुखभाई पटेल गणेशजी चौधरी, चतुर्भुज जी तोशनीवाल, बलदेव सिंहजी चौधरी, मन्नालालजी माली भीकमचन्दजी माली का, और सुमेरपुर में कांग्रेस का संगठन मजबूत हुआ। इससे बाली तहसील के ग्रामों, विशेषकर—तखतगढ़, खिवान्दी, बाकली, कोसेलाव, चाणोद, ढोला, पुराड़ा, पोमावा, कोलीवाड़ा पालडी में जागृति पैदा हुई। सर्वश्री पुखराजजी परिहार–चाणोद, केसाजी चौधरी–चाणोद, भैराजी ढोला, ओटरमलजी ढोला, नवलाजी ढोला, वनेचन्दजी मेहता–तखतगढ़ शिवलालजी भाटून कानसिंहजी चाणोद, दलपतसिंहजी चाणोद, भूरारामजी भाटून भीकमचन्दजी कोसेलाव आदि कार्यकर्ताओं ने राजगुरुजी के सहयोग से गांवों में अभूतपूर्व जागृति पैदा की। बाली तहसील और पाली जिला स्तर पर संगठन का कार्य कर रहे सर्वश्री मीठालालजी काका—सोजत मगारामजी जांगिड़—गुन्दोज, शंकरलालजी वकील—पाली वल्लभ दासजी अराड़ा—पाली गणेशजी लुहार—सान्डेराव, धनपतिराजजी भण्डारी—सोजत, वासुदेवजी शास्त्री—जतारण, धनराजजी वर्मा—पाली माणकलालजी माथुर—सोजत, फूलचन्दजी बाफना—सान्डेराव, प्रेमराजजी महता—खीमेल चम्पालालजी राणावत—खुडाला, रूपचन्दजी बागरेचा—फालना गोकुलजी मोदी—फालना द्वारका दासजी गुप्ता—बाली छोटमलजी सुराणा—बाली, विजयमलजी सुराणा—बाली का हर समय राजगुरुजी को सहयोग मिलता रहा।

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्



लेखक का सम्पर्क श्री राजगुरु से सर्वप्रथम 1946–47 मोड व देवली म आयोजित सम्मेलनो म हुआ और तब स उनके स्वगवास तक हर आदोलन, सगठन व चुनाव-काय मे अटूट साथ रहा। सन् 1952 म विधानसभा के प्रथम चुनाव म सुमेरपुर क्षेत्र का मेरे सारे चुनाव-काय का सचालन राजगुरुजी न ही किया था।

सुबह जल्दी नाश्ता करके घर से निकलना और देर रात तक घर पहुँचकर भोजन करना यह उनका दैनिक कायक्रम था। दिन भर काम करते हुए चाय और सिगरेट उनके साथी थे। उनकी टोली ता अभावग्रस्त दुखी, शोषित पीडित लोगो की ही टोली थी। ये लोग ही उनके दरबार के दरबारी थे– चाहे काग्रेस का दफ्तर हो चाहे पचायत कार्यालय। सुमेरपुर के लोग उनके सरपच-काल को कभी नही भूल सकते। आज जो सुमेरपुर देश की एक प्रमुख मण्डी के रूप मे उभरकर सामने आया है उसका श्रेय राजगुरु जी को ही जाता है। आज सुमेरपुर की नगरपालिका का वार्षिक बजट करीब एक करोड रुपये का है जबकि आजादी के पूर्व सुमेरपुर पचायत (सन् 1945) का बजट मात्र 65/– रु का था जिसम चपरासी की तनख्वाह रु 48/– ही मुख्य व्यय था और गाव की सफाई पर रु 6/ और डाक-स्टेशनरी पर रु 6/– और अन्य खच रु 5/- रखा गया था।

आजादी के बाद पचायत के नये कानून के अतगत हुए चुनावो म राजगुरुजी सरपच चुने गये और उनके कायकाल मे सुमेरपुर ने अभूतपूर्व तरक्की की। सवप्रथम पचायत भवन (मौजूदा नगरपालिका भवन) बनवाया गया। बाजार की सडको का निर्माण करवाया। रेडियो सेट खरीदकर आम जनता तक समाचार व सूचनाए पहुचाने का काय किया। वाचनालय का निर्माण करवाया। युवको और छात्रो म खेलो के प्रति आकर्षण पैदा करने के लिए मनोरजन केन्द्र की स्थापना की। प्रतापसागर नामक पेयजल की सुविधा हेतु कुआ तैयार करवाया, जहा स्नानागार भी बनवाये गये। आम जनता के हिताथ शौचालय व मूत्रालय बनवाये गये, चिकित्सालय भवन का निर्माण भी इसी दौरान हुआ। सुमेरपुर म विद्युतीकरण की योजना भी उसी काल मे बनी तथा कृषि उपज मण्डी समिति की स्थापना हुई। रूपबाग का निर्माण भी इसी काल म हुआ। सुमेरपुर तथा ऊन्दरी म सभी मोहल्ला गलियो म पक्की सडको व नालियो का निर्माण कराया गया। उन्ही के कायकाल मे केन्द्रीय उद्योगमत्री श्री मनुभाई शाह ने उद्योग-बस्ती का शिलान्यास किया। हाई स्कूल के लिए अतिरिक्त भवन बनवाया गया। सुमेरपुर के लिए जलप्रदाय योजना उसी काल म स्वीकृत हुई। इतना ही नहीं विकास का कोई क्षेत्र ऐसा नही रहा जहा राजगुरुजी ने सुमेरपुर की प्रगति के लिए काय नही किया हो।

स्वर्गीय राजगुरुजी विविध प्रतिभाओ के धनी थे। वे साहित्यकार पत्रकार-सवाददाता भी रहे। सन् 1941 म सुमेरपुर म सुमेरपुर साहित्यकुल की स्थापना की। सन् 1955 मे पाली जिला पत्रकार सघ के उपाध्यक्ष पद पर चुने गये। सन् 1948 म राजगुरुजी ने प्रौढ शिक्षा सघ—सुमेरपुर' की स्थापना की और सघ के प्रथम मत्री चुने गये। जन हिताथ 1949 मे सर्वोदय वाचनालय की स्थापना की। सन् 1958 म श्री राजगुरु दी सुमेरपुर को आपरेटिव मार्केटिंग सोसायटी लि०' के अध्यक्ष पद पर चुने गये। जिला काग्रेस कमेटी के जीवनपर्यन्त कमठ कार्यकर्ता रहे और उपाध्यक्ष, मत्री आदि कई पदो को वर्षों तक सुशोभित करते रहे।

राजगुरुजी सवसुलभ व्यक्ति थे। हर एक के लिए हर समय सहयोग करने को, साथ चलने को तैयार रहते थे। जनहित के सार्वजनिक कार्यो म रात दिन लगे रहना उनके जीवन का ध्येय बन चुका था। आज का सुमेरपुर उन्ही की देन है और यही उनका सच्चा स्मारक है।

— मोहनराज जैन



सोजत के सेनानी
श्री यशवन्त 'रुचिर'

□

श्री यशवन्त रुचिर वास्तव म कमशील व्यक्ति हैं। जीवन म सादगी और सयम तथा परिग्रह रहित स्वच्छ व सतुष्ट जिन्दगी का नमूना देखना हो तो इनमे देखिय। रुचिरजी पेशे म पत्रकार हैं पर आप राजनतिक व सामाजिक दृष्टि स प्रगतिशील विचारो के धनी रहे हैं। प्रारम्भ म ही इनकी राजनीति म रुचि रही है।

सन् 1937 म इन्होन पजाब युनिवर्सिटी से मैट्रिक की परीक्षा पास की और तत्काल ही सावजनिक सेवा म लग गये। सन् 38 39 म आप पजाब आर्य युवक परिषद् के मन्त्री पद पर रहे और युवको का सगठन करने का महत्वपूर्ण काय किया। साहित्य म इनकी रुचि विद्यार्थी जीवन म ही थी। सन 1940 म अजमेर म अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर स्वागत समिति के कार्यालय मन्त्री रहकर इन्होने सम्मेलन के सफल आयोजन म सक्रिय भाग लिया। इस सम्मेलन के पश्चात् उनकी रुचि साहित्य-सेवा की



कष्टो और अभावो से भरी जिंदगी को हसते मुस्कराते विताने वाले, पर दुखकातर और राष्ट्र के प्रति समर्पित जीवन के धनी श्री राजगुरु। स्वाभिमानी इतने कि टूटना मंजूर पर झुकना नहीं। सत्य और न्याय की खातिर मृत्यु का आलिंगन स्वीकार पर पीछे हटना मंजूर नहीं। ऐसे ही गिने चुने व्यक्ति तो भारत माता की आजादी की नींव के पत्थर बन हैं।

हाथ में लालटेन की रोशनी लिये सुमेरपुर कस्बे की कीचड भरी गन्दी गलियों में दूर दराज गांव के बाहर अनधिकृत राजस्व भूमि में बनी झुग्गी झोपडियो में बसे अनुसूचित व जनजाति के लोगों को आबादी भूमि में आवासीय भूखण्ड आवंटित करने का निश्चय लेकर बगल में अखबार में लिपटा कागजों का पुलिन्दा लिये श्री राजगुरु की घूमती हुई तस्वीर आज भी अनेक वृद्ध लोगों की आंखों में बसी हुई है। बेघर गरीब लोग कहते—'सरपंच साहब ! एक अरजी म्हारी भी लिखो। म्हारे भी तो मकान कोनी, किराया रा मकान में रवा हो। और राजगुरु जी कहते—'पहले थाने पट्टा दे दूं, पछे म्हारी बारी।'

श्री राजगुरु बडे रोबीले और आकर्षक व्यक्तित्व वाले थे। उनका जन्म सन् 1911 में ग्राम पलासिया (जिला जालौर) के श्री मोतीसिंह पुरोहित के घर हुआ था। साधारण पढाई लिखाई के बाद इन्होंने पुस्तकों और स्टेशनरी की एक दुकान खोल ली। इससे इनका लोक सम्पर्क तो बढा ही, साथ ही विविध विषयों का ज्ञान भी बढता गया। नियमित अखबार वाचन से राष्ट्रीय आन्दोलन की ओर आकर्षित हुए और स्थानीय समस्याओं—काश्तकारों पर लटाई लाग बाग बेठ-बेगार के रूप में हो रहे शोषण ने इनको आन्दोलित किया और सक्रिय होकर काम करने लगे। फलस्वरूप आस पास के जागीरदार लोग नाराज हो गये और इनकी डोली की जमीन भी जब्त कर ली गयी। इन्हें सुमेरपुर से भी भगाने के षडयन्त्र होने लगे। इसी बीच इनका सम्पर्क अजमेर कांग्रेस के प्रमुख नेता श्री रामनारायण चौधरी से हुआ और ये कांग्रेस के सदस्य बनकर काम करने लगे। कांग्रेस संगठन के साथ जुड जाने से इनका हौसला बढा और ये उत्साह के साथ काम करने लगे।

सर्वप्रथम सन् 1936 में इन्होंने सुमेरपुर की एक जिनिंग फैक्ट्री में हो रहे मजदूरों के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई और मजदूरों का संगठन कर एक आन्दोलन खडा कर दिया। पर उस जमाने में पुलिस और हुकूमत तो मालिकों के हितों की रक्षा के लिए ही थी, मजदूरों का कोई रक्षक ही नहीं था। फलस्वरूप राजगुरुजी पर झूठा मुकदमा बनाया गया और उसमें इन्हें जेल की सजा भी भुगतनी पडी। इसके बाद सुमेरपुर की सीमा से लगे सिरोही राज्य के शिवगंज कस्बे के निवासी श्री देवीचन्द सागरमल के माध्यम से राजगुरुजी का सम्पर्क सिरोही प्रजामण्डल के प्रमुख नेता श्री गोकुलभाई भट्ट से हुआ और श्री गोकुल भाई के साथ इन्होंने सिरोही राज्य के गांवों में जागीरी जुल्मों के विरुद्ध आवाज उठाई। इनके प्रचार ने संगठन में अपूर्व शक्ति पैदा की। सन् 1939 में तत्कालीन सिरोही दरबार ने श्री गोकुल भाई तथा अन्य कार्यकर्ताओं के साथ साथ राजगुरुजी को भी राज्य से निष्कासित कर दिया। अब पुनः सुमेरपुर ही इनका केन्द्रीय कार्यस्थल बन गया। सन् 1940 में राजगुरुजी लोकनायक जयनारायण व्यास के नेतृत्व में काम कर रही मारवाड लोक परिषद् के सदस्य बने और सुमेरपुर शाखा स्थापित कर उसके अध्यक्ष चुने गये। लेकिन इसके पूर्व ही ये तो पूरी शक्ति से राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद चुके थे। सन् 1938 के नवम्बर में विश्व प्रसिद्ध नेता कामरेड एम०एन० राय की अध्यक्षता में फतेहपुर-सीकरी में 'उत्तरभारत देशी राज्य लोक प्रतिनिधि सम्मेलन' में सम्मिलित होकर इस क्षेत्र की जनता की आवाज को बुलन्द किया। जागीरदारों से प्रभावित सामन्ती पुलिस ने सन् 1943 में इन्हें लोगों में बगावत फैलाने का आरोप लगाकर 'हिस्ट्री शीटर' की सूची में दर्ज किया और लगातार थाने में बुलाकर इनको डराते धमकाते रहे।

सुमेरपुर में राजगुरुजी को अपने राजनैतिक जीवन के प्रारम्भिक काल में अपूर्व सहयोग मिला सर्वश्री इन्द्राजी माली, मगनभाई पटेल गणेशजी चौधरी, चतुर्भुज जी तोशनीवाल, बलवन्तसिंहजी चौधरी मन्नालालजी माली, भीकमचन्दजी मास्टर का, और सुमेरपुर में कांग्रेस का संगठन मजबूत हुआ। इससे बाली तहसील के ग्रामों विशेषकर—तखतगढ़ बिजापुर, बाकली, कोसेलाव, बाणोद, ढोला, पुराडा, पोमावा, कोलीवाडा, पालडी में जागृति पैदा हुई। सर्वश्री पुखराजजी परिहार-बाणा केसाजी चौधरी-बाणोद मसराजी ढोला, भाटरमलजी ढोला नवलाजी ढोला, धनेचन्दजी मेहता-तखतगढ शिवलालजी भाटून, कानसिंहजी बाणा दलपतसिंहजी बाणोद भूरारामजी भाटून भीकमचन्दजी कोसेलाव आदि कार्यकर्ताओं ने राजगुरुजी के सहयोग से गांवों में अभूतपूर्व जागृति पैदा की। बाली तहसील और पाली जिला स्तर पर संगठन का काम कर रहे सर्वश्री मीठालालजी काका—सोजत मगारामजी जांगिड—गुन्दोज, शंकरलालजी वकील—पाली वल्लभदासजी अरोडा—पाली, गणेशजी लुहार—सान्डी धनपतिराजजी भण्डारी—सोजत, वासुदेवजी शास्त्री—जतारण, धनराजजी वर्मा—पाली माणकलालजी माथुर—सोजत फूलचन्दजी बापना—सान्डेराव, प्रेमराजजी मेहता—बीसल चम्पालालजी राणावत—खुडाला, रूपचन्दजी बागरेचा—फालना गोकुलजी मोदी—फालना द्वारकादासजी गुप्ता—बाली छोटमलजी सुराणा—बाली, विजयमलजी सुराणा—बाली का हर समय राजगुरुजी को सहयोग मिलता रहा।



लेखक का सम्पर्क श्री राजगुरु से सर्वप्रथम 1946–47 नाडोल व देवली में आयोजित सम्मेलनों में हुआ और तब से उनके स्वर्गवास तक हर आन्दोलन, संगठन व चुनाव-कार्य में अटूट साथ रहा। सन् 1952 में विधानसभा के प्रथम चुनाव में सुमेरपुर क्षेत्र का मेरे सारे चुनाव-कार्य का संचालन राजगुरुजी ने ही किया था।

सुबह जल्दी नाश्ता करके घर से निकलना और देर रात तक घर पहुँचकर भोजन करना यह उनका दैनिक कार्यक्रम था। दिन भर काम करते हुए चाय और सिगरेट उनके साथी थे। उनकी टोली तो अभावग्रस्त दुःखी शोषित-पीड़ित लोगों की ही टोली थी। ये लोग ही उनके दरबार के दरबारी थे– चाहे कांग्रेस का दफ्तर हो चाहे पंचायत कार्यालय। सुमेरपुर के लोग उनके सरपंच-काल को कभी नहीं भूल सकते। आज जो सुमेरपुर देश की एक प्रमुख मण्डी के रूप में उभरकर सामने आया है उसका श्रेय राजगुरु जी को ही जाता है। आज सुमेरपुर की नगरपालिका का वार्षिक बजट करीब एक करोड़ रुपये का है जबकि आजादी के पूर्व सुमेरपुर पंचायत (सन् 1945) का बजट मात्र 65/– रु का था, जिसमें चपरासी की तनख्वाह रु 48/– ही मुख्य व्यय था और गांव की सफाई पर रु 6/- और डाक-स्टेशनरी पर रु 6/– और अन्य खर्च रु 5/ रखा गया था।

आजादी के बाद पंचायत के नये कानून के अन्तर्गत हुए चुनावों में राजगुरुजी सरपंच चुने गये और उनके कार्यकाल में सुमेरपुर ने अभूतपूर्व तरक्की की। सर्वप्रथम पंचायत भवन (मौजूदा नगरपालिका भवन) बनवाया गया। बाजार की सड़कों का निर्माण करवाया। रेडियो सेट खरीदकर आम जनता तक समाचार व सूचनाएं पहुंचाने का कार्य किया। वाचनालय का निर्माण करवाया। युवकों और छात्रों में खेलों के प्रति आकर्षण पैदा करने के लिए मनोरंजन केन्द्र की स्थापना की। प्रतापसागर नामक पेयजल की सुविधा हेतु कुआ तैयार करवाया जहां स्नानागार भी बनवाये गये। आम जनता के हितार्थ शौचालय व मूत्रालय बनवाये गये, चिकित्सालय भवन का निर्माण भी इसी दौरान हुआ। सुमेरपुर में विद्युतीकरण की योजना भी उसी काल में बनी तथा कृषि उपज मण्डी समिति की स्थापना हुई। रूपबाग का निर्माण भी इसी काल में हुआ। सुमेरपुर तथा ऊंदरी में सभी मोहल्ला-गलियों में पक्की सड़कों व नालियों का निर्माण कराया गया। उन्हीं के कार्यकाल में केन्द्रीय उद्योगमंत्री श्री मनुभाई शाह ने उद्योग-बस्ती का शिलान्यास किया। हाई स्कूल के लिए अतिरिक्त भवन बनवाया गया। सुमेरपुर के लिए जलप्रदाय योजना उसी काल में स्वीकृत हुई। इतना ही नहीं, विकास का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं रहा जहां राजगुरुजी ने सुमेरपुर की प्रगति के लिए कार्य नहीं किया हो।

स्वर्गीय राजगुरुजी विविध प्रतिभाओं के धनी थे। वे साहित्यकार, पत्रकार-संवाददाता भी रहे। सन् 1941 में सुमेरपुर में 'सुमेरपुर साहित्यकुल' की स्थापना की। सन् 1955 में पाली जिला पत्रकार संघ के उपाध्यक्ष पद पर चुने गये। सन् 1948 में राजगुरुजी ने प्रौढ शिक्षा संघ—सुमेरपुर की स्थापना की और संघ के प्रथम मंत्री चुने गये। जन हितार्थ 1949 में सर्वोदय वाचनालय की स्थापना की। सन् 1958 में श्री राजगुरु 'दी सुमेरपुर को आपरेटिव मार्केटिंग सोसायटी लि०' के अध्यक्ष पद पर चुने गये। जिला कांग्रेस कमेटी के जीवनपर्यन्त कर्मठ कार्यकर्ता रहे और उपाध्यक्ष मंत्री आदि कई पदों का वर्षों तक सुशोभित करते रहे।

राजगुरुजी सर्वसुलभ व्यक्ति थे। हर एक के लिए हर समय सहयोग करने को, साथ चलने को तैयार रहते थे। जनहित के सार्वजनिक कार्यों में रात दिन लगे रहना उनके जीवन का ध्येय बन चुका था। आज का सुमेरपुर उन्हीं की देन है और यही उनका सच्चा स्मारक है।

—मोहनराज जैन

सोजत के सेनानी
श्री यशवन्त 'रुचिर'



□

श्री यशवन्त रुचिर वास्तव में कर्मशील व्यक्ति हैं। जीवन में सादगी और संयम तथा परिग्रह-रहित स्वच्छ व सन्तुष्ट जिन्दगी का नमूना देखना हो तो इनको देखिये। रुचिरजी पेशे में पत्रकार हैं, पर आप राजनैतिक व सामाजिक दृष्टि से प्रगतिशील विचारों के धनी रहे हैं। प्रारम्भ से ही इनकी राजनीति में रुचि रही है।

सन् 1937 में इन्होंने पंजाब युनिवर्सिटी से मैट्रिक की परीक्षा पास की और तत्काल ही सार्वजनिक सेवा में लग गये। सन् 38 39 में आप पंजाब आर्य युवक परिषद् के मंत्री पद पर रहे और युवकों को संगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। साहित्य में इनकी रुचि विद्यार्थी जीवन से ही थी। सन 1940 में अबोहर में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर स्वागत समिति के कार्यालय मंत्री रहकर इन्होंने सम्मेलन के सफल आयोजन में सक्रिय भाग लिया। इस सम्मेलन के पश्चात् उनकी रुचि साहित्य-सेवा की



भार बनती गई। उत्तर प्रदेश से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'उन्नाव टाईम्स' और 'रणस्थली' के सम्पादकीय विभाग में उन्होंने काम किया। इस दौरान इनका सम्पर्क हुआ क्रान्तिकारी राजा महेन्द्रप्रताप, बाबू सम्पूर्णानन्द, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, बाबू श्रीप्रकाश, विजयसिंहजी पथिक, शोभालालजी गुप्त, हरिभाई किंकर, गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' से। यह सम्पर्क कइयों से बड़ा निकट का हुआ और साहित्य सेवा के साथ-साथ देश की आजादी के लिए संघर्ष करने का भी मानस बनता गया। सन् 41–42 में रुचिरजी मारवाड़ लोक परिषद् से जुड़ गये और जनजागृति का कार्य करने लगे।

सन् 1943 की पांच फरवरी को जोधपुर में सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेते हुए रुचिरजी को गिरफ्तार किया गया। उस समय मारवाड़ लोक-परिषद् के 16वें डिक्टेटर चण्डावल निवासी श्री मांगीलाल त्रिवेदी 'आलीशान' थे और इन्हीं के साथ रुचिरजी भी गिरफ्तार किये गये। जेल में इनकी रिहाई दिनांक 30.5.44 को हुई और इस बीच इन्हें अनेक यातनाएं दी गई। कुपोषण के फलस्वरूप जेल में ही इनके पेट में भयंकर दर्द हुआ और अपेंडिक्स का आपरेशन कराया गया। उस समय जेल में दी गई यातनाओं के फलस्वरूप इनकी कमर में जो दर्द पैदा हुआ वह आज तक नहीं मिट पाया है।

देश के आजाद होने के पश्चात् भी आर्थिक और सामाजिक आजादी हेतु रुचिरजी निरन्तर संघर्षशील रहे हैं। संयुक्त ट्रेड यूनियन संघर्ष समिति के आह्वान पर सन् 1966 के आन्दोलन में भाग लेने पर वे गिरफ्तार किये गये। फिर सरकार ने इन पर से मुकदमा उठा लिया। इसी प्रकार के आन्दोलनों में ये कई बार गिरफ्तार हुए हैं और अपनी राजनैतिक व आर्थिक मान्यताओं पर अडिग रहते हुए आप अपूर्व निर्भीकता का परिचय देते हुए कार्य करते रहे हैं।

अभी इसी वर्ष सोजत में हुए साम्प्रदायिक झगड़ों के मध्य दोनों वर्गों के बीच बढ़ते तनाव को रोकने की दृष्टि से रुचिरजी संकट के बीच फंस गये। अपने छोटे कद, झुकी हुई कमर और वृद्धावस्था के कारण भगदड़ के और पुलिस द्वारा किये गये लाठी चार्ज के शिकार हुए। पुलिस लाठी चार्ज से उनके हाथों पांवों व कमर में चोटें आयीं और आप बुरी तरह घायल हो गये।

श्री रुचिर साहित्य-लेखन में अभी भी सतत् सक्रिय हैं और पत्रकारिता के माध्यम से जन समस्याओं के निराकरण में रुचि लेते हैं। स्वाभिमान इनमें कूट-कूट कर भरा है। इसी कारण इन्होंने स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में पेंशन के लिए प्रार्थना-पत्र भी नहीं दिया। रुचिरजी पिछले 15 वर्षों से सोजत में रहकर साहित्य सेवा में लगे हुए हैं।



अध्यापक-सेनानी

श्री पुष्पेन्द्र झाला 'पथिक'

श्री पुष्पेन्द्र झाला पथिक स्वतन्त्रता सेनानी तो है ही, साथ में उच्चकोटि के कवि और साहित्यकार भी हैं। इनका जन्म देवली कलां (चण्डावल) में हुआ और प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर ये ग्राम चण्डावल में अध्यापक के पद पर नियुक्त हो गये। साहित्य में रुचि होने से राष्ट्रीयता की लहर से वे भला अछूते कैसे रहते और फिर चण्डावल तो राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र था। यहां के मांगीलालजी 'आलीशान', छगनारामजी, नथमलजी मूथा, रामसुखजी पुरोहित व डॉ० दयालसिंहजी सरीखे प्रबुद्ध व सक्रिय कार्यकर्ता लोक परिषद् का कार्य कर रहे थे। उधर मारवाड़ के जागीरदारों में चण्डावल ठाकुर अपने आतंक व दमन के लिए प्रसिद्ध था। इन हालातों में संघर्ष आवश्यक भी था। आप सन् 1938 से ही मारवाड़ लोक-परिषद् से जुड़ गये।

28 मार्च 1942 को आयोजित जिम्मेदार हुकूमत दिवस के आयोजन के पूर्व ही जागीरदार चण्डावल ने इन्हें निर्वासित करार दे दिया और इन्हें सपरिवार जोधपुर आकर रहना पड़ा। यह स्मरणीय है कि इस दिन चण्डावल में जागीरदार के दो–ढाई सौ लठैत घुड़सवारों ने लोक परिषद् के कार्यकर्ताओं व निर्दोष किसानों की जो पिटाई की उसकी मिसाल अन्यत्र नहीं मिलती। ठाकुर चण्डावल के जुल्मों का विरोध करने के फलस्वरूप उन्हें न केवल बारह वर्ष की अध्यापक की नौकरी से हाथ धोना पड़ा वरन् अनेक यातनाएं व आर्थिक हानियां भी उठानी पड़ी। लेकिन इन मुसीबतों ने पुष्पेन्द्रजी में जागीरी-जुल्मों के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष करने का साहस व जोश पैदा किया और अखबारों में संवाद, लेख तथा मारवाड़ी भाषा में गीत कविताएँ आदि लिख कर जनता में जागृति पैदा करने व जोश भरने में अपने आपको समर्पित कर दिया। इस संघर्ष काल में पुष्पेन्द्रजी लोकनायक श्री जयनारायण व्यास, मथुरादासजी माथुर, मीठालालजी त्रिवेदी, हरिभाई किंकर आदि



नेताओ के सम्पक मे आये और उनके माग दशन म लोक-परिषद् की गतिविधियो मे व्यापक रूप से भाग लेने लगे। ग्राम देवली कला मे बेरे के जागीरदार द्वारा मगलगिरी नामक किसान की बेगार निकालने से मना करने पर क्रूरतापूण ढग से हत्या की गई थी और चोधरी रूपाराम की भी ऐसे ही कारणो से धोखे स हत्या की गई थी जिसके विरुद्ध पुष्पेन्द्रजी ने अपनी आवाज बुलन्द की और दोषी व्यक्तियो के विरुद्ध निडरतापूवक कायवाही की।

आजादी के बाद इनका झुकाव रचनात्मक प्रवत्तियो की ओर अधिक रहा और इन्होने सर्वोदयी नेता गोकुलभाई भटट के साथ भूदान पद यात्रा म पाली जिले का दौरा किया। उनके गीता और कविताओ की कई पुस्तकें किताब घर जोधपुर से प्रकाशित हुइ है। इनकी कविताएँ लोग बडे चाव से गात थ जिनम अत्यन्त लोकप्रिय गीतो की कुछ पक्तिया इस प्रकार हैं —

हे ओ जागो जवानो !
था न राष्ट्र रो निर्माण करनो है— जागो जवानो !
थे हाल सूता हो जागो जवानो !

किसानो की दयनीय दशा का चित्र इन्होने यो खीचा है

कामेतो ललकारे हमे, थने धरती मु डे बोल ओ
मून राखिया मिनख मरेला,
मन म तोल ओ, टेम बोलन री

कवि आगे कहता है —

यह अ धयारी रातो माये, खेतो मे कुण दौडे ओ,
चौमासे सियाले मे कुण पडिया चोडे ओ,
बोल मुण्डा सू ।

जागीरदारी प्रथा की बठ-बेगार सुनाते हुए कवि कहता है —

रोज रोज बेगारो माये, म्हाने सरवा तलता र,
माचो न राखो तो म्हाने, नीच नाख ल जाता रै,
ठण्ड मे ठरलोडा मरता, मोडा बीचे भाथा रे ।
महीनो पोस रो, हा ओ महीनो पोस रो ।

धीणे थाणे म्हारे घरे, छाछ रा है वादा रे ।
जता दे जावणिया लेता, घोडा मादा रे ।
कोटो करेला, हां ओ कोटो करेला ।

ऊटो ने घोडों रे ताइ भारा मोटा लाता रे ।
पग उलवाणा पदल जाता आवल खाता रे,
म्हारो सारो नो, जुल्मो रे आगे कोइ चारो नो ।

एक दूसरी कविता मे पुष्पेन्द्रजी के क्रातिकारी बोल इस प्रकार है —

मजदूरो की मेहनत माथे मोटा मौज उडाव रे,
ए महला बसे, मोटरो घूमे मीठा खाव रे,
कमाई करसा री, हा ओ कमाई करसा री,
आ लूट देखो, लाबा बरसो री ।।

खून रो पसीनो कर ने, कडी मेहनत करो रे
ए निकमा बैठा हाटों मे, ब्हारों ब्याज भरो रे—
डोडी मितियो री, ए डोडी मितियों री
ए लेखो लेवे रतिया रतिया री, डोडी मितियो री ।।

पुष्पेन्द्रजी आज भी समाज सुधार विषयक भ्रष्टाचार के विरुद्ध और आजादी के बाद नेताओ मे आराम-तलबी व भाइ भतीजावाद क विरुद्ध गीत लिखत रहते है। इन दिना इनका निवास स्थान बिलाडा (जोधपुर) है।



एक तपोमूर्ति
श्री मोहनलाल कठास्थले

□

श्री मोहनलालजी कठास्थल का जन्म 27 अक्टूबर सन् 1902 का श्री पूनमचन्दजी कठास्थल (जोशी) के घर गाँव बिराटिया खुद परगना जतारण म हुआ था। उनकी शिक्षा उनक गाव बिराटिया व सन्दम स्थित पाठशाला म हुई। श्री सनातन धम पाठशाला—ब्यावर म इन्होने मिडिल पास किया। लगातार अभ्यास के फलस्वरूप इन्ह अग्रजी व हिन्दी के अलावा उर्दू मराठी सस्कृत तलगू व गुजराती भाषाओ का भी अच्छा ज्ञान हो गया था। सन् 1926 म एम० गिरधारीलाल बक सिकन्दराबाद म खजाची क पद पर इनकी नियुक्ति हुइ।

उन दिनो राष्ट्र म महात्मा गाधी का स्वराज्य आन्दोलन जोरो पर था और विदेशी कपडा की होलिया जलाई जाती थी। आन्दोलन के सिलसिले म हैदराबाद म इन्होन श्रीमती सरोजनी नायडू का भाषण सुना और नौकरी स त्याग-पत्र देकर मारवाड का ओर प्रस्थान कर दिया। मारवाड के गावो म सामन्तो जुल्मो और



नादिरशाही कानूनों का बोल बाला था। इनकी कहीं सुनवाई नहीं होती थी। मारवाड़ के 83 प्रतिशत से अधिक गांव जागीरी पट्टे में थे और इनमें से अधिकांश को न्यायिक अधिकार थे यानि अदालत को चलाने तथा सजा देने के अधिकार थे। अतः जो भी इन ठाकुरों के अत्याचारों के विरुद्ध बोलता उस पर मनमाने ढंग से मुकद्दमे चलाकर सजा देते और परेशान करते हथकड़िया बेड़िया पहना कर बेइज्जत करते। ऐसे ही माहौल में कठोरथलजी अपने गांव बिराटिया आये। इनसे गरीब किसानों व बेट-बेगार में पिसने वाले गरीब लोगों की हालत देखी नहीं गई। तब इन्होंने जन चेतना का कार्य शुरू कर दिया।

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास को मारवाड़ से निष्कासित (देश निकाला) किया जा चुका था और वे ब्यावर में रहकर आगीवाण नामक अखबार प्रकाशित कर शोषित व दबे हुए लोगों की आवाज बुलन्द कर रहे थे। श्री कठोरथल ने ब्यावर जाकर उनसे सम्पर्क किया। व्यासजी से मिली प्रेरणा और उत्साह ने इनके जोश को कई गुणा बढ़ा दिया। ब्यावर में ही इनका सम्पर्क श्री हरिभाऊ किंकर, गोपीकृष्णजी विजयवर्गीय आदि से हुआ। जो ब्यावर में व्यासजी के साथ ही चिरंजीलालजी की बगीची में रहते थे। ब्यावर में ही इन्होंने सर्वप्रथम पंडित जवाहरलाल नेहरू के एक आम सभा में दर्शन किये और दिल्ली से अहमदाबाद जाते हुए ब्यावर स्टेशन पर ही महात्मा गांधी के दर्शन भी किये। गांधीजी ने रेल डिब्बे की खिड़की से हाथ बाहर निकाल कर हरिजन फण्ड के लिये चंदा मांगा तब कठोरथलजी ने भी एक पैसा गांधीजी के हाथ पर रखा। इस घटना का इन पर अमिट प्रभाव पड़ा और इन्होंने गांवों की गरीब जातियों व अछूतों की सेवा करने का व्रत ले लिया।

श्री कठोरथल की पुश्तैनी काश्त की मानमता नामक भूमि निमाज ठाकुर ने जब्त कर ली और उस लेकर मुकद्दमेबाजी व दंगा फसाद शुरू हुए। जागीरी गुण्डों ने कठोरथलजी को जिन्दा नदी में गाड़ने का षड्यन्त्र रचा और पकड़कर ले गये। पर, रात्रि को ही इसकी खबर निमाज के सेठ रिखबदासजी राका व श्री मांगीलालजी क्रांतिकारी को हो गई जो सैकड़ों लोगों के साथ मौके पर पहुंच गये और इन्हें छुड़ा दिया। मानमता की जमीन का फैसला इनके पक्ष में होने पर भी इन्हें भूमि का कब्जा नहीं दिया गया जिसके लिए जयनारायणजी व्यास की मदद ली गई और फलस्वरूप इन्हें यह भूमि प्राप्त हो सकी। जागीरी जुल्मों के कारण इन्हें अपना बिराटिया गांव छोड़कर जैतारण आकर बसना पड़ा।

गांवों में लोक परिषद् का प्रचार करते वक्त कई बार उन पर प्राण घातक हमले हुए। बलुन्दा गांव में आयोजित एक सभा में जागीरी गुण्डों ने नगारे बजाकर सभा को भंग करना चाहा पर लोग बैठे रहे। फिर हमला करके इन्हें व मांगीलालजी क्रांतिकारी व मीठालालजी छगाणी सहित छः कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया। उस सभा में चुन्दा वाले बाबा श्री हीराचन्दजी मौजूद थे। बलुन्दा के सेठ चांदमल ने जमानत देकर उन्हें रिहा कराया। अपने गांव बिराटिया में इन्होंने व श्री मांगीलालजी निमाज वाले ने सभा का आयोजन किया। जागीरों गुण्डों ने सभा में ही जलती हुई लालटेन श्री कठोरथल पर फेंकी और लाठियों से हमला कर इन्हें बुरी तरह घायल कर दिया। गांव वालों ने छुप कर श्री लोकनायक व्यासजी को तार किया और व्यासजी डा० पुरुषोत्तम दासजी को साथ लेकर तत्काल आये और इलाज की समुचित व्यवस्था की। जैतारण क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्ता श्री वासुदेवजी शास्त्री इनके परम सहयोगी थे।

श्री कठोरथल को लोकनायक जयनारायणजी व्यास का निम्न गीत बहुत पसन्द था जिसे वे हर मीटिंग में गाया करते थे—

भूखे की सूखी हड्डी से, वज्र बनेगा महा भयंकर।
ऋषि दधीचि को ईर्ष्या होगी, नेत्र नया खोलेंगे शंकर।।1।।

अन्न विहीन उदर की आह, दावानल सी बनकर भीषण।
भस्मीभूत कर देगी उनको, जो दीनों का करते शोषण।।2।।

बाकी मत रख खूब सताले, खूब दिखा दे अपना पशुबल।
निर्बल का बल देख रही है, तेरे सब कुकृत्य वो प्रतिपल।।3।।

जो अर आज सता ले मुझको, आज मुझे देता आजादी।
तेरे इन कृत्यों में सोई, छुपकर तेरी ही बर्बादी।।4।।

अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं है, शक्ति नहीं है और न वाणी।
साहस हिम्मत तनिक नहीं है निर्बल हूं एक पामर प्राणी।।5।।

पर है हृदय अभी बुझ तन में और जलना है भीतर भारी।
वह सुलगेगी वह फैलेगी जल जायगी दुनिया सारी।।6।।

नव प्रकाश लख आग उठेगी चामुण्डा चढ़ शशी खप्पर।
देख देख लपटों की झपटें, ताण्डव नृत्य करेंगे शंकर।।7।।

तोड़ हड्डिया चीर कलेजा, बहा रुधिर सब जी की करले।
बीन-बीन हड्डी-लोहू से रक्तपान कर मन को भर ले।।8।।

कल ही तुम पर गाज गिरेगा, तेरा सभी समाज गिरेगा।
तख्त गिरेगा ताज गिरेगा, महल गिरेगा, राज गिरेगा।।9।।

नहीं रहेगी सत्ता तेरी, बस्ती तो आबाद रहेगी।
जालिम तेरे सब जुल्मों की उसमें कायम याद रहेगी।।10।।

श्री कठोरथल स्वयं अच्छे गायक और लेखक हैं। इन्होंने तीन पुस्तकें लिखी है—

1 जनता का राज्य 2 बड़ों की राय 3 वीरों की पुकार और ये तीनों ही प्रकाशित होकर काफी लोकप्रिय हुई हैं। आज 85 वर्ष की आयु में भी इनमें गजब का जोश और आत्म-बल है।





राष्ट्र भक्त सेनानी

श्री वासुदेव भटनागर



श्री वासुदेव भटनागर का जन्म सोजत शहर में सन् 1922 के अक्टूबर माह मे हुआ था। इनका परिवार आर्यसमाजी विचारों से प्रभावित होने के कारण सुधारवादी तो था ही, साथ ही राष्ट्रीय विचारों से भी प्रभावित था। बचपन से ही इन्हें मेवाड़ के महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह छत्रपति शिवाजी व महर्षि दयानन्द आदि के जीवन-चरित्र पढ़ने को मिले थे, अत राष्ट्र भक्ति का बीजारोपण तो विद्यार्थी काल मे ही हो गया था।

श्री भटनागर ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि सन् 1940 के जून माह में सोजत रोड के श्री मीठालालजी काका तथा श्री नटवरलाल जी पण्डित ने इन्हें अपने घर बुलाकर पहले तो आर्य-समाज द्वारा हैदराबाद के चले गये सत्याग्रह मे भाग लेने के लिये उनकी प्रशंसा की फिर देश की आजादी के लिये चलाये जा रहे आन्दोलन में सक्रिय सहयोग देने की प्रेरणा दी। उन दिनों मारवाड़ लोक-परिषद् पर पाबन्दी लगी हुई थी। सत्याग्रही कार्यकर्त्ता निषेधाज्ञा भंग कर सत्याग्रह करते थे और जेल जाते थे। श्री भटनागर का भी सत्याग्रह कार्यक्रम निश्चित हो गया। 22 जून 1940 की सुबह साढ़े आठ बजे बिना घरवालों को सूचित किये आप घर से निकल पड़े। रास्ते में मन्दिर के पास श्री रामपालजी सढढा ने मस्तक पर तिलक लगाया और माला पहनाकर विदा दी। उनके साथ इनका छोटा भाई प्रह्लाद व मित्र मीसालालजी थे। आप नारे लगाते हुए धानमण्डी पहुंचे। पुलिस ने आपको गिरफ्तार कर सोजत सबजेल मे रख दिया जहां पहले से मौजूद श्री मुन्नालाल वैद्य श्री हरिशंकर कन्टालिया वाले तथा श्री विजयशंकरजी दवे ने स्वागत कर आपको अपने साथ रखा।

थोड़े दिनों पश्चात् ही मारवाड़ लोक-परिषद् तथा राज्य सरकार के बीच समझौता हो गया और 27 जून को सभी कार्यकर्त्ता जेल से रिहा कर दिये गये। 27 जून 1940 के दिन का जुलूस सोजत की जनता के लिये एक विशेष यादगार बना रहेगा क्योंकि इस जुलूस में सैकड़ों नर-नारियों व बच्चों के साथ-साथ ढोल बाजों के बीच गगनभेदी नारे—भारत माता की जय, वन्दे मातरम् महात्मा-गांधी की जय आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है—गूंज रहे थे। यह दृश्य सोजत की जनता के लिये नया तथा विस्मयकारी था क्योंकि कुछ दिन पहले तक तो सत्याग्रहियों के अलावा किसी के मुंह से यह नारे निकलते तक नहीं थे। आम लोग यही कहते फिरते थे कि इन नारों के लगाने से क्या अंग्रेजी राज चला जायगा? या जागीरदारी चली जायेगी?

फिर मारवाड़ लोक परिषद् द्वारा जिम्मेवार हकूमत का आन्दोलन छेड़ा गया और आप दूने उत्साह से मीठालालजी 'काका' से प्रेरणा ले कर इस आन्दोलन को तेज गति देने में सक्रिय हो गये। सोजत मे एक वानर सेना तैयार की। यह वानर सेना प्रतिदिन प्रभात फेरी जुलूस आदि निकालती और नारे लगाकर जन-जागृति पैदा करती। इसी आन्दोलन के सिलसिले में आप को जोधपुर में 6 जून 1942 को पुन गिरफ्तार किया गया जहां से इनकी रिहाई 9 जुलाई 1943 को हुई।

इसके पश्चात् श्री वासुदेवजी भटनागर के जीवन घटना चक्र ने पल्टा खाया और सन् 1944 मे इन्होंने भारतीय सेना में नौकरी प्राप्त की। ये बर्मा सिंगापुर आदि मोर्चों पर भी गये। युद्ध समाप्ति पर पुन भारत लौटे। सैनिक सेवा से निवृत्ति लेकर फाउण्ड्री के काम का प्रशिक्षण लिया और चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स में नौकरी करली। सन् 1982 में वहां से सेवा निवृत्त होकर आपने अब अजमेर में ही अपना निवासस्थान बना लिया है और योग-साधना में अपना पूरा समय लगा रहे हैं।



संघर्षशील जनसेवक

सेठ श्री रिखबदास



आज से 75 वर्ष पूर्व जनारन तहसील के निम्बाज कस्बे में स्वर्गीय सेठ रिखबदासजी का जन्म वहां के एक प्रतिष्ठित राका (ओसवाल) परिवार में हुआ। स्थानीय पोशाल (पाठशाला) मे ही पढ़ाई हुई पर कुशाग्रबुद्धि के कारण रिखबदासजी एक विशिष्ट व्यक्तित्व वाले होनहार मेधावी पुरुष के नाते शीघ्र ही लोकप्रिय हो गये। उस जमाने में जागीरी अत्याचारों से सारी प्रजा बड़ी पीड़ित थी। गांवों से लोग आते और आतंक



नादिरशाही कानूनों का बोल-बाला था। इनकी कहीं सुनवाई नहीं होती थी। मारवाड़ के 83 प्रतिशत से अधिक गांव जागीरी पट्टे में थे और इनमें से अधिकांश को न्यायिक अधिकार थे यानि अदालत को चलाने तथा सजा देने के अधिकार थे। अतः जो भी इन ठाकुरों के अत्याचारों के विरुद्ध बोलता उस पर मनमाने ढंग से मुकद्दमे चलाकर सजा देते और परेशान करते हथकड़ियां बेड़ियां पहना कर बेइज्जत करते। ऐसे ही माहौल में कठास्थलजी अपने गांव बिराटिया आये। इनसे गरीब किसानों व बेठ-बेगार में पिसने वाले गरीब लोगों की हालत देखी नहीं गई। तब इन्होंने जन चेतना का कार्य शुरू कर दिया।

लोकनायक श्री जयनारायण व्यास को मारवाड़ से निष्कासित (देश निकाला) किया जा चुका था और वे ब्यावर में रहकर 'आगीबाण' नामक अखबार प्रकाशित कर शोषित व दबे हुए लोगों की आवाज बुलन्द कर रहे थे। श्री कठास्थल ने ब्यावर जाकर उनसे सम्पर्क किया। व्यासजी से मिली प्रेरणा और उत्साह ने इनके जोश को कई गुणा बढ़ा दिया। ब्यावर में ही इनका सम्पर्क श्री हरिभाई किंकर, गोपीकृष्णजी विजयवर्गीय आदि से हुआ जो ब्यावर में व्यासजी के साथ ही चिरंजीलालजी की बगीची में रहते थे। ब्यावर में ही इन्होंने सर्वप्रथम पंडित जवाहरलाल नेहरू के एक आम सभा में दर्शन किये और दिल्ली से अहमदाबाद जाते हुए ब्यावर स्टेशन पर ही महात्मा गांधी के दर्शन भी किये। गांधीजी ने रेल डिब्बे की खिड़की से हाथ बाहर निकाल कर हरिजन फण्ड के लिये चन्दा मांगा तब कठास्थलजी ने भी एक पैसा गांधीजी के हाथ पर रखा। इस घटना का इन पर अमिट प्रभाव पड़ा और इन्होंने गांवों की गरीब जातियों व अछूतों की सेवा करने का व्रत ले लिया।

श्री कठास्थल की पुश्तैनी काश्त की मानमता नामक भूमि निमाज ठाकुर ने जब्त कर ली और उसे लेकर मुकद्दमेबाजी व दंगे फसाद शुरू हुए। जागीरी गुण्डों ने कठास्थलजी को जिन्दा जमीन में गाड़ने का षड्यन्त्र रचा और पकड़कर ले गये। पर रात्रि को ही इसकी खबर निमाज के सेठ रिखबदासजी रांका व श्री माधोलालजी क्रांतिकारी को हो गई जो सैकड़ों लोगों के साथ मौके पर पहुंच गये और इन्हें छुड़ा दिया। मानमता की जमीन का फैसला इनके पक्ष में होने पर भी इन्हें भूमि का कब्जा नहीं दिया गया जिसके लिए जयनारायणजी व्यास की मदद ली गई और फलस्वरूप इन्हें यह भूमि प्राप्त हो सकी। जागीरी जुल्मों के कारण इन्हें अपना बिराटिया गांव छोड़कर जैतारण जाकर बसना पड़ा।

गांवों में लोक परिषद् का प्रचार करते वक्त कई बार उन पर प्राण घातक हमले हुए। बलुन्दा गांव में आयोजित एक सभा में जागीरी गुण्डों ने नगारे बजाकर सभा को भंग करना चाहा पर लोग बैठे रहे। फिर हमला करके इन्हें व माधोलालजी क्रांतिकारी व भीकमचन्दजी छंगाणी सहित छः कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया। उस सभा में धुन्धा वाले बाबा श्री हीराचन्दजी मौजूद थे। बलुन्दा के सेठ चांदमल ने जमानत देकर उन्हें रिहा कराया। अपने गांव बिराटिया में इन्होंने व श्री माधोलालजी निमाज वालों ने सभा का आयोजन किया। जागीरी गुण्डों ने सभा में ही जलती हुई लालटेन श्री कठास्थल पर फेंकी और लाठियों से हमला कर इन्हें बुरी तरह घायल कर दिया। गांव वालों ने छुप कर श्री लोक नायक व्यासजी को तार किया और व्यासजी डॉ॰ पुरुषोत्तम शर्मा को साथ लेकर तत्काल आये और इलाज की समुचित व्यवस्था की। जैतारण क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्ता श्री वासुदेवजी शास्त्री इनके परम सहयोगी थे।

श्री कठास्थल को लोकनायक जयनारायणजी व्यास का निम्न गीत बहुत पसन्द था जिसे वे हर मीटिंग में गाया करते थे—

भूखे की सूखी हड्डी से, वज्र बनेगा महा भयंकर।
ऋषि दधीचि को ईर्ष्या होगी, नेत्र नया खोलेंगे शंकर ॥1॥

अन्न विहीन उदर की आहें, दावानल सी बनकर भीषण।
भस्मीभूत कर देंगी उनको, जो दीनों का करते शोषण ॥2॥

बाकी मत रख खूब सताले खूब दिखा दे अपना पशुबल।
निर्बल का बल देख रही है, तेरे सब कुकृत्य को प्रतिपल ॥3॥

जी भर आज सता ले मुझको आज तुझे देता आजादी।
तेरे इन कृत्यों में सोई, छुपकर तेरी ही बर्बादी ॥4॥

अस्त्र नहीं है शस्त्र नहीं हैं शक्ति नहीं है और न वाणी।
साहस हिम्मत तनिक नहीं है निर्बल हूं एक पामर प्राणी ॥5॥

पर है हृदय आग कुछ तन में और जलना है भीतर भारी।
वह सुलगेगी वह फैलेगी जल जायेगी दुनिया सारी ॥6॥

नव प्रकाश लख जाग उठेगा, चामुण्डा पकड़ेगी खप्पर।
देख देख लपटों की झपटें, ताण्डव नृत्य करेंगे शंकर ॥7॥

तोड़ हड्डियां चीर कलेजा बहा रुधिर सब जी की करले।
दीन-हीन हड्डी-लोहू से, रक्तपान कर मन को भर ले ॥8॥

कल ही तुम पर गाज गिरेगा, तेरा सभी समाज गिरेगा।
तख्त गिरेगा ताज गिरेगा, महल गिरेगा, राज गिरेगा ॥9॥

नहीं रहेगी सत्ता तेरी, बस्ती तो आबाद रहेगी।
जालिम तेरे सब जुल्मों की, उसमें कायम याद रहेगी ॥10॥

श्री कठास्थल स्वयं अच्छे गायक और लेखक हैं। इन्होंने तीन पुस्तकें लिखी हैं—

1 जनता का राज्य 2 बड़ों की राय, 3 वीरों की पुकार और ये तीनों ही प्रकाशित होकर काफी लोकप्रिय हुई हैं। आज 85 वर्ष की आयु में भी इनमें गजब का जोश और आत्म-बल है।





राष्ट्र भक्त सेनानी

श्री वासुदेव भटनागर



श्री वासुदेव भटनागर का जन्म सोजत शहर मे सन् 1922 के अक्टूबर माह मे हुआ था। इनका परिवार आर्यसमाजी विचारो से प्रभावित होने के कारण सुधारवादी तो था ही, साथ ही राष्ट्रीय विचारो से भी प्रभावित था। बचपन से ही इन्हे मेवाड के महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह, छत्रपति शिवाजी व महर्षि दयानन्द आदि के जीवन चरित्र पढने को मिले थे अत राष्ट्र भक्ति का बीजारोपण तो विद्यार्थी काल मे ही हो गया था।

श्री भटनागर ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि सन् 1940 के जून माह मे सोजत रोड के श्री मीठालालजी काका तथा श्री नटवरलाल जी पण्डित ने इन्हे अपने घर बुलाकर पहले तो आर्य समाज द्वारा हैदराबाद के चले गये सत्याग्रह मे भाग लेने के लिये उनकी प्रशंसा की फिर देश की आजादी के लिये चलाये जा रहे आन्दोलन मे सक्रिय सहयोग देने की प्रेरणा दी। उन दिनो मारवाड लोक-परिषद् पर पाबन्दी लगी हुई थी। सत्याग्रही कार्यकर्त्ता निषेधाज्ञा भंग कर सत्याग्रह करते थे और जेल जाते थे। श्री भटनागर का भी सत्याग्रह कार्यक्रम निश्चित हो गया। 22 जून 1940 की सुबह साढे आठ बजे बिना घरवालो को सूचित किये आप घर से निकल पडे। रास्ते मे मन्दिर के पास श्री रामपालजी लढढा ने मस्तक पर तिलक लगाया और माला पहनाकर विदा दी। उनके साथ इनका छोटा भाई ब्रह्मदेव व मित्र घीसालालजी थे। आप नारे लगाते हुए धानमण्डी पहुचे। पुलिस ने आपको गिरफ्तार कर सोजत सबजेल मे रख दिया जहा पहले से मौजूद श्री मुन्नालाल वैद्य श्री हरिशंकर कन्टालिया वाले तथा श्री विजयशंकरजी देव ने स्वागत कर आपको अपने साथ रखा।

थोडे दिनो पश्चात् ही मारवाड लोक परिषद् तथा राज्य सरकार के बीच समझौता हो गया और 27 जून को सभी कार्यकर्त्ता जेल से रिहा कर दिये गये। 27 जून 1940 के दिन का जुलूस सोजत की जनता के लिये एक विशेष यादगार बना रहेगा क्योकि इस जुलूस मे सैकडो नर नारियो व बच्चो के साथ-साथ ढोल बाजो के बीच गगनभेदी नारे—भारत माता की जय, वन्दे मातरम्, महात्मा गाधी की जय, आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है—गूज रहे थे। यह दृश्य सोजत की जनता के लिये नया तथा विस्मयकारी था क्योकि कुछ दिन पहले तक तो सत्याग्रहियो के अलावा किसी के मुह से यह नारे निकलते तक नही थे। आम लोग यही कहते फिरते थे कि इन नारो के लगाने से क्या अग्रेजी राज चला जायगा? या जागीरदारी चली जायेगी?

फिर मारवाड लोक परिषद् द्वारा जिम्मेवार हकूमत का आन्दोलन छेडा गया और आप दूने उत्साह से मीठालालजी काका से प्रेरणा लेकर इस आन्दोलन को तेज गति देने मे सक्रिय हो गये। सोजत मे एक वानर सेना तैयार की। यह वानर सेना प्रतिदिन प्रभात फेरी जुलूस आदि निकालती और नारे लगाकर जन जागृति पैदा करती। इसी आन्दोलन के सिलसिले मे आप को जोधपुर मे 6 जून 1942 को पुन गिरफ्तार किया गया जहा से इनकी रिहाई 9 जुलाई, 1943 को हुई।

इसके पश्चात् श्री वासुदेवजी भटनागर के जीवन घटना चक्र ने पल्टा खाया और सन् 1944 मे इन्होने भारतीय सेना मे नौकरी प्राप्त की। ये ब्रह्मा सिंगापुर आदि मोर्चों पर भी गये। युद्ध समाप्ति पर पुन भारत लौटे। सैनिक सेवा से निवृत्ति लेकर फाउण्ड्री के कार्य का प्रशिक्षण लिया और चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स मे नौकरी करली। सन् 1982 मे वहा से सेवा निवृत्त होकर आपने अब अजमेर मे ही अपना निवासस्थान बना लिया है और योग साधना मे अपना पूरा समय लगा रहे है।



संघर्षशील जनसेवक

सेठ श्री रिखबदास



आज से 75 वर्ष पूर्व जैतारन तहसील के निम्बाज कस्बे मे स्वर्गीय सेठ रिखबदासजी का जन्म वहाँ के एक प्रतिष्ठित राका (ओसवाल) परिवार मे हुआ। स्थानीय पोशाल (पाठशाला) मे ही पढाई हुई पर कुशाग्रबुद्धि के कारण रिखबदासजी एक विशिष्ट व्यक्तित्व वाले होनहार मेधावी पुरुष के नाते शीघ्र ही लोकप्रिय हो गये। उस जमाने मे जागीरी अत्याचारो से सारी प्रजा बडी पीडित थी। गावो से लोग भ्रांत और आतंक



व अमानवीय व्यवहार की दर्दभरी दास्तानें सुनकर तो मिलनी और सेठ रिखबदास का खून खौल जाता। उनके हृदय में जागीरी प्रथा के लिए तीव्र घृणा पैदा हो गई। लोगों की शिकायतों को आगे भेजना उन्हें सलाह मशविरा देकर संघर्ष करने की हिम्मत बंधाना यह उनका मुख्य काम हो गया। ब्यावर शहर निकट होने से वहां पर चल रही राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिविधियों से परिचित रहने के कारण इनके विचार दृढ़ होते गये।

इसी दौरान समय के परिवर्तन के साथ मारवाड़ में राजनैतिक उथल पुथल मची। जोधपुर के तत्कालीन महाराजा श्री उम्मेदसिंह ने प्रतिनिधि सलाहकार सभा के गठन की घोषणा की और हर परगने से एक प्रतिनिधि का चुनाव हुआ। जैतारण व सोजत परगने की ओर से बावजूद जागीरदारों के कड़े विरोध के सन् 1941-42 में हुए इन चुनावों में सेठ रिखबदास भारी बहुमत से चुने गये। इस एसम्बली (प्रतिनिधि सभा) में इन्होंने जो सक्रिय भूमिका निभाई वह इनके निर्भीक प्रतिभाशाली और जन हितैषी व्यक्तित्व को स्पष्ट करती है। इन्होंने एसम्बली में जागीरी जुल्मों का उनके द्वारा ली जा रही बेठ-बेगार व लाग-बाग का स्पष्ट विवरण अपनी जोरदार व प्रभावशाली वक्तृत्व शैली में ऐसी सजीवता के साथ किया कि सरकारी और मनोनीत सदस्यों को भी इनके अनेक सुझाव मानने को मजबूर होना पड़ा। इसी सदन में दिनांक 16-3-42 को एसम्बली में दिये गये उनके भाषण के कुछ अंश इस प्रकार हैं

जागीरी गांवों में जागीरदारों की सख्ती तथा कालीसरे के जाटे उनालो व उनालो के लाटे कातामगा के वक्त लाटने और लागा-बागा व बेठ-बेगार व दूसरी असुविधाओं ने मिलकर मारवाड़ के किसानों को बेहद गरीब बना दिया। वे रोटी तक के मोहताज हो गये हैं बड़ी बड़ी मीलों से उनको कोई फायदा नहीं। इनको तो ऐसा काम चाहिए जिसको ये गरीब घर बैठ कर सकें और जिसमें बहुत ही थोड़ी पूंजी लगे। आपने आगे कहा— सरकार ने इकानामिक डवलपमेंट डिपार्टमेंट खोला है और इसके लिए रु 45000 00 का प्रावधान रखा है पर इसमें से 27000-00 रु तो सरकारी अमले की तनख्वाह में और बाकी सैर सपाटे में खर्च हो जायगा। यह भाषण उनके द्वारा एसम्बली में रखे गये प्रस्ताव सं 16 जिसमें उन्होंने मारवाड़ के किसानों व मजदूरों में व्याप्त बेकारी मिटाने और बेकारों की गणना कर एक डायरेक्टरी बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया था के सम्बन्ध में हुई बहस के वक्त का है। आज की स्थिति की पृष्ठभूमि में भी यह प्रस्ताव महत्वपूर्ण है। यह उनकी दूर दृष्टि का परिचायक है।

सेठजी द्वारा मारवाड़ प्रतिनिधि सभा में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव सं 3 दिनांक 11 3 42 को रखा गया था। प्रस्ताव इस प्रकार है —'यह सभा सरकार को सलाह देती है कि कम से कम हर ऐसे गांव में जहां आबादी 100 घरों से ज्यादा हो, स्कूल कायम किया जावे और बड़े-बड़े कस्बों में मिडिल स्कूल कायम किये जाएं। इस प्रस्ताव पर बोलते हुए इन्होंने कहा— मारवाड़ में 82 प्रतिशत जागीर है। जागीरदार लोग अपने ऐशो आराम के लिए लाखों रुपये खर्च करते हैं पर अपनी रिआया की तालीम की तरफ कतई ध्यान नहीं देते। जागीरदार अपनी मनमानी करने के लिए रिआया को अनपढ़ रखते हैं। मारवाड़ की हुकूमत का काम करने वाले साहबान् जोधपुर खास के रहने वाले हैं सो उनकी मंशा हमेशा यही रहती है कि वे मारवाड़ की जनता पर अपनी मनमानी हुकूमत करें। गवर्नमेंट का खजाना हमारी (गांवों की जनता की) वजह से भरा जाता है। लगान हम देते हैं कर हम देते हैं और शिक्षा व दूसरे सारे सुभीते शहर की जनता को मिलते हैं।

सन् 1942 व उसके आस-पास के वर्षों में मारवाड़ राज्य का शिक्षा का बजट कुल 10 लाख रुपये का था जिसमें अधिकांश जोधपुर शहर में ही खर्च होता था क्योंकि वहां एक कॉलेज 5 हाई स्कूल व कई मिडिल व प्राइमरी स्कूल थे। मारवाड़ के जागीरी गांवों में तो लड़के व लड़कियों के सरकारी सहायता प्राप्त व मान्यता प्राप्त गैर सरकारी कुल 57 स्कूल थे, जिन पर सरकार का कुल खर्च केवल रु 83 900 00 होता था। एसेम्बली के सदस्य रहते हुए इन्होंने जोधपुर के बाहर भी हाईस्कूल व मिडिल स्कूल खोलने पर बार-बार जोर दिया और तर्क दिया कि विलायत में हर शख्स पढ़ा हुआ है इसलिए वहां कानून नहीं जानने का उज्र नहीं माना जाना समझ में आ सकता है मगर यदि यह उसूल यहां लागू किया जाता है तो क्या सरकार का फर्ज नहीं है कि वह हर आदमी के पढ़ने का बन्दोबस्त करे? इन्होंने सन् 1942 में एसम्बली में जैतारण में मिडिल स्कूल व कन्या पाठशाला व निम्बाज में 5 वीं कक्षा तक की प्राथमिक स्कूल खोलने के प्रस्ताव भी पास करवाये। इसी सदन में दूसरी से निर्वाचित सदस्य बिलोवा निवासी स्वर्गीय श्री निहालचन्द गुलराजी के प्रस्ताव सं 10 जिसमें मारवाड़ में चार हाईस्कूल बरकाणा सोजत नागौर और बाड़मेर में आगामी वर्ष से ही अवश्य खोली जायें का श्री सेठ साहब ने जबरदस्त समर्थन किया और प्रस्ताव पास हुआ।

इसके अलावा पंचायतों के सरपंच पद पर जागीरदारों को मनोनीत न कर जनता के चुने हुए प्रतिनिधि होने चाहिये यह मांग भी रखी और गांव गांव में चारागाह (गोचर) हो तथा औषधालय खोले जाय यह मांग भी जोरदार शब्दों में रखी।

स्वर्गीय रिखबदासजी न कभी किसी से डरे न किसी से दबे।



स्वाभिमान उनमे कूट कूट कर भरा था। व अक्सर अपन बारे मे कहा करत थ—

"चाह गई चिन्ता मिटी, मनवा बे-परवाह ।
जिनको कुछ चाहत नहीं, सो शाहों के शाह ।।"

मारवाड लोक परिषद् के नेता सवश्री जयनारायणजी व्यास मथुरादासजी माथुर, रणछोडदासजी गटटानी व किसान नेता श्री बलदेवरामजी मिर्धा के साथ गावा का दौरा करके जनजागृति म सहयाग देत थ। देव मन्दिरा मे होन वाली पशुबलि का भी इ होने घोर विरोध किया और अनक स्थाना पर पशुबलि बन्द करवाई। द्वितीय विश्व-युद्ध क दौरान और बाद म प्राइस कन्ट्रोल व राशनिंग के कारण लागा को हुई परेशानिया म भी गाव गाव दौरा कर लोगा को राहत पहुचाई।

सेठ रिखबदासजी जीवन भर आन बान मान मर्यादा और जन हिताथ कार्यों क लिए सघष करत रह और अमर हो गये।



एक जुझारू व्यक्तित्व
श्री लालूराम शर्मा



टूटना मजूर पर झुकना नही, खलिहान म पडा सारा अनाज जला दिया गया, गाय भस बल चुरा लिये गय, लाठिया स सिर फाड दिया गया पर धुन के धनी लालूरामजी आजादी के सघष म अग्रणी रहे। इनका राजनतिक जीवन सन् 1933 स प्रारम्भ हुआ। सन् 1930 म सवप्रथम इनका सम्पक श्री कन्हैयालालजी व्यास (कनीरामजी) सिनला निवासी से हुआ जा पूना (महाराष्ट) मे काग्रेस के सक्रिय सदस्य थे और आजादी के सघष म इन्ह यरवदा जेल म 2 माह की सजा हुई थी। कन्हैया लालजी के समझान व उत्साह दिलाने के बावजूद भी प्रारम्भ म तो लालूरामजी काग्रेस के लिए काम करने को तयार नही हुए पर 3 वष बाद इन्ह भी एसा रग चढा कि गाव के काश्तकारो मीणा, बावरियो व मेघवाल आदि शोषित वग के लोगा को सगठित कर इन्ह लाग-बाग, बठ-बगार आदि न देने के लिए उकसाया। इनकी इन प्रारम्भिक हरकता के कारण स्थानीय ठाकुर अत्यन्त क्रुद्ध हुए और इनके विरुद्ध तरह तरह के षडयन्त्र ठिकाने के कारिन्दो शुरू कर दिय।

उन्ह दश भक्ति की ऐसी धुन सवार हुई कि य खादी का कुर्ता खरीदने पाली गये पर इन्ह य चीजे नही तब उन्होंने अपना (महाराष्ट) स यह सामान मगवाया पहनने लगे। ठाकुर के कारिन्दा ने न केवल इन पर पत्थर फके, चन्द दुष्टा ने तो टोपी पर थूकने की हरकत उन्ह 'काग्रेसी कुत्ता' कहकर पुकारने लगे, पर ये अडिग 1936 म य मारवाड के प्रमुख नता श्री जयनारायण मिलन जोधपुर गये। वहा व्यासजी तो नही मिल पर पत्नी ने उन्ह जोधपुर के अन्य नेताओ मानमलजी जन मिलाया। वहा कायकर्ताओ की एक मीटिंग म भी आपन की तकलीफो का वणन किया। वहा स दूना जोश लकर गाव लाम्बिया (पाली) लौटे और सगठन का काय शुरू। सवप्रथम इन्होंने ग्राम सिनला म किसानो को सगठित कर ठाकुर राणा साहब के विरुद्ध सघष छेड दिया। न ला। मे गोचर भूमि को ठाकुर क कब्जे स मुक्त कराया और फाटक से गाव के सारे मवशी मुक्त करा दिय। अब तो क्रोध का ज्वालामुखी फूट पडा और इन को जान म तयारी होने लगी। अपनी जान को जोखिम म देखकर य तक भूमिगत रह, पर अपना काय जारी रखा। इन दिना 'जरायम पेशा समझी जाने वाली जातिया—मीणा थोरी भील जिन्ह रावलो म तथा पुलिस मे दिन रात म तीन-तीन हाजरी देनी पडती थी उन्ह सगठित किया और सामन्ती के विरुद्ध बगावत क लिए तयार किया।

सन् 1939-40 म इनका सम्पक श्री रामप्रसादजी (पाली) व श्री रामप्रतापजी शर्मा (गुन्दोज) स हुआ। य स्वतन्त्रता सनानी लाम्बिया श्री लालूरामजी के पास गये और वहा परिषद् की शाखा स्थापित की। अब तो लालूरामजी मारवाड परिषद् के सक्रिय नता बन गये और कई गावा म परिषद् के बनाये। इसस क्रुद्ध होकर ठाकुर ने इनके कुए पर 200 मन खलिहान म आग लगादी और सारा गहू राख का ढर हो इतना ही नही, इनके सहयोगी साथी काश्तकारो की खडी फसल ऊटा, घोडा और अपने अन्य मवशी उनमे चरा कर बरबाद किया। जहाँ कही ये बठक करत सामन्ती गुन्डे आकर करत, मारपीट करत ढोल आदि बजाकर सभा भग करत। मुकदमे बनाकर परेशान करते और मवशी आदि की चारिया लालूरामजी की गाय भसें व बलो को बावरिया व मीणा का कर कई बार चुराया गया। एक बार तो गाव के ठाकुरा न



व अमानवीय व्यवहार की ददभरी दास्तानें सुनने को मिलती और सेठ रिखबदास का खून खौल जाता। उनके हृदय में जागीरी प्रथा के लिए तीव्र घृणा पैदा हो गई। लोगों की शिकायतों को आगे भेजना उन्हें सलाह मशविरा देकर संघर्ष करने की हिम्मत बंधाना यह उनका मुख्य कार्य हो गया। ब्यावर शहर निकट होने से वहां पर चल रही राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिविधियों से परिचित रहने के कारण इनके विचार दृढ़ होते गये।

इसी दौरान समय के परिवर्तन के साथ मारवाड़ में राजनैतिक उथल पुथल मची। जोधपुर के तत्कालीन महाराजा श्री उम्मेदसिंह ने प्रतिनिधि सलाहकार सभा के गठन की घोषणा की और हर परगने से एक प्रतिनिधि का चुनाव हुआ। जैतारण व मेंदड़ा परगने की ओर से बावजूद जागीरदारों के बड़े विरोध के सन् 1941–42 में हुए इन चुनावों में सेठ रिखबदास भारी बहुमत से चुने गये। इस एसम्बली (प्रतिनिधि सभा) में इन्होंने जो सक्रिय भूमिका निभाई वह इनके निर्भीक प्रतिभाशाली और जन हितैषी व्यक्तित्व को स्पष्ट करती है। इन्होंने एसम्बली में जागीरी जुल्मों का उनके द्वारा ली जा रही बेठ-बेगार व लाग-बाग का स्पष्ट चित्रण अपनी जोरदार व प्रभावशाली वक्तृत्व शैली में ऐसी सजीवता के साथ किया कि सरकारी और मनोनीत सदस्यों को भी इनके अनेक सुझाव मानने को मजबूर होना पड़ा। इसी संदर्भ में दिनांक 16–3–42 को एसम्बली में दिये गये उनके भाषण के कुछ अंश इस प्रकार हैं

जागीरी गांवों में जागीरदारों की सख्ती तथा कातीसर के लाटे उनाली व उनाली के लाटे कातीसरा के वक्त लाटने और लागा बागा व बेठ बेगार व दूसरी असुविधाओं ने मिलकर मारवाड़ के किसानों को अजहद गरीब बना दिया। वे रोटी तक के मोहताज हो गये हैं। बड़ी बड़ी मीलों से उनको कोई फायदा नहीं। इनको तो ऐसा काम चाहिये जिसको ये गरीब घर बैठ कर सकें और जिसमें बहुत ही थोड़ी पूंजी लगे। आपने आगे कहा— सरकार ने इकोनोमिक डवलपमेंट डिपार्टमेंट खोला है और इसके लिए रु 45000–00 का प्रावधान रखा है पर इसमें से 27000–00 रु तो सरकारी अमले की तनख्वाह में और बाकी सैर-सपाटे में खर्च हो जायगा। यह भाषण उनके द्वारा एसम्बली में रखे गये प्रस्ताव सं 16 जिसमें उन्होंने मारवाड़ के किसानों व मजदूरों में व्याप्त बेकारी मिटाने और बेकारों की गणना कर एक डायरेक्टरी बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया था के सम्बन्ध में हुई बहस के वक्त का है। आज की स्थिति की पृष्ठभूमि में भी यह प्रस्ताव महत्वपूर्ण है। यह उनकी दूर दृष्टि का परिचायक है।

सेठजी द्वारा मारवाड़ प्रतिनिधि सभा में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव सं 3 दिनांक 11 3 42 को रखा गया था। प्रस्ताव इस प्रकार है —"यह सभा सरकार को सलाह देती है कि कम से कम ऐसे गांव में जहां आबादी 100 घरों से ज्यादा हो, स्कूल कायम किया जाये और बड़े-बड़े कस्बों में मिडिल स्कूल कायम किए जाएँ।" इस प्रस्ताव पर बोलते हुए इन्होंने कहा— 'मारवाड़ में 8 प्रतिशत जागीर है। जागीरदार लोग अपने ऐशो आराम के लिए लाखों रुपये खर्च करते हैं पर अपनी रिआया की तालीम की तरफ कतई ध्यान नहीं देते। जागीरदार अपनी मनमानी करने के लिए रिआया को अनपढ़ रखते हैं। मारवाड़ की हुकूमत का काम करने वाले साहबान् जोधपुर खास के रहने वाले हैं। उनकी मंशा हमेशा यही रहती है कि वे मारवाड़ की जनता पर अपनी मनमानी हुकूमत करें। गवर्नमेंट का खजाना हमारी (गांवों की जनता की) वजह से भरा जाता है। लगान हम देते हैं कर देते हैं और शिक्षा व दूसरे सारे सुभीते शहर की जनता को मिलते हैं।

सन् 1942 व उसके आस-पास के वर्षों में मारवाड़ राज्य का शिक्षा का बजट कुल 10 लाख रुपये का था जिसमें अधिकांश जोधपुर शहर में ही खर्च होता था क्योंकि वहां एक कॉलेज 5 हाई स्कूल व कई मिडिल व प्राइमरी स्कूल थे। मारवाड़ के जागीरी गांवों में तो लड़के व लड़कियों के सरकारी सहायता प्राप्त व मान्यता प्राप्त गैर सरकारी कुल 57 स्कूल थे जिन पर सरकार का कुल खर्च केवल रु 83 900 00 होता था। एसम्बली के सदस्य रहते हुए इन्होंने जोधपुर के बाहर भी हाईस्कूल व मिडिल स्कूल खोलने पर बार-बार जोर दिया और तर्क दिया कि 'विलायत में हर शख्स पढ़ा हुआ है इसलिए वहां कानून नहीं जानने का उज्र नहीं माना जाना समझ में आ सकता है मगर यदि यह उसूल यहाँ लागू किया जाता है तो क्या सरकार का फर्ज नहीं है कि वह हर आदमी के पढ़ने का बन्दोबस्त करे? इन्होंने सन् 1942 में एसम्बली में जैतारण में मिडिल स्कूल व कन्या पाठशाला व निम्बाज में 5 वीं कक्षा तक की प्राथमिक स्कूल खोलने के प्रस्ताव भी पास करवाये। इसी संदर्भ में देसूरी से निर्वाचित सदस्य बिजोवा निवासी स्वर्गीय श्री निहालचन्द गुल्लाजी के प्रस्ताव सं 10 जिसमें मारवाड़ में चार हाईस्कूल-वरकाणा सोजत नागौर और बाड़मेर में आगामी वर्ष से ही अवश्य खोली जायें का श्री सेठ साहब ने जबरदस्त समर्थन किया और प्रस्ताव पास हुआ।

इसके अलावा पंचायतों के सरपंच पद पर जागीरदारों को मनोनीत न कर जनता के चुने हुए प्रतिनिधि होने चाहिये यह मांग भी रखी और गांव गांव में चारागाह (गोचर) हों तथा औषधालय खोले जाय, यह मांग भी जोरदार शब्दों में रखी।

स्वर्गीय रिखबदासजी न कभी किसी से डरे न किसी से दबे।



वक्ष के सिर पर गम्भीर चोटें आई। ये लहू-लुहान हो गये पर सभी हमलावरों को भगाकर ही इन्होंने दम लिया।

इसके पश्चात् रायपुर में आन्दोलन और तेज हो गया। फलस्वरूप जैतारण के हाकिम की अदालत में रायपुर के प्रमुख कार्यकर्ता सर्वश्री जमालुद्दीन मखदुम बक्स मरदार बक्स, जब्बार बक्स गफ्फार बक्स सद्दीक बक्स हाजी बक्स नाथचन्द व भगवतीप्रसाद सिंह पर मुकद्दमा चलाया गया। ये कार्यकर्ता न केवल डटे रहे बल्कि बैठ-बेगार व लाग-बाग के विरुद्ध अपने आन्दोलन को अधिक तेज कर दिया। फलस्वरूप खाती (सुथार) जो दिन भर बेगार में रावले में लकड़ियां फाड़ा करते रेगर दिन हो या रात, घोड़ा ऊंटों व मवेशी के लिए चारा लाने में जुटे रहते कुम्हार बारी-बारी से दिन भर पानी भरते नाई रसोड़े के बर्तन मांजने से नहीं छूट पाता, गांव का सांवी सारे दिन लठ्ठ लिए इन बेगारियों के पीछे पड़ा रहता, इन सभी ने बेगार देने से मना किया या छुप छिपकर रहने लगे। रायपुर ठाकुर ही नहीं, आस-पड़ोस के ठाकुर भी उनसे परेशान रहने लगे।

आखिर, इन ठाकुरों ने जोधपुर के महाराजा उम्मेदसिंहजी को कहकर इनके विरुद्ध डिफेंस ऑफ इंडिया कानून के अन्तर्गत कार्यवाही करवाई। 22 मई 1944 को सर्वश्री भगवतीप्रसादजी जमालुद्दीनजी लालचन्दजी फौजमलजी, पूनमचन्दजी पगारिया गफ्फार बक्सजी और मक्दुम बक्सजी के विरुद्ध रायपुर कस्बा तथा रायपुर ठिकाने के सभी गांवों से निष्कासन की आज्ञा जोधपुर सरकार के आदेश से जारी हुई।

इसी दौरान ठिकाने ने श्री गफ्फार बक्सजी की 200 बीघा काश्त की भूमि भी जब्त करली और इन्हें आर्थिक संकट में डाल दिया। कई बार श्री गफ्फार बक्सजी व इनके साथियों को भूमिगत होकर भयानक जंगल में स्थित फतहगढ़ किले तथा दीपावास के गढ़ में छिपकर रहना पड़ा। 15 अगस्त 1947 के दिन भारत के आजाद होने के साथ ही इन पर लगी सारी पाबन्दियां स्वतः ही समाप्त हो गई पर गरीबी बेरोजगारी भ्रष्टाचार के विरुद्ध तो इनका संघर्ष आज भी जारी है।

आजादी के दुलारे
श्री नथमल लोढा



भारतीय आजादी के आन्दोलन में राजस्थान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है और राजस्थान में विशेषकर पाली जिले के स्वतंत्रता सेनानियों की एक लम्बी फेहरिस्त है जिसमें एक ... नाम है खाटवासी नथमलजी लोढा। आपने आजादी के ... में सक्रिय भूमिका बम्बई व मारवाड़ दो स्थानों पर रहते हुए की है। आजाद भारत की कल्पना करते हुए आपने ... बम्बई से आरम्भ किया, जब 1937 में आपने बम्बई की ... बस्तों में ऊंच-नीच व छुआछूत निवारण पर महात्मा गांधी का भाषण सुना। गांधीजी के भाषण में अपार दूरदर्शिता प्रेरणा आजादी का संकल्प व व्यक्तित्व की अमिट छाप तथा भावों विचारों की सम्प्रेषणीयता इतनी सशक्त थी कि 13 वर्षीय ... भी आजादी के आन्दोलन की एक कड़ी बन गये।

गांधीजी के उस सम्पर्क के ठीक दो वर्ष बाद द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत हुई और राष्ट्रीय कांग्रेस के आह्वान पर भारतीय समुदाय ने इस विश्व-युद्ध में अंग्रेजों के साथ असहयोग को स्वीकारा। उस समय बम्बई राष्ट्रीय राजनीति में तीव्र गति से हो रहे परिवर्तनों का रंगमंच था। लोढाजी इस सदन में कहते हैं कि

अंग्रेजो ! भारत छोड़ो का प्रस्ताव अखिल भारतीय ... कांग्रेस महासमिति के बम्बई अधिवेशन में 9 अगस्त 1942 पारित हुआ। इस अधिवेशन को 100.00 रुपये का टिकट लेकर राजाना देखने जाते थे। उस समय के महान् राष्ट्रीय नेताओं गिरफ्तार कर लिया गया था। उनके विरोध में बम्बई के नवयु... तिरंगा झण्डा लेकर टोलियां बनाकर हर मोहल्ले से निकलते और अंग्रेजो भारत छोड़ो ! हिन्दुस्तान हमारा है करेंगे या मरेंगे,



श्री नथमलजी लोढा श्री शंकरदयाल शर्माजी से सम्मान-पत्र प्राप्त करते हुए।



किया कि गाव का जो आदमी इस काग्रेसी कुत्ते के साथ रहेगा उस पर जूतो की गाठ बाधकर गाव म घुमाया जायेगा और बेइज्जत किया जायगा। आतक के मारे लोग खुले मे आने से घबरात थे, पर चुपके चुपके हर प्रकार का सहयोग प्रदान करते थे। बहादुरसिहजी ने प्रारम्भ म लालूरामजी का खुला समर्थन किया और उनके सहयोग स इनका हौसला बढता गया। फिर तो, श्री बलदेवरामजी मिर्धा द्वारा किसान सम्मेलन आयोजित हुए और श्री लालूरामजी ने उनको पूरा पूरा सहयोग दिया।

परिवार क सुख दु ख तो क्या भरण पोषण की भी चिन्ता किये बिना पचास वर्षो से भी अधिक समय तक गरीब ग्रामीणो की सेवा म अपने आप को खपाते रहने वाले बिरले स्वतन्त्रता सेनानियो मे लालूरामजी का प्रमुख नाम है जो सदा आजादी के गीत गाते रहते हैं।

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमे रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमे स्वदेश का प्यार नहीं॥



निर्भीक सिपाही शेख गफ्फार बक्स



आज 75 वर्ष की उम्र म भी शेख गफ्फार बक्स एक जवान सिपाही का जोश लेकर भ्रष्टाचार, पक्षपात, अराजकता और अनुशासनहीनता के विरुद्ध लगन व हिम्मत के साथ लोहा ले रहे हैं। इसस सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि आजादी की जग म इस बहादुर स्वतन्त्रता सेनानी ने कितना काम किया होगा कितनी मुसीबत उठाई होगी। इनका जन्म रायपुर (मारवाड) मे सन् 1912 म श्री अब्दुल बक्स क घर हुआ। इनके दादा व पिता दोनो ही ठिकाना रायपुर म आला मुसाहिब क ओहदा पर नियुक्त थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा रायपुर पाठशाला म हुई और ब्यावर के सनातन धर्म स्कूल स मैट्रिक पास की।

एक बार इनके पिताजी ने जो ठिकाणे म अधिकारी थे उन्हे ठिकाणे के अन्य कर्मचारियो, कणवारियो कोठारी व गाव भोमी के साथ एक बेरे पर लाटा लाटने के लिए भेजा। कोठारी ने ठिकाणे का भोग (हिस्सा) अलग कर दिया फिर बचे अनाज से ठिकाणे की लाग बाग, कवर मटकी, कोठारी, घडा, कणवार, गावभाव रेगर आदि आदिवासी लोगो का अनाज वसूल किया गया फिर ब्राह्मण, साधु, देव स्थान की लागें ली गई। इतने म ही काश्तकार के बोहरा साहूकार (कर्ज देने वाले) आ गये। उन्होने बाकी बचे अनाज पर अपना कब्जा कर लिया। काश्तकार के पास कुछ भी अनाज नही बचा। गफ्फार बक्सजी ने सहज भाव से कोठारी स पूछा-इस काश्तकार व इसके परिवार ने सारे साल सर्दी गर्मी-बरसात म इतनी महनत की और इसके पास तो कुछ भी नही बचा, अब यह और इसके स्त्री बच्चे क्या खायेंगे? कोठारी ने भी सहज भाव स उत्तर दिया-इसके कर्म मे ही नही लिखा, हम क्या करें?

इस घटना ने श्री गफ्फार के जीवन की राह ही पलट दी। इन्होने तत्काल ठिकाने का हिस्सा काश्तकारो को सौंप दिया। सारे इलाके मे हलचल मच गई। ये घर से निकाल दिये गय और ये जीवन-यापन का रास्ता ढूढने लगे। ऐसे वक्त म इनका सम्पर्क हुआ रायपुर निवासी पूसालालजी पगारिया शेख मख्दुमबक्सजी, भगवती प्रसादसिहजी लालचन्दजी चौमूलालजी, जगेसिहजी, हीराजी पडिहार, जीवाजी दरोगा तथा गगारामजी माली से। ये सभी लोग जागीरी जुल्मो व बेठ बेगारो से परेशान थे और आम जनता म सामन्ती शासन के विरुद्ध प्रचार करते रहते थे। इन सभी ने सगठित होकर अपनी आवाज बुलन्द करने की ठानी। सर्वप्रथम इन्होने काश्तकारो व अन्य लोगो म प्रचार कर जागृति पैदा की और रायपुर ठाकुर के जुल्मो की शिकायत लेकर रायपुर के सभी लोग स्त्री पुरुष पैदल रवाना होकर सरदारसमन्द होते हुए जोधपुर दरबार क पास पहुचे और वहा से जाँच का आदेश प्राप्त किया। जोधपुर म ही इस पद यात्री दल का सम्पर्क लोक परिषद् क नेताओ से हुआ। उन्होने गिरदीकोट म सभा कर रायपुर के जागीरदार के जुल्मो की कहानी का सजीव वर्णन किया और तय हुआ कि लोक परिषद् के नेता रायपुर म सभा करेंगे।

मारवाड लोक परिषद् की रायपुर म प्रथम सभा गणेश दरवाजे के आगे रात्रि 8 बजे प्रारम्भ हुई। जोधपुर स श्री जयनारायण व्यास मथुरादासजी सूरजप्रकाशजी पापा द्वारकादासजी पुरोहित आदि आ गये थ। सभा म ज्योंही लोकनायक व्यासजी भाषण देने खडे हुए कि रायपुर के ठाकुर श्री गोविन्द सिंह के 100 स अधिक पिटठुओ ने, जो करमावास निम्बेडा सबलपुर धावडिया आदि से इकट्ठे किये गये थ मच पर हमला बोल दिया। उस समय श्री मखदुम बक्स व श्री गफ्फार बक्स व उनके भाइयो ने जिस बहादुरी से इन गुण्डा तत्वो का मुकाबला किया और नेताओ की रक्षा की, वह रायपुर के इतिहास की एक शानदार घटना है। इस हमले के फलस्वरूप कई लोगो को गम्भीर चोटें आयी। स्वय श्री गफ्फार

बक्स के सिर पर गम्भीर चोटें आई। ये लहू-लुहान हो गये, पर सभी हमलावरो को भगाकर ही इन्होने दम लिया।

इसके पश्चात् रायपुर मे आन्दोलन और तेज हो गया। फलस्वरूप जैतारण के हाकिम की अदालत म रायपुर के प्रमुख कार्यकर्ता सर्वश्री जमालुद्दीन मखदुम बक्स सरदार बक्स, ज्वार बक्स, गफ्फार बक्स, सद्दीक बक्स हाजी बक्स लालचन्द व भगवतीप्रसाद सिंह पर मुकद्दमा चलाया गया। ये कार्यकर्ता न केवल दृढ रहे बल्कि बठ बेगार व लाग-बाग के विरुद्ध अपने आन्दोलन को अधिक तेज कर दिया। फलस्वरूप खाती (सुथार) जो दिन भर बेगार मे रावले म लकडिया फाड़ा करते रेगर दिन हो या रात, घोडो, ऊटो व मवेशी के लिए चारा लाने मे जुट रहते, कुम्हार बारी बारी से दिन भर पानी भरते, नाई रसोडे के बरतन माजने स नही छुट पाता, गाव का माबी सारे दिन लठठ लिए इन बेगारियो के पीछे पडा रहता, इन सभी ने बेगार देने से मना किया या लुक छिपकर रहने लगे। रायपुर ठाकुर ही नही, अडास-पडोस के ठाकुर भी उनसे परेशान रहने लगे।

आखिर, इन ठाकुरो ने जोधपुर के महाराजा उम्मेदसिंहजी को कहकर इनके विरुद्ध डिफेंस आफ इंडिया कानून के अन्तगत कार्यवाही करवाई। 22 मई 1944 को सर्वश्री भगवतीप्रसादजी, जमालुद्दीनजी लालचन्दजी, फौजमलजी, धूसालालजी पगारिया गफ्फार बक्सजी और मक्दुम बक्सजी के विरुद्ध रायपुर कस्बा तथा रायपुर ठिकाने के सभी गावो से निष्कासन की आज्ञा जोधपुर सरकार के आदेश से जारी हुई।

इसी दौरान ठिकाने ने श्री गफ्फार बक्सजी की 200 बीघा काश्त की भूमि भी जब्त करली और इन्हे आर्थिक सकट मे डाल दिया। कई बार श्री गफ्फार बक्सजी व इनके साथियो को भूमिगत होकर भयानक जगल मे स्थित फतहगढ किले तथा दीपावास के गढ मे छिपकर रहना पडा। 15 अगस्त, 1947 के दिन भारत के आजाद होने के साथ ही इन पर लगी सारी पाबदिया स्वत ही समाप्त हो गई पर गरीबी, बेरोजगारी भ्रष्टाचार के विरुद्ध तो इनका सघर्ष आज भी जारी है।

आजादी के दुलारे श्री नथमल लोढा

☐

भारतीय आजादी के आन्दोलन मे राजस्थान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है और राजस्थान म विशेषकर पाली जिले के स्वतन्त्रता सेनानियो की एक लम्बी फेहरिस्त है, जिसमे एक ल... ि नाम है खाडवासी नथमलजी लोढा। आपने आजादी क... लन म सक्रिय भूमिका बम्बई व मारवाड दो स्थानो पर रहते हुए ... की है। आजाद भारत की कल्पना करते हुए आपने प्रारम्भिक ... बम्बई से आरम्भ किया, जब 1937 मे आपने बम्बई की ह... बस्ती मे ऊच नीच व छुआछूत निवारण पर महात्मा गाधी का भाषण सुना। गाधीजी के भाषण म अपार दूरदर्शिता प्रेरणा शक्ति आजादी का सकल्प व व्यक्तित्व की अमिट छाप तथा भावा... विचारो की सम्प्रेषणीयता इतनी सशक्त थी कि 13 वर्षी ... भी आजादी के आन्दोलन की एक कडी बन गये।

गाधीजी के उस सम्पर्क के ठीक दो वर्ष बाद द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई और राष्ट्रीय काग्रेस के आह्वान पर भारतीय ज... समुदाय ने इस विश्व-युद्ध मे अग्रेजो के साथ असहयोग के प्रस्ताव को स्वीकारा। उस समय बम्बई राष्ट्रीय राजनीति मे तीव्र गति स ... रने परिवर्तनो का रगमच था। लोढाजी इस सदर्भ मे कहते है कि—

'अग्रेजो ! भारत छोडो' का प्रस्ताव अखिल भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस महासमिति के बम्बई अधिवेशन मे 9 अगस्त 1942 को पारित हुआ। इस अधिवेशन को 100 00 रुपये का टिकट लेकर हम रोजाना देखने जाते थे। उस समय के महान् राष्ट्रीय नेताओ को गिरफ्तार कर लिया गया था। उनके विरोध मे बम्बई के नवयुवक तिरगा झण्डा लेकर टोलिया बनाकर हर मोहल्ले से निकलते और— अग्रेजो भारत छोडो ! हिन्दुस्तान हमारा है करेंगे या मरेंगे वन्दे

श्री नथमलजी लोढ़ा श्री शकरदयाल शर्माजी से सम्मान-पत्र प्राप्त करते हुए।



मातरम् आदि के नारों से जनमानस को उद्वेलित करते और मानवीयता जैसे उच्चतम भाव का अहसास कराते। अंग्रेजी सरकार की पुलिस आती डण्डे मारती पकड़कर ले जाती और तदनन्तर छोड़ देती। इन टोलियों में एक ओजस्वी आवाज मेरी भी होता और मैं स्वयं को गौरवान्वित समझता।'

बम्बई से मारवाड़ आगमन पर लोढाजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में जुड़े रहने के लिए अपने को पत्र-पत्रिकाओं से सम्बद्ध रखा। इन पत्रों में प्रमुख है वीर अर्जुन (दिल्ली) विश्वामित्र (बम्बई) प्रजा सेवक (जोधपुर)। ये पत्र राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत होते और अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज को बुलन्द करने के महत्वपूर्ण साधन थे। इसके अतिरिक्त इन पत्रों में प्रान्तीय राजा महाराजाओं के जुल्मों तथा ठाकुर जागीरदारों के अत्याचारों का बखूबी विवरण भी मिलता था अतः श्री लोढा इन पत्रों से प्रेरित होकर अंग्रेजों व ठाकुरों-जागीरदारों के विरुद्ध हो गये।

श्री लोढा की जन्मभूमि भी जागीरदारों के जुल्मों से ग्रस्त थी। उस समय खोड गांव के चाणोद ठिकाणे को दीवानी, फौजदारी दावे सुनने का अधिकार था। यह ठिकाणा उस समय जुल्मों के लिए कुख्यात था।

बम्बई से मारवाड़ आने पर श्री लोढा ने ठाकुरों और जागीरदारों से लोहा लेते हुए लटाई बंट-बेगार के विरुद्ध बगावत की। इस प्रकार जागीरदारों व हवलदारों से उनकी निजी रंजिश भी रहा।

सन् 1943 में, बाली में आयोजित मारवाड़ लोक-परिषद् के अधिवेशन में श्री लोढाजी इस परिषद् के सदस्य बने। सन् 1944 में अपनी जन्मभूमि खोड में मारवाड़ लोक-परिषद् की श्री रामप्रसादजी गांधी माधोसिंहजी मांगव सुमेरराजजी डागा सूरजमलजी राम प्रतापजी शर्मा खोड आदि के सहयोग से शाखा की स्थापना की व गांव की आम सभा का आयोजन भी किया गया।

इस शाखा की स्थापना के बाद आप अपने सहयोगियों के साथ गांवों में सभा करते अखबार बंटवाते जुल्मों के खिलाफ आवाज बुलन्द करते राष्ट्रीय भावना का प्रचार करते जागीरदारी हवालदारी हुकूमतशाही जुल्मों के विरुद्ध गांवों में चेतना पैदा करते। इन प्रयासों से दिन प्रतिदिन गांव के लोगों का मनोबल बढ़ा। इसी कड़ी में जोधपुर में सन् 1945-46 में निर्वाचित एसम्बली गठन कराने और जिम्मेवार हुकूमत कायम करने हेतु संचालित आन्दोलन में श्री लोढा शामिल हुए और जोधपुर में स्थापित मारवाड़ लोक परिषद् के कार्यालय में रहकर सक्रिय काम किया। उस समय लोकनायक जयनारायणजी व्यास द्वारकादासजी पुरोहित व मथुरादासजी माथुर आपके प्रेरणा-स्रोत थे।

आपने चाणोद तथा खुडाला के किसान-सम्मेलनों में सक्रिय भूमिका अदा की। इनमें खुडाला का किसान-सम्मेलन श्री बलदेव रामजी मिर्धा की अध्यक्षता में पूर्णरूपेण सफल रहा।

सन् 1947 में मारवाड़ लोक परिषद् के तत्वावधान में देसूरी परगना राजनैतिक सम्मेलन श्री फूलचन्दजी बापना की अध्यक्षता में खोड गांव में हो सम्पन्न हुआ, जिसके केन्द्र बिन्दु भी आजादी के दुलारे श्री लोढा ही थे। उसमें अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये गये थे।

इस सम्मेलन से जोधपुर राज्य के सामन्तशाही षडयन्त्रों का भण्डाफोड़ व जुल्मी जागीरदारों की हुकूमतशाही व जुल्मी नौकरशाही के विरुद्ध जोरदार आवाज बुलन्द हुई। जागीरदारी गांवों में अधिकतर किसान वर्ग अनुसूचित जाति व अन्य वर्गों में क्रांति की लहर फैलने लगी और लोग जुल्मों का डटकर मुकाबला करने लगे। इसी के परिणामस्वरूप मार्च 1948 में जोधपुर दरबार व जयनारायणजी व्यास के बीच समझौता हुआ और जोधपुर दरबार को लोकप्रिय सरकार स्थापित करने की घोषणा करनी पड़ी।

इस आन्दोलन की शृंखला में श्री लोढा के नेतृत्व में जोधपुर राज्य द्वारा किसानों व जागीरदारों से लेवी वसूल की जाने की मांग को ठुकरा दिया। जवाली स्टेशन पर से जो अनाज शहरों में भेजा जाता था और कन्ट्रोल के भाव से बेचा जाता था उसको उनके द्वारा रोक दिया गया और लोक-परिषद् के माध्यम से पत्र-व्यवहार कर प्रधानमन्त्री महोदय के आदेशानुसार सस्ते अनाज की दुकान खोल दी गई।

लोक प्रिय सरकार बन जाने पर बंट-बेगार लगभग समाप्त हो गई। लटाई बन्द की जाकर सैटलमैन्ट द्वारा भूमि का पैमाइश करवाई जाकर किसानों को खातेदारी हक प्रदान करवाये गये। दिल्ली में सन् 1947 में कांग्रेस के केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल की स्थापना हुई। 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ और उधर अंग्रेजी हुकूमत समाप्त हुई। पं० जवाहरलाल नेहरू के द्वारा रात के ठीक 12 बजे लाल किले पर तिरंगा झण्डा फहराया गया पूरा देश खुशी में झूम उठा।

इतने संघर्ष के उपरान्त भी देश राजनीतिक रूप से आजाद अवश्य हो गया, पर जागीरदारों के जोर जुल्म जो आजादी के पूर्व रहे थे वे आजादी के बाद भी बरकरार रहे। अन्ततः कहना यह है कि आजादी का दुलारा खोड का प्रतिनिधि किसानों का हिमायती, अंग्रेजों का दुश्मन, अत्याचारों एवं जोर जुल्मों का विरोधी, महात्मा गांधी का अनुयायी विनोबाभावे का समर्थक, मारवाड़ लोक परिषद् का प्रेरक एक ही व्यक्तित्व है — श्री नथमल लोढा।



स्वराज के दीवाने श्री रेवाशकर दवे

□

श्री रेवाशकर दवे का जन्म 12 सितम्बर, 1915 को ग्राम नारलाई (तहसील देसूरी) मे श्री पुरषोत्तमजी के घर हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। फिर पिताजी के व्यवसाय स्थल बम्बई चले गये और वहा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षा दी और मराठी सस्कृत अग्रेजी व गुजराती का सामान्य ज्ञान प्राप्त किया। सन् 1932 मे देशभर मे आन्दोलन, नमक सत्याग्रह विदेशी वस्त्रो की होली शराब की दुकानो की पिकेटिंग आदि चल रहे थे, पर बम्बई शहर इन आन्दोलनो का केन्द्र था। देश भर के बडे-बडे नेता वहा आते सभाए करते और हजारो लोग जेल जाते। राष्ट्रीय चेतना का ऐसा माहौल अन्यत्र कही देखने को नही मिलता था। इन सारी घटनाओ व व्याप्त वातावरण का प्रभाव युवक रेवाशकर पर पडा। उस जमाने मे बम्बई के प्रमुख नेता सवश्री वीर नरीमन, भूलाभाई देसाई, एम वाय नूरी सा, युवा नेता अशोक महता बालासाहब खेर, मोरारजी देसाई आदि थे पर रेवाशकरजी का सीधा सम्पर्क भूलाभाई देसाई नूरी सा व वानर सेना के मुखिया श्री अशोक महता से हुआ। हर आन्दोलन मे चाहे वह शराब की दुकानो पर धरना देने का काम हो समुद्र का पानी लाकर सडको पर नमक बनाने की बात हो, विलायती कपडा की होली जलाने का आन्दोलन हो रेवाशकरजी अपनी डोगवाड की वानर सेना की टुकडी लेकर आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेते। प्रभात फेरी निकालना, तकली कातना, यह तो रोजमर्रा का काय था ही। 'चरखा चला चलाके लेंगे स्वराज लेंगे' यह उस जमाने मे बडा ही लोकप्रिय गाना था जिसे ये सडको पर लडको से गवाया करते थे।

सन् 1939 मे बम्बई की एक सभा मे देशी राज्य लोक परिषद् के महामन्त्री श्री जयनारायण व्यास ने मारवाड के बम्बई मे रह रहे कायकर्ताओ से यह अनुरोध किया कि वे मारवाड मे काय करें। आपने अपने पैतृक गाव नारलाई मे जन जागृति का काय शुरू किया। जागीरदार लाटा कूता बेठ बेगार व लाग बाग मे मनमानी करते थे। इन जुल्मो व अत्याचारो के विरुद्ध इन्होने आवाज उठाई तो जागीरदार नारलाई के कामदार कणवारिये इनके पीछे पड गये और उन्हे हर तरह से परेशान करने लगे। इनके दो बेरे व काश्त की जमीन जब्त कर ली गई, ताकि गुजारे के लिये पुन ये नारलाई छोडकर बम्बई चले जायें। पर श्री दवे तो अभावो के बीच भी काम करते रहे तब जोधपुर दरबार के चाचा श्री अजीत सिंह ने इनको नारलाई गाव से निष्कासित कर दिया। ऐसे हालात मे ये पुन बम्बई आये और वहा काय करते रहे।

इसी दौरान मारवाड मे लोक परिषद् के तत्वावधान मे पूर्ण उत्तरदायी शासन के लिए सत्याग्रह आन्दोलन छिड गया और श्री दवे सत्याग्रह मे भाग लेने मारवाड आये पर जोधपुर दरबार तथा लोक परिषद् के नेताओ के बीच समझौता हो गया और लोक परिषद् ने आन्दोलन स्थगित कर दिया।

मारवाड लोक परिषद् के पाली जिले के प्रमुख नेता सादडी निवासी श्री फूलचन्दजी बाफना थे। सादडी खालसा कस्बा था अत जागीरदार, ठाकुरो के जुल्मो से मुक्त था, अत यह कायकर्ताओ का बहुत अच्छा सगठन स्थान था। रेवाशकरजी ने सादडी के सवश्री फूलचन्दजी बाफना धीरजमलजी वच्छावत अनोपचन्दजी पूनमिया आदि प्रमुख कायकर्ताओ के सहयोग से काय प्रारम्भ किया। आजादी के पूव पाली जिले मे कई जागीरी गावो मे किसानो के आन्दोलन चले। नारलाई के निकट ही देवली गाव मे जागीरी जुल्मो के विरुद्ध सवश्री मोहनराजजी निहालचन्दजी परमार व रामेश्वरजी मास्टर ने एक बडा सशक्त आन्दोलन खडा किया था इसी सिलसिले मे दवेजी का उनसे सम्पर्क हुआ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी रेवाशकरजी चैन से नही बैठे। स्वराज्य के बाद कुर्सी की छीना झपटी और भ्रष्टाचार ने इन्हे क्षुब्ध कर दिया। कुर्सी की राजनीति से परे रह कर इन्होने रचनात्मक कार्यों की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया और आदिम जाति सेवा सघ के माध्यम से गरासिया आदिवासियो मे सिरोही की पिंडवाडा तहसील तथा पाली जिले की बाली तहसील मे काय प्रारम्भ किया। सन 1959 मे पिंडवाडा क्षेत्र की वरली पचायत मे निर्विरोध सरपच चुने गये। पर गन्दी राजनीति मे वहा पर भी इन्हे निराशा हाथ लगी। इसी दौरान विकास कार्यों को करवाने के सिलसिले मे मारवाड लोक परिषद् के पुराने नेता और राजस्थान मन्त्रीमण्डल के सदस्य मथुरादासजी माथुर की माफत उन्होने श्री हरिश्चन्द्रजी माथुर (लोकसभा सदस्य) से सम्पर्क किया जिससे क्षेत्र मे अनेक विकास कार्यों की शुरुआत तो हुई ही पर सबसे बडी और महत्वपूर्ण उपलब्धि हुई—साई नदी का पानी अरावली पवत मे कई मील लम्बी सुरग खोदकर जवाई बाध मे लाने की।

रेवाशकरजी ने श्री कृष्णदासजी जाजू के सान्निध्य मे भूदान यात्राओ मे भाग लिया। राजस्थान हरिजन सेवक सघ के माध्यम



म हरिजन उद्धार का काय हाथ म लिया । आज भी रचनात्मक कायों म इनकी विशेष रुचि है और गावा म भ्रमण करके गावा म चेतना जगाने का काय 73 वष से अधिक आयु होने के बाद भी युवका-सा उत्साह और लगन रखकर निरन्तर कर रहे हैं ।



युवा क्रांतिकारी श्री मीठालाल काठेड

मारवाड के स्वाधीनता आन्दोलन म बगडी निवासी काठेड परिवार का नाम सदा ही आदर व श्रद्धा म याद किया जाता रहेगा । सन् 1930 म गांधीजी के भारत व्यापी आन्दोलन के साथ ही साथ मारवाड के गावा म भी जागृति की लहर दौड गई थी और श्री गणेशमलजी काठेड ने जागीरी जुल्मा उखाड फेंकने का निश्चय कर लिया था ।

स्थानीय ठाकुर को श्री गणेशमलजी काठेड की गतिविधिया नापसन्द थी और इन्हें डराया धमकाया गया पर श्री गणेशमलजी ना डरने वाले थे नहीं—निडरतापूर्वक लोक परिषद का काय करते रहे । जब बात बढ गई तो बगडी ग्राम के ठाकुर ने इनका बगडी ग्राम म रहना ही असहनीय बना दिया । फलस्वरूप यह काठेड परिवार निकटस्थ सोजत रोड पर आकर बस गया और सोजत रोड स्थित इनका मकान काग्रेस की गतिविधियो का केन्द्र बन गया । श्री गणेशमलजी ने सोजत रोड पर मारवाड लोक परिषद् का एक बडा अधिवेशन आमन्त्रित किया और जागृति पैदा करने म समय-समय पर आर्थिक सहयोग देकर आन्दोलन को आगे बढाया ।

एस ही महान् राष्ट्र भक्त पिता के पुत्र श्री मीठालालजी काठेड युवावस्था स ही राष्ट्रीय विचारा से जुड गये और उन्होंने अपने पैतृक गाव बगडी म किसानो का सगठन तयार कर सामन्ती जुल्मा स लडने का निश्चय किया ।

सन् 1938 से लेकर 1942 तक श्री मीठालालजी ने दिन रात एक कर काग्रेस व लोक-परिषद के तत्वावधान म अनेक सभाओं व सम्मेलनो का आयोजन कर अभूतपूर्व आन्दोलन खडा कर दिया और बगडी क्रांतिकारियो की रण-स्थली बन गई । सन् 1941 का एक वहत सम्मेलन म ठाकुर बगडी ने सभा भग करने के उद्देश्य से बडे पमाने पर लाठी चाज किया और बदले छोडी फलस्वरूप कई कायकर्ता और जोधपुर स आए लोक परिषद के नेता घायल हो गये । यह जागीरदार का हमला बगडी काण्ड के नाम से मशहूर हुआ और उच्चस्तरीय जाच हुई ।

श्री मीठालालजी काठेड सन् 1942 के अंग्रेजो भारत छोडो आन्दोलन के दौरान गिरफ्तार हुए उनको जोधपुर जेल म रखा गया । इसी जेल की यातनाओं के फलस्वरूप इस युवा क्रांतिकारी का स्वास्थ्य इतना गिर गया कि फिर सभल ही नहीं सका और जेल स रिहाई के बाद भी लम्बी बीमारी ने इन्हें अल्पायु म ही इस ससार स विदा कर दिया ।

बिठोडा की अगुवा जोडी श्री गौरीशकर व्यास व श्री लालदास वैष्णव

बिठोडा के स्वर्गीय गौरीशंकरजी व्यास व लालदासजी वैष्णव मामूली पढे लिखे व्यक्ति होते पर भी मारवाड जक्शन (खारची) क्षेत्र के ग्रामो मे राष्ट्रीय चेतना जगाने सामन्ती जुल्मो को उजागर कर बैठ-बेगार व लाग-बाग मिटाने के आन्दोलनो के अगुवा थे । इन दोनो नेताओं की एक विख्यात जोडी थी और ये हर काय म साथ रहते थे ।

वैसे भी खारची क्षेत्र शिक्षा के अभाव के कारण बहुत पिछडा क्षेत्र था और यहा के गावो म सामन्ती नादिरशाही का बोलबाला था । मनमानी लाग-बाग बैठ-बेगार व नाटा-कूता की वसूली होती थी । ठाकुर और बोहरा (किसानो को कर्ज देने वाले) मिलकर किसानो को लूटते थे और जमीनो व घरो स बेदखल करते थे । एसे वक्त म राजाशाही और ठाकुरशाही के विरुद्ध आवाज बुलन्द करना किसानो को सगठित करना बडा ही दुष्कर व जोखिमभरा काय था पर इन दोनो जन सेवको ने उसे राष्ट्र धर्म मानकर गाव 2 जाकर जन-जागृति पैदा की । इस काय म इन्हें कई मुसीबतें उठानी पडी । कई जगह मार पडी जूते खाये और रावले म बन्द कर बिठा दिया गया । पर, इन दोनो त्यागी-तपस्वी कायकर्ताओ ने हिम्मत नहीं हारी ।

सन् 1942-44 के अंग्रेजो भारत छोडो आन्दोलन के बाद की घटना है । जगह-जगह मारवाड के जागीरदार सगठित हो रहे थे और योजना बना रहे थे कि अंग्रेजो के भारत से चले जाने के बाद



भा उनका और मारवाड मे दरबार का शासन कायम रह। ऐसी ही मीटिंग मारवाड जक्शन पर स्थित डाक बगले म आऊवा के ठाकुर नाहरसिहजी की अध्यक्षता म आयोजित हुई थी। इस मीटिंग म गाव गाव के जागीरदार आये थे और मारवाड लोक परिषद् के उत्तरदायी शासन की माग के विरोध म यह आयोजन था। गौरीशकरजी व लालदासजी भी मीटिंग की कायवाही के बारे म जानने के लिए वहा पहुचे। उन्ह वहा देखते ही जोजावर के ठाकुर श्री करणसिंह ने इनको डराया धमकाया, बागावास ठाकुर बहादुरसिहजी ने दोनो की निर्दयतापूर्वक पिटाई की। फौजी जूता मे व बेता स बुरी तरह मारा छाती पर पैर रखकर गोरीशकरजी के सिर के बाल उखाड दिये। मारवाड जक्शन के कायकर्ता श्री अब्दुल रहमान खानी ने छुडवाने की कोशिश की तो उन्ह भी मार पडी। ऐसे थे उस जमाने के हालात, जिनमे रहते हुए कायकर्ताओ को काय करना पडता था।

गौरीशकरजी व लालदासजी का जीवन बिलकुल सादा व त्यागमय था। मारवाड लोक परिषद् के नेता श्री जयनारायण व्यास श्री मथुरादास माथुर श्री रणछोडदास गट्टानी आदि के सहयोग स इन्होने अन्तिम दिनो तक जनता की सेवा की।



सतत कार्यशील श्री विजयशकर दवे



सोजत के श्री विजयशकर दवे मारवाढ लोक-परिषद् के उन प्रथम पक्ति के कायकर्ताओ मे से है—जिन्होने लोक परिषद् का सदेश गाव-गाव पहुचाकर पाली जिले म जन जागृति का सूत्रपात किया। श्री दवे का जन्म सोजत शहर मे सवत् 1971 म चैत्र शुक्ला 2 को श्री जयशकरजी एव श्रीमती शान्ति देवी के घर हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा वही हुई तत्पश्चात् इन्होने सोजत रोड पर विजयशकर दवे एण्ड सन्स नामक दुकान खोलकर डाबर तथा पटाल की एजेन्सी ली और धन्धा करने लगे। इसी धन्धे के सिलसिले म दवेजी एक बार सोजत के ही वैद्य मुन्नालालजी के साथ ब्यावर गये। वहा उनकी मारवाड राज्य स निष्कासित श्री जयनारायण व्यास स मुलाकात हुई। यही मुलाकात इनके जीवन मे क्रान्तिकारी परिवतन का कारण बनी। यह समय देश भर म स्वाधीनता आन्दोलन की हलचल का था। सवत्र ही महात्मा गाधी के आन्दोलन की धूम मची हुई था।

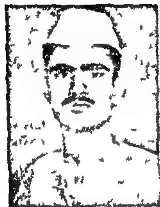
सन् 1939 म सवप्रथम सोजत रोड पर मारवाड लोक परिषद् की शाखा खोली गई उस म सवश्री मीठालाल काका अध्यक्ष वैद्य मुन्नालाल मन्त्री तथा विजयशकर दवे कोषाध्यक्ष चुने गये। परिषद् की प्रचारात्मक गतिविधिया बढ गई। कुछ ही समय बाद श्री जयनारायण व्यास सोजत रोड पधारे, तब लोक परिषद् के कायवश उनके साथ श्री मीठा लाल काका व दवेजी भी जोधपुर के लिए रवाना हुए। रास्ते म पाली म लोक-परिषद् के कायकर्ताओ—सवश्री रामप्रसाद गाधी और मूलचन्द भट्ट ने इन्ह रोककर धान मण्डी म सभा का आयोजन किया। इस सभा म पाली मिल के मनेजर श्री माथुर का भाषण शारदा एक्ट के विरोध मे हुआ और ज्यो ही श्री जयनारायण व्यास बोलने के लिए खडे हुए पुलिस ने लाठी चाज कर दिया। दवेजी ने व्यासजी का बचाव किया वरना गम्भीर चोटें आती।

सन् 1940 म मारवाड लोक परिषद् ने अकाल की समस्या को लेकर आन्दोलन चलाया। इसी आन्दोलन के सिलसिले म दवेजी कण्टालिया के श्री हरिराम ओझा, वैद्य मुन्नालाल तथा वासुदवजी भटनागर गिरफ्तार किये गये जिन्हे सोजत की पुरानी जेल—मौजूदा गोटावत-भवन म रखा गया था। लोक परिषद् व जोधपुर दरबार के बीच समझौता होने पर अन्य नेताओ के साथ इनकी भी रिहाई हो गई।

28 माच 1942 को मारवाड लोक परिषद् ने चण्डावल म जिम्मेवार हुकुमत दिवस मनाने का ऐलान किया। दवेजी व मीठालाल जी काका आदि कायकर्ता सोजत से तागा लेकर चण्डावल के लिये रवाना हो गये। सोजत रोड स एक तागा भरकर तथा बगडी स एक बैलगाडी भरकर कायकर्ता चण्डावल पहुचे। आस-पास के अनेक गावो से कायकर्ता पैदल बैलगाडी आदि स पहुच पर चण्डावल म जागीरदार ने जो आतक फैला रखा था इस कारण सभी को गाव के बाहर ही रोक दिया गया और गाव चण्डावल म भी ऐसा आतक पैदा किया गया कि किसी को घर स बाहर ही नही निकलने दिया। चण्डावल के प्रमुख कायकर्ता श्री मागीलालजी आलीशान को जब यह सूचना हुई कि बाहर से कई नेतागण व कायकर्ता आये थे और बाहर ही रोक दिये गये तब श्री आलीशान किसी तरह घर स बाहर लोटा और धोती लेकर निकले और सोजत व जोधपुर से आये नेताओ के पास पहुचे। श्री आलीशान म तो गजब की हिम्मत थी इतने भयकर आतक व सुदृढ नाकेबन्दी के बावजूद भी उन्होने सैकडो कायकर्ताओ के साथ वन्दे मातरम् का नारा लगाते हुए गाव



म हरिजन उद्धार का काय हाथ म लिया। आज भी रचनात्मक कार्यों म उनकी विशेष रुचि है और गावा म भ्रमण करके लोगा म चेतना जगाने का काय 73 वष म अधिक आयु होने के बाद भी युवका-सा उत्साह और लगन रखकर निरन्तर कर रहे हैं।



युवा क्रांतिकारी श्री मीठालाल काठेड



मारवाड क स्वाधीनता आन्दोलन म बगडी निवासी काठेड परिवार का नाम सदा ही आदर व श्रद्धा म याद किया जाता रहेगा। सन् 1930 क गाधीजी के भारत व्यापी आन्दोलन के साथ ही साथ मारवाड के गावा म भी जागृति की लहर दौड गई थी और श्री गणेशमलजी काठेड ने जागीरी जुआ उतार फेंकने का निश्चय कर लिया था।

स्थानीय ठाकुर को श्री गणेशमलजी काठेड की गतिविधिया नापसन्द थी और इन्हे डराया धमकाया गया पर श्री गणेशमलजी तो डरने वाले थे नहीं—निडरतापूवक लोक परिषद् का काय करते रहे। जब बात बढ गई तो बगडी ग्राम क ठाकुर ने इनका बगडी ग्राम म रहना ही असहनीय बना दिया। फलस्वरूप यह काठेड परिवार निकटस्थ सोजत रोड पर आकर बस गया और सोजत रोड स्थित इनका मकान काग्रेस की गतिविधिया का केन्द्र बन गया। श्री गणेशमलजी ने सोजत रोड पर मारवाड लोक परिषद् का एक बडा अधिवेशन आमन्त्रित किया और जागृति पैदा करने म समय-समय पर आर्थिक सहयोग देकर आन्दोलन को आगे बढाया।

ऐसे ही महान् राष्ट्र भक्त पिता क पुत्र श्री मीठालालजी काठेड युवावस्था म ही राष्ट्रीय विचारो स जुड गये और उन्होने अपने पतृक गाव बगडी मे किसाना का सगठन तयार कर सामन्ती जुल्मो स लडने का निश्चय किया।

सन् 1938 स लेकर 1942 तक श्री मीठालालजी न निरन्तर एक कर काग्रेस व लोक-परिषद क तत्वावधान म अनेक सभाओं व सम्मेलनो का आयोजन कर अभूतपूव आन्दोलन खडा कर दिया और बगडी क्रातिकारियो की रण-स्थली बन गई। सन् 1941 को एक वृहत सम्मेलन म ठाकुर बगडी ने सभा भग करने के उद्देश्य से बडे पमाने पर लाठी चार्ज किया और बदूकें छोडी फलस्वरूप कई कायकर्ता और जोधपुर से आए लोक परिषद् के नेता घायल हो गये। यह जागीरदार का हमला बगडी काण्ड क नाम से मशहूर हुआ और उच्चस्तरीय जाच हुई।

श्री मीठालालजी काठेड सन् 1942 के 'अग्रेजो! भारत छोडो' आन्दोलन के दौरान गिरफ्तार हुए उनको जोधपुर जेल म रखा गया। इसी जेल की यातनाओ के फलस्वरूप इस युवा क्रांतिकारी का स्वास्थ्य इतना गिर गया कि फिर सभल ही नहीं सका और जेल स रिहाई के बाद भी जान लेवा बीमारी ने इन्हे अल्पायु म ही इस ससार स विदा कर दिया।

बिठौडा की अगुवा जोडी श्री गौरीशंकर व्यास व श्री लालदास वैष्णव



बिठौडा के स्वर्गीय गौरीशकरजी व्यास व लालदासजी वैष्णव मामूली पढे लिखे व्यक्ति होने पर भी मारवाड जक्शन (खारची) क्षेत्र क ग्रामो म राष्ट्रीय चेतना जगाने सामन्ती जुल्मो को उजागर कर बेठ-बेगार व लाग-बाग मिटाने के आन्दोलनो क अगुवा थे। इन दोनो नेताओ की एक विख्यात जोडी थी और ये हर काय म साथ रहते थे।

वस भी खारची क्षेत्र शिक्षा के अभाव के कारण बहुत पिछडा क्षेत्र था और यहा क गावो म साम ती नादिरशाही का बोलबाला था। मनमानी लाग बाग बेठ-बेगार व लाटा कूता की वसूली होती थी। ठाकुर और बोहरा (किसानो को कज देने वाले) मिलकर किसानो को लूटते थे और जमीनो व घरो से बेदखल करते थे। एसे वक्त म राजाशाही और ठाकुरशाही क विरुद्ध आवाज बुलन्द करना किसानो को सगठित करना बडा ही दुष्कर व जोखिमभरा काय था पर इन दोनो जन सेवको ने उसे राष्ट्र धम मानकर गाव 2 जाकर जन जागृति पदा की। इस काय म इन्हे कई मुसीबतें उठानी पडी। कई जगह मार पडी जूते खाये और रावले म कद कर बिठा दिया गया। पर इन दोनो त्यागी-तपस्वी कायकर्ताओ ने हिम्मत नहीं हारी।

सन् 1942–44 क 'अग्रेजो भारत छोडो' आन्दोलन के बाद की घटना है। जगह-जगह मारवाड के जागीरदार सगठित हो रहे थे और योजना बना रहे थे कि अग्रेजो के भारत से चले जाने के बाद



भी उनका और मारवाड म दरबार का शासन कायम रहे। ऐसी ही मीटिंग मारवाड जक्शन पर स्थित डाक बगले म आऊवा के ठाकुर नाहरसिहजी की अध्यक्षता मे आयोजित हुई थी। इस मीटिंग म गाव गाव के जागीरदार आये थे और मारवाड लोक-परिषद् के उत्तरदायी शासन की माग के विरोध म यह आयोजन था। गौरीशकरजी व लालदासजी भी मीटिंग की कायवाही के बारे म जानने के लिए वहा पहुचे। उन्हे वहा देखते ही जोजावर के ठाकुर श्री केसरसिह ने इनको डराया धमकाया बागावास ठाकुर बहादुरसिहजी ने दोनो की निदयतापूवक पिटाई की। फौजी जूतो से व बतो से बुरी तरह मारा छाती पर पर रखकर गोरीशकरजी के सिर के बाल उखाड दिये। मारवाड जक्शन के कायकर्ता श्री अब्दुल रहमान ग्वाजी ने छुडवाने की कोशिश की, तो उन्ह भी मार पडी। ऐसे थे उस जमाने के हालात, जिनम रहते हुए कायकर्ताओ को काय करना पडता था।

गौरीशकरजी व लालदासजी का जीवन बिलकुल सादा व त्यागमय था। मारवाड लोक परिषद् के नेता श्री जयनारायण व्यास श्री मथुरादास माथुर श्री रणछोडदास गट्टानी आदि के सहयोग से इन्होने अन्तिम दिनो तक जनता की सेवा की।



सतत् कायशील
श्री विजयशकर दवे



साजत के श्री विजयशकर दवे मारवाड लोक परिषद् के उन प्रथम पक्ति के कायकर्ताओ म से हैं—जिन्होने लोक परिषद् का सदेश गाव-गाव पहुचाकर पाली जिले म जन जागृति का सूत्रपात किया। श्री दवे का जन्म सोजत शहर मे सवत् 1971 म चत्र शुक्ला 2 को श्री जयशकरजी एव श्रीमती शान्ति देवी के घर हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा वही हुई, तत्पश्चात् इन्होने सोजत रोड पर विजयशकर दवे एण्ड सस' नामक दुकान खोलकर डाबर तथा पट्रोल की एजेसी ली और धधा करने लगे। इसी धन्धे के सिलसिले मे दवेजी एक बार सोजत के ही वद्य मुन्नालालजी के साथ ब्यावर गये। वहा उसकी मारवाड राज्य से निष्कासित श्री जयनारायण व्यास से मुलाकात हुई। यही मुलाकात इनके जीवन म क्रातिकारी परिवतन का कारण बनी। समय देश भर म स्वाधीनता आदोलन की हलचल का था। ही महात्मा गाधी के आदोलन की धूम मची हुई थी।

सन् 1939 मे सवप्रथम सोजत रोड पर मारवाड लोक प[रिषद्] की शाखा खोला गई उस म सवश्री मीठालाल काका अध्यक्ष मुन्नालाल मन्त्री तथा विजयशकर दवे कोषाध्यक्ष चुने गये। प[रिषद्] की प्रचारात्मक गतिविधिया बढ गई। कुछ ही समय बाद जयनारायण व्यास सोजत रोड पधारे तब लोक परिषद् के ... उनके साथ श्री मीठा लाल काका व दवेजी भी जोधपुर के लिये रवाना हुए। रास्ते मे पाली म लोक परिषद् के कायकर्ताओ रामप्रसाद गाधी और मूलचन्द भट्ट ने इन्हे रोककर धान मण्डी सभा का आयोजन किया। इस सभा म पाली मिल के मनेजर माथुर का भाषण शारदा एक्ट के विरोध म हुआ और ज्यो ही जयनारायण व्यास बोलने के लिए खडे हुए पुलिस ने लाठी चार्ज दिया। दवेजी ने व्यासजी का बचाव किया वरना गम्भीर [चोट] आती।

सन् 1940 म मारवाड लोक-परिषद् ने अकाल की ... को लेकर आदोलन चलाया। इसी आन्दोलन के सिलसिले दवेजी कटालिया के श्री हरिराम ओझा वद्य मुन्नालाल तथा ... दवेजी भटनागर गिरफ्तार किये गये, जिन्हे सोजत की पुरानी जे[ल] मौजूदा गोटावत-भवन म रखा गया था। लोक परिषद् जोधपुर दरबार के बीच समझौता होने पर अन्य नेताओ के इनकी भी रिहाई हो गई।

28 माच 1942 को मारवाड लोक परिषद् ने चण्डावल जिम्मेवार हुकुमत दिवस मनाने का ऐलान किया। दवेजी व मीठ[ा लाल]जी काका आदि कायकर्ता सोजत से तागा लेकर चण्डावल लिये रवाना हो गये। सोजत रोड से एक तागा भरकर तथा ... से एक बलगाडी भरकर कायकर्ता चण्डावल पहुचे। आस पास अनेक गावो से कायकर्ता पदल बलगाडी आदि से पहुचे पर चण्[डावल] मे जागीरदार ने जो आतक फला रखा था इस कारण सभी को ... के बाहर ही रोक दिया गया और गाव चण्डावल म भी ... आतक पदा किया गया कि किसी को घर से बाहर ही नही निक[लने] दिया। चण्डावल के प्रमुख कायकर्ता श्री मागीलालजी आलीशान जब यह सूचना हुई कि बाहर से कई नेतागण व कायकर्ता आये और बाहर ही रोक दिये गये तब श्री आलीशान किसी तरह ... से बाहर लोटा और धोती लेकर निकले और सोजत व जोधपुर आये नेताओ के पास पहुचे। श्री आलीशान म तो गजब का हिम्[मत] थी, इतने भयकर आतक व सुदृढ नाकेबन्दी के बावजूद भी उन्ह[ोने] सैकडो कायकर्ताओ के साथ वन्दे मातरम् का नारा लगाते हुए ग[ाव]



म प्रवेश कर दिया । तत्काल ही ठिकाणे की पुलिस व घुडसवारो ने लाठी चार्ज करके बेरहमी स पिटाई शुरू कर दी । 30-40 कार्य कर्ताओ को गम्भीर चोटें आई । दवेजी की पसलिया टूट गई । तीन जगह फ्रेक्चर हुए । श्री आलीशान व मीठालालजी काका बुरी तरह घायल हुए । फिर पुलिस ने घेरा म घुसकर रामसुखजी पुरोहित, छगनारामजी व सेठजी, जो सभा की अध्यक्षता करने वाले थे । उन्ह, बेरहमी स पीटा । घायलो का किसी तरह पीपलिया के सेठ श्री प्रेमराजजी बाहरा की कार द्वारा जोधपुर भेजा गया और इलाज करवाया गया ।

चण्डावल म हुए इस लाठीचार्ज काण्ड की देश भर म तीव्र प्रतिक्रिया हुई । मारवाड लोक परिषद् ने इसी बात पर आन्दोलन छेडा और गिरफ्तारिया हुई । लोक परिषद् के चोटी के नेता तो जेल म बन्द थ पर एक के बाद एक डिक्टेटर मुकरर करके सत्याग्रह चलाया जा रहा था । श्री दवे 17वें डिक्टेटर नियुक्त हुए और आन्दोलन का सचालन किया । फिर 31 मई, 1944 को सरकार और मारवाड लोक परिषद् के बीच समझौता हुआ और सभी नेताओ व कार्यकर्ताओ को जेल म रिहा कर दिया गया । जेल म रिहा होने वालो म सोजत के स्वतन्त्रता सेनानी व पत्रकार यशवन्तजी कविर भी एक थ । विजयशकरजी दवे इन दिनो गाधीधाम म रहते हैं ।

धुन के धनी
श्री ऋषभराज जैन

□

Stand firm like a rock in your own faith and success is under your feet

Stand with iron nerves and well intelligent brain and the whole world is under your feet

Suffering is living death but suffering for the higher cause is life itself

य तीन गुरुमन्त्र दिये प्रसिद्ध क्रान्तिकारी और महान् त्यागी स्वामी कुमारानन्द 'ब्यावर' ने अपने प्रिय शिष्य श्री ऋषभराज जैन को, और इन्ही जीवन मन्त्रो की बुनियाद पर ऋषभराजजी ने अपनी सारी जिन्दगी का निर्माण किया ।

ऋषभजी का जन्म 19 अगस्त 1920 को जैतारन मे प्रसिद्ध वकील श्री मानकराजजी मोहनोत के घर हुआ था । उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी वही हुई । बचपन मे ही ब्यावर स आने वाले नेताओ स तथा समाचारपत्रो स व जाना करते थ कि ब्यावर म विलायती कपडो की होली जलाई गई, गाधीजी खादी पहनने का उपदेश देते हैं और अग्रेजीराज के विरुद्ध सत्याग्रह करते हैं । इससे इन चीजो की ओर उनका रुझान हुआ । फिर 1935 म मारवाड मिडिल बोर्ड की परीक्षा देने जब जोधपुर गये तो कटला बाजार म खादी भण्डार से खादी खरीदी और गाधीजी का छपा हुआ सदेश— 'मीलें देश को धोखा देती हैं खादी ही देशभक्त की पोशाक है ।' पढने को मिला । इस प्रकार उनम राष्ट्रीय भावना के बीज पडे जो समय पाकर अकुरित हुए ।

सन् 1937 म आगे की पढाई के लिए ब्यावर म श्री शान्ति जैन मिडिल स्कूल की आठवी कक्षा म भर्ती हुए । वहा श्री मिश्रीलालजी मरोठा जैन धर्म की शिक्षा के अध्यापक थ पर वे राष्ट्रीय विचारो के समर्थक होने स क्रान्तिकारियो का इतिहास और जलिया वाला बाग के नरसहार की कहानी सुनाया करते थ । उन्ही दिनो वे स्वामी कुमारानन्द की एक मीटिंग म शरीक हुए । उन्होने बडे जोशीले भाषण मे कहा— Tell me who lives if India dies and who dies if India lives ? इस एक वाक्य ने चिनगारी का काम किया और ऋषभराजजी 1937 म ही काग्रेस के सदस्य बन गये और पूरे जोश खरोश के साथ स्वामी कुमारानन्द के मार्ग-दर्शन म राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिविधियो म लग गये । सनातन धर्म कालेज ब्यावर म प्रवेश लेते ही स्टूडेंटस यूनियन की स्थापना कर सचिव चुने गये और ब्यावर म राजपूताना एव सेंटल इण्डिया स्टूडेंटस कान्फ्रेंस का सफल आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता बम्बई के श्री के एफ नरीमन ने की ।

22 सितम्बर 1940 के दिन ब्यावर के काग्रेस कार्यालय दामोदर वाचनालय पर झण्डा अभिवादन के कार्यक्रम म ऋषभजी ने जोर जोर से 'Up-Up The National flag, down-down the Union Jack' के नारे लगाये । स्थानीय पुलिस तो गिरफ्तार करने का मौका खोज ही रही थी । पुलिस ने प्रमुख विद्यार्थी नेता श्री ऋषभराज व श्री मोहनराज जैन (बाली), जो जो उस वक्त सनातन धर्म कालेज ब्यावर म पढते थे और जैन होस्टल म रहते थ, कुछ अन्य सहयोगियो के साथ गिरफ्तार कर लिया । जैन होस्टल म इनके कमरो की तलाशी ली गई व कई कागज व किताबें जब्त कर ली गई । श्री मोहनराजजी (बाली) को तो शीघ्र रिहा कर दिया पर श्री ऋषभराजजी पर डिफेंस आफ इडिया एक्ट के तहत रूल्स 38 (1) तथा रूल्स 34 (6) के तहत मुकदमा चलाया गया, जिसम एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा व बीस रुपये जुर्माना किया गया । अपील करने पर सजा एक वर्ष स घटाकर 3 माह की कर दी गई । जेल म स्वामी कुमारानन्द व अन्य कई राजनैतिक कैदी थ वहा ऋषभजी ने एक दिन उन दिनो का प्रसिद्ध गाना— नही रखनी, नही

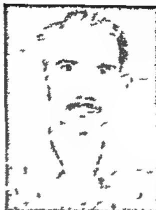


रखनी, सरकार जालिम नही रखनी जोर-जोर म गाया। अंग्रेज जेल सुपरिंटेंडेंट नाराज हो गया और सबको काल कोठरी मे ब द कर दिया। लेकिन 1 जुलाई, 1942 को इनकी जेल स रिहाई हो गई। स्वामी कुमारानन्द न जापान मे रह रह क्रान्तिकारी श्री रासबिहारी बोस के पास ऋषभराजजी को भेजने की योजना बनाई थी, पर युद्ध की विकट परिस्थितियो के कारण यह सम्भव नहा हुआ। अब ऋषभजी पुन जतारण आ गये और मारवाड म उन दिना एडवा इजरी एसम्बली के होन वाले चुनावो के सिलसिल म खाल गय चुनाव विभाग म क्लक की नौकरी करन लग, पर 2 अक्टूबर, 1941 को जतारण म गाधी जयन्ती के उपलक्ष मे सभा आयोजित करन व भाषण देने के जुम म उन्ह जतारण के तत्कालीन हाकिम श्री अब्दुल जलील काजी न बलात्तगी का आदेश द दिया। नौकरी स छुट्टी पाकर जतारण म ही दवाइयो की दुकान की, पर 1947 म इनके पिताजी क स्वगवास क पश्चात् य जाधपुर मे ही रहने लग।

महात्मा गाधी क निर्वाण के 12वें दिन जोधपुर म गुलाब सागर पर 12 फरवरी का आयोजित सभा मे गाधी सवा दल नामक सस्था का गठन किया गया और सवश्री मथारामजी शास्त्री तुलसी रामजी राठी रणछोडदासजी गट्टानी धनपतजी मेहता, सिद्धेश्वरजी मादा बसन्तराजजी महता, सावतराजजी भण्डारी तथा ऋषभराजजी उस सस्था क प्रमुख कायकर्ता बने। फिर एक दिन हरिजन दिवस मनाने के उपलक्ष म गिरदीकोट म सभा हुई। हरिजनो न अपन हाथ से जलपान कराया। ऋषभराजजी, रणछोडदासजी गट्टानी व तुलसीदासजी राठी को क्रुद्ध भीड न घेर लिया और भगी है—दूर हटो के नारे लगाती हुई भीड पीछे पड गई। पुलिस न आकर भीड को तितर बितर किया पर माहेश्वरी समाज न श्री गट्टानी व श्री राठी का और मुणोतो (ओसवाल) क भाईयो न ऋषभराजजी को जाति बाहर कर दिया।

इन्हा दिना उनका सम्पक सिद्धराजजी ढढ्ढा स हुआ जिन्होने चौमल क पास सर्वोदय केन्द्र की स्थापना की थी। उन्ही की सलाह पर ऋषभराजजी ने सर्वोदय व खादी सस्थाओ म काय करना स्वीकार किया और तब स धुन के धनी सादा जीवन उच्च विचार की मूर्ति श्री ऋषभराजजी ने अपना जीवन गाधीजी के रचनात्मक कार्यो—खादी अछूतोद्धार भूदान ग्रामदान व सर्वोदय को समर्पित कर रखा है।

अलग अलग हैं धम सभी के, देश धम है एक,
एक डोर मे गुथे हुए हैं जैसे सुमन अनेक।



निडर जनसेवी

श्री पुखराज परिहार



स्वर्गीय श्री पुखराजजी परिहार का जन्म ग्राम चाणोद म 2 माच 1915 क दिन बालाजी छीपा क घर हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा गाव की पाठशाला म हुई, फिर व्यवसाय क लिये बम्बई गय। वही महात्मा गाधी के नेतृत्व म कांग्रेस द्वारा चलाय जा रह स्वतन्त्रता आन्दोलन की हलचलो को देखकर इन्ह भी प्रेरणा मिली और वहा विभिन्न कायक्रमो म भाग लेन लग गय। एक बार दादर रेल्वे स्टेशन पर तोडफोड क आरोप म पुलिस न आपको गिरफ्तार किया और बम्बई स निष्कासित कर दिया। फलस्वरूप आप अपन गाव चाणोद म आकर राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की गतिविधियो म जुट गय।

चाणोद ठिकाणा मारवाड क अधिकारसम्पन्न ठिकाणो म स ही एक नही था, जागीरी जुल्मो म कठोर प्रशासन क मामलो म भी अव्वल था और यहा आजादी की बात करन की कोई हिम्मत भी नही करता था। किसानो पर मनमानी लाग-बाग व बेठ-बेगार लगी हुई थी। फसल का चौथा हिस्सा और ठिकान क कई गावो म तीसरा हिस्सा लटाई म वसूल किया जाता था। समय पर लाटा न हान स किसानो की फसल लाटो (खलिहानो) म पडी-पडी बर्बाद होती थी चोरी हो जाती थी और कभी-कभी तो खरीफ व रबी की फसल अगल वष बारिश होन पर भी लाटो म पड़ी हुई भीग कर सड जाती थी, पर लटाई नही होती थी। लटाई को लेकर प्रतिवष गावो म ठिकाणे के कारिन्दो व किसानो म लडाई होना और गरीब किसानो को मार तो पडती ही पर साथ म लाखो रुपये की फसल का नुकसान भी होता। पुखराजजी न इन हालातो को देखकर नियमानुसार लटाई वक्त पर हो इस हेतु किसानो को सगठित कर आन्दोलन खडा किया। सयोग म उन्हा दिनो दवली निवासी श्री मोहनराजजी जिन्होन बाली म वकालात शुरू की हो थी न चाणोद ठिकाणे क 24 गावो क किसानो को चाणोद म एकत्रित कर छठे हिस्स म ही लटाई करान का निश्चय किया और बाली म कानूनी कायवाही भी शुरू की। बाली म उस समय श्री बन्शीधर पुरोहित बडे ईमानदार व किसानो क हिमायती तहसीलदार बनकर आये थे। उन्होन बावजूद ठिकाणे क भारी दबाव क रिसीवर



म प्रवेश कर लिया। तत्काल ही ठिकाणे की पुलिस व धन्मवारा ने लाठी चार्ज करके बेरहमी से पिटाई शुरू कर दी। 30-40 कार्यकर्ताओं को गम्भीर चोटें आईं। दवेजी की पसलियां टूट गई। तीन जगह फ्रेक्चर हुए। श्री आलीशान व मीठालालजी काका बुरी तरह घायल हुए। फिर पुलिस ने घेरा में घुसकर रामसुखजी पुरोहित छगनरामजी व सेठजी, जो सभा की अध्यक्षता करने वाले थे। उन्हें, बेरहमी से पीटा। घायलों को किसी तरह पीपलिया के सेठ श्री प्रेमराजजी बोहरा की कार द्वारा जोधपुर भेजा गया और इलाज करवाया गया।

चण्डावल में हुए इस लाठीचार्ज काण्ड की देश भर में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। मारवाड लोक-परिषद् ने इसी बात पर आन्दोलन छेड़ा और गिरफ्तारियां हुई। लोक परिषद् के चोटी के नेता तो जेल में बन्द थे, पर एक के बाद एक डिक्टेटर मुकर्रर करके सत्याग्रह चलाया जा रहा था। श्री दवे 17वें डिक्टेटर नियुक्त हुए और आन्दोलन का संचालन किया। फिर 31 मई 1944 को सरकार और मारवाड लोक-परिषद् के बीच समझौता हुआ और सभी नेताओं व कार्यकर्ताओं को जेल से रिहा कर दिया गया। जेल से रिहा होने वालों में सोजत के स्वतन्त्रता-सेनानी व पत्रकार यशवन्तजी रुचिर भी एक थे। विजयशंकरजी दवे इन दिनों गांधीधाम में रहते हैं।

धुन के धनी
श्री ऋषभराज जैन



Stand firm like a rock in your own faith and success is under your feet

Stand with iron nerves and well intelligent brain and the whole world is under your feet

Suffering is living death but suffering for the higher cause is life itself

ये तीन गुरुमन्त्र दिये प्रसिद्ध क्रान्तिकारी और महान् त्यागी स्वामी कुमारानन्द ब्यावर ने अपने प्रिय शिष्य श्री ऋषभराज जैन को, और इन्हीं जीवन मन्त्रों की बुनियाद पर ऋषभराजजी ने अपनी सारी जिन्दगी का निर्माण किया।

ऋषभजी का जन्म 19 अगस्त 1920 को जेतारण में प्रसिद्ध वकील श्री मानकराजजी मोहनोत के घर हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी वहीं हुई। बचपन में ही ब्यावर से आने वाले लोगों से तथा समाचारपत्रों से व जाना करते थे कि ब्यावर में विलायती कपडों की होली जलाई गई, गांधीजी खादी पहनने का उपदेश देते हैं और अंग्रेजीराज के विरुद्ध सत्याग्रह करते हैं। इससे इन चीजों की ओर उनका रुझान हुआ। फिर 1935 में मारवाड मिडिल बोर्ड की परीक्षा देने जब जोधपुर गये तो कटला बाजार में खादी भण्डार से खादी खरीदी और गांधीजी का छपा हुआ सदेश— 'मोटे देश का धागा देती है खादी ही देशभक्त की पोशाक है। पढने को मिला। इस प्रकार उनमें राष्ट्रीय भावना के बीज पडे जो समय पाकर अंकुरित हुए।

सन् 1937 में आगे की पढाई के लिए ब्यावर में श्री शांति जैन मिडिल स्कूल की आठवी कक्षा में भर्ती हुए। वहां श्री मिश्रीलालजी अरोडा जैन धर्म की शिक्षा के अध्यापक थे पर वे राष्ट्रीय विचारों के समर्थक होने से क्रान्तिकारियों का इतिहास और जलियांवाला बाग के नरसंहार की कहानी पढाया करते थे। उन्हीं दिनों वे स्वामी कुमारानन्द की एक मीटिंग में शरीक हुए। उन्होंने वहां उन्होंने भाषण में कहा— 'Tell me, who lives if India dies and who dies if India lives ?' इस एक वाक्य ने चिनगारी का काम किया और ऋषभराजजी 1937 में ही कांग्रेस के सदस्य बन गये और पूरे जोश खरोश के साथ स्वामी कुमारानन्द के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिविधियों में लग गये। सनातन धर्म कालेज ब्यावर में प्रवेश लेते ही स्टूडेंटस यूनियन की स्थापना कर सचिव चुने गये और ब्यावर में राजपूताना एवं सेंट्रल इंडिया स्टूडेंटस कान्फ्रेंस का सफल आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता बम्बई के श्री के एफ नरीमन ने की।

22 सितम्बर 1940 के दिन ब्यावर के कांग्रेस कार्यालय तिलक वाचनालय पर झण्डा अभिवादन के कार्यक्रम में ऋषभजी ने जोर जोर से "Up Up The National flag, down-down the Union Jack" के नारे लगाये। स्थानीय पुलिस तो गिरफ्तार करने का मौका खोज ही रही थी। पुलिस ने प्रमुख विद्यार्थी नेता श्री ऋषभराज व श्री मोहनराज जैन (बाली), को जो उस वक्त सनातन धर्म कॉलेज ब्यावर में पढते थे और जैन होस्टल में रहते थे, कुछ अन्य सहयोगियों के साथ गिरफ्तार कर लिया। जैन हॉस्टल में इनके कमरों की तलाशी ली गई व कई कागज व किताबें जब्त कर ली गई। श्री मोहनराजजी (बाली) को तो शीघ्र रिहा कर दिया पर श्री ऋषभराजजी पर डिफेंस ऑफ इंडिया एक्ट के तहत रूल्स 38 (1) तथा रूल्स 34 (6) के तहत मुकदमा चलाया गया, जिसमें एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा व बीस रुपये जुर्माना किया गया। अपील करने पर सजा एक वर्ष से घटाकर 3 माह की कर दी गई। जेल में स्वामी कुमारानन्द व अन्य कई राजनैतिक कैदी थे वहां ऋषभजी ने एक दिन उन दिनों का प्रसिद्ध गाना— नहा रखनी, नहीं

रखनी सरकार जालिम नहा रखनी जोर-जोर स गाया। अग्रज जल सुपरिटेंडेंट नाराज हो गया और सबको काल कोठरी म बन्द कर दिया। लकिन 1 जुलाई 1942 का इनकी जेल से रिहाई हा गई। स्वामी कुमारानन्द ने जापान म रह रह क्रान्तिकारी श्री रासबिहारी बास के पास ऋषभराजजी को भेजने की योजना बनाई थी, पर युद्ध की विकट परिस्थितिया के कारण यह सम्भव नहीं हुआ। अब ऋषभजी पुन जतारण आ गये और मारवाड म उन दिना एन्वा इजरी एसम्बली के हान वाल चुनावा के सिलसिल म खात गये चुनाव विभाग म क्लर्क की नौकरी करने लग पर 2 अक्टूबर 1941 को जतारण म गाधी जयन्ती के उपलक्ष मे सभा आयोजित करने व भाषण दन के जुर्म म उन्ह जतारण के तत्कालीन हाकिम श्री अब्दुल जलील काजी न बखास्तगी का आदेश द दिया। नौकरी स छुट्टी पाकर जैतारण म ही दवाइयो की दुकान की पर 1947 म इनके पिताजी के स्वगवास क पश्चात् य जोधपुर मे ही रहने लग।

महात्मा गाधी के निवाण के 12वें दिन जोधपुर म गुलाब सागर पर 12 फरवरी को आयोजित सभा म गाधी सेवा दल नामक संस्था का गठन किया गया और सवश्री मथुरादासजी शास्त्री तुलसीरामजी राठी रणछोडदासजी गट्टानी धनपतजी मेहता सिद्धेश्वरजी माथुर बसन्तराजजी मेहता सावतराजजी भण्डारी तथा ऋषभराजजी उस संस्था क प्रमुख कायकर्ता बने। फिर एक दिन हरिजन दिवस मनाने के उपलक्ष म गिरदीकोट म सभा हुई। हरिजना ने अपने हाथ स जलपान कराया। ऋषभराजजी रणछोडदासजी गट्टानी व तुलसीदासजी राठी का क्रुद्ध भीड न घेर लिया और 'भगी है—दूर हटो' के नारे लगाती हुई भीड पीछे पड गई। पुलिस न आकर भीड को तितर बितर किया पर माहेश्वरी समाज ने श्री गट्टानी व श्री राठी का और मुणो ता (ओसवाल) क भाईया ने ऋषभराजजी को जात-बाहर कर दिया।

इन्ही दिना उनका सम्पक सिद्धराजजी ढड्ढा स हुआ जिन्होने खामल क पास सर्वोदय केन्द्र की स्थापना की थी। उन्ही की सलाह पर ऋषभराजजी न सर्वोदय व खादी संस्थाओ मे काय करना स्वीकार किया और तब स धुन के धनी सादा-जीवन उच्च विचार की मूर्ति श्री ऋषभराजजी न अपना जीवन गाधीजी के रचनात्मक कार्यो—खादी अछूतोद्धार भूदान ग्रामदान व सर्वोदय को समर्पित कर रखा है।

अलग अलग हैं धम सभी के, देश धर्म है एक,
एक डोर मे गुथे हुए हैं जैसे सुमन अनेक।

निडर जनसेवी

श्री पुखराज परिहार

स्वर्गीय श्री पुखराजजी परिहार का जन्म ग्राम चाणाद म 2 मार्च 1915 क दिन बालाजी छीपा क घर हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा गाव की पाठशाला म हुई फिर व्यवसाय क लिय बम्बई गये। वहा महात्मा गाधी के नेतृत्व म काग्रेस द्वारा चलाये जा रहे स्वतन्त्रता आन्दोलन की हलचला को देखकर इन्ह भी प्रेरणा मिली और वहा विभिन्न कायक्रमा म भाग लेने लग गये। एक बार दादर रेल्वे स्टेशन पर तोडफोड के आरोप म पुलिस न आपको गिरफ्तार किया और बम्बई स निष्कासित कर दिया। फलस्वरूप आप अपने गाव चाणाद म आकर राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की गतिविधियो म जुट गये।

चाणाद ठिकाणा मारवाड क अधिकारसम्पन्न ठिकाणा म स ही एक नही था, जागीरी जुल्मा म कठोर प्रशासन क मामला म भी अव्वल था और यहा आजादी की बात करने की कोई हिम्मत भी नही करता था। किसाना पर मनमानी लाग-बाग व बेठ-बेगार लगी हुई थी। फसल का चौथा हिस्सा और ठिकाने क कई गावा म तीसरा हिस्सा लटाई म वसूल किया जाता था। समय पर लाटा न होने म किसाना की फसल लाटा (खलिहाना) म पडी-पडी बर्बाद होती थी चोरी हो जाती थी और कभी-कभी तो खरीफ व रबी की फसल अगले वर्ष बारिश होने पर भी लाटा म पडी हुई भीग कर सड जाती थी पर लटाई नही होती थी। लटाई को लेकर प्रतिवर्ष गावा म ठिकाणे के कारिन्दा व किसाना म लडाई होना और गरीब किसाना को मार तो पडती ही पर साथ म लाखो रुपय की फसल का नुकसान भी होता। पुखराजजी न इन हालाता को देखकर नियमानुसार लटाई वक्त पर हो इस हेतु किसाना को सगठित कर आन्दोलन खडा किया। सयोग स उन्हा दिना देवली निवासी श्री मोहनराजजी जिन्होन बाली म वकालात शुरू की हो थी न चाणाद ठिकाणे क 24 गावा के किसाना को चाणाद म एकत्रित कर दृढ हिम्मत स ही लटाई कराने का निश्चय किया और बाली म कानूनी कायवाही भी शुरू की। बाली म उस समय थानेदार पुरोहित बड ईमानदार व किसाना क हितैषी तहसीलदार बनकर आये थ। उन्होने बावजूद ठिकाणे के भारी दबाव क गिरदावर



मुकरर करके छठ हिस्से में लटाई करवा दी। किसानों में अपार उत्साह की लहर दौड़ गई।

चाणोद के काश्तकारों को चाणोद के तालाब के पानी का उपयोग ग्राम जनता के हित में हो इस हेतु भी आन्दोलन करना पड़ा क्योंकि चाणोद के ठाकुर मुकनसिंहजी व कु० चिमनसिंहजी इस तालाब को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति बताकर स्वयं के उपयोग में ही लेना चाहते थे। पुखराजजी ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया और मारवाड़ी निवासी स्वतन्त्रता सेनानी फूलचन्दजी बाफना ने इस आन्दोलन में सक्रिय सहयोग दिया। श्री बाफना जब श्री हीरालालजी शास्त्री के नेतृत्व में गठित प्रथम मन्त्रिमण्डल में स्वायत्त शासन मंत्री थे तो स्वयं चाणोद पधारे और जनता के हित में आदेश दिये। लटाई व तालाब को लेकर हुये आन्दोलनों में स्थानीय किसान कार्यकर्ता सर्वश्री केसाजी चौधरी गणेशजी चौधरी धीरारामजी चौधरी नवलजी चौधरी माणकचन्दजी जैन सोहनलालजी जैन मूलारामजी वैष्णव मोहनलालजी मोडा कुन्दनमलजी सोनार बाजारामजी खारवाल तिलोकजी सुथार, हीरसिंहजी हिन्दूजी भील, भापारामजी मेघवाल, शिवनाथसिंहजी, नेवारामजी माली तथा भवीसिंहजी पिठूडा हेमजी माटी— प्रतापपुरा भीकमचन्दजी जैन— कामलाव श्री पुरारामजी वैष्णव –ढाला हाजीखाजी—बिरामी दौलतराम परिहार –बालराई नवारामजी कुम्हार—बालराई आदि ने प्रमुख रूप से सहयोग देकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुखराज जी परिहार के स्वर्गवास के बाद तालाब के मामले व अन्य कार्यों में श्री मदनमलजी समलानी ने ग्रामवासियों का नेतृत्व किया।

चाणोद ठिकाणे के अत्याचारों के बावजूद भी आन्दोलन चलते रहे। फलस्वरूप चाणोद में एक वृहद किसान सम्मेलन मारवाड़ लोक परिषद के तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन को सफल न होने देने के लिए जागीरदारों ने पूरा जोर लगा दिया और गांवों से आने वाले लोगों को रोक दिया। फिर भी बाहर से आये लोक-परिषद के नेताओं ने लोगों को सम्बोधित किया। फिर पाली जिले के कार्यकर्ता सर्वश्री रामप्रसादजी गांधी रामप्रतापजी शर्मा मोहनराजजी मूलचन्दजी भट्ट सुमेरराजजी डागा आदि ने एक जुलूस निकाला जिस पर जागीरदारी गुण्डों ने पत्थरबाजी की जिससे श्री रामप्रताप शर्मा गुन्देचा के सिर पर गम्भीर चोटें आयी और अन्य कई कार्यकर्ता घायल हुये। इन घटनाओं से जागीरदार और भी आतंकित हुआ। लोगों को डराना धमकाना मारपीट करना आम बात हो गई।

इन्हीं दिनों चाणोद के निवासी हिन्दूजी भील को जागीरदार के कारिन्दों ने पट्रोल डालकर जिन्दा जला दिया। इससे सारे क्षेत्र में भारी उत्तेजना और आक्रोश फैल गया। इस नृशंस हत्याकाण्ड से ठिकाने की प्रतिष्ठा को बड़ा आघात पहुँचा और ठाकुर मुकनसिंह जोधपुर में ही रहने लगे। पुखराजजी पर जागीरदार ने कई मुकद्दमे दायर किये और नाना प्रकार से हैरान किया पर वे अंतिम समय तक निडरतापूर्वक जन सेवा का कार्य करते रहे। इन्हें सर्वश्री नाथूरामजी मिर्धा मथुरादासजी माथुर, पूनमचन्दजी विश्नोई, परसरामजी मदेरणा, शंकरलालजी आदि कार्यकर्ताओं का सहयोग मिलता रहा।

श्री नथमल लोढा, घोड निवासी द्वारा खोड ग्राम में आयोजित राजनैतिक-सम्मेलन में मारवाड़ लोक परिषद द्वारा मारवाड़ में उत्तरदायी शासन की मांग की गई थी। श्री पुखराज ने सक्रिय रूप में कार्य किया। वे चाणोद के 12 वर्षों से भी अधिक समय तक सरपंच रहे और गांव में पंचायत भवन कन्या पाठशाला भवन, ग्रामसेवक भवन तथा जिठुण्डा व भाबूदा में विद्यालय भवन निर्माण के कई हितकारी विकास कार्य करवाये। अपने परिवार के जीवन यापन व बच्चों की शिक्षा की परवाह न करते हुए अपने आपको गांवों के लोगों के हितार्थ समर्पित करने वाले पुखराजजी परिहार को लोग पीढ़ियों तक याद करते रहेंगे।



गतिशील सेनानी
श्री शंकरलाल कालानी

शंकरलालजी कालानी कीर्ति शेष हो गये। उनका दैहिक शरीर जाता रहा, पर देवली कला का एक एक चप्पा एक एक इमारत, एक एक व्यक्ति में वे जीवित हैं। वे एक से अनेक हो गये। आपका जन्म ग्राम देवली-कला जिला पाली में श्री हरिदेव कालानी के घर हुआ था। शुरू में श्री सुखदेवजी वैष्णव की पाठशाला में अक्षर ज्ञान सीखा बाद में पंडित मदनाथ की पाठशाला में पढ़े। कालानी जी प्रखर बुद्धि थे। महाजनी हिसाब किताब में वे बड़े पटु थे। जिले के विभिन्न गांवों की तरह देवली कला में भी आजादी के पूर्व जागीरी प्रथा थी और शिक्षा चिकित्सा ग्रामीण विकास की कल्पना तक असंभव थी। दवा दारू मात्र झाड़ फूंक अंधविश्वास तक ही सीमित थी। जीवन मरण भाग्य के भरोसे थे। ऐसे दम घोटू वातावरण में भी कुछ इस तरह के लोग थे जिन्होंने अपने निज के



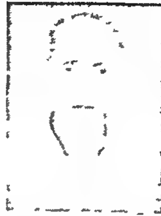
संस्कारो मे सामाजिक कुरीतियां और सामंती व राजाशाही व्यवस्था के विरुद्ध टकराकर प्रकाश पुंज बनने का बीड़ा उठाया। एक छोटे से ठिकाने के छोटे से गांव देवली उदावतान में प्रकाश की किरण के रूप में स्वर्गीय शंकरलालजी थे। उनका कार्य क्षेत्र अपनी जन्म भूमि देवली ही बनी और उनकी इहलीला भी इसी जगह पूरी हुई।

सन् 1940 में ही देवली कलां में मारवाड़ लोक परिषद् की शाखा खुली। शंकरलालजी लोकनायक जयनारायण व्यास के संपर्क में आये। व्यासजी सोजत, देवली, चण्डावल आया-जाया करते थे। मारवाड़ लोक परिषद् की प्रेरणा से ही शंकरलालजी ने जागीरी लाग-बागों के विरुद्ध एक तरह से बगावत का झण्डा ही उठा लिया और सामंती प्रथा के विरुद्ध जीवन भर संघर्ष किया। आपने ठिकाणे में बीसा इक्कीसा लाग खत्म करने की आवाज उठायी, जिसके लिये कोर्ट मे आपने मुकदमा जीता। परिणामतः ठिकाणे को आपस इसके लिए राजीनामा करना पड़ा और इस प्रथा का अंत हुआ। इसी तरह आपने ठिकाणे के गांवों में किसी के घर विवाह के समय ली जाने वाली 'कांसा लाग' का भी डटकर मुकाबला किया और उसे बन्द करवाया।

आर्यसमाजी सुधारक के रूप के साथ आपने राजनीति में प्रवेश किया। श्री व्यासजी, मीठालालजी कावा, मांगीलालजी आलिशान, बलदेवरामजी, नाथूरामजी मिर्धा आदि के आप निकट सहयोगी थे। सन् 1942 में चण्डावल ठिकाणे मे हुए लोक परिषद् के कार्यकर्ताओं पर निर्मम अत्याचार के विरुद्ध छेड़े गये आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया था।

आपने ठिकाणे के विरोध के बावजूद क्षेत्र मे पहला विद्यालय अपने गांव के 'गायों के बाड़े' में स्थापित किया। मारवाड़ नरेश उम्मेदसिंहजी के शासन के दौरान जब अकाल पड़ा तो आपने गऊशाला समिति का गठन किया।

मारवाड़ लोक परिषद् के आन्दोलनकारी दिनों में आपने कार्यकर्ताओं की खुलकर आर्थिक सहायता की। सन् 1947 के आते ही आप और भी अधिक सक्रिय हो उठे। क्षेत्र के लिए आप शिक्षा, सड़क, डाकघर, पंचायत, चिकित्सालय, आधुनिक जीवन की सभी सुविधाएँ जुटाने में लग गये। उनके सपनों में देवली कलां को एक आदर्श स्वावलम्बी ग्राम बनाने की कल्पना रही। वे देवली कलां ग्राम पंचायत के सदा सरपंच चुने जाते रहे तथा सदा ही ग्राम के विकास कार्य में लगे रहे।



रचनात्मक सहयोगी
श्री मुन्नीलाल विजयवर्गीय

☐

श्री विजयवर्गीय का जन्म 11 दिसम्बर 1920 को जोधपुर में श्री सीतारामजी विजयवर्गीय के घर हुआ था। आपको सन् 1935 में श्री भंवरलालजी सर्राफ (जोधपुर) से सर्वप्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने की प्रेरणा मिली। आपने सन् 1935 से 1940 तक पाली तथा जोधपुर क्षेत्रों में देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन और राजस्थान की स्थापना में सक्रिय योगदान दिया। इस दौरान आप मारवाड़ लोक परिषद्, जोधपुर व पाली, प्रजामण्डल बीकानेर के सक्रिय सदस्य के रूप में देशी रियासतों में लाग बाग, बेठ बेगार, जागीरी प्रथा आदि के विरुद्ध आन्दोलनों में भाग लेते रहे। उत्तरदायी शासन की प्राप्ति तथा आजादी के बाद राजस्थान के नव निर्माण में कांग्रेस के सदस्य के नाते महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जोधपुर मे आपने सर्वश्री भंवरलालजी सर्राफ, मानमलजी जैन, अभयमलजी जैन, जयनारायणजी व्यास, बालमुकन्दजी बिस्सा, रणछोड़दासजी गट्टानी, रामप्रसादजी गांधी, रामप्रतापजी शर्मा, अचलेश्वरजी शर्मा, छगनलालजी चौपासनीवाला व पुरुषोत्तमदासजी नैयर आदि के मार्गदर्शन में कार्य किया। पाली, चण्डावल, गुढ़ाज, चाणोद, खरवा आदि जागीरों में बेठ बेगार, लाग बागों को खत्म करवाने में आपने भरपूर योगदान दिया।

28 मार्च, 1942 के दिन चण्डावल में उत्तरदायी शासन *दिवस के अवसर पर एक सम्मेलन परिषद् ने आयोजित किया।* जागीरी गुण्डों ने कार्यकर्ताओं पर हमला किया लाठियों व बेंतों से। उसमें आपको भी चोटें आयीं। सम्मेलन के प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। इससे आन्दोलन और भी जोर पकड़ गया। लोगों ने मारवाड़ में तोड़ फोड़, बम्ब काण्ड, आगजनी जैसी घटनाएं करके नेताओं को जन-समर्थन द्वारा सम्बल प्रदान किया। इन सभी घटनाओं में भी आपने प्रत्यक्ष और गुप्त रूप से योगदान दिया। सन् 1944 मे मारवाड़ मे जगह जगह सभाएं कर आप कार्यकर्ताओं को सक्रिय करके आन्दोलन चलाते रहे।

आपने फूलचन्दजी बाफना, रामप्रसादजी व गांधी, महीधरजी धाणेराव के साथ मिलकर पाली लोक-परिषद् व कांग्रेस की शाखाओं





जागरूक संगठक

श्री काशीराम गुजराती

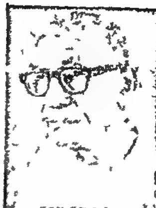


पाली के श्री काशीरामजी गुजराती का जन्म 26 अक्टूबर 1920 को श्री मांगीलाल महत्तर के घर हुआ। प्रारम्भिक पढ़ाई के तुरन्त बाद ही जोधपुर दरबार के हाउसहोल्ड विभाग में उनको सन् 1938 में नौकरी मिल गई और दो वर्ष बाद ही सन् 1940 में अस्पृश्यता विरोध के कारण नौकरी से हटा दिये गये। महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन से इन्हें प्रेरणा मिली और ये भी हरिजनोद्धार के रचनात्मक कार्यों में जुड़ गये। मारवाड़ में लोक-परिषद् के नेताओं से इनका सम्पर्क हुआ। बेगार प्रथा तथा हरिजनों अनुसूचित जाति के लोगों में जागृति पैदा करने के सिलसिले में जागीरदार विसलपुर द्वारा इनके विरुद्ध मुकदमा चलाकर इन्हें सन् 40 व 43 में दो बार सज़ा दी गई और इन्हें जेल जाना पड़ा। इस आन्दोलन के दौरान इनका कार्य क्षेत्र मुख्यतः बिसलपुर, भालामण्ड, निमाज, रोहट, गुन्दोज, सरवा आदि जागीरी गांव रहे जहां इन्होंने सभा सम्मेलन करके लोगों में जागृति पैदा की।

सन् 1944 में पाली में प्रथम राजनैतिक सम्मेलन आयोजित हुआ। उसमें काशीरामजी ने सक्रिय रूप से भाग लिया। 23 सितम्बर 1945 को पाली में पण्डित जवाहरलाल नेहरू जब शेख अब्दुल्ला एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ पधारे तब भी स्वयं सेवकों व सभा की पूरी व्यवस्था इन्होंने ही की।

मारवाड़ लोक-परिषद् द्वारा मारवाड़ एसेम्बली (सलाहकार बोर्ड) के चुनाव का जब विरोध किया गया तब काशीरामजी ने व्यापक दौरा कर विरोध में सभायें आयोजित कीं।

आज़ादी के पश्चात् काशीरामजी पूर्णतः अनुसूचित जाति व जन जाति, विशेषकर हरिजन महत्तर समाज के सुधार हेतु रचनात्मक काम में लग गये और शराबबन्दी, मांसाहार बन्दी, मोसर, फिजूल-खर्ची पर रोक तथा शिक्षा प्रचार के कार्यों में लग गये। आज भी इनका अधिकांश समय ऐसे ही कार्यों में व्यतीत होता है।



तपस्वी शिक्षक

डॉ० दयालसिंह गहलोत



डा० दयालसिंहजी गहलोत एक शांत पर सजग व आदर्श व्यक्तित्व के धनी हैं। ये पेशे से तो शिक्षक हैं ही पर इनका स्वयं का जीवन भी एक प्रेरणादायी शिक्षक रहा है जिसने अनेकानेक लोगों में सादा जीवन उच्च विचार का बीजारोपण किया। सन् 1932 में इन्होंने ग्राम चण्डावल में एक अध्यापक के रूप में जीवन प्रारम्भ किया और संयोग की बात है कि उसी के साथ ये प्रभावित हुए महात्मा गांधी द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रीय आन्दोलन से। विशेषकर उनके रचनात्मक कार्यक्रम से। इन्होंने मुख्य रूप से खादी, अछूतोद्धार, शिक्षा प्रचार आदि में रुचि लेकर गांवों में कार्य शुरू किया।

उन्हीं दिनों चण्डावल ठिकाना अपने जोर जुल्मों के लिए प्रसिद्ध था। निर्ममता के साथ लाटा कूंता व लाग बाग वसूल करने में बड़ी ज्यादतियां की जाती थीं और बेगार के कारण तो सभी परेशान थे। दयालसिंहजी गांवों में राष्ट्रीय विचारधारा का प्रचार करने जाते तब लोग इन्हें अपनी मुसीबतें सुनाते। ऐसे वक्त लोगों को सामन्ती जुल्मों से मुक्ति दिलाने के लिए ये लोगों को बेगार न निकालने तथा लाग-बाग न देने का निर्देश देते और उन्हें संगठित होकर जागीरी जुल्मों का मुकाबला करने हेतु प्रोत्साहित करते। चण्डावल के ही प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी मांगीलालजी 'आलीशान' के सक्रिय होकर आन्दोलन में कूद पड़ने के कारण इस कार्य में डा० गहलोत को बड़ा बल मिला। मांगीलालजी गांधीजी द्वारा चलाये गये आन्दोलन में मध्यप्रदेश की जेल से सजा काटकर लौटते ही मारवाड़ लोक परिषद् के साथ जुड़कर जन जागृति के कार्य में जुट गये थे।

दयालसिंहजी खादी तो पहनते ही थे, हर वक्त गांधी-टोपी भी लगाते थे। उन दिनों जागीरी गांवों में तो क्या खालसा के गांवों में भी गांधी टोपी पहनना एक हिम्मत का काम था और लोग घूर घूर कर देखते थे। चण्डावल ठाकुर ने गांधी टोपी पहनने पर पाबन्दी लगा दी थी। जागीरी गुण्डों ने जान से मारने तक की धमकियां दीं पर डा० गहलोत अपनी आन पर अड़े रहे और गांधी टोपी पहन कर ही सब जगह यहां तक कि रावले में भी जाते थे।



4507

इनके कार्यों मे श्री मागीलालजी 'ग्रालीशान' के ग्रलावा सव-श्री छलारामजी हीरागर, नथमलजी मूथा, पूरणमलजी मास्टर, रामसुखजी पुरोहित ग्रादि कई सक्रिय कायकर्ता थे, जो सहयोग करते थे। ग्रत चण्डावल जन-जागृति की दृष्टि से मारवाड मे एक केन्द्र बन गया था। दिनाक 28-3-42 को उत्तरदायी शासन की माग के समथन म विशाल सभा हेतु मारवाड लोक परिषद् द्वारा चण्डावल को चुना गया था। 27 माच को ही जागीरदारो ने 250 300 घुडसवारो व लाठी, बन्दूक व तलवारधारियो को इकट्ठा करके पूरे गाव म ग्रातक फला दिया था। बाहर के गावा देवलीकला, करमावास, कण्टालिया, बगडी, सोडिया सोजत ग्रादि से ग्रा रहे सकडा लोगा को गाव मे ग्राने ही नही दिया गया था। ऐसे माहौल मे भी दयालसिहजी अकेले ही सभास्थल पर ग्राकर बैठ गये। ठिकाने के थानेदार ने इन्ह वहा स हटाने का प्रयत्न किया, पर ये हटे नही।

पर, जागीरी गुण्डा को तो ग्रातक जमाना ही था उन्होन सभा के सयोजक मागीलालजी ग्रालीशान व रामसुखजी पुरोहित, जो भारत मा की जय हो, जयहिन्द ग्रादि नारे लगाकर सभास्थल की ग्रोर बढ रहे थे, पर लाठीचाज कर दिया। रामसुखजी को तो उनके घर मे घुसकर भी पीटा गया। उनकी पसलिया व कई हड्डिया टूट गईं। मीठालालजी 'काका' व मागीलालजी 'ग्रालीशान' सहित 20 25 कायकर्ता बुरी तरह घायल हुए, जिन्ह पीपलिया के सेठ श्री प्रेमराजजी बोहरा ने ग्रपनी मोटर स इलाज के लिए जाधपुर भेजा।

डा दयालसिहजी जोधपुर से प्रकाशित होने वाले 'प्रजासेवक' ग्रखबार म नियमित रूप से लेख लिख कर लोगो म जागृति पदा करन मे लगे रहे। उन्होने राणावास की प्रसिद्ध जन शिक्षण सस्था, मरुधर बालिका विद्यापीठ विद्यावाडी एव शाति विद्या मन्दिर, बिठडी ग्रादि कई सस्थाओ मे प्रधानाध्यापक के पद पर काय करके इन सस्थाओ का कुशलतापूवक सचालन किया है ग्रौर ग्रभी भी जैन शिक्षण सस्था, गुन्दारामसिह म सेवारत है।

केवल 32 वष की ग्रायु म ही डॉ गहलोत की धम-पत्नी का स्वगवास हो गया। तभी से इन्होने शीलव्रत धारण कर ग्रपन जीवन को सेवा-कार्यों से जोड रखा है। महात्मा गाधी के प्रति इनम ग्रनन्य श्रद्धा है। पिछले 50 वर्षों स इन्होने मिच का सवथा त्याग कर रखा है। 35 वर्षों स नमक व 32 वर्षों से शक्कर का उपयोग नही कर रह है। इस वद्धावस्था मे भी इनके जीवन म ग्रद्भुत स्फूर्ति है। प्राकृतिक चिकित्सा मे ही विश्वास करते हैं ग्रौर ग्रन्या को यही सलाह देते हैं। डा गहलोत के व्यक्तित्व एव कृतित्व म 'सादा जीवन, उच्च विचार' का ग्रद्भुत मेल है।

सघषशील व्यक्तित्व
श्री प्रेमराज मेहता



☐

स्वर्गीय प्रेमराजजी मेहता निवासी खीमल, एक बडे ही प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थ। उनका जन्म खीमेल के प्रसिद्ध मेहता खानदान मे हुग्रा था। वस तो ग्राम खीमेल चाणाद का जागीरी ग्राम रहा है पर यहा के मेहता परिवारा ने जागीरदारा की ग्रधीनता कभी स्वीकार नही की ग्रौर वर्षों तक सघष करत रह। प्रेमराजजी मेहता का राजनीतिक जीवन सामन्त विरोधी गतिविधियो से ही प्रारम्भ हुग्रा।

मेहताजी का बहुत बडा कारोबार-व्यापार रानी स्टशन पर था, जो उस जमाने की एक बहुत बडी मण्डी थी। मेहताजी ग्रधिकाश समय वही रहत थे ग्रौर दूर दराज गावा स ग्रान वाले व्यापारिया एव किसाना स जीवन्त सम्पक बनाये रखत थे। गावो मे इन लोगो पर होते जागीरी जुल्मा की शिकायता का ये ध्यान पूवक सुनत ग्रौर ग्रधिकारिया को लिखत ग्रौर ग्रखबारा म समाचार भेजते। इनकी लेखनी म बडी शक्ति थी ग्रौर शरीर म बल भी था। इनस गरीबा पर होते ग्रत्याचार देखे नही जात थ। व स्वय बडी स बडी जोखिम उठाकर भी उनकी मदद को चल पडते थ। इनक जीवन म ग्रनक ऐसे रोमहषक प्रसग ग्राये हैं जब उन्होन ग्रपनी बुद्धि ग्रौर शरीर-बल स गरीब ग्रौर ग्रसहाय लोगा की रक्षा की है।

मेहताजी पूरे गाडवाड क्षेत्र म ग्रत्यन्त ही लोकप्रिय थ। वे वर्षों तक रानी स्टेशन के सरपच रह ग्रौर बाद म खीमल न्याय पचायत के ग्रध्यक्ष भी चुने गये। उनकी न्यायप्रियता ग्रौर क्षमता की गूज ग्राज भी गावा म सुनायी पडती है। मेहताजी लोक-परिषद् के वक्त से ही राष्ट्रीय ग्रान्दोलन स जुडे रहे ग्रौर बाली काग्रेस कमेटी के वर्षों तक ग्रध्यक्ष रहे। जिला काग्रेस क प्रतिनिधि ग्रौर पदाधिकारी भी जीवन-पयन्त रह। खीमल ग्रौर विद्यावाडी क मध्य ही इनका 'प्रेम कृषि फाम नामक बेरा है यही इनका वर्षों तक निवास स्थान रहा है ग्रौर यहा दिन रात लोग इनम सलाह लेन माग दशन प्राप्त करन ग्रौर ग्रन्याय के विरुद्ध सहयोग की प्राथना करन ग्राते थ। उनका यह निवास-स्थान वास्तव म एक गुनी लोक ग्रदालत का रूप लिये रहता था। ग्रतिथि-सत्कार क सस्कार तो इन्ह परम्परा स मिले हुए थे।



आजादी के पश्चात् भी जागीरी जुल्म व शोषण के गोरखधंधे चल रहे थे। कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को ग्रामों में हर तरह से इन सामन्ती तत्वों द्वारा परेशान किया जाता था। झूठे मुकद्दमे बनाकर उन्हें जलील करने की कोशिश की जा रही थी। ऐसे ही एक कार्यकर्ता फालना गांव के चिमनारामजी माली थे। एक रात बेरे से घर आते समय रास्ते में जागीरी गुण्डों ने इन्हें बुरी पीटते-पीटते मूर्च्छित कर दिया। एक व्यक्ति ने चुपचाप साईकिल पर आकर मेहताजी को उनके काम पर इत्तला दी। तत्काल रात को बजे ही अपनी बैलगाड़ी लेकर मेहताजी फालना गांव के लिए रवाना हो गये और मूर्च्छित पड़े चिमनारामजी को उठाकर रात को ही निर्भय होकर मोहनराजजी के पास बाली पहुंच गये ताकि इलाज की और अपराधियों को पकड़ने की शीघ्र व्यवस्था हो सके। ऐसे निर्भीक और हिम्मती थे श्री प्रेमराजजी मेहता जिन्होंने जीवन-पर्यन्त जुल्मों व शोषण के विरुद्ध आततायियों से संघर्ष किया।

देश सेवा को समर्पित
श्रीमती सुशीलादेवी गोयल



श्रीमती सुशीलादेवी गोयल का जन्म 7–6–25 को दिल्ली में हुआ था। इनका विवाह बालपन में ही श्री बजरंगलालजी गोयल के साथ हो गया। श्री गोयल गांधीजी के स्वराज्य आन्दोलन से प्रभावित थे और सक्रिय रूप से कार्य करते थे। उन्हीं की प्रेरणा से सुशीलाजी भी आन्दोलन से जुड़ गई। फिर तत्कालीन देशी राज्यों के प्रमुख नेता श्री जयनारायण व्यास श्री हरिभाऊ उपाध्याय एवं श्री कन्हैयालालजी खादीवाला के सम्पर्क से इनमें काफी उत्साह जगा। श्री गोयल पू. गांधीजी की रचनात्मक संस्था राजस्थान चर्खा संघ से जुड़ गये और जयपुर में कार्य करने लगे। जयपुर प्रजा मण्डल द्वारा सन् 1939 में चलाये गये आन्दोलन में सुशीलाजी को प्रथम बार तीन माह की सजा हुई। जेल की यातनाओं व कठोर जीवन के कारण वे बीमार हो गई और जेल में ही उन्हें गर्भपात का कष्ट सहना पड़ा।

सुशीलाजी के पति खादी कार्य से ही सोजतरोड आ गये और कार्य करने लगे। यहां इनका सम्पर्क स्थानीय कार्यकर्ताओं—सर्वश्री हरिभाई किंकर मीठालालजी काका जवरचंदजी मीठालालजी बाठेड फूलचन्दजी बाफना आदि से तो हुआ ही पर क्षेत्र के प्रसिद्ध गांधीवादी कार्यकर्ता श्री हरिभाई किंकर की धर्मपत्नी श्रीमती महिमादेवी किंकर से भी उनका निकट सम्पर्क हुआ और दोनों ने मिलकर मारवाड़ लोक-परिषद् के तत्वावधान में गांव-गांव जाकर सभाएं करके महिलाओं में जागृति पैदा करने का कार्य प्रारम्भ किया। सोजत बगड़ी, चण्डावल पाली आदि स्थानों पर इनका संगठनात्मक कार्य इतना प्रभावी रहा कि सरकार परेशान हो गई।

2 नवम्बर 1941 को सोजत में इनके प्रयत्नों से एक विराट सभा का आयोजन हुआ जिसमें मारवाड़ लोक-परिषद् के नेता जयनारायणजी व्यास मथुरादासजी माथुर द्वारकादासजी पुरोहित व धनपतिराजजी भण्डारी (वकील सोजत) के प्रभावशाली भाषण हुए और मारवाड़ एसेम्बली एडवाइजरी बोर्ड के चुनावों का विरोध किया। श्री माणकलालजी वकील जो स्वयं एसेम्बली चुनावों में एक उम्मीदवार थे ने सभा में ही खड़े होकर घोषणा की कि वे ऐसी अधिकारहीन सामन्ती तत्वों से भरी एसेम्बली के सदस्य नहीं होना चाहते और उन्होंने अपनी उम्मीदवारी वापिस ले ली। सेठ बस्तीमलजी गांधी ने लोकनायक व्यास को अपने गले से निकालकर डेढ़ तोले सोने की चेन भेंट की जिसे श्री व्यासजी ने सभा में ही नीलाम कर दी और श्री रामप्रसादजी गांधी (पाली) ने उसे तीन सौ एक रुपयों में खरीद लिया।

इसी प्रकार बगड़ी व पाली की सभाओं में भी महिमादेवीजी व सुशीलाजी के ओजस्वी भाषण हुए और मारवाड़ लोक परिषद् द्वारा चलाये जा रहे सत्याग्रह के लिए महिलाओं को तैयार किया। बगड़ी की सभा में मीठालालजी बाठेड, माधोलालजी क्रांतिकारी (निमाज) व मदनराजजी जोशी व सुशीलाजी के प्रभावशाली भाषण हुए। सुशीलाजी ने पुरुषवर्ग को सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि वे मारवाड़ की स्वतन्त्रता के लिए सत्याग्रह करने से डरते हैं तो उन्हें चूड़ियां पहनकर घर में बैठ जाना चाहिये महिलाएं जेल जाने को तैयार हैं।

28 मार्च 1942 को हुए चण्डावल लाठी प्रहार में भी सुशीलाजी माणीलालजी आलीशान को बचाने में बुरी तरह घायल हो गई। उस समय सरकारी अधिकारियों का रुख लोक-परिषद् के कार्यकर्ताओं के विरुद्ध रहता ही था पर सरकारी अस्पताल के डॉक्टर भी कितने हृदयहीन बन जाते थे, इसका उदाहरण चण्डावल काण्ड के घायलों की मरहमपट्टी करने में व देखने में घायलों को लाने के बाद डेढ़ घंटे की देरी करना और फिर यह कहकर टाल देना कि इनका इलाज यहां नहीं होगा, इन्हें जोधपुर ले जाओ, से तो मिला ही पर इससे भी मिला जब सुशीलाजी का एक बच्चा खेलते खेलते घर की छत पर से गिर पड़ा और उसके सिर में चोट आई। सुशीलाजी उसे तत्काल सोजत अस्पताल में ले गयी। वहां डाक्टर ने यह कहकर इलाज करने से साफ मना कर दिया कि लोक परिषद् के कार्यकर्ताओं का सरकारी अस्पताल में इलाज नहीं हो



सकता, जाग्रा और पहल का तरह शिकायत करो । चण्डावल लाठी काण्ड के घायलों की मरहमपट्टी न करने के कारण इसी डाक्टर की शिकायत की गयी थी। सुशीलाजी का सारा जीवन विषम आर्थिक कठिनाइयों से भरा गुजरा है और पति के स्वर्गवास के बाद तो वे अपना व अपने परिवार का भरण पोषण बड़ी कठिनाई से कर पा रही हैं। लेकिन, आज भी उनमें अपार उत्साह व लगन है देश के लिए काम करने की अस्पृश्यता निवारण व खादी प्रचार के कार्यों मे भी वे गहरी रुचि लेती रहती है।



कर्मनिष्ठ व्यवसायी
श्री जेठमल राठी



पाली जिले की माटी ने न केवल बहुत कर्मनिष्ठ साहसी, देशभक्त और स्वतन्त्रता-सेनानी उत्पन्न किये हैं बल्कि स्वाधीनता-संग्राम में सक्रिय भाग लेने के साथ-साथ व्यवसाय मे ईमानदार रहने वाले कार्यकर्ता भी उत्पन्न किये। इस दृष्टिकोण से श्री जेठमलजी राठी पाली जिले के स्वतन्त्रता सेनानियों में अग्रिम पंक्ति के जन-नायक हैं।

जेठमलजी का जन्म श्री चतुर्भुजजी राठी के घर मगसिर सुदी 1 संवत 1965 को पाली में हुआ था। आपने हिन्दी उपाश्रम मे महाजनी का प्रारम्भिक अध्ययन किया। पांच वर्ष की उम्र मे ही आपके पिता का देहान्त हो जाने से आप आगे अध्ययन नही कर पाये। सन् 1921–22 में असहयोग आन्दोलन एवं स्वदेशी आन्दोलन के दौरान बम्बई मे विदेशी माल खरीदने एवं बेचने वाले व्यापारियों के यहां धरणा दिया जा रहा था बम्बई के गेन्दु बाबू द्वारा विदेशी माल से भरे ट्रक को जाने नहीं देने और उन के द्वारा ट्रक के सामने रोड पर सो जाने से माल से भरा ट्रक उनके ऊपर से निकाल लिया गया। गेन्दु बाबू की निर्मम हत्या का समाचार सुनकर जेठमलजी को बड़ा आघात लगा। उनके पश्चात् आप सक्रिय राजनीति में आ गये और स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े।

मारवाड़ लोक-परिषद् में आप प्रारम्भ से ही सम्बंधित रहे। जोधपुर के नेता जयनारायणजी व्यास अचलेश्वरजी, मणीलालजी व्यास, भवरलालजी सर्राफ, छगनलालजी चौपासनीवाल अभयमलजी जैन मानमलजी जैन आदि का आप के यहां आना जाना लगा रहता था। पूरे पाली मे आपके द्वारा ही मीटिंग आवास एवं अन्य व्यवस्था की जाती थी। ब्यावर में हुए सत्याग्रह आन्दोलन में आपने भाग लिया था। सन् 1930–40 व 1942 के आन्दोलन में आप पूर्ण रूप से सक्रिय रहे।

आपने कांग्रेस के 1931 के कराची अधिवेशन में जयनारायण जी व्यास व उनकी पार्टी के साथ भाग लिया। उसी दिन तीन चार बजे ट्रेन से उतरने पर जब आपको समाचार मिला कि शहीद भगत सिंह को फांसी दे दी गई तो आप भी लाखों लोगों के साथ शोक जुलूस में शामिल हुए। उस जुलूस का दृश्य बहुत ही हृदय द्रावक था।

अगस्त 1942 के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन मे भी आपने भाग लिया था। 15 अगस्त 1947 को जब आपने बम्बई में देश की आजादी की घोषणा सुनी तो आपकी खुशी का ठिकाना नही रहा। उस समय का महान् विजयोत्सव लोगों की अति प्रसन्नता की ही अभिव्यक्ति था।

देश की आजादी के आन्दोलन में भाग लेना एवं ईमानदारी से व्यवसाय करना आपने आर्यसमाज के सम्पर्क और महापुरुषों की जीवनियां पढ़कर सीखा। स्वतन्त्रता आन्दोलन में आपके साथ मूलचन्दजी भट्ट रामप्रसादजी गांधी वल्लभदासजी अराड़ा नोरतनमलजी व्यास फूलचन्दजी बाफना आदि लोगों ने कार्य किया।

आपको देश की आजादी के समय कई उम्मीदें थीं मगर बाद मे आपने जो कुछ देश एवं कांग्रेस पार्टी में होते देखा उसमें आपको काफी निराशा हुई इसलिए आपने 1950 के बाद भारी मन से अपने आपको सक्रिय राजनीति से अलग कर लिया।

आपने राजनीतिक क्षेत्र के साथ साथ समाज सुधार एवं अन्य रचनात्मक कार्यों का संचालन भी किया। आपने पाली में आनन्द आश्रम का संचालन किया व आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता रहे। सामाजिक सुधारों में आप अग्रणी रहे। पर्दा प्रथा आपने अपने ही स्तर से खतम की। इसके अलावा चूड़ा प्रथा का विरोध निरक्षरता निवारण, जातिवाद का विरोध आदि समाज सुधारों में आपने प्रशंसनीय कार्य किये।

देश की सेवा करने के लिए व्यापार में कन्ट्रोल रेट में माल बेचने और कालाबाजारी नहीं करने का आपने दृढ़ निश्चय किया था, ताकि लोगों को उचित मूल्य पर वस्तुएँ मिल सकें। आपने इसी उद्देश्य से व्यापार शुरू किया और आपके परिवारजनों ने भी उसी परिपाटी को बनाए रखा है। आज पाली के बाजार में इस परिवार की प्रतिष्ठा का मूल आधार यही है।



आपने अपने साथियो के सहयोग व जनता के आर्थिक सहयोग स पाली म गाधीजी की प्रतिमा स्थापित करवायी और आपने ही पाली के गुद कटला का नाम बदलकर गाधी कटला करवाया। आप ईमानदारी से व्यवसाय करते थे किन्तु क्रमश आपके घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर हो गई थी। उस समय (सन् 1950 के लगभग) पाली के तत्कालीन जिला कलेक्टर श्री मनोहरलाल न उम्मेद मिल को सुझाव दिया कि मिलस जनता को कन्ट्रोल दर पर कपडा उपलब्ध करवाये। उसके बाद पाली मिल के सेल्स मनजर बालमुकन्दजी सिन्धी ने निश्चय किया कि मिल की रिटेल शाप खोली जाये। उस रिटेल शाप का काम जेठमलजी को सौंपा जाए, क्योंकि आप ईमानदार हैं एव काला बाजारी करने वाले नही हैं। रिटेल शाप का काय आपने कुशलता स सभाला। परिणामत प्रति दिन पाली एव दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रो के लगभग आठ सौ से एक हजार नागो को लठठा खादी एव अन्य किस्म के कपड का वितरण होने लगा। इस जन सेवा स आपको व लाभान्वित उप भोक्ताओं को अति प्रसन्नता होती थी। रिटेल शाप के सफल सचालन से प्रसन्न होकर मिल वाला ने आपको अन्य व्यापारियो के साथ मिल का अधिकृत व्यापारी बना दिया।

1951-52 के लगभग पाली जिले के तत्कालीन जिला कलक्टर श्री मैनन ने भारत सेवक समाज की पाली म शाखा खोलने के लिए मीटिंग बुलाई। उस मीटिंग म सोचा गया कि पाली म भारत सवक समाज के काय को जेठमलजी ही अच्छी तरह से सचालित कर सकते थ तब आपने इस काय हेतु अपनी स्वीकृति दी। तत्पश्चात् सादडी म फूलचन्दजी बाफना एव सोजत म डाक्टर अभिनन्दनमलजी मेहता के नतृत्व मे इसकी शाखाए खोली गइ।

1984 म पाली मे सच्चे भारत के सम्पादक त पत्र के विमोचन के समय देश के तत्कालीन पयटन उपमन्त्री श्री अशोक गहलोत के हाथो आपको पाली के सवश्रेष्ठ नागरिक का पुरस्कार प्रदान किया गया।

जागरूक मागदृष्टा

श्री सुमेरराज डागा



मारवाड लोक-परिषद के विधिवद् गठन के साथ ही सन् 1939 मे पाली परगना लोक-परिषद् का गठन हुआ। श्री सुमेर राज डागा एम ए एल एल बी इस कमेटी के प्रथम अध्यक्ष चुने गये। हकीकत तो यह थी कि अपनी वकालात की पढाई के दौरान ही राष्ट्र की आजादी हेतु लडे जा रहे आन्दोलनो म इनकी रुचि हो गई थी। पाली मे आते ही इन्हे सक्रिय रूप स काय करन का मौका मिल गया। पाली परगन मे लोक-परिषद् के डागाजी प्रथम सदस्य बने और लोक-परिषद् का कायालय खोलकर उन्होने काय शुरू कर दिया। इनके प्रारम्भिक सहयोगी थे रामप्रसादजी गाधी और स्वर्गीय मूलचन्दजी भट्ट।



कांग्रेस कायकर्ताओं की मीटिंग मे श्री सुमेरराज डागा।

सवप्रथम इन्होने गावो म लोक परिषद् के सदस्य बनाने और उसकी शाखाए खोलने का काय हाथ मे लिया। ग्राम खरवा गुन्दोज, डेण्डा लाम्बिया म प्रथम वष ही शाखाएँ काय करने लग गइ। इन ग्रामो म उत्साही कायकर्ता मोतीलालजी सोनी (खरवा) राम प्रतापजी शर्मा व मगारामजी जागिड (गुन्दोज) लालूरामजी (लाबिया) आदि ने जो पहले से ही राष्ट्रीय आन्दोलन स किसी न किसी रूप से जुडे हुए थे लोक-परिषद् के तत्वावधान मे काय शुरू कर दिया। इसी दौरान मारवाड लोक-परिषद् के नेता सवश्री जय नारायणजी व्यास मथुरादासजी माथुर रणछोडदासजी गट्टानी, भवरलालजी सर्राफ आदि का आना-जाना काफी हो गया। पाली म मारवाड लोक परिषद् की कायकारिणी की बठक हुई। इसमे श्री डागाजी कायकारिणी के सदस्य चुने गये। इस समय द्वितीय विश्व युद्ध अपनी चरम सीमा पर था और आवश्यक वस्तुओ की कमी तथा महगाई के कारण लोग बहुत परेशान थे। डागाजी न गाँव गाव म दौरा करके लोगो को सगठित किया और उनके दु ख दद दूर करने का प्रयास किया।

उस जमाने म पाली मे नगरपालिका के सदस्य जाति के आधार पर चुने जाते थे। वास्तव म एक प्रकार से नामजदगी ही होती थी। सवप्रथम उन्होने इस प्रणाली के विरुद्ध आवाज बुलन्द की फलतो गत्वा वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनाव प्रणाली स्वीकृत हुई।

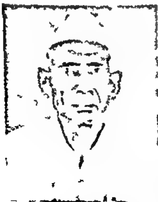


सन् 1940–41 मे पाली मे महाराजा श्री उम्मेद मिल्स की स्थापना हुई और शर्तनामे के अनुसार सेठ श्री बागडजी को 20 वष के लिए मोनोपोली (एकाधिकार) प्रदान की गई। इस के विरुद्ध भी प्रचार कर आन्दोलन खडा किया गया, ताकि पाली का औद्योगिक विकास शीघ्र हो सके। इन दिना गावो मे किसानो पर सामन्ती जुल्मो की कोई सीमा नही थी। किसाना के साथ गरीब वग, विशेष कर अनुसूचित जाति व जन जाति के लोगो पर बैठ-बेगार इतनी थी कि पेट भरना भी मुश्किल था। जरायमपेशा लोग भील, मीणा, थोरी, बावरी आदि की रोज हाजरिया होती थी। डागाजी ने लोक परिषद् की नीति के अनुसार इनको सगठित किया और इन्हे राहत दिलाने के प्रयत्न किये गये।

28 माच सन् 1942 को मारवाड मे पूण उत्तरदायी शासन दिवस मनाया गया। पाली परगना के सभी बडे बडे गावो मे सम्मेलन किये गये। इसी सिलसिले म गाव चाणोद, रोहट, भाद्राजून के ठिकानो की गरीब जनता पर सामन्ती जुल्म ढाये गये और झूठे मुकद्दमे बनाकर लोगो को फासा गया। तब डागाजी ने इन ठिकानो की प्रजा को कानूनी मदद देकर राहत दिलवायी।

सन् 1942 का आन्दोलन भारत मे आजादी के दीवानो के लिए क्रांति का पव था। सभी ने अपार उत्साह से इस आन्दोलन मे भाग लिया। श्री डागा लोक-परिषद् के अध्यक्ष के नाते इस आन्दोलन मे भी अग्रणी रहे। इनके घर की तलाशी ली गइ। लेकिन न तो आन्दोलनकारियो का कोई सामान उनके हाथ लगा और न आन्दोलनकारी ही हाथ आये।

भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् भी डागाजी पूववत् सक्रिय रहे हैं और नगरपालिका पाली तथा काग्रेस सगठन म सक्रिय होकर इन्होने विभिन्न पदो पर काय किया है। वद्धावस्था के कारण आजकल शारीरिक दृष्टि से आप अस्वस्थ रहते हैं, पर बौद्धिक दृष्टि से पूणतया जागरूक हैं।



समर्पित जनसेवक
श्री विजयमल सुराणा

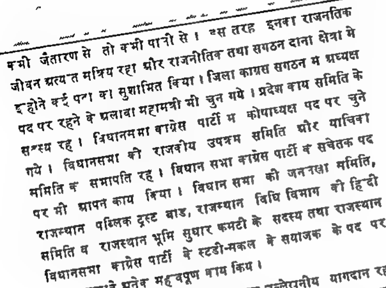
☐

शुभ-सकल्प लेकर अभावो की जिन्दगी बसर करना पीडितो और शोषितो के दु ख स द्रवित हो उनकी आवाज को बुलन्द करना और उम्र भर राष्ट सेवा की भावना से साधनामय जीवन व्यतीत करना—यही विजयमलजी सुराणा की जीवनी का सार सक्षेप है। सारे देश म काग्रेस द्वारा छेडे गये स्वतन्त्रता आन्दोलनो से प्रभावित होकर मारवाड मे लोक परिषद द्वारा निरकुश राजाशाही और अमानवीय जागीरी जुल्मो के विरुद्ध आयोजित सत्याग्रहो से प्रेरणा लेकर सुराणाजी सन 1939 मे तत्कालीन जोधपुर राज्य के रसद विभाग (महकमा प्राइस कन्टोल व राशनिंग) की अपनी नौकरी स स्तीफा देकर लोक-परिषद की सदस्यता ग्रहण करते हुए आन्दोलन म कूद पडे और जीवन निवाह हेतु समान राष्टीय विचारो वाले वकील सवश्री बरिस्टर शिवलालजी पोरवाल, रगरूपमलजी मेहता बालकृष्णजी आचाय के यहा मुशी का काय किया। इसी दौरान जोधपुर म सवश्री जयनारायणजी व्यास, मथुरालालजी सर्राफ, रणछोडदासजी गट्टानी गणेशीलालजी व्यास, मथुरादासजी माथुर, अभयमलजी जैन, मानमलजी जन, किशोरमलजी मेहता सुमनेशजी जोशी, बालकृष्णजी आदि से इनका सम्पक अधिक गहरा होता गया और उन्होन सगठन को सुदृढ करने का काय हाथ म लिया।

श्री सुराणाजी का जन्म 13 माच, सन 1913 को बाली म हुआ। इनके पिता श्री सौभागमलजी सुराणा बाली म वकालात करते थे। सौभागमलजी गरीबो के बडे हितैषी व समाज सुधारक थे। उन्ही के विचारो से प्रेरणा लेकर विजयमलजी न भी गरीबो व दलितो की सेवा करने का सकल्प लिया। उन के बडे भाई प्रसिद्ध समाज सेवी व स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय छोटमलजी सुराणा थ जिन्होने अपना समस्त जीवन राष्ट्र-सेवा को समर्पित कर दिया था।

जीवन के प्रारम्भ मे उन्होने हवालदारी की ट्रेनिंग ली। फिर ये गाव लापोद मे करीब दो वष तक अध्यापक रह। पर, इनका मन तो राष्ट्र सेवा के कार्यों मे लगा हुआ था अत शादी होन पर ये जोधपुर म बाली म आकर अपने पिताजी के साथ ही रहन लग क्योकि सन 1932 मे ही इनकी माताजी का देहावसान हो चुका था। एसी सूरत म पिताजी की सेवा को उन्होन प्राथमिकता दी। इन्हे शुरू स ही अखबार पढन का बहुत शौक रहा और उस समय राष्ट्रीय विचारो का प्रचार करने वाले पत्र, मुख्यत हिन्दुस्तान, वीर अर्जुन नवज्योति तरुण राजस्थान, प्रजा सेवक व रियासती आदि थे जिन्हें सुराणाजी नियमित रूप से पढते थे। इसस इनके विचार दृढ होते गये और ये सगठन के कार्यों म अधिक समय देन लग।

सन 1939 म इन्होन बाली व देसूरी परगना म लोक-परिषद की शाखाए स्थापित करने का काय अपने बडे भाई के साथ हाथ म लिया। बाली भाट, मुण्डारा, सादडी, घाणराव नारलाई, सुमरपुर नाडौल रानी, सेवाडी तखतगढ, गूँदोज, चाणोद मुडाला साण्डराव खौमल आदि बडे-बडे गावो म लोक-परिषदो की स्थापना की। इस



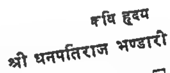
कभी जैतारण से तो कभी पाली से। इस तरह इनका राजनतिक जीवन अत्यन्त सक्रिय रहा और राजनीतिक तथा संगठन दोनों क्षेत्रों मे इन्होंने कई पदों को सुशोभित किया। जिला कांग्रेस संगठन म अध्यक्ष पद पर रहने के अलावा महामंत्री भी चुन गये। प्रदेश कार्य समिति के सदस्य रहे। विधानसभा कांग्रेस पार्टी म कोषाध्यक्ष पद पर चुने गये। विधानसभा की राजकीय उपक्रम समिति और याचिका समिति के सभापति रहे। विधान सभा कांग्रेस पार्टी के सचेतक पद पर भी आपने काय किया। विधान सभा की जनलेखा समिति, राजस्थान पब्लिक ट्रस्ट बोर्ड, राजस्थान विधि विभाग की हिन्दी समिति व राजस्थान भूमि सुधार कमेटी के सदस्य तथा राजस्थान विधानसभा कांग्रेस पार्टी के स्टडी-सकल के संयोजक के पद पर रहकर इन्होंने अनेक महत्वपूर्ण काय किये।

सहकारिता के क्षेत्र म भी इनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। शंकरलालजी पाली जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक लिमिटेड पाली के चेयरमैन और जिला सहकारी संघ के अध्यक्ष भी रहे। पाली म मजदूरों की समस्याओं की ओर भी आपने ध्यान दिया। इन्टक से सम्बन्धित अलग अलग मजदूर यूनियनों की समन्वय समिति के आप अध्यक्ष चुने गये। राजस्थान जल बोर्ड द्वारा आपको पाली जिले का मेम्बर नामित किया गया। उस वक्त पाली जिले के गांवों में पीने के पानी की कई योजनाओं की क्रियान्विति हुई और लोगों को बहुत राहत मिली। पाली जिला परिषद् के उपप्रमुख भी आप रहे। पार्टी के संगठन तथा चुनावों सम्बन्धी कार्यों के लिए आपको समय समय पर राजस्थान व अन्य प्रान्तों म कई बार कठिन काय सौंपे गये हैं जिन्हें आपने अपनी पूर्णकुशलता से सम्पन्न किया है। 22 जून 1972 के दिन इनके प्रयत्नों के फलस्वरूप जैतारण म भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के वजन के बराबर राष्ट्रीय सुरक्षा कोष मे चांदी भेंट की गई।

इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आज भी उतनी ही लगन व उत्साह से काय करते हैं और युवकों का मार्गदर्शन करते हैं। अभी आप जिला रेडक्रास कमेटी पाली के चेयरमैन हैं और रेडक्रास संस्था के माध्यम से दवाइयां, अनाज, कपड़े दूध आदि का पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों म वितरण करवा कर सेवा करते हैं। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के विचार मंच के संयोजक हैं और अनेक ज्वलंत समस्याओं पर विचार गोष्ठियों का आयोजन करते रहते हैं। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के विधि प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष हैं और पीड़ितों को मुफ्त कानूनी सहायता हेतु प्रयत्नशील रहते हैं। शंकरलालजी राजस्थान आवासन मण्डल (हाउसिंग बोर्ड) के सदस्य भी हैं। इनके प्रयत्नों से पाली म हाउसिंग बोर्ड ने कमला नेहरू नगर नामक कॉलोनी का निर्माण कराया है। इससे पाली नगर निवासियों को बड़ी आवासीय सुविधा उपलब्ध हुई है।

किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र मे कार्य करने वाले नेता व कार्यकर्ता की सही उपलब्धियों का मापदण्ड तो यह है कि उसके कार्यों, विचारों व आचरण का आम लोगों पर कैसा प्रभाव पड़ा है और वे गन्तव्य पथ की ओर जाने के लिए किस हद तक मानसिक तौर से तैयार हुए हैं। इस कसौटी पर श्री शंकरलालजी खरे उतरे हैं। इन्होंने पाली जिले की जनता म, विशेषकर गरीब पिछड़े वर्ग व भूमिहीन लोगों मे, एक नई चेतना पैदा की है। उनमे आत्म विश्वास जागृत किया है। जागीरी समाप्ति के पूर्व, जागीरी क्षेत्रों मे रहने वाले लोगों के भयंकर शोषण के विरुद्ध इन्होंने आवाज बुलन्द की थी और भूमिहीन काश्तकारों की बेदखली होने से रक्षा की थी। बाद म सीलिंग म अवाप्त हजारों बीघा भूमि को गरीबों मे वितरण कराकर हजारों ही परिवारों को स्थायी तौर पर आबाद किया है। भूमि-सुधार सम्बन्धी कानूनी मामलों म इन्होंने विधानसभा मे भी विशेष रुचि दिखलाई उधर संगठन के माध्यम से भी पाली जिले म इनके काय उल्लेखनीय रहे हैं। निर्भीक वक्ता और दबंग कार्यकर्ता के रूप म आप पाली जिले भर म प्रसिद्ध है।

शंकरलालजी समाज सुधारक व शिक्षाप्रेमी हैं। इनका जीवन सादगीपूर्ण और आडम्बर रहित है। इनके व्यापक सम्पर्क ने इन्हें अत्यन्त ही लोकप्रिय बना रखा है, पर आजकल की पैसा प्रधान राजनीति से ये भी खिन्न हैं और राजनीति म नैतिक मूल्यों की स्थापनार्थ क्रांतिकारी कदम उठाने पर इन दिनों इनका चिन्तन चल रहा है।



कवि हृदय

श्री धनपतिराज भण्डारी

□

श्री धनपतिराजजी भण्डारी सोजत के निवासी हैं और प्रदेश के एक जाने माने वकील हैं। सोजत आजादी के स्वतन्त्रता आन्दोलन की एक रण-स्थली रही है। अनेक आजादी के दीवानों और कार्यकर्ताओं को इस धरती ने जन्म दिया है, अतः विद्यार्थी-जीवन से ही भण्डारीजी म स्वाधीनता की ललक होना स्वाभाविक था, जब ये ब्यावर के सनातन धर्म कॉलेज के विद्यार्थी थे उस जमाने म ब्यावर स्वाधीनता आन्दोलन के क्रांतिकारी



ानियो का प्रमुख केद्र था और तत्कालीन जोधपुर राज्य के वासित नेता भी वही शरण पाते थे । मारवाड लोक परिषद् के ा लोकनायक जयनारायणजी व्यास ने भी अपना कार्यालय वही ाल रखा था और वही अखबार भी प्रकाशित करते थे । भण्डारी ी इन्ही नेताओ के सम्पक मे आत और विद्यार्थियो का सगठन बना र आन्दोलन का तेज करने की योजनाएँ बनात ।

इसी दौरान ब्यावर के क्रातिकारी नेता स्वर्गीय स्वामी कुमारा- दजी के सम्पक म भण्डारीजी आये । स्वामीजी के निर्देशन म द्यार्थी सगठन का काय कर रहे रिपमराजजी मुणात (जैतारण) व ी मोहनराजजी जन (बाली), जो उन दिनो वहा कॉलेज म पढते और वहा के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता चिमनसिहजी लोढा द्वारा चालित जन हास्टल मे रहते थे । उन लागा से इनका सीधा सम्पक ो गया । श्री भण्डारी राजकीय हास्टल मे रहत थे । अब गिपचन्द ोस्टल भी राष्टीय आजादी के आन्दोलन की गतिविधिया का केद्र न गया । तत्कालीन कालेज प्रिसिपल श्री चक्रवर्ती स्वय राष्ट्रीय वचारा के थ, अत श्री भण्डारीजी व इनके अन्य साथिया को काय रने की काफी छूट थी । कई बार पुलिस ने श्री भण्डारी को गिर तार किया, हिरासत म रखा, पर श्री भण्डारी अडिग रह और काय रते रह ।

श्री धनपतराजजी स्वय एक अच्छे कवि है । इनकी अनेक कविताए प्रकाशित हुई हैं । इन दिनो समाज सेवा के कार्यो मे विशेप दिलचस्पी लेते है क्योकि मौजूदा राजनीति मे व्याप्त बुराइया स ये अत्यन्त खिन्न हैं । नगर विकास के अनेक कार्यों मे इनका महत्व पूण योगदान रहा है ।



सहकारिता के पोषक श्री जसवन्तराज सिंघवी



पाली जिले म सहकारिता-आन्दोलन के जनक और पोषक के रूप म श्री जसवन्तराजजी अत्यन्त ही लोकप्रिय हैं । इनका जन्म सोजत शहर म 28 माच सन् 1924 का हुआ । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा सोजत मे ही हुई । हाईस्कूल की पढाई भी सिरोही मे हुयी और इसी दौरान श्री गोकुलभाई भट्ट जसे त्यागी व तपस्वी नता के ये सम्पक मे आये । श्री गोकुल भाई भट्ट की प्रेरणा से विद्यार्थी जीवन से ही इनका झुकाव राष्ट्रीय आन्दोलन की ओर हो गया । कालेज की पढाई इनकी कर्नाटक के लिंगराज कालेज मे हुई और वही पर सन् 1942 के प्रसिद्ध "अग्रेजो, भारत छोडो," आन्दोलन म सक्रिय होकर काय किया । विद्यार्थियो को सगठित कर जुलूस, रली प्रभात फेरी आदि आयोजन किये ।

उसी आन्दोलन के दौरान जसवन्तराजजी सोजत आये और यहा श्री मीठालालजी काका के नेतत्व म काय शुरू किया । सोजत शहर को डाक का डिब्बा एक कुए मे गिराने के आरोप मे जबर चन्दजी भण्डारी, सामचन्दजी भण्डारी, श्री भटनागरजी व जसवन्त राजजी सिंघवी को पुलिस थानेदार राधाकिशन ने गिरफ्तार किया और इन चारा युवका की बेरहमी से पिटाई की । आखिर, जबर-चन्दजी के यह स्वीकार करने पर कि डाक का डिब्बा कवल उन्होने कुएँ मे डाला था अन्य लागो की रिहायी हो पाई । जबरचन्दजी पर स्पेशल मजिस्ट्रेट की अदालत म मुकद्मा चला और व सात आठ माह बाद जेल से छूटे ।

सन् 1946 मे सिंघवीजी ने सोजत मे वकालात शुरू की पर उस समय भी इनकी प्रमुख भूमिका एक आन्दोलनकारी कायकर्ता की ही रही । इन्होन जरायम-पेशा कौमा की हाजरी माफी का आन्दोलन चलाया, जिसमे साथी कायकर्ता मोहनलालजी भट्ट, डा० अभिनन्दनमलजी मेहता वकील श्री कृष्णजी टाक, दयाशकरजी व्यास आदि ने (सभी मारवाड लोक परिषद् के सक्रिय कायकर्ता थे) पूरा पूरा साथ दिया और इस आन्दोलन म सफलता प्राप्त की ।

इसी समय मारवाड म किसान नता बलदेवरामजी मिर्धा के नेतृत्व मे किसान सभा म भी जागीरी जुल्मा व शोषण से किसाना को मुक्ति दिलाने का आन्दोलन छेडा था । सिंघवीजी इस आन्दोलन स भी जुडे और श्री मिर्धा के नतत्व म काम करके किसाना का राहत दिलवाई ।

जसवन्तराजजी सिंघवी हमेशा ही सक्रिय कायकर्ता और जागरूक बुद्धिजीवी रह है । आजादी के पश्चात् इन्होन किसानो और मजदूरा का शोषण से मुक्ति दिलान के उद्देश्य से सहकारी सस्थाओ का पनपाने म अपना अधिकाश समय दिया साथ ही काग्रेस सगठन मे भी ये उतन ही सक्रिय रहे हैं ।

सन् 1950 स 53 तक आप राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे और इसके पूव भी लोक-परिषद् के प्रतिनिधि के रूप म अनेक राजनैतिक सम्मेलना मे भाग लिया । सन् 1958 म पाली सेन्ट्रल कोआपरेटिव बक लिमिटेड के डायरेक्टर चुन गये और 1966 तक इस पद पर रहते हुए सहकारिता क क्षेत्र म उल्लेखनीय काय



किया। सन् 1963 मे सिंघवीजी इसी बैंक के चेयरमैन चुने गये और पुन सन् 76 तक डायरेक्टर पद पर भी रहे। इसके साथ सन् 1958 स 66 तक राजस्थान राज्य सहकारी बैंक लिमिटेड, जयपुर के डायरेक्टर रहे। सन् 1960-66 तक य राजस्थान राज्य केन्द्रीय भूमि विकास बैंक लिमि के डायरेक्टर तथा सदस्य कार्यकारिणी भी रहे। राजस्थान राज्य सरकार की सभी सहकारी संस्थाओं के निदेशक तो य लम्बे असें तक रह है। सरकार न इन्ह राज राज्य कृषि सहकारी बोर्ड का सदस्य मनोनीत किया। अपने गहन अध्ययन व अनुभव के आधार पर इन्होंन राजस्थान सहकारी एक्ट-1954 पर एक सारगर्भित पुस्तक लिखी जो काफी लोक प्रिय हुई। सन् 1964 के अगस्त माह म बुडापस्ट (हंगरी) म आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता सेमिनार म भारतीय दल का नेतत्व सिंघवीजी ने किया और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

सिंघवीजी सोजत बार एसोसियेशन (वकील मण्डल) के सन् 1974-84 तक अध्यक्ष रहे। सन् 1953-54 मे गठित प्रथम नगरपालिका बोर्ड सोजत के सदस्य चुने गये और उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष पद पर भी काय किया। उनकी रुचि सामाजिक तथा जन कल्याण कार्यों म भी शुरू से रही है। इण्डियन रैडक्रास सोसाइटी सोजत क ये संयोजक है और सुमेरपुर स्थित राजस्थान मेडिकल सोस इटी एवं रिलीफ सेन्टर के पदाधिकारी भी रहे हैं।

आज भी य बडी निष्ठा व लगन से राष्ट्रीय व जनकल्याण कार्यों म सलग्न रहत हैं और सेमिनार व गोष्ठियो का आयोजन कर जन जागृति के कार्यों म दिलचस्पी लेत हैं।



निर्भीक सिपाही
श्री भंवरलाल कण्डारा

☐

श्री भंवरलाल कण्डारा का जन्म सन् 1927 म जतारण तहसील के ग्राम निमाज म श्री शकरलाल जी दमामी क घर हुआ था। शकरलालजी ठिकाना निमाज क राज दमामी थ और इनको ठिकाने की ओर स एक बेरा व कृषि भूमि जागीर म दी हुई थी। भंवरलालजी का देश की आजादी के संघर्ष की ओर झुकाव होने का सम्बन्ध भी एक विचित्र घटना से है

निमाज मे स्थानीय पाठशाला पृथ्वी स्कूल म श्री कण्डारा पढते थे और मारवाड राज्य के तत्कालीन शिक्षा निदेशक मि एपी कावस स्कूल का निरीक्षण करने आये थे। एक अध्यापक जो मन से अंग्रेजो के विरोधी थे, ने श्री कण्डारा को 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का नारा जोर-जोर स लगाने के लिए उकसा कर तैयार कर लिया। ज्योंही कावस स्कूल म आये श्री कण्डारा ने तीन चार बार 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाये। दूसरे बच्चे सुनत रहे। न तो कण्डाराजी ही और न अन्य छात्र ही इस नारे का अर्थ जानते थे पर मि कावस तो अत्यन्त क्रोधित हो गये। तत्काल श्री कण्डारा का स्कूल से निष्कासन हो गया और उनको ठिकाने के रावल म लेजाकर बिठा दिया गया। खैर, किसी तरह इनके पिताजी क माफी मागने पर इन्हें छोड तो दिया गया पर इनकी काफी पिटाई हुई। इसके पश्चात् पढ़ने के लिए कण्डारा अपनी बुआ के पास गाव बलूदा चले गये और वहाँ सेठ छगनलालजी मूथा द्वारा सचालित विद्यालय म प्रवेश ले लिया। पर छठी कक्षा म पढते-पढते ही आजीविका हेतु निमाज आकर य भवन निर्माण का काय सीख कर उसम लग गये।

सन् 1940-41 म श्री रणछोडदासजी गट्टानी जब निमाज आये और सभा करके कांग्रेस और लोक-परिषद् के कार्यक्रम क बारे म बताया तो इन्ह इन्कलाब जिन्दाबाद' का सही अर्थ समझ म आया। य अपने गाव के प्रमुख कार्यकर्ता माधोलालजी सुथार के साथ लोक परिषद् के सदस्य बन गये। श्री माधोलालजी तो पुराने कांग्रेसी थे और अब श्री कण्डारा का साथ मिलने स उन्हें भी लोक-परिषद् का काय बढाने म काफी मदद मिलने लगी। सन् 1942 म 1945 तक श्री कण्डारा ने जतारण तहसील के कई गावों-बलून्दा जतारण, निम्बोल कुशालपुरा पिपलयावसा, बिराठिया गिरी आदि गावो का दौरा करके लोगो म जन जागृति पैदा की और सामती जुल्मो व बैठ बेगार स मुक्त होने का प्रचार किया। इस प्रचार म इन्हें ब्यावर के मौलाना अत्तारमोहम्मद सा का काफी सहयोग मिला।

सन् 1946 के बाद इन्होने लगी विरोधी व बेगार विरोधी आन्दोलन म सक्रिय भाग लिया और सफलता प्राप्त की। आजादी के पश्चात् इन्होंने सामाजिक बुराइयों और कुरीतियों को दूर करने का आन्दोलन गाव आगेवा के श्री धीसारामजी रेगर और श्री शकरजी चौकीदार के सहयोग से चलाया और अनुसूचित जाति व जनजाति म शराब मत्युभोज बाल विवाह आदि बन्द कराने म आशातीत सफलता प्राप्त की। महात्मा गांधी और विनोबा भावे के रचनात्मक कार्यों भूदान आदि म भी आपका बहुत सहयोग रहा है। सहकारी आन्दोलन स तो आप शुरू से ही जुड रहे हैं और गरीब और शोषित वर्ग क लोगो की आर्थिक हालत सुधारने म आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अब भी निभा रहे हैं।





रचनात्मक जन-सेवी
श्री अब्दुलरहमान खा



श्री अब्दुल रहमान खा एक निष्ठावान राजनतिक कायकर्ता है और इन्होने युवावस्था से ही लोक-परिषद् व कांग्रेस द्वारा चलाये गये आन्दोलनो मे सक्रिय भाग लिया है। गुडा दुर्गा के ठाकुर श्री पदमसिंह व बिठुडा के लालदासजी तथा गौरीशकरजी के नतत्व मे इन्होने जन सेवा का काय प्रारम्भ किया जिसे आज भी लगनपूवक कर रह हैं।

सन् 1944 मे बगडी गाव मे एक विशाल राजनैतिक सम्मलन का आयोजन हुआ। इसमे मारवाड लाक परिषद् के नेता लोकनायक जयनारायणजी व्यास, मीठालालजी काका आदि नेता आये थे। उसम बगडी के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री मातीलालजी राका प्रमुख कायकता थे। श्री अ दुल रहमान खा तथा अ य कायकता सवश्री गौरी शकरजी, लालदासजी साजत के बाबूलालजी, गुडा दुर्गा के पदम सिहजी आदि उस सम्मेलन म सम्मिलित हुए। यह सम्मेलन बगडी ठाकुर के महल के सामने के मदान म हुआ था। ज्योंही लोकनायक श्री जयनारायणजी व्यास ने भाषण देते हुए अंग्रेजी साम्राज्य व राजाशाही व साम ती जुल्मो की बात कही कि रात्रले से पुलिस व जागीरी गुण्डा तत्वो ने सभा मच पर हमला कर लाठिया बरसाना शुरू कर दिया। ठाकुर बगडी ने ब दूक चलाकर हमले की शुरूआत की। कई लोगो के गम्भीर चोटें आइ और घायल हुए। इस घटना से श्री अब्दुलरहमान खा व अ य स्थानीय कायकर्त्ताओ म साम ती तत्वा के विरुद्ध रोष तो बढा ही पर अपार उत्साह भी पदा हुआ। इ हाने प्रतिज्ञा की कि जागीरदारी प्रथा खत्म करके ही दम लेंगे।

जयनारायणजी व्यास को गिरफ्तार करने पुलिस मारवाड जक्शन पहुँची, पर श्री अब्दुल रहमान खा व इनके साथियो-सवश्री शकरलालजी खण्डेलवाल, प्यारेलालजी, हाजी गफ्फूरखाजी मो० हुसनजी, वशीलालजी आदि ने जोर-जार से 'भारतमाता की जय इकलाब जि दाबाद के नारे लगाये और व्यासजी को खारची गाँव म सठ बालच दजी क घर पहुँचा दिया। व्यासजी ने स्थानीय लोगा म जाश भरा। दूसरे दिन सुबह मारवाड जक्शन के बाजार मे तिरगा झण्डा लेकर जुलूस के रूप म व्यासजी और सभी कायकर्ता आये और सभा की। वही पर व्यासजी को गिरफ्तार कर पुलिस जोधपुर ले गई।

उ होने मारवाड जक्शन पर 1946 मे कांग्रेस कमेटी की स्थापना की और श्री अ दुल रहमान खा जी अध्यक्ष व श्री च दू लालजी मरलेचा, म त्री चुने गये तथा सवश्री गोवि दरामजी मीणा, गौरीशकरजी, लालदासजी, गगारामजी मीणा भीकारामजी कुम्हार, नगारामजी चौधरी, ठाकुर पदमसिंहजी नत्थीलालजी शर्मा आदि सदस्य चुने गये थे। एक झोपडी म तिरगा लगाकर कार्यालय खोला गया था।

आजादी मिलन के पश्चात् जागीरी जुल्म और भी बढ गये थे। काश्तकारा का बेरो व खतो से बुरी तरह बेदखल किया जाने लगा था। श्री अब्दुल रहमानजी अब गरीब काश्तकारो की मदद म जुट गय। जागीरदारो ने अपने प्रभाव स पुलिस म इनके विरुद्ध कई आरोप लगाकर कायवाहिया प्रारम्भ की, पर वे तनिक भी नही घबराये। धामली ठाकुर श्री हनव तसिंह स 750 बीघा भूमि काश्त कारा को पुन दिलाई। जागडावास ठाकुर की 7500 बीघा भूमि काश्तकारा का आवटित करवाई। ग्राम दुदाडे म सन् 1952 म इनके प्रयत्ना से एक सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमे श्री सुमेर राजजी डागा, मोहनराजजी (बाली) श्री धनपतराजजी भण्डारी–साजत, श्री जसव तराजजी सिंघवी व जिल भर के कई कायकर्ता सम्मिलित हुये थे। सिनला का जागीरदार राईका जाति के लोगो से बकरा-लाग तथा ऊन की बिक्री पर दस प्रतिशत लाग वसूली करता था, वह भी इनके प्रयत्ना के फलस्वरूप ब द हुई।

आजकल रचनात्मक कार्यों म विशेषकर 20 सूत्री कायक्रम के क्रिया वयन म रुचि लेकर आप जन-सवा का काय कर रहे है।



कृषि पण्डित व क्रान्तिकारी
श्री गणेशराम चौधरी



गणेशरामजी चौधरी का ज म वसाख सुदी 14 सम्वत 1974 को पाली जिल क सुमरपुर कस्ब म श्री वदाजी माली के यहा हुआ। सुमरपुर गाव तत्कालीन मारवाड



राज्य के रिजेंट सर प्रताप द्वारा संवत 1967 में बसाया गया था और श्री बदाजी माली अपने साथ काश्तकारों के एक बहुत बड़े तबके को लाकर यहां बसे थे। इसलिये उन्हें गांव का चौधरी नियुक्त किया और चौधरी नाम से प्रसिद्ध हुए लेकिन प्रारम्भ से ही इस परिवार को मुसीबतों का सामना करना पड़ा। पड़ोस के गांव शिवगंज में अंग्रेज फौजों की छावनी थी। प्रथम विश्व युद्ध के समय सुमेरपुर कस्बे को भी खाली करने का आदेश हुआ था और यहां पर फौजी सैनिक व युद्ध कैदी रहने लगे थे। तब इस परिवार को भी अन्य लोगों के साथ ऊन्दरी गांव में रहना पड़ा लेकिन युद्ध समाप्त होने पर पुनः सुमेरपुर आबाद हो गया और विकास करता किया।

श्री गणेशरामजी चौधरी आठवीं कक्षा पास कर खेती के काम में लग गये। यह समय देश में कांग्रेस द्वारा चलाये जा रहे सत्याग्रह आन्दोलन का युग था। शीघ्र ही चौधरीजी सुमेरपुर के जागरूक नेता श्री बाबूलालजी राजगुरु के सम्पर्क में आ गये और दोनों ही मिलकर सिरोही प्रजामंडल के नेता श्री गोकुलभाई भट्ट तथा श्री देवीचंद सागरमल जी (शिवगंज) से प्रेरणा लेकर सुमेरपुर तथा पड़ोस के ग्रामों में जन जागृति का काम करने लगे।

ग्रामों में उस जमाने में बड़ी खराब हालत थी। बेठ बेगार लाटा-कूंता, लागबाग के रूप में प्रजा का भयंकर शोषण होता था। जागीरी गांवों में कोई कानून-व्यवस्था नहीं थी। जागीरदार के कारिन्दे, कामदार-कारिन्दे मनमानी करते थे और इनके विरुद्ध कोई शिकायत सुनने वाला नहीं था। ऐसी परिस्थिति में हर प्रकार से दबे हुए और दुःखी प्रजाजनों के बीच जन जागृति का काम करना बड़ा जोखिमभरा और दुष्कर कार्य था। ऐसी विकट परिस्थितियों में चौधरीजी ने गांवों में अलख जगाई और कांग्रेस के झण्डे के नीचे लोगों को संगठित करने का प्रयास किया। फलस्वरूप, उन्हें सिरोही राज्य में तो प्रवेश न करने का आदेश मिला ही साथ ही मारवाड़ के अधिकारी व स्थानीय जागीरदार भी इन्हें हर तरह से परेशान करने लगे। ग्राम नाना, कोरटा, मान्दा, साण्डेराव, पावा, उमा, विमनपुर आदि कई गांवों में सामंती तत्वों ने इनके साथ मारपीट की और इनके विरुद्ध अनेक झूठे मुकदमे लगवाये पर ये तो निरंतर जनजागृति के काम में लगे ही रहे। मारवाड़ में लोक-परिषद् सन् 1940 में अधिक सक्रिय हो गई थी और चौधरीजी मारवाड़ लोक-परिषद् के नेता सर्व श्री जयनारायणजी व्यास, रणछोड़दासजी गट्टानी, मथुरादासजी माथुर, अचलेश्वर प्रसादजी शर्मा, गणेशीलालजी व्यास के सम्पर्क में आये और अधिक उत्साह के साथ काम करने लगे।

सन् 1940 में मारवाड़ में जनगणना के समय मर्दुमशुमारी टैक्स लगाया गया था, जिसके विरुद्ध चौधरीजी ने श्री राजगुरु के साथ होकर विरोध किया और एक आन्दोलन खड़ा कर दिया। उस आन्दोलन में चौधरीजी विजयी रहे और सरकार को टैक्स माफ करना पड़ा।

सन् 1947 के बाद रियासतों के विलीनीकरण के पश्चात जागीरी जुल्म बढ़ गये और उनका प्रतिकार करने के आन्दोलन भी उग्र हुए। इसमें ही आन्दोलनों में चौधरीजी को साथ मिल गया। उस जमाने के युवा छात्र नेता श्री मोहनराजजी एडवोकेट-बाली का, जिसके फलस्वरूप बाया, चामुण्डेरी, साण्डेराव, कोरटा, वाणा, कोसेलाव, सेणा आदि ग्रामों में हुए आन्दोलनों में भारी सफलता प्राप्त हुई। मनमानी लड़ाई बन्द हुई, लाग-बाग, बेठ बेगार समाप्त हुई कायलान (शिकारगाह) समाप्त हुए। बाया ठिकाने की जब्ती के आदेश हुए। ऐसे ही आन्दोलनों के सिलसिले में चौधरीजी को आठ दिवसीय भूख हड़ताल पर भी बैठना पड़ा।

चौधरीजी एक निष्ठावान, परिश्रमी, रचनात्मक प्रवृत्ति के किसान कार्यकर्ता हैं। सुमेरपुर के विकास में इनका बहुमूल्य योगदान रहा है। कृषि क्षेत्र में इनका विशेष अनुभव है। इनके ज्ञान व अनुभव को देखकर राज्य सरकार ने इन्हें कृषि प्रसार अधिकारी का सम्मान प्रदान किया, जिस पर इन्होंने, कई वर्षों तक अवैतनिक अधिकारी के रूप में कुशलतापूर्वक कार्य किया और काश्तकारों तथा कृषि विभाग के अनेक अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया। इन्होंने पपीता तथा आमों की अनेक नई किस्में विकसित की। चौधरीजी वृद्धावस्था के बावजूद बड़े उत्साह से सभी कार्य करते हैं और काश्तकारों का मार्गदर्शन देते रहते हैं।



आजादी के मूक सेवक

श्री पुखराज कोठारी

□

श्री पुखराजजी कोठारी का जन्म मान्डी (मारवाड़) में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री धनराजजी कोठारी था। वे अत्यन्त ही सरल स्वभाव के सत-पुरुष थे और ईमानदारीपूर्वक व्यापार करके अपना जीवन-यापन करते थे। अपने माता पिता के सादे व परोपकारी जीवन से प्रेरणा लेकर



पुखराजजी ने उदार नैतिक मूल्यों के आधार पर आदर्श जीवन का निर्माण किया है।

स्वतन्त्रता-संग्राम के दिनों में मारवाड़ राज्य में लोक परिषद या कांग्रेस की गतिविधियों का सादड़ी भी एक केन्द्र था। यहां शिक्षित और उत्साही युवकों का एक दल सन् 1932 से ही सक्रिय था। पुखराजजी ने नवयुवक संघ सादड़ी की स्थापना की। प्रारम्भ में इन्होंने सामाजिक कुरीतियों के निवारण हेतु कार्यक्रम बनाकर आन्दोलन शुरू किया, पर धीरे धीरे देश में आजादी के लिए लड़े जा रहे संघर्ष से सादड़ी के इन युवकों में भी राष्ट्रीय भावना ने जोर पकड़ा व जागीरदारों की नादिरशाही के विरुद्ध आवाज बुलंद की। पुखराजजी कोठारी ऐसे ही उन गिने चुने नवयुवकों में से थे जो देश की आजादी के लिए सक्रिय होकर रचनात्मक कार्य में जुट गये थे। रात्रि पाठशाला चलाकर प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र प्रेम की भावनाएं लोगों में भरना, बीमारों को निःशुल्क औषधि वितरण करना, शासन द्वारा सताये जा रहे लोगों की हर प्रकार की मदद करना आदि इनके मुख्य कार्य थे। मीटिंग व सभा सम्मेलनों में तो इनका आना-जाना होता ही था।

महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम से श्री कोठारी अत्यन्त प्रभावित हुए और इन्होंने इसी कार्यक्रम के माध्यम से देशसेवा करने का व्रत ले लिया। मारवाड़ लोक परिषद् की सादड़ी में शाखा स्थापित करने श्री रणछोड़दासजी गट्टानी आये तब भी कोठारीजी एक अग्रणी कार्यकर्ता थे। कुछ समय पश्चात् व्यापार के लिए ये रानी स्टेशन आ गये और सादड़ी के प्रमुख कार्यकर्ता श्री फूलचन्दजी बाफना के साथ मैसर्स ए सी कोठारी एण्ड कम्पनी नाम से व्यापार शुरू किया। इनका व्यापारिक प्रतिष्ठान भी व्यापार में ईमानदारी के लिए उस समय सारे क्षेत्र में प्रख्यात था।

श्री कोठारी जहां जागीरी काल में लाग बाग, वेठ बेगार लाटा कूता के जुल्मों से लड़ते रहे हैं वहां आजादी के पश्चात् फैले भ्रष्टाचार के विरुद्ध भी निरन्तर संघर्षशील हैं। श्री विनोबा भावे के भूदान सर्वोदय आन्दोलन में भी आपने रुचि दिखाई और समाज उत्थान के कार्यों में सक्रिय हो गये। कोठारीजी अपनी निष्पक्षता तथा न्याय दृष्टि के कारण जन-जन के प्रिय बन गये और आज भी सारे क्षेत्र में अत्यन्त ही सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं।

श्री कोठारी की आयु अब 75 वर्ष हो गई है और वृद्धावस्था के कारण अपने पुत्रों के साथ आप बंगलौर (कर्नाटक राज्य) में अधिक समय व्यतीत करते हैं। वहां इनके पद चिह्नों पर चलने वाले पुत्रों का व्यवसाय है।

वन्दे मातरम्

समर्पित राष्ट्रसेवी
श्री जवरचन्द भण्डारी



सोजत निवासी श्री जबरचंदजी भण्डारी मारवाड़ के उन गिने चुने युवकों में से एक रहे हैं जिन्होंने कांग्रेस के सन् 1942 के 'करो या मरो' आन्दोलन के दौरान अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध स्व प्रेरणा से सभी को विस्मय में डालने वाला कार्य किया था।

सारे राष्ट्र में उस आन्दोलन की धूम थी। स्थान स्थान पर गिरफ्तारियां हो रही थीं। सारे नेता गिरफ्तार हो चुके थे और आम जनता ने मनचाहे ढंग से अंग्रेजी राज से लड़ने का संकल्प कर लिया था। कहीं रेल की पटरियां उखाड़ी जा रही थीं तो कहीं तार टेलीफोन के खम्भे तोड़े जा रहे थे। आये दिन आगजनी की घटनाएं और पुलिस द्वारा गोली-बारी हो रही थी। सैकड़ों की तादाद में लोग मारे जा रहे थे। सिंध प्रान्त (जो अब पाकिस्तान में है।) से हाई स्कूल के विद्यार्थी हेमू कालानी को जो अपने हाथ में तिरंगा झण्डा लिये छोटे विद्यार्थियों के जुलूस का नेतृत्व कर रहा था अंग्रेज सारजेंट द्वारा गोली से भून डालने की खबर ने सारे देश में एक तहलका मचा दिया था। विद्यार्थियों में अपार जोश उमड़ आया था। उसी जोश के प्रवाह में जबरचंदजी भण्डारी ने सोजत शहर में श्री विमलनाथ जैन मन्दिर के पास लगे हुए पोस्ट आफिस के डाक के डिब्बे को उखाड़ कर निकटवर्ती एक कुए में डाल दिया। बस, फिर क्या था, पुलिस ने छानबीन कर सर्वश्री जबरचंदजी भण्डारी वसुदेवजी भटनागर व जसवंतराजजी सिंघवी को पकड़कर थाने में बन्द किया और बेरहमी से पिटाई की। जबरचंदजी भण्डारी ने पुलिस थानेदार को स्पष्ट कहा कि सबको क्यों पीट रहे हो पोस्ट का डिब्बा तो मैंने कुए में डाला है तब कहीं श्री भटनागरजी तथा सिंघवीजी की रिहाई हुई। पर जसवंतराजजी भण्डारी पर मुकद्दमा चला और कई महीनों बाद वे जेल से छूट पाये।

भण्डारीजी इन दिनों अपने व्यवसाय में लगे हुए हैं पर राष्ट्र सेवा की लगन आप में अभी भी बरकरार है।

साहिल पे खड़े हैं तमाशायी, एक डूबने वाले पर
अफसोस तो करते हैं, इमदाद नहीं करते।

वन्दे मातरम्





प्रेरक व्यक्तित्व के धनी
श्री जवरचंद मेहता



'बन सहारा बेसहारों के लिए
बन किनारा भ्रमित नावों के लिए ।
जो जिया अपने लिए तो क्या जिया,
जी सके तो जी हजारों के लिए ॥

श्री जवरचन्दजी महता ऐसा ही व्रत लिए जी रहे थे और रुग्णावस्था व वृद्धावस्था के बावजूद हर सेवा-कार्य के लिए अपने आपको प्रस्तुत कर देते थे। महताजी युवावस्था से ही गांधी विचारधारा के पक्के अनुयायी बन गये थे और तदनुरूप इन्होंने अपने जीवन को ढाल रखा था। इन्हीं के द्वारा स्थापित 'सोजत रोड जन राहत सेवा समिति' नामक संस्था के माध्यम से भूखों को अन्न वस्त्र आदि, जरूरतमन्द विधवाओं तथा छात्रों को आर्थिक सहायता, बीमारों को मुफ्त दवाइयां आदि पहुंचाकर उस क्षेत्र में अनुकरणीय आदर्श सेवा-काम किया था।

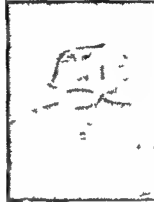
महताजी ने सन् 1965 से 1968 तक सोजत रोड के सरपंच पद पर रहते हुए जो विकास के कार्य सम्पन्न कराये उनसे तो सोजत रोड की काया पलट ही हो गई। उच्च माध्यमिक विद्यालय, उच्च माध्यमिक कन्या शाला, सगाविसन आयुर्वेदिक औषधालय आदि के शानदार भवन बनवा कर जनता को भेंट करवाये। सोजत रोड पर गांधी स्मारक प्रतिमा का निर्माण करवाया। पेयजल की व्यवस्था हेतु गांधी सागर जलाशय बनवाया तथा नेहरू बालोद्यान का सुन्दर निर्माण करवाकर एक बड़ी कमी की पूर्ति की। ग्राम मुसालिया में इन्हीं की प्रेरणा से श्री शेषमल सियाल उच्च माध्यमिक विद्यालय भवन का निर्माण हुआ। सोजत शहर में आचार्य श्री रघुनाथ स्मृति जैन राजकीय चिकित्सालय के विशाल भवन के निर्माण में भी महताजी का पूरा सहयोग रहा।

श्री महताजी गहन अध्ययनशील व्यक्ति और सद्विचारों के प्रचारक थे। अक्सर अपने मित्रों, सहयोगियों व शुभचिंतकों को पत्रों के माध्यम से सद्विचारों की प्रेरणा देते रहते थे। उनके पत्रों में कुछ अनमोल विचार यहाँ उद्धृत किये जा रहे हैं —

यावद् भ्रियेत जठरं तावत् स्वत्वं हि देहिनाम् ।
अधिकं योऽभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति ॥

यानि—जितने धन से प्राणी की उदरपूर्ति हो, उतने पर ही उसका अधिकार है। उससे अधिक पर अपना हक मानता है तो वह चोर है, उसे दण्ड मिलना चाहिए।

महताजी के आकस्मिक निधन से एक सच्चा समाज सेवक और सद्विचारक चला गया।



गोपनीय सेवार्थी
श्री लक्ष्मणपुरी



श्री लक्ष्मणपुरीजी ने दिनांक 25 7 1916 से 13 5 1945 तक जोधपुर गवर्नमेंट के मुतल्लिका महकमे जात में 30 वर्षों तक सेवा की परन्तु राजनीति में भाग लेने से आप अफसरों की नजर में खटकते रहे। आखिर में हुकूमत जालोर में एक मामूली गैर हाजरी का बहाना लेकर आपको सेवा से मुक्त कर दिया गया। इस पर उन्होंने बहुत विरोध किया परन्तु कोई सुनवाई नहीं हुई।

सेवाकाल में आप चीफ कोर्ट में इंगलिश टाईपिस्ट पद पर रहते हुए राजनीतिक कार्यों में भाग लेते थे जैसे—लोक परिषद् के अध्यक्ष श्री जयनारायण व्यास तथा उनके साथियों पर सफेद शीशी आदि के मुकद्दमात में गुप्त रूप से नकलें तैयार करना। रियासती रेडियो में प्रकाशनार्थ योजनाएं तैयार करवाकर दिल्ली भेजना तथा बाहर हुकूमतों में जहां इनका स्थानान्तरण होता था, प्रचार करना आदि। ये सभी राजद्रोह की श्रेणी में माने थे।

राजकीय सेवा से मुक्त होकर खोड में लोक परिषद् के अध्यक्ष की हैसियत से उन्होंने राजनीतिक कार्य से सुनवाई तथा 8 मार्च 1947 को व्यासजी द्वारा जिम्मेवार हुकूमत के एलान में सक्रिय भाग लिया।

मारवाड़ में जल समस्या निवारणार्थ आपने अथक प्रयत्न किये और कष्ट उठाये। ये योजनाएं थीं — दसूरी में सनी का नाल बांध, दान्तीया बांध तथा क्षेत्र की सबसे बड़ी जल योजना—जवाई बांध योजना जो कई मानों में अपूर्ण थी — को पूरा करवाने में भी आपका बड़ा योगदान रहा।





निर्भीक व संघर्षशील

श्री रामनिवास परिहार



श्री रामनिवासजी का जीवन एक संघर्ष की कहानी है। इनका जन्म ग्राम बूसी में 25 सितम्बर, 1931 को हुआ था। इनके पिता श्री उदारामजी व दादा श्री दौलारामजी घाची समाज के मुखिया व प्रमुख व्यक्ति थे। स्थानीय जागीरदार के जुल्मों के विरुद्ध आवाज उठाने और काश्तकारों को सलाह व सहयोग प्रदान करते रहने के कारण श्री दौलारामजी के वक्त से ही इस परिवार का ठाकुर-बूसी से संघर्ष चलता रहा है। एक तरह से रामनिवासजी को यह संघर्ष विरासत में ही मिला है।

रामनिवासजी को किसी भी स्कूल में पढ़ने का अवसर नहीं मिला। जागीरी गांवों में तो सरकारी स्कूल थे ही नहीं। कहीं कहीं बड़े गांवों में प्राईवेट पोसाल पाठशालाएं चलती थी जहां महाजनों ब्राह्मणों के लड़के पढ़ते थे। फिर भी इन्होंने सम्पर्क साधकर अक्षर ज्ञान मात्र प्राप्त कर लिया और घर पर कृषि कार्य करते रहे। इनके पिता का, किसानों के मुखिया होने के कारण, जोधपुर स्टेट के रिटायर्ड डी आई जी श्री बलदेवराम मिर्धा से सम्पर्क था जो मारवाड़ के प्रमुख किसान नेता थे। अतः, रामनिवासजी इसी सम्पर्क से बलदेवरामजी से मिलते रहे।

सन् 1946 में मिर्धाजी ने मारवाड़ किसान सभा का गठन किया और श्री रामनिवास परिहार को किसानों को संगठित करने के कार्य में लगा दिया। ये कार्यालय में काम करने लगे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् 30 मार्च 1949 को राजपूताने की सभी देशी रियासतों का विलीनीकरण कर राजस्थान का निर्माण हुआ तब मारवाड़ किसान सभा 'राजस्थान किसान सभा' में परिवर्तित हो गई। बलदेवरामजी मिर्धा उसके प्रथम अध्यक्ष और श्री रामनिवासजी परिहार कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये। इसी दौरान मवन्दा व सुवाना में किसानों के आन्दोलनों को कुचलने के लिए जो भयंकर गोलीकाण्ड हुए उन सम्मेलनों में किसान नेताओं के साथ रामनिवासजी परिहार भी मौजूद थे। आजादी के पश्चात् ये पाली जिला किसान सभा के अध्यक्ष चुने गये। सन् 1952 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के जोधपुर आगमन के अवसर पर किसान नेताओं से बातचीत कर राजस्थान किसान सभा का राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी में विलीनीकरण कर दिया। इस विलीनीकरण का एकमात्र उद्देश्य राजस्थान में जागीरी समाप्ति हेतु आन्दोलन में तेजी लाना था और इसमें सफलता भी मिली।

अब श्री परिहार कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता बन गये और इन्होंने सहकारिता के क्षेत्र में किसानों को संगठित करने का बीड़ा उठाया। पाली जिले में गांव गांव में सहकारी समितियों का गठन करना और इनके द्वारा किसानों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना इनका प्रमुख कार्य हो गया। ये ग्राम सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष से लेकर सरकारी क्षेत्र में ऊंचे से ऊंचे पद पर चुने गये। रानी क्रय विक्रय सहकारी समिति, पाली जिला सहकारी समिति तथा जिला बुनकर संघ के अध्यक्ष पाली जिला भारत सेवक समाज के संयोजक, पाली जिला सहकारी भूमि विकास बैंक के अध्यक्ष पाली जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक लिमिटेड के संचालक, रानी कृषि उपज मण्डी समिति के अध्यक्ष राजस्थान राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक व राजस्थान सहकारी क्रय विक्रय संघ के संचालक तथा राजस्थान राज्य सहकारी परामर्शदात्री समिति के सदस्य रहे हैं और आज भी जिला कांग्रेस कमेटी व राज्य तथा जिला स्तरीय अनेक सहकारी संस्थाओं में पदाधिकारी हैं।

भूमि सुधार कार्यक्रम के साथ-साथ इन्होंने बिनोबा भावे के भूदान कार्यक्रमों में भी अत्यन्त रुचि दिखाई और कार्य किया। लेकिन संगठन तथा सहकारिता के क्षेत्र में इतना रचनात्मक कार्य करने के उपरान्त भी सामन्ती तत्वों ने इन्हें शान्ति से नहीं बैठने दिया। इनके विरुद्ध तरह-तरह के झूठे मुकदमे बनाना, मवेशी तथा अन्य सामग्री की चोरी करवाना, खलियान व फसलों में आग लगवा देना, कातिलाना हमले करवाना आदि इनके जीवन की आम घटनाएं रही हैं। लेकिन यह निर्भीक व दबंग व्यक्ति क्षण भर के लिए भी डरा नहीं दबा नहीं, पथ से विचलित हुआ नहीं निराशा पास नहीं फटकने दी, हिम्मत नहीं हारी। इन्होंने अपनी सन्तानों को उच्च शिक्षा दिलाई। इस कार्य में श्री परिहार की धर्मपत्नी श्रीमती दाखूबाई का पूरा सहयोग इन्हें मिला जिनकी बदौलत ही ऐसे संघर्षमय जीवन में भी पूरे परिवार को शिक्षित किया जा सका।

आज भी रामनिवासजी परिहार राजनीति तथा सहकारिता के क्षेत्र में बहुत ही सक्रिय हैं और ग्रामीण जनता की सेवा में लगे हुए हैं।





कमाल के लोकसेवक

श्री जमालुद्दीन घोसी

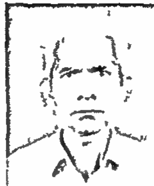
श्री जमालुद्दीनजी घोसी सोजत रोड के वृद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ता हैं। सन् 1942 के आन्दोलन में आपने विशेष भाग लिया था।

28 मार्च 1942 में मारवाड़ लोक-परिषद् की ओर से चण्डावल में एक सार्वजनिक सभा बुलाई गई थी। वहां के ठाकुर द्वारा सभा भंग करने के लिए सैकड़ों लठैत ठाकुर के गढ़ में जमा थे। जब ही नगाड़े की आवाज हुई, चारों तरफ से लाठियां चलने लगी जिसमें मदनी मीठालालजी बाफना विजयशंकरजी दवे, मांगीलालजी आलीशान, छगनारामजी चौहान को बुरी तरह घायल कर दिया गया। सोजत रोड के श्री गणेशमलजी काठेड़ के ड्राईवर श्री बजरंगलाल शर्मा की भी हड्डी टूट गई।

श्री जमालुद्दीन 30 लोगों को जीप में डालकर लाठियां खाते हुए बगड़ी लाये। बगड़ी में ठाकुर मर्दसिंह द्वारा इन लोगों को पकड़ने की कोशिश की गई। घुड़सवार बाबूसिंह और मूलसिंह पीछे लेकर दौड़े। जीप की रोशनी से चमक चमक कर घोड़े पीछे रह गये और जमालुद्दीन घायलों को लेकर सोजत आ गये वहां डॉक्टरों द्वारा मना करने पर शहर में साधारण उपचार कराया गया।

सर्वश्री द्वारकादासजी पुरोहित मथुरादासजी माथुर नरसिंहजी कछवाहा और जयनारायणजी व्यास की गिरफ्तारी के बाद जोधपुर सरकार द्वारा निर्वासित किये जाने पर व्यासजी को बगड़ी में सोजत लाया गया और जमालुद्दीनजी उन्हें जीप द्वारा पाली ले गये जहां से व्यासजी जोधपुर चले गये। व्यासजी ने एक दो बार इस घटना के बाद लोगों से कहा कि सोजत से पाली जीप द्वारा ले जाने में जमालुद्दीन ने तेज गाड़ी चलाकर मुझे समय पर रवाना ... में बिठाया ... इस जमाने नहीं बचा ... । उन्होंने दिनों राजस्थान की रियासतों के नेता ... और माणिक्य लालजी वर्मा को लोक-परिषद् कार्यकर्ताओं द्वारा रेल स्टेशन के पहले दर्जे के मुसाफिरखाने में छिपाकर ... पर रेल स्टेशन मास्टर श्री ... का सत्कार किया गया था।

जमालुद्दीनजी ने सन् 1965 में राष्ट्रीय संकट के समय आपने ग्राम-पंचायत के माध्यम से लोक-सेवा के काम किये। स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गांधी के जेल भरो आन्दोलन में जमालुद्दीनजी घोसी ने सोजत उपखण्ड कार्यालय के सामने गिरफ्तारी दी और उन्हें सात दिन सोजत सिटी जेल में रखा गया।



दबंग सत्याग्रही

श्री अचलचन्द परिहार

श्री अचलचन्दजी परिहार का जन्म 60 वर्ष पूर्व ग्राम बालराई में श्री पेमारामजी छीपा के घर हुआ था। इस गांव के जागीरदार चाणोद के ठाकुर थे। ग्रामीणों को बेठा-बेगार व लाग-बाग के लिए बहुत परेशान किया जाता था। श्री परिहार के पिता पेमारामजी को भी कपड़े सीने की बेगार में कई दिनों व महीनों तक काम करना पड़ता था और ना कहने पर घोड़ों की पायगों में बिठा लिया जाता था। अचलचन्दजी की शिक्षा ग्राम ढोला में हुई क्योंकि बालराई में कोई स्कूल नहीं था। ढोला में ताराचन्दजी एक आदर्श शिक्षक थे, उनके कारण इनके जीवन में अच्छे संस्कारों का निर्माण हुआ।

अपने सिलाई के धंधे के साथ-साथ श्री परिहार ठिकाने द्वारा वसूले जाने वाले ... लाग-बाग चल्ला-चूल आदि का विरोध करते रहे। गांव वालों में वे जागृति लाते, पर लोग डरते थे। लेकिन जब जुल्म बहुत बढ़ जाता है तो लोग बलवा करने को तैयार हो जाते हैं। बालराई में भी श्री नवारामजी श्री बेनारामजी व श्री गौरीलालजी जैन ने आगे आकर श्री परिहार को सहयोग दिया। नवारामजी के साथ बहुत बुरी तरह मारपीट की गई। उनके हाथ-पांव तोड़ दिये और ठिकाने ने कई झूठे मुकद्दमे भी लगाये गये। पर नवारामजी आखिर तक लड़ते रहे हिम्मत नहीं हारी। ठिकाने ने उनकी जमीन भी छीन ली गई। इस तरह के जुल्म से तंग आकर कई परिवार बालराई गांव छोड़कर जालोर जिले के पामाटा गांव में जाकर बस गये। अचलचन्दजी व उनका परिवार भी कुछ समय के लिए गांव पुनाड़िया जाकर बस गया था, पर उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी और चाणोद देवली, पाली, जहां भी लोक-परिषद् व कांग्रेस के सम्मेलन होते वे पहुंचते और गरीबों की आवाज को बुलन्द करते। इनके साथी पूनमचन्दजी भाटना मोहनराजजी जैन छोटमलजी सुराणा रामप्रसादजी गांधी राम प्रसादजी शर्मा बाबूलालजी राजगुरु नथमलजी साढ़ा पुखराजजी



परिहार का भरपूर सहयोग मिला। ये गावो में मुख्यतया कोरवा, नवा चागवा, खूणी का गुडा, बालराई आदि में निरन्तर काय करते रहे।

सन 1955 में बालराई में सर्वप्रथम पचायत स्थापित हुई और अचलचन्दजी सरपच चुने गये। कुल मिलाकर ये 18 वर्षों तक सरपच रहे और बालराई तथा क्षेत्र के अन्य गावो में पेयजल व्यवस्था, हाई स्कूल व प्राइमरी स्कूल, औषधालय सहकारी समितिया पोस्ट आफिस खुलवाने के अनेक विकास काय सम्पन्न कराये। आज भी रचनात्मक प्रवृत्तिया में पूरी रुचि लेकर ये जन हित के कार्यों में अपना पूरा समय दे रहे हैं।



समाज सुधारक
श्री विनयचन्द मेहता

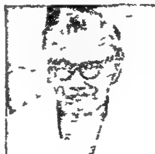


श्री विनयचन्दजी मेहता पाली जिले के उन गिने चुने पुराने कायकर्ताओ मे है जिन्होने जन सेवा में खोया ही खोया है पाया नहीं। महताजी का सार्वजनिक जीवन 1941 से शुरू हुआ जब उन्होने मारवाड लोक-परिषद् के नेता सर्वश्री रणछोडदासजी गट्टानी मथुरादासजी माथुर किशोरमलजी मेहता और नृसिहदासजी लूकड को एक बैलगाडी मे बैठकर अपने गाव तखतगढ की ओर जाते देखा। ये नेता लोग जालौर जिले में सन् 1940-41 मे आयी बाढ के कारण हुई भयकर तबाही को देखने तथा बाढ से प्रभावित लोगों को राहत पहुचाने जालौर के ग्रामो में जा रहे थे। युवक विनयचन्द मेहता ने इनको घर ले जाकर भोजन कराया और हो गये इनके साथ गावो में बाढ की तबाही देखने दिखाने के लिये। पावटा, सदेरिया सूगालिया, हरियाली उम्मेदपुर आदि कई गावो में हुई बर्बादी को देखकर ये सबसे अधिक प्रभावित हुए और लोक परिषद् के माध्यम से करीब 60-70 हजार की राहत सामग्री इन गावों के लोगो को पहुचायी।

फिर तो मेहताजी ने तखतगढ व आस पास के गावो मे लोक परिषद् की शाखाओ की स्थापना करके जन जागृति का काय शुरू कर दिया। उसी क्षेत्र के अन्य साथियो मे श्री बी एल राजगुरु गणेशजी चौधरी मनसुखभाई (सुमरपुर), देवशकरजी (दुजाणा), पुखराजजी छीपा (चाणोद), भीकमचन्दजी जैन (कोसेलाव) आदि के साथ गावो मे लोक परिषद् के सदस्य बनाना व मीटिंगें करना आदि काय प्रारभ हो गया।

सन् 1951-52 मे श्री जयनारायणजी व्यास ने आहोर (जिला जालौर) से चुनाव लडा था तब जागीरदारो का बडा आतक फैला हुआ था। यहा तक कि व्यासजी पर भी गोलिया चलायी गई थी और बाली तहसील के गाव बाकली व अन्य कई स्थानो पर डाकुओ द्वारा लूटपाट करवाई गई थी। सुमरपुर क्षेत्र में चुनाव लड रहे श्री मोहनराजजी (बाली) तथा पाली में लोकसभा चुनाव लड रहे श्री गोकुलभाई भट्ट पर माण्डेराव में प्राणघातक हमला भी सामन्ती तत्वो द्वारा किया गया था। इन सभी वारदातो के दरम्यान काग्रेस के एक सिपाही के नाते मेहताजी ने पूरी निष्ठा के साथ सहयोग दिया और वे व्यासजी के हर वक्त साथ रहे।

सन् 1956 में गठित तहसील पचायत बाली के चुनावो में मेहताजी सदस्य चुने गये और सन 1964 से 1972 तक तखतगढ न्याय पचायत के अध्यक्ष रहे। काग्रेस सगठन में तो आपने प्रारभ से ही अनेक पदो पर काय किया। अनुसूचित जनजाति (मेणा) को सगठित करने शराबबदी कराने, मृत्युभोज बद करवाने आदि समाज सुधार के महत्वपूर्ण काय भी आपके द्वारा किये गये। मेणा की हाजरी बन्द करवाने में भी मेहताजी ने सफलता प्राप्त की थी। हरिजन सेवक सघ के सदस्य के नाते भी आपने समाज-सुधारक के अनेक काय किये है।



सत्याग्रही एव पत्रकार
श्री मोहनकुमार पुनमिया



श्री मोहनकुमारजी का जन्म सादडी में 28 सितम्बर 1928 को श्री जुहारमलजी के घर हुआ। जब वे चौथी कक्षा के विद्यार्थी थे तभी खीचन (मारवाड) निवासी श्री अमरचन्दजी जैन से प्रेरणा पाकर खादी आन्दोलन की ओर आकर्षित हुए। उनके मन में महात्मा गाधी के प्रति श्रद्धा के भाव जागृत हुए। सन् 1942-43 में जब मारवाड शिक्षा विभाग के



डायरेक्टर श्री ए पी कोक्स सादडी स्कूल का निरीक्षण करने आये तब उन्होंने कुछ विद्यार्थियों सहित सफेद टोपी पहन कर स्कूल जाने का दुस्साहस किया था।

सादडी म मारवाड़ लोक परिषद् की शाखा स्थापित हो चुकी थी। यहा के कार्यकर्ता सर्वश्री अनोपचन्दजी पुनमिया धीरजमलजी बच्छावत फूलचन्दजी बाफना, केसरीमलजी तलेसरा, नगराजजी पुनमिया नन्दकिशोरजी बोहरा, अमृतलालजी सोनी वस्तीमलजी बच्छावत मोहनलालजी रातडिया दानमलजी पुनमिया चादमलजी पुनमिया जुगराजजी पुनमिया कपूरचन्दजी बाफना, पुखराजजी कोठारी सक्रिय थे। ये लोग सादडी व आसपास के गावो म जाकर राष्ट्रीय आन्दोलन के समर्थन म काय करते थे। मोहनकुमारजी इन्ही नेताओं से प्रेरणा लेकर विद्यार्थियों की टोली का नेतृत्व करते हुए काय करते थे।

मारवाड लोक परिषद् के आन्दोलन के सिलसिले म सत्याग्रहियो की भर्ती के जब फाम भरे गये थे श्री पुनमिया जी ने भी श्री मण्डलदासजी बोहरा श्री केसरीमलजी तलेसरा व श्री नगराजजी पुनमिया के साथ अपने खून से हस्ताक्षर करके दिये थे।

श्री पुनमिया आजादी के बाद रचनात्मक कार्यों—विशेषकर खादी व नैतिक शिक्षा के प्रचार प्रसार मे अधिक समय देते रहे हैं। सामाजिक सुधार एव हरिजनोद्धार म इनकी विशेष रुचि रही है। आप साहित्य लेखन म भी समय देते हैं और 'मुनिघोष' नामक साप्ताहिक पत्र का कई वर्षों से सम्पादन प्रकाशन कर रहे हैं।



लोक सेवी सगठक

श्री नगराज पुनमिया



श्री नगराजजी पुनमिया का जन्म सादडी म श्री सरदारमलजी के घर हुआ और इनकी शिक्षा भी वही हुई। सादडी गोडवाड क्षेत्र का मुख्य शहर होने से वहा सामाजिक चेतना व समाज सुधार की भावना शिक्षित युवक वग म जोर पकड रही थी। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये सादडी मे एक नवयुवक मण्डल की स्थापना की गई थी। अनेक युवक इस सस्था के सुधारवादी कायक्रम की ओर आकर्षित हुए और गोष्ठियो व सभाओं द्वारा प्रचार करने लगे।

यह समय सन् 1938-39 का था। देशभर मे तथा विशेष कर मारवाड म भी निरकुश राजाशाही व सामन्तशाही के विरुद्ध आन्दोलन तेजी पर था। मारवाड लोक-परिषद् ने अपना काय क्षेत्र जोधपुर शहर के बाहर दूर दराज के गावो तक फलाने एव लोक परिषद् की शाखाए खोलने का काय बडे पैमाने पर प्रारम्भ कर दिया था। सादडी के युवक वग ने मारवाड लोक परिषद के नेता श्री जयनारायण व्यास को निमन्त्रण दिया और व्यासजी रणछोड दासजी गट्टानी सुमनेशजी जोशी, रामप्रसादजी गाधी (पामी) आदि के साथ सादडी पधारे। लोक परिषद् की शाखा स्थापित कर लोक जागृति का काय प्रारम्भ हुआ। फूलचन्दजी बाफना के नेतृत्व म सादडी तथा आस-पास के ग्रामो म सभाए करके बेठ-बेगार व लाग-बाग के विरुद्ध किसानो व अन्य लोगो को आन्दोलन करने हेतु तयार करने का काय प्रारम्भ किया गया। नगराजजी ने मुण्डारा, घाणेराव, देसूरी, नाडोल, नाडलाई, खुडाला, चाणोद आदि कई ग्रामो मे सभाओ का आयोजन करने का काय किया। श्री बाफना के अलावा इनके प्रमुख सहयोगी सर्वश्री धीरजमलजी बच्छावत पुखराजजी कोठारी, केशरीमलजी तलेसरा मोहनराजजी रातडिया, हस्तीमलजी पुनमिया आदि इनके साथ थे। चाणोद ग्राम म रावले के बाहर हुई सभा पर भारी पथराव हुआ था, उस जुलूस व सभा मे भी पुनमियाजी मौजूद थे।

सन् 1941 मे ग्वालियर म सम्पन्न हुई आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेन्स मे पुनमियाजी ने लोक परिषद् के प्रतिनिधि की हैसियत से भाग लिया था। उस सम्मेलन के अध्यक्ष प जवाहरलाल नेहरू थे। सम्मेलन-स्थल पर बम विस्फोट का धमाका हुआ, जिसम भारी भगदड मच गई। नेहरूजी ने लोगो के बीच पहुचकर उनको शात किया।

सन् 1942 मे ग्वालियर के टेक मैदान म कांग्रेस-सम्मेलन म जब महात्मा गाधी ने अंग्रेजो भारत छोडो का नारा दिया तब पुनमियाजी अपने कई साथियो सहित वहा मौजूद थे। उन्होंने अंग्रेजो द्वारा सत्याग्रहियो पर किये गये जुल्मो को नजदीक से देखा है। पुनमियाजी व उनके साथी सत्याग्रहियो को गुप्त रूप म सहायता पहुचाने का काय करते थे।

पुनमियाजी ने उस समय से खादी व गाधी टोपी धारण की जब यह पहनाव विस्मय की दृष्टि से देखा जाता था और गावो म गाधी टोपी पहन कर लोगो को आने जाने नही देते थ। आजादी के पश्चात् पुनमियाजी अपने पतृक व्यवसाय म जो वार्शी (महाराष्ट्र) म चलता था व्यस्त हो गये और वहा रचनात्मक कार्यों मे रुचि लेने लगे। वार्शी के क्षेत्र म भी पुनमियाजी अपने सेवा कार्यों के कारण काफी लोकप्रिय हैं।

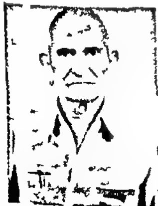


संघर्षशील पत्रकार
श्री डूंगरमल लोढा

□

गुदाज के श्री डूंगरमलजी लोढा पाली जिले के उन अग्रणी स्वतन्त्रता सेनानियों मे हैं जिन्होने लोक परिषद की स्थापना से ही यानी सन् 1939 मे सदस्यता ग्रहण कर आजादी के आन्दोलन मे भाग लेना शुरू किया था। ये उस जमाने मे अच्छे पढे लिखे युवको मे गिने जाते थे और कई अखबारो यथा—प्रजासेवक नवज्योति रियासती हिन्दुस्तान आदि मे समाचार व लेख आदि लिखते रहते थे। इन समाचारो व लेखो मे पाली जिले के जागीरदारो के जुल्मो व अन्यायपूर्ण शोषण का सजीव वर्णन होता था। इसलिये जागीरदार इनसे बडे नाराज रहते थे और हर प्रकार के निम्न कोटि के हथकण्डे अपनाकर इनकी प्रतिष्ठा गिराने की कोशिश करते थे। गुदाज ठाकुर ने इनके विरुद्ध पुलिस से साठगांठ कर कई मुकदमे बनाये और इनका चालान करा दिया। लेकिन उस समय जूडिशियल सुपरिटेंडेंट की अदालत जो पाली जिले के परगनो के हाकिमो के फैसलो की अपीलें सुनती थी सोजत मे थी और इनके मुकदमे तत्कालीन जज श्री सूरजकरणजी मनिहार के सामने गये तब ये निर्दोष साबित हुए और बरी कर दिये गये।

लोढाजी बहुत लम्बे अर्से तक सामन्ती जुल्मो के विरुद्ध संघर्ष करते रहे तथा अनेक कष्ट सहे। उन्होने व्यापार की ओर भी ध्यान दिया। ये गाव के सरपंच भी चुने गये और विकास के कई कार्य करवाये। पर आजादी के पश्चात् प्रशासन मे व्याप्त भ्रष्टाचार ने इन्हे अत्यधिक निराश कर दिया। भ्रष्टाचार के विरुद्ध ये अन्तिम समय तक संघर्ष करते रहे क्योकि इन्होने आजादी की लडाई मे समृद्ध भारत के जो सपने संजोये थे वे आजादी प्राप्ति के तुरन्त बाद ही भंग होने शुरू हो गये। महात्मा गाधी द्वारा प्रस्तावित राम राज्य की स्थापना का संकल्प मात्र स्वप्न बनकर ही रह गया। सन् 1986 मे इनका स्वर्गवास हो गया।



न टूटे न झुके
श्री मघाराम जांगिड

□

श्री मघाराम जी जांगिड का जन्म विक्रम सम्वत् 1979 मे वैशाख सुदी 2 को ग्राम गुन्दोज मे हुआ था। शुरू मे आपने प्राइवेट पाठशाला मे अध्ययन किया। आपने अपने पैतृक धन्धे (कारीगरी) मे अच्छे मिस्त्री के रूप मे कार्य प्रारम्भ किया। जब आप 15–16 वर्ष के थे तब आपके गाव का जागीरदार कारीगरो तथा अनुसूचित जाति-जनजाति के लोगो से बेगार कराता था। जागीरदारो का सभी काम इनको मुफ्त मे करना पडता था। नही करने वालो से वे जबरदस्ती डरा धमका कर बेगार लेते थे व रावले मे बुलाकर घोडो के पायगा मे बाध देते थे लकडी के बने खोडा मे पाव बाधकर धूप मे बैठा देते थे। ये सारी अमानवीय और असहनीय यातनाए दी जाती थी।

श्री मघारामजी का हृदय तब ऐसी प्रथाओ के खिलाफ विद्रोह से भर उठा और इन्होने प्रतिज्ञा कर ली कि मै स्वय बेगार नही निकालूगा और अन्य लोगो को भी इससे मुक्त कराऊगा। भला गाव का जागीरदार यह कैसे बर्दाश्त करता? उसने मघारामजी के परिवारजनो को सभी तरह की यातनाए देना शुरू किया। इनकी फसलो को तो बरबाद किया ही साथ ही इनके सुथारी के कार्य को भी बन्द करवा दिया। सारा परिवार भयंकर आर्थिक कठिनाइयो व अभावो से ग्रस्त हो गया पर इन्होने हिम्मत नही हारी और संघर्षशील बने रहे। इस संघर्ष मे इन्हे सक्रिय सहयोग मिला इन्ही के गाव गुन्दोज के श्री रामप्रताप जी शर्मा का जो आजादी की लडाई के एक निडर और निष्ठावान सिपाही थे। शर्मा जी का सम्पर्क जोधपुर के कांग्रेसी व लोक परिषद् के नेताओ से था।

सन 1936 मे जोधपुर स्टेट मे मारवाड लोक-परिषद् की स्थापना के बाद पाली परगना मे व्यासजी की प्रेरणा से लोक परिषद् को गठित किया गया जिसके सर्व श्री सुमेरराजजी डागा रामप्रसादजी गाधी, मूलचन्दजी भट्ट रामप्रतापजी शर्मा व मघा राम जांगिड सदस्य बने। जहा भी जागीरदारो के जुल्म होते वहा ये सदस्य जाकर सभाए करते और जनता का उत्साह बढाते थे।

सन् 1942 से 1947 तक मारवाड मे लोक-परिषद् की नाणा कुचामन आऊ आदि की सभाओ मे आपने भाग लिया। 1948 49 मे कांग्रेस संगठन कायम होने पर चाणोद पालना देवली सम्मेलनो मे भाग लिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जयपुर अधिवेशन मे भी आपने भाग लिया। बाद मे आपने 20 सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के क्रियान्वयन से जनता को आर्थिक लाभ पहुँचाया। आप सबसे पहले ग्राम पंचायत गुन्दोज मे वार्ड पंच बने जो करीब तीन चुनावो तक बनते रहे। सन् 1962 मे आप ग्राम पंचायत के उप-सरपंच चुने गये। वृद्धावस्था व रुग्णावस्था के बावजूद आज भी आप राष्ट्रीय एकता और संगठन हेतु निरन्तर युवको को प्रेरणा देते रहते हैं।





गरीबों के साथी
श्री चम्पालाल परिहार



श्री चम्पालाल जी परिहार का जन्म सन 1977 की श्रावण सुदी 1 को सवाड़ा ग्राम में हुआ। प्रारम्भिक पढ़ाई के बाद आप अपने पैतृक धन्धे सिलाई का काय करने लगे। बाली के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटमलजी सुराणा के काय व भाषणों से प्रभावित होकर सन् 42-43 में ही कांग्रेस द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ गये। सेवाड़ी व आस-पास के जागीरी गांवों गुडा, पादरला, मिरगेश्वर बीजापुर आदि की गरीब व शोषित जनता में चेतना भरने का काय करके इन्हें राहत दिलवाने का काय इन्होंने वर्षों तक किया। अभी भी आप जन सेवा के कार्यों में लगे हुए हैं।

आजादी से पूर्व जोधपुर दरबार द्वारा सवाड़ी ग्राम जोधपुर के सेठ मोहनलालजी साधी को जागीर में दिये जाने का इन्होंने व इनके साथी श्री लालचन्दजी सोनी ने श्री छोटमल जी सुराणा के नेतृत्व में आन्दोलन चलाकर विरोध किया। सोजत के मीठालालजी काका व जोधपुर के छगनलालजी चौपासनी वाला के साथ काय करते हुए इन्होंने जागीरी गांवों की जनता की बठ-बेगार बन्द करवायी। आप ग्रामीण मुख्यत आदिवासी गरीब जनता के हितार्थ हर काय में रुचि रखते हैं।



गीतकार चेता
श्री लालचन्द सोनी



श्री लालचन्दजी सोनी आजादी पूर्व के बाली तहसील के प्रमुख कायकर्ता हैं। इनका जन्म सन् 1978 के मिगसर सुद-1 को सवाड़ी में हुआ। बाली के श्री छोटमलजी सुराणा व सान्डी के श्री फूलचन्दजी बाफना की प्रेरणा से ये राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित हुए और अपने घर व कारोबार की परवाह किये बिना लोगों को गांधीजी का सन्देश सुनाकर उनमें जागृति पैदा करने का काय करते रहे। गांवों में, विशेषकर—पादरला, *मिरगेश्वर, पातावा, बीजापुर पीपला, गुडा, लुणावा, करणवा* आदि गांवों में सभा सम्मेलन आयोजित करके लाग बाग तथा बठ बेगार न देने हेतु लोगों को जागरूक करना इनका मुख्य काय था। इन कार्यों में इनके सहयोगी श्री चम्पालाल जी परिहार इन्हें पूरा सहयोग देते थे।

लालचन्दजी सोनी शुरू से ही धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति हैं। स्वयं भजन व कविता करते हैं और गाकर लोगों को मन्त्र मुग्ध कर देते हैं। इन्होंने कई राष्ट्रीय व सामाजिक सुधार—विशेषकर शराबबन्दी के समर्थन में तथा बुरे व्यसनों के विरोध में अनेक गीत बनाए हैं।

क्रान्तिशील सामन्त
श्री अमरसिंह



श्री अमरसिंहजी ने स्वयं जागीरदार-परिवार के होते हुए भी जागीरी जुल्मों के विरुद्ध लम्बे समय तक संघर्ष किया। यही उनके जीवन की प्रमुख विशेषता रही है। अमरसिंहजी मारवाड़ लोक परिषद् की पाली में स्थापना के साथ ही राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ गये और जीवन के अंतिम क्षणों यानी—सन् 1955 तक ये किसानों के हित में सामन्ती शोषण के विरुद्ध सक्रिय होकर संघर्ष करते रहे।

ये गूंदोज ठाकुर के चाचा थे और उन्हीं के साथ रावले में रहते थे पर इनके विचारों व कार्यशैली में उनसे भिन्नता थी। फलस्वरूप जब सन् 1940 में इन्होंने जब पाली परगना लोक परिषद् की सदस्यता ग्रहण की तो रावले में तथा सारे क्षेत्र में तहलका मच गया। पर ये निडर होकर अपनी बात पर अडे रहे। लोक-परिषद् की सदस्यता ग्रहण करते ही ये गूंदोज में ही सक्रिय कायकर्ता श्री रामप्रतापजी शर्मा व श्री मघारामजी जांगिड़ के साथ गांव गांव में सामन्ती जुल्मों के विरुद्ध ग्राम जनता को जागृत और संगठित करने में लग गये। गूंदोज ठाकुर भला यह कैसे बर्दाश्त कर सकते थे। उन्होंने षडयन्त्र रचकर सन् 1941 में अमरसिंहजी की मार में पिटाई करवाई। इनके सिर में गम्भीर चोटें आई और इन्हें जोधपुर अस्पताल में 3 4 माह तक चिकित्सा करानी पड़ी। उस समय मारवाड़ लोक-परिषद् के महामन्त्री श्री किशोरमलजी महता ने हर प्रकार की सहायता देकर इनका इलाज करवाया।



फिर, सन् 1942 के कांग्रेस द्वारा चलाये गये 'करो या मरो' आन्दोलन में इन्होंने जोधपुर लोक परिषद के तत्वावधान में सक्रिय रूप से कार्य किया। पुलिस ने घात लगाकर इन्हें गिरफ्तार कर लिया और करीब तीन माह तक जेल में रखा। जागीरदार गूदोज ने तो इन्हें पहले ही रावले से बाहर निकाल दिया था और इनके परिवार को भी गांव में रहने नहीं दिया, अतः दूसरे गांवों में जाकर इन्हें परिवार सहित रहना पड़ा। गूदोज में इनकी कृषि भूमि भी ठाकुर ने छीन ली और इन्हें दर दर भटकने को मजबूर कर दिया, लेकिन बावजूद इन सारे अत्याचारों के ये अपनी आन पर अड़े रहे और अंतिम सांस तक बेगार प्रथा, लाग-बाग व गरीबों के शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते रहे।

चेतना के कर्णधार

श्री चन्दूलाल एस० मरलेचा



श्री चन्दूलालजी का जन्म मारवाड़ जंक्शन के निकट खारची ग्राम में हुआ। इनके पिताजी का नाम श्री हिम्मतमलजी था। श्री हिम्मतमलजी स्वयं गांवों में चल रहे सामंती अत्याचारों से परिचित ही नहीं, भुक्तभोगी भी थे और किसानों में जागीरी प्रथा के विरुद्ध जागृति पैदा करने का कार्य करते थे। इसी कारण स्थानीय ठाकुर लोग हिम्मतमलजी से बहुत नाराज रहते और इन्हें कई बार अपना गांव छोड़कर जंगल में बेरों पर रहना पड़ता था। ऐसे घर में जन्मे और संस्कारों में पले थे श्री चन्दूलालजी। इनकी प्रारम्भिक पढ़ाई मानन्दीलाल पोद्दार हाईस्कूल, सांताक्रुज बम्बई में हुई। तभी द्वितीय विश्व-युद्ध छिड़ गया था। राष्ट्रीय आन्दोलन भी तेज गति पर था। उसी लहर में श्री चन्दूलालजी पढ़ाई छोड़कर मारवाड़ में अपने गांव आ गये और गांवों की जनता को सामन्तशाही से मुक्ति दिलाने के लिये मोर्चे खड़े करने में लग गये।

श्री गोविन्दरामजी मीणा (भारत सरकार के आयकर विभाग के कमिश्नर) तथा श्री अब्दुल रहमान इनके प्रमुख सहयोगी थे। इन सभी ने मिलकर मारवाड़ जंक्शन पर कांग्रेस की शाखा की स्थापना की थी। जागीरी गांवों में प्रजा को लाटा-कूंता, वठ-बेगार व लाग-बाग से बुरी तरह से लूटा जाता था। बेदखलियां भी मनमाने ढंग से होती थीं। पीढ़ियों से पुराने कब्जाशुदा खेत व घरे जबरन छुड़ाना और मनमाने रुपये वसूल करना आम बात हो गई थी। खरड़ा, भूपी व सीरणा-लाग वसूलकर काश्तकारों से अलावा भी सभी को परेशान किया जाता था। गांवों के किसानों व पशुपालकों के घरों में से दूध के घड़े भर भर कर रावले के घोड़ों को खिलाने के लिये कीटी खोआ बनाया जाता। घर के बच्चे दूध तो क्या, छाछ को भी तरसते। जागीरदारों के कारिन्दों को कोई मना करने की हिम्मत नहीं करता था। क्योंकि मना करने पर सीधा रावले के खोड़े में बिठा दिया जाता और मिर्चों की धूनी तक दी जाती।

उन दिनों जोधपुर से श्री अचलेश्वरप्रसादजी शर्मा 'मामा' 'प्रजासेवक' नामक अखबार निकालते थे। उसमें राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बंधित तथा जागीरी जुल्मों का वर्णन छपा करता था। ये उसका प्रचार प्रसार करते। खारची-सोजत क्षेत्र तक बगड़ी ठिकाणे ने वहां के प्रसिद्ध सेठ गणेशमलजी कांठेड़ को बड़ी यातनाएं दी थीं। उनके पुत्र स्वर्गीय मीठालालजी कांठेड़ को तो राष्ट्रीय आन्दोलन के सिलसिले में जेल हुई और जेल की असहनीय यातनाओं के फलस्वरूप उनकी युवावस्था में ही मृत्यु हो गई। उधर घणावल ठिकाने में भी भयंकर जुल्म व दमन हो रहे थे। इन सब घटनाओं के कारण लोगों में काफी चेतना जागृत हुई थी और स्थान-स्थान पर सभाओं का आयोजन होने लग गया था।

सन 1947 के 15 अगस्त के दिन आजादी की घोषणा के साथ ही मारवाड़ जंक्शन पर चन्दूलालजी व अन्य सहयोगियों ने मिलकर बहुत बड़ा जलसा आयोजित किया। लेकिन साथ ही पाकिस्तान के निर्माण के कारण आ रहे लाखों शरणार्थियों के खान-पान व रहने की सुविधा में उन्हें लगना पड़ा। राहत कार्यों के लिये धन जुटाने के लिये इन्होंने रानी स्टेशन पर 'बलिदान' नामक नाटक दिनांक 26-3-50 को खेलने की व्यवस्था की।

इन दिनों आप गरीबों व शोषितों को भ्रष्टाचार, शोषण आदि से मुक्ति दिलाने के रचनात्मक कार्यों में रुचि लेते हैं और सेवा कार्यों में जुटे रहते हैं।



लोकप्रिय जन सेवी

श्री द्वारकादास गुप्ता



खादी वस्त्रों में लिपटा दुबला-पतला शरीर लिये गुप्ताजी को रानी के बीच बाजार में स्थित प्रसिद्ध किराने की दुकान मैसर्स सवाराम द्वारकादास के यहां सुबह से शाम तक देखा जा सकता



श्री पुखराजजी परिहार के साथ जुड़कर ये एक ओर सामंती तत्वों के विरुद्ध संघर्ष में जुट गये और दूसरी ओर ग्राम के विकास में स्कूल, अस्पताल, कृषि-विकास, तालाब निर्माण आदि कार्यों को सम्पन्न करवाने में आगे आये। अनेक वर्षों तक सरपंच पद पर रहे। अपने पिछड़े ग्राम को अपनी कार्य कुशलता, सूझ बूझ, लगन, ईमानदारी और मधुर सेवा भावी स्वभाव के कारण विकासशील ग्रामों की प्रथम पंक्ति में ले आये।



चाणोद ग्राम में पानी के एकमात्र स्रोत गायाई तालाब के बारे में आजादी के तत्काल बाद ही एक बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ था। जागीरदारों ने उस तालाब को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति कहकर उसकी खुदाई तथा विकास का इन्कार की कोशिश की तो ग्राम में असंतोष की ज्वाला भभक उठी क्योंकि चाणोद का तालाब तो उनके जीवन का आधार था। उस वक्त राजस्थान बना ही था और प्रथम मंत्रिमण्डल में श्री फूलचन्दजी बाफना स्वायत्त शासन मंत्री थे। बाफनाजी स्वयं चाणोद आये और ग्रामवासियों की न्यायोचित मांग को स्वीकार किया। इस भारी सफलता के फलस्वरूप इस क्षेत्र में सामन्ती प्रभाव क्षीण हो गया। स्वर्गीय श्री मूलचन्द डागा (सांसद) का पूरा-पूरा सहयोग श्री मकूतमलजी को मिलता रहा। इससे न केवल चाणोद में वरन सारे पिछड़े क्षेत्र में विकास कार्यों को गति मिली।

मकूतमलजी बड़े ही सहृदय एवं धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। दयाभाव इनमें कूट-कूट कर भरा था। शोषित और दबे हुए पिछड़े वर्ग के लोग रात दिन अपनी समस्याएं लेकर इन्हें घेरे रहते थे और ये मृदु व सहज स्वभाव के कारण सभी को सहयोग देने के लिए तत्पर रहते थे। सर्वजनहिताय इनका जीवन समर्पित था इसीलिए मकूतमलजी ने अपने पैतृक व्यापार व धन्धे को नहीं सम्भाला। और न कभी अपने स्वास्थ्य की परवाह की। मात्र 50 वर्ष की आयु में ही ये स्वर्ग सिधार गये।

श्री अनोपचन्द पुनमिया

स्व. अनोपचन्द जी पुनमिया सादड़ी में जन्मे और वहीं इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई। सादड़ी में पोशाल-पाठशाला में प्राथमिक स्तर तक शिक्षा की ही व्यवस्था थी। पुनमियाजी कलम के धनी थे। इन्होंने स्वयं अभ्यास कर कानूनी विधाओं का अच्छा ज्ञान हासिल कर लिया था। इसलिए इनमें अन्याय के प्रति विद्रोह करने की भावना बलवती हुई। मारवाड़ लोक परिषद् की स्थापना के साथ वे ही थे। इस संस्था के सदस्य बन गये। वे सादड़ी लोक-परिषद् के वर्षों तक अध्यक्ष रहे और जन सेवा का काम करते रहे। अदालती काम से इनका जोधपुर आना जाना रहता और वहाँ इनका सम्पर्क सर्वश्री जयनारायणजी व्यास, मथुरादासजी माथुर, मथरलालजी सर्राफ और रणछोड़दासजी गट्टानी सरीखे नेताओं से बराबर बना रहता था।

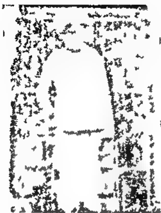
पुनमियाजी ने गोड़वाड़ क्षेत्र के ग्रामों में सभाओं का आयोजन कर जन-जागृति के आन्दोलनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली था। ये स्वभाव से बड़े ही निडर और स्वाभिमानी थे। इनके एक पुत्र श्री मोहनजी पुनमिया भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रसिद्ध नेता हैं। उन्होंने अपना कार्य-क्षेत्र जयपुर बना रखा है और मजदूर संगठनों से जुड़े हुये हैं। पुनमिया पाली जिले में लोक-परिषद् के संस्थापक-सदस्य माने जाते हैं।

श्री रामेश्वर पाराशर

श्री रामेश्वरजी पाराशर सोजत में जन्मे और इन्होंने सोजत को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया। आजादी से पूर्व इन्होंने लोक परिषद् के प्रमुख नेता श्री मीठालाल बाबा के सहयोगी कार्यकर्ता के रूप में कार्य प्रारम्भ किया तथा गांवों में जन जागृति हेतु आन्दोलनों का संचालन किया। रामेश्वरजी एक शांत प्रकृति के रचनात्मक कार्यों में रुचि लेने वाले कार्यकर्ता रहे हैं। आज की उखाड़ पछाड़ की राजनीति में उन्हें अरुचि है। ये वर्षों तक नगर मण्डल व ब्लाक कांग्रेस कमेटियों के अध्यक्ष रहे और संगठन को बलशाली बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वच्छ राजनीति में विश्वास करने वाले ... श्री रामेश्वरजी पाराशर इन दिनों कुछ निराश हैं। वृद्धावस्था और बीमारी के बावजूद भी बापू के सपनों का भारत बनाने की कोई योजना बनती है या बात होती है तो इनमें वही पुराना उमड़ पड़ता है।





श्री लखमाराम-खीमाजी चौधरी

□

श्री लखमारामजी चौधरी का जन्म नाडोल ग्राम मे हुआ। बचपन से नाडोल ग्राम में जागीरदार द्वारा किसानों को बेदखल करना उनसे बेठ-बेगार लेना आदि के किया करते थे। इस अन्याय एव शोषण के विरुद्ध प्रारम्भ से ही वे आवाज उठाते व विरोध करते थे जिसके कारण ठिकाणे द्वारा उन पर कई प्रकार के झूठे मुकद्दमे बनाकर परेशान किया जाता था। सन् 1942 में इन्हे नाडोल में एक माह तक नजरबन्द रखा गया। आज वृद्धावस्था होते हुए भी आप जनता की भलाई मे लगे हुए है। जहा भी शोषण एव अन्याय होता है आप अपनी आवाज उठाये बिना नही रहते।



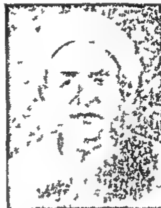
श्री चुन्नीलाल जाट

□

श्री चुन्नीलालजी जाट का जन्म ग्राम बागोल में श्री गोमारामजी जाट के घर पर हुआ। आपकी शिक्षा ग्राम बागोल में प्राईवेट स्कूल मे ही हुयी। बचपन से ही जागीरी जुल्मो एव अन्यायो का खुलकर विरोध किया। बागोल के पास ही डायलाना, देवड़ा का गुड़ा कालर काट लापी, अखीमाडा आदि जागीरी गाव थे वहाँ पर भी लाग-बाग, बेठ बेगार तथा जागीरी जुल्म होते थे। इन सबके विरोध हेतु मारवाड़ लोक-परिषद् की सभायें जहा भी होती आप सम्मिलित होते। बलदेवरामजी मिर्धा द्वारा सन् 1943 से चलायी गयी मारवाड़ किसान सभा के सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में आपने कार्य शुरू किया था।

आप जब भी जागीरी जुल्मो बेठ-बेगार लाग-बाग के खिलाफ आवाज उठाते तो स्टेट के हवलदार एव अन्य जागीरी गुर्गे आपके साथ धक्का मुक्की एव मारपीट करते। कई बार तो वे बन्दूक एव तलवार से मारने के प्रयास करते मगर भगवान ही इनकी रक्षा करता। इनकी खेती की जमीन जब्त कर ली गई थी।

आज भी जहा कही भी सामन्ती अत्याचार होते है तो उसका ये दृढता से विरोध करते है व समाज सेवा में अग्रणी रहते है।



श्री ओटाराम सिरवी

□

श्री ओटारामजी का जन्म 79 वर्ष पूर्व श्री गलाजी सिरवी के घर ग्राम बाली में हुआ था। आपने सं 1992 विक्रमी मे जब पुनाडिया में बेरा हरनाथवाला की खुदायी शुरू की तो जागीरी कारिन्दो ने उनको परेशान करना शुरू कर दिया। जागीरी कारिन्दा व हवलदार द्वारा गाव वालो से बेठ बेगार ली जा रही थी। उनके विरुद्ध आपने श्री छोटमलजी सुराणा बाली की सहायता से विरोध करना शुरू किया व स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़ गए। ओटारामजी बाजार मे होने वाली स्वतन्त्रता-आन्दोलन की सभाओ मे भाग लेते थे।

सन् 1949 में किसानो की एक विशाल सभा जो बाली (बेडर) में हुई थी में बाली के भामियो से ली जाने वाली गैर-कानूनी लाग बाग को बन्द करवाया। यह मीटिंग श्री मोहनराजजी ने आयोजित की थी। उसी वर्ष मोहनराजजी की अध्यक्षता में राइको से ली जाने वाली बकरा आदि की लाग बाग का विरोध कर उसे बन्द कराया गया था।

पुनाडिया के जागीरदार ने नाराज होकर इनके घर व खलिहान में आग लगवादी और इनके विरुद्ध कई मुकदमे किए। इनकी घास कई बार जलवायी मवेशी भी चोरी करवाये, पर श्री ओटारामजी ने संघर्ष नही छोड़ा। स्वतन्त्रता-सेनानी श्री छगनलाल चोपासनीवाल व गट्टानी जी जब बाली के किले मे कैद कर, (1944 मे) लाए गये तब ओटारामजी ने किले के बाहर हड़ताल एव धरना दिया था। आपने बलदेवरामजी मिर्धा को कई बार बाली बुलाकर किसानो की मीटिंग करवाई भवरलालजी सर्राफ क्रान्ति कार्यकर्ता बाली क्षेत्र के जागीरी जुल्मो के खिलाफ सभायें करते तो आप भी उनके साथ रहते थे।



ग्राजकल ग्राप घर पर ही ग्रपने गाव पुनाडिया म खेती का घ धा समालते हुए जनता की मलाई मे लगे हुए है ।

श्री बरकतग्रली ग्रन्सारी

□

श्री बरकतग्रली ग्रन्सारी वयोवृद्ध जनसेवक हैं । युवावस्था से ही ये राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-ग्रान्दोलन की गतिविधिया स जुड रहे हैं । इनका खानदान पूवजो के समय स ही राष्ट्रीय विचारो का रहा है । इन्होने स्वतन्त्रता ग्रान्दोलन म सक्रिय माग लिया । बम्बई प्रात म बने काग्रसी मत्री मण्डल क य मदस्य भी रहे । श्री ग्रन्सारी नगर परिषद पाली के वर्षो तक सदस्य रहे हैं ग्रौर ग्रभी भी हैं । इनकी लोकप्रियता ग्रौर जनसम्पक क कारण हिन्दू मुस्लिम एकता को भी बडा बल मिला है ।

श्री वासुदेव शास्त्री

□

एक ग्रोजस्वी ग्रौर निर्भीक व्यक्तित्व के धनी थे श्री वासुदेवजी शास्त्री । ये पाली जिले की एक ग्रत्यन्त ही लोकप्रिय हस्ती रहे हैं । जतारण म ये वकालात करते थे । जागीरी ग्रत्याचारो के विरुद्ध इन्होने ग्रनेक सघर्षो मे नेतृत्व प्रदान किया था । इनका जीवन इतना ग्रादर्शपूर्ण ग्रौर त्यागमय था कि हर ग्रादमी इनके सम्मुख ग्रपने दिल की बात कह देता था ग्रौर श्री शास्त्रीजी उसे हर प्रकार स सहयोग प्रदान करते थे ।

शास्त्रीजी पाली जिला काग्रस के ग्रध्यक्ष पद पर भी रहे । य जतारण पचायत समिति के प्रधान पद पर भी रह पर इन्ह सत्ता और पद का नाम तनिक भी नहीं था । ये तो राजनीति म शुद्धता ग्रौर मानवता क प्रबल हिमायती थे ग्रौर इन्ही जीवन मूल्यो की रक्षाथ ग्रन्तिम समय तक लडते रहे ।

श्री माधोसिह भार्गव एव श्रीमती रानीदेवी भार्गव

□

प्रमुख राजनीतिक कायकता श्री माधोसिहजी भागव एम ए एल एल बी ने जब पाली म ग्रपनी वकालत प्रारम्भ की तो उनके साथ ही इनकी पत्नी श्रीमती रानीदेवी भागव न भी पाली म ग्रपने पति के साथ ही सावजनिक जीवन म प्रवेश किया था । इनका परिवार प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय विचारो स ग्रोत प्रोत था । उन्होन पाली लोक परिषद क सक्रिय सदस्य बनकर गावो म जन जागति का ग्रभियान छेड दिया था । श्री सुमरराजजी डागा श्री रामप्रसादजी गाधी ग्रौर श्री रामप्रतापजी शर्मा के साथ श्री माधोसिहजी पाली परगना के गावो मे जाते ग्रौर जन-सभाए करते । वे सब लोक परिषद की शाखाए स्थापित करते थे । कई बार श्री भागव पर जागीरी तत्वो ने षडयन्त्र कर हमला करने की कोशिश की लकिन ये ग्रपनी लोकप्रियता ग्रौर सगठन शक्ति के कारण हर बार बाल-बाल बच गये । श्री भागव मारवाड लोक परिषद के प्रतिनिधि चुन गय । उन्होन जिला काग्रस म विभिन्न पदो पर रहकर निष्ठापूवक काय किया ।

श्रीमती रानीदेवी न पाली जिले म महिला काग्रस के सगठन को मजबूत करन म ग्रपनी पूरी शक्ति लगा दी । ग्राजादी के पश्चात् यही एकमात्र महिला कायकर्त्री थी जिन्होन गाव-गाव का दौरा करके पाली जिल की महिलाग्रो म जागृति पदा की ग्रौर सामाजिक सुधार की प्ररणा दी ।

एक जुझारु व्यक्तित्व श्री श्यामेश श्याम

□

श्री श्यामेशजी श्याम का जन्म सोजत म हुग्रा । स्वतन्त्रता ग्रान्दोलन व राष्ट्रपिता महात्मा गाधी तथा लोकनायक श्री जय नारायणजी व्यास क त्याग व बलिदान स प्रभावित होकर ग्राज तक शोषित व पीडित समुदाय की दद भरी ग्रावाजो को ग्रपनी सशक्त लेखनी स बुलन्द करन में लग हैं ।

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम



अभाव अभियोग मे पले श्री श्यामेशजी एक संघर्षशील स्वभाव के व्यक्ति है। गरीबो की समस्याओ को उजागर करने और समाज तथा प्रशासन मे व्याप्त भ्रष्टाचार को नग्न रूप मे प्रकट करने का इन्होने लगातार प्रयत्न और साहस किया है। इस काय मे इन्हे अनेक शारीरिक व आर्थिक कठिनाइयो का सामना भी करना पडा, पर इन्होने हिम्मत नही हारी और अपनी आन पर अडे रहे। कई बार तो इनको उच्च अधिकारियो व नेताओ का कोपभाजक भी बनना पडा, पर सभी तरह की यातनाओ को इन्होने हिम्मत से झेला पर झुके नही।

श्री श्यामेशजी ने वर्षों तक 'करवट' नामक पत्र का सम्पादन किया। इसके माध्यम से वे जन जागृति का बिगुल बजाते रहे। इनकी रचना की ये प्रसिद्ध पंक्तियां अनेक नौजवान आज भी गुनगुनाते रहते है— 'शहीदो का खून व्यर्थ नही जायेगा

वह किसी न किसी दिन रंग लायेगा ॥

श्री मोतीलाल सोनी

□

श्री मोतीलालजी सोनी खरवा के निवासी थे जो जागीरी जुल्मो के विरुद्ध आजादी के पूर्व-काल से ही संघर्ष मे अग्रणी रहे है। खरवा व पाली तहसील के अन्य छोटे छोटे गावो मे लाग बाग व बेठ बेगार को लेकर किसानो एव मजदूरो का जो भयंकर शोषण होता था उसके विरुद्ध इन्होने सर्वप्रथम आवाज उठाई और लोक परिषद् के झण्डे के नीचे लोगो को संगठित किया।

विकलागता तथा वृद्धावस्था के कारण चलने फिरने मे अशक्त होते हुए भी श्री सोनीजी अंतिम समय तक सक्रिय रूप से जन हितार्थ काय करते रहे। इनमे सदा ही युवको-सा उत्साह रहा।

श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित

□

श्री गुलाबसिंहजी राजपुरोहित ग्राम देवली आऊवा के रहने वाले हैं। इनका बंगलोर मे काफी अच्छा कारोबार था। ये जब कभी देवली आते तो यहाँ पर राजनतिक गतिविधियाँ तेज हो जाती और ये राष्ट्रीय आन्दोलन के विचारो मे वहाँ की जनता को अवगत कराते रहते थे। इन्होने सर्वप्रथम मारवाड के किसान-नेता श्री बलदेवरामजी मिर्धा को आमन्त्रित कर एक किसान-सम्मेलन का आयोजन किया था और तभी से यह गाव राजनतिक चेतना और आन्दोलन का केन्द्र बन गया। श्री गुलाबसिंहजी इस क्षेत्र मे अत्यन्त ही लोकप्रिय रहे और कई वर्षों तक सरपंच पद पर आसीन रहे।

श्री चम्पालाल राणावत

□

श्री चम्पालाल राणावत प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता स्वर्गीय श्री तेजराजजी राणावत के लघु भ्राता हैं। इन्होने अपना सार्वजनिक जीवन आजादी के पूर्व चलाये गये आन्दोलनो से शुरू किया था। ग्राम खुडाला मे जब जागीरी जुल्मो और भयंकर शोषण के विरुद्ध जन आन्दोलन भडका तो चम्पालालजी इस आन्दोलन मे उभरकर आगे आये। इन्होने गाव वालो को सबल व निर्भीक नेतृत्व प्रदान किया। फलस्वरूप, अन्ततोगत्वा जागीरदारो को गाव छोडकर बाहर रहने को ही मजबूर होना पडा।

जागीरी दमन के विरुद्ध खुडाला मे एक विशाल जुलूस का आयोजन किया गया था जिसमे जोधपुर, पाली, शिवगंज, सुमेरपुर, साण्डी, रानी, देवली, गुन्दोज व सोजत तक के कार्यकर्ता शामिल हुए थे। इस जुलूस पर सामन्ती गुण्डो ने भारी पथराव किया जिसके फलस्वरूप इनके भी चोटें आई। चम्पालालजी के प्रमुख साथी श्री गामारामजी छीपा अन्त समय तक पूरी निडरता और निष्ठा के साथ जनसेवा मे लगे रहे। इसी जुलूस की समाप्ति पर स्वतन्त्रता-सेनानी श्री फूलचन्दजी बाफना एवं श्री दुलीचन्दजी मानमलजी चौपडा की भी पुलिस चौकी फालना में पिटाई की गई थी।

श्री राणावत वर्षों तक खुडाला ग्राम पंचायत के सरपंच रहे हैं और इनके कार्यकाल मे अनेक विकास-कार्य सम्पन्न हुए हैं।

मूक सेनानी

श्री पन्नालाल व्यास

□

श्री पन्नालालजी व्यास पाली जिले मे आजादी के आन्दोलन के प्रथम चरण के सिपाही रहे हैं। छोटी ब्रह्मपुरी, पाली मे इनका निवास था। लोक परिषद् व कांग्रेस के कार्यक्रमो मे ये निडर होकर भाग लेते थे। श्री व्यासजी मृदुभाषी और शान्त प्रकृति के थे इस लिए उग्र कार्यवाहियो मे दूर रहकर लोगो की सेवा भाव व रचनात्मक प्रवृत्तियो के माध्यम से मातृभूमि की सेवा करने की प्रेरणा देते रहते थे। स्थानीय कार्यकर्तागण इनका बडा सम्मान करते थे और इनके मार्गदर्शन मे चलते थे।





श्री कासम भाई

स्वर्गीय कासमभाई बाली तहसील के लुणावा ग्राम के निवासी थे। ये गांधी विचारधारा के उपासक होने के साथ-साथ जीवन पर्यन्त कांग्रेस के सक्रिय सदस्य रहे। वर्षों तक स्थानीय कांग्रेस एवं जिला कांग्रेस के प्रतिनिधि चुने जाते रहे। इनका स्थानीय क्षेत्र की जनता में गहरा सम्पर्क बन गया था और वे इन्हीं से मार्ग दर्शन लेकर कार्य करते थे। ये शराबबन्दी के सशक्त समर्थक थे। एक बार ग्राम लुणावा में आयोजित आमसभा में तत्कालीन वित्त मंत्री श्री मथुरादास माथुर से इन्होंने ग्राम लुणावा से शराब का ठेका हटाने की मांग की तो श्री माथुर ने घोषणा की कि यदि श्री कासमभाई इस ग्राम में गांधी मूर्ति स्थापित कर लेंगे तो वे इस ग्राम में से शराब की दुकान बन्द कर देंगे। इस चेलेंज को स्वीकार कर कासमभाई ने तीन माह के अन्दर बस स्टेण्ड के पास एक पार्क में गांधीजी की मूर्ति स्थापित कर दी। इस प्रकार शराब का ठेका बन्द करवाने में सफलता प्राप्त की। इतना ही नहीं, कुछ वर्षों बाद शराब के ठेकेदारों की साजिश से कुछ समाज विरोधी तत्वों ने गांधीजी की मूर्ति को गायब कर दिया तो ये अनशन कर बैठ गये और गांव वालों ने नई मूर्ति स्थापित की। सारे क्षेत्र में कासमभाई का अच्छा एवं व्यापक प्रभाव था।



श्री सोहनराज पुनमिया



स्व० सोहनराजजी पुनमिया ग्राम दवली पाबूजी के प्रसिद्ध सेठ श्री मानमलजी के पुत्र थे और अपने छोटे भाई स्वतंत्रता-सेनानी श्री मोहनराजजी की प्रेरणा से इन्होंने सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया था।

ग्राम दवली पाबूजी का इतिहास प्रारम्भ से ही संघर्ष का रहा है। पूर्व ठाकुर जगतसिंहजी की जागीर जब्त होने के बाद यह गांव खालसा रहा और उस समय किसानों की भू-लगान वसूली लाटा जिन्स में न होकर नकदी में होने लगी। अनेक प्रकार की जागीरी लागतें भी समाप्त हो गई थी पर कुछ ही वर्षों बाद सन् 1945-46 में दवला ग्राम पुनः जागीर में दे दिया गया और जागीरदार ने पुनः लटाई करने और लाग-बाग वसूलने का हुक्म जारी कर दिया। इस प्रकार आन्दोलन की शुरुआत हो गई।

श्री सोहनराजजी उन दिनों गांव के चन्द पढ़े लिखे जागरूक युवकों में से थे। इन्होंने लोगों को संगठित रहकर जागीरदार का हुक्म न मानने तथा संघर्ष में किसानों का पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलवाया। इनके छोटे भाई श्री मोहनराजजी जो उन दिनों होल्कर कालेज इन्दौर में अध्ययन कर रहे थे, को किसानों के इस संघर्ष में सहयोग करने हेतु उन्होंने बुलाया। श्री जैन तत्काल ही पढ़ाई से छुट्टी लेकर किसानों के संघर्ष को मारवाड़ लोक परिषद् जिसकी शाखा रवली में पहले ही स्थापित हो चुकी थी के माध्यम से संगठित किया।

एक तरह से श्री सोहनराजजी व श्री मोहनराजजी ही इस आन्दोलन में नहीं कूदे वरन् उनका सारा परिवार ही जागीरदार के विरुद्ध छेड़ गये संघर्ष में मुखिया बन गया और तन मन धन से सहयोग करने लगे। इस सेठ परिवार की सारे क्षेत्र में बड़ी इज्जत थी अतः लोगों में एक नया विश्वास जाग्रत हुआ और गांव का हर व्यक्ति आन्दोलन में शरीक हो गया। जागीरदार का पूर्ण बहिष्कार घोषित हुआ। जागीरदार ने पुलिस एवं अधिकारियों की मदद से श्री सोहनराजजी व इनके परिवारजनों व ग्रामवासियों पर अनेक मनगढ़न्त झूठे, फौजदारी मुकदमे चलाये पर श्री सोहनराज की सूझ बूझ के कारण ग्राम का संगठन कायम रहा और हर मामले में ग्रामवासियों को विजय हासिल हुई।

श्री सोहनराजजी गांव पंचायत दवली पाबूजी के वर्षों तक सरपंच रहे और मुख्यतः शिक्षा के विकास में उनका सराहनीय योगदान रहा। उन्होंने व उनके परिवारजनों ने जन हितार्थ अस्पताल भवन बनाने का कार्य प्रारम्भ किया ही था कि उनका स्वर्गवास हो गया। वे बड़े कुशाग्रबुद्धि और हाजिर जवाब थे। निर्भीकता और साहस तो उनके पारिवारिक गुण हैं इसलिए वे सारे क्षेत्र में लोकप्रिय तो थे ही दूर-दराज से इनकी सलाह प्राप्त करने भी लोग आते रहते थे।



श्री निहालचन्द परमार



श्री निहालचन्दजी परमार गांव दवली-पाबूजी के निवासी हैं और इन दिनों अस्वस्थ होने के कारण बंगलोर में अपने पुत्रों के पास रहते हैं।



श्री निहालचन्दजी का राजनीति मे प्रवेश सन् 1942 के 'अंग्रेजो, भारत छोडो' आन्दोलन के पूर्व ही हो चुका था। सन 1941–42 मे ही ग्राम देवली-पाबूजी मे श्री मोहनराजजी जन (पूर्व विधायक बाली) के आमन्त्रण पर श्री जयनारायणजी व्यास ने लोक-परिषद् की एक शाखा स्थापित की थी, और श्री निहालचन्दजी मारवाड लोक परिषद् के प्रतिनिधि चुने गये थे।

श्री निहालचन्दजी का उन दिनो मोमेसर स्टेशन पर बडा व्यापार था। अत आस पास के गावो मे छोटे व्यापारियो व किसानो से उनका अच्छा सम्पर्क था इसी सम्पर्क के कारण इस क्षेत्र के अनेक युवक कार्यकर्ता लोक परिषद और कांग्रेस के स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड गये। देवली मे इनके प्रमुख साथी थे—सर्वश्री साहनराजजी पुनमिया रामेश्वरजी मास्टर विद्याधरजी श्रीमाली, पुरुषोत्तमजी श्रीमाली चपालाल जी माली चुन्नीलालजी वष्णव, बुद्धारामजी चौधरी अमरसिहजी, गुलारामजी चौधरी आदि। इनके अलावा खारडा के श्री हीरालालजी व लादूरामजी घाची सावलता के श्री जयशकर श्रीमाल भी इनके प्रमुख सहयोगी थे।

देवली के गोचरभूमि आन्दोलन मे श्री निहालचन्दजी परमार ने तत्कालीन ठाकुर से कडा सघर्ष किया और वर्षो तक गावो को सगठित रखकर गोचर कायम कराई। श्री मोहनराजजी इनके परममित्र और सहपाठी रहे है। इन्ही की प्रेरणा से निहालचन्दजी का राजनीति मे प्रवेश हुआ और मोहनराजजी द्वारा चलाये गये हर आन्दोलन मे इनका पूरा-पूरा साथ रहा। निहालचन्दजी वर्षो तक देवली ग्राम पचायत के सरपच रहे और इनके कार्यकाल मे अनेक विकास-कार्य हुए।

श्री हीरसिंह राजपुरोहित



श्री हीरसिहजी राजपुरोहित सोजत के निकट रूपावास ग्राम के निवासी हैं और विद्यार्थी जीवन से ही प्रगतिशील विचारो के जागरूक कार्यकर्ता रहे हैं। गावो मे व्याप्त गरीबी भुखमरी, शोषण जनित दरिद्रता ने इनके जीवन के प्रारम्भिक काल मे ही विद्रोह की भावना भर दी थी। मार्क्सवादी साहित्य पढकर ये साम्यवादी आन्दोलनो की ओर झुक गये। इन्होने अपना कार्य क्षेत्र सोजत एव आस पास के स्थान—चण्डावल बगडी सोजतरोड बनाया और जन जागृति पैदा कर लोगो का सगठन किया।

आजादी के पूर्व उस जमाने मे इस क्षेत्र मे लोक-परिषद् के कार्यकर्ता काफी सक्रिय थे और गाव गाव मे आन्दोलन कर रहे थे। श्री हीरसिहजी व इनके अन्य कामरेड साथी जागीरी जुल्मो एव शोषण के विरुद्ध लडे जा रहे इन आन्दोलनो के सक्रिय भागीदार



ही बने न कि विरोधी। फलस्वरूप जागीरी प्रथा के खिलाफ सगठित मोर्चा बना और बडे से बडे ठाकुरो को भी इस जन शक्ति के सामने घुटने टेकने पडे।

आजादी के पश्चात विकास व नव निर्माण के युग मे हीरसिहजी राजपुरोहित कांग्रेस सगठन से जुड गये और अपनी प्रगतिशील विचारधारा के आधार पर कार्य करने लगे। ये जिला कांग्रेस पाली के अध्यक्ष रहे और अब भी जनसेवा मे लगे हुए है।

श्री नन्दकिशोर अग्रवाल



श्री नन्दकिशोरजी अग्रवाल बाली तहसील के ग्राम चामुण्डरी के निवासी हैं और आजादी पूर्व के कर्मठ स्वतन्त्रता सेनानी रहे है। सिरोही जिले की सीमा पर इनका गाव होने मे इन्हे तो चामुण्डरी नाणा क्षेत्र के जागीरदारो ने और पूर्व सिरोही राज्य के ठाकुरो ने भी अनेक यन्त्रणाए दी और कई कई दिनो तक जेल मे बन्द रखा पर नन्दकिशोरजी अपनी आन पर अडिग रहे। जागीरदारो के शोषण व अत्याचारो से ग्रामीणो को मुक्ति दिलाने के सघर्ष मे डटे रहे। श्री अग्रवाल ने बताया कि आजादी मिलने के बाद तो जागीरी शोषण बेहद बढ गया था क्योकि जागीरदारो को यह आभास हो गया था कि जब अंग्रेजो को ही जाना पडा तो अब राजा और ठाकुर नही रह सकेंगे। इसलिए स्थानीय जागीरदार ने गावाई गुजारे के सुरक्षित जगलो को ठेकेदारो को बेच दिया और



सैकड़ों वर्षों से ग्रामवासियों के पशु धन के लिए गुजारा साधन बन में जनगण्ड ठेकेदारों द्वारा काटकर जलाये जाने लगे तो लोगों में भयंकर असंताप व्याप्त हो गया। उस वक्त श्री गोकुलभाई के निर्देश पर श्री मोहनराज जैन ने इन ठिकेदारों व जागीरदारों के विरुद्ध एक जबरदस्त संघर्ष छेड़ा।

आपने अनेक ग्रामों के किसानों व मजदूरों को संगठित किया। आपने बताया कि एक हाथ में लाठी और दूसरे हाथ में लालटेन लेकर रात रात भर झोंपड़ों के चक्कर लगाते और लकड़ी काटने की मजदूरी पर न जाने की प्रतिज्ञाएं लोगों से कराते थे। इस काम में नन्दकिशोरजी के प्रमुख साथी थे मस्तूलसिंहजी व माखनलालजी शर्मा।

नन्दकिशोरजी का जीवन एक त्यागी तपस्वी का जीवन रहा है। आज भी मेहनत मजदूरी करके जीवन यापन करने का व्रत इन्होंने धारण कर रखा है।

त्याग और सेवा की मूर्ति
श्री छोगालाल गादिया

□

श्री छोगालालजी गादिया पाली के सार्वजनिक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। आजादी के पूर्व से ही इनका सम्बन्ध लोक परिषद् एवं कांग्रेस से रहा है। आप श्री मूलचन्दजी डागा के अनन्य साथी रहे हैं। इनका जीवन त्याग की एक अनूठी कहानी है। आजादी पूर्व ही नहीं आजादी के पश्चात् भी इन्होंने धन और सम्पत्ति की दृष्टि से खोया ही खोया है। जनसेवा और संगठन में ही अपनी पूरी शक्ति और समय देने वाले श्री गादिया का फला फूला व्यापार तो अवश्य चौपट हो गया पर उन्हें इस पर जरा भी क्षोभ नहीं है। वे कहते हैं कि सेवा का रास्ता तो त्याग ही है। इसलिए उन्होंने अपनी लाखों की सम्पत्ति की परवाह न करते हुए स्वेच्छा से ही यह रास्ता चुना है।

श्री गादिया जी वर्षों तक पाली जिला कांग्रेस में पदाधिकारी रहे और नगर व ब्लाक कांग्रेस के वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं। वे गांधीवादी विचारधारा के पोषक होने के कारण रचनात्मक कार्यक्रम में अधिक रुचि रखते हैं। इन दिनों ऐसे ही कार्यों में अपना समय देते हैं।



श्री चुन्नीलाल मेहता

□

श्री मेहता का जन्म सोजत में 31 जुलाई, 1926 को हुआ था। 18 वर्ष की आयु में आप सन 1942 के अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेते हुए महमदाबाद में गिरफ्तार हुए। हालांकि इनका कार्यक्षेत्र मुख्य तौर से बम्बई ही रहा है, जहां पर इन्होंने सक्रिय राजनीति में भाग लेते हुए और सामाजिक क्षेत्र में अपनी सेवायें देते हुए व्यापार एवं उद्योग के क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त की।

कई वर्षों से श्री मेहताजी हिन्दुस्तान चेम्बर आफ कामर्स, भारत मर्चेन्टस चेम्बर, पावरलूम क्लाथ वस्त्र संघ, महाराष्ट्र पावरलूम मर्चेन्टस एसोसियेशन आदि अनेक व्यापार एवं उद्योग से सम्बन्धित संस्थाओं के पदाधिकारी रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में इनका सम्बन्ध बम्बई स्थित मारवाड़ी कामर्शियल हाई स्कूल, मोहनलाल सागरमल हास्टल अन्धेरी, शिवाजी शिक्षण प्रसारक मण्डल, श्री जवाहर विद्यापीठ कानोड़, श्री जैन विद्या प्रचारक मण्डल पूना, अम्लनेर विद्या प्रसारक मण्डल खाण्डा (महाराष्ट्र), राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर, हरिभाई देवकरण पाठशाला सोलहपुर, मारवाड़ी विद्यालय हाईस्कूल बम्बई, बाम्बे प्रदेश आय विद्यासभा से रहा है। इनके संचालन में न केवल इनकी प्रमुख भूमिका रही है बल्कि इन्होंने इन संस्थाओं के विकास में आर्थिक सहयोग भी दिया है।

आप जनता की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए गठित 'रोज फाउण्डेशन' नामक संस्था के लिए चेयरमैन चुने गये। इनकी रुचि धार्मिक कार्यों में बराबर रही है। श्री मारवाड़ी जैन संघ, श्री अखिल भारतवर्षीय साधु मार्गीय जैन ओसवाल समाज-बम्बई और प्रवासी जैन समाज कमेटी के अध्यक्ष हैं।

आजादी के पश्चात भी आप राजनीति में सक्रिय भाग लेते रहे हैं। बम्बई स्थित जिला कांग्रेस कमेटियों के प्रेसीडेन्ट के रूप में कार्य करके इन्होंने बम्बई स्थित व्यापारी-समाज में कांग्रेस को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आप पाली जिले की विकास की गतिविधियों में भी बराबर भाग लेते रहे हैं। सोजत स्थित हरिजन सुधारक समिति नामक



सस्था को समय-समय पर अपनी बहुमूल्य सेवायें देत रहे है। साजत म अपनी माताजी के नाम पर गुलाबबाई मेहता हाई स्कूल' सस्था द्वारा शिक्षा के क्षेत्र म भी अपनी अमूल्य सेवायें दे रहे है।

श्री पदमसिंहजी



स्वर्गीय श्री पदमसिहजी खारची क्षेत्र के गुडा दुर्गसिह के निवासी थ। व फौजी कायकर्ता थे और राष्ट्रीय विचारो और गाधी विचारधारा के कट्टर समथक थे। गावो म ठाकुरा सामन्तो की मनमानी और किसाना मजदूरा पर बैठ बेगार और लाग-बाग वसूली के लिए जो अत्याचार और ज्यादतिया होती थी उनमे वे बहुत दु खी थे। इसीलिए वे जागीरी समाप्ति आन्दोलन के अगुवा बन। उन्होने गावो मे लोगा को सगठित किया और उनका साथ देकर उन्ह निर्भयतापूवक अपने अधिकारा पर डटे रहने को तयार किया।

श्री पदमसिंहजी जिला काग्रेस कमटी पाली के सक्रिय काय कर्ता व पदाधिकारी रहे। जीवन के आखिरी दिना म व प्रशासन म व्याप्त भ्रष्टाचार और पक्षपात स बडे ही व्यथित थे। वे कायकर्ताओ का मीटिंगा म सभी स बेधडक कहते थे कि ऐसी आजादी व ऐसे स्वराज के लिए शहीदा ने अपना बलिदान नही दिया था।

श्री अमृतराज मेहता



श्री अमृतराजजी मेहता, निवासी मुडारा अपने क्षेत्र म लोक परिषद् क सस्थापको म से रहे हैं और अपने सामत विरोधी प्रदशन क कारण इन्ह बडी यातनाए झेलनी पडी है। स्थानीय जागीरदार व उनक कारि दा की मार ता सहनी ही पडी पर साथ ही जागीरदारा म मिलीभगत रखन वाली पुलिस ने भी इन्हे बेरहमी से पीटा।

इन सारी यातनाओ के बावजूद भी श्री मेहता निडर होकर लोक परिषद् के माध्यम स सगठन का काय करते रहे और लाग-बाग व बैठ-बेगार बन्द करवाने मे सफल हुए।

श्री अमृतराजजी मेहता ने गाँव गाव घूमकर लोक परिषद् की शाखाए स्थापित की और श्री फूलचन्दजी बाफना के सहयोग से इस क्षेत्र म किसानो का सगठन मजबूत किया।

आज भी य ही काय इनके छोट भाई श्री करणराजजी मेहता कर रहे हैं। श्री करणराजजी की सगठन शक्ति के कारण इस क्षेत्र क सारे गावो मे सामती शोषण म भारी कमी आई है।

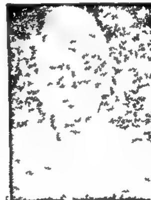
श्री मोटाराम चौधरी



श्री मोटारामजी चौधरा ग्राम मुडारा क निवासी थ और गोडवाड क्षेत्र की पचायत चौधरीयान के मुखिया थ। श्री मोटा रामजी ने चौधरी बलदेवरामजी के नेतत्व म काय प्रारम्भ किया था और सब प्रथम खुडाला फालना पर आयोजित वहद किसान सम्मलन की अध्यक्षता की था।

श्री मोटारामजी न सिरवी समाज को सगठित हाकर जागीरी शोषण से मुक्त होन का आह्वान किया और इस दिशा म ग्राम ग्राम घूम कर काय प्रारम्भ कर दिया।

श्री मोटारामजी के स्वगवास के बाद उनके लडके श्री इन्दरा रामजी चौधरी ने इस समाज का नेतृत्व सम्भाल लिया और उ होन सगठन का काय शुरु किया। इस प्रभावशाला परिवार क कारण किसाना म जागृति पदा हुई और सामत विरोधी आन्दोलन को बल दिया।



सोजत के मूक सेवक
श्री केवलचन्द पगारिया



श्री केवलचन्दजी पगारिया विद्यार्थी जीवन स ही राष्ट्रीय आन्दालन स जुड गय। लाक नायक श्री जयनारायणजी व्यास के सम्पक मे आने के बाद श्री पगारिया न सोजत क्षेत्र म अपनी गति विधिया तेज कर दी और स्वर्गीय श्री मीठालालजी काका माहन लालजी भट्ट जबरचन्दजी मेहता आदि के साथ राष्ट्रीय चतना का काय करत रह। लोक परिषद् और काग्रेस क हर आन्दोलन म इन्हाने सक्रिय सहयोग दिया।

पर इनकी रुचि प्रारम्भ स ही रचनात्मक कार्यों की ओर अधिक थी और आजादी मिलन के बाद श्री पगारियाजी ने रचना त्मक सस्थाओ स अपन सम्बन्ध स्थापित कर जन सवा क कार्यों म अपने आपको लगा दिया।

आज भी गो शाला के काय के साथ-साथ गरीब व पिछडी जाति के लोगा के कल्याणाथ कार्यों म लग रहत हैं।



पंडित पूरणमल शर्मा

□

मास्टर पूरणमलजी शर्मा स्वयं नेता नही थे लेकिन एक राष्ट्रीय विचारो के महान् साधक और पोषक होने के नाते अपने अध्यापकीय जीवन काल में इन्होने कई नेता तयार किये और उनमें राष्ट्रीय भावनाओं को सुदृढ किया। इस वृद्धावस्था में भी इन्होने जिस जोश और भावना के साथ चण्डावल ग्राम मे हुयी जनजागृति की कहानी का वर्णन किया और वहा के कार्यकर्ताओ—सर्वश्री मागीलालजी आलीशान छगारामजी चौहान, दयालसिंहजी गहलोत, देदारामजी जाट, नथमलजी मूथा रामसुखजी मुख्तीयार महमदजी, आदि के निडरतापूर्वक झेल गये जागीरी जुल्मो का सजीव वर्णन प्रस्तुत किया—वह अन्यत्र इस ग्रथ मे विस्तार से आ गया है।

मास्टरजी की, मूक-साधक की सेवाए पाली के इतिहास में सदा याद की जाती रहगी।

श्री जसराज घाची

□

पाली जिले में काग्रेस सगठन के आरम्भिक समय श्री जसराजी घाची का काग्रेस को सक्रिय सहयोग रहा। श्री जसराजजी केवल आन्दोलनो मे ही भाग नही लेते थे बल्कि अपने धंध में भी सावधान रहे और जन सेवा के साथ-साथ पाली में अपना व्यवसाय भी सुचारु रूप से जमाते रहे जिससे वे समय-समय पर काग्रेस की आर्थिक सहायता भी कर सकते थे। उस वक्त काग्रेस को आर्थिक सहायता की अत्यधिक आवश्यकता थी क्योंकि काग्रेस की वित्तीय आय का कोई स्रोत नही था और आन्दोलनो के कारण धन की सदैव कमी रहती थी।

श्री जसराजजी ने जिला स्तर पर और ब्लाक स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण पदो पर रह कर काग्रेस की सेवा की। श्री जसराजजी के सुपुत्र श्री भीमराजजी भी काग्रेस के योग्य जन नेताओ में से हैं और जिला काग्रेस के महत्वपूर्ण पदो पर कार्यरत हैं।

श्री चिमनीराम कुमावत

□

अपने स्वाभिमानी स्वभाव के कारण स्वतन्त्रता आन्दोलन के पूर्व वर्षों में ही चिमनीरामजी कुमावत को स्थानीय जागीरदार के जुल्मो से परेशान होकर अपना गाव छोड कर पाली आकर बसना पडा। पाली आते ही इन्होने स्वतन्त्रता आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेना आरम्भ कर दिया और गुजारे के लिए अपनी एक कपडे की दुकान खोली। पाली जिला काग्रेस के ये वर्षों तक जिला एव ब्लाक स्तर के प्रभावशाली पदो पर रहे और आरम्भिक अवस्था में जिला काग्रेस कमेटी के कार्य को सुचारु रूप से जमाया। समय-समय पर, आवश्यकता पडने पर श्री कुमावत काग्रेस कमेटी को आर्थिक सहयोग भी देते रहते थे और पाली तथा बाहर भी जन आन्दोलनो में सक्रिय रहते थे।

इस प्रकार श्री चिमनीरामजी कुमावत को तन, मन और धन से आजादी के सग्राम में सक्रिय भाग लेने और पाली जिले में काग्रेस को जमाकर शक्तिशाली बनाने का श्रेय प्राप्त है। इनके सम्पर्क से ही विशेष कर जिले का किसान समाज काग्रेस के कार्यक्रमो में रुचि लेने लगा था।

श्री चिमनाराम माली

□

श्री चिमनारामजी माली का जन्म पाली जिले की बाली तहसील के फालना गाव में हुआ था। इनको शिक्षा की सुविधा उपलब्ध नही थी फिर भी स्वयं के प्रयास से ही उन्होने साक्षरता हासिल की।

फालना गाव एक जागीर का गाव होने से श्री चिमनारामजी को अपने जीवन में लगातार संघर्ष करना पडा। आरम्भ से ही ये काग्रेस के सदस्य रहे और जागीरी जुल्मो के विरुद्ध आन्दोलनो में सक्रिय भाग लेते रहे। फालना गाव के जागीरदार द्वारा आप पर बहुत अत्याचार किये गये। कई बार मारपीट की गई। झूठे मामलो में उलझाया गया और सारे गाव को आतंकित कर आपसे व्यवहार नही करने पर बाध्य किया गया पर आप अपनी धुन के पक्के रहे एव आपने संघर्ष नही छोडा। भारी विरोध के बावजूद बेगार लाग-बाग और जागीरी जुल्मो के विरुद्ध सतत जूझते रहे।

जब भी मौका मिलता और गाव में किसी गरीब किसान पर जागीरी अत्याचार होता श्री चिमनारामजी तो उसके पक्षधर बन कर आन्दोलन खडा करते और जुल्म की शिकायतो मुकदमो व आन्दोलनों के सहारे अत्याचार को दबाते। फलस्वरूप जागीरदार के जुल्म चल नही पाते थे और इनके ऊपर जुल्म बढते जाते थे। एक बार तो झूठा अफीम का केस भ्रष्ट कर्मचारियो की मिली भगत से इनक



खिलाफ बना दिया गया और इन्हे बहुत परेशान किया गया परन्तु पाली पालना व वे कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की मदद से ये बच गये।

इसी प्रकार एक बार जागीरी गुण्डों ने रात के वक्त इन पर हमला करके इनको बहुत मारा व इनके हाथ पाँव तोड डाले। गाव में जागीरी आतंक से कोई इन्हे अस्पताल लाने को भी तैयार नही हुआ तब पडौसी गाव खीमेल से कांग्रेसी कार्यकर्ता श्री अमरराजजी महता इन्हे रात के वक्त मोटर में डाल कर पाली लाये। उस वक्त ये मरणासन्न अवस्था में थे घोर सख्त घायल थे। श्री मोहनराजजी जैन ने रात को इन्हें हास्पिटल पहुँचाकर इनकी जान बचाई।

श्री चिमनारामजी कमठ कांग्रेसी कार्यकर्ता और स्वतन्त्रता सेनानी होने के साथ साथ निर्भीक और सच्चे वक्ता और पाली समाज के महत्वपूर्ण पंचो में से है। क्षेत्र में आप बहुत लोकप्रिय हैं। अपनी निष्ठा और सत्यता के लिए सभी पार्टियों के कार्यकर्ता आपका आदर करते है।

श्री नगाराम चौधरी



श्री नगाराम पाली जिले के खारची तहसील के लाबिया ग्राम के निवासी हैं। आजादी के बाद लाग बाग बंठ बेगार और जागीरी जुल्मो के विरुद्ध कांग्रेसी जन आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने आप खारची आये और वही अर्जीनवीस का कार्य करने और रहने लगे।

इनकी सेवाओ से जागीरी जुल्मो से त्रस्त जनता को बहुत सहायता मिली। इसी क्रम में ये श्री नाथूरामजी मिर्धा के सम्पर्क मे आये और किसानो की सेवा व सुधार को इन्होंने अपना ध्येय बना लिया।

खारची क्षेत्र एक किसान बहुल क्षेत्र होने के बावजूद भी जागीरदारी शक्ति का गढ समझा जाता था जिसको कमजोर कर किसानो को राजनैतिक शक्ति प्रदान करने का श्रेय श्री नगाराम चौधरी का ही है। श्री नगाराम सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए भी प्रसिद्ध हैं और अन्यायी चाहे कांग्रेसी हो या अन्य ये फौरन उसके खिलाफ सक्रिय हो जाते हैं। श्री नगाराम खारची ब्लाक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे और इसी क्षेत्र मे कई अन्य महत्वपूर्ण पदो पर रहकर इन्होने समाज की सेवा की और अब भी वे सेवारत हैं।

श्री नाथूलाल शर्मा



श्री नाथूलालजी शर्मा स्वभाव से ही समाज प्रेमी हैं। भारत पाकिस्तान बटवारे के वक्त इन्होंने मारवाड जंक्शन पर पाकिस्तान जाने वाले और वहा से आने वाले यात्रियों की खूब सेवा की इसी से वे जनता में प्रिय हो गये। श्री शर्मा को भी मारवाड जंक्शन पर बने रह कर जनसेवा करने के लिए अर्जीनवीस का पेशा ही अपनाना पडा जिससे वे गरीबो को न्याय दिलाने में समर्थ होते रहे।

भ्रष्ट नौकरशाही और सामन्ती अत्याचार के विरुद्ध प्रभावशाली ढंग से जूझने के कारण श्री शर्मा जनता में विशेष लोकप्रिय हुए। क्षेत्र की जनता को इनका विशेष योगदान था आउवा में स्वतन्त्रता संग्राम का विजय स्तम्भ बनवाना और प्रति वर्ष आऊवा के स्वतन्त्रता आन्दोलन की स्मृति में मेला प्रारम्भ कर जन जागरण के दीप को सदा के लिए संजोकर उसकी स्मृति को चिर स्थाई बनाना। जनसेवा में इनका उत्साह आज भी वैसा ही बना हुआ है।



श्री मोतीलाल एच० राका



श्री मोतीलालजी राका पाली जिले के बगडी ग्राम के निवासी हैं और कोयम्बटोर में व्यापार करते हैं। लोक-परिषद के समय में ही श्री राका जन आन्दोलन से जुड़ गए हैं। स्वतन्त्रता आन्दोलन में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया था। बगडी को स्वतन्त्रता आन्दोलन का केन्द्र बनाने का श्रेय विशेष रूप से श्री मोतीलालजी का ही है। इनके सहयोग और मार्गदर्शन में बगडी ने पाली जिले के अग्रणी कांग्रेसी कार्यकर्ता दिये हैं। स्वतन्त्रता संग्राम में बगडी का आन्दोलन जिले के आन्दोलनों का मुख्य आकर्षण-स्थल बना रहा जहाँ स्वयं श्री जयनारायणजी व्यास और मीठालालजी त्रिवेदी आदि नेताओं ने 1934 में आकर जागीरी जुल्मो के विरुद्ध सभाएं की और लोक-परिषद् की शाखा की स्थापना की।



श्री मोतीलालजी न क्रांतिकारी कार्यों का उल्लेख उन दिनो के रियासत के आई जी पी और तत्कालीन चीफ मिनिस्टर 'फिल्ड ने भी अपने पत्रा म किया है। उनके कारण वगडी के जागीरदार के जागीरी अधिकार छीन कर उसके कुवर को दे दिये गये थ।

श्री मोतीलालजी लगातार लोक परिषद् के कायकर्ताओ की आर्थिक सहायता भी करते रहे, जिसके कारण वहा काग्रेस पनपी और बहुत बडी सख्या म लोक परिषद् व काग्रेस के कार्यकर्ता बने।

श्री मोतीलालजी एक कुशल व्यापारी होने के साथ-साथ समाज सेवक भी है। वे लगातार गाव व क्षेत्र के विकास के लिए आर्थिक सहायता करते रहते हैं। स्कूल अस्पताल बालिका विद्यालय छात्रावास, सडक तालाब, जलप्रदाय योजना, गोचर भूमि सुधार आदि से लेकर धार्मिक उत्सवो मेला व त्यौहारो तक मे दिल खोल कर सहयोग करना उनका स्वभाव बन गया है। आजकल श्री राका जी अन्तराष्ट्रीय स्तर पर शाति अहिंसा तथा अणुव्रत का प्रचार प्रसार करने वाले रचनात्मक सगठन 'अणुव्रत विश्व भारती [अणुविभा] के अध्यक्ष हैं।



श्री गणेश लुहार



श्री गणेशजी लुहार का जन्म पाली जिले के सादडी कस्बे म हुआ और प्रारम्भिक शिक्षा के अलावा उच्च शिक्षा हेतु ये जोधपुर गये। जोधपुर के जसवत कालेज म अध्ययन करते हुए ही सन् 1945-46 म इनका सम्पर्क उत्साही छात्र नेता सव श्री हुक्मराजजी मेहता देवनारायणजी व्यास के एम सिंघवी आदि स हुआ और ये राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की गतिविधियो म भाग लेने लगे। इसी दौरान इनका सम्पर्क लोक परिषद के तत्कालीन नेता सव श्री जयनारायणजी व्यास मथुरादासजी माथुर व द्वारकादासजी पुरोहित स भी हुआ और ये लोक-परिषद द्वारा चलाये जा रहे जिम्मेवार हकूमत के आन्दोलन म जुड गये।

वकालात पास करने के बाद उन्होने बाली व देसूरी म पेश के साथ-साथ पाली जिले की राजनैतिक गतिविधियो म सक्रिय रुचि लेना जारी रखा और विशेषकर सामन्ती जुल्मो के विरुद्ध लगातार आवाज बुलन्द करते रहे। जिला काग्रेस कमेटी, पाली म ये अनेक उच्च पदो पर काय करते रहे और प्रदेश काग्रेस के सदस्य चुन गये। राज्य सरकार द्वारा गठित कर्जा मुक्ति समिति के चेयरमैन भी बनाये गये और किसानो के हिताथ अनेक महत्त्वपूण निणय लेकर इन्होने किसानो को राहत पहुँचाई।

श्री लुहार प्रगतिशील समाजवादी विचारो के पोषक है और सावजनिक कार्यों मे रुचि ले रह हैं। आप राजनीति के अलावा सामाजिक और धार्मिक कार्यों मे भी रुचि लते हैं। देसूरी पचायत समिति के प्रधान के रूप म इनके द्वारा किये गये विकास कार्यों की आज भी प्रशसा की जाती है।

हर वर्ष 28 मार्च को मनाये जाने वाले जिम्मेवार हुकूमत दिवस की प्रतिज्ञा

'आज हम भूमि मरुधरा के एक मात्र उपाय उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के लिये सच्चे हृदय से प्रतिज्ञा करते हैं। मारवाड के आर्थिक, राजनतिक, सास्कृतिक और आध्यात्मिक ह्रास का कारण यही है कि यहां का शासन जनता के प्रति जिम्मेवार नहीं है, क्योंकि यह जनता की राय से जनता के हित मे जनता द्वारा सचालित नहीं होता।

हमारा विश्वास है कि जनता की चुनी हुई पचायतो द्वारा चलने वाली जिम्मेवार हुकूमत ही राज, प्रजा और वश का कल्याण कर सकती है तथा यही नागरिक अधिकारो की रक्षा के अभाव, सत्रास व अन्याय के नाश तथा सभी सदगुणों के फलाने का सच्चा व सही साधन है। हमे इस साधन को पाने का जन्म सिद्ध अधिकार है। हम जानते हैं कि उसकी प्राप्ति के लिये अलग अलग जातियो मे मेल, जनता मे ज्ञान का प्रचार व लोगो को निधनता से मुक्ति करने वाले रचनात्मक काम करने आवश्यक हैं। हम इन कार्यों की क्रियान्विति मे शक्तिभर सहयोग देंगे।

मारवाड लोक परिषद का ध्येय मारवाड के महाराजा साहब की छत्र छाया मे सत्य, शांति और न्याय के उपायो द्वारा चुनाव प्रणाली के आधार पर उत्तरदायी शासन कायम करना है। हम इस ध्येय को एक बार फिर दर्शाते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि इस ध्येय की पूर्ति के लिये हम तन मन और धन से कोशिश करेंगे।'

—अप्रल 1941, मारवाड लोक परिषद बुलेटिन





श्री मन्छारामजी महाराज



पाली जिले के खीमाड़ा (न्सूरी) ग्राम के बाहर जगल म निवास करने वाले श्री म छारामजी महाराज के हृदय मे गरीबो की भलाइ और उन्हे राहत पहुँचाने के लिए एक गजब की तडफ है और यही तडफ उन्हे राष्ट्रीय आन्दोलन के निकट ले आई है। दलितो को और गरीबो को ग्रामो म शोषण से कसे मुक्त किया जाए—इस पर अनेको गोष्ठिया श्री मन्छारामजी महाराज की इस कुटिया म हुई हैं, जिसम स्वतन्त्रता सेनानी श्री मोहनराजजी (देवली) व देसूरी के विकास अधिकारी श्री बाल-कृष्णजी—मायाजी के अलावा स्थानीय कायकर्ता—सव श्री रामदासजी परिहार (मास्टरजी) लच्छीरामजी पुरोहित, पेमारामजी चौधरी, चुनीलालजी वष्णव (चक्कीवाले) आदि न कई कायकर्ताओ के साथ भाग लिया और विविध कायक्रम भी बनाये।

श्री मन्छारामजी मे राष्ट्रप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुइ है पर इन दिना वे अधिकाश समय प्रभुभक्ति म ही दे रहे है।



श्री अनन्तराम व्यास



बेडा ग्राम के निवासी श्री अनन्तरामजी व्यास पाली जिल क जाने माने आदिवासी क्षेत्र के नेता है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बेडा व बम्बई म हुई, पर य युवावस्था से ही राजनीति म सक्रिय हो गय और जागीरी गावा म लाटा कूता, वठ बेगार व लाग बाग से पीडित और शोषित जनता के हिताथ जुट गये। इन्होने अपना अधिकाश समय आदिवासिया म व्याप्त गरीबी व भुखमरी के निवारण के उपाय खोजन म लगाया और आर्थिक शोषण करने वाले ठेकेदारो और वन विभाग के भ्रष्ट अधिकारियो से आदिवासियो को मुक्त कराने हेतु आदिवासिया मे शिक्षा प्रचार क माध्यम से जागति लाने के काय मे लग गय।

श्री व्यास का सारा ही जीवन एक समर्पित कायकर्ता का जीवन रहा है। वे बेडा ग्राम पचायत के लगातार अनेक वर्षो तक सरपच रहे हैं, और बाली पचायत समिति के उप प्रधान भी रहे हैं। उनके कायकाल म अनेक महत्त्वपूण विकास-काय अस्पताल स्कूल कन्या शालायें, महिला मण्डल आदिवासी छात्रावास बाध आदि सम्पन्न हुए है।

आदिवासियो, गरासिया व भीलो म व्यासजी अत्यन्त लोकप्रिय हैं। प्रतिदिन इनकी भीड बेडा स्थित इनके निवास-स्थान पर देखी जा सकती है। लोग अपनी हर प्रकार की समस्याओ के समाधान हेतु इनके पास आते हैं। व्यासजी स्वय एक प्रगतिशील काश्तकार है और कृषि कार्यों मे स्वय रुचि लेते है।

जीवन म अनेक उतार चढावो के बीच भी व्यासजी अपन ध्येय और जनहित के कार्यों हेतु समर्पित रहे हैं।



श्री मोहनराज रातडिया



श्री मोहनराजजी रातडिया सादडी निवासी हैं और प्रारम्भिक शिक्षण के बाद ही स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड गये थे। श्री रातडिया गोडवाड म चलाये गय स्वाधीनता आन्दोलन के प्रमुख कायकर्ता रह हैं और जागीरी प्रथा म पीडित गरीब वग को जागत करने म उन्होने महत्वपूण भूमिका निभायी है।

मारवाड लोक परिषद के प्रमुख नेता श्री फूलचन्दजी बाफना के नेतत्व म कायकर्ताओ का एक सगठित दल तयार हुआ था, जिसने खतरे उठाकर भी राष्ट्रीय आन्दोलन को अपना प्रथम कत्तव्य माना था उस दल के अगुवा थ श्री रातडियाजी।

श्री मोहनराजजी वद्धावस्था के कारण अब अपन पुत्रो क पास बम्बई म ही निवास करते हैं।





श्री माणकचन्द ठोलिया

□

श्री माणकचन्दजी ठोलिया (जैन) का जन्म पाली जिले के निम्बाज कस्बे में सन् 1920 में हुआ। इनके पिता श्री फूलचन्दजी ठोलिया और दादा श्री लखत मलजी ठोलिया भी महात्मा गांधी के आन्दोलनों से प्रभावित होकर राष्ट्र भक्त बन गये थे। मारवाड़ लोक-परिषद् के नेतृत्व में गठित वानर सेना के स्थानीय अध्यक्ष चुने जाने के बाद ठाकुर निम्बाज ने इन पर कड़ी निगरानी रखना शुरू कर दिया। बैठ बेगार व लागबाग के लिए किसानों पर हो रहे जुल्मों के विरोध में आवाज उठाने पर इन्हें और इनके पिताजी को ठिकाने में बिठाये रखना और हर तरह से तंग व परेशान करना आम बात हो गई थी।

सन् 40-41 में लोक-परिषद् के तत्वावधान में सक्रिय रूप से काम करने के अपराध पर निम्बाज जागीरदार ने श्री माणकचन्दजी को छः माह की कैद और पांच सौ रुपये जुर्माने की सजा दी थी पर चीफ कोर्ट जोधपुर से ये बरी हो गये। इनका प्रारम्भिक कार्य-क्षेत्र निम्बाज, चण्डावल, पाली व गुन्दोज आदि रहे पर बाद में ब्यावर विजयनगर आदि शहरों में भी व्यापार के साथ साथ देश सेवा का कार्य करते रहे।

राष्ट्र की आजादी में सक्रिय कार्य करते हुए इन्होंने समाज सुधार के कार्यों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। पशु बलि के विरोध में निम्बाज में इन्होंने सत्याग्रह किया और प्रति वर्ष होने वाली भैंसों की बली को रुकवाया। आप स्वभाव से बड़े ही नम्र और स्वतन्त्र प्रवृति के व्यक्ति हैं।

श्री तेजराज राणावत

□

स्वर्गीय श्री तेजराजजी राणावत का जन्म फालना के निकट खुडाला ग्राम में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा बम्बई में हुई पर महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये आजादी के संघर्ष और सत्याग्रहों से ये प्रभावित हुये। मारवाड़ लोक-परिषद के सदस्य बनकर उन्होंने खुडाला व आस पास के ग्रामों में जन जागृति का कार्य शुरू किया। स्थानीय जागीरदार के विरुद्ध ग्राम वासियों द्वारा चलाये गये आन्दोलनों में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई।

श्री राणावतजी मूल रूप से रचनात्मक कार्यकर्ता थे। आजादी के बाद इन्होंने अपना सारा समय समाज सुधार और शिक्षा संस्थाओं को समर्पित कर दिया। मारवाड़ जन युवक संघ ने सन 1940 के दशक में समाज सुधार, कन्या विक्रय, वर विक्रय, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह, फिजूल खर्ची एवम् आडम्बर आदि के विभिन्न मुद्दों पर मारवाड़ प्रदेश में एक सशक्त आन्दोलन खड़ा किया था। श्री राणावतजी वर्षों तक इस संस्था के मंत्री रहे, साथ ही साथ उन्होंने स्त्री शिक्षा की आवश्यकता महसूस करते हुए श्री मरुधर महिला शिक्षण संघ के माध्यम से खीमेल में बालिकाओं के लिये विद्यावाड़ी नामक संस्था की स्थापना में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री पार्श्वनाथ जैन कॉलेज, फालना के भी वर्षों तक मंत्री रहकर इन्होंने सेवा की।

अपने सादगीपूर्ण जीवन एवं मृदुभावी व्यवहार के कारण ये बहुत ही लोकप्रिय हुये।

श्री मोडूराम शर्मा

□

श्री मोडूरामजी ग्राम कोट तहसील बाली के निवासी थे और बाली तहसील में लोक परिषद् के संस्थापकों में से एक रहे हैं। ये बड़े ही निडर और स्पष्ट वक्ता थे। जागीरी जुल्मों के विरुद्ध इन्होंने न केवल कोट-बालिया में वरन् खुडाला, सांडेराव, मुण्डारा आदि अनेक ग्रामों में सन् 1940-44 तक जनसभायें आयोजित कर सामन्ती जुल्मों से त्रस्त जनता को संगठित किया था।

ग्राम कोट में भी गोचरभूमि को लेकर एक बड़ा आन्दोलन चला था उसका नेतृत्व कर उसे उन्होंने ही सफल बनाया था।

बड़ी ही कठिन और विकट परिस्थितियों में श्री मोडूरामजी ने संगठन का काम किया था।

हमारा राष्ट्र हमारी सबसे मूल्यवान् सम्पत्ति है।





श्री केसरीमल तलसेरा



श्री केसरीमलजी तलसेरा का जन्म पाली जिले के सादडी कस्बे के एक सम्पन्न परिवार मे हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा सादडी मे ही हुयी, लेकिन विद्यार्थी जीवन से ही ये श्री फूलचन्दजी बाफना और श्री घीरजमलजी बच्छावत सरीखे स्वतन्त्रता सेनानियों के सम्पर्क मे आये और लोक-परिषद् के संस्थापकों में से एक रहे। इन्होने सादडी और आस पास की जनता मे जन जागति पैदा करने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा स्थानीय सरकारी अधिकारियो और पुलिस वालो के जुल्मो और ज्यादतियो से लोगो को बचाने मे अपनी पूरी शक्ति लगा दी।

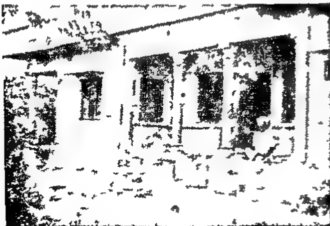
श्री तलेसराजी लोक परिषद के अनेक महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं और रचनात्मक कामों मे सदा रुचि लेते रहे है।

श्री नथमलजी मूथा



श्री नथमलजी मूथा पाली जिले के चण्डावल ग्राम के निवासी है और अत्यधिक वृद्धावस्था के बावजूद मारवाड लोक परिषद द्वारा चलाये गये आन्दोलनों की यादें आज भी वे लोगो को बडे चाव से सुनाते है। आज से 60 वर्ष पूर्व इन्होने मारवाड लोक परिषद के भूमिगत और जेल मे रहने वाले स्वतन्त्रता सेनानियो को आर्थिक सहयोग देकर उनके उत्साह को बनाये रखा, उनकी यादें आज भी ग्राम चण्डावल के निवासी बडी श्रद्धा के साथ करते है।

श्री मूथाजी की हवेली का काफी सारा भाग लोक परिषद की गतिविधियों का केन्द्र रहा है। लोक नायक श्री जयनारायणजी व्यास अक्सर वहां आकर ठहरा करते थे। चण्डावल के प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी श्री मागीलालजी त्रिवेदी को श्री मूथाजी का भरपूर सहयोग मिला था।



अपनी हवेली के बरामदे मे बैठे स्वतन्त्रता सेनानी श्रीमूथाजी।

क्रान्तिकारियो की शरणस्थली ग्राम पाचेटिया

ग्राम पाचेटिया (मारवाड जंक्शन) के वृद्ध तथा विद्वान निवासियो से प्राप्त जानकारी के अनुसार बंगाल के क्रान्तिकारी, जो यहां 'बिहारी बाबू' के नाम से जाने जाते थे, को राजस्थान के विख्यात क्रान्तिकारी ठा. केशरीसिंहजी व प्रतापसिंहजी पाचेटिया ग्राम मे लाये थे और वे स्वयं अपने रिश्तेदार श्री चंडीदान जी के नोहरे मे घास चारे के ढेर के पीछे छिपकर रहे थे। यहीं से इन्होंने कुछ शस्त्र व बम बनाने का सामान एकत्रित कर दिल्ली व कलकत्ता भेजा था। एक रेल पार्सल का भेद खुल जाने पर इन्हें यहां से कुछ समय के लिए भागना पड़ा था, पर श्री प्रतापसिंहजी गिरफ्तार कर लिये गये थे।

इन क्रान्तिकारियों की सम्पूर्ण सुरक्षा व खान पान की व्यवस्था श्री चण्डीदानजी ने ही की थी। इनके अलावा इनके भाई श्री आसकरणजी व वीर स्वाधीनता प्रेमी श्री गणेशदानजी तो इन क्रान्तिकारियों के सम्पर्क से स्वयं आजादी के योद्धा बन गये थे और कहते हैं इनके विरुद्ध भी वारन्ट था।

ठा. केशरीसिंहजी बारहठ ने अपनी पुत्री चन्द्रमणि को एक पत्र मे लिखा था—'पाचेटिया भ्रातृवृन्द का उपकार मेरे हृदय पटल पर सदा अंकित रहेगा।'



पुरानी यादो से भरा एक महत्वपूण पत्र जो पाली जिले के स्वाधीनता आन्दोलन की प्रारम्भिक घटनाओ पर प्रकाश डालता है।

आर डी गट्टानी
फोन 21 668
फ्रीडम फाइटर,
जालोरी गेट, जोधपुर
रिटायर्ड हाईकोर्ट जज
एम-एम पी (लोकसभा)

प्रिय भाई मोहनराजजी

कांग्रेस शताब्दी समारोह की पाली परिसंचालन एव कार्यान्वयन समिति की ओर से आपका पत्र दिनांक 6 8 85 को मिला। पत्र के बाद पुरानी याद फिर से उभर आई, देशी राज्य एव सामतशाही युग की। यह सही है कि राष्ट्रीय आन्दोलन मे पाली जिले का खासी अच्छी भूमिका रही है। यथा शक्ति मति मेरा भी कुछ हिस्सा उसमे रहा। सन 37-38 मे श्री फतहराजजी पुरोहित (जब महात्मा हरीहरनाथजी दिल्ली वाले) ने पाली मे ऊनी गलीचे बनाने के लिये उद्योग मन्दिर स्थापित किया—ये क्रान्तिकारी थे और समस्त अंग्रेजी भारत से निष्कासित थे। सन् 1938 मे मारवाड लोक परिषद् की स्थापना के बाद जोधपुर के अलावा पहिला शाखा पाली मे ही खुली। बाद मे बाली सादडी घाणराव नाडोल और दमूरी मे खोली गई। बाली मे श्री छोटमलजी सुराणा (अब स्वर्गवासी) और द्वारकाप्रसादजी अग्रवाल (गुप्ता) का सहयोग रहा। सादडी मे फूलचदजी बाफणा और फूलचदजी राठौड ने सहायता की। पहले तो ये लोग डर हुए थे—हम आगे आने का भी मना किया फिर जब पहुच गये तो पूरा पूरा सहयोग दिया और खूब काम हुआ। घाणेराव मे स्व कन्हैयालालजी श्रीमाली (वकिल) और नाडोल मे श्री पुखराजजी का सहयोग रहा। उन दिनो जागीरी इलाको मे रहने वालो की हालत बहुत त्रासदायक थी। फिर भी भाई लोगो ने हिम्मत की और आगे बढ़े।

सन् 1936 मे श्री छगनराजजी चौपासनीवाला (अब स्वर्गीय) बाली किले मे नजरबन्द रखे गये और सन् 1940 से मुझे वहां रखा गया।

इधर सोजत मे श्री मीठालालजी काका (अब स्वर्गीय) और चण्डावल मे श्री मांगीलालजी त्रिवेदी ने जोरो से काम किया। नीमाज मे भाई माधोलाल सुथार ने मोर्चा सभाला। वहां सेठ रिखबदासजी वगैरह भी अप्रत्यक्ष सहायता देते थे। जैतारण मे वकील श्री वासुदेव जी शास्त्री (स्वर्गस्थ) ने अपने ढग से काम किया। रानी, रवाली, गुडाला किन किन गावो के नाम गिनाऊँ— धीरे-धीरे सभी ओर जागति फली।

सन् 1942 के मार्च मे चण्डावल मे जिम्मेवार हुकूमत का दिन मनाते समय मांगीलालजी वगैरह पर जागीरदार के लोगो ने हमला किया—बहुतो के चोटें लगी। जोधपुर सरकार को जब इस बारे मे कहा, लिखा गया तो उसने और जलते पर नमक छिडक कर वहां दफा 144 जाप्ता फौजदारी के तहत हुक्म निकाला और पांच से अधिक इकट्ठा होने पर पाबन्दी लगा दी। उस पाबन्दी को तोडने का जिम्मा सौभाग्य से मुझ पर ही रहा। और, जैसा कि बाद मे चण्डावल मे तत्कालीन पोस्ट मास्टर से मालूम पडा कि उस दिन उन्होने जागीरदार के हाथ से बन्दूक नही छीनी होती तो मालूम नही क्या होता।

लाग-बाग बेठ बेगार के मामलो मे वैसे तो सभी जागीरदार शोषण करने पर पूरे माहिर थे परन्तु रायपुर व रास ठिकाने कदाचित और भी अग्रणी थे। नीमाज भी पीछे नही था परन्तु वहां जो माधोलाल ने डट कर उनका मुकाबला करके बिस्वा लाग के बारे मे जागीरदार को न केवल शिकस्त दी, वरन् सशस्त्र केस मे जागीरदार के कुछ लोगो को सजा भी डकैती के जुर्म मे भुगतनी पडी। बिराटिया के श्री मोहनलालजी शर्मा एव पाली के स्व श्री शिवकरणजी एव किस्तूरकरणजी जोशी तो जोधपुर मे रहते ही आन्दोलन मे भाग लेने वालो मे पहले थे।

आपने यह पत्र लिखकर यादें ताजा करादी तदर्थ धन्यवाद।

आप सब स्वस्थ एव प्रसन्न होग।

विनीत,
रणछोड़दास गट्टानी



पाली जिला निवासी स्वतन्त्रता सेनानी, जिनका कार्यक्षेत्र जिले के बाहर रहा



श्री मानमल जैन



श्री मानमलजी जन मूल रूप से ग्राम चाचाडी (रानी) के निवासी है। सन् 1930 म ही ये आजादी के आन्दोलन म कूद गये थे। लोक परिषद् के सस्थापको म से श्री मानमलजी एक हैं। सन् 1931 म श्री मानमलजी जयनारायणजी व्यास द्वारा गठित 'मारवाड यूथ लीग' के मत्री चुने गये। सन् 1932 मे इनको एक वष की जेल हुई और अजमेर जेल म रखे गये।

सन् 1934 मे पाली म आजादी के आन्दोलन को आगे बढाने के उद्देश्य से 'मारवाड उद्योग मडल' की स्थापना हुई और श्री जन उसके सभापति चुने गये। सन् 1936 मे राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद् के मत्री चुन गये और उसी वष जोधपुर राज्य सरकार ने इनको एक वष की नजरबन्द की सजा दी। इसके पश्चात तो श्री जन प्रात व देश की राजनीति मे सक्रिय रूप से भाग लेत रहे।

पर, आज 82 वष की आयु म श्री मानमलजी के ये उद्गार कितने ममस्पर्शी और प्रेरणादायी हैं—

"सन् 1958 से ही राष्ट्र का राजनतिक स्वरूप बदलने लगा तथा राजनतिक जीवन मे सत्ता, स्वाथ व ऐश्वय की प्राप्ति का सघष शुरू हो गया था तब से मने और मरे कई स्वतन्त्रता सेनानी साथिया ने, जो तप और त्याग को ही राजनीति का ध्येय मानते थे, राजनीतिक गतिविधियो म भाग लेना बद कर दिया तथा रच नात्मक कार्यो—खादी काय आदि म जुट गये। लेकिन आज जीवन की सन्ध्या बेला मे भी मेरे मन मे राष्ट्र के लिए मर मिटने की तमन्ना जिन्दा है।

जनाब मोहम्मद यासीन नूरी



मोहम्मद यासीन नूरी साहब का खानदान मूल रूप स पाली का है और इनके परिवार के सदस्य आज भी पाली व ब्यावर म निवास करते हैं। जनाब नूरी साहब का राजनतिक जीवन ब्यावर से ही शुरू हुआ और महाराष्ट्र की बम्बई नगरी इनका प्रमुख कायक्षेत्र बना। स्वय उनके तथा परिवारजनो के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन मे सक्रिय भूमिका निभाने के कारण इन्हे अनेक प्रकार की यातनाए झेलनी पडी पर ये अडिग रहे और राष्ट्रीय मूल धारा से जुडे रहे। बम्बई प्रान्त के प्रथम काग्रेसी मत्री मण्डल म आप केबिनेट स्तर के मत्री चुने गये और अपनी कायकुशलता से सबको प्रभावित किया। राजस्थान व राजस्थानियो से भी आपने अपना सम्बन्ध जीवन भर निभाया। आप सदव राष्ट्रीय एकता व साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक बने रहे।

मौलाना अत्तार मोहम्मद



वैसे तो मौलाना अत्तार मोहम्मद साहब का कायक्षेत्र और निवास क्षेत्र ब्यावर बन गया था, पर इनका मूल निवास पाली जिला ही था और राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की गतिविधियो का केन्द्र होने से इन्होने भी अपना कायक्षेत्र ब्यावर नगर को बना लिया था। बचपन से ही इनम राष्ट्रीयता कूट-कूटकर भरी थी। ये हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल समथक थ। मौलाना सा बडे ही जोशील और प्रभावी वक्ता थ विकट से विकट परिस्थितिया मे भी घबराते नही थे।

श्री रामचन्द्र नदवाना



श्री रामचन्द्रजी नन्दवाना का जन्म सादडी निवासी श्री मोतीलालजी नन्दवाणा जो मेवाड राज्य म एक अधिकारी थे के घर सन् 1919 मे हुआ था। सुप्रसिद्ध सामाजिक कायकर्ता श्री भवरलालजी स प्रभावित होकर श्री रामचन्द्रजी राष्ट्रीय स्वाधीनता की ओर झुके और सन् 1938 म स्वतन्त्रता आन्दोलन के नेता श्री माणिकलालजी वर्मा के सम्पक म आये। सन् 1942 के आन्दोलन म इन्हे जेल की सजा हुई और जेल म कुव्यवस्था के विरुद्ध भूख हडताल भी की।

समाज सुधार म अग्रणी होने के नाते इन्हे जाति बहिष्कार का दण्ड भी भुगतना पडा। इन दिना वे अपने निवास स्थान कपासन (जिला चित्तौड) म विकलाग सेवा सस्थान का काय देख रहे हैं।



पाली जिले के राजनैतिक कार्यकर्ता



श्री धर्मीचन्द जैन



श्री धर्मीचन्दजी जैन का जन्म पाली जिले के झूठा ग्राम के एक व्यावसायिक परिवार म हुआ। आपको पढाई का कोई विशेष अवसर नही मिला, परतु अपनी योग्यता और परिश्रम से आगे बढे। आप जन केबल्स झूठा के मालिक हैं, जो एक राष्ट्रीय स्तर का उद्योग है। राजस्थान मे ही नही बल्कि हिमाचल प्रदेश, पजाब व हरियाणा व देश के अन्य भागो मे भी आपने सफल उद्योग स्थापित किये हैं।

सन 1961 म आप ग्राम झूठा के सरपच बने और अनेक वर्षों तक इस पद पर चुने जाते रहे और आपने इस छोटे स ग्राम को एक बड औद्योगिक क्षेत्र म परिणत कर दिया।

जिले के सभी राजनतिक कार्यकर्ताओ मे आप बहुत लोकप्रिय हैं। हर वक्त जरूरतमद लोगो को व सस्थाओ को आर्थिक सहायता देत रहत हैं। सन् 1981 म आपको सवसम्मति से पाली जिला परिषद् का प्रमुख चुना गया। सन् 1988 म आप दुबारा पाली जिले क प्रमुख चुने गये।

सन् 1982 म बाढ के समय और बाद म अकाल के वर्षो मे आपने उनके उल्लखनीय काय किये हैं। जिला प्रमुख के रूप म जिले का दौरा करत वक्त अपनी ओर से भी लगातार बाढ पीडितो और अकाल पीडितो की सहायता करते रहते थ।

पाली जिला काग्रेस कमेटी क हर काम म आप आगे आकर आर्थिक सहायता व सेवा करते हैं। आपको काँग्रेस दल का एक स्तम्भ होन का गौरव प्राप्त है।

श्री विजयसिंह सिरियारी



श्री विजयसिंह सिरीयारी का जन्म पाली जिले की ... की तहसील के सिरियारी नामक ग्राम म हुआ। परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के बावजूद आपने उच्च शिक्षा प्राप्त की।

राजस्थान म जागीरी समाप्ति के बाद जागीरदारो को उचित मुआवजा दिलाने के सघष से आपने राजनतिक जीवन की शुरूआत की तथा बडी राजनीतिक सूझबूझ के साथ भारत के तत्कालीन प्रधान मत्री पडित जवाहरलाल नेहरू के समक्ष छोटे जागीरदारो की ओर स एक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर उनका पक्ष प्रस्तुत किया जिससे नेहरूजी बडे प्रभावित हुए। उसी समय से श्री विजयसिंहजी के नेहरूजी और काँग्रेस से निकट के सम्बन्ध स्थापित हो गये। फिर तो, सासद के रूप मे आपने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की और कई मामलो मे राजस्थान का मजबूती के साथ पक्ष प्रस्तुत करते हुए राजस्थान के विकास म सहयोग प्रदान किया।

यो तो समूचे राजस्थान म ही पर विशेष कर पाली जिले और मारवाड के क्षत्रिय समाज को काग्रेस के निकट लाने म श्री विजयसिंहजी ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जो चिरस्मरणीय घटना के रूप मे याद की जाती है।



श्री माणकलाल माथुर



श्री माणकलाल माथुर सोजत शहर के प्रसिद्ध वकील श्री मीठालालजी माथुर के सुपुत्र हैं। वकालत इन्हे विरासत म मिली है। आपके परिवार का प्रभाव भूतपूर्व जोधपुर राज्य क समय म ही चला आ रहा है।

वकील होने के नाते श्री माथुर की दृष्टि म जनता पर जागीरदारो के जुल्म और बेगार के मामले बराबर आते रहे जिससे क्षेत्र की दुखित जनता के प्रति आपके मन म सहज सहानुभूति जागृत हुई और आप जन आन्दोलन म कूद पडे। अपनी विशिष्ट सामाजिक स्थिति और योग्यता के कारण इनको किसानो और दलित वर्गों को भय मुक्त करने की दिशा म सफलता मिली। सभी वर्गों म अपनी सेवा व व्यवहारकुशलता स श्री माथुर बहुत लोकप्रिय



हैं। एक लम्बे अर्से तक ये जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रहे एवं सोजत ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष व अन्य महत्वपूर्ण पदों पर रहे।

पाली जिले के महत्वपूर्ण सामन्ती नेताओं को कांग्रेस के झण्डे के नीचे लाने का श्रेय आपको ही है। आपने श्री मीठालाल काका श्री हरीभाई किंकर, श्री यशवंतजी रुचिर श्री मथुरादासजी माथुर जैसे तपोनिष्ठ देश प्रेमी और स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ व मार्गदर्शन में महत्वपूर्ण कार्य किया है। पाली जिले के विकास व समृद्धि में भी आपकी बड़ी भूमिका रही है।

जागीरदारों के गठबन्धन से चले भूस्वामी आन्दोलन को असफल कर जागीरदारी तत्वों को छिन्न भिन्न करने का श्रेय भी श्री माणक माथुर को ही जाता है।



श्री मांगीलाल आर्य



श्री मांगीलालजी आर्य पाली जिले के माडोल ग्राम के मूल निवासी हैं। इन दिनों ज्यादातर जयपुर व पाली शहर में रहते हैं।

श्री आर्य ने एक हरिजन परिवार में पैदा होकर भी अच्छी शिक्षा प्राप्त की। विशेष कर हिन्दी और संस्कृत भाषा का आपको अच्छा ज्ञान है। संस्कृत का ज्ञान होने से ही वेदशास्त्र सहित अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करने में ये सफल हो सके हैं। जिन लोगों ने धर्मशास्त्रों के तुलनात्मक ज्ञान पर आपके भाषण सुने हैं वे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके हैं।

जीवन के प्रारम्भ से ही श्री आर्य ने समाज सुधार का बीड़ा उठाया और हरिजन समाज तथा समस्त अनुसूचित जातियों में शिक्षा और नशामुक्ति का अभियान चलाया। दलितों की दयनीय हालत को सुधारने की प्रेरणा ही आपको राजनीति में लाई। वर्षों तक कांग्रेस संगठन के माध्यम से आप कार्य करते रहे और आज भी सेवा के प्रति समर्पित हैं। सन् 1977–80 तक अल्पावधि के लिए श्री आर्य जनता पार्टी के सदस्य भी बने पर अधिक समय तक वहाँ नहीं रह सके। वर्षों तक कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विधायक रहे और मंत्री परीषद् के सदस्य रहे। अपने सादगी पूर्ण और अच्छे संस्कारमय जीवन के कारण श्री आर्य जन-साधारण में काफी लोकप्रिय हैं।



श्री पुखराज कालानी



स्वतन्त्रता आन्दोलन की रणभूमि चण्डावल के निकट स्थित देवली (रायपुर) के एक सम्पन्न परिवार में जन्मे श्री पुखराजजी कालानी मारवाड़ लोक परिषद के प्रसिद्ध कार्यकर्ता और स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय श्री शंकरलालजी कालानी के पुत्र हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त कर आपने चार्टर्ड एकाउन्टेंट के रूप में करियर प्रारम्भ किया। शीघ्र ही उस क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की। अपने मित्रों के आग्रह से आप राजनीति में कूद पड़े और सन 1967 में विधान सभा का चुनाव सोजत क्षेत्र से जीतकर सक्रिय राजनीति में आए। तब से लगातार आप अपने व्यवसाय के साथ-साथ राजनीति में भी सक्रिय हैं। अपने ग्राम को आदर्श ग्राम बनाने की तीव्र इच्छा के कारण कालानी जी अपने गाँव के सरपंच भी बने और अपने ग्राम को राजस्थान का आदर्श ग्राम घोषित करवाया।

व्यवहार कुशलता दूरदृष्टि और राजनैतिक सूझ-बूझ ने आज लोगों में श्री कालानीजी को लोकप्रिय बना रखा है।



श्री केवलचंद गुलेच्छा



जाग्रत युवा शक्ति के प्रतीक और राजनीति के सजग प्रहरी श्री केवलचन्दजी गुलेच्छा पाली जिले की राजनीति में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनका जन्म पाली तहसील के गड़वाड़ा ग्राम के एक सम्पन्न परिवार में जो आजादी के आन्दोलन के वक्त से ही राजनीति में सक्रिय रहा है में हुआ अतः राष्ट्र प्रेम और राजनीति में रुचि इन्हें विरासत में मिली।

आजादी के पश्चात भी सामन्ती जुल्मों से पीड़ित ग्रामीण जनता को जाग्रत कर उन्हें शोषण से मुक्त कराने के अनेक अभियान



इन्होंने चलाये और सफलता प्राप्त की। पिछले वर्षों इन्होंने पाली शहर के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया और अपनी लोकप्रियता के कारण पाली नगर परिषद के अध्यक्ष चुने गये। इनके कार्यकाल में पाली में जो विकास कार्य सम्पन्न हुए वे स्मरणीय रहेंगे। वर्तमान में आप पाली अरबन को आपरेटिव बैंक के अध्यक्ष हैं और पूरे क्षेत्र के सर्वांगीण विकास की ओर सजग रहते हुए विकास योजनाओं को क्रियान्वित करवाते हैं।

श्री गुनेच्छा एक उच्च शिक्षा प्राप्त इंजीनियर हैं और पाली में कपड़े का एक विशाल रंगाई छपाई का उद्योग चलाते हैं, पर अधिकांश समय राजनीति और जन सेवा के कार्यों में ही लगाते हैं।



श्री रघुनाथ परिहार



श्री रघुनाथजी परिहार एडवोकेट, बाली वैसे तो अभी सन् 1984 से बाली से विधायक हैं पर विद्यार्थी जीवन से ही ये राष्ट्र प्रेम की भावनाओं से जुड़े रहे हैं। विभिन्न किसान आन्दोलनों में इन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया है।

इनका पारिवारिक धन्धा खेती है। ये ग्राम मुण्डारा के निवासी हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इन्होंने भारतीय वायु सेना में नौकरी करके अपना जीवन प्रारम्भ किया लेकिन कुछ वर्षों बाद बाली में इन्होंने वकालात शुरू कर दी और राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे। श्री परिहार बाली पंचायत समिति के प्रधान भी चुने गये। अभी राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं और विधान सभा में भी प्रगतिशील नीतियों का समर्थन करते हुए और महत्वपूर्ण मसलों पर अपना योगदान करते रहते हैं।

राजनीति के अलावा सामाजिक सुधार की दिशा में भी इनकी सेवाएं महत्वपूर्ण रही हैं। माली जाति शिक्षा प्रचारक संघ के ये वर्षों तक अध्यक्ष एवं मंत्री रहे। फालना स्टेशन पर माली जाति शिक्षा प्रचारक संघ की स्थापना कर एक छात्रावास का भी संचालन कर रहे हैं। ये बाली नगर एवं क्षेत्र की अनेक सामाजिक, साहित्यिक, सार्वजनिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

बाली क्षेत्र में स्थाई महत्व के विकास कार्यों के निर्माण में इन्होंने विशेष रुचि ली है।



श्री चन्दनसिंह



श्री चन्दनसिंहजी ने एम ए एल एल बी तक शिक्षा प्राप्त कर बाली में वकालात शुरू की और साथ ही साथ राजनीति में भी प्रवेश किया। उन्हीं दिनों तहसील पंचायतों का गठन हो रहा था और चन्दनसिंहजी बाली तहसील पंचायत के अध्यक्ष चुने गये। इसके पश्चात तो ये राजनीति में काफी सक्रिय हो गये और पंचायत समिति बाली के प्रधान चुने गये। इनका जनसम्पर्क इतना व्यापक था कि सभी वर्गों के लोग इनका सम्मान करते थे। गरीब एवं कमजोर वर्ग के हितों की रक्षा करते हुए उन्हें हर प्रकार की राहत एवं सुविधायें प्रदान कराना इनका लक्ष्य रहता था। अपने इन्हीं प्रगतिशील विचारों के कारण ये कांग्रेस संस्था से जुड़ गये और ब्लाक कांग्रेस एवं जिला कांग्रेस के पदों पर महामंत्री का कार्य किया।

समाज सुधार के क्षेत्र में भी इन्होंने लोगों को प्रेरणा दी और क्षेत्रीय समाज में अनेक सुधार लाने का श्रेय इनको है। श्री चन्दनसिंह स्वयं बड़े विद्वान अच्छे लेखक और अध्ययनशील व्यक्ति हैं। इन्हें धर्म और साहित्य का गहन ज्ञान है और विद्वान साधु सन्तों से सम्पर्क करके हर प्रकार के ज्ञान में वृद्धि करने का इन्हें शौक है। इन्होंने सोनीगरों का इतिहास नामक ऐतिहासिक पुस्तक की भी रचना की है।

बाल्यकाल और युवावस्था में शिकार खेलने का अत्यधिक शौक होने पर भी इन्होंने स्वतः ही प्रसिद्ध जैन मुनि श्री भद्रंकर विजयजी के समक्ष कभी शिकार न करने की प्रतिज्ञा धारण की, शराब पीने का शौक तो इन्हें रहा ही नहीं। स्वयं शिक्षित होने के कारण अपने बच्चों को भी उच्च शिक्षा दिलायी है। इनके परिवार का जागीरी से निकट का सम्बन्ध होते हुए भी इन्होंने हमेशा भूमि-सुधारों का पक्ष लिया है और उस दिशा में कार्य भी किया है।



पचायत समिति के प्रधान रहते इन्होने आदिवासी क्षेत्र म अनेक प्रकार के विकास-काय प्रारम्भ किये। गावो की ओर इन्होने विशेष ध्यान दिया। आज भी ये बाली क्षेत्र म ही नही वरन पूरे पाली मे जिले अपनी लगन और कतव्यपरायणता के लिए प्रसिद्ध है और अत्यन्त लोकप्रिय हैं।



श्री माधोसिंह दीवान



दीवान श्री माधोसिंहजी का जन्म जोधपुर जिले के बिलाडा नगर म सिरवी समाज के प्रसिद्ध धमगुरु बिलाडा दीवान के घर म हुआ, जो पूव जोधपुर राज्य का प्रभावशाली जागीरदार परिवार रहा है। 'श्री आई दाता की बढेर' बिलाडा, जिसकी जागीर की जमीनें पाली जिले मे ही नही, दूसरे जिलो के भी अनेक गावो मे है, उसकी आमदनी महन्त व माताजी के दीवान होने के नाते इन्ही की हैं। साथ ही राजस्थान के बाहर भी मध्यप्रदेश, कर्नाटक यू पी व अन्य राज्यो म जहा कही भी सिरवी समाज है वही पर 'बडेर' है और उनके ये ही दीवान और धमगुरु हैं इससे इनका प्रभाव क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है।

इनकी शिक्षा बिलाडा व कलकत्ता म हुई और ये विज्ञान मे उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। भारत के बाहर रह कर भी इन्होने वाणिज्य एव विज्ञान विषयो मे दक्षता प्राप्त की है।

इन्होने सन् 1972 मे निदलीय की हैसियत से लोकसभा का चुनाव लडा परन्तु हार गये। तत्पश्चात् 1981 मे इन्होने काग्रेस उम्मीदवार के रूप मे राजस्थान विधान सभा का चुनाव लडा और विजयी रहे। 1985 मे ये दुबारा विधायक बने और अनेक महत्व पूण विभागो के केबिनेट स्तर के मन्त्री बने। अकाल राहत मत्री के रूप मे इन्होने राज्य म अकाल राहत का समुचित प्रबन्ध किया व अनाज और चारे को घर घर पहुचा कर सुलभ करवाया। वन मत्री के अपने काय काल म श्री दीवान वन-सरक्षण और अन्य पशु सरक्षण म मूलभूत सुधार करने के लिए प्रसिद्ध हैं। ये एक योग्य ईमानदार और निष्ठावान काग्रेसी कायकर्ता हैं साथ ही बडे सरल स्वभाव व मिलनसार एव सज्जन व्यक्ति हैं एव सीरवी किसान समाज के बहुत प्रभावशाली और वरिष्ठतम नेता हैं जाति से राजपूत और जागीरदार होने के कारण इनका अपने समाज म भी बडी प्रतिष्ठा और महत्व प्राप्त है।



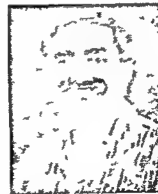
श्री असलम भाई



श्री असलम खा जी बाली के निवासी है और बाली क्षेत्र स ही विधायक भी रह चुके है। एक धनी परिवार म जन्मे असलम भाई अपने सादगीपूण जीवन और मधुर व्यवहार के कारण अत्यन्त लोकप्रिय हं।

बचपन स ही सावजनिक सेवा की ओर उनकी रुचि रही है। विकास खण्ड बाली के ग्रामो मे इन्होने राष्ट्रीय विकास व शिक्षाप्रद फिल्मो का प्रदशन कर ग्राम ग्राम म जागृति का बिगुल बजाया। वर्षों तक इन्होने गावो म काय किया और तभी से गावो की गरीबी, भुखमरी तथा बेरोजगारी के इन्हे दशन हुए और काग्रेस के एक सिपाही के नाते इन्होने अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया।

इन्होने गोडवाड खेल सघ की स्थापना की और खिलाडियो को प्रोत्साहित करने के कई कायक्रम सफलतापूवक सम्पन्न किये। असलम भाई अनेक स्थानीय सामाजिक सस्थाओ से जुडे हुए है और सवारत हैं।



श्री केशरीसिंह जोजावर



श्री केशरीसिंहजी का जन्म पाली जिले के खारची तहसील के जोजावर ग्राम म हुआ। एक बडे जागीरदार होने के बावजूद उनका दष्टिकोण समयानुकूल और जनता के साथ जुडे रहने का रहा। इन पर विशेष राजनतिक प्रभाव श्री जयनारायण व्यास और श्री विजयसिंह सरियागी का पडा था। प्रथम बार इन्हे सन 1957 म



विधान सभा के लिए कांग्रेसी उम्मीदवार बनाया गया, पर सफल नहीं हुए। इससे पूर्व 1952 में आप निर्दलीय विधायक रह चुके थे। फिर 1982 के विधान सभाओं के चुनाव में कांग्रेसी प्रत्याशी के रूप में विजयी हुए। इनके कार्यकाल में विकास के अनेक कार्य सम्पन्न हुए। इनका व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त ही सादगी पूर्ण और धर्ममय रहा है।

श्री केशरीसिंहजी के राजनैतिक प्रभाव से इनके सुपुत्र श्री चक्रवर्ती सिंह को भी राजनीति में कार्य करने की प्रेरणा मिली। वर्तमान में श्री चक्रवर्ती सिंह खारची पंचायत समिति के प्रधान हैं।

श्री माणकमल मेहता



श्री माणकमलजी मेहता एडवोकेट दसूरी का जन्म पाली जिले की बाली तहसील के चाणोद ग्राम के एक सम्पन्न जैन परिवार में हुआ। व्यवसाय के साथ साथ पारिवारिक प्रतिष्ठा व प्रभाव भी उनको सहज ही प्राप्त हुए। इन्होंने जोधपुर में उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा दसूरी में अपनी वकालत आरम्भ की। जागीरदारों के सम्पर्क होने से ये पहले स्वतंत्र पार्टी में रहे और दसूरी पंचायत समिति के प्रधान चुने गये। प्रधान चुने जाने के पश्चात इन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की व दूसरी बार फिर प्रधान चुने गये। आप पाली से कांग्रेसी उम्मीदवार के रूप में विधानसभा के सदस्य चुने गये।

श्री मेहता पाली जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रहे और ब्लाक अध्यक्ष, दसूरी व अन्य कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। अपनी विधान सभा सदस्यता के दौरान वे राजस्थान वेअरहाऊसिंग कार्पोरेशन के महत्वपूर्ण पद पर रहे तथा कार्पोरेशन को घाटे से निकाल कर लाभ की श्रेणी पर उन्नत किया।

श्री सज्जनसिंह



श्री सज्जनसिंहजी देवली का जन्म पाली के सिन्दरली ग्राम के जागीरदार घराने में हुआ था। आपने जोधपुर में दसवी तक शिक्षा प्राप्त कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम ए तथा एल एल बी किया। इनके पिता पूर्व महाराजा जोधपुर के सामन्त थे। जागीर सिन्दरली के जन आन्दोलन के कारण जोधपुर महाराजा ने इनकी जागीर सिंदरली से ग्राम देवली बदल दी। पर देवली की जनता ने भी श्री मोहनराज जैन के नेतृत्व में जन आन्दोलन आरम्भ कर दिया जिससे श्री सज्जनसिंह जीवन भर जूझते रहे। इसी जन विरोधी लहर में ये राजनीति में आये और अन्य जागीरदारों के साथ स्वतंत्र पार्टी के सदस्य बने। देवली ग्राम पंचायत के सरपंच और रानी पंचायत समिति के लम्बे समय तक प्रधान भी रहे। बाद में आप पाली जिला परिषद् के प्रमुख भी रहे। नेतृत्व की योग्यता और प्रभावशाली वक्ता होने के कारण आपने जागीरदारों को संगठित कर जागीरी उन्मूलन के विरुद्ध भूस्वामी आन्दोलन चलाया व जेल में रहे। इसके पश्चात सुमेरपुर विधान सभा क्षेत्र के निर्दलीय विधायक भी आप चुने गए।



श्री चम्पालाल सुराणा



वस्तुतः श्री चम्पालाल जी सुराणा पाली में कपड़े के जाने माने व्यवसायी हैं पर इनका सारा जीवन ही जन कल्याणकारी कार्यों को समर्पित रहा है। आजादी के पूर्व से ही ये कांग्रेस के प्रति आकर्षित हुए और इसके सदस्य बन जनहित के कार्यों में लग गए। कांग्रेस संगठन के विभिन्न पदों पर रहते हुए भी इन्होंने कभी सत्ता की ओर अपना आकर्षण नहीं जताया। आपकी प्रवृत्ति पाली जिले में विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से उपभोक्ताओं और किसानों की सेवा करने की रही है।

आप गांधी वादी विचारधारा के पोषक हैं। खादी, नशाबन्दी ग्रामोद्योग जैसे रचनात्मक कार्यों में विशेष रुचि लेते रहे हैं और इस दिशा में योगदान करते रहे हैं।



श्री सम्पतराज शाह



स्व० श्री सम्पतराज जी शाह का जन्म पाली जिले की रायपुर तहसील के पिपलिया ग्राम के एक प्रतिष्ठित व्यवसायी परिवार में हुआ। आप सन् 65 से 76 तक पंचायत समिति रायपुर के प्रधान रहे। इस क्षेत्र और



पाली जिले में आप अपने मृदु व्यवहार और सेवाभावी स्वभाव के कारण लोकप्रिय रहे हैं।

आपने अपने ग्राम पिपलिया और क्षेत्र के आसपास नय नये उद्योग लगाकर उन्हें विकसित कर के राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया। औद्योगीकरण की आपकी नीति सारे जिले में फैली और पाली, फालना, रानी, सोजत, सुमेरपुर, आदि स्थानो में सरकार के सहयोग से उद्योग बस्तिया बसी और जिले भर में उद्योग लगाने की प्रवृत्ति को बल मिला।

श्री शाह को क्षेत्र के विकास का बहुत शौक था। इनके प्रयास से क्षेत्र में हाई स्कूलें, औषधालय सड़कें, बाध, तालाब आदि बने जिनमे स्वय ने आर्थिक सहायता व सहयोग दिया। रायपुर क्षेत्र को प्राथमिकता श्री शाह के प्रयत्नो से ही मिली।

जिले के प्रशासनिक अधिकारी, कृषि अधिकारी और शिक्षा अधिकारी और सभी राज्य कमचारी श्री शाह से बहुत प्रेम रखते थे और रायपुर क्षेत्र मे अधिक से अधिक काम करने को तैयार रहते थे। कृषि, सिंचाई शिक्षा व चिकित्सा क्षेत्रो मे भी श्री शाह के प्रयासो से क्षेत्र ने बहुत उन्नति की।

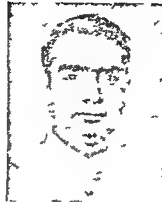
दुर्भाग्य से श्री शाह का स्वगवास कम अवस्था मे ही एक कार दुघटना मे हो गया। श्री शाह का प्रेम सद्व्यवहार और उनकी सेवाएँ रायपुर क्षेत्र ही नही बल्कि पूरा पाली जिला सदव याद रखेगा।

श्री मोती बाबा



श्री मोती बाबाजी चौधरी वसे तो सीरवी समाज के धमगुरु हैं और बिलाड़ा दीवान जी की गादी क एक बाबा (पुजारी) हैं लेकिन रानी स्टेशन पर निवास कर इन्होने राजनीति मे प्रवेश कर लिया और तब स ही जागीरी शोषण के विरुद्ध किसाना के सगठन को सुदढ करने म लगे हैं।

बाबाजी रानी के ब्लाक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे एव जिला पाली कांग्रेस कमेटी म सदस्य रहे। और भी अनेक सामाजिक एव सावजनिक सस्थाआ स इनका सम्बन्ध रहा है। इन्होने रानी मे किसान छात्रावास की भी स्थापना की। आज भी ये अपना अधिकाश समय जिले के गावो मे घूम घूम कर किसानो को सगठित करने म व्यतीत करते हैं। सन् 1957 मे श्री मोती बाबा बाली क्षेत्र से निर्दलीय सदस्य के रूप मे विधायक चुने गये। किसानो और मजदूरा की समस्याआ का उजागर करने म अग्रणी होकर भाग लेते हैं। सीरवी समाज के धमगुरु के नाते सामाजिक मसला को भी निपटाते हैं।



श्री सुखलाल सैणचा



श्री सुखलालजी सणचा का जन्म पाली जिले के पिपलिया गाव म एक साधारण सीरवी किसान परिवार मे हुआ। आपने हाइ स्कूल तक शिक्षा प्राप्त की और इसके बाद पिपलिया म पचायत सचिव के रूप म काय प्रारम्भ किया। इस पद पर रहते हुए आप जन सवा के क्षेत्र म आये व स्वाभाविक नेतत्व के गुण होने के कारण सीरवी समाज के नता बन गये। इस क्षेत्र मे सीरवी समाज की बहुलता और प्रभाव है अत आप को आपरेटिव व अन्य सस्थाओ म विभिन्न पदो पर चुन गये व पाली सैंट्रल को आपरेटिव बैंक के डायरेक्टर और मैनेजिंग डायरेक्टर भी रहे हैं। इसी तरह क्षेत्र व कृषि उपज मडी सोजतरोड व सुमेरपुर के भी निदशक रहे। सोजत को आपरेटिव मार्केटिंग सोसायटी के डायरेक्टर रह कर इन्होन इसका बहुत विकास किया। सीरवी समाज मे शिक्षा, रोजगार व खेती के क्षेत्र मे समाज का मागदशन किया। समाज मे से धार्मिक कुरीतियो को मिटाने और उसे सगठित करने म आपका महत्वपूण योगदान रहा है।

सन् 1968 म आप जिला कांग्रेस कमेटी, पाली के महामन्त्री रहे। सन् 1972 मे आपने कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा का चुनाव जीता। सन् 1977 की जनता लहर म भी श्री सणचा कांग्रेस के टिकट पर ही दुबारा विधायक बने। यह उनकी जन प्रियता का ही प्रमाण है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन आन्दालन क लिए श्री सणचा जिले भर मे प्रसिद्ध रहे हैं।

श्री वल्लभदास अरोड़ा



श्री वल्लभदासजी अरोड़ा पाली शहर के निवासी हैं। पाली म ही आपका अपना व्यवसाय है राजनीति और समाज सवा मे भी आप सक्रिय हैं।

श्री अरोड़ा स्वाधीनता आन्दोलन के वक्त से ही लोक परिषद से जुड़े हुए रहे हैं। श्री मूलचन्दजी डागा के अनन्य साथियो म स



एक है। इनका राजनीतिक चिंतन गूढ़ और हृदयग्राही है पर बदते हुए भ्रष्ट अराजक माहौल में चुप रहकर जीना ही इन्होंने श्रेयस्कर समझा है। यथासम्भव रचनात्मक कार्यों में रुचि अवश्य लेते हैं।

पं. बद्रीनारायण शर्मा

☐

कविराज श्री बद्रीनारायणजी शर्मा बाली के निवासी हैं और यहां विभिन्न गतिविधियों के प्राण हैं। पेशे से शर्माजी वैद्य हैं पर जीवन के प्रारम्भिक काल में ही जन सेवा को समर्पित हैं। विद्यार्थी जीवन से ही ये कलकत्ता व बाली में राष्ट्रीय विचारों से प्रभावित हुए और भावात्मक रूप से राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़ रहे।



बाली व आस पास के सभी गावों के किसानों से इनका निकट का सम्पर्क बना हुआ है। किसानों की समस्याओं के प्रति विशेष जागरूक रहकर तन मन धन से उन्हें निपटाने में लग जाते हैं। शुरू में ही इनका रुझान रचनात्मक प्रवृत्तियों की ओर अधिक रहा है। अब भी सार्वजनिक हित के कार्यों में अपना अधिकांश समय देते हैं। बाली में पूर्व जोधपुर दरबार और यहाँ की जनता के बीच जोहड़ गोचर को लेकर जो संघर्ष चला उसमें शर्माजी ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आन्दोलन के लिए लोगों को संगठित किया। जोहड़ में गाय मवेशी की चराई के कार्य में नेतृत्व प्रदान किया। भूख हड़ताल व धरने पर भी बैठे।

पण्डितजी वर्षों तक नगर कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर रहे और नगरपालिका के सदस्य रहकर अनेक वर्षों तक नगर में विकास के कार्य करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अब तो आप अपना पूरा समय जनसेवा के कार्यों में ही लगा रहे हैं।

श्री गोकुलचंद शर्मा

☐

अपनी धुन के पक्के और निष्ठावान श्री गोकुलचंदजी शर्मा का जिले की राजनीति में विशिष्ट स्थान है। इनके सामंत विरोधी रुख के कारण राजनीति में उनके पक्षधर और विरोधी दोनों ही काफी रहे हैं। श्री शर्मा सुमेरपुर क्षेत्र से केवल एक बार ही कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी के रूप में चुनाव जीत सके हैं पर सामंती व्यवस्था के प्रबल विरोधी होने के कारण इन्होंने कांग्रेस का विरोध करके भी दो बार चुनाव लड़ा है।

यों आप मूलतः पाली जिले के निवासी नहीं है पर काम की खोज में जवाई बांध (एरनपुरा) में आकर बस गये और निर्माण कार्य के ठेके लेने लगे। विधायक के रूप में सुमेरपुर क्षेत्र में इन्होंने जो विकास के कार्य करवाये और लोगों को राहत दिलवाई इससे ये काफी लोकप्रिय हो गये और आज भी स्थानीय जनता में आपका काफी प्रभाव है।



श्री मानवेन्द्रसिंह

☐

श्री मानवेन्द्र सिंहजी रोहट का जन्म पाली तहसील के रोहट ग्राम में हुआ। आप सुशिक्षित और शालीन व्यक्तित्व के धनी हैं। आप रोहट पंचायत समिति के प्रधान रहने के साथ साथ राजनीति में भी सक्रिय रहे हैं।

पाली तहसील के विकास में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सहकारिता के क्षेत्र में भी श्री मानवेन्द्र सिंह सक्रिय रहे हैं और कई वर्षों तक पाली सेन्ट्रल को आपरेटिव बैंक के अध्यक्ष रहे हैं। आपके कार्यकाल में इस बैंक ने बहुत उन्नति की। आप लम्बी अवधि तक पाली जिला परिषद् के उप जिला प्रमुख भी रहे हैं।

श्री सिंह स्वयं शिक्षाविद् हैं और मारवाड़ की प्रसिद्ध व पुरातन शिक्षण संस्था राजपूत हाई स्कूल चौपासनी के सचिव पद पर बीस वर्षों से कार्यरत हैं।





श्री दिनेशराय डांगी



श्री दिनेशरायजी डांगी का जन्म बाली कस्बे में श्री बुद्धारामजी मेघवाल के सम्पन्न परिवार में हुआ था। इनकी पढ़ाई की व्यवस्था बाल्यकाल से ही अच्छी रही और उच्च शिक्षा प्राप्त कर ये राजकीय सेवा में चले गये। सन् 1962 में इन्होंने कांग्रेस पार्टी के टिकिट पर दसूरी क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव लड़ा और विजयी हुए और मंत्री भी बने। अनेक वर्षों तक विधायक और महत्त्वपूर्ण विभागों के मन्त्री पद पर रहे।

सामाजिक क्षेत्र में अनुसूचित जाति के लोगों में शिक्षा के प्रसार में सक्रिय रहे। छात्रों के लिए स्वयं भी छात्रावास खोले और समाज कल्याण विभाग के द्वारा अनेक छात्रावास खुलवाये व छात्र-वृत्तियाँ दिलवाई। ये जिला एवं प्रदेश कांग्रेस में अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे हैं।



श्री मीठालाल जैन



श्री मीठालालजी की जन्मस्थली बाली तहसील का कासलाव गाँव है। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा सुमेरपुर में हुई बाद में उच्च शिक्षा के लिए बम्बई चले आये। आपने सदा गाव में जीवंत सम्पर्क बनाये रखा। इनका राजनैतिक जीवन तो बम्बई से ही जुड़ा हुआ है जहाँ थाणा जिला और ग्राम भायंदर मुख्य कार्यक्षेत्र है। भायंदर पंचायत के सरपंच और बाद में आप थाना जिला परिषद् के अध्यक्ष चुने गये। उस मराठी बहुल क्षेत्र में एक मारवाड़ निवासी का इतने ऊँचे पद पर पहुँचना ही अपने आप में आपकी योग्यता का प्रमाण है।

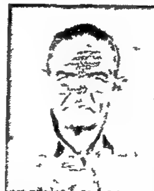
श्री जैन प्रभावशाली वक्ता, मृदुभाषी और व्यवहारकुशल है। जन समस्याओं को लेकर इन्होंने बम्बई में कई आन्दोलनों का सफल संचालन किया है और लोकप्रियता अर्जित की है। जिला परिषद् में भारी भीड़ भड़क्के के बावजूद आप हर एक की बात सुनते हैं और समाधान करते हैं। स्पष्टवादिता और निडरता आपके स्वभाव में कूट कूट कर भरी है।



श्री पृथ्वीसिंह देवड़ा



श्री पृथ्वीसिंह जी देवड़ा पाली जिले की बाली तहसील के बीसलपुर ग्राम के पूर्व जागीरदार हैं। आपको प्रारम्भ से ही जन-सेवा व राजनीति का शौक रहा है। आप ग्राम पंचायत, बीसलपुर के सरपंच रहे और फिर सन् 1967 में स्वतन्त्र पार्टी के टिकट से बाली से विधायक चुने गये। कृषि उपज मण्डी सुमेरपुर के आप प्रथम अध्यक्ष रहे। इस दौरान मंडी यार्ड बनवाया व मंडी का बहुत विकास कर इसे राजस्थान की बड़ी कृषि उपज मण्डियों में स्थान दिलाया। सन् 1977 में आप राजस्थान कृषि मण्डी निगम के अध्यक्ष बने और अपनी योग्यता व अनुभव से राज्य की कृषि उपज मंडियों के संचालन में कई उपयोगी सुधार किये। स्वतन्त्र पार्टी समाप्त होने पर आप लोकदल और अब जनता दल के सदस्य है। अपने क्षेत्र में आप बहुत लोकप्रिय हैं। अपने सद्‌व्यवहार के कारण सभी राजनैतिक दलों के कार्यकर्ता आपका आदर करते है।



श्री फूटरमल बी जैन



श्री फूटरमल बी जैन का जन्म बाली कस्बे में हुआ। आपकी आरम्भिक शिक्षा बाली में तथा उच्च शिक्षा ब्यावर, अहमदाबाद एवं बम्बई में



हुई। चालीस वर्षों से बाली में आप वकालत करते रहे हैं। आरम्भ से ही राजनीति में आपकी रुचि रही है। बाली नगर कांग्रेस कमेटी और ब्लाक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाई और जन समस्याओं के निराकरण में विशेष रुचि ली।

कुछ समय पश्चात् आपने अपना कार्य क्षेत्र बाली तहसील के आदिवासी गरासिया क्षेत्र को बनाया और उनमें जागृति पैदा करने के उद्देश्य से उस क्षेत्र में काफी काम किया। आदिवासियों में राजनैतिक चेतना लाने में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इन दिनों आप राजनीति में अधिक सक्रिय नहीं हैं। वैसे आपकी निष्ठा जनता दल से है। बाली वकील मण्डल के वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं और सामाजिक कार्यों में रुचि लेते रहे हैं।



श्री चक्रवर्तीसिंह

□

श्री चक्रवर्तीसिंह जोजावर एक बड़ी जागीर के उत्तराधिकारी होने के बावजूद साधारण जन की सेवा करते रहते हैं। आपके पिता ठाकुर कमरीसिंह जी सन् 1952 से 57 तक खारची क्षेत्र से ही विधायक रह चुके हैं। इस प्रकार राजनीति आपको विरासत में मिली है।

आप जोजावर ग्राम पंचायत के सरपंच और बाद में खारची पंचायत समिति के प्रधान रहे। आप जनता में बहुत लोकप्रिय हैं और उच्चकोटि के वक्ता हैं। आप राजस्थान चौहान महासभा, मारवाड़ राजपूत सभा और अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के कार्यकारी मण्डल के सदस्य हैं। इसके अलावा कई शिक्षण और धार्मिक ट्रस्टों के संचालक हैं।

अपने सरपंच व प्रधान के कार्यकाल में आपने जोजावर ग्राम और खारची तहसील में बहुत विकास कार्य करवाये। जब क्षेत्र में अकाल पड़ा तो आपने क्षेत्र में अनाज, चारे व मजदूरी का भरपूर प्रबन्ध किया।



श्री अलदाराम मेणा

□

श्री अलदाराम मेणा बाली तहसील के मालणू गांव के निवासी हैं। इनके पिताजी फौज में नौकरी करने के कारण मेणा समाज में प्रसिद्ध थे। आबू के निकट रहने के कारण आपने प्रारम्भिक शिक्षा वहां प्राप्त कर टाउन विभाग में नौकरी करली।

सन् 1962 में नाणा सुमेरपुर विधान सभा क्षेत्र जब जनजाति के लिए सुरक्षित घोषित हुआ तो इन्हीं जातियों में से शिक्षित उम्मीदवार की तलाश शुरू हुई। नाणा के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्ता श्री इस्माइल भाई ने बाली पंचायत समिति के तत्कालीन प्रधान श्री मोहनराजजी से आपका परिचय कराया और आप इस चुनाव में कांग्रेस की ओर से खड़े हुए और विजयी हुए। आबू सुरक्षित क्षेत्र से भी आप विधायक रहे हैं। आपके विधायक बनने से जन जाति के लोगों की समस्याओं को दूर करने में भारी मदद मिली। इन दबे हुए शोषित लोगों में हिम्मत पैदा हुई। भूमिहीनों को भूमि दिलाने में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। आम जनता की समस्याओं का निदान में अपने सहज सहयोग के कारण ये बहुत लोकप्रिय हुए।



श्री रामलाल जैन

□

श्री रामलालजी का जन्म पाली जिले के जैतारण कस्बे में हुआ था पर इनकी कर्मभूमि और सेवा क्षेत्र सादड़ी (गोडवाड़) ही रहा। इनके पिता श्री कवरचन्दजी ने सादड़ी में यातायात क्षेत्र में अपना कारोबार फैलाया और अपनी व्यवहार-कुशलता और व्यापक जन सम्पर्क के कारण अत्यन्त ही लोकप्रिय हो गये।



श्री रामलालजी विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीयता व देश प्रेम की भावनाओ से ओत प्रोत रहे है फलस्वरूप इनके जीवन का प्रारम्भ ही सार्वजनिक सेवा से हुआ है। अपनी कर्त्तव्यपरायणता के कारण ही ये लगातार कई वर्षो तक नगर पालिका सादडी के सदस्य रहे। न्याय पंचायत सादडी के अध्यक्ष चुने गये। जिला कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि एव नगर कांग्रेस के अध्यक्ष अनेक वर्षो से हैं। इन्होने सदैव विकास कार्यों मे रुचि भी दिखलाई और समाज के पिछडे एव गरीब वर्ग के हितार्थ हर कार्य मे अग्रणी रहे। यही कारण है कि इनकी लोकप्रियता व्यापक रही है।

इन दिनो श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी के मंत्री और लोक अदालत, देसूरी के मानद सदस्य है। श्री रामलालजी ने सन् 1977 मे जब कांग्रेस की करारी हार हुई थी आपने क्षेत्र के कार्यकर्ताओ पर अपना नेतृत्व बनाये रखा और इन्दिरा गाधी के नेतृत्व मे जो आन्दोलन हुआ उसमे जेल गये। देसूरी तहसील मे आन्दोलन का सचालन आपने स्वय किया व बिखरे हुए कार्यकर्ता आपके भरोसे पर वापिस एकत्र हुए। गत 40 वर्षों से आप लगातार स्थानीय कांग्रेस की ही नही बल्कि पाली क्षेत्रीय कांग्रेस की भी समय समय पर सहायता करते रहे हैं। आप निष्ठावान कांग्रेसी कार्यकर्ता एव लोकप्रिय नेता हैं।



श्री नाथूसिह



श्री नाथूसिहजी देसूरी तहसील के सिंदरली ग्राम के निवासी है। हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त कर ये कृषि मे व्यस्त हो गये, पर सामंती अत्याचारो के प्रति बाल्यकाल से ही इनके मन मे घृणा बैठ गई थी। सिंदरली के पूर्व जागीरदार हालांकि इनके परिवार के काफी निकट थे पर उनके द्वारा गाव के गरीबो के सताने के दृश्य इन्होने आखो से देखे थे। इन्ही भावनाओ के साथ इन्होने राजनीति मे प्रवेश किया। कई वर्षो से लगातार ये पंचायत समिति के प्रधान चुने जा रहे है। आप जिलास्तरीय कांग्रेस कमेटी मे महत्त्वपूर्ण पदो पर पदाधिकारी भी है। आप अपना अधिकाश समय ग्रामो के विकास का देते हैं। अपने सेवा कार्यों से श्री नाथूसिह जी क्षेत्र मे काफी लोकप्रिय हैं।

श्री नारायणसिह राजपुरोहित



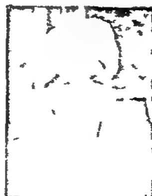
श्री नारायणसिहजी का जन्म देसूरी तहसील मे सादडी के निकट मादा ग्राम के एक सम्पन्न राजपुरोहित परिवार मे हुआ। यह गाव सामन्ती तत्वो का गढ रहा है, किन्तु नारायणसिहजी प्रगतिशील विचारो वाले श्री मथुरादास जी माथुर और श्री नाथूराम जी मिर्धा जैसे वरिष्ठ नेताओ के निकट सम्पर्क मे आने से सामन्त विरोधी जन आन्दोलन से जुड गये।

आपने देसूरी क्षेत्र मे जन जागृति मे उल्लेखनीय योगदान किया। अनेक वर्षो तक अपने गाव मे सरपच पद पर रहे और अपने गाव के साथ साथ अनेक छोटे छोटे गावो मे राजनैतिक चेतना जगाने और विकास के कई महत्वपूर्ण कार्य किए। वर्तमान मे अपने गाव मे ही खेती बाडी करने के साथ साथ राजनीति और समाज सेवा मे भी सक्रिय है।

श्री केशरीमल चौधरी



श्री केशरीमलजी चौधरी का जन्म पाली जिले की देसूरी तहसील के बिजोवा ग्राम मे एक साधारण सीरवी किसान परिवार मे हुआ। बिजोवा और राना मे आपने शिक्षा प्राप्त की। जागीरदारी प्रथा के विरुद्ध किसान आन्दोलन के समय राजनीति मे प्रवेश किया और बिजोवा ग्राम के सरपच बने। श्री केशरीमलजी एक प्रगतिशील किसान है। इनका व्यवहार बहुत मृदु और सरल है और ये जनता के हृदय मे बसने वाले नेता है। पद की लालसा इन्हे कभी नही रही। सत्य, अहिंसा और प्रेम के हामी श्री केशरीमलजी अग्रणी कांग्रेसी नेता के रूप मे पहचाने जाते है जिनकी कथनी और करणी मे कभी फर्क नही आया और विपक्षी भी जिनकी प्रशंसा और आदर करते हैं।



श्री जेठूसिह राजपुरोहित



श्री जेठूसिह जी राजपुरोहित का जन्म पाली जिले की बाली तहसील के यारवा गाव मे हुआ। आप उन्नत तरीको से काश्त करने वाले क्षेत्र के प्रथम काश्तकार

हुई। चालीस वर्षों से बाली में आप वकालत करते रहे हैं। आरम्भ से ही राजनीति में आपकी रुचि रही है। बाली नगर कांग्रेस कमेटी और जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाई और जन समस्याओं के निराकरण में विशेष रुचि ली।

कुछ समय पश्चात आपने अपना कार्यक्षेत्र बाली तहसील के आदिवासी गरासिया क्षेत्र को बनाया और उनमें जागृति पैदा करने के उद्देश्य से उस क्षेत्र में काफी काम किया। आदिवासियों में राजनैतिक चेतना जगाने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन दिनों आप राजनीति में अधिक सक्रिय नहीं हैं। पर आपकी निष्ठा जनता दल से है। बाली वकील मण्डल के कई बार अध्यक्ष रहे और सामाजिक कार्यों में रुचि लेते रहे हैं।

श्री अलदाराम मेणा

□

श्री अलदाराम मेणा बाली तहसील के मालणू गांव के निवासी हैं। इनके पिताजी फौज में नौकरी करने के कारण मेणा समाज में प्रसिद्ध थे। आबू के निकट रहने के कारण आपने प्रारम्भिक शिक्षा वहां प्राप्त कर डाक विभाग में नौकरी करली।

सन् 1962 में बाली सुमेरपुर विधान सभा क्षेत्र जब जनजाति के लिए सुरक्षित घोषित हुआ तो वहां आदिवासियों में से शिक्षित उम्मीदवार की तलाश शुरू हुई। बाली के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्ता श्री इस्माइल भाई ने बाली पंचायत समिति के तत्कालीन प्रधान श्री मोहनराजजी से आपका परिचय कराया और आप इस चुनाव में कांग्रेस की ओर से खड़े हुए और विजयी हुए। आबू सुरक्षित क्षेत्र से भी आप विधायक रहे हैं। आपके विधायक बनने से जन जाति के लोगों की समस्याओं को दूर करने में भारी मदद मिली। इन दबे हुए शोषित लोगों में हिम्मत पैदा हुई। भूमि हीनों को भूमि दिलाने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आम जनता की समस्याओं को निपटाने में अपने सहज सहयोग के कारण ये बहुत लोकप्रिय हुए।

श्री चक्रवर्तीसिंह

□

श्री चक्रवर्तीसिंह जोजावर की बड़ी जागीर के उत्तराधिकारी होने के बावजूद साधारण जन की सेवा करते रहे हैं। आपके पिता ठाकुर अमरसिंह जी सन् 1952 से 57 तक मारवाड़ जंक्शन से विधायक रह चुके हैं। इस प्रकार राजनीति आपको विरासत में मिली है।

आप जोजावर ग्राम पंचायत के सरपंच और बाद में खारची पंचायत समिति के प्रधान रहे। आप जनता में बहुत लोकप्रिय हैं और उत्साही कार्यकर्ता हैं। आप राजस्थान चौहान महासभा मारवाड़ राजपूत सभा और अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के कार्यकारी मण्डल के सदस्य हैं। इसके अलावा कई शिक्षण और धार्मिक ट्रस्टों के सदस्य हैं।

सरपंच व प्रधान के कार्यकाल में आपने जोजावर ग्राम और खारची तहसील में बहुत विकास कार्य करवाये। जब क्षेत्र में अकाल पड़ा तो आपने क्षेत्र में अनाज चारे व मजदूरी का भरपूर प्रबन्ध किया।

श्री रामलाल जैन

□

श्री रामलालजी का जन्म पाली जिले के जैतारण कस्बे में हुआ था पर इनकी कर्मभूमि और सेवा क्षेत्र सादड़ी (गोडवाड़) ही रहा। इनके पिता श्री रूपचन्दजी ने सादड़ी में यातायात क्षेत्र में अपना कारोबार चलाया और अपनी व्यवहार-कुशलता और व्यापक जन सम्पर्क के कारण अत्यन्त ही लोकप्रिय हो गये।



श्री रामलालजी विद्यार्थी जीवन मे ही राष्ट्रीयता व देश प्रेम की भावनाओ से ओत प्रोत रहे हैं फलस्वरूप इनके जीवन का प्रारम्भ ही सार्वजनिक सेवा से हुआ है। अपनी कर्तव्यपरायणता के कारण ही ये लगातार कई वर्षों तक नगर पालिका सादडी के सदस्य रहे। न्याय पंचायत सादडी के अध्यक्ष चुने गये। जिला कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि एवं नगर कांग्रेस के अध्यक्ष अनेक वर्षों से हैं। इन्होंने सदैव विकास कार्यों मे रुचि भी दिखलाई और समाज के पिछडे एवं गरीब वर्ग के हितार्थ हर कार्य मे अग्रणी रहे। यही कारण है कि इनकी लोकप्रियता व्यापक रही है।

इन दिनो श्री लोकाशाह जैन गुरुकुल सादडी के सहयोगी और लोक अदालत देसूरी के मानद सदस्य हैं। श्री रामलालजी ने सन् 1977 में, जब कांग्रेस की करारी हार हुई थी, आपने क्षेत्र के कार्यकर्ताओ पर अपना नेतृत्व बनाये रखा और इन्दिरा गांधी के नेतृत्व मे जो आन्दोलन हुआ उसमे जेल गये। देसूरी पाली में आन्दोलन का संचालन आपने स्वयं किया व बिखरे हुए कार्यकर्ता आपके भरोसे पर वापिस एकत्र हुए। गत 40 वर्षों से आप लगातार स्थानीय कांग्रेस की ही नही बल्कि पाली क्षेत्रीय कांग्रेस की भी समय समय पर सहायता करते रहे हैं। आप निष्ठावान कांग्रेसी कार्यकर्ता एवं लोकप्रिय नेता हैं।



श्री नाथूसिंह



श्री नाथूसिंहजी देसूरी तहसील के सिंदरली ग्राम के निवासी हैं। हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त कर ये कृषि में व्यस्त हो गये पर सामंती अत्याचारों के प्रति बाल्यकाल से ही इनके मन में घृणा बैठ गई थी। सिंदरली के पूर्व जागीरदार हालांकि इनके परिवार के काफी निकट थे पर उनके द्वारा गांव के गरीबो के सताने के दृश्य इन्होंने आंखों से देखे थे। इन्ही भावनाओं के साथ इन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। कई वर्षों से लगातार ये पंचायत समिति के प्रधान चुने जा रहे हैं। आप जिलास्तरीय कांग्रेस कमेटी में महत्त्वपूर्ण पदों पर पदाधिकारी भी हैं। आप अपना अधिकांश समय ग्रामों के विकास को देते हैं। अपने सेवा कार्यों से श्री नाथूसिंह जी क्षेत्र में काफी लोकप्रिय हैं।

श्री नारायणसिंह राजपुरोहित



श्री नारायणसिंहजी का जन्म देसूरी तहसील में सादडी के निकट मादा ग्राम के एक सम्पन्न राजपुरोहित परिवार में हुआ। यह गांव सामंती तत्वों का गढ रहा है, किन्तु नारायणसिंहजी प्रगतिशील विचारों वाले श्री मथुरादास जी माथुर और श्री नाथूराम जी मिर्धा जैसे वरिष्ठ नेताओं के निकट सम्पर्क में आने से सामन्त विरोधी जन आन्दोलन से जुड गये।

आपने देसूरी क्षेत्र में जन जागृति में उल्लेखनीय योगदान किया। अनेक वर्षों तक अपने गांव में सरपंच पद पर रहे और अपने गांव के साथ साथ अनेक छोटे छोटे गांवों में राजनैतिक चेतना जगाने और विकास के कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए। वर्तमान में अपने गांव में ही खेती बाडी करने के साथ साथ राजनीति और समाज सेवा में भी सक्रिय हैं।

श्री केशरीमल चौधरी



श्री केशरीमलजी चौधरी का जन्म पाली जिले की देसूरी तहसील के बिजोवा ग्राम में एक साधारण सीरवी किसान परिवार में हुआ। बिजोवा और राणा में आपने शिक्षा प्राप्त की। जागीरदारी प्रथा के विरुद्ध किसान आन्दोलन के समय राजनीति में प्रवेश किया और बिजोवा ग्राम के सरपंच बने। श्री केशरीमलजी एक प्रगतिशील किसान हैं। इनका व्यवहार बहुत मृदु और सरल है और ये जनता के हृदय में बसने वाले नेता हैं। पद की लालसा इन्हें कभी नही रही। सत्य, अहिंसा और प्रेम के हामी श्री केशरीमलजी अग्रणी कांग्रेसी नेता के रूप में पहचाने जाते हैं जिनकी कथनी और करणी में कभी फर्क नहीं आया और विपक्षी भी जिनकी प्रशंसा और आदर करते हैं।



श्री जेठूसिंह राजपुरोहित



श्री जेठूसिंह जी राजपुरोहित का जन्म पाली जिले की बाली तहसील के बारवा गांव में हुआ। आप उन्नत तरीकों से काश्त करने वाले इस क्षेत्र के प्रथम काश्तकार

हुई। चालीस वर्षों से बाली में आप वकालत करते रहे हैं। आरम्भ से ही राजनीति में आपकी रुचि रही है। बाली नगर कांग्रेस कमेटी और ... कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाई और जन समस्याओं के निराकरण में विशेष रुचि ली।

कुछ समय पश्चात् आपने अपना कार्यक्षेत्र बाली तहसील के आदिवासी गरासिया क्षेत्र को बनाया और उनमें जागृति पैदा करने के उद्देश्य से उस भाग में काफी काम किया। आदिवासियों में राजनैतिक चेतना लाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन दिनों आप राजनीति में अधिक सक्रिय नहीं हैं। कम आपकी निकटता जनता के साथ है। ... के वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं और सामाजिक कार्यों में रुचि लेते रहे हैं।



श्री अलदाराम मेणा



श्री अलदाराम मेणा बाली तहसील के मालगू गांव के निवासी हैं। इनके पिताजी फौज में नौकरी करने के कारण मेणा समाज में प्रसिद्ध थे। आबू के निकट रहने के कारण आपने प्रारम्भिक शिक्षा यहां प्राप्त कर डाक विभाग में नौकरी करली।

सन् 1962 में नाणा सुमेरपुर विधान सभा क्षेत्र जब जनजाति के लिए सुरक्षित घोषित हुआ तो इन्हीं जातियों में से शिक्षित उम्मीदवार की तलाश शुरू हुई। नाणा के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्ता श्री इस्माइल भाई ने बाली पंचायत समिति के तत्कालीन प्रधान श्री मोहनराजजी से आपका परिचय कराया और आप इस चुनाव में कांग्रेस की ओर से खड़े हुए और विजयी हुए। आबू सुरक्षित क्षेत्र से भी आप विधायक रहे हैं। आपके विधायक बनने से जनजाति के लोगों की समस्याओं को दूर करने में भारी मदद मिली। इन दबे हुए शोषित लोगों में हिम्मत पैदा हुई। भूमिहीनों को भूमि दिलाने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आम जनता की समस्याओं को निपटाने में अपने सहज सहयोग के कारण ये बहुत लोकप्रिय हुए।



श्री

श्री ... वर एक बड़ी जागीर ... अधिकारी होते ... साधारण जन का ... रहते हैं। आपके ... केसरीसिंह जी सन् ... 57 तक खारची क्षेत्र से कांग्रेसी विधायक रह चुके हैं। राजनीति आपको विरासत में मिली है।

आप ... ग्राम पंचायत के सरपंच और बाद पंचायत समिति के प्रधान रहे। आप जनता में बहुत ... और उच्चकोटि के वक्ता हैं। आप राजस्थान चौहान मारवाड़ राजपूत सभा और अखिल भारतीय क्षत्रिय कार्यकारी मण्डल के सदस्य हैं। इसके अलावा कई धार्मिक ट्रस्टों के संचालक हैं।

अपने सरपंच व प्रधान के कार्यकाल में आपने ... और खारची तहसील में बहुत विकास कार्य करवाये। अकाल पड़ा तो आपने क्षेत्र में अनाज, चारे व मजदूरी प्रबन्ध किया।



श्री ...

श्री ... जन्म पाली जिले के कस्बे में हुआ था ... कर्मभूमि और ... (गोडवाड़) ही रहा ... पिता श्री ... ने सादड़ी में यातायात क्षेत्र कारोबार फैलाया और अपनी व्यवहार-कुशलता और जन सम्पर्क के कारण अत्यन्त ही लोकप्रिय हो गये।



श्री रामलालजी विद्यार्थी जीवन मे ही राष्ट्रीयता व देश प्रेम की भावनाओ से ओत प्रोत रहे है फलस्वरूप इनके जीवन का प्रारम्भ ही सार्वजनिक सेवा से हुआ है। अपनी कर्तव्यपरायणता के कारण ही ये लगातार कई वर्षों तक नगर पालिका सादडी के सदस्य रहे। न्याय पचायत सादडी के अध्यक्ष चुने गये। जिला काग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि एव नगर काग्रेस के अध्यक्ष अनेक वर्षो से हैं। इन्होने सदैव विकास कार्यों में रुचि भी दिखलाई और समाज के पिछडे एव गरीब वर्ग के हितार्थ हर कार्य मे अग्रणी रहे। यही कारण है कि इनकी लोकप्रियता व्यापक रही है।

इन दिनो श्री लौंकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी के सक्रिय और लोक अदालत, देसूरी के मानद सदस्य है। श्री रामलालजी ने सन् 1977 मे, जब काग्रेस की करारी हार हुई थी, अपने क्षेत्र के कार्यकर्ताओ पर अपना नेतृत्व बनाये रखा और इन्दिरा गाधी के नेतृत्व मे जो आन्दोलन हुआ उसमे जेल गये। देसूरी वाली मे आन्दोलन का सचालन आपने स्वय किया व बिखरे हुए कार्यकर्ता आपके भरोसे पर वापिस एकत्र हुए। गत 40 वर्षो मे आप लगातार स्थानीय काग्रेस की ही नही बल्कि वाली क्षेत्रीय काग्रेस की भी समय समय पर सहायता करते रहे हैं। आप निष्ठावान काग्रेसी कार्यकर्ता एव लोकप्रिय नेता हैं।



श्री नाथूसिह



श्री नाथूसिहजी देसूरी तहसील के सिदरली ग्राम के निवासी है। हाइ स्कूल की शिक्षा प्राप्त कर ये कृषि मे व्यस्त हो गये, पर सामती अत्याचारो के प्रति बाल्यकाल से ही इनके मन मे घृणा बढ गई थी। सिदरली के पूर्व जागीरदार हालाकि इनके परिवार के काफी निकट थे पर उनके द्वारा गाव के गरीबो के सताने के दृश्य इन्होने आखो से देखे थे। इन्ही भावनाओ के साथ इन्होने राजनीति मे प्रवेश किया। कई वर्षो से लगातार ये पचायत समिति के प्रधान चुने जा रहे है। आप जिलास्तरीय काग्रेस कमेटी मे महत्त्वपूर्ण पदो पर पदाधिकारी भी है। आप अपना अधिकाश समय ग्रामो के विकास को देते है। अपने सेवा कार्यों से श्री नाथूसिंह जी क्षेत्र मे काफी लोकप्रिय है।

श्री नारायणसिह राजपुरोहित



श्री नारायणसिहजी का जन्म देसूरी तहसील मे सादडी के निकट मादा ग्राम के एक सम्पन्न राजपुरोहित परिवार में हुआ। यह गाव सामती तत्वो का गढ रहा है, किन्तु नारायणसिहजी प्रगतिशील विचारो वाले श्री मथुरादास जी माथुर और श्री नाथूराम जी मिर्धा जैसे वरिष्ठ नेताओ के निकट सम्पर्क मे आने से सामत विरोधी जन आन्दोलन से जुड गये।

आपने देसूरी क्षेत्र मे जन जागृति मे उल्लेखनीय योगदान किया। अनेक वर्षों तक अपने गाव मे सरपच पद पर रहे और अपने गाव के साथ साथ अनेक छोटे छोटे गावो मे राजनतिक चेतना जगाने और विकास के कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए। वर्तमान मे अपने गाव मे ही खेती बाडी करने के साथ साथ राजनीति और समाज सेवा मे भी सक्रिय हैं।

श्री केशरीमल चौधरी



श्री केशरीमलजी चौधरी का जन्म पाली जिले की देसूरी तहसील के बिजोवा ग्राम मे एक साधारण सीरवी किसान परिवार मे हुआ। बिजोवा और राणा मे आपने शिक्षा प्राप्त की। जागीरदारी प्रथा के विरुद्ध किसान आन्दोलन के समय राजनीति मे प्रवेश किया और बिजोवा ग्राम के सरपच बने। श्री केशरीमलजी एक प्रगतिशील किसान है। इनका व्यवहार बहुत मृदु और सरल है और ये जनता के हृदय मे बसने वाले नेता है। पद की लालसा इन्हे कभी नही रही। सत्य अहिंसा और प्रेम के हामी श्री केशरीमलजी अग्रणी काग्रेसी नेता के रूप मे पहचाने जाते है जिनकी कथनी और करणी मे कभी फर्क नही आया और विपक्षी भी जिनकी प्रशसा और आदर करते हैं।



श्री जेठूसिह राजपुरोहित



श्री जेठूसिह जी राजपुरोहित का जन्म पाली जिले की बाली तहसील के बारवा गाव मे हुआ। आप उन्नत तरीको से काश्त करने वाले क्षेत्र के प्रथम काश्तकार



हैं और उन विरले किसानो मे से हैं जो कम जमीन पर विकसित साधानो और वैज्ञानिक पद्धति से खेती कर यथेष्ठ आमदनी प्राप्त करते हैं। जठूसिंह जी सन् 1954 म प्रथम बार प्रायोगिक तौर पर सामूहिक ग्राम पचायत लूनावा के सरपच चुने गये और 1959 तक लूनावा के सरपच रहे। इसके बाद ग्राम पचायतें छोटी हुई तो 1959 मे बारवा ग्राम पचायत के सरपच चुने गये और तब से अब तक वहाँ सरपच हैं। इस प्रकार लगातार 6 वर्षों तक चुनिन्दा सरपच रहने का आपको श्रेय प्राप्त है।

जागीरदारी ग्राम और सामन्तशाही वातावरण मे भी काग्रस का झण्डा फहराने वाले जठूसिंह जी ने दलितो और गरीबो की हर प्रकार स सहायता की तथा जागीरी जुल्मो से सरक्षण कर ग्राम म समग्र विकास का महत्वपूर्ण काय किया। आप सच्चे कर्मनिष्ठ काग्रसी हैं। बाली पचायत समिति के सभी सरपचो ने आपकी निष्ठा और योग्यता का आदर करते हुए आपको सन् 1988 म प्रधान चुना। आप क्षेत्र म बहुत लोकप्रिय हैं। अनुसूचित जाति व जनजाति के विकास का बहुत बडा काय आपने किया है।



श्री छोगालाल चौधरी



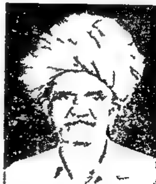
श्री छोगालाल चौधरी पाली जिले की खारची तहसील के देवली आस्वा ग्राम के उन्नतिशील किसानो मे स हैं। आरम्भ से ही काग्रस के निष्ठावान कार्यकर्ता रहे हैं। आपने देवली के सरपच के पद पर और पचायत समिति खारची के उपप्रधान के पद पर काय किया एव पाली जिला काग्रस के अध्यक्ष जसे महत्वपूर्ण पदो पर भी रहे। आप सहकारिता एव किसान आन्दोलना म सक्रिय भाग लेते रहे हैं। क्षेत्र का सामन्ती वर्ग सदव आपके विपक्ष मे रहा है पर किसान वर्ग के आप सच्चे नेता रहे हैं। आप उन्नतिशील विचारो के हैं और सीरवी समाज म जो धार्मिक अ धविश्वास और रूढिवादिता एव दकियानूसी है उसका सदा विरोध करते हुए निष्ठावान बनकर पवित्र जनमना के आधार पर राजनीति करते रहे हैं जिसके कारण अन्ध विश्वासी व रूढिग्रस्त किसानो ने भी आपका साथ नहीं दिया। पर, खा ... क्षेत्र व पाली जिले की पूरी जनता का आपम अटूट प्रेम व विश्वास है। आप सच्चे निलिप्त सत्यवादी व स्वाभिमानी रहे हैं। राजनीति म छल प्रपच एव दाव पेंच से दूर रहे हैं। आपके विपक्षी भी आपका आदर करते हैं आपका स्थान सम्मानजनक व जिले के अग्रगण्य मे है।



श्री व...

पाली जिले पचायत समिति तखतगढ के निवासी ... लालजी बालदीया प्रमुख ... साथ राजनीति म प्रभावशाली भूमिका निभाने वाले ...

तखतगढ पचायत के सरपच चुने जाने पर साधन जुटा कर विकास की अनेक योजनाओ से पलट किया जिससे तखतगढ एक आधुनिक सुविधाओ ... बन गया। श्री बशीलाल जी अपनी कार्यशैली और ... कारण सुमेरपुर पचायत समिति के प्रधान चुने गये। उद्योग बस्ती के विकास मे भी इनका योगदान रहा है ... अत्यन्त लोकप्रिय बाल्दीयाजी जिला काग्रेस कमेटियों पर रह चुके है।



श्री ...रसिंह

श्री ... का जन्म ग्राम देवली जिला पाली म हुआ ... रण किसान ... व्यवहार एव जीवन और शिष्टता के कारण तथा देवली ग्राम व खारची



सीरवी समाज के प्रभावशाली तबके से सम्बन्धित होने के कारण ये खारची विधान सभा क्षेत्र से विधायक रहे। तभी से सक्रिय राजनीति में आये और लगातार भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर विधायक चुने जाते रहे हैं। पार्टी में खगारसिंहजी की बहुत मान्यता है और जनता में आप बहुत लोकप्रिय हैं। अपने सरल व्यवहार और निष्कपट नीति के कारण एक शक्तिशाली किसान नेता के रूप में पक्ष और विपक्ष के सभी लोगों का समान रूप से इन्हें विश्वास प्राप्त है। खारची में जागीरदारों का प्रभुत्व समाप्त करने का श्रेय श्री खगारसिंह जी को ही जाता है।

श्री धनराज जैन



श्री धनराज जैन का जन्म पाली जिले के जैतारण नगर में एक सम्पन्न जैन व्यावसायिक परिवार में हुआ। अपनी शिक्षा पूर्णकर आप वकालात करने लगे और जनता के सम्पर्क में आये। प्रारम्भ से ही जनहित और समाज सेवा में इनकी रुचि रही है। जैतारण क्षेत्र में जागीरदारी जुल्मों के विरुद्ध जन आन्दोलन में आप सक्रिय रहे हैं। कांग्रेस के जिला महामन्त्री, जैतारण ब्लाक कांग्रेस के अध्यक्ष एवं महत्वपूर्ण पदों पर आप रहे हैं। मारवाड़ रिलीफ सोसायटी के माध्यम से आपने अकाल के समय क्षेत्र की अविस्मरणीय सेवा की है। क्षेत्र में अपने सरल और शालीन व्यवहार एवं प्रेम के कारण आप बहुत लोकप्रिय हैं। ईमानदार निर्भीक एवं सक्रिय जनसेवक होने के कारण पूरे जिले के जैन समाज और जनता में आपको काफी आदर की दृष्टि से देखा जाता है।



श्री सुल्तानसिंह



श्री सुल्तानसिंहजी का जन्म 18 जून 1954 को हुआ तथा उदयपुर विश्वविद्यालय से आपने कृषि स्नातक की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा समाप्ति के बाद गाँव में ही कृषि एवं पशुपालन कार्यों में संलग्न हो गये। 1981 में बरकाना ग्राम पंचायत के सरपंच चुने गये तथा ही उसी वर्ष पंचायत समिति रानी के प्रधान पद पर भी विजयी हुए। वर्तमान में भी आप प्रधान के पद को सुशोभित कर रहे हैं।

आप सेवाभावी, मृदुभाषी, व्यवहारकुशल युवा राजनीतिज्ञ हैं। इसके अतिरिक्त अच्छी नस्ल के घोड़ों के विशेषज्ञ हैं तथा स्वयं इनके पास भी अच्छी नस्ल के अनेक घोड़े हैं। आपकी घुड़साल के घोड़ों ने कई बार पुरस्कार प्राप्त किये हैं। पंचायत समिति रानी के चहुँमुखी विकास, कृषि और शिक्षा आदि कार्यों में आप पूर्ण रुचि लेते हैं। अपने क्षेत्र में इसी कारण ये लोकप्रिय हैं।



श्री डूंगरमल खाण्डप



श्री डूंगरमलजी खाण्डप ने पाली जिले के ग्राम निमाज में लोकपरिषद् के पुराने कार्यकर्ता श्री जालूरामजी के घर जन्म लिया था। अपने माता-पिता की अटूट देशभक्ति और जागीरी जुल्मों के विरुद्ध उनके जीवन संघर्ष से प्रेरणा लेकर ये भी सार्वजनिक सेवा में कूद पड़े। अनुसूचित जाति के होने के कारण इन्होंने छुआछूत के विरुद्ध एक अभियान छेड़ा। श्री खाण्डप जिला दलित वर्ग के वर्षों से मन्त्री हैं। सार्वजनिक क्षेत्र में आपके द्वारा की गई सेवायें उल्लेखनीय हैं।



श्री हस्तीमल गुलेच्छा



श्री हस्तीमलजी गुलेच्छा का जन्म पाली तहसील के ग्राम गढ़वाड़ा में हुआ और तत्कालीन सामंती व्यवस्था के विरुद्ध मारवाड़ लोकपरिषद् द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन से आप जुड़े। ग्राम गढ़वाड़ा और उस क्षेत्र के छोटे छोटे जागीरी ग्रामों के निवासियों की हालत लाटा-कूंता, बैठ बेगार लाग बाग के कारण बड़ी दयनीय थी। गुलेच्छाजी ने मारवाड़ लोक परिषद् के जयनारायणजी व्यास, मानमलजी जैन मथुरादासजी माथुर जैसे नेताओं को क्षेत्र में आमन्त्रित कर सभा सम्मेलन आयोजित करवाये और यहां जागृति पैदा की। पीड़ित लोगों के अगुवा बनकर उन्हें मुक्त कराने हेतु कार्य किया इससे आपकी लोकप्रियता बनी।



हैं और उन विरले किसानों में से हैं जो कम जमीन पर विकसित साधनों और यान्त्रिक पद्धति से खेती कर यथेष्ठ आमदनी प्राप्त करते हैं। जेठूसिंह जी सन् 1954 में प्रथम बार प्रायोगिक तौर पर सामूहिक ग्राम पचायत लूनावा के सरपच चुने गये और 1959 तक लूनावा के सरपच रहे। इसके बाद ग्राम पचायतें छोटी हुई तो 1959 में बारवा ग्राम पचायत के सरपच चुने गये और तब से अब तक वहाँ सरपच हैं। इस प्रकार लगातार 26 वर्षों तक चुनिन्दा सरपच रहने का आपको श्रेय प्राप्त है।

जागीरदारी ग्राम और सामन्तशाही वातावरण में भी कांग्रेस का झण्डा फहराने वाले जेठूसिंह जी ने दलितों और गरीबों की हर प्रकार से सहायता की तथा जागीरी जुल्मों से सरक्षण कर ग्राम में समग्र विकास का महत्त्वपूर्ण काम किया। आप सच्चे कर्मनिष्ठ कांग्रेसी हैं। बाली पचायत समिति के सभी सरपचों ने आपकी निष्ठा और योग्यता का आदर करते हुए आपको सन् 1988 में प्रधान चुना। आप क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय हैं। अनुसूचित जाति व जनजाति के विकास का बहुत बड़ा काम आपने किया है।



श्री छोगालाल चौधरी

श्री छोगालाल चौधरी पाली जिले की खारची तहसील के देवली आरवा ग्राम के उन्नतिशील किसानों में से हैं। आरम्भ से ही कांग्रेस के निष्ठावान कार्यकर्ता रहे हैं। आपने देवली के सरपच के पद पर और पचायत समिति-खारची के उपप्रधान के पद पर काम किया एवं पाली जिला कांग्रेस के अध्यक्ष जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर भी रहे। आप सहकारिता एवं किसान आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेते रहे हैं। क्षेत्र का सामन्ती वर्ग सदैव आपके विपक्ष में रहा है पर किसान वर्ग के आप सदैव नेता रहे हैं। आप उन्नतिशील विचारों के हैं और मोरची समाज में जो धार्मिक अंधविश्वास और रूढ़िवादिता एवं दकियानूसी है उसका सदा विरोध करते हुए निष्ठावान बनकर पवित्र जनसेवा के आधार पर राजनीति करते रहे हैं जिसके कारण अन्य विरोधी व रूढ़िग्रस्त किसानों ने भी आपका साथ नहीं दिया। पर खारची एवं पाली जिले की पूरी जनता का आपसे अटूट प्रेम व विश्वास है। आप सदैव निर्लिप्त, सत्यवादी व ईमानदार रहे हैं। राजनीति में छल प्रपच एवं दाव पेच से सदैव दूर रहे हैं। आपके विपक्षी भी आपका आदर करते हैं। कांग्रेस में आपका स्थान सम्मानजनक व जिले के अग्रगण्य समाज में है।



श्री बशीलाल बाल्दीया

पाली जिले की सुमेरपुर पचायत समिति क्षेत्र तख्तगढ़ के निवासी श्री बशीलालजी बाल्दीया इस क्षेत्र के प्रमुख व्यवसायी होने के साथ साथ राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभाने वाले युवक हैं।

तख्तगढ़ पचायत के सरपच चुने जाने पर इन्होंने स्थानीय साधन जुटा कर विकास की अनेक योजनाओं से तख्तगढ़ का कायापलट किया जिससे तख्तगढ़ एक आधुनिक सुविधाओं से युक्त नगर बन गया। श्री बशीलाल जी अपनी कार्यशैली और लोकप्रियता के कारण सुमेरपुर पचायत समिति के प्रधान चुने गये। सुमेरपुर में उद्योग बस्ती के विकास में भी इनका योगदान रहा है। क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय बाल्दीयाजी जिला कांग्रेस कमेटियों में कई पदों पर रह चुके है।



श्री खगारसिंह चौधरी

श्री खगारसिंहजी चौधरी का जन्म ग्राम देवली (आऊवा) जिला पाली में हुआ। ये साधारण किसान परिवार में हैं। व्यवहार एवं जीवन में सरलता और शिष्टता के कारण तथा देवली ग्राम व खारची क्षेत्र के



सीरवी समाज के प्रभावशाली तबके से सम्बंधित होने के कारण ये खारची विधान सभा क्षेत्र से विधायक रहे। तभी से सक्रिय राजनीति मे आये और लगातार भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर विधायक चुने जाते रहे हैं। पार्टी म खगारसिंहजी की बहुत मान्यता है और जनता म आप बहुत लोकप्रिय हैं। अपने सरल व्यवहार और निष्पक्ष नीति के कारण एक शक्तिशाली किसान नेता के रूप मे पक्ष और विपक्ष के सभी लोगो का समान रूप से दृढ़ विश्वास प्राप्त है। खारची मे जागीरदारा का प्रभुत्व समाप्त करने का श्रेय श्री खगारसिंह जी को ही जाता है।

श्री धनराज जैन



श्री धनराज जैन का जन्म पाली जिले के जतारण नगर मे एक सम्पन्न जन व्यावसायिक परिवार मे हुआ। अपनी शिक्षा पूणकर आप वकालात करने लगे और जनता के सम्पक मे आये। प्रारम्भ से ही जनहित और समाज सेवा म इनकी रुचि रही है। जैतारण क्षेत्र मे जागीरदारी जुल्मो के विरुद्ध जन आन्दोलन मे आप सक्रिय रहे है। कांग्रेस के जिला महामन्त्री, जैतारण ब्लाक कांग्रेस के अध्यक्ष एव महत्वपूण पदो पर आप रहे है। मारवाड रिलीफ सोसायटी के माध्यम से आपने अकाल के समय क्षेत्र की अविस्मरणीय सेवा की है। क्षेत्र म अपने सरल और शालीन व्यवहार एव प्रेम के कारण आप बहुत लोकप्रिय है। ईमानदार, निर्भीक एव सक्रिय जनसेवक होने के कारण पूरे जिले के जन समाज और जनता म आपको काफी आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

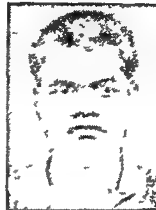


श्री सुल्तानसिंह



श्री सुल्तानसिहजी का जन्म 18 जून 1954 को हुआ तथा उदयपुर विश्वविद्यालय से आपने कृषि स्नातक की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा समाप्ति के बाद गाँव मे ही कृषि एव पशुपालन कार्यो म सलग्न हो गये। 1981 मे वरकाना ग्राम पचायत के सरपच चुने गये बाद ही उसी वर्ष पचायत समिति रानी के प्रधान पद पर भी विजयी हुए। वतमान म भी आप प्रधान के पद को सुशोभित कर रहे हैं।

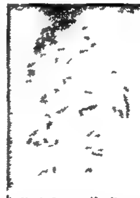
आप सेवाभावी, मृदुभाषी, व्यवहारकुशल युवा राजनीतिज्ञ हैं। इसके अतिरिक्त अच्छी नस्ल के घोडो के विशेषज्ञ हैं तथा स्वय इनके पास भी अच्छी नस्ल के अनेक घोडे हैं। आपकी घुडसाल के घोडो ने कई बार पुरस्कार प्राप्त किये हैं। पचायत समिति रानी के चहुँमुखी विकास, कृषि और शिक्षा आदि कार्यों मे आप पूण रुचि लेते है। अपने क्षेत्र मे इसी कारण ये लोकप्रिय हैं।



श्री डूंगरमल खाण्डप



श्री डूगरमलजी खाण्डप ने पाली जिले के ग्राम निमाज मे लोकपरिषद् के पुराने कायकर्ता श्री जालूरामजी के घर जन्म लिया था। अपने माता-पिता की अटूट देशभक्ति और जागीरी जुल्मो के विरुद्ध उनके जीवन सघष से प्रेरणा लेकर ये भी सावजनिक सेवा म कूद पडे। अनुसूचित जाति के होने के कारण इन्होने छुआछूत के विरुद्ध एक अभियान छेडा। श्री खाडप जिला दलित वग के वर्षो से मन्त्री हैं। सावजनिक क्षेत्र मे आपके द्वारा की गई सेवायें उल्लेखनीय हैं।



श्री हस्तीमल गुलेच्छा



श्री हस्तीमलजी गुलेच्छा का जन्म पाली तहसील के ग्राम गडवाडा म हुआ और तत्कालीन सामती व्यवस्था के विरुद्ध मारवाड लोकपरिषद् द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन स आप जुडे। ग्राम गन्वाडा और उस क्षेत्र के छोटे छोटे जागीरी ग्रामो के निवासियो की हालत लाटा-कूता, बठ बेगार लाग बाग के कारण बडी दयनीय थी। गुलेच्छाजी ने मारवाड लोक परिषद् के जयनारायणजी व्यास मानमलजी जैन, मथुरादासजी माथुर जसे नेताओ का क्षेत्र म आमन्त्रित कर सभा सम्मेलन आयोजित करवाये और यहा जागृति पैदा की। पीडित लोगो के अगुवा बनकर उन्हे मुक्त कराने हेतु काय किया, इससे आपकी लोकप्रियता बढी।



आजादी के पश्चात् अपनी सेवाओं के कारण ये अपने ग्राम गढवाडा की ग्राम पंचायत के बीस वर्षों तक सरपंच चुने जाते रहे। इस दौरान आपने क्षेत्र मे अनेक विकास कार्य सम्पन्न कराये और आज भी सार्वजनिक विकास कार्यों में आप बराबर रुचि लेते हैं।



श्री अमरसिंह मीणा



स्व श्री अमरसिंहजी मीणा का जन्म नाणा स्टेशन के निवासी श्री भंवरलालजी के घर 5 अगस्त 1944 को हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव म ही हुई। इसके बाद पालना कॉलेज म उच्च शिक्षा प्राप्त की। खेती के काम म आपकी रुचि रही। उच्च तकनीक से कृषि कर आपने साबित किया कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी कृषि कार्य से सम्पन्नता अर्जित की जा सकती है।

ग्राम चामुंडरी के ये लगातार सरपंच चुने गये और आदिवासी क्षेत्र के ग्रामों के निवासियों के सर्वांगीण विकास हेतु एवं सामंती तत्वों व शोषण से उनकी मुक्ति कराने के लिए इन्होंने अथक परिश्रम किया। फलस्वरूप उस क्षेत्र के असामाजिक तत्वों ने षडयन्त्रपूर्वक युवावस्था म ही इनकी हत्या करदी।

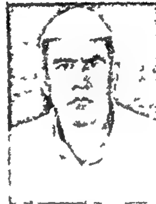
अपनी निर्भीकता और सूझबूझ के कारण श्री मीणा सारे क्षेत्र मे बड़े ही लोकप्रिय थे। इनको ये गुण स्वाभाविक रूप से बचपन से ही अपनी माँ से विरासत म मिले थे। आदिवासी क्षेत्र के कल्याणार्थ कई विकास योजनाओं का सूत्रपात आपके प्रयत्नों से हुआ और काश्तकारों की रुचि उन्नत कृषि की ओर अग्रसर हुई। आपके असामयिक निधन से गरीब और शोषित जनता को बडा धक्का लगा है।

श्री मोहनराज सुराणा



श्री मोहनराजजी सुराणा का जन्म सुमेरपुर कस्बा को आबाद करने वाले नगर सेठ के परिवार म हुआ था। इन्होंने बाल्यकाल से ही अच्छी शिक्षा प्राप्त की। इनके परिवार का भी स्वाधीनता आन्दोलन व अमर सेनानी श्री बी एल राजगुरु को अच्छा सहयोग मिला और ऐसे ही राष्ट्र प्रेम के संस्कारों के कारण मोहनराजजी राजकी विद्यालय के मुख्य अध्यापक का पद छोड़कर जनता की सेवार्थ कांग्रेस संगठन से जुड गये।

वर्षों तक सरपंच रहकर इन्होंने सुमेरपुर के विकास को ग प्रदान की और आज भी सक्रिय हैं। इन दिनों अपने कृषि फार्म पर अधिक ध्यान देते हैं और जन-कल्याण की दृष्टि से जरूरी रचनात्मक कार्यों मे सहयोग प्रदान करते हैं।



श्री मांगीलाल भसाली



श्री मांगीलालजी भसाली का जन्म पाली जिले की मारवाड जंक्शन तहसील के जोजावर ग्राम में श्री ओंकार-चन्दजी भसाली के घर हुआ। आपने ग्राम मे ही साधारण शिक्षा ग्रहण की और शिक्षा के बाद आप राजनीति म भाग लेने लगे।

उस समय के ठाकुर केसरीसिंह जोजावर इस युवा कांग्रेसी कार्यकर्ता से काफी खफा थे इसलिए इनको हर तरह से परेशान किया गया। श्री भसालीजी पर नाना प्रकार के झूठे मुकदमे किए गये पर सच्चाई छिप नही सकी और आप हर मुकदमे मे विजयी हुए। ग्राम के प्रत्येक सामाजिक कार्य विकास के कार्य एवं दलितों की सहायता मे पूर्ण सहयोग देते रहे। आज भी आप उसी उत्साह एवं निडरता से कार्य कर रहे हैं। सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भी आपकी रुचि है।

ठाकुर भैरुसिंहजी



स्व श्री भैरुसिंहजी का जन्म 1920 में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जोधपुर के चौपासनी स्कूल में और उच्च शिक्षा मेयो कॉलेज, अजमेर में हुई। पोलो खेल के अच्छे खिलाडी होने से कॉलेज के होनहार छात्रों में से थे। शिक्षा समाप्ति के बाद घर पर हो बरकाना में कृषि कार्य व पशुपालन कार्य शुरू किया। सन् 1952 में आप बाली क्षेत्र के विधायक रहे। फिर गांव के सरपंच



रह। अच्छे पशुपालन के साथ-साथ घोड़े पालन में विशेष रुचि थी व घोड़ों की नस्ल के बारे में अच्छी जानकारी थी, जिसके कारण राजस्थान में अच्छे घोड़ा के लिए बरकाना का नाम रहा। 1978 में आपका स्वर्गवास हो गया।

श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित

□

श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित ग्राम देवली आउवा के रहने वाले हैं। इनका बंगलौर में काफी अच्छा कारोबार था। देवली से आपका अटूट सम्बन्ध सदा बना रहा है। ये राष्ट्रीय आन्दोलन व विचारों से यहाँ की जनता को अवगत कराते रहते थे। इन्होंने सर्व प्रथम मारवाड़ के किसान नेता बलदेवरामजी मिर्धा को आमन्त्रित कर एक किसान सम्मेलन का आयोजन किया था और तभी से गाँव राजनैतिक चेतना और आन्दोलन का केन्द्र बन गया। श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित इस क्षेत्र में अत्यन्त ही लोकप्रिय हैं और कई वर्षों तक सरपंच के पद पर आसीन रहे हैं।

श्री दिलदार खा 'मुगल'

□

श्री दिलदार खां पाली निवासी हैं। अधिक पढ़े लिखे न होने पर भी राजनीति में आपकी गहरी दिलचस्पी है। श्री मूलचन्दजी डागा के विश्वासपात्र साथी के रूप में इन्होंने राजनीति में प्रवेश किया था। वर्षों तक उनके साथ रहकर पाली क्षेत्र की जनता की सेवा करते रहे हैं। स्वर्गीय श्री मूलचन्दजी की भांति ये भी गांवों में सामन्ती जुल्मों से बराबर लड़ते रहे हैं और आज भी उसी जोश खरोश के साथ संघर्ष करने को तैयार रहते हैं। श्री 'मुगल' ऐसे कार्यकर्ता हैं जो कभी थकने का नाम नहीं लेते। आप ब्लाक और जिला स्तरीय कांग्रेस कमेटियों के वर्षों तक पदाधिकारी रहे हैं और आज भी हैं।

पं. नन्दलाल शर्मा

□

पं. नन्दलालजी शर्मा की जन्म भूमि उत्तर प्रदेश है और वहीं पर इन्होंने आजादी के संघर्ष में भाग लिया था। अपने संस्मरण सुनाते हुए यह प्रबुद्ध स्वतन्त्रता सेनानी जब, उन दिनों में अंग्रेजी राज के सिपाहियों द्वारा जिस प्रकार अत्याचार और दमन किया जाता था तथा जेल में जो यातनाएँ दी जाती थी, उनका सजीव वर्णन करते हैं तो सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

श्री शर्मा को भी जेल में अत्यधिक यातनाएं दी गई थी। बाद में पंडितजी आजीविका के लिए रानी स्टेशन आ गये और वहाँ एक होटल खोल कर अपना व्यवसाय शुरू किया पर साथ ही राष्ट्रीय प्रेम और जागृति का काम भी बराबर करते रहे। इनसे लोग इनके अनुगामी बने और इनके नेतृत्व में यहाँ जन आन्दोलन हुए।

स्थानीय लोगों में इनके प्रति इतनी श्रद्धा है कि वृद्धावस्था में भी इन्हें स्थानीय ग्राम पंचायत का सरपंच चुना गया और इन्होंने विकास के अनेक महत्वपूर्ण काम किये।



पंडित मांगीलालजी

□

खेर रायपुर निवासी श्री मांगीलालजी दिग्गज सन् 1955 में ग्राम पंचायत खेर के सरपंच बने तथा सन् 1959 में पंचायत समिति रायपुर के प्रथम प्रधान चुने गये व सन् 1962 में रायपुर विधान सभा क्षेत्र से विधायक चुने गये।

आरम्भ से ही राजनीति में आपकी रुचि रही है। सरपंच के पद पर रहकर ग्राम पंचायत क्षेत्र में आपने कई विकास कार्य कराये। रायपुर की तहसील के सरपंच एवं रायपुर पंचायत समिति के प्रधान पद पर रहकर आपने पूरे पंचायत समिति क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सिंचाई आदि के साधनों का विकास कार्य करवाये। सन् 1962 में रायपुर के विधायक पद पर निर्वाचित होने पर आपका क्षेत्र खूब बढ़ गया और आपने अपने क्षेत्र में सड़कों का



निर्माण, सिचाई का विकास शिक्षा, बिजली चिकित्सा तथा डाक तार विभाग सम्बन्धी अनेक विकास कार्यों का सम्पन्न कराया। आज भी आप अपने क्षेत्र की जनता की भलाई म लगे हुए हैं।

कामरेड हमीद बेग

☐

स्व श्री हमीद बेग दमूरी के निवासी थे और उच्च शिक्षा प्राप्त कर राजकीय विद्यालय म प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यशील थे। इसी दौरान उनका तबादला ग्राम देवली-पाबूजी स्थित पाठशाला म हुआ और वहाँ आप मोहनराजजी जैन के सम्पर्क म आये। उनम सक्रिय होकर राजनीति म कार्य करने की इच्छा जागी। राजनीति से सम्बन्धित साहित्य भी आपने पढा और दृढ निश्चय किया कि समाज का शोषण मुक्त कराने के लिए प्रगतिशील आर्थिक नीतियो को अपनाना आवश्यक है। नौकरी से इस्तीफा देकर आपने समाज परिवतन के सघर्ष म अपने आपको समर्पित कर दिया।

श्री बेग का चिन्तन अत्यन्त ही स्पष्ट था अत ईमानदारी पूर्वक पूर्ण मनोयोग स जनसेवा म जुट गये। परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति की ओर भी उन्होंने कभी ध्यान नही दिया। काल बडा क्रूर होता है, पर श्री बेग ने तो उससे भी सघर्ष ही मोल लिया। दलितो और गरीबो की शिकायतो की सुनवाई न होने की सूरत में अपनी रुग्णावस्था में ही इन्होंने अदालत के बाहर अनशन व्रत लेकर धरना दिया और अपने प्राणो की आहुति द दी।

श्री गोमाराम जटिया

☐

श्री गोमारामजी जटिया ग्राम बिसलपुर के निवासी है। आप आजादी के पहले स ही लोक परिषद् के आन्दोलन से जुडे रहे हैं। श्री गोमारामजी उच्च शिक्षा प्राप्त न होने पर भी बडे हिम्मती और सघर्षशील व्यक्ति हैं। सारी जिन्दगी इन्होने सामती तत्वो से सघर्ष किया है पर कभी हिम्मत नही हारी।

श्री छोगाराम मेणा

☐

बिसलपुर के ही गोमाराम जी के अनन्य साथी श्री छोगाराम जी मेणा है जो अपनी जान को जोखिम म डालकर भी गरीबो के हितार्थ सघर्ष करते रहे हैं। इन दोनों में अच्छी सगठन शक्ति होने से इन्होंने अनुसूचित जाति एव जनजातियो को सगठित किया है।

श्री देवराज सुराणा

☐

श्री देवराजजी सुराणा का जन्म सुमेरपुर म श्री धनराजजी के प्रतिष्ठित घराने म हुआ। श्री देवराजजी की प्रारम्भिक शिक्षा सुमेरपुर म हुई और शिक्षा के दौरान ही स्वाधीनता आन्दोलन के समय इनका झुकाव राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र सेवा की ओर हो गया। फलस्वरूप व अपना अधिकाश समय जन समस्याओ के निराकरण म देने लगे। इनका पूरा परिवार ही राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित रहा है ऐसा कह तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। नगरपालिका के सदस्य रहे हो या नही इनका निवास स्थान कार्यकर्ताओ से भरा रहता है और स्थानीय तथा क्षत्रीय समस्याओ को निपटाने म व कार्यकर्ताओ के साथ सक्रिय बने रहते हैं। श्री सुराणा पूरे सुमेरपुर क्षेत्र मे अत्यन्त ही लोकप्रिय हैं।

श्री पुखराज गुप्ता

☐

श्री पुखराजजी गुप्ता रायपुर के निवासी हैं। रायपुर के स्वतन्त्रता सेनानियो से प्रेरणा लेकर आज भी जन समस्याओ के समाधान हेतु सघर्ष के लिये सदा तैयार रहते हैं। श्री गुप्ताजी पुराने और अनुभवी कार्यकर्ता है और सामन्ती शोषण के विरुद्ध कई मोर्चो पर लड चुके हैं।

श्री गुप्ता रायपुर नगर पालिका के अध्यक्ष भी रह हैं। नगर ब्लॉक व जिला कांग्रेस के महत्वपूर्ण पदों पर रह कर आपने कुशल नतृत्व प्रदान किया है। रायपुर क्षेत्र म आप बडे ही लोकप्रिय हैं और इन दिनो विकास और रचनात्मक कार्यों मे विशेष रुचि ले रहे हैं।



डॉ पोपट पटेल

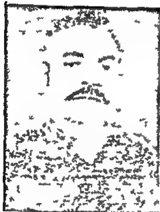
☐

डा पोपट पटेल का परिवार व्यापार की दृष्टि से गुजरात स मारवाड जंक्शन आया। पर, डॉ पोपट की राष्ट्र भक्ति, कर्तव्यनिष्ठा और जन सेवा की उत्कृष्ट भावना के कारण ये यहाँ के लोकप्रिय नेता बन गये। आपने यहाँ विद्यालय



की शिक्षा प्राप्त कर आयुर्वेद विज्ञान मे डाक्टरी की पूर्ण शिक्षा भी ली। अब मारवाड जंक्शन मे अपना कारोबार सफलता पूर्वक कर रहे हैं।

डा पटेल का कार्यक्षेत्र युवा कांग्रेस और सेवा दल से सम्बन्धित होने के कारण वसे तो सारा जिला ही है, पर मुख्यत य खारची और देसूरी क्षेत्र म अधिक समय देते हैं। पाली जिले के युवा वर्ग मे इनका अच्छा प्रभाव है। ग्रामीण क्षेत्र से समस्याए लेकर लोग प्रतिदिन इनके यहाँ आते हैं। इनका अधिकाश समय जनसेवा म ही व्यतीत होता है।



श्री मूलशंकर ओझा

☐

श्री मूलशंकरजी ओझा का जन्म 25 1-1949 को बाली तहसील के दुजाना ग्राम मे पंडित लक्ष्मीरामजी के घर हुआ था। कठिन परिस्थितियो मे शिक्षा ग्रहण कर ये बम्बई चले गये तथा वहा आपने 1972 म कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण करली। निष्ठा स कार्य करते रहने के कारण 1982 मे वार्ड न० 159 से बम्बई युवा कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर चुने गये। फिर कुछ समय बाद ये विक्रोली-बम्बई म ब्लाक कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर चुन लिये गये। सन् 1982 म इनकी ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा से प्रसन्न होकर महाराष्ट्र सरकार ने स्पेशियल एक्जीक्यूटिव मजिस्टेट के पद से सम्मानित किया। य बम्बई में कई सामाजिक कमेटियो के सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं तथा एक सफल पत्रकार भी रहे है।

गाव दुजाना में भी इन्होंने शिक्षा स्वास्थ्य पेयजल आदि विकास कार्यों में अपना योगदान दिया है। साथ ही अपने समाज म फैली कुरीतियों के विरुद्ध भी लडाई लडी जैसे-नशाखोरी, दहेज, मृत्युभोज आदि। ये श्रीमाली समाज म पुनर्विवाह के पक्ष में हैं।

आप आज भी उसी उत्साह स कार्य कर रहे हैं।



श्री सबलसिंह राजपुरोहित

☐

श्री सबलसिंह जी का जन्म बाली तहसील के शिवतलाव गाव म हुआ और प्रारम्भिक शिक्षा के बाद कृषि कार्य मे आप व्यस्त हो गये। गावो मे सामंती अत्याचारों ने इनके दिमाग म विद्रोह की भावना को बलवती बनाया और सन 1960 61 स आपने कांग्रेस पार्टी का समर्थन करते हुए राजनीति म प्रवेश किया। उन्ही दिनों मुडारा सर्किल ग्राम पंचायत के अध्यक्ष चुन गये। अपनी वामपंथी विचारधारा को पुष्ट करते हुए आप साम्यवादी पार्टी के सदस्य बन गये। अपना पूरा समय पार्टी को देते हुए अपने कामरेड साथी मोहनपुरी (बाली) के साथ आदिवासी क्षेत्र मे राजनीतिक जाग्रति का कार्य सफलता पूर्वक संचालित किया।

सन् 1984 85 म श्री सबलसिंहजी बाली पंचायत समिति के उप प्रधान चुने गये और प्रधान श्री रघुनाथजी परिवार के विधायक बनते ही इन्हे प्रधान पद प्राप्त हो गया। आप आज भी राजनीति म सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।



डॉ मदन पी जोशी

☐

डॉ जोशीजी का जन्म सेवाडी ग्राम के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार मे हुआ। स्वभाव से आप राजनीतिक कम और समाजसेवी अधिक हैं, पर राजनीति में आजादी के पूर्व से ही सक्रिय रहे हैं। आजादी मिलने के पश्चात् आप साम्यवादी पार्टी स जुड गये और उसी के चिन्ह पर विधानसभा का चुनाव भी लडा।

अत्यन्त सरल और सेवाभावी डॉ जोशी ने अपना जीवन गरीबो और बीमारो की सेवा में समर्पित कर रखा है। इनके घर पर सुबह से ही गरीब बीमारो की भीड लग जाती है और डॉ जोशी गरीबो की सेवा में लग जाते हैं। जीवन भर निशुल्क सेवा प्रदान करने वाले डॉ जोशी अत्यन्त लोकप्रिय हैं।





श्री पोकरराम सावला



श्री सावलाजी का जन्म नेहड़ा वेरा (सोजत) में विक्रम सवत् 1982 में एक साधारण परिवार में हुआ। यहीं आपने साधारण शिक्षा ग्रहण की। सन 1948 में चूना भट्टा का काम सोजत तहसील के अटपड़ा ग्राम में आपने आरम्भ किया जो आज भी सफलता पूर्वक चल रहा है।

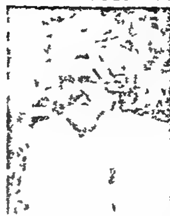
आप सन 1952 में कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बने तथा सन् 1983 से 1986 तक सोजत नगरपालिका के अध्यक्ष पद पर रहे। उस समय आपने सब्जी मण्डी का निर्माण करवाया व नगर में सौचालय नालियों व सड़कों का निर्माण कराया। सोजत में सेवा मण्डल की आपने स्थापना की जिसके तत्वावधान में 8 वर्षों से नेत्र चिकित्सा शिविर सावला भवन, मयापुरा सोजत में लगवा रहे हैं। आप सेवाभावी लोकप्रिय, सरल हृदयी, मृदुभाषी एवं व्यवहारकुशल व्यक्ति हैं।



श्री रूपचन्द बाफना



श्री रूपचन्द जी बाफना का जन्म पाली जिले की बाली तहसील के सेवाड़ी ग्राम में हुआ। आरम्भ में आप बम्बई में व्यापार करते थे और वहीं से राजनतिक जीवन प्रारम्भ किया। सर्व प्रथम 1967 में सुमरपुर से विधायक का चुनाव लड़ा। सेवाड़ी में 1949 में सरपंच और कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बने। इस प्रकार तीन बार सरपंच का चुनाव जीत कर पद पर बने रहे। गरीबों को कपड़ा कम्बल और अनाज हर साल मुफ्त वितरण करते हैं इसी प्रकार गरीब विद्यार्थियों को मुफ्त कपड़े पुस्तकें व फीस देकर सहायता करते हैं। सेवाड़ी गाव में हाईस्कूल, अस्पताल सड़कें कोआपरेटिव गोदाम आदि बनाने में आपने सक्रिय योगदान दिया है। आप बाली ब्लाक कांग्रेस के 10 वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं तथा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग में राजनतिक और सामाजिक सेवा के कार्य करते हैं।



श्री देवराज चौहान



श्री देवराजजी चौहान का जन्म पाली जिले की रायपुर तहसील के मेमदरा ग्राम में हुआ था। क्षेत्र में शिक्षा सुविधा उपलब्ध न होने के कारण अपने स्वयं के प्रयत्नों से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। अनेक वर्षों तक वे क्षेत्र की खानों के एक मात्र सफल ठेकेदार रहे फिर आपका ध्यान कृषि की ओर मुड़ा तो बिराटिया कलां में जमीन खरीद कर अपना निजी फार्म स्थापित किया और बिजली सुविधा ट्रेक्टर और जीप इत्यादि से आधुनिकीकरण कर उसे उन्नतिशील बनाया।

आपने सन् 1956 में समाज सेवा में प्रवेश किया व लगभग 15 वर्षों तक ग्राम सेवा सहकारी समिति बर के मन्त्री पद पर रहे। 12 वर्षों तक ग्राम पंचायत के अध्यक्ष रहे। साथ ही को ऑपरेटिव मार्केटिंग सोसाइटी, रायपुर व को आपरेटिव भूमि विकास बैंक-पाली के डायरेक्टर भी रहे। आप 1971 तक ग्राम पंचायत, बर के सरपंच के पद पर रहे। आपके कार्यकाल में ग्राम पंचायत बर में चहुँमुखी विकास और उन्नति हुई। सन 1981 में ही आप कांग्रेसी प्रत्याशी के रूप में पंचायत समिति रायपुर के प्रधान चुने गये। आपके कार्यकाल में पंचायत समिति रायपुर में विकास के बहुत काम हुए।

विगत अकाल के वर्षों में भी आपने अपने क्षेत्र में सरकारी सहायता और जन सहयोग से अकाल राहत के अनेक कार्य करवाये और जनता की सेवा की। आप किसान वर्ग की माली जाति से हैं और लगभग 10 वर्षों से समस्त पाली जिले के माली समाज के अध्यक्ष हैं। आपने समाज को संगठित कर कांग्रेस के झण्डे के तले लाकर खड़ा किया। श्री चौहान निर्भीक कुशल वक्ता ईमानदार और परिश्रमी राजनेता के रूप में जिले में विख्यात हैं।

श्री दीपचन्द चौहान



श्री दीपचन्द चौहान का जन्म पाली जिले की देसूरी तहसील के खलोप ग्राम के एक सम्पन्न जन परिवार में हुआ। रानी में इनके परिवार का जमा हुआ व्यापार है अतः इनका कार्यक्षेत्र रानी ही रहा। साधारण शिक्षा प्राप्त कर आपने पैतृक व्यापार सम्हाल लिया। ये प्रारम्भ से ही कांग्रेस से जुड़ गये और ग्रामों में बढ़ बेगार और



जागीरदारी जुल्मो के विरुद्ध आंदोलन मे सक्रिय रहे। कांग्रेस संगठन मे इन्होने जिला व ब्लाक स्तर पर महत्वपूर्ण पदों पर काय किया और रानी ब्लाक मे कांग्रेस को संगठित कर प्रभावशाली बनाया।

श्री दीपचन्दजी की गिनती जिले के निर्भीक और ईमानदार सामाजिक कार्यकर्ताओ मे होती है। समाज के सभी वर्गो मे इन्हे प्रतिष्ठा प्राप्त है। अपने राजनैतिक जीवन के साथ ही श्री चौहान कई शिक्षण एव समाजसेवी संस्थाओ से जुड़े हुए हैं। रानी कस्बे के विकास मे इनका प्रमुख योगदान रहा है। गत वर्षों मे अकाल के वक्त भी श्री चौहान ने क्षेत्र मे अकाल सहायता मे काफी काम किया है।



श्री जेठमल सुराणा



श्री जेठमल सुराणा बाली के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटमलजी सुराणा के सुपुत्र हैं। सेवा त्याग, सादगी इन्हे जन्म से ही संस्कारो के रूप मे सहज प्राप्त है। आपने शिक्षा पूरी कर फालना स्टेशन को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया और वही प्रिंटिंग प्रेस और छाता उद्योग लगाया।

श्री सुराणा स्थानीय व जिला स्तरीय कांग्रेस कमेटियो मे पदाधिकारी रह चुके हैं और अच्छे जनोपयोगी सार्वजनिक काय मे स्वेच्छा से लगन पूवक समर्पित भाव से लग जाते हैं। अनेक शिक्षण संस्थाओ व समाजसेवी संस्थाओ से आप जुड़े हुए है और क्षेत्र मे काफी लोकप्रिय हैं।

श्री मनरूपराम मेघवाल



देसूरी तहसील के गजनीपुरा नामक एक छोटे से गाव मे श्री मनरूपरामजी का जन्म हुआ। आपने निकट के ग्राम खोमाडा मे प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। प्रारम्भ से ही इन्होने दलितो और अनुसूचित जाति के हितो के लिए संघर्ष करने का व्रत लिया था। इसी भावना के बलवती होने पर वे राजनीति मे सक्रिय हुए और अपनी पत्नी सहित जिला परिषद् पाली के सहवृत सदस्य चुने गये।

श्री मनरूपरामजी देसूरी सुरक्षित क्षेत्र से विधायक चुने गये और इन्हे गरीबो की भावना बुलन्द करने का मौका मिला। सदा ही निर्भय होकर इन्होने सामंती जुल्मो से टक्कर ली है। जब ये स्वयं दूल्हा बनकर घोडी पर सवार हो,शादी करने निकले तो सामंती तत्वो के उकसाने से उच्च वर्ग के लोगो ने इन्हे घोडी से उतार दिया था पर श्री मनरूपरामजी अड़े रहे और घोडी पर बैठकर ही बारात का जुलूस निकला। इससे अनुसूचित जाति के लोगो का उत्साह बढ़ा। आप आज भी राजनीति मे सक्रिय हैं और अधिकतर समय पाली मे ही रहते है।

श्री छगनलाल पुनमिया



श्री छगनलालजी पुनमिया खण्डाला गाव के निवासी हैं। आजादी के पूर्व से ही स्वतन्त्रता आन्दोलन से साथ आप जुड़े हैं। सामंत विरोधी आन्दोलनो मे इन्होने सक्रिय भूमिका निभाई है। वर्षों तक आपने कांग्रेस व स्थानीय स्तर के पदाधिकारी रहते हुए जनता की सेवा की है। उनका स्वयं का धन्धा कृषि है। किसानो की समस्याए निपटाने और उसके लिए आन्दोलन करने मे ये हमेशा आगे रहे हैं। इसीलिए किसान वर्ग मे बहुत लोकप्रिय हैं।

सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र मे सक्रिय होने से कुछ वर्षों के लिए ये खीमल न्याय पचायत के सदस्य भी रहे। अपना अधिकांश समय जन समस्याओ को सुलझाने मे लगाते हैं इसीलिये फालना-खुडाला नगरपालिका के कई वर्षों से लगातार सदस्य चुने जाते रहे हैं।



श्री इस्माइल भाई



श्री इस्माइल भाई पाली जिले के नाणा ग्राम के एक प्रतिष्ठित व्यापारी घराने मे जन्मे थे। इस परिवार का व्यापार सुदूर आदिवासी क्षेत्र मे फैला हुआ था अतः इस्माइल भाई ने पहाडी क्षेत्र के दूर दराज के ग्रामों मे निवास करने वाले आदिवासियो और ग्रामीणों के अभाव अभियोगों को निकट से देखा था। आपने अपने व्यापार के साथ साथ आदिवासियों के कल्याण के अनेक विकास कार्यों को कराने में रुचि ली है।



अपनी लोकप्रियता के कारण ही ये वर्षों तक बाली तहसील पंचायत और पंचायत समिति बाली के सदस्य रहे। अपनी व्यवहार कुशलता और दूरदृष्टि के कारण ग्रामों में शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल सड़क मार्ग आदि की सुविधाएँ जन साधारण को उपलब्ध करायी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व से ही इनका सम्पर्क कांग्रेस व मारवाड़ लोक परिषद् से हो गया था। क्षेत्र में सभा-सम्मेलनों द्वारा जन जागृति का महत्वपूर्ण कार्य आपने किया था।

सेठ श्री लूणकरण जैन

श्री लूणकरण जी की जीवन कहानी सारे मारवाड़ के आजादी के आन्दोलन में अपने त्याग और बलिदान की गरिमामय कहानी है। श्री लूणकरणजी जतारण तहसील के निम्बोल ग्राम के निवासी हैं। मारवाड़ लोक परिषद् द्वारा जागीरी प्रथा के विरुद्ध चले आन्दोलन से प्रभावित होकर ये भी सक्रिय कार्यकर्ता बन गये। फलस्वरूप जागीरदार और उनके कारिन्दे उनसे सख्त नाराज रहने लगे और उनको जान से मारने का मौका ढूंढने लगे।

श्री लूणकरणजी जतारण क्षेत्र में श्री माधोलालजी क्रान्तिकारी सेठ रिखबदासजी आदि के नेतृत्व में हो रही सभाओं में भाग लेते थे। इसी क्रम में निम्बोल ग्राम की एक सभा में जागीरी गुर्गों ने मौका पाकर लूणकरणजी को घेर लिया था और उनके नाक कान काट दिये थे। इस नृशंस काण्ड की सारे मारवाड़ में तीव्र निन्दा की गयी थी। जागीरदारों की इस पिशाची कार्यवाही पर कोई रोक लगाने वाला ही नहीं था। उन दिनों ग्रामों में दिन रात ऐसे अत्याचार और हमले आम बात थे।

श्री देवाराम गरासिया

श्री देवारामजी गरासिया बाली तहसील के आदिवासी क्षेत्र भीमाना गांव के निवासी हैं। सन् 1957 में बाली निर्वाचन क्षेत्र की सुरक्षित सीट से चुनाव लड़कर कांग्रेस उम्मीदवार की हैसियत से वे विजयी हुए। इससे पूर्व पुलिस विभाग में सेवारत थे।

गरासिया जाति में शिक्षा का प्रचार करने का इन्होंने महत्वपूर्ण काम किया। सामाजिक बुराइयों और गरीबी के विरुद्ध इन्होंने आदिवासियों को जागृत किया और विकास के अनेक कार्यों को सम्पन्न कराया। श्री देवारामजी आज भी वृद्धावस्था के बावजूद सक्रिय हैं और जोशीले भाषणों से जागृति पैदा करते हैं।

श्री प्रेमराजजी बोहरा



स्व श्री प्रेमराज जी बोहरा रायपुर तहसील के पीपलिया ग्राम के निवासी थे। मेसर्स प्रेमराज व गणपतराज नामक प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित पेढी के आप मुखिया थे, जिसका राजस्थान के बाहर भी बड़ा कारोबार था।

सन् 1940-41 के चण्डावल काण्ड से ही उनका नाम स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ और मारवाड़ में जिम्मेदार हुकूमत के लिए लड़े गये संघर्ष से जुड़ गये। उस समय श्री प्रेमराजजी बोहरा मारवाड़ लोक परिषद् की स्थानीय शाखा के अध्यक्ष थे। चण्डावल हो या सोजत या बगड़ी, जहां भी आन्दोलनकारियों पर लाठी प्रहार होता या यातनाएं दी जातीं उनकी सहायतार्थ अपनी कार लेकर आप पहुंच जाते। चण्डावल में हुए भीषण लाठीचार्ज में भी जयनारायणजी व्यास तथा मीठालालजी काका समेत अनेक नेता बुरी तरह घायल हो गये थे सब उन्हें सोजत और जोधपुर अस्पताल तक पहुंचाने और उनकी हर प्रकार से सहायता करने का श्रेय श्री बोहराजी को ही है।

इस परिवार से स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान सेनानियों को बड़ा सहयोग मिला है। आजादी के बाद क्षेत्र में औद्योगिक विकास में इनके पुत्र गणपतराजजी व स्वर्गीय श्री सम्पतराजजी शाह और स्वर्गीय श्री पारसजी शाह का बड़ा योगदान रहा है।

श्री जेठमल लोढा



श्री जेठमलजी लोढा देसूरी तहसील के नारलाई ग्राम में जन्मे और वहीं इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई। पूर्व में नारलाई ग्राम खालसा (जोधपुर दरबार का) था पर बाद में महाराजा अजीतसिंहजी को जागीर में दे दिया गया और जागीरी शोषण लाग बाग बेठ बेगार और बेदखलियों जैसे अत्याचार शुरू हो गये।

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्



इन्ही दिना ग्रामो मे मारवाड लोक परिषद् की शाखा खुली और जेठमलजी लोढा ने जनजागृति का बीडा उठा लिया। ग्राम नारलाई म एक प्रतिष्ठित और सम्पन्न घरान के कारण इन्हे जन समथन प्राप्त हुआ और लोग सगठित हुए।

श्री लोढा का व्यवसाय बम्बई मे है। वे वही निवास करते हैं, पर अभी भी गाव तथा क्षेत्र की सेवा म आपकी रुचि है। शिक्षा के क्षेत्र मे आपकी विशेष रुचि है और अपनी ओर से अपने कन्या विद्यालय का भवन बना कर भेंट किया है। इसके साथ ही मरुधर बालिका विद्यापीठ, वरकाणा विद्यालय आदि अनेक सस्थाओ को आपका सहयोग मिलता रहता है।

श्री भीकमचन्द जैन



श्री भीकमचन्दजी जन का जन्म स्थान यो तो कोसेलाव है, पर अब ये काफी वर्षो से पाली मे ही निवास करते हैं। श्री जैन आजादी के आन्दोलन मे अपनी युवावस्था से ही जुड गये थे।

सन् 1950 से पूव ग्रामो मे ठाकुरो व उनके कारिन्दो का बडा जुल्म व आतक था ऐसे समय मे लोक परिषद व काग्रेस की मीटिंगें करना तो दूर, कोई बात तक नही कर सकता था। पर, कोसेलाव म ही जागीरदार के शिकार का जगल काथनाना हटाने का जो आन्दोलन मोहनराजजी के नतृत्व मे चला उसम भीकमचन्दजी का विशेष योगदान रहा और गाव मे बडी जाग्रति आई। इस जाग्रति के कारण कोसेलाव के निकट के ग्राम खीमाडा मे भी सभा करने हेतु मोहनराजजी को आमन्त्रित किया तो भीकमचन्दजी स्वय कोसेलाव से एक हाथ म लालटन सिर पर पानी की मटकी और बिछाने की जाजम लेकर खीमाडा पहुचे क्योकि खीमाडा मे जागीरदार का आतक ऐसा था कि मीटिंग म आना तो दूर रहा कोई पानी पिलान को भी तैयार नही था। ऐसी विपरीत और कठिन परिस्थिति मे लोक परिषद् के समर्पित कायकर्ता भीकमचन्दजी ने क्षेत्र के ग्रामों की जो सेवा की है वह भुलाई नही जा सकती।



श्री रामलाल आर्य



श्री रामलाल जी आय एक साधारण किसान थे और सोमसर स्टेशन पर निवास करते थे। गुलामी के जमाने म जागीरी प्रथा से पीडित कृषक समाज को जागृत कर उन्ह राहत दिलाने की तमन्ना आप म थी। इसलिये श्री निहाल चन्द जी जन (देवली पाबूजी) के आग्रह पर मारवाड लोक परिषद् के अध्यक्ष बने और सेवा कार्यों मे जुट गये।

सन् 1945 46 के दिना मे मारवाड म जागीरदारो द्वारा बडे पमाने पर काश्तकारो को उनकी बाकी खातेदारी की भूमि स जबरन बेदखल कर दिए जाने पर अभियान चला था। उन्ही दिना आप इन्दरवाडा ग्राम मे काश्तकार थे। जवाली निवासी श्री मूलारामजी चौधरी की बदखली करने के लिए कुछ सामन्ती तत्त्व वहा पहुँचे तो आप मास्टर रामेश्वरजी शर्मा के नेतृत्व म श्री मूलारामजी की मदद करने मौके पर जा पहुँचे। सामन्ती तत्त्वो न बन्दूका स आप पर हमला कर दिया जिससे मूलारामजी तो वही शहीद हो गये और आप अपने अन्य साथियो सहित बुरी तरह से घायल हुए। इस घटना के बाद श्री रामलालजी का उत्साह और बढा और ये जीवपयन्त लोकसेवा मे लगे रहे।



श्री रामगोपाल माली



श्री रामगोपालजी माली वसे तो जोधपुर के मूल निवासी हैं, पर सोमसर के निकट अपना कृषि फाम स्थापित कर कोई 50 वर्ष पूव यही बस गये। रामगोपालजी एक प्रगतिशील विचारो के काश्तकार थे और तत्कालीन जागीरी प्रथा के कारण छोटे-छोटे किसाना पर हो रहे जुल्मा से दुखी रहते थ। गरीबो की हालत सुधारने के लिए आप मारवाड लोक परिषद की देवली-पाबूजी की शाखा के सदस्य बने और अपने साथी रामलालजी आय मास्टर रामेश्वरजी शर्मा श्री रामनिवासजी परिहार, निहालचन्दजी जन व चम्पालालजी भण्डारी के साथ जन जागृति का काय करने लग।

श्री मूलारामजी चौधरी को उनके घर से बेदखल करने के लिए साम ती वग द्वारा किय गय गोलीकाण्ड म रामगोपालजी अपने अन्य साथी मास्टर रामेश्वर जी तथा रामलालजी आय के साथ बुरी तरह घायल हुए और जोधपुर अस्पताल मे कई दिनों तक रहे। श्री रामगोपालजी बडे निर्भीक व्यक्तित्व क धनी थ।



झण्डा न नीचे झुकाना

[राजस्थान केसरी श्री विजयसिंह पथिक]

प्राण मित्रो भले ही गवाना, पर यह झण्डा न नीचे झुकाना ।

तीन रंगा है झण्डा हमारा, बीच चर्खा चमकता सितारा,
शान है यही इज्जत हमारी, सर झुकाती जिसे हिन्द सारी ।
तुम भी सब कुछ मुसीबत उठाना, पर यह झंडा न नीचे झुकाना ।।

है यह आजादपन की निशानी, इसके पीछे है लिखा कहानी,
जिन्दा दिल ही है इसको उठाते, मर्द ही शीश इस पर चढाते ।
तुम भी सब कुछ इसी पर चढाना, पर यह झंडा न नीचे झुकाना ।।

रे क्या भूले हो जलियानवाला, या वो डायर का इतिहास काला,
गोलियां की लगी जब झडी थी, नींव आजादी की तब पडी थी ।
याद हो गर वो खूं में नहाना, तो न झण्डा ये नीचे झुकाना ।।

उसने तो क्या क्या न जुल्म ढाया, पेट के बल भी हमको चलाया,
मां व बहिनों को घर-घर रुलाया, कोसों बच्चों को पैदल चलाया ।
और अब भी न क्या हो रहा है कौन सुख नींद में सो रहा है,
लाखों पाते न भर पेट खाना, सच बोलो तो है जेलखाना ।
है इसी में छिपा यह तराना, होना आजाद या मिट ही जाना ।।

बस करलो अहद मर मिटेंगे, पर व्रत से न तिल भी हटेंगे,
कुछ भी हो ये मुल्क आजाद होगा, उजडा गुलशन भी आबाद होगा ।
गायेंगे आज से सब ये गाना, हिन्द होगा न अब ये जेल खाना ।।

झण्डा यह हर एक किले पर चढेगा, इसका बल रोज दूना बढेगा,
तोप तलवार बेकार होंगे, सोने वाले भी बेदार होंगे ।
सब कहेंगे कि सर ही कटाना, पर यह झण्डा न नीचे झुकाना ।।

शान्त हथियार होंगे हमारे, पर ये तोडेंगे और के दुधारे,
बस भला हो जो अग्रेज मानें, लोभ हिन्दी हकूमत का त्यागें ।
वरना बदला है यह क्या ठिकाना, उससे बदलेगा सारा जमाना ।।

हे प्रभो ! मति धीर हों हम, टेक सत्यत्व पर ही रखें हम,
हम क्या, कह उठा सब जमाना, दूध देखो न मां का लजाना ।
प्राण मित्रो भले ही गवाना, पर यह झण्डा न नीचे झुकाना ।।

कामैती ललकारे थनै, धरती मूड बोल ओ।
मून राखिया मिनख मरैला, मन मे तोल ओ, टेम बोलणरी
वैर ! टेम बोलण री, मून री मुरजाद तूटी ओ टेम०
कुण धरती रो आदु धणी, कुण धरती रो भार ओ।
किण रे हाथा पाके खेती, कुण बेकार ओ कह दे बोल नै
वैर ! कह दे बोल नै जीव तो मुकान्तर जाऊँ ओ—कह दे बोल नै

— श्री पुष्पेन्द्र झाला



स्वर्गीय श्री देवराजजी गुन्देचा की पावन स्मृति का प्रतीक
नव-नाकोडा भैरव पार्श्वनाथ तीर्थ का स्तम्भ

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलिस्ताँ हमारा।

यूनानो मिस्रो रोमा सब मिट गए जहाँ से

अब तक मगर है बाकी नामो निशाँ हमारा।

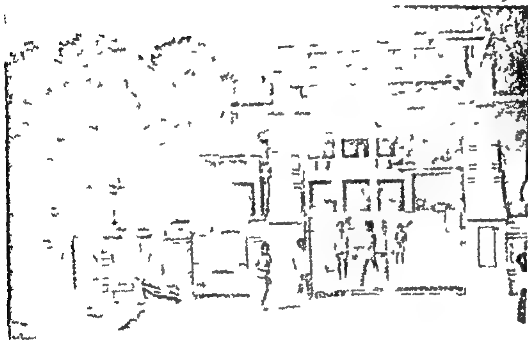
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी

सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा।

वाकिफ़ ने दस्ते बाकि ए आसमाँ नहीं हम

सौ बार कर चुका है तू इम्तिहाँ हमारा।

-मो० इकबाल



श्री कनकराजजी सावतराजजी द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय घाणेराव (पाली)

कनकराज लोढा (घाणेराव)

राष्ट्र सेवा में समर्पित स्वतन्त्रता सेनानियों का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

सौजन्य से

मैसर्स सावतराज तेजराज एण्ड सन्स

20-22 रामसठ स्ट्रीट (छीपी चाल) बम्बई-400 002

फोन कार्या. 330752, 325792 घर 359059

पाली जिले के जन-प्रतिनिधि

(वर्ष, नाम व उपलब्ध चित्र)

सांसद लोकसभा

1952 श्री अजीतसिंह
1957 श्री हरिश्चन्द्र माथुर
1962 श्री जसवंतराज मेहता
1967 श्री एस के तापड़िया
1971 श्री मूलचन्द डागा
1977 श्री अमृत नाहटा
1980 श्री मूलचन्द डागा
1984 श्री मूलचन्द डागा
श्री शंकरलाल
1984 श्री गुमानमल लोढा
1991 श्री गुमानमल लोढा

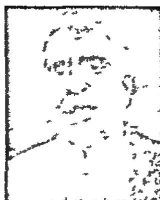
राज्यसभा :

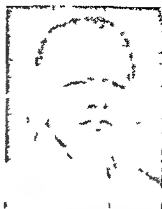
श्री विजयसिंह सिरियारी (1954-64)

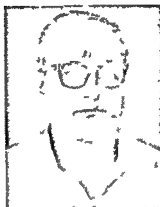
तत्कालीन मारवाड़ राज्य ऐसेम्बली*

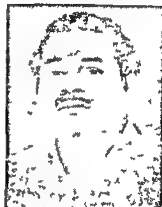
विधानसभा सदस्य

1952	रायपुर	श्री मोहनसिंह
	जतारण	श्री उम्मेदसिंह
	पाली	श्री किशनसिंह
	बाली	श्री भैरूसिंह
	सोजत	श्री केसरीसिंह
	सुमेरपुर	श्री लक्ष्मणसिंह
1957	रायपुर	श्री शंकरलाल
	खारची	श्री मानरूप
	पाली	श्री मूलचन्द डागा
	बाली	श्री मोती (बाबा)
		श्री देवाराम गरासिया
	सोजत	श्री तेजाराम
	देसूरी	श्री मनरूपराम
1962	रायपुर	श्री मांगीलाल रिणवा
	खारची	श्री केसरीसिंह जोरावर
	पाली	श्री केसरीसिंह
	बाली	श्री मोहनराज जैन
	सोजत	श्री तेजाराम
	देसूरी	श्री दिनेशराय डांगी
	सुमेरपुर	श्री मलदाराम


श्री हरिश्चन्द्र माथुर

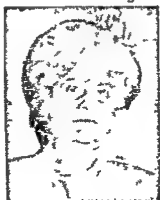

श्री मूलचन्द डागा


श्री शंकरलाल


श्री गुमानमल लोढा

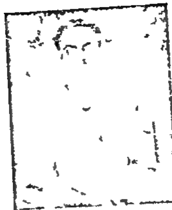

श्री निहालचन्द जगावत*


श्री उम्मेदसिंह

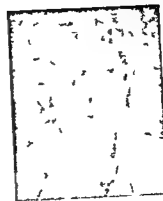

श्री भैरूं सिंह


श्री केसरीसिंह जोरावर

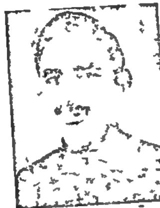
1967	रायपुर	श्री शंकरलाल
	खारची	श्री सुरेन्द्रसिंह
	पाली	श्री मूलचन्द डागा
	बाली	श्री पृथ्वीसिंह
	सोजत	श्री पुखराज कालानी
	देसूरी	श्री दौलतराम
	सुमेरपुर	श्री फूलचन्द बाफना
1972	रायपुर	श्री सुल्तान सणचा
	खारची	श्री दलपतसिंह
	पाली	श्री शंकरलाल
	बाली	श्री मोहनराज जैन
	सोजत	श्री पुखराज कालानी
	देसूरी	श्री दिनेशराय डागी
	सुमेरपुर	श्री सज्जनसिंह
1977	रायपुर	श्री सुल्तान सणचा
	जैतारण	श्री शंकरलाल
	खारची	श्री खंगारसिंह
	पाली	श्री मूलचन्द डागा
	बाली	श्री हनवन्तसिंह
	सोजत	श्री माधवसिंह दीवान
	देसूरी	श्री अचलाराम
	सुमेरपुर	श्री त्रिभान मोदी
1980	रायपुर	श्री सुल्तान सणचा
	जैतारण	श्री श्योदानसिंह
	खारची	श्री भरतसिंह गुर्जर
	पाली	श्री मानकमल मेहता
	बाली	श्री असलम खान
	सोजत	श्री माधवसिंह दीवान
	देसूरी	श्री दिनेशराय डागी
	सुमेरपुर	श्री गोकुलचन्द शर्मा
1985	रायपुर	श्री हीरा सिंह चौहान
	जैतारण	कर्नल प्रतापसिंह
	खारची	श्री खंगारसिंह चौधरी
	पाली	सुश्री पुष्पा जैन
	बाली	श्री रघुनाथ परिहार
	सोजत	श्री माधवसिंह दीवान
	देसूरी	श्री पोकरलाल परिहार
	सुमेरपुर	श्रीमती बीना काक



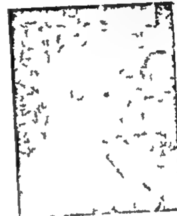
श्री लक्ष्मण सिंह



श्री केसरीसिंह



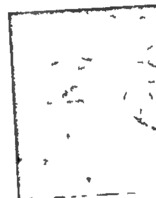
श्री तेजाराम



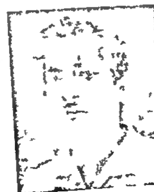
श्री दिनेशराय डागी



श्री अचलाराम मीणा



श्री सुरेन्द्रसिंह



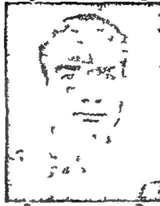
श्री पृथ्वीसिंह



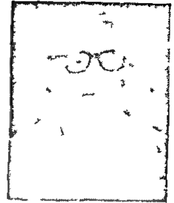
श्री पुखराज कालानी

1990	रायपुर	श्री हीरासिंह चौहान
	जैतारण	श्री सुरेन्द्र गोयल
	खारची	श्री खगारसिंह
	पाली	सुश्री पुष्पा जैन
	बाली	श्री अमृतलाल
	सोजत	श्री लक्ष्मीनारायण दवे
	देसूरी	श्री अचनाराम
	सुमेरपुर	श्री गुनावसिंह

1993	रायपुर	श्री सुखलाल सणचा
	जैतारण	श्री सुरेन्द्र गोयल
	खारची	श्री खगारसिंह चौधरी
	पाली	श्री भीमराज भाटी
	बाली	श्री भैरोंसिंह शेखावत
	सोजत	श्री माधोसिंह दीवान
	देसूरी	श्री अचलाराम
	सुमेरपुर	श्रीमती वीना काक



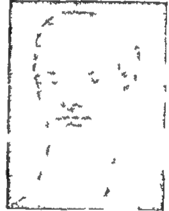
श्री सुखलाल सणचा



श्री दलपतसिंह



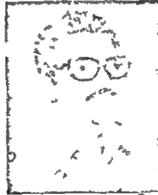
श्री खगारसिंह चौधरी



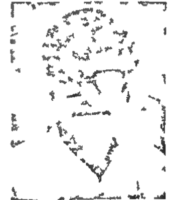
श्री हुनवतसिंह



श्री मांगीलाल आर्य



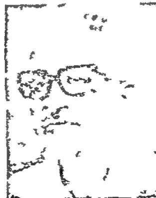
श्री माधवसिंह दीवान



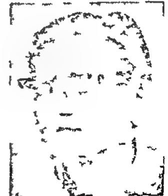
श्री विज्ञान मोदी



डा पोहूमल



श्री श्योदानसिंह



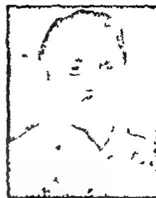
श्री माणकमल महता



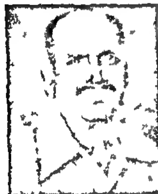
श्री असलम खान



श्री गोकुलचन्द शर्मा



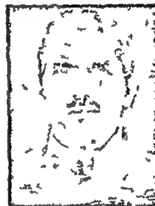
श्री हीरासिंह चौहान



कर्नल प्रतापसिंह



सुश्री पुष्पा जैन



श्री रघुनाथ परिहार



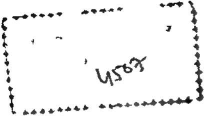
श्री पोकरलाल परिहार

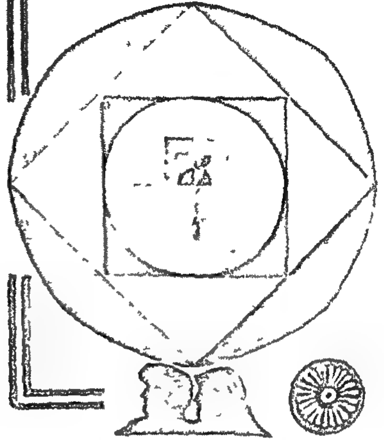


श्रीमती वीना काक



श्री गुलाबसिंह





तीन:

सेवाचरण

- प्रमुख समाजसेवी संस्थाएं
- प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता
- युवा प्रतिभाएं

सेवा-चरण

समाजसेवी संस्थाएं

सामाजिक कार्यकर्ता



4507

भगवान् महावीर अस्पताल, सुमेरपुर

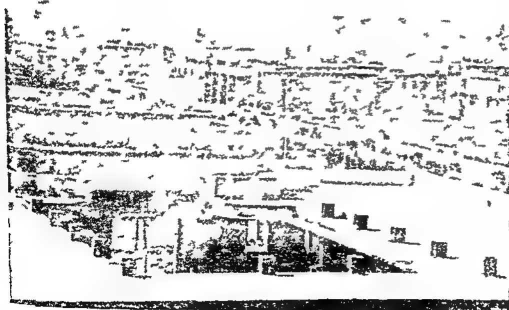
महावीर भगवान् के 2500 वें निवाण महोत्सव की स्मृति मे राजस्थान मेडिकल सोसाइटी एव रिसच सन्टर, सुमेरपुर नामक सस्था की स्थापना की गई। प्रारभ म इस सस्था के सस्थापक कायकता श्री शेरनाथजी अतिरिक्त जिलाधीश पाली श्री एस एम बाफना (भीनमाल) श्री पुखराज जी सिघवी एडवोकेट (सिरोही) श्री मोहनलालजी जैन (पूव विधायक-पाली) प्रमुख रूप से आगे आये। इस सस्था के अ तगत एव से टर द्वारा सचालित भगवान् महावीर अस्पताल के लिए 250 बीघा जमीन प्राप्त की गई और दो करोड रुपये एकत्र करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

सयोग से श्री रतनचदजी राका ग्राम राखी (बाडमेर) को इस योजना का परिचय दिया गया तो उ होने न केवल बहुत बडी धन राशि इस योजना हेतु देना स्वीकार किया, वरन् इस समिति का मुख्य प्रबन्धक बनना भी स्वीकार कर लिया। राकाजी के साथ साथ इस काय मे बीसलपुर निवासी श्री राजमल जी जैन और जैतारण-निवासी श्री जोहरीलाल जी जन भी जुड गये और इन्होने इस काय को आगे बढाने और पूरा करवाने का व्रत ले लिया। इन सब महानुभावो के प्रयत्नो से अनेक दानवीरो ने आगे आकर आर्थिक सहयोग प्रदान किया जिनमे श्री रतनचन्द जी राका के अतिरिक्त, सवश्री तेजराजजी हीराचन्दजी सिघवी सिवगज हीराचन्दजी मेहता-सुमेरपुर, मूलचन्दजी कोठारी बाकली बख्तावरमल जी राका-दान्ई राजमलजी एस जैन बीसलपुर आदि प्रमुख हैं।



राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिहजी को सस्था का परिचय दे रहे हैं श्री मोहनलालजी सिघवी श्री धर्मीच द जी जन आदि

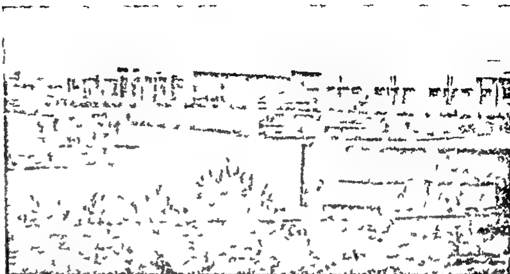
अस्पताल के विशाल भवन का शिलान्यास भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री नीलम सजीव रेड्डी के कर-कमलो द्वारा 17 फरवरी 78 को और उद्घाटन भारत के पूव राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिह जी के कर कमलो से 5 जुलाई 1987 को सम्पन्न हुआ। अब इस अस्पताल के सचालन का कायभार बाली-निवासी श्री मोहन-लाल जी की सिघवी के पास सस्था के मत्री की हैसियत से है।



←भगवान महावीर अस्पताल के विशाल भवन एव परिसर का विहगम दृश्य



भगवान महावीर अस्पताल के भवन का प्रारम्भिक नक्शा बनाने एव निमाण काय मे राजस्थान सरकार के सेवानिवृत्त मुख्य सिंचाई अभियन्ता श्री भीमराज जी शाह-बीजापुर का सराहनीय योगदान रहा है। तत्पश्चात् इसके निर्माण का कार्यभार सुमेरपुर-निवासी श्री गणेशजी विश्वकर्मा ने सभाला और अभी भी सजाने सवारने म वे ही तन मन धन से व्यस्त हैं।



अस्पताल का यह शानदार भवन पश्चिमी राजस्थान की एक महान् उपलब्धि है। इसके सचालक का दावा है कि यहां पर सभी प्रकार की चिकित्सा की सस्ती और आम जनता के लिए सुलभ सुविधायें उपलब्ध करवाई जाती हैं। रोगियो एव सेवा सुश्रूषा मे लगे लोगो के ठहरने हेतु धर्मशालाओ की सुविधा भी उपलब्ध करायी गयी है।

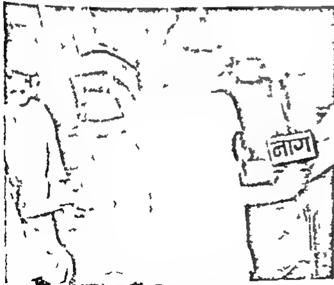




श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय, वरकाणा

श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय, वरकाणा पाली जिले की पुरानी संस्थाओं में एक विशिष्ट संस्था है। जब गोडवाड़ प्रांत में सामाजिक जागृति का पूर्ण अभाव था, अशिक्षा एवं अज्ञान का वातावरण था, उस समय जैनाचार्य परमपूज्यनीय श्री वल्लभ सूरीश्वर जी म०सा० ने समाज को शिक्षित करने, अज्ञान के अंधकार से निकालकर समाज में चेतना पैदा करने का बीड़ा उठाया और उन्हीं की प्रेरणा से माघ शुक्ला पंचमी सं 1983 (सन् 1927) को मात्र 9 छात्रों से वरकाणा में इस विद्यालय की स्थापना की। तभी से यह संस्था समाज के सभी वर्गों को जाति, धर्म, वर्ग आदि के बिना भेद भाव के शिक्षित करती आ रही है। इसने राष्ट्र व समाज को बड़ी मात्रा में सुसंस्कृत सेवा भावी डाक्टर्स, इंजीनियर्स, प्रशासक, प्राध्यापक, समाजसेवी, उद्योगपति, चार्टर्ड एकाउन्टेंट्स, अधिवक्ता आदि दिये हैं तथा आज भी दे रही है जो देश विदेश में राष्ट्र व समाज की सेवा में निष्ठा से रत है।

बालकों में सच्चरित्रता, नैतिकता, धर्मानुराग व सहयोग की भावना, अनुशासन, राष्ट्र प्रेम, सामाजिक सद्भाव, कर्तव्य निष्ठा, आत्मनिर्भरता, गुरुजनों एवं अपने से बड़ों के प्रति सम्मानादि सद्गुण उत्पन्न करना व विकसित करना संस्था का प्रमुख ध्येय है। बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु व्यक्तिगत ध्यान दिये जाने के परिणामस्वरूप सामान्य परिवारों के बालक भी प्रसिद्ध डाक्टर, इंजीनीयर, प्रशासक आदि बन सके हैं।



सहमंत्री श्री भंवरजी मेहता (देसूरी) एक समारोह में विद्यालय की रिपोर्ट पढ़ते हुए



सार-सम्भाल के दौर में संस्था के उपाध्यक्ष श्री फूटरमलजी तथा श्री जीतमलजी जैन, श्री बख्तावरजी राका व अन्य कार्यकर्ता।

धर्म एवं नैतिकता के ज्ञान के बिना जीवन अपूर्ण है। राष्ट्र, समाज व मानव सेवा के अंकुर विद्यालय से फूटते हैं तथा अहिंसा की भावना यहीं से स्थायी रूप धारण करना प्रारम्भ करती है, इस हेतु सुयोग्य धर्म अध्यापकों की व्यवस्था विद्यालय में सदैव से रही है जो सत्य, अहिंसा एवं नैतिकता की शिक्षा देकर आज के इस भौतिक युग में छात्रों को सच्चा व सुखी मानवीय जीवन यापन करने के लिये तैयार करते हैं।

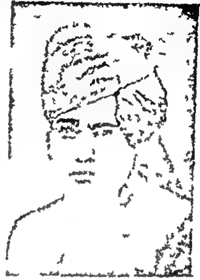
विद्यालय समाजसेवी श्रीमान् स्व. जसराज जी सिंघवी घाणेराव, स्व श्रीमान मूलचंदजी छजमलजी निवासी सादड़ी, स्व श्रीमान् निहालचंदजी गुल्लाजी निवासी बिजोवा, स्व० श्रीमान् मूलचंदजी फौजमलजी निवासी-नारलाई, गृहपति स्व० श्रीमान् सम्पतराज जी भंसाली आदि की विशेष सेवाओं से प्रगति के पथ पर पूरी गति के साथ अग्रसर हुआ। यह विद्यालय सन् 1930 में हिन्दी मिडिल स्कूल बना, सन् 1932 में अंग्रेजी मिडिल स्कूल बना, सन् 1949 में हाई स्कूल बना, सन् 1973 में यह हायर सैकण्डरी स्कूल बना तथा सन् 1989 में यह सीनियर हायर सैकेण्डरी स्कूल बना। विद्यालय में विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग की शिक्षा प्रदान की जाती है।

समाज के उदार दानदाताओं एवं कार्यकर्ताओं की सेवाओं से यह संस्था दिन प्रतिदिन विकास की ओर उन्मुख है। विद्यालय के कार्यकर्ताओं द्वारा सन् 1988 में इसी विद्यालय परिसर में एक पूर्ण अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय संचालित किया जा रहा है जो हमारी संस्कृति एवं सभ्यता के विकास व पोषण सहित अंग्रेजी माध्यम से छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहा है।





विद्यालय के एक समारोह मे सच लक मण्डल के सदस्यगण एव अध्यक्ष श्री कालीदासजी राठौड ।



स्व श्री सम्पतराजजी मसाली
सस्था के आधार स्तम्भ

विद्यालय का जन छात्रावास आधुनिक सुविधाओ से युक्त है ।

बालको के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यालय म विशाल क्रीडा गण यायाम शाला विभिन्न खेलकूद की व्यवस्था के साथ ही सास्कृतिक साहित्यिक व सामा य ज्ञान के पर्याप्त साधन उपलब्ध है । सस्था म फिल्म प्रोजक्टर टेलिविजन रेडियो आदि बालको को स्वस्थ मनोरजन व आधुनिक ज्ञान प्रदान करते है ।

विद्यालय म विज्ञान प्रयोग शालाऐं पूर्णतया साधनोपयुक्त हैं । पुस्तकालय मे अतिरिक्त अध्ययन हेतु विभिन्न विषयों पर पर्याप्त पुस्तकें एव पत्रिकाए हैं । विद्यालय म उपभोक्ता भण्डार बालको को समस्त आवश्यक उपयोग की वस्तुएँ उपलब्ध कराता है । छात्रो को भविष्य म उनकी रुचि व क्षमतानुसार विषय व यवसाय चयन हेतु शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशन प्रदान किया जाता है ।

सस्था म व्यावसायिक उपयोगिता की दृष्टि से कम्प्यूटर प्रशिक्षण, स्टेनो टाईपिस्ट प्रशिक्षण व्यापारिक पत्रव्यवहार प्रशिक्षण, अग्रेजी बोलने का विशेष शिक्षण आदि भी दिये जाते हैं ।



श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन शिक्षण-सघ, फालना

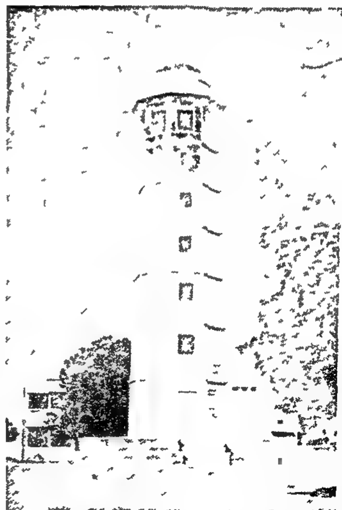
मरुधर प्रदेश की अज्ञान रूपी अंधेरे से ग्रस्त भूमि की तरफ सब प्रथम ध्यान आकर्षित हुआ परम पूज्य प्रात स्मरणीय आचाय देव श्री विजयवल्लभ सूरीश्वरजी म सा का और उन्होने इस प्रदेश के नर नारियो को शिक्षा के प्रकाश से जागृत करने का दृढ निश्चय किया। वि स 1986 मे जालोर जिले के उम्मेदपुर गाव म सुरम्य तथा प्राकृतिक स्थल देखकर एक विद्यालय की स्थापना हुई और उसका नाम श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन बालाश्रम, रखा। कालान्तर मे यही 'बालाश्रम' 'श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जन शिक्षण सघ' के सघन छायादार वट वृक्ष के रूप म विकसित हुआ।

फालना स्थानान्तरण—वि स 1997 मे जवाई नदी मे प्रलयकारी बाढ आयी। बाढ का पानी विद्यालय मे घुस गया। बाढ के समाचार छात्रो के सरक्षको के पास भी पहुचा। वे अपने-अपने छात्रो को घर ले गये और किसी भी कीमत पर पुन विद्यालय म भेजने को राजी नही हुए। नतीजा यह हुआ कि विद्यालय बन्द हो गया। लेकिन अग्रेजी म एक कहावत है *Sometimes good comes out of evil*। आचाय देव और विद्या प्रेमी सज्जनो को विद्यालय के बन्द पड जाने से घोर चिन्ता हुई। उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि आचाय देव द्वारा लगाया हुआ यह विद्या वृक्ष सूख जायगा। पर, इस गहन अधकार मे एक प्रकाश की किरण चमकी एक नया विचार मन म उदय हुआ—'बालाश्रम' को अन्यत्र सुरक्षित स्थान पर स्थानान्तरित करने का।

बालाश्रम का उस समय उत्तरदायित्व था लोकमान्य श्री गुलाबचन्दजी ढड्ढा के कधो पर जो जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस के जनक कहे जाते थे। उन्होने वरकाणा मे एकत्रित श्री सघ गोडवाड से प्रार्थना की और इसी मीटिंग म बालाश्रम का उम्मेदपुर से फालना स्थानान्तरण करने का निर्णय लिया गया। वि स 1998 माघ शुक्ला 8 के शुभ दिन पर बालाश्रम को पुन फालना म प्रारम्भ किया गया। सस्था के लिए एक प्रबध समिति बनी जिसके अध्यक्ष स्वनाम धन्य श्रीमान् मूलचन्दजी छत्रमलजी राठोड, सादडी निवासी बने। सस्था के विकास तथा उम्मेदपुर से फालना लाने मे लोकमान्य स्वनाम धन्य श्री गुलाबचन्दजी सा ढड्ढा का जो सहयोग एव प्रयत्न रहा वह भी चिरस्मरणीय बन गया। फालना का चयन केन्द्रीय स्थान स्वास्थ्यवधक जलवायु तथा विस्तृत पृष्ठ प्रदेश होने के कारण किया गया जो सभी दृष्टियो स उपयुक्त रहा।

व्यवस्थापक समिति के सदस्यो एव श्री ढड्ढा सा के सदप्रयत्नो से सन 1943 मे 15 मई के दिन जोधपुर राज्य के मुख्य मन्त्री सर डोनाल्ड फील्ड के द्वारा विद्यालय भवन का शिला यास हुआ तथा सन् 1948 मे विद्यालय भवन का उदघाटन श्रीमान का नीलाल ईश्वरलालजी के द्वारा सम्पन्न हुआ। शन शनै सस्था उत्तरोत्तर विकास पथ पर अग्रसर होती गई। 1962 ईस्वी म सस्था का नवीन विधान पारित किया गया। विधान के अनुसार 'श्री पार्श्वनाथ उम्मेद *जैन शिक्षण सघ' नया नाम रखा गया। शिक्षण-सघ द्वारा इस समय* निम्न सस्थाओ का सचालन किया जा रहा है —

1 श्री पार्श्वनाथ उम्मेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय
2 श्री पार्श्वनाथ उम्मेद वरिष्ठ उच्च माध्यमिक विद्यालय
3 श्री सरदार जन छात्रावास
4 श्री वल्लभविहार उपाश्रय तथा ज्ञान भण्डार



श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जन कालेज व उच्च माध्यमिक विद्यालय के विशाल परिसर मे सस्था के सस्थापक श्री विजयवल्लभ सूरीश्वरजी की स्मृति मे निर्मित "श्री वल्लभ कीर्ति स्तम्भ"।



श्री पार्श्वनाथ उम्मेद वरिष्ठ उच्च माध्यमिक विद्यालय—संस्था जब उम्मेदपुर से फालना स्थानान्तरण होकर आई तो उस समय विद्यालय में मिडिल स्तर तक अध्ययन कराया जाता था। स्थानान्तरण के तुरन्त पश्चात् छात्रों की संख्या में शनै शनै वृद्धि होती गई और साथ ही शिक्षा के गुणात्मक स्तर में भी अभूतपूर्व वृद्धि होने लगी। सन् 1946 और 1948 में संस्था के विद्यार्थियों ने मारवाड़ इंगलिश मिडिल की सार्वजनिक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर संस्था के गौरव में अभिवृद्धि की। कई वर्षों तक परीक्षाफल भी शत् प्रतिशत रहा। 1950 में हाईस्कूल का प्रथम बैच मैट्रिक परीक्षा में सम्मिलित हुआ। 1958 से 1983 तक हाईस्कूल स्तर रहा।

संस्था ने पढ़ाई के साथ साथ खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्काउटिंग आदि प्रवृत्तियों में भी कई कीर्तिमान स्थापित किये। शिक्षा विभाग द्वारा इस संस्था को एक विशिष्ट संस्था मान्य करके अनुदान का प्रतिशत 70 से बढ़ा कर 80 कर दिया। 1988 की जुलाई में 10+2 योजना के अन्तर्गत विद्यालय को वरिष्ठ उच्च माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत कर दिया गया है। वर्तमान में विद्यालय में पांच सौ से अधिक छात्र अध्ययन रत हैं।

श्री पार्श्वनाथ उम्मेद स्नातकोत्तर महाविद्यालय—*13 जुलाई, 1951* के शुभ दिन यह संस्था इंटर कॉलेज बनी। उद्घाटनकर्ता थे राज्य के शिक्षा मन्त्री श्री मथुरादास माथुर। उन्होंने घोषणा की कि इस संस्था का नाम 'श्री पार्श्वनाथ उम्मेद इंटर कॉलेज' न रख कर 'श्री पार्श्वनाथ महाविद्यालय' ही रखा जाए, क्योंकि उन्हें संस्था के भविष्य का स्पष्ट आभास था। पश्चिम में जोधपुर को छोड़ कर यह प्रथम महाविद्यालय था। प्रारम्भ में स्कूल तथा कॉलेज एक ही भवन में अलग पारियों में चलते थे पर सन 1972 में कॉलेज अपने नये भवन में चला गया। कालेज ने भी विगत वर्षों में शैक्षणिक क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। इस समय महाविद्यालय में त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम कला एवं वाणिज्य में चलता है। एक वर्ष पूर्व महाविद्यालय में बालराई निवासी श्री देवराज दजी सुराणा के सहयोग से कम्प्यूटर ट्रेनिंग का कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। कालेज में शिक्षा अध्ययन के साथ साथ कई पाठ्येतर प्रवृत्तियों का भी संचालन सुयोग्य तथा अनुभवी व्याख्याताओं के निर्देशन में किया जा रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आर्थिक सहयोग से भव्य एवं शानदार पुस्तकालय तथा वाचनालय भवन का भी निर्माण हुआ है, जिसमें विभिन्न विषयों की पुस्तकों की संख्या लगभग बीस हजार से ऊपर है।

छात्रावास भवन—पहले संस्था का अपना छात्रावास भवन नहीं था पर बाद में छात्रावास भवन की आवश्यकता अनुभव की गई और फलस्वरूप एक भव्य दो मंजिले भवन का निर्माण कराया गया। यह छात्रावास भवन 250 विद्यार्थियों के आवास के लिए पूर्ण उपयुक्त है। छात्रावास में पुस्तकालय, वाचनालय एवं खेल सम्बन्धी समस्त सुविधायें उपलब्ध हैं।

विशाल परिसर—शिक्षण संघ का अपना परिसर बहुत ही विस्तृत है। परिसर में भारत विख्यात 'वल्लभ कीर्ति स्तम्भ' उस महान गुरुदेव विजयवल्लभ की कीर्ति का गुणगान करता हुआ खड़ा है।

शिक्षण संघ का अपना एक अतिथि गृह है जो समस्त सुविधाओं से युक्त है। स्व मुनिभूषण वल्लभदत्त विजयजी म सा के अथक प्रयत्नों से निर्मित 'शाश्वत जिन मन्दिर' 'वल्लभ विहार उपाश्रय तथा वल्लभ विहार ज्ञान भण्डार तथा 'ललित कीर्ति स्तम्भ' शिक्षण संघ की शान में अभिवृद्धि कर रहे हैं।

भूतपूर्व पदाधिकारियों में श्री पृथ्वीराजजी हजारीमलजी, श्री जसराजजी धनरूपजी, श्री मुकनचन्दजी मनोपचन्दजी, श्री सागरमलजी सा चोपड़ा आदि के नाम सदैव आदर से लिये जाते रहेंगे। संस्था ने 1974 में अपना रजत जयंती महोत्सव बम्बई में बहुत ही शानदार एवं भव्य तरीके से मनाया। सन् 1992 में संस्था की स्वर्ण जयंती मनाने की तैयारियां अभी से प्रारम्भ हो गयी हैं।

गुरुदेव विजयवल्लभ द्वारा आशीर्वादित एवं गुरुदेव विजय ललितजी द्वारा सिंचित यह विद्या उद्यान निरंतर विकास की ओर अग्रसर होता हुआ अपनी खुशबू दिग्दिगन्त में प्रसारित कर रहा है।

—मघराज मेहता, पूर्व प्रधानाचार्य,
श्री पा उ व उ वि फालना



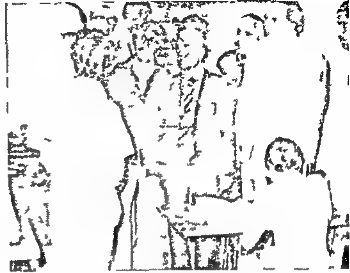
श्री मरुधर केसरी उच्च माध्यमिक विद्यालय, राणावास

आज से 17 वर्ष पूर्व श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन समाज के कुछ उत्साही सेवाभावी महानुभावों ने इस क्षेत्र में एक ऐसे विद्यालय की स्थापना करने का निर्णय लिया जिससे छात्रों में चारित्रिक बल एवं धार्मिक भावना का विकास हो और वे देश के योग्य एवं उत्तरदायी नागरिक बन सकें।

पूज्य गुरुदेव श्रमण-सूर्य स्वर्गीय मरुधर केसरी मिश्रीमलजी म०सा० की प्रेरणा से एवं संघ के प्रमुख कार्यकर्ताओं – स्वर्गीय फूलचन्दजी कटारिया स्वर्गीय इन्द्रसिंहजी मुणोत एवं श्री लालचन्दजी पुगलिया के प्रयत्नों से छात्रावास के साथ साथ विद्यालय के भवन का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ।

अंग्रेजी अक्षर 'H' की आकृति में बना विशाल एवं सुन्दर विद्यालय भवन है जिसमें 10 कक्षा कक्ष एवं 6 अतिरिक्त कक्ष हैं। सभी कक्षा-कक्षों के सामने विशाल बरामदा बना हुआ है। विद्युत तथा जल की पूर्ण सुविधाएँ उपलब्ध है। भवन के सामने ही लगभग 6 बीघा भूमि में सुन्दर हरी भरी वाटिका है। भवन के पीछे के भाग में खेल मैदान उपलब्ध है। विद्यालय का अपना एक कृषि फार्म भी है। यहाँ पक्का कुआ बना हुआ है जिस पर विद्युत-सुविधा उपलब्ध है।

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रेखचन्दजी राका बगडीनगर, प्रसिद्ध एडवोकेट श्री सम्पतमलजी जैन-पाली तथा सेवाभावी श्री इन्द्रचन्दजी सचेती–पाली इस विद्यालय के विकास में पूर्ण रुचि ले रहे है साथ ही शिक्षाविद्, कुशल प्रशासक एवं सुविज्ञ श्री चन्दनमलजी गुडलिया की सतत देखरेख में विद्यालय का संचालन सुचारुरूप से हो रहा है। आप संस्था में मानद-निदेशक के पद पर कार्य करते हुए विद्यालय के चतुर्दिक विकास के लिये प्रयत्नशील है।



श्री यामचन्द मेहता कला एवं उद्योग संस्थान में शिक्षा मन्त्री श्री चन्दनमलजी बैद एवं श्री चन्दनमलजी गुडलिया आदि।



संस्था का विशाल भवन



श्री थानचन्द मेहता कला एव उद्योग सस्थान

राजस्थान के प्रसिद्ध उदारचित्त विधिवेत्ता थानचन्दजी मेहता, एडवोकेट द्वारा प्राप्त आर्थिक सहयोग से सस्थापित यह सस्थान इस विद्यालय भवन का विशिष्ट अग है। इस सस्थान द्वारा सगीत कला चित्रकला, काष्ठ कला तथा सीवन कला आदि का छात्रो को प्रशिक्षण देकर उन्हे स्वावलम्बी बनाने तथा उनमे श्रम के प्रति आदर की भावना को उत्पन्न करने की दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किया जा रहा है।

नवीन मूल्याकन योजना

यह योजना इस विद्यालय की अतिविशिष्ट योजना है, जिसकी शिक्षाविदो एव देश की सर्वोच्च सस्था राष्ट्रीय शिक्षा अनुसन्धान एव प्रशिक्षण परिषद् नईदिल्ली ने भी सराहना की है। इसके अन्तगत कक्षा 6 से 8 तक के छात्रो को पारम्परिक परीक्षा प्रणाली से मुक्त रखा गया है। इकाई योजना के आधार पर शिक्षण व्यवस्था कर इकाई समाप्ति पर मूल्याकन व्यवस्था की जाती है। मूल्याकन के आधार पर निदानात्मक शिक्षण कराया जाकर पुन जाच की जाती है। सम्पूर्ण इकाइयो का समेकित मूल्याकन कर कक्षोन्नति का स्तर प्रदान किया जाता है। इस योजना को शिक्षा विभाग ने भी मान्यता प्रदान की है।

इस विद्यालय मे हिन्दू ईसाई, सिक्ख मुसलमान सभी धर्मों के छात्र एव छात्राए है। एक ओर अत्यन्त सम्पन्न घराने के छात्र है तो दूसरी ओर आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े, हरिजन तथा पिछड़ी जातियो के छात्र भी हैं। आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्रों को नि शुल्क शिक्षा दी जाती है।

श्री बाल सहकारी समिति

विद्यालय के छात्रो को रियायती दर पर पाठ्यसामग्री तथा अन्य दैनिक उपयोग की आवश्यक सामग्री सुलभ कराने के उद्देश्य से बाल सहकारी समिति द्वारा विद्यालय भवन मे ही छात्र उपभोक्ता भण्डार का सचालन किया जा रहा है।



श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन शिक्षण सघ, राणावास

इस सस्था की नीव के पत्थर हैं श्री चम्पालालजी पुगलिया। त्यागमूर्ति चम्पालालजी ने आचार्य सम्राट आनन्द ऋषिजी म०सा० के शुभाशीर्वाद से स० 2011 मे वर्द्धमान स्थानकवासी जैन छात्रालय के विशाल प्रतिष्ठान की नीव डाली। आपका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली था। विद्या की इस वाटिका को सरस व हराभरा बनाया राणावास निवासी श्री फूलचन्दजी कटारिया ने। आप कुशल व शिक्षा प्रेमी व्यक्ति थे। उनके कर्मठ साथी थे जोधपुर निवासी श्री इन्द्रसिंहजी मुणोत जो स्वय धुन के पक्के थे। उन्होने जो कुछ करना विचार लिया, उसे करके दिखाया। नि स देह, रास्ते मे अनेक बाधायें आयीं, किन्तु व उन पर विजय पाते रहे। कभी असफल नही रहे। वित्तीय सकट भी आये परन्तु आत्म विश्वास व लोगों के आशीर्वाद से अडिग बने रहे।





मरुधर बालिका विद्यापीठ, विद्यावाडी

सन् 1945 मे गोडवाड क्षत्र के जैन युवको ने समाज सुधार की दृष्टि से बाली म मारवाड जन युवक सघ की स्थापना की थी। इस सस्था न चार पाच वर्षो तक निर तर पश्चिमी राजस्थान मे जन जागृति का सराहनीय काय किया। इ ही लोगो ने यह सोचना आरम्भ किया कि अब इस क्षत्र म छात्राओ के लिए भी एक आवासीय माध्यमिक विद्यालय खोलना आवश्यक हो गया है। जब खीमेल निवासी श्री केसरीमलजी महता न सन् 1954 55 म सर्वोदय क द्र खीमल क निकट सस्था के योग्य भूमि बहुत कम कीमत म उपल ध होन की सूचना अपन न उत्साही मित्रो को दी तो उ होने इस पर गम्भीरता से विचार किया और सन् 1956 म बम्बई मे मरुधर महिला शिक्षण सघ की स्थापना कर भूमि खरीदी। 14 अक्टूबर 1956 को विजयादशमी के दिन सर्वोदयी नता श्री सिद्धराज ढड्ढा के कर कमलो से विद्यापीठ भवन का शिलान्यास कराया गया तथा 15 अगस्त, 1957 से इस भवन मे तीन छात्राओ से शिक्षण काय प्रारम्भ हुआ।

सस्था का नाम श्री मरुधर बालिका विद्यापीठ रखा गया। अधिकाश क यकर्ताओ का व्यवसाय राजस्थान से बाहर होने के कारण गोडवाड क्षत्र के जाने मान राजनीतिक कायकर्ता व स्वत त्रता सनानी श्री फूलच द बाफना को सस्था की देख रेख एव विकास का द यित्व सौंपा गया।

सस्था के सस्थापको मे निम्नाकित नाम उल्लेखनीय हैं—

1 श्री केसरीमलजी मेहता खीमेल (बम्बई)
2 श्री हीरालालजी जुहारमलजी जन बिजोवा (बम्बई)
3 स्व श्री तजराजजी राणावत खुडाला
4 श्री फूलच दजी बाफना साण्डी
5 श्री मोहनराजजी जन बाली
6 श्री जीवराजजी मेहता बाली (बम्बई)
7 श्री सेषमलजी भण्डारी सादडी (मद्रास)
8 स्व श्री फूलच दजी के सिघवी तखतगढ (पूना)
9 श्री छगनलालजी केरिंग साडराव (पूना)
10 स्व श्री सोमच दजी बनाजी, जीवाणा पूरणा (बम्बई)
11 श्री शेषमणीजी भण्डारी सादडी (बम्बई)
12 श्री पुखराजजी चौहान बिजोवा (बम्बई)

सस्था के शक्षणिक विकास तथा सहशक्षिक प्रवृत्तियो के प्रचार तथा अध्यापिकाओ के प्रशिक्षण एव उनके काय का निरीक्षण आदि



श्रीमती सुभद्राजी जैन महामहिम राष्ट्रपति श्री वकटरमण से शिक्षक दिवस 1990 पर पुरस्कार प्राप्त करती हुयीं।

करने क लिए प्रो गणपतिच द्रजी भण्डारी, जोधपुर की सवायें प्राप्त की गयी। वे आज भी सस्था को अपनी सेवायें दे रहे है।



श्री गणपतिच द्रजी भण्डारी

श्री हीरालालजी जन बिजोवा जब से सस्था के अध्यक्ष बने हैं उनके और अ य कायकर्ताओ के सक्रिय सहयोग स सस्था सभी दिशाओं मे तजी से प्रगति करने लगी है और सन् 1980 के बाद तो उसकी बहुमुखी विकास की गति और अधिक तीव्र हो गई है। यह सस्था आज राजस्थान की अग्रणी शिक्षण सस्थाओ म मानी जाने लगी है। सन 1978 मे श्रीमती सुभद्रा जन पूव प्रधाना ध्यापिका को उनकी अपूव निष्ठा असाधारण योग्यता के कारण व्यवस्थापिका के पद पर नियुक्त किया गया तथा श्रीमती पुष्पा सोनी को मुख्याध्यापिका बनाया गया। इस नई व्यवस्था के बाद





श्रीमती पुष्पाजी सोनी

आश्चर्यजनक प्रगति युक्त परिवर्तन आया। छात्राओं की संख्या 600 से भी ऊपर निकल गई। संस्था को बोर्ड से श्रेष्ठ परीक्षाफल पर कई बार ट्राफी तथा हजारों रुपये नकद पुरस्कार स्वरूप मिले। खेल कूद में यहाँ की छात्राओं का चयन अखिल भारतीय स्तर पर होने तथा और गाईडिंग में भी विद्यालय की कम्पनी ने राष्ट्रीय स्तर तक भी अपनी पहचान बनाई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अपूर्व सफलताओं ने संस्था के अनेक मित्र और सहयोगी पैदा किये तथा उसकी कीर्ति में चार चाँद लगाए।

आज संस्था को 90 प्रतिशत सरकारी अनुदान मिलता है। राज्य सरकार की ओर से इसको अति प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था के रूप में मान्य किया गया है। संस्था वर्ष में दो बार विद्यावाड़ी सन्देश के नाम से अपनी प्रवृत्तियों का विवरण छपवाकर सभी अभिभावकों सदस्यों और सहयोगियों को भेजती है।

शैक्षणिक विषयों के साथ-साथ संगीत नृत्य अभिनय, भाषण कविता पाठ आदि का शिक्षण दिया जाता है। नैतिक शिक्षा आदि का शिक्षण भी दिया जाता है। नैतिक शिक्षा के कालांश में जैन धर्म के साथ साथ रामायण और गीता की कक्षाएं लगती हैं। नैतिक शिक्षा सर्वोदय सामान्य ज्ञान एवं जैन धर्म की परीक्षाएं भी ली जाती हैं। संस्था में हाकी बास्केट बाल, वालीबाल आदि खेलों की व्यवस्था है। जिमनास्टिक लेजियम डम्बल्स व योगासन भी सिखाये जाते हैं।

संस्था में सभी छात्राओं को अपने अपने धर्म के पालन की स्वतन्त्रता है किन्तु कर्मकाण्ड की अपेक्षा भावना की शुद्धता व नैतिक आचरण पर विशेष बल दिया जाता है।

शिष्ट व्यवहार सिखाने के लिए छात्राओं को उनके नाम के आगे जी लगा कर सम्बोधित करने का नियम है। शारीरिक दण्ड वर्जित है। गलती करने पर अपनी त्रुटि स्वीकार करके क्षमा याचना करने की प्रेरणा दी जाती है। विभिन्न धर्मों एवं जातियों की छात्राएं परस्पर प्रेम से रहती हैं।

विद्यावाड़ी राजस्थान की प्रथम संस्था है जहां के तीन शिक्षकों को राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर आदर्श शिक्षक के रूप में पुरस्कृत किया गया है। विद्यावाड़ी की व्यवस्थापिका श्रीमती सुभद्रा बहिन को राष्ट्रीय स्तर पर संस्था के शिक्षा व्यवस्थापक श्री गणपतिचन्द्रजी भण्डारी को राष्ट्रीय स्तर पर स्काउट आन्दोलन में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए तथा प्रधानाध्यापिका सुश्री पुष्पा सोनी को राजस्थान सरकार द्वारा आदर्श शिक्षिका के रूप में सम्मानित किया जा चुका है।

यह संस्था संस्कारवान् महिला शक्ति का निर्माण कर देश में व्याप्त अनेक समस्याओं कुरूढ़ियों एवं बुराइयों को मिटाने का निरन्तर प्रयास कर रही है।

संस्था की संचालन व्यवस्था मरुधर महिला शिक्षण संघ द्वारा की जाती है जिसका उद्घोष है

लक्ष्य हमारा संस्था का हित
नारी का कल्याण,
तथ्य मथन कर द्वेष-जनित
विष वर्जन से परित्राण।



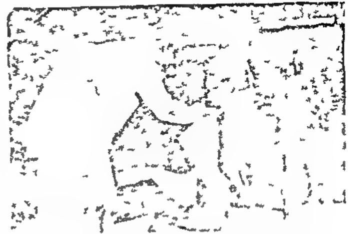
अकाल राहत हेतु आयोजित विशेष कार्यक्रम के पश्चात विद्यावाड़ी की छात्राओं के समूह चित्र में मुख्य अतिथि श्री मोतीलालजी (सामोद) जिला कलेक्टर श्री विजयसिंहजी शिक्षिकाएं आदि।

श्री भैरव नेत्र-यज्ञ समिति, बिसलपुर

श्री भैरव नेत्र यज्ञ समिति' श्री राजमलजी एस० जैन बिसलपुर निवासी की इस क्षेत्र को अनुपम देन है जो आंखों की ज्योति से निराश लोगों के लिये सचमुच ही वरदान साबित हुई है। सन् 1968 में इस संस्था की स्थापना इस उद्देश्य से की गई थी कि दूर दराज के गांवों मे शिविर आयोजित कर मोतियाबिन्द एवं अन्य नेत्र रोगों से पीड़ित लोगों की शल्य क्रिया द्वारा चिकित्सा व्यवस्था की जाए। प्रारम्भ से ही श्री राजमलजी जैन की संगठन शक्ति एवं सूझ-बूझ के कारण प्रति वर्ष बीस से अधिक शिविर आयोजित किए जाते हैं। इन शिविरों से हजारों लोगों को दृष्टिदान प्राप्त होता है।

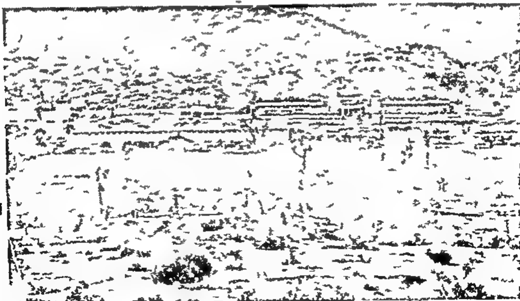
वर्तमान में इस संस्था का न केवल कार्यक्षेत्र ही बढ़ा है अपितु विभिन्न जन कल्याण एवं राहत कार्य भी हाथ में लिए गये हैं। यह समिति पशु चिकित्सा शिविर एवं दन्त रोग चिकित्सा-शिविरों का भी आयोजन करती है। क्षय चिकित्सा शिविर, विकलांग सेवा शिविर आदि का आयोजन भी समिति द्वारा समय-समय पर किया जाता है। इस समिति द्वारा अब तक दो सौ से अधिक नेत्र चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। इनमें ढाई लाख से अधिक नेत्र रोगियों की चिकित्सा की गई है।

बिसलपुर गांव में अति आधुनिक साधनों से सम्पन्न 62 शय्याओं का एक नेत्र चिकित्सालय भी समिति द्वारा चलाया जा रहा है। इस समिति ने बाली तहसील (जिला पाली) के आदिवासी ग्रामों को अपना मुख्य सेवा-क्षेत्र बनाया है जहां पर समय समय पर शिविरों का आयोजन कर लोगों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। साथ ही हर अकाल वर्ष में पोषक आहार एवं वस्त्र-वितरण करके लोगों को राहत पहुंचाने का कार्य भी यह संस्था सतत रूप से कर रही है।



समिति के संचालक श्री राजमल एस. जैन द्वारा चिकित्सा शिविर मरीज से सुख-सुविधा सम्बन्धी पूछ ताछ

श्री राजमलजी एस० जैन इस संस्था के प्राण हैं। समिति के विभिन्न कार्यों को सफल बनाने में श्री जौहरीलालजी जैन (पाली) की प्रेरणा से लायन्स क्लब व रोटरी क्लब, सुमेरपुर व पाली भी हर बार तत्परतापूर्वक सहयोग करते हैं।



प्रकृति की गोद में स्थित चिकित्सालय परिसर का भव्य दृश्य

सर्वोदय केन्द्र, खीमेल

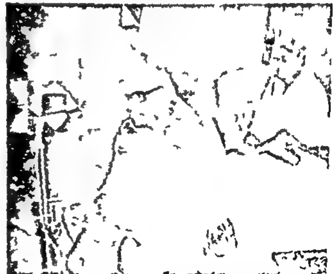
आजादी की प्राप्ति के बाद भारत के आर्थिक विकास ने नई करवट ली। आजादी के लिए लडने वाले नेताओ के सामने गांधीजी द्वारा प्रस्तुत स्वावलम्बी ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के आधार पर भारत का विकास करने अथवा पश्चिमी जगत की औद्योगिक क्रान्ति के आधार पर बडी-बडी योजनाएं बनाकर त्वरित गति से विकास करने के दो विकल्प मौजूद थे। गांधी विचारधारा के पोषक चिन्तकों ने ग्राम-स्वावलम्बन की दिशा में परीक्षण के तौर पर अनेक स्थानो पर केन्द्र स्थापित किये। उसी कडी में प्रथम कदम उठाया सर्वोदय जगत के प्रसिद्ध चिंतक श्री सिद्धराजजी ढड्ढा ने जिन्होंने राजस्थान निर्माण के पश्चात् प्रथम लोकप्रिय मन्त्रीमण्डल में उद्योगमन्त्री का कार्यभार संभाला था। ढड्ढाजी को श्री तुलसीदास जी राठी (जोधपुर) श्री धनपतिलाल जी मेहता (खीमेल) सरीखे त्यागी-तपस्वी साथी मिले और इन्होंने खीमेल ग्राम और रानी स्टेशन के बीच सर्वोदय केन्द्र, खीमेल नामक इस संस्था की नींव डाली।

केन्द्र की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य आसपास के ग्रामो का सर्वोदय विचारदर्शन के आधार पर पुनर्जीवन, पुनर्संगठन और पुनर्निर्माण के लिए ग्राम शिक्षण ग्रामोद्योग, ग्राम-कला विज्ञान तथा संस्कृति का विकास रखा गया। इन तीनों साथियों ने स्वयं श्रम प्रधान जीवन जीने की प्रतिज्ञा ली और कार्य में जुट गये। स्वयं हल चलाने से लेकर स्वयं के लिए आवश्यक अनाज पीसकर आटा तैयार करने, सूत कात कर अपने कपडे स्वयं बुनने अथवा बुनकर से बुनवाने और केवल ग्रामोद्योग की वस्तुओं का उपयोग करके जीवन निर्वाह करने का परीक्षण प्रारम्भ किया। आसपास के ग्रामों के लोग व प्रबुद्ध कार्यकर्ता उत्सुकता से इस जीवन रीति को देखते और मन ही मन सराहना करते। केन्द्र पर वैचारिक गोष्ठियां आयोजित होतीं और अनेक लोगो ने खादी पहनना और केवल ग्रामोद्योगी वस्तुयें ही काम में लेना स्वीकार किया। इतने में ही विनोबाजी का भूदान-ग्रामदान आन्दोलन शुरू हो गया और सर्वोदय केन्द्र पाली जिले में इस आन्दोलन का केन्द्र बन गया। श्री गोकुलभाई भट्ट श्री मूलचन्दजी फूलवाड़ी और श्री मोहनराजजी जैन व कई साथियों ने अनेक ग्रामो की पदयात्राएं कीं। हजारां बीघा भूमि प्राप्त की और भूमिहीनों में वितरित की।

विनोबा भावे के इस आन्दोलन में जब लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण जुडे तो उन्होंने श्री सिद्धराजजी ढड्ढा को अपने पास बुला लिया और ढड्ढा जी राष्ट्र स्तरीय अनेक सर्वोदयी संस्थाओं से जुड गये। उनका केन्द्र पर रहना संभव नहीं रहा। भाई धनपतिजी मेहता ने केन्द्र की गतिविधियों को पुनर्गठित किया और उन्हें अनुभवी कार्यकर्ताओ के रूप में मिले श्री भ्रमरजी सोनी और पण्डित भागवतजी शुक्ल जो जीवनपर्यन्त यहीं रहे।

केन्द्र पर कृषि व गोपालन के साथ साथ अखाद्य तेलो से निर्मित नीम साबुन भी बनाया जाता है तथा इच्छुक ग्रामवासियों को प्रशिक्षण भी दिया जाता है। केन्द्र का मूल उद्देश्य ग्रामों को स्वावलम्बी बनाना और शोषण विहीन समाज का निर्माण करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु समय-समय पर प्रबुद्ध कार्यकर्ताओ, पंचों सरपंचों, प्रधानो व अध्यापको की विचार-गोष्ठियां आयोजित की जाती रही हैं। शराबबन्दी आन्दोलन के लिए केन्द्र विशेष रूप से प्रयत्नशील रहा है। सम्मेलनों व विचार-गोष्ठियो के अलावा आदिवासियो व गरीब वर्ग में शराबबन्दी के लिये इस संस्थान ने काफी कार्य किया है।

इस संस्था को गोकुलभाई भट्ट का मार्गदर्शन मिलता रहा है और अभी भी सर्वश्री सिद्धराजजी ढड्ढा, भगवानदास जी माहेश्वरी, पूर्णचन्दजी जैन, मोहनराज जी जैन श्रीमती सुमन बहिन (बिदा-वाडी), बद्रीनारायण जी शर्मा आदि का निरंतर सहयोग व मार्गदर्शन मिलता रहता है। आसपास के ग्रामो के साथियों के अनुरोध पर केन्द्र ने पूर्व में प्रौढ शिक्षा की शालाएं भी प्रारंभ की थी। इन वर्षों में लगातार अकाल पडने के कारण केन्द्र पर असहाय पशुओं के शिविर भी लगाये गये और पशुपालकों को सस्ती दर पर घास चारा उपलब्ध कराया गया। पाली जिले में रचनात्मक प्रवृत्तियो का संचालन, पोषण और मार्गदर्शन करनेवाली आज यह एक मात्र संस्था है।

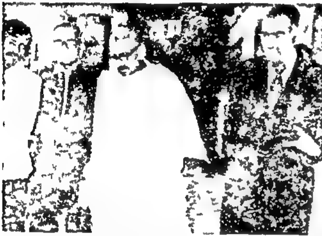


केन्द्र के संस्थापक श्री सिद्धराजजी ढड्ढा



श्री जैन तेरापथी महाविद्यालय, राणावास

वैसे तो यह जैन महाविद्यालय सन् 1971 से ही प्रारम्भ हुआ है, लेकिन राणावास मे स्थापित श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी मानव हितकारी सघ द्वारा सचालित शिक्षण सस्था तो काफी पुरानी है। इस सघ द्वारा लगातार किये गये प्रयासों का ही परिणाम है कि आज राणावास जैसे छोटे-से गाव मे स्थापित इस महाविद्यालय



द्वारा शिक्षा के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण सेवाएँ दी जा रही हैं। इस महाविद्यालय के प्रेरणास्रोत अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी हैं और कर्मयोगी श्री केसरीमलजी सुराणा इस सस्था के प्राण हैं, जिन्होंने अपना सारा जीवन ही इस सस्था हेतु समर्पित कर दिया है।

महाविद्यालय का अपना एक छात्रावास है, जो शैक्षणिक गतिविधियो के साथ-साथ छात्र कल्याण सम्बन्धी विभिन्न गति



विधियो का सचालन करता है और विद्यार्थियो मे आध्यात्मिकता, नैतिकता, सद्चारित्र्य एवम् मानवीय गुणो का विकास हो, इस हेतु अनेक कार्यक्रम आयोजित करता रहता है।

इस महाविद्यालय का प्रबन्ध सक्षम व सुयोग्य हाथो मे होने से इसका भविष्य बडा उज्ज्वल है और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी इसकी विभिन्न प्रवृत्तियो को सदैव प्रेरणा एव सहयोग देता रहा है।

सघन क्षेत्र योजना समिति, खीमेल

सर्वोदय विचारदर्शन को मूर्त रूप देने तथा ग्रामोद्योगों द्वारा गावो को स्वावलबी बनाने की दृष्टि से सर्वोदय केन्द्र की भूमि पर ही खादी कमीशन के सहयोग से इस क्षेत्र के सर्वोदयी नेता और स्वतत्रता सेनानी श्री फूलचन्दजी बाफना ने सन् 1956 मे सघन क्षेत्र योजना समिति का गठन कर खादी तथा कृषि-उपकरण निर्माण का कार्य हाथ मे लिया। इसका मुख्य उद्देश्य है ग्रामो मे काम कर रहे बुनकरों व लोहारो को नई तकनीक सिखाकर ग्रामों मे उद्योगों को बढावा देना और इन उत्पादो को लोकप्रिय बनाना।

इस समिति के सस्थापक सदस्य श्री बाफनाजी के अलावा सवश्री गमनारामजी चौधरी (ईटन्दरा) केशरीमल जी चौधरी (बिजोवा) रामसिहजी (गुडा), पृथ्वीराजजी, कन्हैयालालजी समधानी, पुखराजजी सिंघवी व भ्रमरजी सोनी हैं। इस समिति के काय को गति प्रदान की खादी कमीशन से प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ता श्री सावतमल जी भण्डारी ने। इन्होंने खादी, कपडा, रेजा, ऊनी कम्बल की कताई-बुनाई के कार्य को तो कई ग्रामों तक बढाया ही, पर साथ ही कृषि उपकरण और लोहे के बक्से तथा अलमारियों के निर्माण का काम के कारीगरो को प्रशिक्षण देकर काफी बढाया। सादडी, रानी, बाली, फालना एव सुमेरपुर मे बिक्री-केन्द्र खोले गये।

कुछ समय बाद कार्य में शिथिलता अवश्य आयी, पर कठिनाइयों को पार करते हुए यह सस्था अब प्रगति पर है। उत्साही युवा कार्यकर्ता श्री जुगलजी व्यास ने नई योजनायें बनाकर उत्पादन को गति प्रदान की है। इस सस्था ने सैकडों बुनकरों एवं कारीगरों को प्रशिक्षण देकर उन्हें अपना व्यवसाय स्वय चलाने योग्य बनाया है। □



सेठ कालूराम केशरीबाई चेरीटेबल ट्रस्ट, निमाज



सेठ श्री कालूरामजी

इस ट्रस्ट की स्थापना शिक्षा चिकित्सा व अन्य जनकल्याणकारी कार्यों को सम्पन्न कराने के उद्देश्य से श्री देवराजजी रांका (निमाज) ने अपने पूज्य पिताजी श्री कालूरामजी व माताजी श्रीमती केशरीबाई के स्मरणार्थ 30 वर्ष पूर्व की थी। ट्रस्ट का रजिस्टर्ड कार्यालय बंगलोर में है, पर इसका कार्यक्षेत्र विशाल है। इस ट्रस्ट के सहयोग से अनेक जनोपयोगी कार्य भारत-वर्ष के विभिन्न भागों में सम्पन्न हुए हैं।

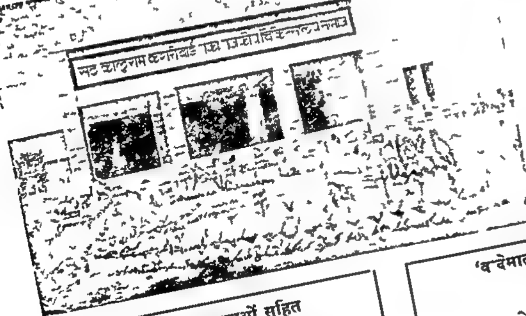
श्री देवराजजी रांका की जन्मस्थली में ट्रस्ट ने एक शानदार विशाल चिकित्सालय भवन बनाकर जनता को भेंट किया है साथ ही वहीं पर भगवान महावीर सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय भवन के निर्माण में इनका पूरा सहयोग रहा है।

बंगलोर में राजस्थानी समाज द्वारा संचालित विद्यालयों व चिकित्सालयों में इस ट्रस्ट द्वारा लाखों रुपयों का दान दिया गया है। सुमेरपुर में स्थापित महावीर अस्पताल में भी श्री रांका उदारतापूर्वक आर्थिक सहयोग प्रदान करते हैं।



श्रीमती केशरीबाई

इस ट्रस्ट के माध्यम से जरूरतमन्दों को मुफ्त औषधि वितरण विद्यार्थियों को छात्र-वृत्तियाँ देने आदि के रूप में नियमित आर्थिक सहयोग दिया जाता है। □



श्री कालूराम केशरीबाई राजकीय चिकित्सालय, निमाज का चित्र



श्री बिमलनाथ जैन उपचार सहायता समिति, बाली

यह उपचार समिति पाली जिले के आदिवासी बाली क्षेत्र मे एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और उपयोगी योजना क्रियान्वित कर रही है। समिति ने इस क्षेत्र के ऐसे पचास ग्रामों का चयन किया है जहां के निवासी अत्यन्त गरीब हैं और जहां बीमारी की रोक थाम अथवा चिकित्सा की कोई व्यवस्था नही है।

समिति ने इन गावो मे सप्ताह मे दो बार जाकर मरीजों की नि शुल्क परीक्षा व इलाज नियमित रूप से करने का अपना सकल्प-बद्ध कायक्रम बना रखा है। इस प्रकार की चल चिकित्सा इकाई में चिकित्सावाहन के साथ कुशल व अनुभवी डाक्टर कम्पाउण्डर नस आदि स्टाफ तो रहता ही है, पर सभी प्रकार की दवाइया आदि भी प्रचुर मात्रा मे रहती हैं। यदि इन चयनित गावों मे कोई ऐसा बीमार मिल जाता है, जिसे बडे अस्पताल म चिकित्सा हेतु भेजा जाना आवश्यक हो तो उस मरीज को बडे अस्पताल मे भर्ती करा-कर उसकी समुचित चिकित्सा कराने की व्यवस्था भी यह समिति करती है। सस्था अपने काय क्षेत्र मे अत्यन्त लोकप्रिय है। ☐

श्री वर्द्धमान जैन आराधना गृह (वृद्धाश्रम), सुमेरपुर

यह सस्था पाली जिले मे अपने ढग का एक अनूठा प्रयोग है। यह पहली सस्था है जहा वृद्ध पुरुष और महिलाएँ अपनी वृद्धावस्था के दिन प्रसन्नतापूवक चिन्ता मुक्त होकर व्यतीत करते हैं। पाली जिले के दानी सज्जनों द्वारा गठित एक जन ट्रस्ट इसकी व्यवस्था करता है और पिछले 10 वर्षों से यह वृद्धाश्रम कायरत है। ट्रस्ट ने मुख्य राष्ट्रीय माग पर जवाई नदी के किनारे एक विशाल भवन बनवाया है जिसमे एक जन मदिर के अलावा करीब 30 कमरे हैं।

भवन के आधे भाग में जैन छात्रावास चलता है और शेष हिस्से में वृद्धाश्रम या आराधना गृह चलता है। दोनो सस्थाओं की व्यवस्था सुचारुरूप से कुशल व्यवस्थापकों द्वारा की जा रही है।

वृद्धाश्रम मे दैनिक कायक्रम इस तरह बनाया गया है कि निवासी दिन भर व्यस्त रहते हैं। धार्मिक क्रिया व अध्ययन के साथ साथ आराम करने व घूमने टहलने की भी समुचित व्यवस्था है। चिकित्सा का पूरा इन्तजाम है। भोजन, नाश्ता आदि की पूण व्यवस्था है। सारी व्यवस्था नि शुल्क है, पर आश्रमवासी स्वेच्छापूवक सस्था को भेंट देना चाहे वह स्वीकार भी की जाती है। ☐

विकलाग सेवा समिति, फालना

विश्व विकलाग वष के दौरान फालना क्षेत्र के विकलागो की दयनीय दशा की ओर भी क्षेत्र के समाजसेवियो का ध्यान आकृष्ट हुआ। राज्य स्तर पर अनक योजनाए बनीं और पाली जिले म भी भगवान महावीर विकलाग सहायता समिति का गठन हुआ, जिसके माध्यम से विकलागों को ट्राई-साइकिलें सिलाई की मशीनें आदि प्रदान की गइ। चिकित्सा के लिए भी कतिपय साधन उपलब्ध कराए गए। उसी समय बाली के पूर्व विधायक मोहनराजजी ने विकलागों के स्थाई पुनर्वास हेतु विकलागो का कतिपय उपयोगी गृह उद्योगा मे प्रशिक्षित करने की एक योजना बनाकर तैयार की। इसी के आधार पर फालना की उद्योग बस्ती के निकट एक 'विकलांग प्रशि-क्षण केन्द्र' नामक आवासीय सस्था की स्थापना का निश्चय किया गया। दानदाताओं द्वारा प्रदत्त धनराशि से भवन बनना शुरू हो गया है। इस केन्द्र मे 100 विकलागो के आवास व प्रशिक्षण देने की योजना भी है। ☐



मानव कल्याण सेवा संघ, बाली

पाली जिले के बाली उपखण्ड म बार बार पडने वाले भयकर दुर्भिक्षो के वर्षों म तथा कभी-कभार बाढ आ जाने के उपरान्त भी व्यक्तिगत रूप से राहत काय प्रारम्भ किये जाते थे, पर सामूहिक एव सगठित रूप से प्रयास नही हो पाते थे। ऐसी स्थिति मे आज से 15 वष पूव बाली के कुछ उत्साही युवको और समाज सेवियो ने मानव-कल्याण सेवा सघ, बाली की स्थापना की और इस सस्था



का पजीकरण भी करवा दिया। इस सस्था के अध्यक्ष मद्रास मे व्यवसाय में लगे हुए श्री पुखराजजी जेठमल जी हैं और सचिव का काय देख रहे हैं श्री मोहनराजजी एडवोकेट।

इस सस्था न सूखे और बाढ के समय हजारों लोगो को अन्न वस्त्र की सहायता देकर लाभान्वित किया है। लकिन इसकी सबसे महत्वपूण सेवा रही है—असहाय पशुधन के लिए शिविर खोलना पशुधन की रक्षा करना और सस्ती दर पर पशुपालको को घास चारा उपलब्ध करवाना।

इस सस्था का प्रमुख काय-क्षेत्र बाली का आदिवासी इलाका है। यहा भील, गरासिया एव मीणा लोग रहते हैं। इन्ही आदिवासी गावो मे हर प्रकार की राहत सामग्री पहुचायी जाती है। बाली नगर में विभिन्न प्रकार के विकास काय करवाने का श्रेय भी इस



सस्था को है। शिक्षा के क्षेत्र मे इस सस्था न कई स्कूल भवनो का निर्माण दानदाताओं को प्रेरित करके करवाया है और इसी तरह एक विशाल अस्पताल भवन बनवाने हेतु भी दानदाताओ को प्रोत्साहित किया है। कई गरीब एव जरूरतम द विकलाग छात्रो को आर्थिक सहयोग प्रदान किया है तथा छात्र छात्राओं को छात्रवृत्तिया देकर जरूरतमन्द प्रतिभावानों का उत्साह बढाया है।

सोजतरोड जनराहत सेवा समिति, पाली

'सहायता नही सहयोग' का मूल उद्देश्य लेकर यह सस्था सोजत रोड के प्रतिष्ठित सामाजिक कायकर्ता श्री जब्बरजी मेहता की पाली जिले को एक महान् देन है।

इस सस्था का मुख्य उद्देश्य अभावग्रस्त साधारण स्थिति के परिवारा को राहत-कार्यों के मा यम से अनाज कपडा ओढन बिछाने की चादरें व अन्य जीवनोपयोगी सामग्री प्रदान करना तथा होनहार छात्रों को प्रतिवष पारितोषिक आदि दिलाने का हर सम्भव प्रयास करना है।

इस सस्था के माध्यम से अनेक विकास काय सम्पन्न कराये गये हैं। इस काय मे श्री जब्बरजी मेहता के अनन्य साथी श्री मगल चदजी गाधी का प्रमुख साथ रहा है।





राजस्थान सेवा परिषद्, बम्बई

राजस्थान सेवा-परिषद् हालांकि बम्बई मे रजिस्टर्ड सस्था है, पर इसके सारे कार्यकर्ता पाली जिले के गोडवाड क्षेत्र के निवासी हैं और इस सस्था का उद्देश्य है–पाली जिले मे विपत्तिग्रस्त और जरूरतमन्द लोगो को राहत पहुचाना तथा उनके विकास और तरक्की में सहयोग प्रदान करना। सस्था मे सभी युवक और उत्साही कार्यकर्ता हैं और विभिन्न समारोहो का आयोजन कर लाखो रुपये चन्दा इकट्ठा करते हैं और अकाल, बाढ बीमारी तथा अन्य विपदाओ के समय स्वयसेवक बनकर काम मे जुट जाते हैं। गत दो वर्षों से इस सस्था ने असहाय पशु शिविरो का जिले भर मे गठन करके अकाल पीडित पशुधन को बचाने का भरसक प्रयत्न किया है।

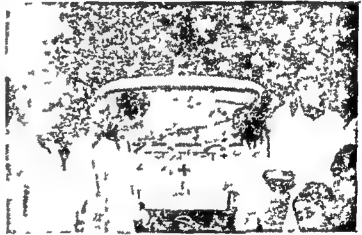
इस सस्था के उत्साही महामन्त्री श्री हीरालालजी मालवीया, बाली ने अपनी लोकप्रियता एव जनसम्पर्क के कारण क्षेत्र के पीडित मानव को राहत पहुचाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

श्री विमलजी पुनमिया अध्यक्ष शान्तिलालजी - उपाध्यक्ष, विमलेशजी मेहता मन्त्री शान्तिलालजी जैन (सी०ए०) - उपमन्त्री डा० दिनेश जन कोषाध्यक्ष घेवरचन्दजी जैन चिकित्सा समिति - सयोजक, रमेशजी चोपडा शिक्षा समिति सयोजक, श्री युगराज जैन - रेलवे सुविधा समिति के सयोजक तथा श्री कान्तिलालजी सघवी प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

इस सस्था के 200 आजीवन सदस्य और 100 साधारण सदस्य हैं। ये सभी सदस्य धन राशि प्रदान करने के साथ-साथ जनसेवा करने के काम मे भी अग्रसर रहते हैं।



सेवा परिषद द्वारा जन सेवार्थ प्रदत्त की गयी 'रोगी वाहिनी



'रोगी वाहिनी के साथ खडे कार्यकर्तागण एव महामन्त्री श्री हीरालाल मालवीया

पाली सेवा मण्डल, पाली

'पाली सेवा मण्डल,' पाली जिले की प्रमुख स्वयसेवी सस्थाओ में एक है जो गत 40 वर्षों से सेवाकार्यो मे महत्वपूर्ण योगदान कर रही है। स्वर्गीय श्री मोहनलाल जी मोदी की प्रेरणा से यह सस्था स्थापित की गयी थी जो जीवनपर्यन्त इस सस्था के माध्यम से सेवा-कार्यों मे लगे रहे। वैसे तो सस्था ने दुर्भिक्ष बाढ भूकम्प आगजनी से पीडित लोगो को लाखो रुपयो की राहत सामग्री पहुचाकर उनका पुनर्वास करने मे महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई। अनेक स्थानो पर इस सस्था द्वारा सार्वजनिक हितार्थ प्याऊ विश्राम स्थल एव श्मशान घाटो का निर्माण भी करवाया गया पर इस सस्था का मुख्य सेवा कार्य चिकित्सालय क्षेत्र मे रहा है और यह भी आखो के आपरेशन करवाकर लोगो को ज्योति प्रदान करवाने मे इसने विशेष उपलब्धियाँ अर्जित की है। सस्था ने दो स्थानो पर आखो के अनेक सर्जीकल शिविर लगाकर अब तक 15 000 से अधिक सफल आपरेशन नि शुल्क सम्पन्न करवाये हैं।

महाराजा श्री उम्मेद मिल्स, पाली के पूर्व मुख्य अधिकारी श्री मोहनलालजी गुप्ता वर्षों तक इस सस्था के अध्यक्ष रहे और उनके कार्यकाल मे इस सस्था का काफी विकास हुआ। गुप्ताजी द्वारा की गई सेवाओं के फलस्वरूप इस सस्था मे अनेक जनहितकारी कार्य सम्पन्न किए। वर्तमान मे डाक्टर डी०डी० सोलकी पाली सेवा मण्डल के अध्यक्ष हैं। □





श्री मरुधर केसरी स्थानकवासी जैन यादगार समिति, जैतारण

संस्था की मुख्य प्रवृत्तियाँ निम्नांकित हैं —

1 दीन-दुखियों की निष्ठापूर्वक सेवा

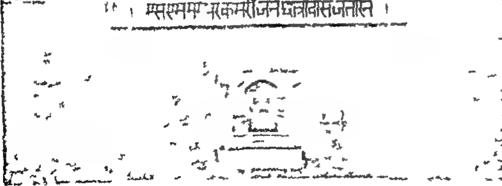
2 छात्रावास का संचालन,

3 गरीब व जरूरतमन्द छात्रों को छात्रवृत्तियाँ

4 आध्यात्मिक साधना केन्द्र का संचालन

5 श्री मरुधर केसरी ज्ञान स्तम्भ (निर्माणाधीन)

- 9 मंजिल का 64 फीट ऊंचा
- नींव से कुल ऊँचाई 125 फुट
- जमीन से ऊँचाई 103 फुट
- जमीन के 9 फुट ऊपर बना
- मुहूर्त 16 8 89
- लागत 40 लाख रुपये



समिति द्वारा संचालित छात्रावास का भव्य भवन



पाली जिले के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता



श्री केशरीमलजी सुराणा



राणावास महाविद्यालय के संचालक श्री केशरीमलजी सुराणा साधारण दीखने वाले असाधारण व्यक्तित्व के धनी हैं। कोई सोच भी नहीं सकता था कि एक धनी एवम् सम्पन्न परिवार में जन्मे श्री केशरीमलजी सुराणा शरीर पर वस्त्र के नाम पर केवल एक धोती धारण किये अपना सारा जीवन इस संस्था को समर्पित कर देंगे। श्री सुराणाजी का त्यागमय जीवन स्वयं में एक उच्चतम आदर्श की अभिव्यक्ति है। इनके त्याग से प्रभावित होकर लोगों ने इस संस्था के लिए लाखों रुपये का दान दिया है और यही कारण है, राणावास जैसे बहुत ही छोटे और पिछड़े गांव में शिक्षा का यह अभिनव केन्द्र प्रगति दर प्रगति कर रहा है।

श्री केशरीमल जी सुराणा बड़ा ही संयमित एवं मर्यादित जीवन व्यतीत कर रहे हैं और केवल सौ रुपये माहवार में अपना तथा अपनी पत्नी का निर्वाह (घर खर्च) कर लेते हैं। अधिकांश समय मौन धारण किये रहते हैं। इन्होंने अपने जीवन में सामाजिक कुरीतियों के संबंध में भी कड़ा संघर्ष किया है। इनकी देखरेख में कॉलेज और हाईस्कूल तो चल ही रहे हैं पर दो बड़े छात्रावास भी हैं जिनमें 500 के करीब छात्र अध्ययन कर रहे हैं। नारी शिक्षा के लिये भी इन्होंने अखिल भारतीय महिला शिक्षण संस्था की स्थापना कर एक विद्यालय स्थापित किया है।

श्री सुराणाजी सारे क्षेत्र में काकों सा के नाम से प्रसिद्ध हैं। ऐसे अनुशासन प्रिय त्यागमूर्ति शिक्षासन्त के सादगीपूर्ण जीवन का प्रभाव छात्रों के जीवन पर भी अमिट छाप छोड़े तो क्या आश्चर्य।

भाई रूपचन्दजी भसाली



श्री रूपचन्दजी भसाली की जन्म भूमि पाली है जहां इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा के साथ साथ समाज सुधार एवम् कुरीति निवारण के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। पर, फिर उनका कार्यक्षेत्र व्यापार की दृष्टि से बम्बई बन गया। 40 वर्षों से अधिक हो गये बम्बई में एक मूक समाज सेवक के रूप में भगवान महावीर की वाणी जे ज्ञान परिचरई तेमप्पनाण बुज्झई को' सार्थक कर रहे हैं।

श्री भसालीजी जिनको उनके परिचित लोग 'भाई साहब' के नाम से सबोधित करते हैं एक कुशल व्यापारी होते हुए भी बड़ी ही सादगी से जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को अत्यन्त ही सीमित कर रखा है तथा अपना अधिकांश समय सुबह शाम दीन-दुखियो बीमारो, असहायों व अनाथों की सेवा में उनकी जरूरतों को पूरा करने में लगा रहे हैं। अस्पताल तथा दीन दुखी बीमारों की झुग्गी झोंपड़ियों को इन्होंने अपना आराधना स्थल बना रखा है। 'सादा जीवन उच्च विचार' इस सत् वाणी को इन्होंने आत्मसात् कर लिया है।

श्री मोहनलालजी मोदी



प्रेरणा के प्रकाशपुञ्ज स्वर्गीय श्री मोहनलालजी मोदी युवावस्था की दहलीज पर पांव रखते ही जोधपुर से पाली आ गये और पाली की मिट्टी के साथ ऐसे घुलमिल गये कि मानो पाली ही उनकी जन्मस्थली हो।

व्यापार के निमित्त पाली आये मोदीजी को समाज सेवा का ऐसा चस्का लगा कि उनके लिए व्यापार तो गौण हो गया और दीन दुखियों की सेवा ही उनका व्यापार हो गया। मोदीजी ने करीब 40 वर्ष पूर्व ओसवालों के न्याति नोहरे में लगे आंखों के आपरेशन केम्प से अपनी सेवायें शुरू की थी। उस समय मोदीजी घर घर जाकर रोगियों के लिए भोजन सामग्री इकट्ठी करते थे उसी तत्परता से वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक सेवा और सहायता कार्यों के लिए घर-घर जाकर झोली फैलाकर सहयोग लेते रहे। सेवा के प्रति समर्पित उनके जीवन का ही प्रभाव था कि उनकी धर्मपत्नी, पुत्र और पुत्रवधू भी ऐसे ही समाज सेवा के कार्यों से जुड़ गये।



'पाली सेवा मण्डल' और 'हिन्दू सेवा मण्डल' नामक विख्यात संस्थाओ के श्री मोदीजी संस्थापक रहे हैं और सुदूर ग्रामो और शहरो मे चिकित्सा शिविर आयोजित कर रोगियो को राहत पहुचाने मे इन्होने कीर्तिमान स्थापित किये हैं। श्री मोदीजी ने पाली मे कुष्ठ रोगियो की चिकित्सा व सेवा सुश्रूषा के लिए एक आश्रम की भी स्थापना की, वहां उन्हें चिकित्सा द्वारा ठीक करने के साथ साथ आत्म निर्भर बनाने के उद्देश्य से अनेक प्रकार के गृह उद्योगो का प्रशिक्षण भी दिया।

पाली का सोजतरोड पर स्थित श्मशान घाट तो इनकी शाश्वत यादगार है, जिसमें सारी सुविधाओ के साथ साथ इन्होने एक मन्दिर का निर्माण भी करवा दिया है।

कही भी बाढ हो या दुष्काल, महामारी हो या अभाव, मोदीजी सेवाभावी कार्यकर्ताओ की टोली के साथ हमेशा तैयार रहते थे। पाली जिले मे बार-बार पड़ने वाले दुष्कालो के दिनो मे श्री मोदीजी ने जो सेवाए दी हैं व हमेशा प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी। श्री मोदीजी के लिए निम्न पक्तिया सही भाव प्रकट करती हैं —

दीपक की लौ ने खुद जल कर
आभा दी पाली नगरी को।
लौ से खुद कर मोहन मोदी ने
रोशन कर दिया अनेकों को॥



श्री राजमलजी जैन



श्री राजमलजी के जीवन का एक विशिष्ट पहलू यह है कि युवावस्था से ही इन्होने दीन-दुखियों और पीड़ितो की सेवा सुश्रूषा का व्रत ले लिया था। सम्भव है इनकी पूजनीया माताजी ने इन्हें जन्म घुट्टी में ही ऐसा कुछ मिश्रण कर पिलाया हो जिससे इनके रोम-रोम में सेवा भाव व्याप्त हो गया है।

श्री राजमलजी का जन्म ग्राम बिसलपुर में सन् 1933 में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम म ही होने के पश्चात् व्यवसाय और सेवा के क्षेत्र मे इन्होने एक साथ प्रवेश किया। गांव में ही सवप्रथम एक नि शुल्क दवाखाना प्रारम्भ किया। अखबारो और पत्रिकाओ से यह जानकारी मिलने पर कि भारत मे एक करोड अधे व्यक्ति हैं और प्रतिवर्ष 18 लाख व्यक्ति मोतियाबिन्द से पीडित होकर अधे हो जाते हैं, और यदि ऐसे पीडित व्यक्तियों को समय पर उपचार मिल जाए तो वे पुन दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं—इन्होने गरीब और पीडित वर्ग के हितार्थ गावो म कुशल चिकित्सको की सेवाए प्राप्त कर आखों के इलाज के लिए 'नेत्र यज्ञ शिविर' लगाने शुरू किये। हजारो लोगो को लाभान्वित होते देखकर इन्होने 'श्री भैरव नेत्र यज्ञ समिति' का गठन किया और कुशल सर्जनो सहित एक चलता फिरता अस्पताल खडा कर दिया। दूर दराज के गावो में, आदिवासी व पिछडे वर्ग के लोगो के गावों म नेत्र शिविर लगाने शुरू किए। फिर तो यह 'नेत्र शिविर' का कार्यक्रम वर्ष मे 8 माह से अधिक का हो गया।

इन शिविरो मे लाखो लोगों का उपचार किया गया पर साथ ही एक अनुभव हुआ कि कुछ पीडित व्यक्ति ऐसे आते हैं जिन्हें आपरेशन के बाद भी काफी दिन अस्पताल मे रहना आवश्यक हो जाता है फिर क्या था—धुन के धनी और कर्मठ श्री राजमलजी ने एक विशाल व सुसज्जित नेत्रचिकित्सालय खडा कर दिया।

श्री राजमलजी ने भयकर दुष्काल के दिनो में आदिवासियो और असहाय अनाथो की अनुकरणीय सेवा की है। पिछले कुछ वर्षों से बाली क्षेत्र के आदिवासी गाँव भीमाना में इन्होने तपेदिक निवारण शिविर भी सफलतापूर्वक लगाये हैं। भगवान् महावीर अस्पताल, सुमेरपुर और विकलांग प्रशिक्षण केन्द्र फालना के भी ये संस्थापक सदस्य रहे हैं।

नेत्रहीनो की सहायतार्थ इन्होने कुछ विदेशी संस्थाओ से सम्पर्क कर उनका मार्ग दर्शन और सहयोग भी प्राप्त किया है।



श्री रायचन्द गेनमल शाह



लोकसेवा म सलग्न श्री रायचन्द गेनमलजी शाह जवाली गाव के विकास कार्यों म अग्रणी रहे हैं। श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा के उपाध्यक्ष, विद्यावाडी के प्रमुख कार्यकर्ता समाज सुधारक दीन दुखियों के सहयोगी तथा रचनात्मक दृष्टिकोण के कारण ये क्षेत्र म अत्यन्त लोकप्रिय हैं।





श्री जीवराजजी मेहता



श्री जीवराजजी मेहता, बाली निवासी एक समर्पित एव सेवाभावी व्यक्तित्व के धनी हैं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा जन विद्यालय, वरकाणा मे हुई। अपने मृदु स्वभाव सूझबूझ और स्पष्ट विचारो के कारण ये व्यापार म तो आगे बढे ही, पर इससे से भी अधिक सावजनिक क्षेत्र मे काय कर रही सस्थाओ के विकास की ओर बढे हैं। यही कारण है कि वर्षों से देश के प्रसिद्ध अस्पताल बबई अस्पताल के आप ट्रस्टी और मैनेजमेन्ट बोर्ड के सदस्य हैं। प्रतिदिन दो से चार घन्टे का समय अस्पताल मे भर्ती मरीजों की सार सभाल मे ये नियमित रूप से देते हैं। इसके अलावा रात हो या दिन, घर हो या आफिस, टेलीफोन पर या स्वय उपस्थित होकर देश भर के मरीज उनसे चिकित्सा सहायता हेतु निवेदन करते हैं। आज तक इनके दरवाजे से किसी को निराश लौटते नही देखा गया। राजस्थान निवासियो, विशेषकर पाली जिले से आने वाले रोगियो के लिए तो बम्बई म श्री मेहता एक सूदिंग बाम' की तरह उपयोगी हैं। खासकर गरीब मरीजों की नि शुल्क चिकित्सा व्यवस्था ये अपने व्यक्तिगत सपर्क एव प्रभाव का उपयोग कर कराते रहते हैं। इतना ही नहीं, अनेक डाक्टरो को विशेष प्रशिक्षण दिलाने मे भी इनका बडा सहयोग रहा है।

इसी प्रकार, बम्बई की प्रसिद्ध शिक्षण सस्था, मारवाडी विद्यालय एव अन्य कई शिक्षण सस्थाओ के मैनेजमेन्ट बोर्ड के श्री मेहता सक्रिय सदस्य हैं। मारवाड जन युवक सघ के सक्रिय सदस्य रहते हुए इन्होंने अनेक सामाजिक सुधारों को अपनाया है। ये मरुधर बालिका विद्यापीठ, विद्यावाडी के सस्थापक सदस्यों मे से भी हैं और इस सस्था के तथा जैन कालेज, फालना के अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं। गोडवाड की अनेक सामाजिक व शक्षणिक सस्थाओ को इनका मागदशन एव सहयोग मिलता रहता है।

श्री जीवराजजी मेहता के सेवा मय जीवन के कारण ही बम्बई के व्यापारिक जगत मे इनका बडा नाम है। व्यापारी समुदाय की प्रसिद्ध सस्था—भारत मर्चेन्टस् चेम्बरस के वर्षों तक मैनेजिंग कमेटी के विभिन्न पदो पर आसीन रहे हैं और अध्यक्ष भी चुने गये हैं।

इन दिनो श्री मेहताजी का पूरा समय समाज सेवा म ही व्यतीत होता है। उनका मानना है कि वे अपनी सहधर्मिणी श्रीमती पानीबाई के सहयोग से ही इतना समय सेवा काय म दे पात हैं।



श्री समीरमलजी लोढा



पाली की गत वर्षों मे जो आर्थिक प्रगति हुई हैं, उसका श्रेय कपडे के प्रसाधन उद्योग को जाता है। पाली राजस्थान का निर्विवाद रूप से कपडे का प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र बन चुका है तथा निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। पाली की इस प्रगति का श्रेय श्री समीरमलजी लोढा को दिया जाना उपयुक्त है क्योकि इस व्यवसाय को प्रथमतया इन्होने ही पाली म स्थापित किया था। दुबले-पतले शरीर, घनी आखें, हाथ और पैर निरन्तर कुछ काम करते रहने की क्रियाशीलता दर्शाते हुए मदुभाषी सादगी पसन्द सेवाभावी। एक कमनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी हैं श्री लोढाजी।

इन्होंने कपडे के व्यवसाय मे जब पदार्पण किया, उस समय मलमल इग्लेंड से आयात की जाती थी। इस मलमल को प्रसाधन द्वारा तयार कर विक्रय किया जाता था। पाली की आज की प्रगति को देखते हुए पुराने समय मे जब साधन नही थे, तब साधन उत्पन्न कर काय को सम्पन्न करना कितना विकट काय था—यह सिफ कोई भुक्तभोगी ही समझ सकता है। विक्रम स 2017 मे पाली मे प्रथम बार रगाई करने के लिए हाथ से चलने वाले जिगर का निर्माण करवाया गया तथा विक्रम स 2029 मे प्रथम बार हाथ से चलने वाली स्टेन्टर मशीन लोढाजी ने स्थापित की। विक्रम स 2025 मे रोलर प्रिंटिंग मशीन लगाकर इन्होंने पाली मे प्रथम छपाई का प्रसाधन भी शुरू किया।

अपने व्यवसाय की प्रगति को बराबर आगे बढाते हुए लोढाजी ने सेवा कार्यों मे भी अपनी अभिरुचि बनाये रखी। इनके द्वारा एक हायर सेकेण्डरी स्कूल भवन निर्मित कराया गया, जो लोढा बाल निकेतन' के नाम से प्रख्यात है। रोटरी-क्लब के 'रोटरी सभा-भवन' का निर्माण कलेक्टर आफिस के प्रागण मे एक सभा भवन का निर्माण, हिन्दु सेवा मण्डल द्वारा सचालित स्वर्गाश्रम मे एक बडे हाल का निर्माण तथा पाली सेवा मण्डल' द्वारा सचालित नेत्र चिकित्सालय मे बाह्य रोगियो के लिये एक हाल का निर्माण इनके द्वारा सम्पन्न करवाये जा चुके हैं। आज 79 वष की आयु में भी ये अपनी दनिक कायक्षमता को यथावत् बनाये हुए हैं।





श्री जवानमलजी शर्मा (कोलरगाव)

'यदि आप जोधपुर से उदयपुर की सडक पर जाए तो नया गाव से फूटने वाली एक सडक आपको मिलेगी। इस सडक की अपनी एक कहानी है। वास्तव म यह सडक की कहानी नही, एक व्यक्ति जवानमल के दृढ निश्चय साहस, आत्म विश्वास और लगन की कहानी है जो आज भी खादी की कमीज और पगडी पहने 44 वर्षीय जवानमल के नाम से आपको टीकाटीक दोपहरी से लेकर रात के अधेरे और सुनसान मे लालटेन लिये इस सडक की मरम्मत करता दिखाई देगा। क्यो न हो आखिर यह सडक उसी के खून पसीने का परिणाम है।

साढे तीन मील लबी यह सडक राजस्थान के जोधपुर डिवीजन के पाली जिले की देसूरी पचायत समिति म पडने वाले मगरतलाव से लेकर नयागाव तक सात गावो को जोडती है।' ये वाक्य सन 1960 म 'ग्राम सेवक' नामक अखबार मे छपे एक लेख से उधृत किये गये हैं। आज भी 75 वर्षीय जवानमलजी में सार्वजनिक सेवा के प्रति वैसा ही उत्साह बना हुआ है।

श्री जवानमलजी का जन्म देसूरी पचायत समिति के ग्राम कोलर मे हुआ और गावों के रास्तो की दुर्दशा देखकर ही इनके मन म सडक निर्माण का सकल्प पैदा हुआ। दिन हो या रात सर्दी वर्षा, गर्मी, कोई ऋतु हो श्री जवानमलजी अकेले ही कुदाली और टोकरी लिये सडक पर काम करते नजर आयेंगे। इन्होने अपनी कुल जमा पूजी दस हजार यहाँ तक कि पत्नी के आभूषणों को गिरवी रखकर प्राप्त की गई रकम भी सडक निर्माण मे खर्च करदी थी। उस समय के लोग इन्हे पागल कहते परिवार के लोगों ने बहिष्कार कर दिया यहाँ तक कि इनकी पिटाई भी हुई पर धुन के धनी और दृढ सकल्पी श्री जवानमलजी ने हिम्मत नहीं हारी और वर्षों परिश्रम करके सडक बना डाली। इनके लगनपूर्वक किये गये इस काम का निरीक्षण तत्कालीन भारत सरकार के मत्री श्री एस के डे ने किया और इन्हें सम्मानित किया साथ ही इस सडक का नामकरण भी श्री जवानमल रोड किया गया।

अब तो यह सडक पक्की डामर की बन गई है।



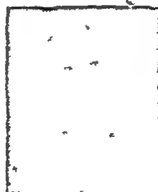
श्री हीरालालजी जैन

श्री हीरालालजी जैन का जन्म ग्राम बीजोवा म श्री जुहारमलजी के घर हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम बीजोवा म हुई और तत्पश्चात उच्च शिक्षा के लिए ये बम्बई चले गये जहाँ इनके परिवार का मुख्य व्यवसाय था।

बम्बई म शिक्षा प्राप्त करते समय जिन लोगो के सपर्क म ये आये, इससे इनका सामाजिक और व्यापारिक दृष्टिकोण व्यापक बना। मारवाड जैन युवक सघ के साथ जुडकर इन्होने समाज सुधार के कार्यक्रमो म रुचि लेना शुरू किया और उसी दिशा मे आगे बढते हुए मरुधर बालिका विद्यापीठ विद्यावाडी की स्थापना म अन्य साथियो के साथ मिलकर सहयोग प्रदान किया। फिर तो ऐसे कार्यों म इनकी रुचि और लगन बढती ही गई।

गोडवाड के जैन समाज के सगठनो मे श्री हीरालालजी प्रमुख चुने गये पर इनकी रुचि शिक्षण सस्थाओ को सुदृढ करने की ओर अधिक रही है। फालना कालेज, वरकाणा विद्यालय विद्यावाडी आदि शिक्षण सस्थानो के सचालन मे पूरी रुचि से भाग लेते हैं और आर्थिक सहयोग प्रदान करते हैं। अपने गाँव बीजोवा मे एक शानदार विद्यालय भवन का निर्माण कराकर इन्होने जनता को भेंट किया है।

अनेक सामाजिक, धार्मिक और मानव सेवा के सगठनो व ट्रस्टों से वे जुडे हुए हैं और अपना पूरा समय समाज सेवा म दे रहे हैं।



श्री मूलचन्दजी शाह

जवाली गाव के निवासी श्री मूलचन्दजी शाह अपनी धुन के धनी थे। अपनी दूर दृष्टि व कार्यकुशलता के फलस्वरूप बम्बई नागपुर आदि शहरो मे



अपना व्यवसाय बढा दिया, लेकिन व्यवसाय से भी अधिक रुचि उन्हें थी समाज सेवा मे और अपने गाव व क्षेत्र के विकास मे। जवाली के बरसो तक ये सरपच रहे और गाव को अस्पताल, पचायत घर, स्कूल, सडकें पेयजल आदि की सुविधायें प्रदान कराने मे अपना तन मन धन लगा दिया। जवाली के निकट डारिया बान्ध (तालाब) का निर्माण करवाने की उन्हें जबरदस्त लगन लगी हुयी थी, इसी धुन म अपने साथ पाच पचायतो के सरपचो को लेकर बाँध के निर्माण की स्वीकृति हेतु जवाली से अपनी कार द्वारा जयपुर जा रहे थे कि दूदू के निकट दुघटना मे उनका देहावसान हो गया।

श्री मूलचन्दजी स्वभाव से समाजसेवी थे और समाजसुधार के लिए उन्होने बडा परिश्रम किया था। वे जानते थे कि शिक्षा के द्वारा ही गावो के गरीब वग का और समाज का भला हो सकता है। इसलिये उन्होने अपने गाव मे ही नही पाली जिले की अनेक शिक्षण सस्थाओ को उदार हृदय स आर्थिक सहयोग प्रदान किया था। विकलाग आश्रम, फालना कालेज, विद्यावाडी, वरकाणा विद्यालय आदि अनेक सस्थाओ की सचालन समितियो के व वर्षों तक सदस्य रहे हैं। अपनी सेवाभावी वृत्ति के कारण श्री शाह सभी वर्गों के लोगो मे जीवनपयन्त अत्यन्त लोकप्रिय बने रहे।



श्री लक्ष्मीचदजी भारतीय

□

श्री लक्ष्मीचदजी भारतीय की जन्मभूमि पाली जिले की खारची तहसील का ग्राम बाता है पर इनकी कर्म-स्थली बगलोर (कर्नाटक) रही है। इन का पतृक वस्त्र व्यवसाय बैंगलोर म होने से इनका अधिकाश समय वही जनसेवा मे जाता है पर ये अपने जन्म-स्थान बाता और मारवाड को भूले नही हैं। वक्त जरूरत मुख्यत प्राकृतिक प्रकोप के अवसरों पर वहा अवश्य आते हैं और लोगो का राहत पहुँचाने का काय करते हैं।

श्री लक्ष्मीचदजी भारतीय मे गजब की सूझबूझ और सगठन शक्ति है। कर्नाटक के राजस्थानी समाज म इनका बडा मान सम्मान है और अपने व्यापक सम्पर्क के कारण ये हरएक को सहयोग प्रदान करने को तत्पर रहते है।

इनके पिताजी श्री खीमराजजी की उदार भावना की करते हुए इन्होने अपने पुश्तैनी ग्राम बाता मे आम जनता के [illegible] विद्यालय का एक शानदार भवन बनवा कर भेंट किया है। [illegible] भ्रमण के पश्चात् इन्होने अपने व्यवसाय को भी एक नया [illegible] दिया है।



श्री मूलचन्दजी

□

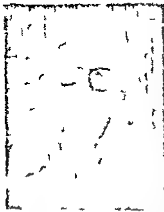
स्व० श्री मूलचन्दजी चण्डालिया (नारलाई) गोडवाड क्षेत्र के एक जाने माने प्रमुख सामाजिक कायकर्ता रहे हैं। ये अनेक वर्षों तक गोडवाड ओसवाल महासभा और पार्श्वनाथ जन विद्यालय वरकाणा के महामन्त्री रहे है। श्री चण्डालिया का सारा जीवन समाज को ही समर्पित हो गया था। गोडवाड क्षेत्र मे शिक्षा प्रचार मे इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इनके स्वय के परिवार मे भी उच्च शिक्षा प्राप्त अनेक प्रोफेसर, इजीनीयर एव डाक्टर हैं।



श्री चुन्नीलालजी मेहता

□

अस्सी वर्षीय श्री चुन्नीलालजी मेहता (खीमल) आज भी युवकों का उत्साह व जोश लिए हुए अनेक सामाजिक व धार्मिक सस्थाओ के विकास कार्यों मे सेवारत हैं। श्री मेहताजी खीमेल ग्राम के उस प्रतिष्ठित मेहता परिवार से है जिसका पुराने जमाने में गोडवाड मे दबदबा रहा है। ये वर्षों तक गोडवाड क्षेत्र के ओसवालो की एक मात्र सामाजिक सस्था 'गोडवाड महासभा' के प्रमुख कायकर्ता एव मन्त्री रहे हैं। फालना जन कॉलेज एव वरकाणा जैन विद्यालय के सचालन मे भी इनका प्रमुख योगदान रहा है। ये कानून विद् भी हैं और रानी व्यापार मण्डल के वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं।



श्री

उर
नद
स-
स-

है। वास्तव म यह सडक की कहानी न-
के दृ- निश्चय साहस आत्म विश्वास क
आज भी खादी की कमीज और पगडी प-
नाम से आपका टीकाटीक दोपहरी स
सुनसान मे लालटेन लिये इस सडक
देगा। क्या न हो आखिर यह सडक
परिणाम है।

साढे तीन मील लबी यह सडक
डिवीजन के पाली जिले की देसूरी पचाय
मगरतलाब से लेकर नयागाव तक सात ग
बावय सन 1960 म ग्राम सेवक' नामक
मे उपस्त किये गये हैं। आज भी 75 वर्षीय
जनिक सेवा के प्रति वसा ही उत्साह बना ह

श्री जवानमलजी का ज-म देसूरी पच
कीलर मे हुआ और गावों के रास्तो की दुदश
में सडक निर्माण का सकल्प पदा हुआ। दिन
वर्षा, गर्मी कोई ऋतु हो, श्री जवानमलजी ठ
टोकरी लिये सडक पर काय करते नजर
कुल जमा पूजी दस हजार यहाँ तक कि प
गिरवी रखकर प्राप्त की गई रकम भी सडक।
थी। उस समय के लोग इन्हे पागल कहते
बहिष्कार कर दिया यहाँ तक कि इनकी पिटा
धनी और दृढ सकल्पी श्री जवानमलजी ने हिम्म
वर्षों परिश्रम करके सडक बना डाली। इनके
इस काम का निरीक्षण तत्कालीन भारत सरकार
के ड ने किया और इन्हें सम्मानित किया साथ
नामकरण भी श्री जवानमल रोड किया गया।

अब तो यह सडक पक्की डामर की बन गई

वन्दे मातरम्

———। उन्होंने ही सब प्रथम दिनाक 14 3-42 को
———पेश किया था कि—"यह सभा सरकार से
——— है कि जोधपुर मे बाहर के परगनो मे कम से कम
——— मेड़ता, नागौर और बाड़मेर मे तो आगामी
——— उन्हें तथा धीरे धीरे उनकी सख्या बढाई जावे।"
——— 1 सब सम्मति से पास हुआ। इससे स्पष्ट है
——— की क्या स्थिति थी। इस प्रस्ताव के बावजूद
——— खोला गया। आजादी के पश्चात् लोकप्रिय
——— पश्चात् ही इस प्रस्ताव पर अमल हुआ।

जैन



पाली के
से हैं।
नाराय



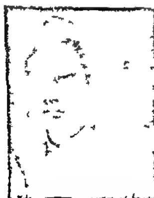
श्री मूलचन्दजी कपूरचन्दजी राणावत



भगवान अपने प्यारे और चुनिंदा लोगो को अल्पायु मे ही अपने पास बुला लेता है। ऐसा ही हुआ श्री मूलचन्दजी के साथ। उन्होंने सामाजिक और धार्मिक कार्यों मे अपने आपको समर्पित किया, अपने गाव और सारे गोडवाड क्षेत्र के लोगों के हितार्थ कतिपय योजनाए बनाई और वे इस ससार से विदा हो गये।

वसे तो श्री मूलचन्दजी (खुडाला) का परिवार गोडवाड मे एक प्रतिष्ठित घराना रहा है। इनके बडे पिता सघवी श्री जसराजजी फालना जैन कॉलेज के महामन्त्री वर्षों तक रहे और सस्था की तन मन धन से सेवा की है, पर श्री मूलचन्दजी ने अपने जीवन के कुछ ही वर्षों म समाज सुधार हेतु अथक परिश्रम किया था। गोडवाड की अनेक शिक्षण सस्थाओ को भरपूर सहयोग प्रदान किया था।

श्री मूलचन्दजी के मन के जीवन की अन्तिम घडियो मे एक सारी सुविधाओं से युक्त विशाल अस्पताल भवन बनवाने की इच्छा बलवती हुई थी जिसे इनके सुपुत्र श्री इन्दरचन्दजी और विमलजी राणावत अब पूर्ण करने मे लगे हुए हैं। इस हेतु श्रीमती जतुबाई चेरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना कर अपने स्वर्गीय पिताश्री की यादगार मे खुडाला–फालना मुख्य मार्ग पर 'राणावत अस्पताल' का सचालन कर रहे हैं। इस अस्पताल के साथ ही एक आधुनिक उपकरणो से युक्त निदान केन्द्र एव एक्सरे की सुविधाए भी उपलब्ध हैं।



श्री भैरूमलजी पालरेचा



श्री भैरूमलजी का जन्म पाली जिले के बिजोवा ग्राम म हुआ था। प्राथमिक शिक्षा पूरी होने के पश्चात् ये उच्च शिक्षा हेतु बम्बई चल गये जहा इनका पतृत्व व्यवसाय था।

श्री भैरूमलजी गोडवाड क्षेत्र के समाज सुधारको मे गिने जाते हैं। युवावस्था से ही ये लगनपूवक समाज सेवा म लगे और अपने ग्राम बीजोवा मे नवयुवको की एक टीम ग्राम विकास के कार्यों को पूरा करने मे जुट गये थे। इनकी शक्ति गजब की थी और मुर्दों मे भी जान फूकने की चरितार्थ करने की कला इनमे थी। ग्रामवासियो के आग्रह पर भैरूमलजी ग्राम पचायत के सरपच बने और इनके कायकाल अनेक विकास काय हुए।

मारवाड मे बार बार पडने वाले दुष्कालो के दिनो में गरीबों की सहायता और पशुधन की रक्षा के लिए ये अपना सहयोग और समय देते थे। इन्ही के आर्थिक सहयोग से जनहितकारी विकास काय सम्पन्न हुए हैं। ऐसे निर्भीक और वक्ता की असामयिक मृत्यु ने एक समर्पित समाज सेवक को मे ही क्षेत्र से छीन लिया था।

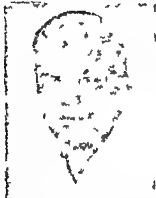


श्री चुन्नीलालजी

स्वर्गीय श्री चुन्नीलालजी राका ने पाली जिले के एक छोटे से ग्राम दादई म जन्म लेकर मे अपनी लगन एव परिश्रम से व्यवसाय शुरू किया जो आज शाह खेताजी धनाजी नामक बम्बई की प्रमुख व्यावसायिक कम्पनियों मे से एक है। इनके जीवन की प्रमुख विशेषता यह रही है कि इन्होंने जिस लगन और व्यापारिक कौशल से धन उपार्जित किया उतनी ही उदार भावना म दान देकर अनेक सामाजिक और शक्षणिक सस्थाओ को सुदृढ भी बनाया। श्री चुन्नीलालजी के जीवन से प्रेरणा लेकर इनके जेष्ठ पुत्र श्री बख्तावरजी राका ने न केवल व्यापार म नये कीर्तिमान बनाए हैं वरन् विभिन्न सस्थाओं को आर्थिक सहयोग देन मे भी कई कीर्तिमान कायम किये हैं। इन्होंने आर्थिक सहयोग से न केवल बम्बई में वरन पाली जिले मे भी अनेक सावजनिक कार्यों म महान् योगदान दिया है। अपने गाव में तो इन्होंने विद्यालय भवन चिकित्सा भवन आदि का निर्माण करवाया ही है, परन्तु सुमेरपुर स्थित महावीर अस्पताल भवन के लिए बहुत बडी धनराशि देकर जन सेवा का महान् काय किया है।



पाली जिले की प्रसिद्ध शिक्षण संस्थायें—मरुधर बालिका विद्यापीठ वरकाणा विद्यालय फालना कॉलेज आदि को आपका सहयोग समय-समय पर प्राप्त होता रहा है। बम्बई स्थित अनेक संस्थाओं को भी इस परिवार का सहयोग मिलता रहा है।



श्री कनकराजजी लोढा

□

श्री कनकराजजी लोढा का जन्म धाणेराव के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। इन्होंने अल्पायु में ही अपने बुद्धिकौशल और व्यापारिक निपुणता से बम्बई नगर में अपने कारोबार को जमाया और इनके उद्योग प्रतिष्ठान ने प्रामाणिकता के कारण देश विदेश में अपनी साख जमाली।

यह दुर्लभ संयोग ही कहा जायगा कि मानव कल्याण व सेवा वृत्ति के कारण श्री लोढा ने 'बहता जल सदा निर्मल' वाली सीख को हृदयगम कर विद्यालय भवन, अस्पताल भवन आदि बनाने में और दुर्भिक्ष के दिनों में जरूरत मन्दों को राहत पहुँचाने में अपनी थलियां सदैव खुली रखी हैं। स्वभाव से लोढाजी प्रतिष्ठा व प्रसिद्धि के विरुद्ध हैं पर इनके सरल स्वभाव व व्यवहार ने इन्हें अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया है।



श्री फुटरमलजी परमार

□

श्री फुटरमलजी परमार (रानी) का जन्म नाडोल में हुआ। इन्होंने अपना उद्योग व व्यापार रानी में स्थापित किया लेकिन जीवन के प्रारम्भिक काल से ही सार्वजनिक सेवा-कार्यों में इनकी विशेष रुचि रही है। रानी स्टेशन के विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गोडवाड़ की हर शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्था में, चाहे वह 'गोडवाड महासभा' हो या वरकाणा विद्यालय या फालना जैन कॉलेज या मरुधर बालिका विद्यावाडी इन्होंने सभी संस्थाओं को अपनी अमूल्य सेवायें आगे होकर प्रदान की हैं। लाइंस क्लब, रानी के अध्यक्ष पद पर रहते हुए कई विकास कार्य करवाये हैं। अकाल सहायता या बाढ सहायता हो या गरीबों के लिए चिकित्सा शिविर हो, अग्रणी होकर अपनी सेवा प्रदान करते रहे हैं।

सेवा की यह लगन इन्हें अपने पूज्य पिताजी श्री पुखराजजी से विरासत में मिली। स्वर्गीय श्री पुखराजजी ने भी समाज और क्षेत्र को वर्षों तक अपनी अमूल्य सेवायें दी थी। श्री फुटरमलजी ने अपने जन सम्पर्क व सेवा भावना से क्षेत्र में एक ऐसा मित्र मण्डल बनाया है जो जन सेवा में रुचि लेता है और श्री फुटरमलजी सार्वजनिक हित की जो भी योजनायें अपने साथियों के सामने रखते हैं वे सभी पूरी होती हैं।

श्री फुटरमलजी ने अपना पूरा समय जन सेवा में अर्पित कर दिया है।



श्री देवराजजी गुन्देचा

□

श्री देवराजजी गुन्देचा का जन्म पाली जिले के ग्राम धाणेराव में हुआ। उच्च शिक्षा के अभाव में साधारण पाठशाला की पढाई से ही सन्तोष कर ये व्यवसाय से जुड़ गये। धीरे धीरे बम्बई नगर में आवासीय भूमि खरीद कर भवन निर्माण के व्यवसाय में लग गये और विपुल ख्याति अर्जित की।

यह एक सुखद संयोग ही कहा जायगा कि समृद्धि के साथ साथ उनकी उदारता और संस्थाओं में धन व्यय करने की वृत्ति बढ़ती गई। फलस्वरूप धाणेराव में 'नव नाकोड़ा भैरव एवं भगवान् पार्श्वनाथ के मन्दिरों के निर्माण में इनका सराहनीय योगदान रहा है या यों कहा जाए यह इन्हीं का स्वप्न था जो पूरा हुआ।

आचार्य हिमाचल सूरीश्वरजी की प्रेरणा से इन्होंने भव्य कीर्ति स्तम्भ का निर्माण करवाया और 'देवराज गुन्देचा चेरिटेबल ट्रस्ट'



स्थापित कर क्षेत्र के लोगो की भलाई के लिए वृहद् अस्पताल भवन तयार करवाया। टस्ट द्वारा सचालित यह अस्पताल प्रति वष हजारो रोगियो को निरतर लाभान्वित कर रहा है।

श्री गुदेचा से समाज को बहुत आशाएँ थी पर इनका असामयिक निधन हो गया। अन्तिम समय तक व धार्मिक सस्थाओ टस्टो व सामाजिक सगठनो से जुडे रहे और तन मन धन से सहयोग प्रदान करते रहे।



श्री जीवराजजी चौहान



श्री जीवराजजी प्रेमच दजी बाली निवासी एक उत्साही सामाजिक एव शिक्षाप्रेमी व्यक्ति हैं। आप गोडवाड एव गोडवाड क बाहर अन्य प्रान्तो मे भी कई सामाजिक, शक्षणिक एव धार्मिक सस्थाओ से जुडे हुए है। आप बगलोर मे राजस्थान समाज सस्था के 1990 मे अध्यक्ष पद पर रहे और तभी स लगातार समाज सेवा के काय से जुड गये। बगलोर म स्थापित महावीर विद्यालय महावीर अस्पताल आदि कई सावजनिक हित की सस्थाओ मे इनका भारी योगदान रहा है। आप इनके सुचारुरूप से चलाने मे पूरी रुचि लेते हैं।

श्री हस्तिनापुर जन तीथ, वल्लभ स्मारक-देहली, मठ मोगीलाल लेहरचन्द रिसच इस्टीटयूट आफ इण्डोलाजी, नई दिल्ली के मानद ट्रस्टी हैं। गोडवाड के वरकाणा विद्यालय विद्यावाडी, फालना कॉलेज आदि अनक सस्थाओ म इनका प्रमुख योगदान रहा है।

बाली म एक सुन्दर विद्यालय भवन का निर्माण करवाकर इन्होने महत्वपूण जन सेवा का काय किया है। इन्हें भारत सरकार की सस्था इन्सटीटयूट आफ सेल्फ डिफेन्स एव कलेक्टर द्वारा सन् 1985 म स्वणपदक देकर सम्मानित किया गया था। पाली जिले म अकाल हो या बाढ य आर्थिक सहयोग देते रहे हैं। बगलोर म इनका दवाइयो का बडा कारोबार है। ये कई दवाइयो के निर्माता भी हैं पर अपना अधिकाश समय जन सेवा के कार्यों म लगाते हैं। विशेषकर शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र म सेवा करने की इनकी विशेष रुचि है।

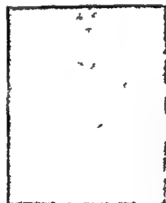


श्री सरदारमल पी

अपने परिश्रम लगन कत यपथ पर डटे रहते हुए यवसाय क साथ साथ जीवन मे कितनी ऊचाइयो को सकता है इसका एक अनुपम उदाहरण श्री सरदारमलजी पी जन हैं।

इनका जन्म पाली जिले के रानी गाव म हुआ। उच्च से महरूम रहे पर निरतर प्रगति की चाह से इन्हे तरक्की सुअवसर मिलते रहे और हर सघष म इन्हें सफलता प्राप्त हुई इनका व्यवसाय बम्बई के उपनगर मुलुन्ड म है जहा इनका टाकीज नामक थियेटर चलता है पर अब इनका यवसाय भवन निमाण का है।

शिक्षा स ही विकास सम्भव है—इनकी एसी दृढ धारणा है। मुलुन्ड म अनेक शिक्षण-सस्थाओ स य सक्रिय रूप हुए हैं और उनका सफल सचालन कर रहे हैं। इसी शिक्षा प्रेम इनको मारवाड की शिक्षण सस्थाओ फालना जन कॉलेज विद्यालय विद्यावाडी आदि सस्थाओ स भी जोड दिया है। सस्थाओ के विकास म इनका सहयोग बराबर मिलता रहा है।



श्री मोतीलालजी

स्वर्गीय श्री मोतीलालजी पाली जिले के सापोद ग्राम के निवासी हैं। बडी महनत कर इन्होंने कोयम्बतूर और बगलोर म अपना व्यवसाय जमाया और सफलता प्राप्त की।

सापोद जसे छोटे गाव को सारी आधुनिक सुविधाओ-स्कूल अस्पताल, सडकें पचायत घर जल प्रदाय योजना आदि से युक्त बनाने म श्री मोतीलालजी का आर्थिक सहयोग कभी भुलाया नहीं



जायगा। इतना ही नहीं इन्होंने फालना जैन कालेज विद्यावाडी वरकाणा विद्यालय सरीखी अनेक शिक्षण संस्थाओं को भी समय समय पर सहयोग प्रदान किया है। आपके ही सहयोग से कोयम्बटोर में एक विशाल भवन से युक्त विद्यालय चल रहा है। लोग कहते हैं कि इनके मुंह से कभी ना शब्द नहीं निकला। ये जन हित के हर काम में सहयोग प्रदान करते हैं। जीवन के अंतिम वर्षों में उनकी रुचि धार्मिक कार्यों में बढ़ गई थी। पालीताणा में जैन मन्दिर का निर्माण तथा संघ यात्राओं के आयोजन उनकी इन्हीं भावनाओं के फलस्वरूप हुए हैं।

श्री मागीलालजी बदामिया

एक मंद सुबह शाल ओढ़ श्री मागीलालजी बदामिया अपने दो चार मित्रों के साथ अपने सादड़ी स्थित निवास स्थान के कमरे में बैठे हैं तभी कुछ लोग फालना में विकलांग प्रशिक्षण केन्द्र के निर्माण की योजना लेकर पहुंच गये। योजना का प्रारूप पढ़कर उनका हृदय खुशी से भर उठा और लगे—आज गांव गांव में भीख मांग रहे सब लोगों को लूले लंगड़े अंधे बहरे गूंगे और अपाहिजों को उनके योग्य काम सिखा कर स्वावलम्बी और उपयोगी नागरिक बनाने की यह योजना एक बहुत ही सुन्दर कार्य है। उन्होंने फालना आकर उक्त भवन का शिलान्यास करने की स्वीकृति दी और तत्काल ही एक लाख रुपये देने की घोषणा कर दी। ऐसे थे सहृदय श्री मागीलालजी बदामिया।

इनका अंतिम सार्वजनिक समारोह था श्री परसराम महादेव तीर्थ पर नव निर्मित 'गौरव द्वार' का उद्घाटन। इस भव्य समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री मागीलालजी ने तीर्थ की इस पावन भूमि और कुण्ड के नीचे स्थित घाटी को सुन्दर फूलों की घाटी बनाकर और अधिक रमणीय बनाने का सुझाव दिया था। जो इनके निकट सम्पर्क में रहते थे वे इनमें छिपी अद्भुत गतिशीलता कर्तव्य परायणता और सूझ बूझ के कायल थे। किसी भी प्रकार का आलस्य या आज का काम कल की वृत्ति इनके निकट नहीं फटकती थी।

युवा अवस्था में पदार्पण करते ही श्री मागीलालजी बदामिया ने औद्योगिक क्रांति के आने वाले युग को दूरदृष्टि से देखते हुए अपने आपको बम्बई गोरेगांव में प्लास्टिक सेल्युलाइड केमीकल्स तथा औषध निर्माण के उद्योग में लगनपूर्वक लगा दिया और अल्प समय में ही ख्याति प्राप्त करली। इस विशाल हृदय की यह विशेषता ही कही जायेगी कि इन्होंने न केवल सैकड़ों हजारों लोगों को अपने कारखानों में काम पर लगाया, वरन कईयों को भागीदारी प्रदान कर उन्हें स्वयं उद्योग लगाने व धंधा करने योग्य भी बना दिया।

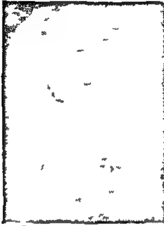
स्वर्गीय श्री मागीलालजी बदामिया की विलक्षणता यह थी कि धनार्जन के साथ साथ वे अनेक कल्याणकारी कार्यों जैसे, उच्च माध्यमिक कन्या विद्यालय, सादड़ी राजस्थान हाल-गोरेगांव, डॉ अम्बेडकर उद्यान भान्डो, विकलांग प्रशिक्षण केन्द्र फालना आदि के निर्माण इन्होंने करवाये। सादड़ी स्कूल कीर्तिस्तम्भ कांच का मंदिर (सादड़ी) भान्डो आयुर्वेदिक चिकित्सालय भवन आदि सैकड़ों ही जनोपयोगी कार्यों में आपका योगदान रहा है। पर, इनका सर्वाधिक अविस्मरणीय कार्य तो सादड़ी राणकपुर सड़क पर स्थित सर्व धर्म मन्दिर (मोक्ष धाम) है जो युगों युगों तक इनकी याद दिलाता रहेगा। जहां सभी धर्मों के तीर्थंकर अवतार देवी-देवता और उनके धर्मोपदेश मानव मात्र को सदियों तक साम्प्रदायिक सद्भाव करुणा अहिंसा और सत्य का पाठ पढ़ाते रहेंगे।

श्री मोहनलालजी संघवी

श्री मोहनलालजी उमेदचंदजी संघवी बाली में जन्मे और यहीं पर इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। धार्मिक संस्कारों में पले पोसे होने के कारण प्रारम्भ से ही इनकी रुचि सामाजिक उत्थान के कार्यों में रही। बम्बई के व्यापारिक व्यवसाय में कदम रखते ही इन्हें जापान की यात्रा का अवसर प्राप्त हुआ। वहां इन्होंने दिन रात श्रम करते जापानियों को देखा तथा जीवन के हर क्षेत्र के विकास में श्रम के महत्व को अनुभव किया। युद्ध में सम्पूर्ण रूप से ध्वस्त जापान निराशा और ग्लानि से मुक्त होकर किस प्रकार अपने राष्ट्र के विकास में उठा है उसका दर्शन उन्होंने वहां किया। इस यात्रा के अनुभवों का लाभ हमारे देश को कम मिले इस ओर भी यहां के लोगों का ध्यान इन्होंने आकर्षित किया और स्वयं ने भी औद्योगिक क्षेत्र में अच्छी प्रगति की।

श्री संघवी की रुचि शिक्षा के प्रचार प्रसार में अधिक रही है। श्री पार्श्वनाथ उम्मेद जैन कालेज फालना की प्रबंधकारिणी समिति के ये अध्यक्ष चुने गये और इनके कार्यकाल में कालेज का नया भवन बना साथ ही शिक्षा का स्तर भी ऊंचा उठा। इनकी प्रबन्ध कुशलता के कारण भगवान महावीर अस्पताल सुमेरपुर के ट्रस्टी मण्डल के मंत्री का भार भी इन्हें सौंपा गया। आजकल ये उसकी व्यवस्था को सुन्दर करने एवं सुधारने में लगे हुए हैं।



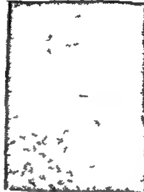


श्री मूलचन्दजी ताराचन्दजी पुनमिया

□

श्री मूलचन्दजी जो कालूजी के नाम से जाने जाते है तथा एक विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं, के परिवार ने सन् 1936 म सेठ रूपचन्द ताराचन्द अस्पताल, सादडी का निर्माण करवाकर जनहितार्थ कार्यों की शुरूआत की थी। श्री कालूजी ग्राम पचायत के वर्षों तक सरपच भी रहे और इनके कार्यकाल म सादडी मे पशु चिकित्सालय भवन स्कूल भवन, मोहल्ला की सडकें आदि अनेक विकास कार्य सम्पन्न हुए। आज भी इन सस्थाओ से इनका पदाधिकारी के रूप मे घनिष्ठ सम्बन्ध है।

इनके परिवार तथा मे नवलाजी दीपाजी एण्ड कम्पनी के भागीदारो ने परशुराम महादेव की सडक बनवा कर लोगों को राहत पहुचायी है।



श्री किरनराजजी ल

श्री किरनराजजी लोढा प तहसील के ग्राम खरवा के निव हैं। इनका जन्म सेठ श्री ...लाल के प्रतिष्ठित परिवार म हुआ।

श्री लोढा मे युवावस्था से ही सामाजिक सेवा की लगन ल गई और आज बम्बई स्थित मारवाड के समाज म इनका बडा है। इनकी सामाजिक सेवाओ मे प्रमुख है—दरिद्रनारायण सेवा। ये नियमित रूप स बम्बई स्थित सर हरकिशनदास जाते है और मरीजो की देखभाल व उनकी चिकित्सा करते है। इनकी इन्ही सेवाओ के कारण अस्पताल के ट्रस्टीगण श्री लोढा को वहा की मैनेजिंग कमेटी का सदस्य चुना है महाराष्ट्र सरकार ने इन्हे आनरेरी एक्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट की म उपाधि देकर सम्मानित किया है।



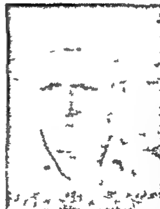
श्री देवराजजी राका

□

श्री देवराजजी राका जैतारण तहसील के ग्राम निमाज के निवासी हैं और बैंगलोर मे कपडे का व्यवसाय करते हैं। निमाज के सेठ श्री कालूरामजी राका के प्रतिष्ठित परिवार मे जन्मे श्री देवराजजी स्वतन्त्रता सेनानी सेठ रिखबदासजी के भतीजे है।

श्री देवराजजी ने स्वय अथक परिश्रम कर बंगलोर म अपना व्यवसाय जमाया और धनार्जन के साथ साथ मुक्त हाथो से जनहितार्थ कार्यों म अपने अर्थ का सदुपयोग किया और कर रहे हैं।

श्री राकाजी मृदुस्वभाव एव सेवाभावी वृत्ति के हैं और सामाजिक कार्यों म गहरी रुचि रखते हैं। बैंगलोर म राजस्थानी समाज द्वारा स्थापित हर सस्था मे इनकी सक्रिय भागीदारी रही है। अपनी मातृभूमि निमाज मे भी इन्होने चिकित्सालय, स्कूल आदि भवनो के निर्माण मे भरपूर सहयोग दिया है।



श्री हस्तीमलजी मेहता

श्री हस्तीमलजी मेहता का सादडी नगर के एक प्रतिष्ठित प मे श्री सरदारमलजी मेहता के हुआ। प्राथमिक शिक्षा सादडी ल तथा आगे विद्याध्ययन हेतु पु गये। इनके पिताजी को बढिया बढिया नस्ल के घोडे पालने व उन्हे प्रशिक्षण देने का शौक था श्री हस्तीमलजी मेहता अपना भाग्य व्यापार म आजमाना चाहते थे, अत कम उम्र मे ही ये महाराष्ट्र म वस्त्र व्यवसाय म जुट गये।

पर बचपन से ही इनमें जन-सेवा के सस्कारो का ...। हो गया था, फलस्वरूप वे शीघ्र ही पुन सादडी लौट आये। स्थानीय विद्यालयो व अस्पतालो के विकास म लग गये। इनकी प्रेरणा व सहयोग से राजस्थान चल चिकित्सा इकाई के अनेक शिविर आयोजित हुए हैं और हजारो लाखो पीडित मानवो की चिकित्सा सम्पन्न हुई है। सार्वजनिक सेवा का कार्य हो अथवा धार्मिक व सामाजिक, श्री हस्तीमलजी की अगुवाई म वह कार्य अच्छे ढग से सम्पन्न होता है।





श्री सागरमलजी चोपड़ा



श्री सागरमलजी चोपड़ा का नाम लेते ही एक हंसते मुस्कराते हुए चेहरे की तस्वीर सामने आ जाती है जो सेवा हो जनसेवा के लिए समर्पित था। श्री सागरमलजी चोपड़ा का जन्म बाली कस्बे में एक एस परिवार में हुआ जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न न होते हुए भी धर्मनिष्ठ और श्रमनिष्ठ था और इन्ही पारिवारिक संस्कारों ने श्री चोपड़ा को उद्योगपतियों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया। आजादी से पूर्व द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान श्री सागरमलजी ने अपनी जन्म भूमि फालना बाली में छाता उद्योग लगवाने का निश्चय किया तो लोग इनका मजाक उड़ाने लगे पर धुन के पक्के और आत्म-विश्वासी चोपड़ाजी ने अनेक विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी उद्योग स्थापित कर ही दिया। अनेक उतार चढ़ाव के बावजूद इन्होंने हिम्मत नहीं हारी और आज तो फालना एक उद्योग नगरी के रूप में भारत भर में प्रसिद्ध है।

श्री चोपड़ाजी की मिलनसारिता और दरियादिली के कारण ही इस क्षेत्र के विकास में अफसरों और जनप्रतिनिधियों का सहयोग प्राप्त हुआ। अनेक नये-नये उद्यमी आगे आये और उन्होंने नये नये उद्योग स्थापित किये। इनका निवास स्थान और फैक्टरी से लगा अतिथिगृह तो हमेशा ही मेहमानों से भरा रहता था और क्षेत्र के विकास की नयी नयी योजनायें यहाँ बनती रहती थी।

राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया, पूर्व वरिष्ठ मन्त्री श्री मथुरादासजी माथुर और सांसद स्वर्गीय श्री हरिश्चन्द्रजी माथुर से इनके बड़े ही मधुर सम्बन्ध थे। इसी कारण केन्द्रीय सरकार के मन्त्रीगण भी फालना आते रहते थे।

श्री चोपड़ाजी का सामाजिक और सार्वजनिक जीवन भी कम महत्वपूर्ण नहीं रहा। फालना व बाली में अस्पताल भवन इन्हीं की देन हैं और फालना कालेज वरकाणा विद्यालय आदि अनेक शिक्षणसंस्थाओं को इनका आर्थिक सहयोग मिलता रहा है।

श्री चोपड़ाजी के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी अहम् भाव का अभाव। साधारण से साधारण लोगों से भी इन्होंने अपने मधुर और पारिवारिक सम्बन्ध आखिर तक बनाये रखे। गोड़वाड़ क्षेत्र के निवासी श्री सागरमलजी को आधुनिक युग के विकास का मसीहा मानते हैं और कहते हैं कि यदि परमात्मा ने इन्हें भरी जवानी में न उठाया होता तो इस सारे क्षेत्र का विकास और अधिक द्रुत गति से सम्पन्न होता



श्रीमती पानीबाई मेहता



श्रीमती पानीबाई मेहता का जन्म बाली कस्बे में हुआ और विवाह भी बाली में ही श्री जीवराजजी मेहता के साथ हुआ। इसे सुखद संयोग ही कहिए कि दोनों ही पति पत्नी समाज सेवा के कार्यों में वर्षों से जुड़े हुए हैं। श्रीमती मेहता सामाजिक सुधारों में विश्वास रखने वाली अग्रिम पंक्ति की महिलाओं में से एक है। आज से कोई 50 वर्ष पूर्व पर्दा प्रथा का त्याग कर ये आगे आई और परिवार के पुत्र-पुत्रियों को उच्च शिक्षा दिला कर एक आदर्श उपस्थित किया।

श्रीमती मेहता एक निडर स्पष्ट वक्ता, स्वाभिमानी और अतिथि सत्कार में एक बेजोड़ महिला है। मरुधर बालिका विद्यापीठ के प्रारम्भिक दिनों में श्रीमती मेहता ने सक्रिय होकर सहयोग दिया और अनेक प्रकार की आवश्यक सामग्री भेंटस्वरूप प्राप्त कर विद्यावाड़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति की।

श्रीमती मेहता कुछ समय से अस्वस्थ हैं पर आज भी जरूरत मन्दों को सहयोग पहुंचाने में पीछे नहीं रहती। इनके पति प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जीवराजजी मेहता भी अपना पूरा समय बम्बई अस्पताल में मरीजों को सम्भालने में लगाते हैं। उनके पीछे भी अदृश्य रूप में श्रीमती मेहता की प्रेरणा ही है।



श्री नेनमलजी जैन



श्री नेनमलजी जैन मुण्डारा एक उत्साही व्यक्ति थे। आप प्रारम्भ से ही सामाजिक धार्मिक एवम् शैक्षणिक संस्थाओं के विकास कार्य में सक्रिय योगदान प्रदान करते रहे है। आपने मुण्डारा स्कूल भवन का निर्माण करवाकर सार्वजनिक कार्य का सभी के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। आप गोड़वाड़ जैन समाज के अग्रणी सदस्य एवं सेवाभावी व्यक्ति रहे हैं।



आय के अल्प साधना के साथ इन्होने बम्बई मे अपना कारोबार प्रारम्भ किया था पर मेहनत, लगन और सेवावृत्ति के फलस्वरूप इन्हान सफलता अर्जित की और युवावस्था म ही जनहित के विकास कार्यों मे धन लगाने की भावना जाग्रत हुई।

समाज को इनसे बहुत आशाएँ थी पर अल्पायु म ही इनका देहावसान हो गया। इन्हाने अपनी सेवा भावना के बल पर क्षेत्र मे अपना प्रतिष्ठित स्थान बना लिया था।



श्री कालीदासजी राठौर



श्री कालीदासजी का जन्म सादडी कस्बे के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित परिवार मे हुआ। इनके परिवार की परम्परा समाजसेवा की रही है और अनेक सावजनिक हित के कार्यों के अलावा इस परिवार के पूवज स्वर्गीय श्री मूलचन्दजी स्वर्गीय श्री दीपचन्द जी स्वर्गीय श्री निहालचन्दजी जीवनपयन्त समाजसवा विशेषकर शिक्षण सस्थाओ की सेवा करते रहे हैं। श्री पाश्वनाथ जन विद्यालय वरकाणा के स्थापनाकाल से ही इस सस्था के विकास मे इनका बहुत बडा योगदान रहा है।

श्री कालीदासजी वरकाणा विद्यालय समिति के गत 20 वर्षो से अध्यक्ष हैं। बम्बई अस्पताल बम्बई मे भी इन्होने एक बडी दानराशि भेंट की है। इनका मुख्य कारोबार बम्बई मे है। ये गोडवाड क्षेत्र के विकास व उन्नति म विशेष दिलचस्पी रखते हैं।



सघवी श्री कुन्दनमलजी



श्री कुन्दनमलजी धनराजजी पारख मूल निवासी लापोद के हैं। इनकी शिक्षा श्री पाश्वनाथ जन विद्यालय वरकाणा म हुई है। धन कमाकर जनहित के कार्यों म खच करन की प्रवृत्ति इनम प्रारम्भ म ही रही है। इनका मुख्य व्यवसाय बगलोर और सूरत मे है। श्री कुन्दनमलजी अपना अधिकाश समय समाज सेवा म व्यतीत करते हैं। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र मे सेवा करने की इनकी विशेष रुचि है। बेंगलोर, रानी वरकाणा आदि स्थानो पर समाज सेवा के कार्यो मे और आम जनता के कल्याण के लिए विकास कार्यों मे इन्होने प्रचुर अनुदान देकर प्रतिष्ठा अर्जित की है।

वरकाणा को आदश गाव के रूप मे विकसित करने की इन्होने घोषणा की है और प्रथम चरण के रूप मे वहा पेयजल और पक्की सडका व नालियो का निर्माण सम्पन्न करवा दिया है।



श्री सम्पतराजजी भसाली



श्री पाश्वनाथ जन विद्यालय वरकाणा को अपना तन मन धन सवस्व अपण करने वाले इस महापुरुष न हजारो लाखो विद्यार्थियो को सादा जीवन उच्च विचार' की शिक्षा देकर जीवन को नया आलोक प्रदान किया है। अपनी जन्मभूमि जोधपुर म शिक्षा प्राप्त कर युवावस्था मे ही वरकाणा गाव को अपनी कमभूमि बनाकर इन्हाने अपना सारा जीवन ही वहाँ सस्था की सवा म लगा दिया। इतना ही नहीं अपनी जीवन भर की सचित धनराशि भी वरकाणा ग्रामवासियो और छात्र छात्राओ के हिताथ तथा चिकित्सालय भवन क निमाण मे लगा कर इन्होने इस ससार से विदा ली।

श्री भसाली का त्यागमय जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी रहा है। विद्यार्थियो क लिए ही नही सभी के लिए इनके दिल म सदव ही प्रेम का दरिया बहता था और मुसीबत म हर किसी के काम आना इनका स्वभाव बन गया था। सारे क्षेत्र में श्री भसाली अत्यन्त ही लोकप्रिय थे। इनकी लोकप्रियता व सेवा भावना के कारण ही लोगो ने समाज सुधार व शिक्षा प्रचार मे लाखो करोडो का योगदान दकर होनहार युवावग का उत्साह बढाया है। पाली जिला विशेषकर गोडवाड की धरती इनकी सवा से उपकृत हुई है इसलिये इस क्षेत्र के निवासियो के हृदय म इनकी पावन स्मृति चिरकाल तक बनी रहेगी।





श्री सागरमलजी चौपडा



श्री सागरमलजी चौपडा का नाम लेते ही एक ऐसी मुस्कराते हुए चेहरे की तस्वीर सामने आ जाती है जो सदा ही जनसेवा के लिए समर्पित था। श्री सागरमलजी चौपडा का जन्म वाली कस्बे में एक ऐसे परिवार में हुआ जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न न होते हुए भी श्रमनिष्ठ और धर्मनिष्ठ था और इन्हीं पारिवारिक संस्कारों ने श्री चौपडा को उद्योगपतियों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया। आजादी से पूर्व द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान श्री सागरमलजी ने अपनी जन्म भूमि फालना वाली में छाता उद्योग लगाने का निश्चय किया तो लोग इनका मजाक उड़ाने लग गए पर धुन के पक्के और आत्म-विश्वासी चौपडाजी ने अनेक विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी उद्योग स्थापित कर ही दिया। अनेक उतार चढ़ाव के बावजूद इन्होंने हिम्मत नहीं हारी और आज तो फालना एक उद्योग नगरी के रूप में भारत भर में प्रसिद्ध है।

श्री चौपडाजी की मिलनसारिता और दरियादिली के कारण ही इस क्षेत्र के विकास में अफसरों और जनप्रतिनिधियों का सहयोग प्राप्त हुआ। अनेक नये नये उद्यमी आगे आये और उन्होंने नये नये उद्योग स्थापित किये। इनका निवास स्थान और फैक्टरी से लगा अतिथिगृह तो हमेशा ही मेहमानों से भरा रहता था और क्षेत्र के विकास की नयी नयी योजनायें यहाँ बनती रहती थीं।

राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया, पूर्व वरिष्ठ मन्त्री श्री मथुरादासजी माथुर और सांसद स्वर्गीय श्री हरिश्चन्द्रजी माथुर से इनके बड़े ही मधुर सम्बन्ध थे। इसी कारण केन्द्रीय सरकार के मन्त्रीगण भी फालना आते रहते थे।

श्री चौपडाजी का सामाजिक और सार्वजनिक जीवन भी कम महत्वपूर्ण नहीं रहा। फालना व वाली में अस्पताल भवन इन्हीं की देन है और फालना कालेज बरकाणा विद्यालय आदि अनेक शिक्षणसंस्थाओं को इनका आर्थिक सहयोग मिलता रहा है।

श्री चौपडाजी के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी अहम् भाव का अभाव। साधारण से साधारण लोगों से भी इन्होंने अपने मधुर और पारिवारिक सम्बन्ध आखिर तक बनाये रखे। गोडवाड क्षेत्र के निवासी श्री सागरमलजी को आधुनिक युग के विकास का मसीहा मानते हैं और कहते हैं कि यदि परमात्मा ने इन्हें भरी जवानी में उठाया होता तो इस सारे क्षेत्र का विकास और अधिक द्रुत गति से सम्पन्न होता।



श्रीमती पानीबाई मेहता



श्रीमती पानीबाई मेहता का जन्म वाली कस्बे में हुआ और विवाह भी वाली में ही श्री जीवराजजी मेहता के साथ हुआ। इसे सुखद संयोग ही कहिये कि दोनों ही पति पत्नी समाज सेवा के कार्यों में वर्षों से जुड़े हुए हैं। श्रीमती मेहता सामाजिक सुधारों में विश्वास रखने वाली अग्रिम पंक्ति की महिलाओं में से एक हैं। आज से कोई 50 वर्ष पूर्व पर्दा प्रथा को त्याग कर वे आगे आई और परिवार के पुत्र-पुत्रियों को उच्च शिक्षा दिला कर एक आदर्श उपस्थित किया।

श्रीमती मेहता एक निडर, स्पष्ट वक्ता, स्वाभिमानी और अतिथि सत्कार में एक बेजोड़ महिला हैं। मरुधर बालिका विद्यापीठ के प्रारम्भिक दिनों में श्रीमती मेहता ने सक्रिय होकर सहयोग दिया और अनेक प्रकार की आवश्यक सामग्री भेंटस्वरूप प्राप्त कर विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की।

श्रीमती मेहता कुछ समय से अस्वस्थ हैं पर आज भी जरूरतमन्दों को सहयोग पहुंचाने में पीछे नहीं रहतीं। इनके पति प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जीवराजजी मेहता भी अपना पूरा समय बम्बई अस्पताल में मरीजों की सम्भालने में लगाते हैं। उनके पीछे भी प्रमुख रूप में श्रीमती मेहता की प्रेरणा ही है।



श्री नेनमलजी जैन



श्री नेनमलजी जैन मुण्डारा एक उत्साही व्यक्ति थे। आप प्रारम्भ से ही सामाजिक धार्मिक एवम् शैक्षणिक संस्थाओं के विकास कार्य में सक्रिय योगदान प्रदान करते रहे हैं। आपने मुण्डारा स्कूल भवन का निर्माण करवाकर सार्वजनिक कार्य का सभी के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। आप गोडवाड जैन समाज के अग्रणी सदस्य एवं सेवाभावी व्यक्ति रहे हैं।



आय के अल्प साधनों के साथ इन्होंने बम्बई में अपना कारोबार प्रारम्भ किया था पर मेहनत लगन और सेवावृत्ति के फलस्वरूप इन्होंने सफलता अर्जित की और युवावस्था में ही जनहित के विकास कार्यों में धन लगाने की भावना जाग्रत हुई ।

समाज को इनसे बहुत आशाएँ थी पर अल्पायु में ही इनका देहावसान हो गया । इन्होंने अपनी सेवा भावना के बल पर क्षेत्र में अपना प्रतिष्ठित स्थान बना लिया था ।

श्री कालीदासजी राठौर

□

श्री कालीदासजी का जन्म सान्डी कस्बे के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित परिवार में हुआ । इनके परिवार की परम्परा समाजसेवा की रही है और अनेक सार्वजनिक हित के कार्यों के अलावा इस परिवार के पूर्वज स्वर्गीय श्री मूलचन्दजी स्वर्गीय श्री दीपचन्द जी, स्वर्गीय श्री निहालचन्दजी जीवनपर्यन्त समाजसेवा विशेषकर शिक्षण संस्थाओं की सेवा करते रहे हैं । श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा के स्थापनाकाल से ही इस संस्था के विकास में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है ।

श्री कालीदासजी वरकाणा विद्यालय समिति के गत 20 वर्षों से अध्यक्ष हैं । बम्बई अस्पताल बम्बई में भी इन्होंने एक बड़ी दानराशि भेंट की है । इनका मुख्य कारोबार बम्बई में है । ये गोडवाड़ क्षेत्र के विकास व उन्नति में विशेष दिलचस्पी रखते हैं ।

संघवी श्री कुन्दनमलजी

□

श्री कुन्दनमलजी धनराजजी पारेख मूल निवासी लापोद के हैं । इनकी शिक्षा श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा में हुई है । धन कमाकर जनहित के कार्यों में खर्च करने की प्रवृत्ति इनमें प्रारम्भ से ही रही है । इनका मुख्य व्यवसाय बंगलोर और सूरत में है । श्री कुन्दनमलजी अपना अधिकांश समय समाज सेवा में व्यतीत करते हैं । शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में सेवा करने की इनकी विशेष रुचि है । बंगलोर, रानी, वरकाणा आदि स्थानों पर समाज सेवा के कार्यों में और आम जनता के कल्याण के लिए विकास कार्यों में इन्होंने प्रचुर अनुदान देकर प्रतिष्ठा अर्जित की है ।

वरकाणा को आदर्श गांव के रूप में विकसित करने की इन्होंने घोषणा की है और प्रथम चरण के रूप में वहां पेयजल और पक्की सड़कों व नालियों का निर्माण सम्पन्न करवा दिया है ।

श्री सम्पतराजजी भंसाली

□

श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा को अपना तन मन धन सर्वस्व अर्पण करने वाले इस महापुरुष ने हजारों लाखों विद्यार्थियों को सादा जीवन उच्च विचार की शिक्षा देकर जीवन को नया आलोक प्रदान किया है । अपनी जन्मभूमि जोधपुर में शिक्षा प्राप्त कर युवावस्था में ही वरकाणा गांव को अपनी कर्मभूमि बना कर इन्होंने अपना सारा जीवन ही वहां संस्था की सेवा में लगा दिया । इतना ही नहीं अपनी जीवन भर की संचित धनराशि भी वरकाणा ग्रामवासियों और छात्र छात्राओं के हितार्थ तथा चिकित्सालय भवन के निर्माण में लगा कर इन्होंने इस संसार से विदा ली ।

श्री भंसाली का त्यागमय जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी रहा है । विद्यार्थियों के लिए ही नहीं, सभी के लिए इनके दिल में सच्चे ही प्रेम का दरिया बहता था और मुसीबत में हर किसी के काम आना इनका स्वभाव बन गया था । सारे क्षेत्र में श्री भंसाली अत्यन्त ही लोकप्रिय थे । इनकी लोकप्रियता व सेवा भावना के कारण ही लोगों ने समाज सुधार व शिक्षा प्रचार में लाखों-करोड़ों का योगदान देकर होनहार युवकों का उत्साह बढ़ाया है । पाली जिला विशेषकर गोडवाड़ की धन्ती इनकी सेवा से उपकृत हुई है, इसलिये इस क्षेत्र के निवासियों के हृदय में इनकी पावन स्मृति चिरकाल तक बनी रहेगी ।



श्री सागरमलजी चोपडा

श्री सागरमलजी चोपडा का नाम लेते ही एक ऐसी मुस्कराते हुए चेहरे की तस्वीर सामने आ जाती है जो सदा ही जनसेवा के लिए समर्पित था। श्री सागरमलजी चोपडा का जन्म बाली कस्बे में एक ऐसे परिवार में हुआ जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न न होते हुए भी श्रमनिष्ठ और धर्मनिष्ठ था और इन्हीं पारिवारिक संस्कारों ने श्री चोपडा को उद्योगपतियों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा कर दिया। आजादी से पूर्व द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान श्री सागरमलजी ने अपनी जन्म भूमि फालना-बाली में छाता उद्योग लगवाने का निश्चय किया तो लोग इनका मजाक उड़ाने लगे पर धुन के पक्के और आत्म विश्वासी चोपडाजी ने अनेक विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी उद्योग स्थापित कर ही लिया। अनेक उतार चढ़ाव के बावजूद इन्होंने हिम्मत नहीं हारी और आज तो फालना एक उद्योग नगरी के रूप में भारत भर में प्रसिद्ध है।

श्री चोपडाजी की मिलनसारिता और दरियादिली के कारण ही इस क्षेत्र के विकास में अफसरों और जनप्रतिनिधियों का सहयोग प्राप्त हुआ। अनेक नये नये उद्यमी आगे आये और उन्होंने नये नये उद्योग स्थापित किये। इनका निवास स्थान और फैक्टरी में लगा अतिथिगृह तो हमेशा ही महमानों से भरा रहता था और क्षेत्र के विकास की नयी नयी योजनाएं यहीं बनती रहती थी।

राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया, पूर्व वरिष्ठ मन्त्री श्री मथुरादासजी माथुर और सांसद स्वर्गीय श्री हरिशचन्द्रजी माथुर से इनके बड़े ही मधुर सम्बन्ध थे। इसी कारण केन्द्रीय सरकार के मन्त्रीगण भी फालना आते रहते थे।

श्री चोपडाजी का सामाजिक और सार्वजनिक जीवन भी कम महत्वपूर्ण नहीं रहा। फालना व बाली में अस्पताल भवन इन्हीं की देन है और फालना कालेज वरकाणा विद्यालय आदि अनेक शिक्षण संस्थाओं को इनका आर्थिक सहयोग मिलता रहा है।

श्री चोपडाजी के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी अहम् भाव का अभाव। साधारण से साधारण लोगों से भी इन्होंने अपने मधुर और पारिवारिक सम्बन्ध आखिर तक बनाये रखे। गोडवाड क्षेत्र के निवासी श्री सागरमलजी को आधुनिक युग के विकास का मसीहा मानते हैं और कहते हैं कि यदि परमात्मा ने इन्हें भरी जवानी में उठाया होता तो इस सारे क्षेत्र का विकास और अधिक द्रुत गति से सम्पन्न होता।



श्रीमती पानीबाई मेहता

श्रीमती पानीबाई मेहता का जन्म बाली कस्बे में हुआ और विवाह भी बाली में ही श्री जीवराजजी मेहता के साथ हुआ। इसे सुखद संयोग ही कहिये कि दोनों ही पति पत्नी समाज सेवा के कार्यों में वर्षों से जुड़े हुए हैं। श्रीमती मेहता सामाजिक सुधारों में विश्वास रखने वाली अग्रिम पंक्ति की महिलाओं में से एक है। आज से कोई 50 वर्ष पूर्व पर्दा प्रथा को त्याग कर ये आगे आईं और परिवार के पुत्र-पुत्रियों को उच्च शिक्षा दिला कर एक आदर्श उपस्थित किया।

श्रीमती मेहता एक निडर स्पष्ट वक्ता, स्वाभिमानी और अतिथि सत्कार में एक बेजोड़ महिला है। मरुधर बालिका विद्यापीठ के प्रारम्भिक दिनों में श्रीमती मेहता ने सक्रिय होकर सहयोग दिया और अनेक प्रकार की आवश्यक सामग्री भेंटस्वरूप प्राप्त कर विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की।

श्रीमती मेहता कुछ समय से अस्वस्थ हैं पर आज भी जरूरतमन्दों को सहयोग पहुंचाने में पीछे नहीं रहती। इनके पति प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जीवराजजी मेहता भी अपना पूरा समय बम्बई अस्पताल में मरीजों को सम्भालने में लगाते हैं। उनके पीछे भी अदृश्य रूप में श्रीमती मेहता की प्रेरणा ही है।



श्री नेनमलजी जैन

श्री नेनमलजी जैन मुण्डारा एक उत्साही व्यक्ति थे। आप प्रारम्भ से ही सामाजिक धार्मिक एवम् शैक्षणिक संस्थाओं के विकास कार्य में सक्रिय योगदान प्रदान करते रहे हैं। आपने मुण्डारा स्कूल भवन का निर्माण करवाकर सार्वजनिक कार्य का सभी के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। आप गोडवाड जैन समाज के अग्रणी सदस्य एव सेवाभावी व्यक्ति रहे हैं।



आय के अल्प साधना के साथ इन्होंने बम्बई म अपना कारोबार प्रारम्भ किया था पर मेहनत, लगन और सेवावृत्ति के फलस्वरूप इन्होंने सफलता अर्जित की और युवावस्था मे ही जनहित के विकास कार्यों म धन लगाने की भावना जाग्रत हुई।

समाज को इनसे बहुत आशाएँ थी पर अल्पायु मे ही इनका देहावसान हो गया। इन्होंने अपनी सेवा भावना के बल पर क्षेत्र मे अपना प्रतिष्ठित स्थान बना लिया था।



श्री कालीदासजी राठौर



श्री कालीदासजी का जन्म सादडी कस्बे के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित परिवार मे हुआ। इनके परिवार की परम्परा समाजसेवा की रही है और अनेक सार्वजनिक हित के कार्यों के अलावा इस परिवार के पूर्वज स्वर्गीय श्री मूलचन्दजी स्वर्गीय श्री दीपचन्द जी स्वर्गीय श्री निहालचन्दजी जीवनपर्यन्त समाजसेवा विशेषकर शिक्षण सस्थाओ की सेवा करते रहे हैं। श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा के स्थापनाकाल से ही इस सस्था के विकास मे इनका बहुत बडा योगदान रहा है।

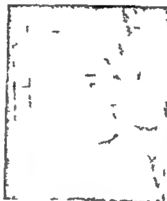
श्री कालीदासजी वरकाणा विद्यालय समिति के गत 20 वर्षों से अध्यक्ष हैं। बम्बई अस्पताल, बम्बई मे भी इन्होंने एक बडी दानराशि भेंट की है। इनका मुख्य कारोबार बम्बई म है। ये गोडवाड क्षेत्र के विकास व उन्नति म विशेष दिलचस्पी रखते हैं।

सघवी श्री कुन्दनमलजी



श्री कुन्दनमलजी धनराजजी पारेख मूल निवासी लापाद के हैं। इनकी शिक्षा श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा म हुई है। धन कमाकर जनहित के कार्यों म खर्च करने की प्रवृत्ति इनमे प्रारम्भ म ही रही है। इनका मुख्य व्यवसाय बगलोर और सूरत म है। श्री कुन्दनमलजी अपना अधिकाश समय समाज सेवा मे व्यतीत करते हैं। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र मे सेवा करने की इनकी विशेष रुचि है। बैंगलोर, रानी, वरकाणा आदि स्थानो पर समाज सेवा के कार्यों म और आम जनता के कल्याण के लिए विकास कार्यों मे इन्होंने प्रचुर अनुदान देकर प्रतिष्ठा अर्जित की है।

वरकाणा को आदर्श गाव के रूप म विकसित करने की इन्होंने घोषणा की है और प्रथम चरण के रूप मे वहा पेयजल और पक्की सडका व नालियो का निर्माण सम्पन्न करवा दिया है।



श्री सम्पतराजजी भसाली



श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय वरकाणा को अपना तन-मन-धन सर्वस्व अर्पण करने वाले इस महापुरुष ने हजारो लाखो विद्यार्थियो को सादा जीवन-उच्च विचार की शिक्षा देकर जीवन का नया आलोक प्रदान किया है। अपनी जन्मभूमि जोधपुर म शिक्षा प्राप्त कर युवावस्था मे ही वरकाणा गाव को अपनी कर्मभूमि बनाकर इन्होंने अपना सारा जीवन ही वहा सस्था की सेवा मे लगा दिया। इतना ही नही अपनी जीवन भर की सचित धनराशि भी वरकाणा ग्रामवासियो और छात्र छात्राओं के हितार्थ तथा चिकित्सालय भवन के निर्माण मे लगा कर इन्होंने इस ससार से विदा ली।

श्री भसाली का त्यागमय जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी रहा है। विद्यार्थियो के लिए ही नहीं, सभी के लिए इनके दिल मे सच ही प्रेम का दरिया बहता था और मुसीबत म हर किसी के काम आना इनका स्वभाव बन गया था। सारे क्षेत्र मे श्री भसाली अत्यन्त ही लोकप्रिय थे। इनकी लोकप्रियता व सेवा भावना के कारण ही लोगो ने समाज सुधार व शिक्षा प्रचार म लाखो-करोडो का योगदान देकर होनहार युवावर्ग का उत्साह बढाया है। पाली जिला विशेषकर गोडवाड की धरती इनकी सेवा से उपकृत हुई है इसलिए इस क्षेत्र के निवासियों के हृदय म इनकी पावन स्मृति चिरकाल तक बनी रहेगी।



श्री प्रेमराजजी बाफना



श्री प्रेमराजजी बाफना पाली जिले के सादडी कस्बे मे जन्मे एक उदीयमान उद्योगपति और समाज-सेवक हैं। युवा अवस्था म ही इन्होंने समाज-सेवा की प्रेरणा से सादडी म एक भव्य विद्यालय भवन का निमार्ण कराया, जिसम हजारो छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। बम्बई नगरी म प्लास्टिक उद्योग म ख्याति प्राप्त श्री बाफना दुनिया के अनेक विकसित देशो की यात्रा कर चुके हैं।

बम्बई अस्पताल म इन्होंने बहुत बडी धनराशि दान कर समाज का नाम रोशन किया है। श्री बाफना राजस्थान की अनेक शिक्षण व सामाजिक संस्थाओ से जुडे हुए है और उनको सदव हर प्रकार का सहयोग देते रहते हैं।



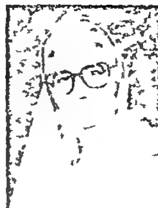
श्रीमती रतन के सोलकी



श्रीमती रतन के सोलकी पाली जिले के रानी कस्बे की निवासी हैं। कम आयु म ही इन्होंने बम्बई म व्यापार कर रहे अपने पति के सहयोग से सामाजिक और राजनतिक क्षेत्र म प्रवेश कर अच्छा नाम कमाया है।

श्रीमती रतन सोलकी बम्बई (उत्तर पूव) डिस्ट्रिक्ट महिला काग्रेस कमेटी की महामत्री हैं और जन सेवा की विभिन्न प्रवृत्तियों मे रुचि के कारण जनहिताय अनेक अभियानो का नतृत्व कर चुकी हैं। इनका विशेष योगदान निधन और अल्प आय वग के लोगो की समस्याओ को उजागर कर उन्हें निपटान मे रहा है। इन्होंने कई नि शुल्क चिकित्सा शिविरो व परिवार कल्याण शिविरो का आयोजन किया है। अनेक सरकारी अद्ध सरकारी एव गर सरकारी सस्थाओ से इनका जीवन्त सम्पक बना हुआ है। वतमान मे ये घाटकोपर (बम्बई) मारवाडी महिला मडल तथा रहवासी सगठन की अध्यक्ष हैं। इसके अलावा घाटकोपर झोपडपट्टी मडल एव गृह उद्योग महिला सघ की महामन्त्री है।

श्रीमती सोलकी ने प्रौढ शिक्षा तथा जरूरतमन्द छात्र छात्राओ को नि शुल्क पाठय सामग्री उपलब्ध कराने म भी उल्लेखनीय काय किया है। सामाजिक और राजनतिक क्षत्र म समान रूप से लोकप्रिय होने म इन्हे सभी का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ है।



श्रीमती सुभद्रा जैन



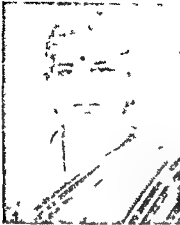
हजारो हजारो छात्राओ व युवतियो के जीवन मे शिक्षा की ज्योति प्रज्वलित करने वाली समाज सुधार कायक्रमो म दृढता पूवक आगे बढने वाली और दुर्व्यसनो म लिप्त सकडो परिवारो को शराब अफीम व नशीली चीजो से मुक्ति दिलाने वाली इस समर्पित विदुषी महिला से क्षेत्र का बच्चा-बच्चा भली भाति परिचित है। शालीन श्वेत परिधान और मृदुता की धनी इस महिला ने अपना पूरा जीवन ही समाज व राष्ट्र को समर्पित कर दिया है।

एक आदश शिक्षिका होने के नाते इनका सम्मान राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर तो हुआ ही है किन्तु इनकी मान्यता है कि जन जन के हृदय में जो प्रेम और सम्मान प्राप्त हुआ है वही इनके लिए सबसे बडा पुरस्कार है। कई विषयो मे निष्णात होने के साथ साथ सुभद्राजी अच्छी वक्तृ और लेखिका भी हैं। इनका परिवार मूल रूप से पजाबी है और जनाचाय श्री वल्लभसूरीजी महाराज का भक्त रहा है पर इन्होंने विद्यावाडी की स्थापना के साथ ही अपना जीवन विद्यावाडी महिला विद्यालय को पूणत समर्पित कर दिया। तब से ही लगभग एक सहस्र छात्राओ वाली इस सस्था की समूची व्यवस्था ये ही सम्भालती हैं।

इनके व्यक्तित्व की सबसे बडी खूबी तो यह है कि पिछले 30 35 वर्षों में हजारो छात्राएं इस सस्था से शिक्षा लेकर निकली हैं पर आज भी उन छात्राओ तथा उनके परिजनो से भी उनका व्यक्तिगत सम्पक बना हुआ है और सभी को ये नाम सहित जानती हैं। इनके महान आदर्शों और सेवामय जीवन से प्रभावित होकर दानदाता स्वय आगे आता है और विद्यावाडी के विकास म सहयोगी बनता है।

सुभद्रा बहिन विचारो से गाधीवादी हैं तथा रचनात्मक प्रवृत्तियों मे रुचि लेती हैं। सर्वोदय केन्द्र-खीमेल के सचालक मडल की वर्षो से सदस्या हैं। क्षेत्र के पडौसी ग्रामो मे भी अध्यापिकाओ और छात्राओ की टोली बनाकर ग्राम वासियो के बीच प्राय जाती रहती हैं और उन्हें शिक्षा समाज सुधार और व्यसन मुक्ति की प्रेरणा देती है। इनकी दृढ धारणा है कि महिला शिक्षा से ही परिवार समाज और राष्ट्र के जीवन को समुन्नत किया जा सकता है और भारतीय संस्कृति के अनुरूप जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना की जा सकती है।





श्रीमती गुणवती मसाली



श्रीमती गुणवतीजी का जन्म ग्राम खीमेल के प्रतिष्ठित खजाची परिवार म हुआ। इनकी शिक्षा मरुधर बालिका विद्यापीठ, विद्यावाडी मे सम्पन्न हुई। पारिवारिक वातावरण और विद्यावाडी की शिक्षा दीक्षा ने इन्ह समाज सुधार के कायक्रम की ओर आकृष्ट किया और विवाहोपरा त भी ये ऐसे ही कार्यो मे रुचि लेती रही। पाली जिले म विशेषकर गोडवाड के अधिकाश न्यापारी लोग बम्बई मे रहते हैं अत श्रीमती गुणवती बहिन ने बम्बई म एक सस्था "ओसवाल मित्र मण्डल' नामक गठित की है।

श्रीमती मसाली इस सस्था की अध्यक्षा हैं और समाज सुधार के कायक्रमो म बडी रुचि लेती हैं। इस सस्था के माध्यम से सम्पक साध कर समाज के युवक युवतियो मे भी समाज सुधार के विभिन्न कायक्रमो म रुचि जाग्रत की जाती है। वसे फिलहाल इस सस्था के द्वारा विभिन्न वर्गों और रुचियो के युवक युवतियो को बिना दहेज व टीका-दस्तूरी के विवाह सूत्र मे बाधने हेतु प्रोत्साहित करना और सम्पक जुटाने का काय किया जा रहा है। इसके लिय यह सस्था नि शुल्क विज्ञापन प्रकाशित करती है और सम्पक साधनो मे सहयोग करती है। यह सस्था विधवाओ एव विधुरो के विवाह को भी प्रोत्साहन देती है। इस तरह श्रीमती मसाली ने सामाजिक सुधार के क्षत्र मे एक क्रातिकारी अभियान छेड कर प्रशसनीय पहल की है।



सेठ रामकुमारजी बागड



यू तो पाली प्राचीन काल से ही व्यापार की प्रसिद्ध मण्डी रही है और अनेक प्रकार के छोटे गृह उद्योगो के लिए प्रसिद्ध रही है, पर उद्योगो म क्रातिकारी विकास की नीव डाली—डीडवाना के स्वर्गीय सेठ श्री मगनीरामजी बागड ने और चहुमुखी विकास किया–सेठ रामकुमारजी ने। बागड परिवार ने उस जमाने म बडे साहस का काय किया और पाली मे एक बडी कपडा मिल खडी कर दी। इसी उद्योग के फलस्वरूप अग्रेजी राज मे नष्ट प्राय हुए उद्योग और व्यापार को पुन जीवनदान मिला और पाली शहर ही नहीं, पाली जिले के अ य कई कस्बे कपडा व्यापार की मण्डी बन गये। लाखो लोगो को रोजगार धन्धा मिलने लगा।

बागड परिवार जनहिताथ कार्यों के लिए देश भर म प्रसिद्ध है। पाली नगर के आधुनिक विकास म इन सेठो का बहुत बडा योगदान रहा है, जो इतिहास म सदा स्मरणीय रहेगा। जनकल्याण और पाली नगर के विकास के लिये उनके सहयोग से निम्नाकित उल्लेखनीय काय सम्पन्न हुए हैं —

1 बागड कालेज भवन
2 बागड उच्चस्तर माध्यमिक विद्यालय भवन
3 बागड अस्पताल भवन
4 बागड धमशाला
5 श्री वकटेश भगवान का मन्दिर
6 बागड स्टेडियम
7 बागड म्यूजियम

इन बडे व महत्त्वपूण कार्यो के अलावा इनके आर्थिक सहयोग से और भी अनेक काय सम्पन्न हुए है और चल रहे है। पाली जिले मे बार बार होने वाले प्राकृतिक प्रकोपो अकाल बाढ आदि के समय मे भी इनके द्वारा पर्याप्त राहत सामग्री व आर्थिक सहयोग मिलता रहा है। वस्तुत पाली शहर को आधुनिक विकसित स्वरूप प्राप्त करने म बागड परिवार का सर्वाधिक योगदान रहा है।



श्री प्रेमराजजी बाफना

☐

श्री प्रेमराजजी बाफना पाली जिले के सादडी कस्बे म जन्मे एक उदीयमान उद्योगपति और समाज-सेवक हैं। युवा अवस्था म ही इन्होंने समाज-सेवा की प्रेरणा से सादडी मे एक भव्य विद्यालय भवन का निर्माण कराया जिसम हजारो छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। बम्बई नगरी मे प्लास्टिक उद्योग म ख्याति प्राप्त श्री बाफना दुनिया के अनेक विकसित देशो की यात्रा कर चुके हैं।

बम्बई अस्पताल मे इन्होंने बहुत बडा धनराशि दान कर समाज का नाम रोशन किया है। श्री बाफना राजस्थान की अनेक शिक्षण व सामाजिक सस्थाओ से जुडे हुए हैं और उनको सदैव हर प्रकार का सहयोग देते रहते हैं।



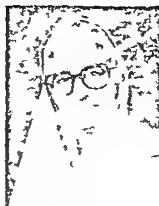
श्रीमती रतन के सोलकी

☐

श्रीमती रतन के सोलकी पाली जिले के रानी कस्बे की निवासी हैं। कम आयु म ही इन्होंने बम्बई मे व्यापार कर रहे अपने पति के सहयोग से सामाजिक और राजनतिक क्षेत्र म प्रवेश कर अच्छा नाम कमाया है।

श्रीमती रतन सोलकी बम्बई (उत्तर पूव) डिस्ट्रिक्ट महिला काग्रेस कमेटी की महामत्री हैं और जन सेवा की विभिन्न प्रवृत्तियों मे रुचि के कारण जनहितार्थ अनेक अभियानो का नेतृत्व कर चुकी हैं। इनका विशेष योगदान निधन और अल्प आय वग के लोगो की समस्याओ को उजागर कर उन्हें निपटान मे रहा है। इन्होंने कई नि शुल्क चिकित्सा शिविरो व परिवार कल्याण शिविरो का आयोजन किया है। अनेक सरकारी अद्ध सरकारी एव गैर सरकारी सस्थाओ से इनका जीवन्त सम्पक बना हुआ है। वतमान म ये घाटकोपर (बम्बई) मारवाडी महिला मडल तथा रहवासी सगठन की अध्यक्ष हैं। इसके अलावा घाटकोपर झोपडपट्टी मडल एव गृह उद्योग महिला सघ की महामत्री हैं।

श्रीमती सोलकी ने प्रौढ शिक्षा तथा जरूरतमन्द छात्र छात्राओ को नि शुल्क पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने म भी उल्लेखनीय काय किया है। सामाजिक और राजनतिक क्षत्र मे समान रूप से लोकप्रिय होने से इन्हें सभी का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ है।



श्रीमती सुभद्रा जैन

☐

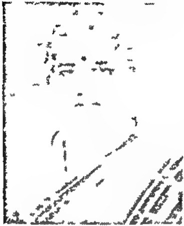
हजारो हजारो छात्राओ व युवतियो के जीवन मे शिक्षा की ज्योति प्रज्ज्वलित करने वाली समाज सुधार कायक्रमो म दृढता पूवक आगे बढने वाला और कुव्यसनो मे लिप्त सैकडो परिवारो को शराब अफीम व नशीली चीजो से मुक्ति दिलाने वाली इस समर्पित विदुषी महिला से क्षेत्र का बच्चा-बच्चा भली भाति परिचित है। शालीन श्वेत परिधान और मृदुता की धनी इस महिला ने अपना पूरा जीवन ही समाज व राष्ट्र को समर्पित कर दिया है।

एक आदश शिक्षिका होने के नाते इनका सम्मान राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर तो हुआ ही है कि तु इनकी मा यता है कि जन जन के हृदय म जो प्रेम और सम्मान प्राप्त हुआ है वही इनके लिए सबसे बडा पुरस्कार है। कई विषयो म निष्णात होने के साथ साथ सुभद्राजी अच्छी वक्ता और लेखिका भी हैं। इनका परिवार मूल रूप से पजाबी है और जनाचाय श्री वल्लभसूरीजी महाराज का भक्त रहा है पर इन्होंने विद्यावाडी की स्थापना के साथ ही अपना जीवन विद्यावाडी महिला विद्यालय को पूणत समर्पित कर दिया। तब से ही लगभग एक सहस्र छात्राओ वाली इस सस्था की समूची व्यवस्था ये ही सम्भालती हैं।

इनके व्यक्तित्व की सबसे बडी खूबी तो यह है कि पिछले 30 35 वर्षों मे हजारो छात्राएं इस सस्था से शिक्षा लेकर निकली हैं पर आज भी उन छात्राओ तथा उनके परिजनो से भी उनका व्यक्तिगत सम्पक बना हुआ है और सभी को ये नाम सहित जानती है। इनके महान आदर्शों और सेवामय जीवन से प्रभावित होकर दानदाता स्वय आगे आता हैं और विद्यावाडी के विकास मे सहयोगी बनता हैं।

सुभद्रा बहिन विचारो से गाधीवादी हैं तथा रचनात्मक प्रवृत्तियो म रुचि लेती हैं। सर्वोदय केन्द्र धोमल के सचालक मडल की वर्षों से सदस्या हैं। क्षेत्र के पडोसी ग्रामो म भी अध्यापिकाओं और छात्राओ की टोली बनाकर ग्राम वासियो के बीच प्राय जाती रहती हैं और उन्हें शिक्षा समाज सुधार और व्यसन मुक्ति की प्रेरणा देती हैं। इनकी दृढ धारणा है कि महिला शिक्षा से ही परिवार समाज और राष्ट्र के जीवन को समुन्नत किया जा सकता है और भारतीय सस्कृति के अनुरूप जीवन मूल्यो की पुनर्स्थापना की जा सकती है।





श्रीमती गुणवती मसाली



श्रीमती गुणवतीजी का जन्म ग्राम खीमेल के प्रतिष्ठित खजाची परिवार म हुआ। इनकी शिक्षा मरुधर बालिका विद्यापीठ, विद्यावाडी मे सम्पन्न हुई। पारिवारिक वातावरण और विद्यावाडी की शिक्षा दीक्षा ने इन्हे समाज सुधार के कायक्रम की ओर आकृष्ट किया और विवाहोपरान्त भी ये ऐसे ही कार्यो मे रुचि लेती रही। पाली जिले मे, विशेषकर गोडवाड के अधिकाश व्यापारी लोग बम्बई मे रहते हैं अत श्रीमती गुणवती बहिन ने बम्बई म एक सस्था "ओसवाल मित्र मण्डल" नामक गठित की है।

श्रीमती मसाली इस सस्था की अध्यक्षा है और समाज सुधार के कायक्रमो म बडी रुचि लेती है। इस सस्था के माध्यम से सम्पर्क साध कर समाज के युवक युवतियो मे भी समाज सुधार के विभिन्न कायक्रमो मे रुचि जागृत की जाती है। वैसे फिलहाल इस सस्था के द्वारा विभिन्न वर्गों और रुचियो के युवक युवतियो को बिना दहेज व टीका दस्तूरी के विवाह सूत्र मे बाधने हेतु प्रोत्साहित करना और सम्पर्क जुटाने का काय किया जा रहा है। इसके लिये यह सस्था नि शुल्क विज्ञापन प्रकाशित करती है और सम्पर्क साधनो म सहयोग करती है। यह सस्था विधवाओ एव विधुरो के विवाह को भी प्रोत्साहन देती है। इस तरह श्रीमती मसाली ने सामाजिक सुधार के क्षेत्र मे एक क्रातिकारी अभियान छेड कर प्रशसनीय पहल की है।



सेठ रामकुमारजी बागड



यू तो पाली प्राचीन काल से ही व्यापार की प्रसिद्ध मण्डी रही है और अनेक प्रकार के छोटे गृह उद्योगो के लिए प्रसिद्ध रही है, पर उद्योगो मे क्रातिकारी विकास की नीव डाली—डीडवाना के स्वर्गीय सेठ श्री मगनीरामजी बागड न और बहुमुखी विकास किया–सेठ रामकुमारजी ने। बागड परिवार ने उस जमाने मे बडे साहस का काय किया और पाली में एक बडी कपडा मिल खडी कर दी। इसी उद्योग के फलस्वरूप अग्रेजी राज मे नष्ट प्राय हुए उद्योग और व्यापार को पुन जीवनदान मिला और पाली शहर ही नही, पाली जिले के अन्य कई कस्बे कपडा व्यापार की मण्डी बन गये। लाखो लोगो का रोजगार धन्धा मिलने लगा।

बागड परिवार जनहिताय कार्यो के लिए देश भर म प्रसिद्ध है। पाली नगर के आधुनिक विकास म इन सेठो का बहुत बडा योगदान रहा है, जो इतिहास मे सदा स्मरणीय रहेगा। जनकल्याण और पाली नगर के विकास के लिये उनके सहयोग से निम्नाकित उल्लेखनीय काय सम्पन्न हुए है —

1 बागड कॉलेज भवन
2 बागड उच्चस्तर माध्यमिक विद्यालय भवन
3 बागड अस्पताल भवन
4 बागड धर्मशाला
5 श्री वकटेश भगवान का मन्दिर
6 बागड स्टेडियम
7 बागड म्यूजियम

इन बडे व महत्त्वपूर्ण कार्यो के अलावा इनके आर्थिक सहयोग से और भी अनेक काय सम्पन्न हुए हैं और चल रहे हैं। पाली जिले म बार बार होने वाले प्राकृतिक प्रकोपो अकाल बाढ आदि के समय म भी इनके द्वारा पर्याप्त राहत सामग्री व आर्थिक सहयोग मिलता रहा है। वस्तुत पाली शहर को आधुनिक विकसित स्वरूप प्राप्त करने म बागड परिवार का सर्वाधिक योगदान रहा है।

श्री प्रेमराजजी बाफना

☐

श्री प्रेमराजजी बाफना पाली जिले के सादडी कस्बे मे जन्मे एक उदीयमान उद्योगपति और समाज-सेवक हैं। युवा अवस्था म ही इन्होने समाज-सेवा की प्रेरणा से सादडी म एक भव्य विद्यालय भवन का निर्माण कराया, जिसमे हजारो छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। बम्बई नगरी म प्लास्टिक उद्योग मे ख्याति प्राप्त श्री बाफना दुनिया के अनेक विकसित देशो की यात्रा कर चुके हैं।

बम्बई अस्पताल मे इन्होने बहुत बडा धनराशि दान कर समाज का नाम रोशन किया है। श्री बाफना राजस्थान की अनेक शिक्षण व सामाजिक संस्थाओ से जुडे हुए है और उनको सदव हर प्रकार का सहयोग देते रहते हैं।



श्रीमती रतन के सोलकी

☐

श्रीमती रतन के सोलकी पाली जिले के रानी कस्बे की निवासी हैं। कम आयु म ही इन्होने बम्बई म व्यापार कर रहे अपने पति क सहयोग स सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र मे प्रवेश कर अच्छा नाम कमाया है।

श्रीमती रतन सोलकी बम्बई (उत्तर पूर्व) डिस्ट्रिक्ट महिला काग्रेस कमेटी की महामन्त्री हैं और जन सेवा की विभिन्न प्रवृत्तियों मे रुचि के कारण जनहिताथ अनेक अभियानो का नतृत्व कर चुकी हैं। इनका विशेष योगदान निधन और अल्प आय वग के लोगो की समस्याओ को उजागर कर उन्हें निपटान मे रहा है। इन्होने कई नि शुल्क चिकित्सा शिविरो व परिवार कल्याण शिविरो का आयोजन किया है। अनेक सरकारी अद्ध सरकारी एव गर सरकारी सस्थाओ स इनका जीवन्त सम्पक बना हुआ है। वतमान म य घाटकोपर (बम्बई) मारवाडी महिला मडल तथा रहवासी सगठन की अध्यक्ष हैं। इनके अलावा घाटकोपर झोपडपट्टी मडल एव गृह उद्योग महिला सघ की महामन्त्री हैं।

श्रीमती सोलकी न प्रौढ शिक्षा तथा जरूरतमन्द छात्र छात्राओ को नि शुल्क पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने म भी उल्लेखनीय काय किया है। सामाजिक और राजनतिक क्षत्र मे समान रूप स लोकप्रिय होने म इन्हे सभी का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ है।



श्रीमती सुभद्रा जैन

☐

हजारो हजारो छात्राओ व युवतियो के जीवन मे शिक्षा की ज्योति प्रज्ज्वलित करने वाली समाज सुधार कायक्रमो म दत्तता पूवक आगे बढने वाली और कुव्यसनो म लिप्त सैकडो परिवारो को शराब अफीम व नशीली चीजो से मुक्ति दिलाने वाली इस समर्पित विदुषी महिला से क्षत्र का बच्चा-बच्चा भली भाति परिचित है। शालीन श्वेत परिधान और मृदुता की धनी इस महिला ने अपना पूरा जीवन ही समाज व राष्ट्र को समर्पित कर दिया है।

एक आदश शिक्षिका होने के नाते इनका सम्मान राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर तो हुआ ही है किन्तु इनकी मा यता है कि जन जन के हृदय मे जो प्रेम और सम्मान प्राप्त हुआ है वही इनके लिए सबसे बडा पुरस्कार है। कई विषयो मे निष्णात होने के साथ साथ सुभद्राजी अच्छी वक्तृ और लेखिका भी हैं। इनका परिवार मूल रूप स पजाबी है और जनाचाय श्री वल्लभसूरीजी महाराज का भक्त रहा है पर इन्होने विद्यावाडी की स्थापना के साथ ही अपना जीवन विद्यावाडी महिला विद्यालय को पूणत समर्पित कर दिया। तब से ही लगभग एक सहस्र छात्राओ वाली इस सस्था की समूची व्यवस्था ये ही सम्भालती हैं।

इनके व्यक्तित्व की सबसे बडी खूबी तो यह है कि पिछले 30 35 वर्षों म हजारो छात्राएं इस सस्था से शिक्षा लेकर निकली हैं पर आज भी उन छात्राओ तथा उनके परिजनो से भी उनका व्यक्तिगत सम्पक बना हुआ है और सभी को ये नाम सहित जानती है। इनके महान आदर्शों और सेवामय जीवन से प्रभावित होकर दानदाता स्वय आगे आता हैं और विद्यावाडी के विकास मे सहयोगी बनता हैं।

सुभद्रा बहिन विचारो स गाधीवादी है तथा रचनात्मक प्रवृत्तियो मे रुचि लेती हैं। सर्वोदय केन्द्र खीमेल के सचालक मडल की वर्षों से सदस्या हैं। क्षत्र के पडोसी ग्रामो मे भी अध्यापिकाओ और छात्राओ की टोली बनाकर ग्राम वासियो के बीच प्राय जाती रहती हैं और उन्हे शिक्षा समाज सुधार और व्यसन मुक्ति की प्ररणा देती है। इनकी दृढ धारणा है कि महिला शिक्षा से ही परिवार समाज और राष्ट्र के जीवन को समुन्नत किया जा सकता है और भारतीय संस्कृति के अनुरूप जीवन मूल्यो की पुनर्स्थापना की जा सकती है।

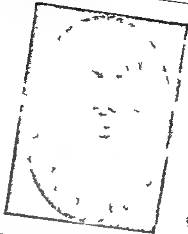




श्रीमती गुणवती भसाली

श्रीमती गुणवतीजी का जन्म ग्राम खीमेल के प्रतिष्ठित खजाची परिवार में हुआ। इनकी शिक्षा मरुधर बालिका विद्यापीठ, विद्यावाडी में सम्पन्न हुई। पारिवारिक वातावरण और विद्यावाडी की शिक्षा दीक्षा ने इन्हें समाज सुधार के कार्यक्रम की ओर आकृष्ट किया और विवाहोपरान्त भी ये ऐसे ही कार्यों में रुचि लेती रही। पाली जिले में, विशेषकर गोडवाड के अधिकांश व्यापारी लोग बम्बई में रहते हैं अतः श्रीमती गुणवती बहिन ने बम्बई में एक संस्था 'ओसवाल मित्र मण्डल' नामक गठित की है।

श्रीमती भसाली इस संस्था की अध्यक्षा है और समाज सुधार के कार्यक्रमो में बडी रुचि लेती है। इस संस्था के माध्यम से सम्पर्क साध कर समाज के युवक युवतियो में भी समाज सुधार के विभिन्न कार्यक्रमो में रुचि जागृत की जाती है। बस फिलहाल इस संस्था के द्वारा विभिन्न वर्गों और रुचियों के युवक युवतियो को बिना दहेज व टीका-दस्तूरी के विवाह सूत्र में बांधने हेतु प्रोत्साहित करना और सम्पर्क जुटाने का काम किया जा रहा है। इसके लिये यह संस्था निःशुल्क विज्ञापन प्रकाशित करती है और सम्पर्क साधनो में सहयोग करती है। यह संस्था विधवाओ एवं विधुरो के विवाह को भी प्रोत्साहन देती है। इस तरह श्रीमती भसाली ने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी अभियान छेड कर प्रशंसनीय पहल की है।



सेठ रामकुमारजी बागड

यूं तो पाली प्राचीन काल से ही व्यापार की प्रसिद्ध मण्डी रही है और अनेक प्रकार के छोटे गृह उद्योगों के लिए प्रसिद्ध रही है पर उद्योगों में क्रांतिकारी विकास की नींव डाली—डीडवाना के स्वर्गीय सेठ श्री मगनीरामजी बागड ने और बहुमुखी विकास किया-सेठ रामकुमारजी ने। बागड परिवार ने उस जमाने में बडे साहस का काम किया और पाली में एक बडी कपडा मिल खडी कर दी। इसी उद्योग के फलस्वरूप अंग्रेजी राज में नष्ट प्राय हुए उद्योग और व्यापार को पुनः जीवनदान मिला और पाली शहर ही नहीं पाली जिले के अन्य कई कस्बे कपडा व्यापार की मण्डी बन गये। लाखो लोगो को रोजगार धन्धा मिलने लगा।

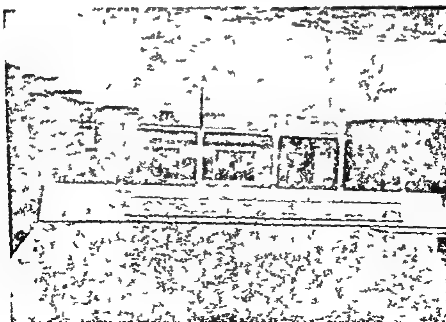
बागड परिवार जनहितार्थ कार्यों के लिए देश भर में प्रसिद्ध है। पाली नगर के आधुनिक विकास में इन सेठों का बहुत बडा योगदान रहा है, जो इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा। जनकल्याण और पाली नगर के विकास के लिये उनके सहयोग से निम्नांकित उल्लेखनीय काम सम्पन्न हुए हैं —

1. बागड कॉलेज भवन
2. बागड उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भवन
3. बागड अस्पताल भवन
4. बागड धर्मशाला
5. श्री वेंकटेश भगवान का मन्दिर
6. बागड स्टेडियम
7. बागड म्यूजियम

इन बडे व महत्त्वपूर्ण कार्यों के अलावा इनके आर्थिक सहयोग से और भी अनेक काम सम्पन्न हुए हैं और बन रहे हैं। पाली जिले में बार बार होने वाले प्राकृतिक प्रकोपों अकाल बाढ आदि के समय में भी इनके द्वारा पर्याप्त राहत सामग्री व आर्थिक सहायता मिलता रहा है। वस्तुतः पाली शहर को आधुनिक विकसित स्वरूप प्रदान करने में बागड परिवार का सर्वाधिक योगदान रहा है।

एक समर गीत ·

शुरू हुआ है जग हमारा, शुरू हुआ है जग ।
युद्ध करेंगे, युद्ध मरेंगे, नर-नारी एक सग ।।
चलाव गोली, चलाव डडा, उडायेंगे अपना झण्डा,
रक्त हमारा नही है ठडा, बना है शावित रग ।
भारत को हम बचाने वाले, शोर जगत मे मचाने वाले,
अपनी शक्ति से नचाने वाले, अपनी शक्ति से नचाने वाले,
तोड दिये हैं सारे बन्धन, हमारे रक्त से रजित क्न्दन, बाजे ढोल मृदग ।
आज गगन मे जय की लाली, देश पुकार बडो मतवाली,
गर्जत गूजत है जय ताली ।
आखिर लाया रग, हमारा शुरू हुआ है जग ।।



श्री खेताजी धन्नाजी राजकीय माध्यमिक विद्यालय दादई



चार:

विकास : २०१

- विकास-क्रान्ति के अग्रदूत
- प्राचीन वैभव, सांस्कृतिक सम्पदा, साहित्य-सृजन परम्परा
- विकास के सोपान



विकास चरण



पाली जिले का प्राचीन वैभव

इतिहास

पाली जिले की धरती प्रागैतिहासिक काल मे उच्च सभ्यता एव तप-साधना की धरती रही है। सोजत के समीप धनेरो गाव के पास खुदाई म उस काल के अनेक ऐसे अवशेष प्राप्त हुए है जो हडप्पा और मोहनजोदडो के समकालीन है, जिससे यहाँ बसी सभ्य बस्तिया का पता चलता है। इसी तरह की खुदाई क दौरान अनेक दुर्लभ वस्तुए भी प्राप्त हुई हैं। बाली तहसील के ग्राम भाटूड, नाणा एव बिजापुर क्षेत्र तथा नाडोल के निकट की गयी खुदाई स मध्ययुगीन काल के विशाल भवनो एव मन्दिरो के खण्डहर प्राप्त होते है। इतिहासकारो का कहना है कि यह नगर कई बार बडे राजाओ की राजधानी रहा और युद्धो मे ध्वस्त होता रहा था।

पाली जिले के जैन-मन्दिरो मे प्राप्त विभिन्न शिलालेखो से इस क्षेत्र का इतिहास २००० वर्षों से भी प्राचीन होने के प्रमाण मिलते हैं। भूगर्भवेत्ताओ के अनुसार पश्चिमी राजस्थान का गोडवाड तक का भू भाग पश्चिमी समुद्र का ही एक हिस्सा था। वेदकाल मे महर्षि जाबाली और परशुराम ने इसी भूमि पर साधना की थी। कहते हैं, पाडवो ने बनवास के दौरान बाली और कूरणा (पाली) के निकट विश्राम किया था। कूरणा के निकट 'शरण' नामक पाडव-कुटिया आज भी विद्यमान बताई जाती है।

सन 669 म ह्वेनसाग नामक चीनी यात्री न पाली के पचायती राज का वर्णन करते हुए अपन यात्रा सस्मरणो म लिखा है कि यहा नगर प्रमुख और मन्त्री दोनो मिलकर शासन चलाते थे। सातवी सदी के पश्चात ही राजपूतो की अनेक जातिया पाली जिले म आयी और उन्होंने अपने राज्य स्थापित किये। महाराणा कुम्भा के शासनकाल म गोडवाड क्षेत्र मेवाड के अन्तर्गत आ गया था।

पाली के शासनकर्ता ब्राह्मणो के निमन्त्रण पर कन्नौज के राजा रावसिहा न पाली क्षेत्र का राज्य सम्भाला पर सन् 1330 के लगभग बादशाह नसीरुद्दीन के विरुद्ध घमासान युद्ध म वह वीरगति को प्राप्त हुए। सन 1681 मे पाली क्षेत्र मारवाड राज्य का हिस्सा बन गया और यहा राठौड राजपूतो का शासन स्थापित हो गया। दुश्मनो स युद्ध करन के लिए तत्कालीन मारवाड के राजा न पाली जिले का अधिकाश भाग जागीरदारो को सौप दिया।

पाली क्षेत्र म राठोडो के तेरहवी शताब्दी म आगमन का इतिहास पाली के निकट ग्राम बिठू म प्राप्त शिलालेखो स होता है। इन राजाओ मे मालदेव बहुत शक्तिशाली हुए। उन्होंने सोजत रायपुर, नाडोल आदि स्थानो पर मजबूत दुर्ग बना कर युद्धो से रक्षा के उपाय किये। फिर इस क्षेत्र पर औरगजेब के पुत्र शहजादा अकबर न पाली जिले के सोजत एव नाडोल आदि स्थानो पर आक्रमण कर काफी बडे भू भाग पर आधिपत्य कर लिया और नाडोल मे ही अपने पिता के विरुद्ध अपने आपको भारत का शहशाह घोषित किया। फिर पेशवाओ के हमले हुए। उन्होने राठौडो से कर-वसूली के लिये सोजत, जैतारण व रायपुर पर हमला कर लूट-खसोट की। तत्पश्चात 1857 के स्वतन्त्रता आन्दोलन म आऊवा की लडाई हुई जो जग प्रसिद्ध है। इस लडाई म आऊवा आसोप अलनियावास, बन्जावास, लाम्बिया बान्ता भीमालिया रूपनगर मलूम्बर, लासानिया आदि गावो के ठाकुरो एव वहा की जनता ने भी भाग लिया और अद्भुत वीरता का परिचय दिया। अग्रेजो द्वारा इस विद्रोह को दबा देने क पश्चात् ठिकाणा आऊवा लाम्बिया बान्ता भीमालिया वान्सा राजोडा सीनाई कुपावता राणावास, सापानी सोनिया, सला, ननियास ठिकानो म आधे स अधिक की जागीरें जब्त करली गई।

प्रमुख नगर

पाली

प्राचीन ग्रन्थो म पाली का नाम 'पालिका' पाया जाता है। प्राचीनकाल से ही यहा पर पालीवाल ब्राह्मणो का वर्चस्व रहा और सैकडो वर्षों तक उनका शासन भी रहा। उस समय यह नगर एशिया की प्रसिद्ध व्यापारिक मण्डी थी और चीन तथा मध्य एशिया के देशो से इसके व्यापारिक सम्बन्ध थे। पालीवाल ब्राह्मणो की प्रार्थना पर रावसिहाजी ने इसे राठौडो की राजधानी बनवाया और धीरे-धीरे राठौडो के राज्य का विस्तार कर मारवाड राज्य का विस्तार किया। कुछ काल के लिए गुजरात के कुमारपाल नामक राजा का शासन भी पाली नगर पर रहा। नगर के तालाब की खुदाई के दौरान कई प्राचीन अवशेष प्राप्त हुये है, जो नगर की प्राचीनता का उद्घोष कर रहे है। यहा के प्रसिद्ध मन्दिर जिनम मुख्य हैं—नवलखा मन्दिर सोमनाथ मन्दिर, पातालेश्वर महादेव मन्दिर सोनगिरा चौहान की छतरी आदि।

राष्ट्र को स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् ही इस नगर का पुनरोद्धार शुरू हुआ। नगर म जिला मुख्यालय स्थापित किया गया और आज यह प्रमुख उद्योग नगरो बन गई है जहा पाइन और सुपर फाइन कपडा का निर्माण, मार्बल का काय हाथीदांत का काय तथा बतन बनाने के कारखानो की भरमार है।



सोजत

पाली जिले का अति प्राचीन एतिहासिक नगर होने के साथ साथ सोजत व्यापार की अच्छी मडी भी है। प्राचीन ग्रथो मे सूकडी नदी के किनारे बसे इस शहर को ताम्रवती नाम से भी सम्बोधित किया गया है। वतमान सोजत नगर को राजा रिडमल ने वसाया था और यहा के किले का निमाएा राजा शूला ने करवाया था। प्रचलित किवदन्ती के आधार पर राजा की कुलदवी सजल क नाम पर इस नगर का नाम सोजत रखा गया। इस नगर म सेजल माता का मन्दिर, अकनेश्वर महादेव का मन्दिर चतुभु जजा का मन्दिर लक्ष्मीनारायणजी का मन्दिर महालक्ष्मीजी का मन्दिर पाश्वनाथ भगवान का मन्दिर, चामुण्डा माता का मन्दिर एव पीर मस्तान की दरगाह आदि अनेक लोकतीथ एव दशनीय स्थल हैं।

मारवाड राज्य मे भी सोजत नगर का प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रहा था। यहा सन् १६०१ म हुकूमत की स्थापना के साथ-साथ रेवन्यू और जुडिशियल विभाग क कार्यालय भी रहे हैं। स्वत त्रता आन्दोलन के दौरान मारवाड म क्रान्ति पैदा करने वाला यह प्रमुख स्थल रहा है जहा अनेक स्वतन्त्रता सनानियो न एक लम्बे अरसे तक आजादी के लिये सघष किया और जेल यातनाए सही।

आज भी सोजत औद्योगिक व व्यापारिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण नगर माना जाता है। विश्व प्रसिद्ध चूने का निर्माण यहा होता है। यहा की मेहदी भी अनेक देशो म निर्यात की जाती है तथा अजवायन भी बहुत प्रसिद्ध है।

जैतारण

जैतारण नगर प्राचीन और एतिहासिक नगर है। यहा के किले का निर्माण मध्ययुगीन राठौड राजाओ द्वारा कराया गया था। उसके पश्चात् राजा उदयसिंह ने निम्बाडा नामक नगर बसाया। इतना ही नही उसने अपने नाम पर 'राजपूत की उदावत नामक शाखा भी स्थापित कर दी। निम्बाडा म चामुण्डा देवी का अति प्राचीन मन्दिर है जिसे राजा भोज न निर्मित करवाया था, ऐसा लोगो का विश्वास है। जैतारण म प्रसिद्ध जन आचाय स्वर्गीय मिश्रीमलजी महाराज का समाधि-स्थल है जहा पर श्रद्धालु लोगो ने अनेक रचनात्मक प्रवृत्तिया चला रखी हैं।

बाली

अरावली श्रृ खला से निर्झरित छोटी-बड़ी असख्य जल धाराओं वालिया से सुशोभित गोडवाड क्षेत्र का एक प्रमुख नगर बाली है। यह नगर पश्चिम रेलवे के अजमेर डिवीजन के फालना स्टेशन से आठ किमी० की दूरी पर और विश्व विख्यात् राणकपुर जन तीथ-स्थल से लगभग 25 किमी० की दूरी पर स्थित है। स० 1240 मे चौहान राजा सवक्ली बालदेव ने युद्ध म विजयोपरान्त इस नगर को राजधानी बनाकर स्वय के नाम पर बाली नामकरण किया था। एक अन्य किवदन्ती के अनुसार ठाकुर धर्मसिहजी के हृदय महल की स्वामिनी देवासी (रेबारी) जाति की बाली नामक सुबाला ने भोया ग्राम के महलो के षड्यन्त्रो से ठाकुर की रक्षा कर इस पुण्य भूमि को शरण स्थली बनाया था, अत उसके प्रेम और उदात्त योगदान को अक्षुण्ण बनाय रखने के उद्देश्य स स्थापित इस नगर का नाम बाली रखा गया।

एक कथा यह भी प्रचलित है कि पाण्डव जिन गिल्ली डण्डा म खेला करते थे व आज भी यहां मौजूद हैं तथा भीम के महाबल का चमत्कारी प्रमाण—धरती पर जोर से लात मारने से बने गड्ढे की बनी बावडी भी यहां मौजूद है। प्राचीन एतिहासिक सामग्री, अनेक वीरो की छतरियां मन्दिरो के खण्डहर समय पर सही मूल्याकन और सुरक्षा के अभाव म काल कवलित हो गये। प्राचीन जन मन्दिर म उपलब्ध वि०स० 1200 के शिलालेख म भगवान की रथ-यात्रा महोत्सव के निमित द्रम्म (तत्कालीन सिक्का) देने की राजाज्ञा अकित है। यह राजाज्ञा प्रति वष ४ द्रम्म प्रति वष देने की अकित है। इसी प्रकार बाली नगर म कई शिवालय हैं ठाकुरजी एव हनुमानजी के प्राचीन मन्दिर हैं गाव के मध्य म बाराह माता के मन्दिर के समीप ही मस्जिद स्थित है। नदी तट पर स्थापित प्राचीन अचलजी के मन्दिर म भित्तिचित्र एतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं।

बाली नगर और विस्तृत बालिया क्षत्र की सुरक्षाथ नाडोल के राजा बालसिंह जी न विक्रम सवत 1608 म बाली नगर के समीप बहने वाली नदी के तट पर एक दुग (किला) की स्थापना की जिसे बाद म राजाओ ने समय-समय पर विस्तृत और सुदृढ किया। किले म बाहुगण माता का प्राचीन मन्दिर है जिसकी उपासना नगर निवासी प्रतिवष चत्र कृष्णा सप्तमी को करत हैं। मले के साथ-साथ गर-नत्य होता है।

बाली का किला सामरिक दृष्टि स मेवाड और मारवाड दोनो प्रदेशो के राजाओ के लिय बडे महत्व का रहा है। मारवाड लोक परिषद् के नेतृत्व म स्वराज्य हेतु किय गये सत्याग्रह के दौरान बाली के लोकप्रिय स्वतन्त्रता-सनानी स्वर्गीय छोटमलजी सुराणा और जोधपुर निवासी श्री रणछोडदासजी गट्टाना और छगनराजजी चौपासनीवाले इसी किले म नजरबन्द रखे गये थ। प्राचीनकाल म सुरक्षा की दृष्टि स नगर क चारो ओर एक सुदृढ चार फीट चौड़ी दीवार बनी हुई है जिसम धर, सला, समली और



सेवाडी नामक चार द्वार बने हुए हैं। इसी दीवार के सहारे एक चौडी और गहरी खायी खुदी हुई थी। बाली नगर का निर्माण और आवासीय व्यवस्था प्राचीन होते हुए भी गणित ज्योतिष और स्थापत्यकला के नियमो पर आधारित है। नगर मे विमलपुरा और गाधी चौक स्थित दो जिनालय स्थापत्यकला के उत्कृष्ट नमूने है, जो अपनी भव्यता एव विशालता के लिए प्रसिद्ध हैं।

बाली के आधुनिक विकास मे जैन-समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राजकीय माध्यमिक शाला राजकीय उच्च प्राथमिक शाला, तीन राजकीय प्राथमिक शालाएँ, सात राजकीय कन्या प्राथमिक शालाएँ, एक चौपडा चिकित्सालय, श्रीमती हजाबाई भूरमलजी मघवी मातृ एव शिशु-कल्याण केन्द्र (जनाना अस्पताल), श्री कातिलाल साकलचन्दजी पशु चिकित्सालय, श्री गौशाला एवम् अमरत्व तथा वैराग्य की भावना जगाने वाला श्मशान घाट आदि अनेक सस्थाओ की स्थापना एव सचालन मे जन-सघ का योगदान रहा है। बाली म अनेक सरकारी कार्यालय भी हैं—पचायत समिति पुलिस उप अधीक्षक, तहसीलदार उप जिला मजिस्ट्रेट एव दण्डनायक, अपर जिला एवम् सत्र न्यायालय पुलिस थाना कनिष्ठ अभियन्ता जलप्रदाय योजना, कनिष्ठ अभियन्ता (विद्युत), वन विभाग अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी, बाल विकास परियोजना, राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय आदि।

फालना के औद्योगीकरण मे बाली निवासियो का बहुमूल्य योगदान रहा है। बाली मे चार कपास जिनिंग की मिलें हैं। यह नगर मुख्यत लोह और चमडे के सामान का उत्पादन व बिक्री केन्द्र है। कृषि उपज मण्डी का याड बन गया है। गत पचास वर्षों से यहाँ नगरपालिका स्थापित है।

फालना

यदि कोई व्यक्ति 40 वर्षों के बाद फालना म प्रवेश करे तो उसके लिए यह बिल्कुल नई दुनिया म प्रवेश होगा, जहा चाय की एक-दो छोटी दुकानें और एक आध किराने की दुकानो को छोडकर रेल्वे स्टेशन के अलावा सारा का सारा क्षेत्र वियावान जगल था, रोशनी का एक आध दिया टिमटिमाता नजर आता था, वहाँ आज का नजारा सचमुच ही आश्चर्य म डालने वाला है।

व्यापार की प्रमुख मण्डी के साथ-साथ सौ कारखानो वाली एक बडी उद्योग बस्ती विद्युत केन्द्र कई सरकारी कार्यालय, एक *कॉलेज एक उच्च माध्यमिक विद्यालय कई निजी सस्थाएँ* सरकारी क्षेत्र व निजी क्षेत्र के कई अस्पताल, बीसियो छात्रावास, रोडवेज बस डिपो, जहाँ से राजस्थान के हर कौने म पहुँचने की सुविधा है नगर की साफ-सफाई और व्यवस्था के लिए नगरपालिका का कार्यालय, अनेक बैंको की शाखाए, दूरभाष-केन्द्र तार एव पोस्ट आफिस, रेलवे डाक बगला तथा दूसरी अनेक सुविधायें। यह है आज का फालना।

साण्डेराव मार्ग पर एक पुरानी हवाई पट्टी भी बनी हुयी है जहा पूर्व जोधपुर राज्य मे प्रति शनिवार जोधपुर से डाक लेकर वायुयान उतरते थे। स्वर्गीय सागरमलजी चौपडा ने इस हवाई पट्टी को पुन निर्मित कर फालना को वायु-सेवा से जोडने की भरसक कोशिश की, पर अभी यह कार्य अधूरा ही है।

फालना के आधुनिक विकास की कहानी स्व० श्री सागरमल जी चोपडा के कर्मठ जीवन की कहानी है। करीब 40 साल पहले *अपनी मातृभूमि के प्रेम से अभिभूत होकर चौपडाजी ने बम्बई मे* चल रहे अपने उद्योग को फालना नामक इस सुनसान बस्ती मे लगाने का प्रबन्ध किया। लोग उनके निर्णय पर हसते थे, पर धुन के धनी चौपडा जी बावजूद अनेक उतार चढाव के अपने निश्चय पर अटल रहे। फालना आज देश की प्रमुख उद्योग-नगरी के रूप मे पहचाना जाता है। यहा के कारखानो म छोटी कील से लेकर टी० वी० व डिस्क एन्टना तक के आधुनिक उपकरण तयार हो रहे है। यहा के उद्योगो म छाता-उद्योग कृषि औजार, दवाइयाँ इन्जेक्शन, टाइल्स मारबल टाइल्स फर्नीचर अनेक प्रकार के केमिकल्स, सीमेन्ट पाइप्स आदि उद्योग प्रमुख हैं। यह बिजली के सामान और भवन निर्माण सामग्री की बहुत बडी मण्डी है।

फालना के विकास की कहानी प्रारम्भ करते है तो स्वर्गीय *लाला हरिशचन्द्रजी माथुर का पुण्य-स्मरण किये बिना नहीं रहा* जाता। श्री हरिशचन्द्रजी माथुर इस क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य रहे हो या अन्य क्षेत्र से, उन्होंने पूरे पाली जिले और विशेषकर फालना के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया।

सघन कृषि योजना, जल प्रदाय योजना, उद्योग बस्ती, बिजली घर, बैंको की स्थापना आदि सभी एक विकासशील नगर के लिए बुनियादी आवश्यकताओ की पूर्ति उन्ही की देन है।

सादडी नगर

सादडी पाली जिले के प्राचीन नगरो मे से है। अरावली की तलहटी मे, चारो ओर नदियो से घिरा यह नगर प्राचीनकाल से ही धनी-मानी लोगो की बस्ती के रूप मे प्रसिद्ध रहा है।

इस नगर के आस-पास का क्षेत्र अत्यन्त ही उपजाऊ और सजल है। इसी कारण यह क्षेत्र विभिन्न प्रकार के कृषि-उत्पादो के लिए प्रसिद्ध है। गन्ना, कपास गेहूँ और फल-सब्जी यहाँ की मुख्य पैदावार हैं। सिंचाई का मुख्य साधन कुओ के अलावा सादडी बाँध



है, जिसे आज से करीब 200 वर्ष पूर्व तत्कालीन जोधपुर महाराजा ने बनवाया था। इसके पास ही जोधपुर के पूर्व महाराजा का बगीचा भी है जो किसी जमाने में अच्छे से अच्छे आमों की किस्मों के लिये प्रसिद्ध था।

आसपास के छोटे गाँवों के लिए यह एक अच्छी व्यापारिक मण्डी है। यहाँ से राज्य पथ परिवहन निगम की बसों द्वारा हर स्थान पर आसानी से पहुँचा जा सकता है। पुराने जमाने में यहाँ एक हवाई पट्टी भी थी, जिसका उपयोग पूर्व महाराजा जोधपुर द्वारा इस क्षेत्र में शिकार के लिये वायुयान से आने पर किया जाता था।

सादड़ी में अनेक प्राचीन दर्शनीय स्थान हैं जिनमें मुख्यतः जैन व वैष्णव मन्दिर हैं। एक देवी का मन्दिर तो अति प्राचीन बताया जाता है। ताराचन्दजी की बावड़ी नामक स्थान भी अत्यन्त प्राचीन एवं दर्शनीय है। नगर की व्यवस्था हेतु नगरपालिका सेवारत है।

यह नगर धनपतियों और दानदाताओं की निवासस्थली के रूप में प्रसिद्ध रहा है। अभी भी सारे विकास कार्य जन सहयोग से सम्पन्न हुए हैं। संवत् 1996 के भयंकर अकाल के समय यहाँ के सेठ श्री रूपचन्दजी ताराचन्दजी ने 16 मील लम्बा 'परसराम महादेव सड़क' का निर्माण करवाकर सैकड़ों लोगों को राहत पहुँचाई। इसी परिवार द्वारा एक अस्पताल भवन का निर्माण करवाया जो अब 'रेफरल अस्पताल' बन चुका है। इन्हीं के द्वारा एक पुस्तकालय भवन भी बनाया गया है। ऐसे ही जनकल्याणकारी कार्यों के फलस्वरूप श्री रूपचन्द ताराचन्द को तत्कालीन मारवाड़ राज्य ने 'सेठ' की पदवी के साथ-साथ 'सिरोपाव' भेंट किया था।

सादड़ी में शिक्षा के लिए राजकीय उच्च माध्यमिक एवं कन्या माध्यमिक विद्यालय हैं। छात्र विद्यालय भवन श्री जे० डी० बोहरा (बोरलाई वाला) द्वारा तथा छात्राओं के लिए विद्यालय भवन का निर्माण श्री सागरमलजी धामूलालजी धनराजजी बदामिया के द्वारा कराया गया था। इसी प्रकार एक सुन्दर मिडिल स्कूल का निर्माण श्री प्रेमराजजी बापना एवं उनके परिवार वालों ने करवाया है। इसी प्रकार महिला चिकित्सालय श्री लक्ष्मीचन्दजी दीपचन्दजी राठौड़ ने बनवाकर जनता को भेंट किया। अभी-अभी एक सुन्दर आयुर्वेदिक औषधालय भवन का निर्माण भी श्री सागरमलजी बदामिया के सहयोग से सम्पन्न हुआ है। साथ ही में क्षेत्रीय वनपाल अधिकारी का कार्यालय भी है जो अरावली पहाड़ी में वन्य जीव अभयारण्य तथा सुरक्षित वन क्षेत्र की देखभाल करता है। यहाँ एक पुलिस स्टेशन भी है। छोटे मोटे घरेलू उद्योग जरूर हैं, परन्तु बड़ा उद्योग नहीं है। एक सरकारी कृषि फार्म है। नगर की जलप्रदाय योजना के लिये अलग से बाँध बनवाया गया है। डाक-तार व टेलीफोन की समुचित व्यवस्था है। यहाँ से रेलवे स्टेशन फालना 26 किलोमीटर दूर है।

□



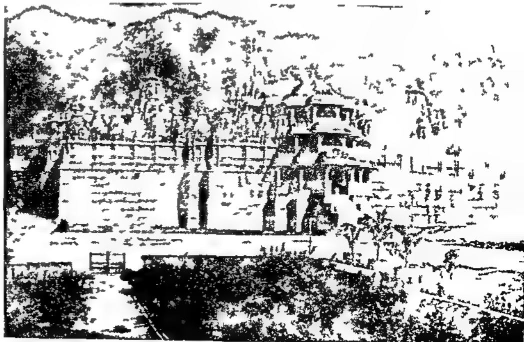
पाली जिले की सास्कृतिक सम्पदा

(तीर्थ व पयटन स्थल आदि)

सस्कृति ग्रात्मा की वस्तु है तो ग्रात्मिक उत्कप की सीढी ग्रौर ग्रात्मदशन का माग भी है। सम्यता है ग्रपरा विद्या ग्रौर सस्कृति है पराविद्या। सम्यता शरीर के मनोविकारो की द्योतक है, जबकि सस्कृति ग्रात्मा के ग्रभ्युदय की प्रदर्शिका है। सम्यता का उत्थान मानव को भौतिकवाद की ग्रोर ले जाता है जबकि सस्कृति मानव को ग्रन्तमुखी करके उसके साहित्यिक गुणो को प्रकट करती है। जिस सम्यता का ग्राधार सस्कृति म नही वह सम्यता सम्यता नही। सस्कृति की ग्रात्मा के बिना सम्यता का शरीर शव की भाति निष्प्राण है। मुनिश्री विद्यानन्दजी ने ग्रपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'पिच्छी कमण्डलु' के पृष्ठ 166 पर बताया है कि सस्कृति समाज तथा व्यक्ति को सुधारती है ग्रौर उज्ज्वलता प्रदान करती है। ग्रात्म धम का जागरण सस्कृति के मगल प्रभात म होता है।

प्राचीनकाल से ही भारत दश सम्यता ग्रौर सस्कृति का सगम रहा है। यहा मानव सस्कृति क विविध प्रतीक विभिन्न कलाकृतियो के रूप म कलाकारो की तूलिकाग्रो ग्रौर लखनियो से सजित हुए हैं जो ग्रनित्य भौतिक-समृद्धि पर चिरन्तन सौदय का जयघोष करत है। भारत का गौरवशाली राजस्थान प्रदेश भी सास्कृतिक सम्पदा स सदा समृद्ध रहा है। जैसलमेर राणकपुर ग्राबू चित्तौड ग्रादि क कलात्मक मदिर दुग तथा विभिन्न कलाकृतिया इसके ज्वलन्त प्रमाण है। सुप्रसिद्ध ग्रग्रेज कला विद् फगुसन ने इनको देखकर ग्राश्चय विमूढ होकर कहा था—ऐसी कलाकृतिया को ग्रलादीन का चिराग भी निर्मित नहा कर सकता।

राजस्थान का पाली जिला ग्रनुपम सास्कृतिक वभव के लिए सुविख्यात है। यहां के मदिर मठ, गुफाएँ भित्तिचित्र ग्रादि इस प्रदश के निवासियो की सास्कृतिक सुरुचि को उद्भासित करते है। ग्रागे प्रस्तुत है सास्कृतिक वभव के कतिपय केन्द्रो की सक्षिप्त झलक



राणकपुर का आदिनाथ जिनालय→

प्रमुख तीर्थ व पर्यटन-स्थल

राणकपुर

फालना स्टेशन से 20 कि मी दूर तथा सादडी कस्बे से । कि मी दूर दक्षिण-पूव दिशा की ग्ररावली पवत की उपत्यका स्थित त्रैलोक्य दीपक, नलिनिगुल्म विमान के विरुद से राणकपुर का चतुमु ज श्री ग्रादिनाथ जिनालय विश्वविख्यात है यह मदिर भारतीय वास्तुकला का ग्रनुपम नमूना है। इसके नि राणा कुम्भा के मन्त्रीश्वर धरणाशाह ने नलिनी गुल्म विमान समान मदिर बनवाने का स्वप्न सजोया था, जिसको मूत्त रूप मुण्डारा के सोमपुरा देपा ने। इसका शिलान्यास वि० स० 143 म हुग्रा तथा विक्रम स 1496 म इसकी प्रतिष्ठा ग्राचाय श्री सुन्दर सूरीजी के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुई। इसम 1444 100 कलात्मक तोरण ग्रौर 24 मण्डप शोभायमान है। कल्पपत्र, नागपाश की ग्रदभुत कलाकृति, विविध वाद्ययन्त्रा बजाती हुई ग्रप्सराग्रा की नृत्यमुद्राएँ दशको को मनमुग्ध कर देत है। प्रसिद्ध शिल्प ममज्ञ फगु सन के ग्रनुसार ऐसी सुन्दर कल विश्व म ग्रन्य नही है।

राणकपुर प्रकोष्ठ से ही लगा एक विशाल सूयमदिर । कुम्भा ने बनवाया था। सूय के रथ के समान बना यह मं ।



अत्यन्त आकर्षक है। इस रथ को सूर्य के सहस्रों अश्व खींच रहे हैं। अश्व चालित सूर्य रथ का नयनाभिराम भी दृश्य मन्त्रमुग्ध कर देता है।

मूछाला महावीर

देसूरी पंचायत समिति के अन्तर्गत घाणेराव ग्राम से 5 कि मी दूर दक्षिण-पश्चिम अरावली पर्वतमाला में श्री मूछाला महावीर तीर्थस्थल है। इस मन्दिर का निर्माण विक्रम सं 1010 में हुआ था। मन्दिर का शिल्प अत्यन्त सुन्दर है। यह बड़ा ही रमणीय स्थल है।

नारलाई तीर्थ

रानी स्टेशन से 20 कि मी पूर्व में और देसूरी से 6 कि मी उत्तर-पश्चिम में नारलाई ग्राम जैन और वैष्णव धर्म का समन्वय स्थल रहा है। यहाँ श्री आदिनाथ भगवान का प्राचीन मन्दिर विक्रम सं 664 का है जिसे श्री यशोभद्र सूरीजी अपनी मन्त्र शक्ति से वल्लभी नगर (गुजरात) से लाये थे। वल्लभीपुर की आलियाँ ऋषभदेव प्रासाद नवर गुफा आदि दर्शनीय हैं। कहते हैं सम्राट अशोक के पौत्र राजा सम्प्रति ने आदिनाथ का मन्दिर बनवाया था। यहाँ स्थित गोरखमढ़ी अनेक सन्तों का साधना स्थल रहा है।

इसी मन्त्र शक्ति द्वारा श्री तपस्वर ऋषि भी एक अन्य शिव मन्दिर लाये और यहाँ स्थापित किया। ऊँचे पर्वत शिखर पर विशालकाय हाथी खड़ा है और नीचे गुफा में जैपाल महादेव का प्राचीन मन्दिर है।

निम्बोरानाथ तीर्थ

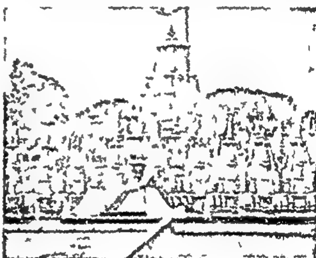
सादड़ी से 5 किलोमीटर दूर साण्डराव फालना की मुख्य सड़क पर श्री निम्बेश्वर महादेव का प्रसिद्ध तीर्थ धाम है। जनश्रुति के अनुसार यह तीर्थ पाण्डवों ने बनवाया था। इसका प्राचीन नाम हीरालिया बजनाथ था। यहाँ पर श्री नवदुर्गाजी का चमत्कारी मन्दिर है। पुरातनाथ नीम्बेश्वर महादेव के अनेक चमत्कार प्रचलित हैं। यह मन्दिर कनफटा सम्प्रदाय के साधुओं की प्रधान गद्दी है। मन्दिर के दाहिनी ओर की बावड़ी पाण्डवराज युधिष्ठिर ने बनवाई थी, जो दर्शनीय है। वैशाखी पूर्णिमा को यहाँ बड़ा मेला भरता है। अभी अभी यहाँ अनेक धर्मशालाओं का निर्माण हुआ है।

सूर्यमन्दिर, भाटूंद

बाली तहसील के भाटूंद ग्राम में गजवदन निर्मित पाण्डव कालीन सूर्य मन्दिर है जो तालाब के पाल पर बना है। यहाँ पाण्डव सम्राट गजवदन ने तपस्या की थी।

राता महावीरजी

अरावली पर्वतमाला में स्थित राता महावीरजी (हस्तीकुण्डी तीर्थ) जवाई बांध बीजापुर स्टेशन (पश्चिमी रेल पथ) से 14 किलोमीटर व ग्राम से 3 कि मी की दूरी पर स्थित है। प्रसिद्ध इतिहासकार मुनि ज्ञानसुन्दरजी ने 'श्री पार्श्वनाथ भगवान की परम्परा का इतिहास (पूर्वार्द्ध)' में पृष्ठ 806 पर लिखा है कि वि सं 360 में श्री राता महावीरजी तीर्थ का निर्माण हुआ। आचार्य श्री सिद्धसूरि के उपदेश से श्रेष्ठ गोत्र के वीरदेव ने श्री महावीर चैत्य बनवाया। चौथी शताब्दी का विशाल नगर हस्तीकुण्डी सं 1053 विक्रमी में राठौड़ों की राजधानी थी जो धनाढ्य लोगों की बस्ती थी। यहाँ के महावीर चैत्य के मूलनायक भगवान महावीर की लाल रंग की प्रतिमा अत्यन्त रमणीय है। रंग-मण्डप के गुम्बद की कारीगरी



अत्यन्त सुन्दर है जिसकी तुलना रणकपुर की कारीगरी से की जा सकती है। यह मन्दिर इस क्षेत्र के आदिवासी भीलों और गिरासियों का श्रद्धा-केन्द्र है। यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला 10 को विशाल मेला भरता है। यहाँ उपलब्ध अनेक भग्नावशेष पुरातत्त्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

गिरि रामपुर का कृष्ण मन्दिर

कृष्ण भक्त शिरोमणि मीराबाई के विवाह के बाद बारात ने वापस लौटते समय गिरि ग्राम में रात्रि विश्राम किया था। यहीं प्रातःकाल मीरा ने स्वयं अपने हाथों से कृष्ण की मूर्ति बनाकर पूजा की थी। गिरि का चारभुजा का मन्दिर उस पावन प्रसंग का स्मरण कराता है। चारभुजा (मेवाड़) द्वारका और गिरि की कृष्ण प्रतिमाएँ एक जैसी हैं। इस मन्दिर के दर्शन करने पर मीराबाई के भजन की यह पंक्ति रग रग पर गूँजने लगती है—बसो मोरे नैनन में नन्दलाल।



परशुराम महादेव

सादडी नगर से 14 किलोमीटर पूव की ओर अरावली पवतमाला म परशुराम महादेव का गुफा-मन्दिर स्थित है। प्रकृति की रमणीयता से शोभित इस तीथ का आकषण अलौकिक है। यह तीथधाम समुद्रतल से 3955 फीट ऊचा है। पौराणिक मान्यता के अनुसार रामायणकालीन महर्षि परशुरामजी न अपन फरस के आघात से पहाड को फोडकर यह गुफा बनाया थी। उन्होन इसी म प्राकृतिक शिवलिंग का पूजा कर भगवान शिव को प्रसन्न किया था। इस स्थल के आस पास का क्षेत्र राज्य सरकार न वन्य जीव अभयारण्य घोषित किया है। यहा प्रति वष श्रावण शुक्ला 6 व 7 को मेला लगता है।



परशुराम महादेव→

रिखी भाखरी, नाडोल

रानी स्टेशन से 11 मील दूर नाडोल ग्राम है। प्राचीनकाल म यह विशाल नगरी थी। इसक प्राचीन नाम नन्दकुलवती नारदपुरी आदि मिलत हैं। यहा पर रिखी भाखरी (ऋषि पवत) है जहा सकडो मुनियो ने तपस्याएँ की ह। पहाडो से घिरा एक ऋषि तालाब भी है। नाडोल म राजा भोज विक्रमादित्य, गुरु गोरखनाथ एव नारदमुनि के आने तथा तपस्या करने के प्रसग मिलते है। यहां प्राचीनकाल म 999 मन्दिर एव 25 बावडिया थी। यह शिव और शक्ति-पीठ का सगम-स्थल रहा है।

महमूद गजनी और कुतुबुद्दीन ऐबक के हमलो से यह सुन्दर नगर खण्डहर बन गया। यहा के दशनीय स्थलो म महादेव मन्दिर पदमप्रभु का मन्दिर सूरजपोल, सोमेश्वर मदिर, क्षेत्रपाल का स्थान आदि प्रसिद्ध हैं। इसको राजा लखनपाल व मेवाड के राजाओ ने अपनी राजधानी बनाया था। प्राचीन नगरी जो अभी जूना खेडा के नाम से जानी जाती है वहां पुरातत्त्व विभाग खुदाई करवा रहा है। अणछीबाई की समाधि भी अब एक तीथ बन गया है। निकट के ग्राम ढालोप म ब्रह्माजी का प्राचीन मन्दिर है।

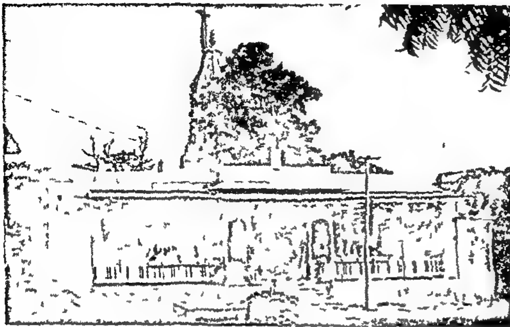
प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टाड न यहा की बावडियो की खूब प्रशसा की है। यहा स्थित आशापुरी माताजी का मन्दिर दशनीय है, जहा विक्रम स 300 के लगभग गुरु देवसूरि जी के शिष्य श्रीमान देवसूरी न शाकम्भरी नगरी म फले भयकर मिरगी रोग निवारणाथ लघु शान्ति स्तोत्र की रचना की थी। यह भक्तिरस की अद्भुत रचना है।

हिंगलाज माता, गुडालास

लाड विलियम बटिक के समय म धनी ग्राम म हिंगलाज माता की गुफा (मन्दिर) के आसपास पिंडारियो ने मुह छिपाया था जिन्हें कनल स्लीमैन ने पराजित किया था। यह मन्दिर गुडालास की भाखरी धनी पर पिंडारियो द्वारा निर्मित किया गया है। हिंगलाज माता की मूर्ति गुफा के भीतर ऊपरी भाग म एक पाषाण-खण्ड म निर्मित की गई है। हिंगलाज का मूल स्थान बिलोचिस्तान (पाकिस्तान) म हिंगाल नदी के पास है। शिव पुराण म वर्णित 52 शक्ति-पीठो म सवप्रथम स्थान हिंगलाज माता का है।

गोरमघाटी

फुलाद के पास गोरमघाट तथा नारलाई—नाडोल आदि म गोरख मन्दिया एव धूणियां हैं। ये मठ नाथपंथी साधुओ की आध्यात्मिक साधना की कथाएँ कहते है।



जवालेश्वर महादेव

जवाली ग्राम म जवालीश्वर महादेव का अति प्राचीन मंदिर शोभायमान है। जनश्रुति के अनुसार जवाली ऋषि ने जवालीश्वर (जवाली) म वेद ऋचाओ की रचना की थी। इसके पास हवनकुण्ड है। मन्दिर म पडे एक प्राचीन नन्दी पर वि स 1102 उत्कीर्ण है। यहाँ प्रत्येक चैत्र वदी-सप्तमी को बहुत बडा मेला भरता है तथा प्रति सोम वार भक्तो की भीड रहती है।

←जवालेश्वर महादेव

कोरटा के जैन मन्दिर

जवाइबाध स्टेशन से 10 कि मी दूर कोरटा ग्राम प्राचीन काल म एक विशाल नगर था। श्री रत्नप्रभसूरीजी ने वीर निर्वाण म 70 म श्री महावीर जिनालय की प्रतिष्ठा करवाया थी। श्री ज्ञान विमलसूरि ने इस मंदिर की प्रशस्ति म लिखा है—'कोरंट जीवितस्वामी वीर' अर्थात् कोरटा म भगवान महावीर के जीवन-काल म ही मंदिर की स्थापना हुई थी। विभिन्न इतिहासो के प्रमाणो से यह मन्दिर 3500 वर्ष पुराना सिद्ध होता है। यह मंदिर स्थापत्य-कला की दृष्टि स अत्यन्त भव्य है जो प्राचीन भारत की वास्तुकला की गौरव गाथा कहता है। निकट म गाव वामनेरा का सूर्य मंदिर भी दर्शनीय है।

सालेश्वर महादेव

पाली के निकट गुडा प्रतापसिंह ग्राम की पहाडी गुफा म स्थित सालेश्वर महादेव तीर्थधाम पौराणिककाल स सम्बन्धित है। परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि ने इस स्थान पर तपस्या की थी ऐसी किवदती है। यहा स्थित भीमगोडा पाडवो के वनवासकाल की याद दिलाता है। यहा की प्राकृतिक शोभा रमणीय है।

चोटीलापीर

पाली म जोधपुर की ओर रेल पथ पर स्थित केरला स्टेशन के पास एक मील दूर चोटीला ग्राम म मुस्लिम धर्मावलम्बियो का तीर्थस्थान चोटीला पीर है जहाँ प्रतिवर्ष दीपावली के दूसरे दिन मेला लगता है। हिन्दू दर्शनार्थी भी पर्याप्त सख्या म यहाँ आते है। यह पीर बाबा अफगानिस्तान स पाली व्यापारार्थ आये थे। इन स्थान पर दस्युओ स मुठभेड म वे काम आये और इस तीर्थस्थान की स्थापना हुयी।

आसन भूलेलाव का मंदिर

रायपुर म नाथ सप्रदाय का बहुत बडा तीर्थ आसन भूलेलाव (रायपुर) बगडी कलालिया के पास अरावली के आचल म अवस्थित है। कथा प्रचलित है कि मेवाड के महाराजा रायमल के लघु भ्राता मानसिंह ने वैराग्य ले लिया था वे ही इसके प्रथम मठाधीश थे। विक्रम स 1444 का एक ताम्रपत्र जो उदयपुर महाराणा के द्वारा दिया गया था म इसका प्रमाण मिलता है। इस आसन के अधीन 9909 बीघा भूमि एव 210 ग्राम थे। आसन भूलेलाव का मंदिर द्वापर म भद्रावलजी ने बनवाया था।



भूलेश्वर महादेव का मंदिर



मकरमण्डी माता का मन्दिर

इसे मकरमन्डी का मठ (आसन) भी कहा जाता है। यह नीमाज के पास अति प्राचीन स्थल है। खुदाई में यहां अनेक प्राचीन दुर्लभ मूर्तियां–गणेशजी, महादेवजी, नारदजी, सरस्वती, कुबेर आदि की प्राप्त हुई है।



नीमाज मन्दिर की सरस्वती प्रतिमा

बिराटिया रामदेवजी

पश्चिमी रेल पथ के बर स्टेशन से 5 कि.मी. दूर बिराटिया ग्राम के नदी तट पर रामदेवजी का विशाल तिमंजिला मन्दिर स्थित है। प्रतिवर्ष हजारों तीर्थयात्री यहां दर्शनार्थ आते है।

नाणा का जैन मन्दिर

पश्चिमी रेल पथ पर स्थित नाणा स्टेशन से लगभग डेढ़ मील दूर नाणा ग्राम में भगवान महावीर का 2500 वर्ष प्राचीन जिनालय स्थित है। यह मन्दिर भी जीवित स्वामी के रूप में सुविख्यात है। इस मूर्ति की कलात्मकता देखते ही बनती है। मूर्ति का परिकर तोरण एवं नक्काशीयुक्त है। स्थापत्य कला की ऐसी भव्यता अन्यत्र दुर्लभ है। अनेक शिलालेखों पर वि० सं० 1107 1200 1203 आदि अंकित हैं। स्तम्भयुक्त गोखले की आकृतियां इतनी भव्य हैं कि सजीव मालूम होती है।

आऊवा का कामेश्वर मन्दिर

यह 9वीं शताब्दी का प्राचीन मंदिर है और चारण समाज का आराधना स्थल है। कहते हैं यहां 16वीं शताब्दी में जोधपुर के राजा से विद्रोह कर 11,000 चारणों ने अपने मुखिया श्री अक्खाजी के नेतृत्व में बलिदान किया था।

चामुण्डा मन्दिर

नीमाज कस्बे के निकट जंगल में मंगल की तरह चामुण्डा माता का प्राचीन मन्दिर राजा भोज द्वारा बनवाया गया था जो पुरातत्त्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। मन्दिर के भग्नावशेष प्राचीन भारत के शिल्प की मौन कथा कहते है। लाल पत्थर पर बारीक कारीगरी व दीवारों पर उत्कीर्ण मूर्तियां तत्कालीन स्थापत्य कला की जीती-जागती तस्वीर प्रस्तुत करती है। चामुण्डा माता के अनेक चमत्कारों की कथाएँ भी प्रचलित हैं।

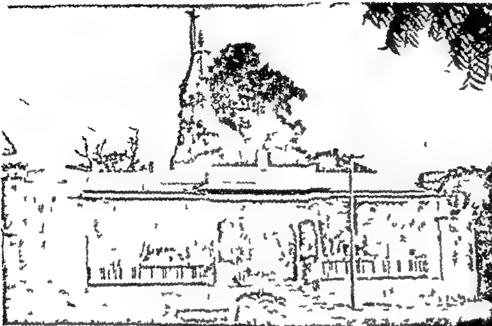


नीमाज की एक अन्य कलापूर्ण प्रतिमा



ज्वालेश्वर महादेव

ज्वाली ग्राम में ज्वालेश्वर महादेव का अति प्राचीन मंदिर शोभायमान है। जनश्रुति के अनुसार ज्वाली ऋषि ने ज्वालीश्वर (ज्वाली) में वेद ऋचाओं की रचना की थी। इसके पास हवनकुण्ड है। मन्दिर में पत्थर एवं प्राचीन नन्दी पर वि. सं. 1102 उत्कीर्ण है। यहाँ प्रत्येक वर्ष शिवरात्रि को बहुत बड़ा मेला भरता है तथा प्रति सोमवार भक्तों की भीड़ रहती है।



←ज्वालेश्वर महादेव

कोरटा के जैन मंदिर

जवाईबांध स्टेशन से 10 कि. मी. दूर कोरटा ग्राम प्राचीन काल में एक विशाल नगर था। श्री रत्नप्रभसूरीजी ने वीर निर्वाण सं. 70 में श्री महावीर जिनालय की प्रतिष्ठा करवायी थी। श्री ज्ञान विमलसूरि ने इस मंदिर की प्रशस्ति में लिखा है— कोरंट जीवितस्वामी वीर अर्थात् कोरटा में भगवान महावीर के जीवन काल में ही मंदिर की स्थापना हुई थी। विभिन्न इतिहासों के प्रमाणों से यह मंदिर 3500 वर्ष पुराना सिद्ध होता है। यह मंदिर स्थापत्य-कला की दृष्टि से अत्यन्त भव्य है जो प्राचीन भारत की वास्तुकला की गौरव गाथा कहता है। निकट के गाँव वामनेरा का सूर्य मंदिर भी दर्शनीय है।

सालेश्वर महादेव

पाली के निकट गुड़ा प्रतापसिंह ग्राम की पहाड़ी गुफा में स्थित सालेश्वर महादेव तीर्थधाम पौराणिककाल से सम्बन्धित है। परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि ने इस स्थान पर तपस्या की थी ऐसी किंवदन्ती है। यहाँ स्थित भीमगोडा पाण्डवों के वनवासकाल की याद दिलाता है। यहाँ की प्राकृतिक शोभा रमणीय है।

चोटीलापीर

पाली से जोधपुर की ओर रेल पथ पर स्थित केरला स्टेशन के पास एक मील दूर चोटीला ग्राम में मुस्लिम धर्मावलम्बियों का तीर्थस्थल चोटीला पीर है जहाँ प्रतिवर्ष दीपावली के अवसर पर मेला लगता है। हिन्दू दर्शनार्थी भी पर्याप्त संख्या में यहाँ आते हैं। यह पीर बाबा अफगानिस्तान से पाली व्यापारार्थ आये थे। इस स्थान पर दस्युओं से मुठभेड़ में वे काम आये और इस तीर्थस्थल की स्थापना हुयी।

आसन भूलेलाव का मंदिर

रायपुर में नाथ सम्प्रदाय का बहुत बड़ा तीर्थ आसन भूलेलाव (रायपुर) गांव के पास अरावली के आंचल में अवस्थित है। कथा प्रचलित है कि मेवाड़ के महाराणा रायमल के लघु भ्राता धारसिंह ने वैराग्य ले लिया था वे ही इसके प्रथम मठाधीश थे। विक्रम सं. 1444 का एक ताम्रपत्र जो उदयपुर महाराणा के द्वारा दिया गया था में इसका प्रमाण मिलता है। इस आसन के अधीन 9909 बीघा भूमि एवं 210 ग्राम थे। आसन भूलेलाव का मन्दिर द्वापर में भद्ररावनजी ने बनवाया था।



भूलेश्वर महादेव का मंदिर



मकरमण्डी माता का मन्दिर

इसे मकरमढी का मठ (ग्रासन) भी कहा जाता है। यह नीमाज के पास अति प्राचीन स्थल है। खुदाई से यहां अनेक प्राचीन दुलभ मूर्तिया—गणेशजी, महादेवजी, नारदजी, सरस्वती, कुवेर आदि की प्राप्त हुई है।



नीमाज मन्दिर की सरस्वती प्रतिमा

बिराटिया रामदेवजी

पश्चिमी रेल पथ के बर स्टेशन से 5 कि मी दूर बिराटिया ग्राम के नदी तट पर रामदेवजी का विशाल तिमजिला मन्दिर स्थित है। प्रतिवर्ष हजारो तीर्थयात्री यहा दशनाथ आते है।

नाणा का जन मन्दिर

पश्चिमी रेल पथ पर स्थित नाणा स्टेशन से लगभग डढ मील दूर नाणा ग्राम म भगवान महावीर का 2500 वष प्राचीन जिनालय स्थित है। यह मन्दिर भी जीवित स्वामी के रूप म सुविख्यात है। इस मूर्ति की कलात्मकता दखत ही बनती है। मूर्ति का परिकर तोरण एव नक्काशीयुक्त है। स्थापत्य कला की एसी भव्यता अयत्र दुलभ है। अनक शिलालखो पर वि० स० 1107 1200, 1203 आदि अकित है। स्तम्भयुक्त गोखले की आकृतियाँ इतनी भव्य ह कि सजीव मालूम होती है।

आऊवा का कामेश्वर मन्दिर

यह 9वी शताब्दी का प्राचीन मदिर है और चारण समाज का आराधना स्थल है। कहते ह, यहा 16वी शताब्दी म जोधपुर के राजा से विद्रोह कर 11,000 चारणो ने अपने मुखिया श्री अक्खाजी के नेतृत्व मे बलिदान किया था।

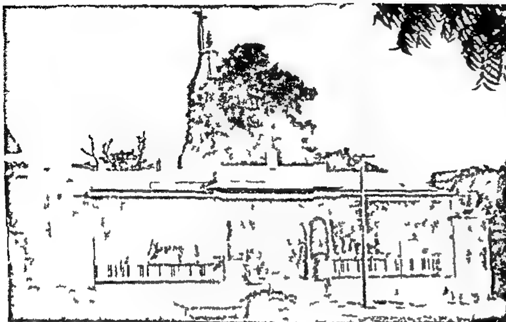
चामुण्डा मन्दिर

नीमाज कस्बे के निकट जगल म मगल की तरह चामुण्डा माता का प्राचीन मन्दिर राजा भोज द्वारा बनवाया गया था जो पुरातत्त्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मन्दिर के भग्नावशेष प्राचीन भारत के शिल्प की मौन कथा कहते है। लाल पत्थर पर बारीक कारीगरी व दीवारो पर उत्कीर्ण मूर्तिया तत्कालीन स्थापत्य कला की जीता जागती तस्वीर प्रस्तुत करती है। चामुण्डा माता के अनेक चमत्कारो की कथाएँ भी प्रचलित है।



नीमाज की एक अय कलापूर्ण प्रतिमा





जवालेश्वर महादेव

जवाली ग्राम म जवालीश्वर महादेव का अति प्राचीन मंदिर शोभायमान है। जनश्रुति के अनुसार जवाली ऋषि ने जवालीश्वर (जवाली) म वद ऋचाओ की रचना की थी। इसके पास हवनकुण्ड है। मंदिर म एक प्राचीन नन्दी पर वि स 1102 उत्कीर्ण है। यहाँ प्रत्येक चत्र बदी-सप्तमी को बहुत बडा मेला भरता है तथा प्रति सोमवार भक्तो की भीड रहती है।

←जवालेश्वर महादेव

कोरटा के जैन मन्दिर

जवाइबाध स्टेशन से 10 कि मी दूर कोरटा ग्राम प्राचीन काल म एक विशाल नगर था। श्री रत्नप्रभसूरीजी ने वीर निर्वाण म 70 म श्री महावीर जिनालय की प्रतिष्ठा करवायी थी। श्री ज्ञान विमलसूरि ने इस मंदिर की प्रशस्ति म लिखा है— कोरट जीवितस्वामी वीर अर्थात् कोरटा म भगवान महावीर के जीवन काल म ही मंदिर की स्थापना हुई थी। विभिन्न इतिहासो के प्रमाणो से यह मन्दिर 3500 वष पुराना सिद्ध होता है। यह मंदिर स्थापत्य-कला की दृष्टि से अत्यन्त भव्य है जो प्राचीन भारत की वास्तुकला की गौरव गाथा कहता है। निकट म गाव वामनरा का सूय मन्दिर भी दशनीय है।

सालेश्वर महादेव

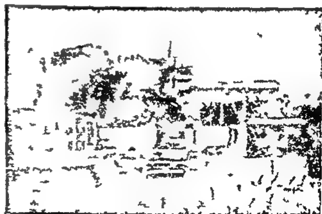
पाली के निकट गुढा प्रतापसिंह ग्राम की पहाडी गुफा म स्थित सालेश्वर महादेव तीथधाम पौराणिककाल से सम्बन्धित है। परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि ने इस स्थान पर तपस्या की थी ऐसी किंवदती है। यहा स्थित भीमगोडा पाडवो के वनवासकाल की याद दिलाता है। यहाँ की प्राकृतिक शोभा रमणीय है।

चोटीलापीर

पाली म जोधपुर की ओर रेल पथ पर स्थित केरला स्टेशन के पास एक माल दूर चाटीला ग्राम म मुस्लिम धमावलम्बियो का तीथस्थल चाटीला पीर है जहा प्रतिवष दीपावली के दूसरे दिन मेला लगता है। हिन्दू दशनार्थी भी पर्याप्त सख्या म यहाँ आते है। यह पीर यात्रा अफगानिस्तान से पाली व्यापाराथ आये थे। इस स्थान पर दस्युओ से मुठभेड म व काम आये और इस तीथस्थल की स्थापना हुयी।

आसन भूलेलाव का मंदिर

रायपुर म नाथ सम्प्रदाय का बहुत बडा तीथ आसन भूतेलाल (रायपुर) बगडी कलानिया के पास अरावली के आंचल म अवस्थित है। कथा प्रचलित है कि मेवाड के महाराजा रायमल के लघु भ्राता थानसिह ने वैराग्य ले लिया था वे ही इसके प्रथम मठाधीश थे। विक्रम स 1444 का एक ताम्रपत्र जो उदयपुर महाराणा के द्वारा दिया गया था म इसका प्रमाण मिलता है। इस आसन के अधीन 9909 बीघा भूमि एव 210 ग्राम थे। आसन भूलेनाव का मंदिर द्वापर म भद्रावलजी ने बनवाया था।



भूलेश्वर महादेव का मंदिर



मकरमण्डी माता का मंदिर

इसे मकरमंडी का मठ (आसन) भी कहा जाता है। यह नीमाज के पास अति प्राचीन स्थल है। खुदाई से यहाँ अनेक प्राचीन दुर्लभ मूर्तियां—गणेशजी, महादेवजी, नारदजी, सरस्वती, कुबेर आदि की प्राप्त हुई हैं।



नीमाज मंदिर की सरस्वती प्रतिमा

बिराटिया रामदेवजी

पश्चिमी रेल पथ के बर स्टेशन से 5 कि मी दूर बिराटिया ग्राम के नदी तट पर रामदेवजी का विशाल तिमंजिला मंदिर स्थित है। प्रतिवर्ष हजारों तीर्थयात्री यहाँ दर्शनार्थ आते हैं।

नाणा का जैन मंदिर

पश्चिमी रेल पथ पर स्थित नाणा स्टेशन से लगभग डेढ मील दूर नाणा ग्राम में भगवान महावीर का 2500 वर्ष प्राचीन जिनालय स्थित है। यह मंदिर भी जीवित स्वामी के रूप में सुविख्यात है। इस मूर्ति की कलात्मकता देखते ही बनती है। मूर्ति का परिकर तोरण एवं नक्काशीयुक्त है। स्थापत्य कला की ऐसी भव्यता अन्यत्र दुर्लभ है। अनेक शिलालेखों पर वि० सं० 1107 1200 1203 आदि अंकित है। स्तम्भयुक्त तोरण की ... इतनी भव्य है कि सजीव मालूम होती है।

आऊवा का कामेश्वर मंदिर

यह 9वीं शताब्दी का प्राचीन मंदिर है और चारणों का आराधना स्थल है। कहते हैं, यहाँ 16वीं शताब्दी में जोधपुर के राजा से विद्रोह कर 11,000 चारणों ने अपने मुखिया श्री अक्खाजी के नेतृत्व में बलिदान किया था।

चामुण्डा मंदिर

नीमाज कस्बे के निकट जंगल में मंगल की तरह चामुण्डा माता का प्राचीन मंदिर राजा भोज द्वारा बनवाया गया था जो पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मंदिर के भग्नावशेष प्राचीन भारत के शिल्प की मौन कथा कहते हैं। लाल पत्थर पर बारीक कारीगरी व दीवारों पर उत्कीर्ण मूर्तियां तत्कालीन स्थापत्य कला की जीती-जागती तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। चामुण्डा माता के अनेक चमत्कारों की कथाएँ भी प्रचलित हैं।



नीमाज की एक अप्सरा



पाली नगर के मन्दिर

पाली नगर के मध्य में स्थित सोमनाथ मंदिर शिल्पकला एवं अपनी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि के लिये विख्यात है। इसका निर्माण गुजरात के राजा कुमारपाल सोलंकी ने विक्रम सं 1209 में करवाया था। यहाँ की सौम्यता से मन प्रसन्न हो जाता है। मानपुरा की पहाड़ी पर वैष्णव जैन व मुस्लिम धर्मों के तीर्थस्थल साम्प्रदायिक एकता के अद्भुत प्रतीक हैं। पाली शहर में नौलखा नामक विख्यात जैन मन्दिर है। पाली शहर के मध्य धानमंडी में सोनीगरों की छतरी है।



सोमनाथ मंदिर पाली

पेरवा की विद्यादेवी

बाली के निकट आठ किलोमीटर दूर जवाई बांध रेल्वे स्टेशन के बस मार्ग पर 2000 वर्ष प्राचीन श्री चन्द्रप्रभु जिनालय शोभित है, जहाँ विद्यादेवी की प्राचीन कलात्मक प्रतिमा विद्यमान है। इस पर विक्रमी सं० 1251 अंकित है। इस वर्ष मन्दिर के जीर्णोद्धार के पश्चात् इस प्रतिमा को प्रतिष्ठित किया गया था। विद्यादेवी की प्रतिमा सुन्दर परिकर में उत्कीर्ण है। परिकर में 16 विद्यादेवियों की लघु प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। सुंदर हंस पर शोभित विद्यादेवी के करों में पुस्तक वीणा पुष्पमाला आदि की जीवन्त आकृतियाँ नयनाभिराम हैं। इसकी अद्भुत शिल्प आबू-देलवाड़ा जैन मंदिर के समान भव्य है। जनश्रुति के अनुसार यहीं पर कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य ने साधना की थी।

पातालेश्वर

आठवीं शताब्दी में निर्मित यह मन्दिर पाली बसने के पूर्व का है। इस मंदिर के बारे में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि क्षत्राणियाँ अपने पति के स्वर्ग सिधारने के बाद इस मंदिर के शिव लिंग से आशीष पाकर सती होती थीं। इस मंदिर के आसपास बनी सतियों की छतरियाँ आज भी इस तथ्य का प्रमाण दे रही हैं।

श्री शांतिनाथ जिनालय, साडेराव

इस जिनालय के निर्माता थे-पाण्डवों के वंशधर राजाधिराज यशवसेन। मंदिर के एक प्राचीन परिकर पर वि सं 1115 का लेख उत्कीर्ण है। एक खण्डित कायोत्सर्गिया पर वि सं 1236 अंकित है। साडेरक गच्छीय आचार्य श्री यशोभद्रसूरिजी की मूर्ति पर वि सं 1197 का लेख है। मंदिर की प्राचीन शिल्प-कृति में



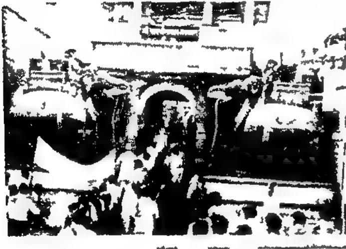
विद्यादेवी (पेरवा) की प्रतिमा



एक नक्काशीयुक्त ध्यानस्थ भगवान की प्रतिमा है। गूढ-मडप की रचना भव्य है। भगवान शान्तिनाथ के तीनों ओर नक्काशीयुक्त तोरण हैं जिनकी अदभुत शिल्पकला दर्शनीय है। मन्दिर के चौक मे 4–5 छोटे-छोटे गड्ढ है जिनमे वर्षा का पानी बहकर न जाने कहा जाता है इसका आज तक पता नहीं लगा। ऐसी स्थापत्य कला अन्यत्र दुर्लभ है। यह मंदिर भूमि से छह फुट नीचे निर्मित है।

वरकाणा तीर्थ

यह गोडवाड की पचतीर्थी का प्रमुख स्थान है और भगवान पार्श्वनाथ का प्राचीन मन्दिर है। इस मन्दिर म जैन शास्त्रानुसार नदीश्वर द्वीप शत्रुन्जय, गिरनार आदि तीर्थों के भित्तिचित्र हैं। यहा की शिक्षण सस्थाएँ भी दर्शनीय स्थल बन गई हैं।



श्री पार्श्वनाथ वरकाणा तीर्थ

सांडेराव के मन्दिर

साडेरका गच्छ के प्रवर्तक यशोभद्रसूरी की साधना-स्थली होने के कारण प्राचीनकाल म यह नगर प्रसिद्ध हुआ। यहाँ भगवान् महावीर का प्राचीन मन्दिर है। साडेराव के तालाब के किनारे एक अति प्राचीन चबूतरा है जिसके खभे प्राचीन शिल्पकला के नमूने हैं।

सेवाडी के मन्दिर

सेवाडी ग्राम भी प्राचीनकाल म बडा ही समृद्धिशाली रहा है। यहाँ भी 10वी सदी का प्राचीन जन मन्दिर है। एक पुराना दोहा है— सेवाडी सौ बावडी ऊण्डी जनन वाव माली पीपर पारण हाथ गतल पार। यहाँ ग्राम-पास मतलाजा तीर्थ है जहाँ यात्रालुओं का भीड रहता है।

हर हर गगा

रातामहावीरजी (हस्तीकुण्डी तीर्थ) से दो माल दूर अरावली की उपत्यका म स्थित हर हर गगा तीर्थ का सम्बन्ध पौराणिक काल से है। यहा पर गौमुख से गगाधारा प्रवाहित होती है। यहाँ का शिवालय सुप्रसिद्ध है। समीप नदी बहती है जो गगा के नाम से लोकप्रिय है। यह स्थल हरद्वार का स्मरण दिलाता है।

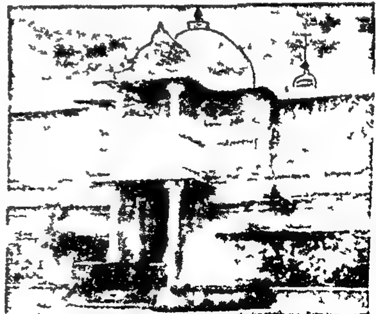
रामदेवरा, ढालाप

देसूरी तहसील क ग्राम ढालोप म बाबा रामसापीर की विख्यात धूनी है जो राजस्थान गुजरात व मालवा क मेघवालो का पूजनीय स्थान है। प्रतिवर्ष मला भरता है। यहाँ ब्रह्माजी का एक प्राचीन मन्दिर भी है।

बेडा ग्राम क निकट ही जूना बडा नामक स्थान पर एकमात्र विशाल श्री दादा पार्श्वनाथ जैन मन्दिर स्थित है। घने वृक्षो की छाया म सारा दृश्य बडा ही मनोहर लगता है।

साडराव व सेवाडी के इस क्षेत्र मे जैन सस्कृति क अनेक कन्द्र रहे हैं। यहाँ क ग्रन्थागार भी अत्यन्त प्रसिद्ध रहे हैं।

इस प्रकार पाली की सास्कृतिक परम्परा अत्यन्त समृद्ध एव गौरवशाली रही है। इसी कडी से जुडे हैं यहाँ के ऐतिहासिक किले यशस्वी साहित्यकार लोक-नृत्य सगीत की परम्पराएँ, आदि। इन सबका विवरण आगे के पृष्ठो पर दिया जा रहा है।



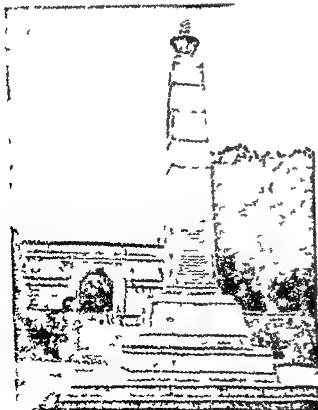
चमत्कारी तीर्थ दादा पार्श्वनाथ जन मन्दिर
जूना बडा (बेडा–पाली)



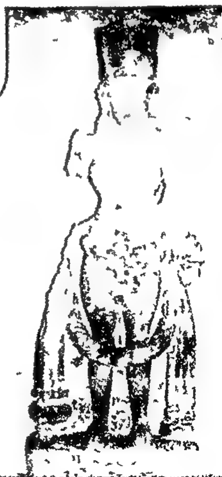
आउवा स्थित स्वाधीनता संग्राम के वीर सैनिकों की आराध्या देवी—सुगाली माता

पाली जिले के प्रसिद्ध मेले

1 शीतला माता के मेले (सभी गाँवों में) (विशेषता गेर नृत्य)
2 रामदेव जी बिराठिया
3 जवाली महादेव जवाला
4 परशुराम महादेव मान्शी
5 पारसनाथ जी मेला ममली
6 जातड़ा मेला
7 भागरी मेला
8 मधी महादेवजी का मेला
9 दशहरा मेला
10 पार्श्वनाथ मेला वरकाणा
11 निम्बाग नाथ का मेला
12 शिवरात्री मेला गुन्वा
13 गागवपुर मेला
14 नागपंचमी का मेला माजल
15 हजरत दरगाह का मेला [illegible]
16 हनुमान जी का मेला ग्यामाग
17 गणगौर मेला आउवा



शहीद स्मारक आउवा



पाली की विष्णु प्रतिमा



शौय के प्रतीक दुर्ग

बाली दुग

इम दुग न कई उतार-चढाव दखे ह । जनश्रुति के अनुसार इस किले का सम्बध रामायण और महाभारतकाल की घटनाओ से रहा है। इस दुग का जीर्णोद्धार महाराणा चूण्डा के पिता मालदेव ने करवाया था । उस समय बाली इतने बड क्षेत्र मे फला था कि उसकी चहारदीवारी म 35 दरवाजे और 70 बारिया थी ।



बाली के किले का वह भाग जहा स्वाधीनता सेनानियो को कद रखा जाता था ।

मामलिया गिरासिया का किला तथा जैतारण का किला ऐतिहासिक महत्व के है।

जूना खेडा (नाडोल)

देसूरी तहसील के निकट पुरातात्विक महत्व का स्थल जूना खेडा चौहान वशीय क्षत्रियो की प्राचीन राजधानी रहा है। इस स्थल की खुदाई की जाय तो पुरातत्व महत्व की दुलभ वस्तुएँ प्राप्त हो सकती हैं। मारवाड और मेवाड की सीमा-रेखा पर स्थित जूना खेडा एक महत्वपूर्ण स्थान है । इसका इतिहास आठवी से दसवी शताब्दी का है । इसे महमूद गजनवी न उजाड दिया था । यही सम्राट पृथ्वीराज चौहान के पिता सोमेसर सोलकियो से युद्ध करते हुए शहीद हुए थे । यहा पर स्थित बावडिया आज भी दर्शको को चकित कर देती है ।

पाली की हल्दीघाटी

गिरि का मैदान—अरावली पवत श्रेणियो के बीच जैतारण तहसील के बीच गिरि गाव के पास का मैदान हल्दीघाटी की तरह प्रख्यात युद्ध-स्थल रहा है। यही शेरशाह सूरी ने राठौडो स लडते हुए कहा था कि मैं मुट्ठी भर बाजरे के लिए दिल्ली की सल्तनत गवा बैठता—

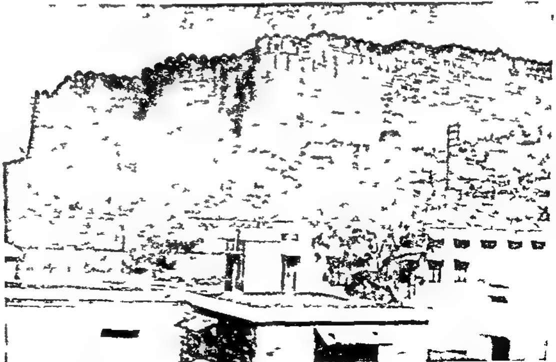
सूरी बोल्यो बण यू गिरी घाट घमसाण ।
मुठी बाजर कारणें खो देता हिन्दुस्थाण ॥

सोजत दुग

इस दुग का निर्माण प्रसिद्ध वीर हरियाहूला ने करवाया था । हूला न अपनी कुलदेवी सोजत के नाम पर इसका नाम सोजत दिया है । सोजत को कई बार युद्ध झेलने पडे । यहा के अनेक मन्दिरो म चतुर्भुज लक्ष्मीनाथ सूर्येश्वर के नाम उल्लेखनीय हैं।

उपर्युक्त दुर्गो के अतिरिक्त पाली जिले की सीमा म कुम्भलगढ के पास

सोजत का किला→





प्रति वेदना इनकी कविता में मुखरित हुई है। देश प्रेम का स्वर इनकी कविता म प्रखर है —

होना आजाद या मिट जाना
प्राण मित्रा भले ही गवाना
पर न झण्डा नीचे झुकाना।

इनका स्वर्गवास वि०स० 2024 म हुआ।

श्री पुष्पेन्द्र झाला

दवला कला (चण्डावल) के स्वतन्त्रता सेनानी मालाजी कवि और गीतकार के रूप म सुविख्यात है। य राजस्थानी भाषा के एक ओजस्वी कवि हैं। गरीब जनता के प्रति हमदर्दी उनके गीतों म मुखरित हुई है —

मजदूरा री मेहनत माथे मोडा मौज उडाव रे
ए महला बसे मोटरा घूम, मोठा खाव र
कमाई करसा री, हा कमाई करसा री—
श्रो लूट देखो लाम्बा करसा री

श्री महीधर शर्मा

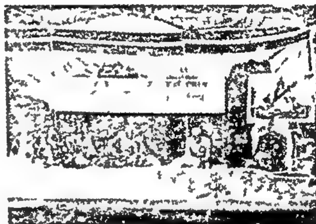
श्री महीधरजी शर्मा का जन्म धाणेराव गाव म हुआ। इन्हे हिन्दी के अलावा संस्कृत भाषा का अच्छा ज्ञान है और ज्योतिष के विख्यात जानकार है। इनकी करीब 35 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनम कुछ तो काव्यमय हैं और शेष ज्योतिष, योग धार्मिक कथाएँ व कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रकाशन हैं। इनकी पुस्तको म जडी बूटियां, कुछ पक्षियों की भाषा और सकेत भाषा तथा लगूर (बन्दर) जाति म चार आश्रम मराठी खोजपूर्ण पुस्तकें भी हैं।

पाली जिले के अन्य कवियो म केवरजी, हिम्मतपुरीजी मगामजी भाट बहादुरजी गोली नानचन्दजी शर्मा श्रीमती कजोडी देवी स्वर्णिमा देवी परिव्राजक कविता गिरा कवि अवेरजी कवि नयमलजी कवि रतनदेवन श्रीराम बूसी आदि ने भी राज स्थानी साहित्य म प्रसिद्धि पायी है। इनके अतिरिक्त श्रीरामश्वर श्रीमाली (ग्राम-पाली-पाली) प्रभु नसिंह जी शेखावत (भादरलाव) शनिश्चरणजी (धाणेराव) एव उर्दू के शायरो, सरदार अजीज हस्न मालवी गुलाब मुंशी शाही रतलाम मनहर कल्ला आदि अनेकानेक साहित्यकार साहित्य-साधना म रत हैं।

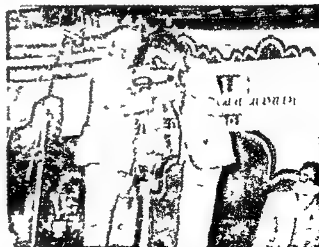
पाली जिले के और भी अनेक लेखनी के धनी स्वान्त सुखाय अप्रकट रूप म रचनारत म सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन की विद्रूपिया के विरुद्ध आवाज उठा रहे हैं तथा स्वार्थ के स्थान पर परमार्थ व धर्मान्धता के स्थान पर धार्मिक सौहार्द्र के तथा घृणा के स्थान पर प्रेम के फूल खिला रहे हैं।

प्रमुख साहित्यिक संस्थाएँ

पाली जिले की साहित्य-सेवा म रत कतिपय संस्थाओं का योगदान भी सराहनीय है। य संस्थाएँ 20 के आस-पास हैं। इनमे पाली नगर की साहित्य साधना समिति, वाली की विद्योत्तमा तथा सोजत की मधुर साहित्य परिषद के अलावा बज्मे अदब (पाली), अजली (पाली), अरावली साहित्य परिषद (फालना) आदि प्रमुख हैं।

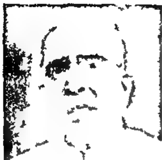


१ साहित्यिक संस्था विद्योत्तमा के तत्वावधान म आयोजित मैत्रीय हिन्दी उपनिषद का एक दृश्य। मच पर आसनी हैं—श्रीमती शोभा जोशी (स्वागताध्यक्ष) डा० मोहनकृष्ण बोहरा (सिरोही), श्री घनश्याम शलभ, श्री नवमल जन (जालौर), श्री हीरालाल जन (सरक्षक) श्री मोहनराज जन (अध्यक्ष) प्रभृति।

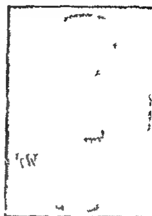


श्री मोहनराज जन (अध्यक्ष—विद्योत्तमा) द्वारा कवि श्री हजारी कपी का सम्मान।

पाली जिले मे औद्योगिक क्रान्ति के अग्रदूत



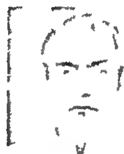
श्री हरिश्चन्द्र माथुर



सेठ मगनीराम जी बागड़



श्री सागरमल जी चोपड़ा



श्री सम्पतराज जी शाह



श्री शिवसिंह जी कछवाह



श्री पी एल मिस्त्री (तखतगढ़)

मुख्य स्रोत रावतभाटा का पन बिजलीघर है जहाँ से भीलवाडा होती हुई बिजली पाली पहुचाई गई है।

पाली जिले की मुख्य कृषि पदावार खरीफ की फसल मे ज्वार बाजरा मक्का मिर्च मूग कृषि कपास एव तिलहन हैं, जबकि रबी की फसल म गहू जौ चना, राइडा और सरसो हैं। जिले म औसत वर्षा 450 मि०मी० है। मारवाड म पुराना कहावत है—हर तीसर साल काल (सूखा) पडता है पर अब तो तीन वर्षों म केवल एक ही बार औसत वर्षा होती है।

सघन कृषि कायक्रम

आजादी के पश्चात् कृषि क विकास पर अधिक अन्न उपजाओ योजना के तहत अधिक ध्यान दिया गया। सन् 1961 मे लाला श्री हरिश्चन्द्र माथुर क प्रयत्नो से फोड फाउण्डेशन के सहयोग से प्रारम्भ किये गये सघन कृषि कायक्रम (पकेज प्रोग्राम) के अन्तगत राजस्थान क तीन जिलो म पाली का भी चयन किया गया और भारत सरकार के तत्कालीन कृषि मन्त्री श्री एस० के० पाटिल ने इस योजना का पाली म उद्घाटन कर हरित क्रान्ति का सूत्रपात किया। इस योजना म कृषको की फाम योजना तैयार कर



श्री एस के पाटिल (कृषि मन्त्री भारत सरकार) कृषि पकेज प्रोग्राम का पाली मे शुभारम्भ करते हुए।

उन्ह उन्नत बीज खाद व कीटनाशक दवाए उपलब्ध कराने का अभियान चला जो काफी सफल रहा।

कृषि विस्तार कायक्रम के तहत कुल 1,89 675 कृषक परिवारो को प्रशिक्षण देने क उद्देश्य से 17 145 सम्पर्क कृषको को प्रशिक्षित कर काय सौंपा गया। कतिपय प्रदशन क्षेत्र बनाये गये हैं जहाँ कृषि सभा व विचार गोष्ठियो का आयोजन नियमित रूप म होता रहता है।

पाली जिले क बाली देसूरी, रानी सोजत सुमेरपुर एव जतारण प०स० क्षेत्रो को फलो व उद्यान लगाने व सब्जियो क



कृषि विस्तार कायक्रम प्रशिक्षण शिविर का एक दृश्य

उत्पादन हेतु चुना गया है जहाँ नीबू बेर व अन्य फलो के अलावा विभिन्न प्रकार की साग-सब्जी उगाने हेतु कृषको को प्रोत्साहित किया जाता है।

जिले मे जल व मिट्टी के परीक्षण हेतु भी सारी सुविधाए उपलब्ध है।

(उप निदेशक कृषि विस्तार कायक्रम के सौजन्य से)

शिक्षा और साक्षरता

आजादी के पूव मारवाड राज्य म शिक्षा-व्यवस्था की जानकारी से पाली जिले की तत्कालीन हकूमतो क हालात का कुछ अन्दाज मिलता है। आजादी के पूव जोधपुर शहर के बाहर कही भी हाई स्कूल नही था। पाली जिले म केवल सोजत बाली पाली जतारण बरकाणा म मिडिल स्कूल थ और प्राइमरी स्कूल भी नाममात्र के थ। निजी पाठशालाए पढाई का एकमात्र साधन थी जहाँ प्रतिमाह एक या दो रुपये खर्च करने वाले परिवार ही अपने बच्चो को पढा सकते थे।

पूरे मारवाड म जागीरी गाँवो म शिक्षा की अत्यन्त दयनीय स्थिति थी। चार हजार जागीर के गावो म मात्र 27 राजकीय स्कूलें—24 लडको की व 3 लडकियो की था। इनके अलावा 22 निजी सहायता प्राप्त स्कूल थ।

सन् 1927-28 म समूचे मारवाड म शिक्षा का कुल खच 4 10 975 रुपये हुआ, जिसका आधे से अधिक खच अकेले जोधपुर शहर म हुआ था। बाकी बची रकम म से मारवाड की 23 हकूमतो म स्कूल चलते थ। अब अन्दाज लगाया जा सकता है कि पाली जिले की पाँच हकूमतो क स्कूलो क लिए तो केवल नाम मात्र की राशि ही बचती थी। ज्यादा बजट अफसरी की तनख्वाह म जाता था इसलिए स्कूल बहुत कम थ। सन् 1927-28 म पूरे



मारवाड मे 4 हजार जागीर गावो मे, जहाँ मारवाड की कुल आबादी 18,41 642 मे से 15,41,552 लोग निवास करते थे, वहाँ केवल रु० 3319 खच हुये। साक्षरता तीन प्रतिशत से भी कम थी। साक्षर लोग केवल शहर मे अथवा उच्च व्यापारी वग मे ही मिलते थे।

पत्र-पत्रिकाओ के प्रकाशन का तो प्रश्न ही नही था, प्रेस तो क्या टाइप मशीन रखने के लिए भी महकमा खास मारवाड राज्य से स्वीकृति प्राप्त करना अनिवाय था।

शिक्षा के केन्द्र

आजादी के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में हुए विकास की स्थिति इस प्रकार है —

1	महाविद्यालय	तीन (पाली, फालना, राणावास)
2	उ० मा० वि० और मा० वि०	150
3	उ० प्रा० विद्यालय	300
4	प्रा० विद्यालय	900
	शिक्षित पुरुष	34 21 प्रतिशत
	शिक्षित महिलाएँ	8 32 प्रतिशत

साक्षरता

पाली जिले के कस्बा और शहरा म भी शिक्षिता का प्रतिशत काफी कम है —

बाली	38–61 प्रतिशत	फालना खुडाला	34–69 प्रतिशत
जैतारण	34–90 प्रतिशत	निम्बाज	20–90 प्रतिशत
पाली	44–14 प्रतिशत	रायपुर	27–30 प्रतिशत
रानी	49–27 प्रतिशत	सादडी	30–41 प्रतिशत
सोजत	36–77 प्रतिशत	सोजत रोड	46–29 प्रतिशत
सुमेरपुर	41–81 प्रतिशत	तखतगढ	34–66 प्रतिशत

चिकित्सा एव स्वास्थ्य

तत्कालीन मारवाड राज्य और इसके 23 परगना म से केवल पाली, सोजत, जैतारण बाला एव देसूरी मे ही 5 सरकारी अस्पताल थ। मारवाड क चिकित्सा विभाग का वष 1927–28 का कुल खच 3 30 483/– रुपए हुआ जिसका अधिकाश हिस्सा जोधपुर शहर म तथा वेतन म व्यय हुआ। आजादी से पूव सादडी म सेठ रूपचदजी ताराचदजी न तथा नाडोल म सेठ सागरमलजी चिमनजी न अस्पताल हेतु भवन बनवा कर दिये। तब वहाँ पर भी चिकित्सा-सुविधाओ के अभाव म बीमारियो से राहत पाने का माध्यम केवल जादू टोना झाड फूक और देवी-देवताओ के आपा भोपा ही मुख्य थ।

आज की स्थिति —

1	जिला चिकित्सालय	1
2	रेफरल चिकित्सालय	4
3	एलोपैथिक चिकित्सालय	10
4	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	18
5	सहायक स्वास्थ्य केन्द्र	5
6	शहरी डिस्पेन्सरियाँ	4
7	ई० एस० आई० डिस्पेन्सरियाँ	3
8	ग्रामीण डिस्पेन्सरी	28
9	एड-पोस्ट	13
10	मातृ-शिशु कल्याण केन्द्र	10
11	परिवार कल्याण केन्द्र	5
12	स्वास्थ्य उप केन्द्र	219
13	आयुर्वेदिक औषधालय	110
14	यूनानी दवाखाने	2
15	होम्योपथिक दवाखाने	4
16	क्षय निवारण केन्द्र	1

इनके अतिरिक्त पाली, बीसलपुर, धाणेराव, रानी, तखतगढ, सादडी सोजत एव सुमेरपुर मे निजी चिकित्सालय विभिन्न सावजनिक एव धार्मिक ट्रस्टो द्वारा सचालित किये जा रहे हैं, जहाँ शल्य चिकित्सा के साथ अन्य सभी तरह के उपचारो की व्यवस्था है।

जिले के अनेक कस्बो शहरो म योग्य एव अनुभवी डाक्टरो न अपने निजी चिकित्सालय स्थापित कर रखे हैं। चिकित्सालयो के साथ-साथ रोग निदान-केन्द्र भी चल रहे हैं। पाली म एक मेडिकल और सर्जिकल चल-मोबाइल वाहन की व्यवस्था के साथ-साथ ब्लड-बैंक भी सेवारत है।

पाली तखतगढ फालना बाली सादडी रानी आदि स्थानो पर ट्रस्टो एव धार्मिक सस्थाओ द्वारा रोगी वाहन सचालित किये जा रहे हैं।

पाली म भगवान महावीर विकलाग सहायता समिति द्वारा विकलागो क लिए कृत्रिम अग लगाने का काम सुचारुरूप से चल रहा है। बाली क आदिवासी क्षेत्र मे चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने के लिए सस्था भगवान निमिनाथ सेवा सघ-बाली द्वारा चल चिकित्सा सेवा उपलब्ध है। पाली जिले म गरीब-गरीब सभी बड कस्बा म गरीब व जरूरतमन्द लोगो को मुफ्त औषधि वितरण कार्य भी अनेक सस्थाओ द्वारा किया जा रहा है।

"रस्सियो मे जब मुझे पेडा मे बाधा जायेगा,
गम लोहे से मेर होठा को दागा जायेगा ।
जब दहकत्तो आग पर मुझको लिटाया जायेगा—
ऐ वतन ! उस वक्त मैं नर हो नगमे गाऊगा,
तेरी खातिर मुस्कगाकर आग पर सो जाऊगा ॥"



वीर शहीदो का पावन स्मरण



सौजन्य

मैसर्स माइक्रो लेब्स लिमिटेड

303, विवस कॉनर अपाटमेटस, 3–विरस रोड, बेंगलोर–560 001



श्री घवरच द सुराणा निवासी बालराई के सादर अभिनन्दन !



उद्योग

पाली क्षेत्र प्राचीन काल से ही कृषि एवं उद्योग प्रधान रहा है। पाली नगर की व्यापारिक मण्डी तो मध्ययुग मे एक जगत प्रसिद्ध मण्डी रही है, जहाँ से चीन और मध्य-पूर्व के देशो को सदियो तक व्यापार होता रहा है। पाली जिले के सभी गाँवो म कपडो की बुनाई रगाई, छपाई चमडे से बनी वस्तुएँ आदि लोहारी, सुनारी एव कुम्हारी उद्योग काफी विकसित थ। यहाँ का बना सामान दूर-दूर तक जाता था। आम लोगों के काम आने वाली वस्तुओ के अलावा विशिष्ट वस्तुएँ भी निर्मित होती थी। इनम मुख्यत युद्ध के लिए अस्त्र, शस्त्र का सामान यहाँ के कारीगर बडी कुशलता से बनात थे। यहाँ की बनी तोपें तलवारें बन्दूकें बड महत्व के शस्त्र समझे जाते थ। माऊवा और नारलाई गाँवो म इन अस्त्र शस्त्र बनाने वाले कुशल कारीगरा के अनक परिवार थ। आज भी इन परिवारा के लोग लोह की मूल्यवान चीजें बनाने म बहुत कुशल हैं। धीरे धीरे प्राचीन काल स चले आ रहे ये उद्योग बड कारखानो की होड म नही टिक सके और अब मृत प्राय हो गये हैं।

सवप्रथम सन् 1940 मे मारवाड के ही प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मगनीराम जी रघुनाथमल जी बागड ने महाराजा श्री उम्मेद



बागड परिवार द्वारा स्थापित महाराजा श्री उम्मेद मिल्स पाली

मिल्स की स्थापना पाली मे की। नये युग के इस नये उद्योग का पाली जिले मे प्रारम्भ हुआ दूसरी ओर आजादी के पश्चात् सामुदायिक विकास-खण्ड खुले और लोगो को पुन गावो मे लघु उद्योग स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित किया जाने लगा और सरकार की ओर से भूमि, पानी बिजली, ऋण एव अनुदान आदि की सुविधायें प्रदान की जाने की योजनाएँ प्रारम्भ हुयी।



रानी सुमेरपुर, फालना आदि के उद्यमियों को सम्बोधित करते हुए राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाडिया

स्वर्गीय सागरमलजी चोपडा ने फालना म महावीर मेटल्स नाम के बडे उद्योग (छाता) की स्थापना कर साहस का परिचय दिया। फिर तो धीरे धीरे सोजत रोड पर सोजत लाइम कम्पनी प्रेम केबल्स-पिपलिया शिव स्टील्स लि०-फालना आदि कई बड कारखाने औद्योगिक क्षेत्र म स्थापित हुए। पचवर्षीय योजनाओ की प्रगति के साथ फालना रानी, सुमेरपुर, पाली सोजत खारची, पीपलिया आदि स्थानो पर उद्योग बस्तियाँ स्थापित की गइ और इन सब स्थाना पर आज करीब 500 से अधिक औद्योगिक इकाइयाँ चल रही हैं जिनम एल्यूमिनियम फोइल्स टी०वी० के डिश एन्टना, सुपर फाइन कपडे से लेकर अनेक प्रकार की छोटी बडी वस्तुओ का निमाण किया जाता है। पाली नगर तो वस्त्रो की रगाई-छपाई के लिए भारत म ही नही बल्कि पूरे एशिया म बहुत बडी मण्डी मानी जाती है। दूर-दूर तक यहाँ क प्रोसेस किये गये कपडे निर्यात होते हैं।

जिले म उद्यमियो की तो कभी कमी नही रही, लेकिन पूरे भारत की तरह अग्रेजो के शासनकाल मे स्थानीय उद्योग धधे

"गरले वौमो को जब मेरी दवाया जाएगा, हुक्म मुझको कत्ल करने का सुनाया जाएगा
जब मुझे फासी के तख्ते पर चढाया जायगा, ऐ वतन ! इस वक्त भी मै तेरे नगमे गाऊगा,
अहद करता हू कि म तुझ पर फिदा हो जाऊगा ।"



आजादी के परवानो को शत-शत नमन् !





चौपट हो गये थे अत यहाँ के साहसी और उद्यमी लोग बाहर प्रदेशों मे प्रवास कर गये। इसीलिये यह क्षेत्र उद्योग मे पिछड गया।



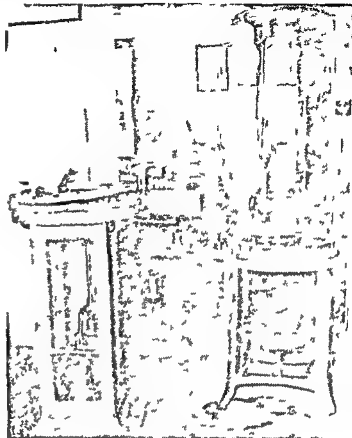
फालना स्थित महावीर मेटल इण्डस्ट्रीज मे लगी औद्योगिक प्रदर्शनी (1967) मे केन्द्रीय मन्त्री श्री यशवन्तराव चव्हाण, श्री हरिश्चन्द्र माथुर एव श्री सागरमल चोपडा

पाली जिले के उद्यमियो मे स्वर्गीय सागरमलजी चोपडा (फालना) एव स्वर्गीय सम्पतराजजी शाह (पीपलिया) को सदैव स्मरण किया जाता रहेगा जिन्होने सुविधाओं के अभाव मे भी सर्वप्रथम बडे उद्योग स्थापित किये। इतना ही नही अपने प्रभाव का उपयोग कर इन्होंने अपने क्षेत्रो मे उद्योग लगाने की प्रेरणा दी जिसके फलस्वरूप जिले का औद्योगीकरण सम्भव हो सका। इसके साथ ही स्वर्गीय श्री पी०एल० मिस्त्री (तखतगढ) सरीखे अन्वेषणकर्ता को भी नहीं भूल सकते जिन्होंने किसी भी प्रकार की तकनीकी अथवा स्कूली शिक्षा प्राप्त नही की थी फिर भी अनेक जनोपयोगी विलक्षण लगने वाले उपकरणों का आविष्कार कर बडे-बडे इजीनियरो को विस्मय मे डाल दिया। उन्होंने एक ओटोमेटिक साईकल बिना पेट्रोल की मोटर, बिजली का वाटर पम्प, रेलवे दुघटना रोकने का आटोमेटिक सिगनल टिकट वेचने की मशीन आदि का आविष्कार किया।

आज भी गाँवो मे अनेक एसी प्रतिभायें छिपी पडी है जिनके बारे म जानकारी प्राप्त की जावे तो जिले के औद्योगीकरण मे बहुत तेजी लायी जा सकती है।

औद्योगिक विकास के लिए कायरत सस्थाय

पाली जिले म कई औद्योगिक प्रतिष्ठान सघ समितियाँ एव मण्डल विद्यमान हैं जो अपने सस्था के हितो का सरक्षण एव सवधन करन म व्यस्त है। किन्तु लगता है अभी तक इन सगठना



श्री पी. एल मिस्त्री तखतगढ द्वारा निर्मित कुछ वैज्ञानिक उपकरण

का ध्यान जिले मे भावी औद्योगिक विकास की ओर नही गया है। कतिपय सरकारी सस्थान ऐसे हैं जो सरकारी नियमो और प्रक्रियाओ के अधीन काय कर रहे हैं। उनमे प्रमुख हैं —

(1) रीको (RIICO) —राजस्थान सरकार के इस प्रमुख निगम की शाखा पाली मे है। यह उद्योग एव उद्योग-बस्तियों के लिए भूमि उपलब्ध कराती है तथा अन्य सुविधायें प्रदान करती है।

(2) राजस्थान वित्त निगम—इसका शाखा कार्यालय पाली मे स्थापित है और सभी प्रकार के उद्योगो को ऋण उपलब्ध करवाने काय यह सस्था करती है।

(3) जिला उद्योग केन्द्र —पाली जिले म जिला उद्योग केन्द्र भारत सरकार द्वारा प्रायोजित योजना के अनुरूप द्वितीय चरण के अधीन एक जून 1979 स राज्य सरकार क्रियान्वित कर रही है। इस योजनान्तगत लघु एव कुटीर उद्योगो को स्थापित करने के लिए आवश्यक वे सभी सुविधाएँ एक ही स्थान पर एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराई जाती है जिनके द्वारा उद्योगो का विकास सम्भव हो सके यथा—उपयुक्त योजना का चयन



व्यावहारिकता प्रतिवेदनों की तयारी मशीनों की सप्लाई का प्रबन्ध, कच्चे माल की व्यवस्था, भूमि का आवंटन आदि।

(4) राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड—इस संस्था का शाखा कार्यालय पाली में स्थित है, जहाँ उप निदेशक स्तर का अधिकारी नियुक्त है। प्रत्येक पंचायत समिति में भी बोर्ड का एक कनिष्ठ अधिकारी नियुक्त है जो ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू एवं ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहित करने तथा ऋण एवं अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने का कार्य करता है।

(5) औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान—यह संस्था पाली और फालना में है जहाँ आई टी आई और आर आर डी के तहत प्रशिक्षणार्थियों को सभी तरह के कार्य जैसे—बिजली, वायरमैन, टर्नर, फिटर डीजल मैकेनिक वेल्डर मोटर वाइंडिंग, मैकेनिक पाइप फिटर आदि अनेक कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

(6) राजस्थान कृषि उद्योग निगम—इस संस्था द्वारा एक वर्कशाप खोली गई है जहाँ किसान वर्ग के हितों को ध्यान में रख कर सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

(7) उद्योग विभाग—पाली मे जिला कार्यालय स्थापित है जहाँ राजस्थान उद्योग विभाग के उच्च अधिकारी बैठते हैं जिनके अधीनस्थ जिला उद्योग अधिकारी एवं सहायक जिला उद्योग अधिकारी कार्य करते हैं। इनका मुख्य कार्य जिले में औद्योगिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना एवं नये उद्यमियों को मार्गदर्शन देना है। जिले के प्रमुख कस्बों में इस विभाग का एक-एक अधिकारी नियुक्त है जो आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने का काम करता है एवं समस्याओं के निराकरण में सहयोग प्रदान करता है।

जिले में इस समय तीस हजार से अधिक व्यक्ति छोटे-बड़े उद्योगों में लगे हुए हैं तथा निम्नांकित छोटे व बड़े उद्योग लगाये जा सकते हैं —

1 सफेद सीमेन्ट प्लान्ट
2 मिनी सीमेन्ट प्लान्ट
3 कल्सियम कार्बाइड आधारित उद्योग
4 ब्लीचिंग पाउडर
5 एसबेस्टोस शीट्स
6 स्ट्रा पेपर मिल
7 मिनी स्टील प्लांट आदि

खनिज आधारित उद्योग

चूंकि पाली जिला सभी सुविधाओं से युक्त है एवं यहाँ पर खनिज के रूप में केमीकल ग्रेड लाईम स्टोन क्वाटर्ज फेल्सपार, केलसाईट जो कि देश में गुणवत्ता के लिए विख्यात है प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त एस्बेस्टोस, सोप स्टोन, जिप्सम, मार्बल स्टोन मेग्नीसाईट बेराईटस भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। साथ ही साथ जिले में रायडा, कपास, चना मिर्च मेहन्दी आदि व्यावसायिक फसलों की भी अच्छी उपज होती है, जिसका 60 प्रतिशत अन्य जिलों को भेज दिया जाता है। यदि सम्पूर्ण फसल का उपयोग जिले में ही किया जाए तो कृषि आधारित उद्योगों के और लगने की सम्भावना बनती है।

जिले में खनिज के आधार पर जो उद्योग लगाये जा सकते हैं। वे हैं —

1 मार्बल आधारित उद्योग —पाली जिले में सेन्दडा के पास चैन्ड-कर बाबरा रायपुर तहसील व ग्राम कल्याणपुरा, बाली तहसील में दुजाना, सिन्दूर व जाडरी ग्राम में मार्बल उपलब्ध हैं अतः यहाँ पर मार्बल कटिंग पालिशिंग चिप्स की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।

2 चूना पत्थर —सोजत क्षेत्र मे मण्डला रामपडिया, अटपड़ा ग्राम के पास केमीकल ग्रेड का 96 2 प्रतिशत की शुद्धता वाला चूना पत्थर उपलब्ध है। इसका उपयोग कल्सीयम कार्बाइड तथा ब्लिचिंग पाउडर बनाने के काम मे लिया जा सकता है। ब्यावर के पास रास ग्राम में रायपुर के पास ग्राम लिलाम्बा मे 200 मिलियन टन के रिजर्व का अनुमान है। जिसके आधार पर मिनी सीमेन्ट प्लान्ट लगाया जा सकता है।

3 केलसाइट —देसूरी तहसील के ग्राम गोरिया पीपलाज भटून तथा रायपुर तहसील के ग्राम सुनेल में केलसाइट उपलब्ध है। जिसके आधार पर केलसाइट के पूल व राईजिंग उद्योग लगाये जा सकते हैं।

4 जिप्सम —ग्राम खूटाना के पास जिप्सम की खानें पाई गई हैं जिनके आधार पर वाल बोर्ड व पल्वराईजर के उद्योग लगाये जा सकते हैं।

5 एस्बेस्टोस —रायपुर तहसील के ग्राम भानुपुरा, कालोटिया, गोरिया नाला में ऐस्बस्टोज खनिज उपलब्ध हैं जिनके आधार पर सीमेन्ट पाइप एवं सीमेन्ट चद्दर निर्माण करने वाले उद्योग लगाये जा सकते हैं।

6 चाईना क्ले —लिलेरिया गाँव में व्हाईट क्ले के अच्छे भण्डार हैं एवम् 0 25 मिलियन टन के रिजर्व का अनुमान लगाया गया है। जिसके आधार पर चीनी मिट्टी के बरतन एवं सनेट्री वेयरस के उद्योग लगाये जा सकते हैं।

7 ग्रेनाईट —सिरोही जिले के ग्राम शिवगंज की सीमा पर ग्रेनाईट पत्थर की खानें पाई जाने की सम्भावना व्यक्त की गई



पाली जिले मे मुख्य उत्पाद करने वाली इकाइया

क्र० स०	उत्पाद	सोजत	वाली	देसूरी	मा०ज०	रानी	पाली	सुमेरपुर	फालना	जैतारण	रायपुर
1	चूना	13	—	2	—	—	4	3	—	—	—
2	स्टोन कटिंग, पोलिशिंग	7	2	2	3	20	9	—	9	—	—
3	कृषि उपकरण व घरेलू सामान	—	—	6	6	15	16	23	3	—	5
4	पावरलूम (सूती वस्त्र)	9	—	—	—	—	17	2	4	—	1
5	लकडी के खिलौने	7	—	—	—	—	—	—	—	—	—
6	ए ए सी एण्ड ए सी एम ग्रार कण्डक्टस	—	—	—	—	—	—	—	—	—	8
7	कपडा रगाई-छपाई	—	—	—	—	—	530	—	—	—	—
8	हाथकर्घा वस्त्र	9	—	—	—	2	17	2	—	15	21
9	स्क्रीन डिजाईन	—	—	—	—	—	28	—	—	—	—
10	चम रगाई	14	3	6	5	4	13	6	8	9	79
11	चम जूता	38	18	8	14	41	38	26	20	57	35
12	रसायन	—	—	—	—	—	37	—	4	—	—
13	एम्ब्रेला व एम्ब्रेला पाटस	—	—	—	—	—	—	—	34	—	—
14	मेहन्दी पाऊडर	32	—	—	—	—	—	—	—	—	—
15	कची व चाकू	19	—	—	—	—	—	—	—	—	—
16	कॉटन जिनिंग	—	—	—	—	2	—	8	—	—	—
17	खाद्य तेल (एक्सपेलर)	—	—	—	—	—	4	10	—	—	2
18	ग्रन्य	—	—	—	—	—	—	—	20	—	—

है। जिसके ग्राधार पर जिले मे ग्रेनाईट के उद्योग लगाये जाने की प्रबल सम्भावना है।

8 क्वाटज फलसफार —रायपुर तहसील मे ग्राम बिराठिया खुद भवीरापाटन कल्याणपुरा, कलाकोट एव बाली तहसील के ग्राम नाना मे क्वाटज फेल्सफार के उपलब्ध होने के कारण यहाँ पर ग्राईडिंग के उद्योग लगाये जा सकते हैं।

उपरोक्त खनिजो के उपलब्ध होने के कारण उपरोक्त उद्योग स्थापित किय जा सकत हैं। इनके साथ-साथ कृषि ग्राधारित उद्योग ग्रायल मिल ग्रनाज पिसाई मसाला पिसाई दाल मिल काटन जीनिंग ग्रादि के उद्योग भी लगाये जा सकते हैं।

पाली जिले के मुख्य उत्पाद

1 छाता एव उसके पाटस
2 सुपर फाइन कपडा
3 कन्डक्टस
4 स्टील एव लोहे का सामान
5 फर्नीचर, कृषि-उपकरण
6 हाथी दात एव प्लास्टिक की वस्तुएँ
7 बरतन
8 साबुन
9 सीमेन्ट पाइप्स
10 इमारती पत्थर, मारबल (चिराई एव पोलिस)
11 लकडी का सामान
12 चमडे की रगाई व जूते
13 हड्डी-उत्पादन
14 दियासलाई
15 रेडियो ट्रांजिस्टर
16 टेलीविजन डिश एन्टना
17 हैण्डलूम-पावरलूम वस्त्र
18 रगाई-छपाई वस्त्र



व्यावहारिकता प्रतिवेदना की तयारी मशीनों की सप्लाई का प्रबन्ध, कच्चे माल की व्यवस्था भूमि का आवंटन आदि।

(4) राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड—इस संस्था का शाखा कार्यालय पाली में स्थित है जहाँ उप निदेशक स्तर का अधिकारी नियुक्त है। प्रत्येक पचायत समिति म भी बोर्ड का एक कनिष्ठ अधिकारी नियुक्त है जो ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू एवं ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहित करने तथा ऋण एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने का कार्य करता है।

(5) औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान—यह संस्था पाली और फालना में है जहाँ आई टी आई और आर आर डी के तहत प्रशिक्षणार्थियों को सभी तरह के कार्य जैसे—बिजली, वायरमेन, टर्नर, फिटर, डीजल मैकेनिक, वेल्डर मोटर वाइंडिंग मैकेनिक पाइप फिटर आदि अनेक कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

(6) राजस्थान कृषि उद्योग निगम—इस संस्था द्वारा एक वर्कशाप खोली गई है जहाँ किसान वर्ग के हितों का ध्यान म रख कर सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती है।

(7) उद्योग विभाग—पाली में जिला कार्यालय स्थापित है जहाँ राजस्थान उद्योग विभाग के उच्च अधिकारी बैठते हैं जिनके अधीनस्थ जिला उद्योग अधिकारी एवं सहायक जिला उद्योग अधिकारी कार्य करते हैं। इनका मुख्य कार्य जिले में औद्योगिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना एवं नये उद्यमियों को मार्गदर्शन देना है। जिले के प्रमुख कस्बों में इस विभाग का एक एक अधिकारी नियुक्त है जो आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने का कार्य करता है एवं समस्याओं के निराकरण म सहयोग प्रदान करता है।

जिले में इस समय तीस हजार से अधिक व्यक्ति छोटे-बड़े उद्योगों में लगे हुए हैं तथा निम्नांकित छोटे व बड़े उद्योग लगाये जा सकते हैं —

1 सफेद सीमेन्ट प्लान्ट
2 मिनी सीमेन्ट प्लान्ट
3 कल्सियम कार्बाइड आधारित उद्योग
4 ब्लीचिंग पाउडर
5 एसवस्टोस शीटस
6 स्ट्रा पेपर मिल
7 मिनी स्टील प्लांट आदि

खनिज आधारित उद्योग

चूंकि पाली जिला सभी सुविधाओं से युक्त है एवं यहाँ पर खनिज के रूप म कैमीकल ग्रेड लाईम स्टोन क्वार्टज फैलसफार केलसाईट जो कि देश म गुणवत्ता के लिए विख्यात है प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त एस्बेस्टोस, सोप स्टोन, जिप्सम, मार्बल स्टोन, मेग्नीसाईट बेराईटस भी प्रचुर मात्रा म उपलब्ध है। साथ ही साथ जिले में रायडा कपास चना, मिर्च, मेहन्दी आदि व्यावसायिक फसलों की भी अच्छी उपज होती है जिसका 60 प्रतिशत अन्य जिलों को भेज दिया जाता है। यदि सम्पूर्ण फसल का उपयोग जिले म ही किया जाए तो कृषि आधारित उद्योगों के और लगने की सम्भावना बनती है।

जिले म खनिज के आधार पर जो उद्योग लगाये जा सकते है। व हैं —

1 **मार्बल आधारित उद्योग** —पाली जिले में सेन्दड़ा के पास भैरू का बाड़ा रायपुर तहसील म ग्राम कल्याणपुरा, बाली तहसील म दुजाणा सिन्दूर व जाडरी ग्राम म मार्बल उपलब्ध हैं अतः यहाँ पर मार्बल कटिंग, पालिशिंग, चिप्स की इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।

2 **चूना पत्थर** —सोजत क्षेत्र म मण्डला रामडिया अटपड़ा ग्राम के पास केमीकल ग्रेड का 96 2 प्रतिशत की शुद्धता वाला चूना पत्थर उपलब्ध है। इसका उपयोग कैलसीयम कार्बाइड तथा ब्लिचिंग पाउडर बनाने के काम में लिया जा सकता है। ब्यावर के पास रास ग्राम मे रायपुर के पास ग्राम लिलाम्बा में 200 मिलियन टन के रिजर्व का अनुमान है। जिसके आधार पर मिनी सीमेन्ट प्लान्ट लगाया जा सकता है।

3 **केलसाइट** —देसूरी तहसील के ग्राम गोरिया पीपलाज अटून तथा रायपुर तहसील के ग्राम सुखेल म केलसाइट उपलब्ध है। जिसके आधार पर केलसाइट के पूल व राईजिंग उद्योग लगाये जा सकते हैं।

4 **जिप्सम** —ग्राम खूटाना के पास जिप्सम की खानें पाई गई हैं, जिनके आधार पर वाल बोर्ड व फर्टीलाईजर के उद्योग लगाये जा सकते हैं।

5 **एस्बेस्टोस** —रायपुर तहसील के ग्राम मानपुरा कानोटिया, गोरिया नाना म ऐस्बेस्टोज खनिज उपलब्ध हैं जिनके आधार पर सीमेन्ट पाइप एवं सीमेन्ट चद्दर निर्माण करने वाले उद्योग लगाये जा सकते हैं।

6 **चाईना क्ले** —सिरेरिया गाँव म व्हाईट क्ले के अच्छे भण्डार हैं एवम् 0 25 मिलियन टन के रिजर्व का अनुमान लगाया गया है। जिसके आधार पर चीना मिट्टी के बर्तन एवं सेनेट्री वेयरस के उद्योग लगाये जा सकते हैं।

7 **ग्रेनाईट** —सिरोही जिले के ग्राम शिवगंज की सीमा पर ग्रेनाईट पत्थर की खानें पाई जाने की सम्भावना व्यक्त की गई



पाली जिले मे मुख्य उत्पाद करने वाली इकाइया

क्र० स०	उत्पाद	सोजत	बाली	देसूरी	मा०ज०	रानी	पाली	सुमेरपुर	फालना	जैतारण	रायपुर
1	चूना	13	—	2	—	—	4	3	—	—	—
2	स्टोन कटिंग, पोलिशिंग	7	2	2	3	20	9	—	9	—	—
3	कृषि उपकरण व घरेलू सामान	—	—	6	6	15	16	23	3	—	5
4	पावरलूम (सूती वस्त्र)	9	—	—	—	—	17	2	4	—	1
5	लक्डी के खिलौने	7	—	—	—	—	—	—	—	—	—
6	ए ए सी एण्ड ए सी एम आर कण्डक्टस	—	—	—	—	—	—	—	—	—	8
7	कपडा रगाई-छपाई	—	—	—	—	—	530	—	—	—	—
8	हाथकघा वस्त्र	9	—	—	—	2	17	2	—	15	21
9	स्क्रीन डिजाईन	—	—	—	—	—	28	—	—	—	—
10	चम रगाई	14	3	6	5	4	13	6	8	9	79
11	चम-जूता	38	18	8	14	41	38	26	20	57	35
12	रसायन	—	—	—	—	—	37	—	4	—	—
13	एम्ब्रेला व एम्ब्रेला पाटस	—	—	—	—	—	—	—	34	—	—
14	मेहन्दी पाऊडर	32	—	—	—	—	—	—	—	—	—
15	कैंची व चाकू	19	—	—	—	—	—	—	—	—	—
16	कॉटन जिनिंग	—	—	—	—	2	—	8	—	—	—
17	खाद्य तेल (एक्सपेलर)	—	—	—	—	—	4	10	—	—	2
18	अन्य	—	—	—	—	—	—	—	20	—	—

है। जिसके आधार पर जिले मे ग्रेनाईट के उद्योग लगाये जाने की प्रबल सम्भावना है।

8 क्वाटज फेल्सफार —रायपुर तहसील मे ग्राम बिराठिया खुद भवीरापाटन कल्याणपुरा, कलाकोट एव बाली तहसील के ग्राम नाना मे क्वाटज फेल्सफार के उपलब्ध होने के कारण यहाँ पर ग्राइडिंग के उद्योग लगाये जा सकते हैं।

उपरोक्त खनिजों के उपलब्ध होने के कारण उपरोक्त उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। इनके साथ-साथ कृषि आधारित उद्योग आयल मिल अनाज पिसाई मसाला पिसाई दाल मिल काटन जीनिंग आदि के उद्योग भी लगाये जा सकते है।

पाली जिले के मुख्य उत्पाद

1 छाता एव उसके पाट स
2 सुपर फाइन कपडा
3 कन्डक्टस
4 स्टील एव लोहे का सामान
5 फर्नीचर कृषि उपकरण
6 हाथी दात एव प्लास्टिक की वस्तुएँ
7 बरतन
8 साबुन
9 सीमेन्ट पाइप्स
10 इमारती पत्थर मारबल (चिराई एव पोलिस)
11 लकडी का सामान
12 चमडे की रगाई व जूत
13 हड्डी-उत्पादन
14 दियासलाई
15 रेडियो ट्रांजिस्टर
16 टलीविजन डिश एन्टना
17 हैण्डलूम-पावरलूम वस्त्र
18 रगाई-छपाई वस्त्र

जिला उद्योग केन्द्र, पाली मे

दिनाक 23 3 90 तक पजीकृत उद्योगो का विवरण

क्र स	उद्योग का आधार	पाली शहर	रायपुर	सोजत	मारवाड जक्शन	जवाजा	देसूरी	बाली	रोहिट	रानी	पाली जिला	सुमेरपुर	योग
1	कृषि	272	61	93	53	54	61	58	27	98	63	86	926
2	खनिज	40	30	56	30	15	22	36	27	9	19	49	333
3	चर्म	149	164	180	79	105	65	157	108	107	154	205	1473
4	कृषि उपकरण	16	8	39	11	8	5	24	4	39	7	31	192
5	टक्सटाइल	578	26	27	6	7	2	5	16	—	3	21	691
6	वन	70	49	52	16	27	13	48	35	30	4	44	388
7	केमीकल	92	2	24	1	• 4	1	2	1	3	8	5	143
8	रिपेयरिंग	43	19	47	26	24	16	20	10	5	7	75	292
9	सीमेंट	6	5	19	—	2	—	3	—	2	3	16	56
10	लोहा	105	21	33	17	4	17	50	3	22	41	93	406
11	विविध	152	78	57	33	28	6	35	18	14	39	63	525
	कुल योग	1523	463	627	274	278	208	438	249	329	348	888	5425



19 टैक्सटाइल्स एव गम
20 एल्यूमिनियम फोइल्स
21 चूना

पाली जिले से निर्यात की जाने वाली वस्तुएँ

1 ऊन व ऊन से बने कम्बल व नमदे	2 चमडा
	3 शहद
4 गोद	5 लकडी का कोयला
6 तिलहन व तेल सरसा	7 मिर्च
8 महन्दी	9 अजवायन
10 भेड-बकरी	11 रुई आदि

सहकारिता

पाली जिला कृषि प्रधान क्षेत्र होने से एवम् औद्योगिक विकास के कारण सहकारी सस्थाओ का निर्माण इस क्षेत्र मे तीव्र गति से हुआ है। वैसे तो प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति सहकारिता पर ही आधारित रही है और जीवन मे हर क्षेत्र मे काय का आधार सम्मिलित प्रयास ही रहा है पर भिन्न भिन्न वर्गो के आविर्भाव ने इस सामूहिक जीवन पद्धति पर बहुत कुठाराघात किया और काय का विभाजन भी जातीयता के आधार पर हो गया। आधुनिक सहकारिता अभियान मुख्यत व्यावसायिक जीवन मे महत्व रखता है और आर्थिक विकास की दृष्टि से ही सहकारी सस्थाओ का निर्माण किया जा रहा है।

पाली जिले म मुख्यत निम्नाकित सहकारी सस्थाएँ सेवारत हैं —

1 केन्द्रीय सहकारी बक (मुख्य कार्यालय पाली एव इसकी शाखाएँ)

2 पाली जिला सहकारी भूमि विकास बक (मुख्य कार्यालय पाली व इसकी शाखाएँ)

3 सहकारी उपभोक्ता होल-सेल भण्डार
4 क्रय विक्रय सहकारी समितियाँ (7)
5 प्राथमिक सहकारी उपभोक्ता भण्डार (13)
6 पाली अरबन कोपरेटिव बैक व उसकी शाखाएँ
7 ग्राम सेवा सहकारी समितियाँ (217)
8 दुग्ध उत्पादक सहकारी सस्थाएँ (142)
9 अन्य प्रकार की सहकारी सस्थाएँ गृह निर्माण, श्रमिक ठेका, चर्मोत्पादन, औद्योगिक, ट्रासपोट। कुल सख्या 408।

इनमे मुख्य हैं —

(1) इन्डस्ट्रीयल स्टेट सहकारी समिति लिमिटेड रानी एव सुमेरपुर।
(2) अखाद्य तेल उत्पादक सहकारी समिति, सुमेरपुर।
(3) वस्त्र उत्पादक सहकारी समिति, पाली आदि।

पाली सेन्ट्रल कोआपरेटिव बक लिमिटेड, पाली

पाली जिले के आर्थिक विकास विशेषकर कृषि-क्षेत्र के विकास मे पाली केन्द्रीय सहकारी बैंक का विशेष योगदान रहा है।

"भारत न रह सकेगा हरगिज गुलाम खाना, आजाद होगा आया है वह जमाना,
खू खौलने लगा है हिन्दुस्तानियो का, कर देंगे जालिमो का हम बन्द जुल्म ढाना।
कौमी तिरंगे झण्डे पे जाँ निसार अपनी, हिन्दू ईसाई मुस्लिम गाते हैं यह तराना,
परवाह अब किसे है इस जेल के दमन की, यह खेल हो रहा है फांसी पे झूल जाना।
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे, भारत के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥"

अपनी जन्मभूमि के विकास के लिए समर्पित स्वर्गीय श्री मागीलाल जी धनराज जी बदामिया की पावन स्मृति के साथ गोडवाड के स्वतन्त्रता सेनानियो का हार्दिक अभिनन्दन!

—पोपटलाल मागीलाल जी एव परिवार, सादडी



स्वर्गीय मागीलाल जी बदामिया की अमर-कृति 'मुक्ति धाम'—सवधम मन्दिर, सादडी

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजु ए-कातिल में है,
चर्चा अपने कत्ल का अगयार की महफिल म है, देखना है यह तमाशा कौनसी मजिल में है।
वक्त आने दे बता देंगे तुझ ए आसमा, हम अभी से क्या बताए क्या हमारे दिल म है,
ए शहीदे मुल्को मिल्लत तेरे जज्बो के निसार तेरी कुर्बानी का चर्चा गैर की महफिल मे है।
देश पर कुर्बान होते जाओ, तुम ए हिन्दियो, जिन्दगी का राज मुजमिर खजरे कातिल मे है
साहिले मकसूद पर ले चल खुदारा नाखुदा, आज हिन्दुस्तान की कश्ती बडी मुश्किल में है,
अब न अगले वल्वले है और न अरमानो की भीड, एक मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल म है।।



विनीत

देवराज राका

मैसर्स देवराज एण्ड सन्स

दूसरा माला, वृन्दावन बिल्डिंग, दूबी मार्केट ऐवेन्यू रोड बगलोर-560 053



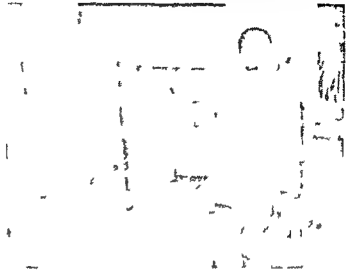


सेठ कालूराम केशरीबाई राका ट्रस्ट की ओर से जनता के हिताथ
ग्राम नीमाज (पाली) मे नवनिर्मित वृहद अस्पताल भवन ।

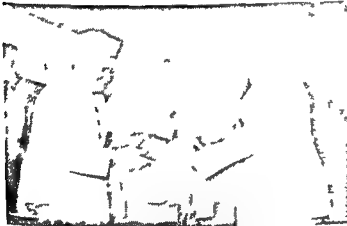
पाली जिले की युवा प्रतिभाएँ



श्री हरीश सुराणा-रानी, सुराणा इण्डस्ट्रीज के संस्थापक
सफल उद्योगपति के रूप में राष्ट्रपति अवार्ड प्राप्त।



श्री मोहन जी लाठाडा (बाली)
[illegible] कलाकार व चित्रकार के रूप में पुरस्कृत।



श्री गौतमचन्द चवाड, पाली वस्त्र उद्योग मे ख्याति प्राप्त
राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित।



पाली जिले की तीन युवा प्रतिभाएँ युवा समाज सेवी
श्री प्रमराज बाफना (सादडी), डा मोहन जैन (यू एस ए) तथा
महावीर अस्पताल सुमेरपुर के व्यवस्थापक श्री मोहन सिंघवी।



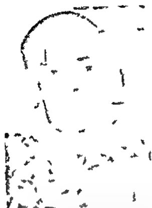
स्व श्री पारसराज शाह पीपलिया
अनेक बडे उद्योग, अस्पताल, विद्यालय आदि
जनहितकारी संस्थाओं के संस्थापक।



श्री घीसूलाल बदामिया, सादडी
प्लास्टिक उद्योग में कीर्तिमान स्थापक
गोरेगाँव-बम्बई के युवा उद्योगपति।



श्री [illegible] लोढा पाली
लोढा फर्टिकम उद्योग समूह तथा
अनेक शिक्षण संस्थाओं के संस्थापक।



डा एस आर जन (दवली पायूजी)
हृदय रोग विशपन एव नावल हास्पीटल
टस्ट इदौर क सस्थापक ।



प्रोफसर शशिकुमार जन पानना
युवको के प्रेरक प्रशिक्षक



श्री वख्तावर जी राका
युवा उद्योगपति एव समाज सेवी



श्री हुरकचन्द जन मुण्डारा
सीमट पाइप उद्योग म अग्रणी



श्री अब्दुल रहमान वाली विलक्षण प्रतिभा के धनी सवप्रथम 1959 म राजिस्टर सट तथा 1967 मे टी वी सट के निमाता । बडे पमाने पर टी वी ए टना डिश क निर्माता ।



श्री विमल डी बन्छावत सादडी
मै वी सा वी कमिक्ल्स (इण्डिया)
अहमदाबाद क सस्थापक प्रमुख साबुन
(शिकाकाई आमला आदि) निर्माता ।



श्री नगन्द्र सी कोठारी रानी
बगलार हुवली तथा उदयपुर म पकिंग
बाक्स उद्योग म प्रमुख नाम राष्ट्रपति
अवाड प्राप्त ।



श्री अचलचन्द बनार पानी
वस्त्र छपाई रगाई म राष्ट्रपति एवाड
प्राप्त युवा उद्यमी राजस्थान
इण्डस्ट्राज पाली क सचालक



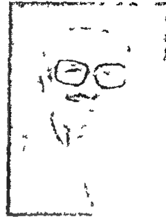
श्री धवरचन्द सुराना बालराई
माइक्रो लब तथा फामास्युटिकल उत्पादो
क वृहद उद्योग समूह (बगलोर व
तमिलनाडु) के सचालक



श्री विमलचन्द राणावत मुडाला
राणावत हास्पीटल के सचालक, मै शिव
स्टील्स फालना के सस्थापक, कृषि
उपकरणो के प्रख्यात निर्माता



श्री हीरालाल मालवीय, बाली
बहुमुखी युवा प्रतिभा



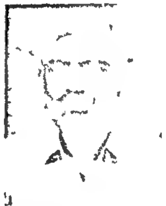
श्री छगन ...
उच्च कोटि ...
मेरीन लाइन (...)
आजीवन ...



श्री सुभाष रावल पाली
जाने माने लेखक, पत्रकार



श्री कान्ति राका, सादडी
प्रख्यात छायाकार



डा माधोसिंह इन्दा व्याख्याता (हिन्दी)
फालना कॉलेज राजस्थानी साहित्यकार



श्री जौहरीलाल जन जतारण
समाज सेवी महावीर विकलाग केन्द्र
पाली के सस्थापक सदस्य



डा हसराज बी चण्डालिया, (नारलाई)
विश्व प्रसिद्ध चिकित्सक (यूरोलाजी)
जसलोक अस्पताल बम्बई से सम्बद्ध



श्री मागीलाल पूनमिया दवला यायूजी
युवा सगठक एव प्रमुख समाज सेवी



श्री भवरलाल सचेती पानी
युवा उद्यमी एव समाज सेवी



श्री बाजाराम पाला
राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत खिलाडी



श्री सज्जनराज पुनमिया देवली पाबूजी
समाज सेवी युवा प्रतिभा



श्री पुटरमल जन दवली पाबूजी
समाज सेवी युवा प्रतिभा



श्री देवशकर व्यास वोया
प्रसिद्ध समाज सेवी उद्योगपति



डा सी एल मेहता सादडी
मद्रास म अनेक औषधि निमाण एव हाउसिंग
नीजिंग कम्पनिया क अध्यक्ष तथा अनेक प्रतिष्ठित
सस्थाओ कालेजो ट्रस्टो के सचिव



श्री श्यामसिह राजपुरोहित पिलोवनी
कुशल प्रशासक समाज सेवी



श्री नौरतन मी महता रानी
युवा प्रतिभा समाज सेवी

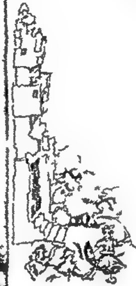


सरदार जगतार सिह फालना
कुशल उद्योगपति, समाज सेवी



श्री शान्तिलाल टी जन सवाडी
युवा सगठक एव समाजसेवी

वंदे मातरम्



पाँच:

अशेष

जिले की प्रमुख नदिया

1 लूनी	2 लीलडी	3 जवाई
4 गडिया	5 बाडी	6 रेडिया
7 सूखड़ी	8 मीठडी	9 रायपुर
10 मघई	11 कूमठी	12 खारडी
13 शेरवा	14 चामेसन	

जिले के प्रमुख वृक्ष

1 खेजडी	2 पीलू	3 अरवजिया
4 बबूल	5 करजा	6 गूलर
7 पीपल	8 बड	9 जामुन
10 माटडी	11 फूला	12 खैर
13 कुमटिया	14 गागण	15 केर
16 खिरणी	17 कचनार	18 आवला
19 इमली	20 नीम	21 ढाक
22 सागर	23 धव	24 हीगाठ

मुख्य फसलें

बाजरा ज्वार मक्का गेहू जौ चना मूग मोठ छोला रायडा मूगफली मिर्च कपास मेहन्दी जीरा ग्वार

प्रमुख पशु मेले

नीमा का नाथ जवाली महादेव
चडावल मानपुरा माडावास बाली

मुख्य वन्य-जीव

भालू, लगूर रीछ सियार खरगोश
साभर नीलगाय लोमडी भेडिया

मुख्य पक्षी

कबूतर मोर तोता तीतर कौवे चिडिया आदि

मुख्य खनिज

लाइम स्टान एसबेस्टस केल्साइट्स चाईना क्ले
फ्लोरस्पार जिप्सम बहुरगी सगमरमर
इमारती पत्थर अभ्रक मेग्नसाइट ग्रेनाइट बोरोनाईट
मगनीज ताबा बेरियल आयरन आदि।

जिले का सबसे ऊचा पर्वत

1 099 मीटर काना पर्वत (तहसील बाली)

प्रमुख ऐतिहासिक तीर्थ एवं पर्यटन-स्थल

1 राणकपुर	2 निम्बेश्वर महादेव
3 परशुराम महादेव	4 राती परशुराम महादेव
5 राता महावीरजी बाजापुर	6 मीरा की जन्मस्थली कुडकी
7 चामुण्डा माता नेमाज	8 सोनगरा चौहान छतरी
9 जूनाखेडा नाडोल	10 सालेश्वर महादेव
11 पातालेश्वर महादेव	12 सोमनाथ महादेव
13 खामरिया गरासियो का किला घाणेराव	14 देसूरी का किला
	15 बाली का किला
16 मानपुर की भाखरी	17 गोरखनाथजी का मदिर गोरमघाट
18 आशापुरा माताजी नाडोल	
19 सोमनाथ मदिर नाडोल	20 जैन मदिर नाडोल
21 भवर गुफा नारलाई	22 महादेव मदिर एव हाथी की विशाल मूर्ति नारलाई
23 जैन मदिर नारलाइ	
24 टाराबाव सादडी	25 मुछाला महावीरजी घाणेराव
26 नव नाकोडा भैरव तीर्थ घाणेराव	27 पार्श्वनाथ मदिर वर्काणा
	28 हिंगलाज माता का मदिर गुडालाय
29 महादेव मदिर जवाली	
30 महादेव मदिर बिराठिया	31 ब्रह्माजी का मदिर ढालोप
32 सूर्य मदिर राणकपुर	33 हर-हर गगा बीजापुर
34 पूर्णी मदिर तह रायपुर	

प्रमुख मेले

1 शीतला माता के गैर नृत्य मेले (सैकडा गावा में)	2 मेला रामदेवजी बिराठिया
	3 जवाली महादेव मेला
4 परशुराम महादेव मेला	5 सेसली पारसनाथजी का मेला
6 मेली-झीतडा	7 भाखरी मेला पाली
8 मेवी महादेवजी का मेला	9 दशहरा मेला पाली
10 वर्काणा पारसनाथजी का मेला	11 मेला नीवा का नाथ
	12 शिवरात्रि मेला कुडकी
13 राणकपुर मेला	14 नाग पचमी का मेला मोजत
15 हजरत दले शाह मेला चाटोला	16 खामाल हनुमानजी का मेला
17 औरवा गणगौर मेला	
18 गणगौर मेला गारिया *(आदिवासी)*	

प्रमुख समाचार पत्र

1 अरानाद	2 सच्चा भारत
3 विगतवार	4 गोडवाड टाइम्स
5 बेखौफ	6 फालना सदेश
7 आश्वस्त	8 टाइम्स ऑफ अरावली
9 धरती का इन्सान	10 फालना पुकार
11 मुनि घोष	12 पाली एक्सप्रेस
13 राज लीडर	14 मेरी धरती
15 विद्यावाडी सदेश	

(जिले की प्रशासनिक व्यवस्था एवं मानचित्र कृपया पृष्ठ 48 पर देखें)

पचायत समितिवार जनसख्या (1991)

क्रम सख्या	जिला/पचायत समिति/ नगर/कस्बे	कुल/ग्रामीण/नगरीय		आवासीय घर (आबाद)	कुल जनसख्या (सस्थागत व आवासहीन सहित)		
					कुल	पुरुष	महिलाए
	1	2		3	4	5	6
	पाली जिला	कुल		278003	1486432	759816	726616
		ग्रामीण		218190	1163085	589854	573231
		नगरीय		59813	323347	169962	153385
1	जैतारण	कुल		29433	164036	84305	79731
		ग्रामीण		24373	134851	69221	65630
		नगरीय	जैतारण	2539	14532	7623	6909
			नीमाज	2521	14653	7461	7192
2	रायपुर	कुल		26886	144710	73820	70890
		ग्रामीण		24631	132128	67364	64764
		नगरीय	रायपुर	2255	12582	6456	6126
3	सोजत	कुल		32535	170646	86817	83829
		ग्रामीण		25241	131378	66535	64843
		नगरीय	सोजत रोड (कस्बा)	1647	9100	4694	4406
			सोजत सिटी	5647	30168	15588	14580
4	पाली	कुल		41330	221382	117421	103961
	-	ग्रामीण		15600	84540	43740	40800
		नगरीय	पाली (नगर परिषद्)	25730	136842	73681	63161
5	रोहट	कुल		13565	81290	41822	39468
		ग्रामीण		13565	81290	41822	39468
		नगरीय		0	0	0	0
6	खारची (मारवाड़ जक्शन)	कुल		32145	164492	83088	81404
		ग्रामीण		30170	154855	78087	76768
		नगरीय	मारवाड ज (कस्बा)	1975	9637	5001	4636
7	देसूरी	कुल		20751	106520	53145	53375
		ग्रामीण		16703	85369	42543	42826
		नगरीय	सादडी	4048	21151	10602	10549
8	रानी	कुल		19663	103661	51918	51743
		ग्रामीण		17906	94105	46950	47155
		नगरीय	रानी	1757	9556	4968	4588
9	बाली	कुल		33999	180832	91567	89265
		ग्रामीण		28179	149232	75114	74118
		नगरीय	बाली	2782	15446	7966	7480
			फालना	3038	16154	8487	7667
10	सुमेरपुर	कुल		27696	148863	75913	72950
		ग्रामीण		21822	115337	58478	56859
		नगरीय	सुमेरपुर	3671	21221	11229	9992
			तखतगढ	2203	12305	6206	6099

पाली जिला 6 वर्ष की आयु के बालक-बालिकाए एव साक्षर जनसख्या

क्रं स	जिला/पं समिति/ नगर/कस्बे	कुल/नगरीय/ ग्रामीण	0-6 वर्ष आयु की जनसंख्या			साक्षरता		
			कुल	बालक	बालिकाएं	कुल	पुरुष	महिला
	1	2	3	4	5	6	7	8
	पाली जिला	कुल	291892	153940	137952	429609	329716	99893
		ग्रामीण	228898	120850	108048	281435	228066	53369
		नगरीय	62994	33090	29904	148174	101650	46524
1	जैतारण	कुल	33334	17479	15855	38160	31543	6617
		ग्रामीण	27263	14299	12964	28019	23938	4081
		नगरीय जैतारण	3006	1559	1447	6119	4425	1694
		नीमाज	3065	1621	1444	4022	3180	842
2	रायपुर	कुल	29927	15756	14171	34625	28833	5792
		ग्रामीण	27461	14488	12973	29952	25357	4595
		नगरीय रायपुर	2466	1268	1198	4673	3476	1197
3	सोजत	कुल	33863	17912	15951	52379	40852	11527
		ग्रामीण	26314	13962	12352	34220	28375	5845
		नगरीय सोजत रोड	1743	910	833	4724	3085	1639
		सोजत सिटी	5806	3040	2766	13435	9392	4043
4	पाली	कुल	44167	23538	20629	86140	61305	24835
		ग्रामीण	16612	8894	7718	18647	15760	2887
		नगरीय पाली (न प)	27555	14644	12911	67493	45545	21948
5	रोहट	कुल	16552	8751	7801	17478	15104	2374
		ग्रामीण	16552	8751	7801	17478	15104	2374
		नगरीय	0	0	0	0	0	0
6	खारची (मार जं)	कुल	31888	16730	15158	43710	34984	8726
		ग्रामीण	30060	15805	14255	38693	31704	6989
		नगरीय मार जं	1828	925	903	5017	3280	1737
7	देसूरी	कुल	20623	10749	9874	28676	21946	6730
		ग्रामीण	16592	8715	7877	21568	16818	4750
		नगरीय सादडी	4031	2034	1997	7108	5128	1980
8	रानी	कुल	19824	10533	9291	30568	22700	7868
		ग्रामीण	18121	9628	8493	25452	19352	6100
		नगरीय रानी	1703	905	798	5116	3348	1768
9	बाली	कुल	34346	18036	16310	51635	37639	13996
		ग्रामीण	28688	15058	13630	36852	27570	9282
		नगरीय बाली	2847	1513	1334	6884	4779	2105
		फालना	2811	1465	1346	7899	5290	2609
10	सुमेरपुर	कुल	27368	14456	12912	46238	34810	11428
		ग्रामीण	21235	11250	9985	30554	24088	6466
		नगरीय सुमेरपुर	4012	2082	1930	10538	7125	3413
		तखतगढ	2121	1124	997	5146	3597	1549

पचायत समिति, बाली

क्रम सख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आमलियाँ	916	ग्रा प	प्रा वि	उप केन्द्र	-	-	-
2	अरडवा	373	-	प्रा वि	-	-	-	-
3	बमणिया	805	-	प्रा वि	-	-	-	-
4	वरावल	348	-	प्रा वि	-	-	-	-
5	बारवा	2427	ग्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
6	बीजापुर	5370	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	आ औ	चि	डाक/टेली	-
7	बीरोलिया	827	-	प्रा वि	-	-	-	-
8	बिसलपुर	4432	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा वि	ने चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
9	बेडा	8074	ग्रा प	उ मा वि/क उ/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
10	बेडल	869	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
11	भागली	459	-	प्रा वि	-	-	-	-
12	भन्दर	4111	ग्रा प	मा वि/क प्रा/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
13	भाटून्द	3798	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	चि/आ	-	डाक	मा ग्रा बैं
14	भीमाणा	5317	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	-	डाक	मा ग्रा बै
15	भीटवाडा	1457	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक	-
16	बिलिया	534	-	प्रा वि	-	-	-	-
17	बोया	1996	ग्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
18	चामुण्डेरी (मेड)	339	-	प्रा वि	-	-	-	-
19	चामुण्डेरी (राणा)	6101	ग्रा प	मा वि/ प्रा वि	चि/आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
20	दानवरली	592	-	प्रा वि	-	-	-	-
21	दातीवाडा	1307	-	प्रा वि	-	-	-	-
22	धाणदा	740	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	घणी	1650	ग्रा प	उ प्रा वि/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
24	डूगली	1314	-	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	टेली	-
25	दूदनी	1825	ग्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
26	फतापुरा	578	-	प्रा वि	-	-	-	-
27	गोरीया	1656	ग्रा प	प्रा वि	उप केन्द्र/आ	-	डाक	-

सकेत

ग्रा प	=	ग्राम पचायत	उ मा वि	=	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	आ	=	आयुर्वेदिक औषधालय
न पा	=	नगर पालिका	डाक		डाकघर	ने चि	=	नेत्र चिकित्सालय
न प	=	नगर परिषद्	टेली		टेलीफोन केन्द्र/सुविधा	मा ग्रा बैं	=	मारवाड ग्रामीण बैंक (एम जी बी)
प्रा वि	=	प्राथमिक विद्यालय	चि	=	चिकित्सालय	सह बैं	=	सहकारी बैंक
उ प्रा वि	=	उच्च प्राथमिक विद्यालय	उप केन्द्र	=	चिकित्सा उपकेन्द्र	स स		सहकारी समिति (जी एम एम)
मा वि	=	माध्यमिक विद्यालय	प्रा स्वा	=	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	जय बैं	=	स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर (एस बी बी जे)
क	=	कन्या						

1	2	3	4	5	6	7	8	9
28	गुडा देवीसिह	128	-	प्रा वि	-	-	-	-
29	गुडा गुमानसिह	737	-	प्रा वि	-	-	-	-
30	गुडा कल्याणसिह	478	-	प्रा वि	-	-		-
31	गुडालास	1086	ग्रा पं	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	-	-
32	आदरी	603	-	प्रा वि	-	-	-	-
33	जीवदा	680	-	प्रा वि	-	-	-	-
34	कागदडा	866	-	प्रा वि	-	-	-	-
35	कागणी	369	-	प्रा वि	-	-	-	-
36	काकराडी	697	ग्रा प	प्रा वि	उप केन्द्र	-	-	-
37	कानगा	1254	-	प्रा वि			टेली	-
38	हिरोंला	202	-	प्रा वि	-	-	-	
39	केसपुरा	511	-	प्रा वि	-		-	-
40	खींमेल	4027	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	उप केन्द्र/आ		डाक/टेली	मा ग्रा बैं
41	खेताली	1076	-	उ प्रा वि				-
42	खिन्दावा	390	-	प्रा वि	-	-	-	-
43	कोनवाडा	440	-	प्रा वि		-	-	-
44	कूरण	1374	-	प्रा वि	-	-	-	
45	कारवा	476	-	प्रा वि	-	-	-	-
46	कोठार	1880	ग्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र/आ	-	डाक/टेली	-
47	कोटडा	160	-	प्रा वि		-	-	-
48	कोट बालियान	2422	ग्रा पं	मा वि/क प्रा/प्रा वि	उप केन्द्र		डाक/टेली	-
49	कोयलवाव	3753	ग्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
50	कुमटियाँ	933	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
51	लालराई	1594	-	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
52	लाटाडा	2555	ग्रा पं	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
53	सुनावा	3942	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
54	सुन्दाडा	2147	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
55	मालारी	684	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
56	मालनू	1927	ग्रा प	उ प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक	-
57	माताजी वाडा	1021	-	प्रा वि	-	-	-	-
58	मिरगेश्वर	420	ग्रा पं	प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
59	मौखमपुरा	1757	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-		-
60	मोरी	787	-	प्रा वि	-	-	-	-
61	मुण्डारा	6489	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
62	नाना	8051	ग्रा पं	मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
63	पादरला	1093	ग्रा प	प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक/टेली	-
64	पाचलवाडा	838	-	प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक	-
65	पातावा	720	-	प्रा वि	-	-	-	-
66	पैरवा	1429	ग्रा प	उ प्रा वि/प्रा वि	उप केन्द्र	-	डाक	-
67	फालना गाँव	2298	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
68	पुनाडिया	643	-	प्रा वि	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
69	रमणियाँ	226	–	प्रा वि	–	–	–	–
70	रघुनाथपुरा	1050	–	प्रा वि	–	–	–	–
71	सादलवा	92	–	प्रा वि	–	–	–	–
72	सादडा	1275	–	प्रा वि	चि	–	–	–
73	साभरवाडा	731	–	प्रा वि	–	–	–	–
74	सरखेजडा	86	–	–	–	–	–	–
75	सेला	1368	–	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
76	सेणा	921	ग्रा प	प्रा वि	उप केन्द्र	उप केन्द्र	–	–
77	सेन्दला	2406	–	प्रा वि	–	–	–	–
78	सेसली	1900	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
79	सेवाडी	7070	ग्रा प	उ मा वि./क मा वि./प्रा वि	वि आ	उप केन्द्र	डाक/टेली	मा ग्रा बै
80	शिवतलाब	1510	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	उप केन्द्र	–	डाक/टेली	–
81	सोकडा	656	–	उ प्रा वि	–	–	टेली	–
82	टीपरी	543	–	प्रा वि	–	–	–	–
83	ठडीबेरी	1210	–	प्रा वि	–	–	–	–
84	वेलार	960	–	प्रा वि	–	–	–	–
85	बाली	15446	न पा	उ मा वि./क उ मा वि./ क प्रा वि./प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं एस बी बी जे
86	फालना-खुडाला	16154	न पा	स्ना का व उ मा वि./प्रा वि	वि आ	–	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
87	रामबावडी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
88	करनवा	–	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
89	पीपला	2102	–	प्रा वि	–	–	–	–
90	नाणा स्टे	–	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
91	कुण्डाल	1529	–	प्रा वि	–	–	–	–
92	मारी स्टे	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
93	बेरडी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
94	वीरमपुरा	1244	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
95	लालपुरा	516	–	प्रा वि	–	–	–	–
96	चिमनपुरा	685	–	प्रा वि	–	–	–	–
97	छोटी दूदनी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
98	भारला डाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
99	भीलबस्ती नाणा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
100	उपरला भीमाणा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
101	मालदर की बस्ती	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
102	रेला बेदा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
103	चिगटा भाटा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
104	पाटरीया की ढाणी	–	–	–	–	–	–	–

आजादी की लडाई के महान्
सपूत वीरो का हार्दिक अभिनन्दन ।

दिलखुशभाई रूपचंदजी दोशी
सेवाडी (जि पाली)

राष्ट्र के अमर शहीदों को
कोटि कोटि वन्दन ।

सागरमल यी सोलकी, एस ई एम
(लूनावा निवासी)

मेसर्स भीकमचद भवूतमल एण्ड क
217 गुलालवाडी गोडी जी की चाल बम्बई-2
फोन 8515138/8518091/8512073

अज्ञानता गुलामी की जड है।
शिक्षा से ही राष्ट्र का विकास है।

हार्दिक अभिनन्दन के साथ
अचल चद फरसाजी सुथार
म पो सेवाडी (पाली)

ग्राम विकास के लिए समर्पित
स्वर्गीय श्री भीकमचंद जी जैन

पूर्व सरपच - ग्राम सेवाडी की
पावन स्मृति मे
- परिवार जन

"स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।"
- लोकमान्य तिलक

पालो जिले के शहीद वीरो को
कोटिश वन्दन ।

सोहनलाल लादाजी सुथार
(सेवाडी वाला)
4-17 रमेश नगर जयभवानी माता मार्ग
अधेरी(पश्चिम), बम्बई- 400 058

"विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊंचा रहे हमारा"

हार्दिक शुभकामनाओ सहित
मोहलाल बी सुराणा (सेवाडी)
मेसर्स मोहन मेटल मार्ट
ताज बिल्डिग अगस्त क्राति मार्ग,
बम्बई- 400 036 फोन 364796

पचायत समिति, सुमेरपुर

क्रम सख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय मानव	चिकित्सालय पशु	डाकघर /टेलीफोन	बैक
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आकदडा	902	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
2	अणगोर	779	–	प्रा वि	–	–	–	–
3	अनोपपुरा	1018	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
4	बाबा गाँव	1825	–	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
5	बलाना	3294	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
6	बलुपुरा	866	ग्रा प	प्रा वि	–	–	–	–
7	बलवना	3902	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	टेली	–
8	बामनेरा	776	ग्रा प	प्रा वि	सब सेन्टर	–	–	–
9	बागडा	912	–	प्रा वि	–	–	–	–
10	बाकली	4536	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा./प्रा वि	प्रा स्वा	–	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
11	बडगावडा	1265	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
12	बडली	444	–	प्रा वि	–	–	–	–
13	बसन्त	2430	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
14	बीरामी	2698	ग्रा प	उ प्रा वि./क उ प्रा वि	सब सेन्टर	–	डाक	–
15	बीटूडा	1389	–	प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
16	भाचुन्दा	1485	–	उ प्रा वि	सब सेन्टर	–	टेली	–
17	भारून्दा	3129	ग्रा प	उ प्रा वि	आ	–	डाक/टेली	–
18	बीठिया	752	–	प्रा वि	–	–	–	–
19	चाणोद	5429	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा वि./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
20	दौलपुरा	808	–	प्रा वि	–	–	–	–
21	देवतरा	848	ग्रा प	प्रा वि	–	–	डाक	–
22	धणा	1401	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
23	धनापुरा	968	–	प्रा वि	–	–	–	–
24	ढोला जागीर	1744	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा./प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
25	ढोला सासण	823	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
26	दुजाणा	4947	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा./प्रा वि	सब सेन्टर/आ	–	डाक/टेली	–
27	फतापुरा	441	–	प्रा वि	–	–	डाक	–
28	गलथनी	1223	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
29	गोगरा	1117	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	–	–
30	गुडिया	687	–	प्रा वि	–	–	डाक	–
31	हींगोला	1549	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
32	जाखोडा	1943	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	टेली	–
33	जाणा	1040	–	प्रा वि	–	–	–	–
34	कानपुरा	1471	–	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
35	केनपुरा	211	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
36	खागडी	586	–	प्रा वि	–	–	–	–

1	2	3	4	5	6	7	8	9
37	खीमाडा	1694	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
38	खिन्दाका गाँव	291	–	प्रा वि	–	–	–	–
39	खेडानाखी	1201	–	प्रा वि	–	–	–	–
40	खीवान्दी	4892	ग्रा पं	मा वि./प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	मा ग्रा बै
41	कोलीवाडा	1989	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
42	कोरटा	2428	ग्रा प	प्रा वि	–	–	डाक	–
43	कोसेलाव	6213	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बै
44	लापोद	1500	ग्रा प	उ प्रा वि	उप के चि	–	डाक/टेली	–
45	मोरडू	340	–	प्रा वि	–	–	–	–
46	नवाखेडा	805	–	प्रा वि	–	–	–	–
47	नेतरा	1224	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
48	पालडी	3493	ग्रा प	उ प्रा वि./क उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
49	नीवी	3138	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
50	पराखीया	803	–	प्रा वि	–	–	–	–
51	पावा	5104	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा वि./प्रा वि	–	–	डाक/टेली	
52	पीचावा	1524	–	उ प्रा वि	–	–	–	–
53	पीमावा	2505	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
54	पीयना	427	–	प्रा वि	–	–	–	–
55	पुराडा	2239	–	प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
56	राजपुरा	1118	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
57	रामनगर (जीवनरास)	630	–	प्रा वि	–	–	–	–
58	रोजडा	992	–	प्रा वि	–	–	–	–
59	सालोदडीया	981	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	–	–
60	साण्डेराव	7035	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
61	सिन्दरू	2190	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
62	सोनपुरा	273	–	प्रा वि	–	–	–	–
63	वेनपुरा	630	–	प्रा वि	–	–	–	–
64	सुमेरपुर	21221	न पा	उ मा वि./क उ प्रा वि /प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	एम जी बी एस बी बी जे
65	तखतगढ	12305	न पा	उ मा वि./क उ प्रा वि /प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	सह बैंक एम बी बी जे
66	रूपनगर	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
67	मसदेवा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
68	पटेलनगर	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
69	बापूनगर	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
70	पावा की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
71	पदमपुरा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
72	जाखानगर	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
73	जवाई बाँध	–	–	उ प्रा वि	–	सब सेन्टर/आ	डाक/टेली	–

"विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झण्डा ऊंचा रहे हमारा"
परसराम (पूर्व सरपच, लूनावा)

आजादी के वीर सपूतो को प्रणाम करते हैं।

मेसर्स हरिश्चद्र हनुमानप्रसाद अग्रवाल
(हनुमान ब्राड सरसो के तेल के निर्माता)
मु पो लूनावा (वाया-बाली)
टेलीफोन 21

पाली जिले के स्वतंत्रता सेनानियों का हार्दिक अभिनन्दन ।

मूलचद सी जेन (ग्राम-बेडा)

सोजन्य
सेठ श्री चन्दुलालजी पूनमचदजी
वडावाल हाल
323, गणपतराव कदम मार्ग
लोअर परेल, बम्बई- 400 013

सामती जुल्मो के विरुद्ध अनवरत सघर्ष करने वाले भारत के वीर सपूतो को कोटि कोटि वन्दन ।

देवशकर व्यास (बोया निवासी)

मैसर्स ए-वन लोनावला चिक्की
बम्बइ - पूना रोड, लोनावला- 410 401
फोन 2695

सामती शोषण के विरुद्ध किसानो और मजदूरो के साथी-सेनानी, ग्राम विकास के लिए समर्पित

श्री मीठालाल मेहता
(खीमेल निवासी)

पाली जिले के स्वतत्रता सेनानियो का अभिनन्दन करते हैं।

"वे कम धज कादा रोटी खा, मरुधर ने माथा देता,
कटका मे लडता अर लाड्या सू जुग जुग अलगा रेता।
वे धन धरा धरम पथ साचा, जुग जुग फरज बजायो,
वा सिर दे नाक बचायो।।"

ऐसे ही वीर सपूतो का वन्दन करते हैं,
अध्यक्ष, मत्री एव सदस्यगण
राजस्थान सेवा परिषद्- बम्बई
सौजन्य- हीरालाल मालवीया (बाली निवासी)
17बी, हरि निवास, पहला माला, 20 गोवालिया टेक रोड, बम्बई-36

"प्राण मित्रो भले ही गँवाना, पर न झण्डा यह नीचे झुकाना"

मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए प्राण न्योछावर करने वाले वीरो को कोटि कोटि वदन ।

प्रधान, सरपच एव सदस्यगण
पचायत समिति, सुमेरपुर (पाली)

पचायत समिति, देसूरी

क्रम सख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय मानव	पशु	डाकघर /टेलीफोन	बैंक
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	दादाई	2497	ग्रा प	मा वि/क वि/प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
2	कोटडी	1258	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
3	आना	2086	ग्रा प	उ प्रा वि	आ	-	डाक	-
4	मोरखा	1530	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
5	सिन्दरली	1522	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
6	बडोद	625	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	आ	-	-	-
7	ढालोप	1175	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	-
8	दूदापुरा	863	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
9	घाणेराव	5985	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा वि/प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
10	मादा	2580	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा वि/प्रा वि	आ	-	डाक/टेली	-
11	माणडीगढ	1260	ग्रा प	प्रा वि	आ	-	डाक	-
12	नारलाई	5748	ग्रा प	मा वि/क प्रा वि/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बै
13	देसूरी	6877	ग्रा प	उ मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बै एस बी बी जे
14	नाडोल	7529	ग्रा प	उ मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बै
15	केसूली	1388	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
16	सुमेर	549	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
17	डायलाना कला	2086	ग्रा प	उ प्रा वि/क वि	चि आ	चि	डाक/टेली	-
18	खागोल	1866	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
19	मगर तलाव	998	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	-
20	पन्नौता	1754	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
21	कोट सोलकीयान	1546	ग्रा प	उ प्रा वि	आ	-	डाक	-
22	अलसीपुरा	219	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	अणेवा	707	-	प्रा वि	-	-	-	-
24	आशापुरा	624	-	प्रा वि	-	-	-	-
25	अटाटीया	836	-	प्रा वि	-	-	-	-
26	बाडा सोल	537	-	प्रा वि	-	-	-	-
27	चक सुजापुरा	106	-	प्रा वि	-	-	-	-
28	चक वरडीया	70	-	प्रा वि	-	-	-	-
29	छोडा	1006	-	प्रा वि	आ	-	-	-
30	डायलाना खुर्द	670	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
31	ढेलरी	180	-	प्रा वि	-	-	-	-
32	गन्थी	1342	-	उ प्रा वि	-	-	टेली	-
33	डिपराची	738	-	प्रा वि	-	-	-	-

1	2	3	4		5	6	7	8	9
34	गुडा अखेराज	797		प्रा वि					
35	गुडा आसकरण	538		प्रा वि					
36	गुडा भोपसिह	690		प्रा वि					
37	गुडा देवडा मेडीयान	1240		प्रा वि					
38	गुडा सोलकीयान	274		प्रा वि					
39	गुडा दुर्जन	256		प्रा वि					
40	गुडा गोपीनाथ	348		प्रा वि					
41	गुडा जाटन	1435		उ प्रा वि					
42	गुडा जेतावता	504		प्रा वि					
43	गुडा कला	116							
44	गुडा खोबा	156							
45	गुडा किढिया	96		-					
46	गुडा मागलिया	783	-	प्रा वि					
47	गुडा पाटीया	252		प्रा वि					
48	गुडा सुथारान	616		प्रा वि					
49	जोबा	624		प्रा वि					
50	झरणा	1605		उ प्रा वि					
51	काणा	750		प्रा वि					
52	करनवा	1461		उ प्रा वि					
53	मोडपुर	763	-	प्रा वि					
54	कोलर	708		उ प्रा वि					
55	मेवीकला	743		प्रा वि					
56	लाम्पी	747		प्रा वि					
57	मुठाणा	387	-	प्रा वि					
58	नवागुडा	266		प्रा वि				-	
59	पदपुरा	432		प्रा वि					
60	पृथ्वीराज गुडा	860		उ प्रा वि				डाक	
61	राजपुरा	1241	-	प्रा वि					
62	सादडी ग्रामीण	317		प्रा वि		-			
63	सासरी	855		प्रा वि			-		
64	सारगवास	359		प्रा वि		-	-		
65	सरथूर	1171		प्रा वि					-
66	सोभावास	379		प्रा वि					
67	सोनाणा	602	-	प्रा वि					-
68	तिखी	115	-						
69	उन्दरथल	687	-	प्रा वि					-
70	विरमपुरा का	777		प्रा वि			-	-	-
71	विरमपुरा खाडियान	451		प्रा वि					

1	2	3	4	5	6	7	8	9
72	घारका	285	-	प्रा वि	-	-	-	-
73	सादडी	21 151	न पा	उ मा वि./बा मा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा वै यू को वै
74	काकतावास	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
75	ग्रामीया कोलापी	-	-	-	-	-	-	-
76	नया गाँव	505	-	प्रा वि	-	-	-	-
77	सखाणीयाँ	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
78	मेवी खुर्द	772	-	प्रा वि	-	-	-	-
79	छोटी खारची	173	-	प्रा वि	-	-	-	-
80	मेघवाना नगर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
81	प्रतापगढ (बावरियो सुपा)	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
82	रेगर कौलो देसूरी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
83	रणकपुर	-	-	प्रा वि	-	-	डाक/टली	-
84	पतापाठ	-	-	-	-	-	टेली	-
85	मुसाला महावीरजी	-	-	-	-	-	टेली	-

सामती अत्याचारो और शोषण से पीडित
पिछडे वर्ग के सघर्षशील मसीहा

स्वर्गीय श्री अमरसिहजी मीणा (ग्राम चामुन्डेरी)
की पावन-स्मृति मे नमन करते हैं, आजादी के लिए त्याग
व बलिदान करने वाले देशभक्तो का ।

समस्त मीणा परिवार, चामुडेरी (नाणा-स्टेशन)
(पाली-राजस्थान)

देशभक्त सपूतो का हार्दिक अभिनन्दन ।

देवाराम रावल ब्राह्मण
पूर्व सरपच

कोठार (बाली)
पाली - राजस्थान

"जे ग्लान परिचरई - ते मम् नाणं बुज्झई" - भगवान महावीर

मानव कल्याण के कार्यो मे समर्पित श्री राजमल एस जैन (बिसलपुर)
राष्ट्र के पुनरुद्धार मे लगे सभी सपूतो का अभिनन्दन करते है -

मैसर्स राजमल सुरेशकुमार एण्ड कम्पनी
80/84 दादीशेठ ग्यारी लेन, बम्बई-400 002

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :-

मैसर्स शिव स्टील वर्क्स

शेरछाप कृषि उपकरणा के निर्माता

ए-38 हरिश्चद्र माथुर नगर, फालना-306 116 फोन 11/126
रजि कार्यालय - 31 विजयदीप, रिंगरोड, बम्बई- 400 006
फोन 320599, 334884 टेलेक्स 11-73284

बाली के महान सपूत और स्वतत्रता सेनानी स्वर्गीय छोटमलजी सुराणा की
पावन स्मृति हमे राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा हेतु प्रेरणा देती है।

सौजन्य
मैसर्स खजाची ब्रदर्स
दादर (पश्चिम) बम्बई-28

सौजन्य
वस्तीमल मेहता
ऑल इन्डिया ट्रेडिग कम्पनी
306, कालबा देवी रोड, बम्बई-2
फोन 311842

पचायत समिति, रानी

क्रम सख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय मानव	चिकित्सालय पशु	डाकघर /टलाफोन	बैंक
1	2	3	4	5	6	7	[redacted]	9
1	बालराई	1732	ग्रा प	मा वि/क प्रा/प्रा वि	चि आ		डाक/टेली	स बै
2	बूसी	3382	ग्रा पं	मा वि/क प्रा/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बै सह बै
3	चाचौंडीं	3222	ग्रा प	मा वि/क प्रा/प्रा वि	चि		डाक/टेली	सह बै
4	चागवा	812	-	प्रा वि				
5	गुडा दुर्गादास	50						
6	गुडा खुनी	986		प्रा वि				
7	हिरनखुडी	159		प्रा वि				
8	कल्याणपुरा	200		प्रा वि				
9	कीरवा	1702	ग्रा प	उ प्रा वि	आ		डाक/टेली	सह बै
10	खटुकडा	1249		प्रा वि			टेली	
11	खौड	5838	ग्रा प	उ मा वि/क प्रा वि	चि आ		डाक/टेली	मा ग्रा बै सह बै
12	माण्डल	2616	ग्रा प	उ प्रा वि/प्रा वि			डाक/टली	सह बै
13	नादाणा भाटान	734	ग्रा पं	उ प्रा वि			डाक/टेली	
14	नवागुडा	834		प्रा वि			टेली	
15	निम्बाडा	1226	ग्रा प	उ प्रा वि	चि		डाक/टेली	
16	पादरली तुर्कान	431		प्रा वि				
17	प्रतापगढ	821		प्रा वि				
18	सेदरीया	471	ग्रा प	प्रा वि				
19	आकडावास	505	-	प्रा वि				
20	बरकाना	1698	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि		डाक/टेली	
21	बरी	235		प्रा वि				
22	भादरलाउ	1225	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ		डाक	
23	भगवानपुरा	923		प्रा वि			टेली	
24	बिजोवा	4940	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा वि	चि आ		डाक/टेली	
25	बिगरला	733		प्रा वि				
26	बोलाकुण्डा	888	-	प्रा वि			टेली	
27	बोरडी	1027		उ प्रा वि			टेली	
28	देवली	1779	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा		चि		
29	ढारिया	1262	ग्रा प	उ प्रा वि				
30	दोलजी का गुडा	42				-		
31	दूदवर	564	-	प्रा वि			-	
32	दुठारिया	1775		प्रा वि			डाक	
33	एलानी	158						

1	2	3	4	5	6	7	8	9
34	गजनीपुरा	1073	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
35	गावाडा	1428	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
36	घेनडी	2040	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
37	गुडा भीमसिह	205	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
38	गुडा गगा	131	-	-	-	-	-	
39	गुडा जैतसिह	1075	-	मा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
40	गुडा केशरसिह	441	-	प्रा वि	-	-	-	-
41	गुडा मेघसिह	98	-	-	-	-	-	-
42	गुडा मेहराम	543	-	प्रा वि	-	-	-	-
43	गुडा रूपसिह	550	-	प्रा वि	-	-	-	
44	गुडा ठाकुरजी	714	-	प्रा वि	-	-		-
45	इन्दर वाडा	1267	ग्रा प	प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
46	इन्दरा चारणान	1474	ग्रा प	प्रा वि/क प्रा वि	-	-	डाक	-
47	इन्दरा मेड	1936	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
48	जवाली	3378	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	मा ग्रा बै
49	जीवन्द कला	1896	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
50	जीवन्द खुर्द	280	-	-	-	-	-	-
51	कैरली	599	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
52	खारडा	1684	-	प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
53	खिवाडा	4749	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बै
54	किशनपुरा	2133	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
55	नादाना जोधान	390	-	प्रा वि	-	-	-	-
56	नीपल	2232	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
57	ओठवाडिया	193	-	प्रा वि	-	-	-	-
58	पादरली सिघलाय	377	-	प्रा वि	-	-	-	-
59	पीलोवनी	2276	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-
60	पुनाडिया	1455	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
61	रवाडीया बास	545	-	प्रा वि	-	-	-	-
62	रायपुरिया	1115	-	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
63	रामजी का गुडा	790	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
64	रानी कला	3699	ग्रा प	मा वि/क उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	मा ग्रा बै
65	रूगडी	719	-	प्रा वि	-	-	-	-
66	सालरिया	1305	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
67	सावलता	1058	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
68	सेपटावास	527	-	प्रा वि	-	-	-	-
69	सिवास	2097	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
70	टोकरला	925	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
71	वणदार	1327	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
72	रानी	9556	न पा	उ मा वि/क उ प्रा/प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	रा बै
73	सोमेसर	704	-	मा वि/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	-

पचायत समिति, जैतारण

क्रम सख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आगेवा	2872	ग्रा प	मा वि/क वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
2	आकोदिया	305	-	प्रा वि	-	-	-	-
3	अमरपुरा	1130	-	प्रा वि	-	-	-	जी एस एस
4	आनन्दपुरा कालू	8112	ग्रा प	उ मा वि/उ क वि/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	जी एस एस सह बैं
5	कोटडिया	1124	-	प्रा वि	-	-	-	-
6	आसरलाई	2437	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
7	बलाडा	3440	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
8	बलुपुरा	389	-	प्रा वि	-	-	-	जी एस एस
9	बलुन्दा	5776	ग्रा प	मा वि/क प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	एस जी एस जी एस एस
10	बाजाकूडी	1795	ग्रा प	उ प्रा	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
11	बाकास	375	-	प्रा वि	-	-	-	-
12	बासी चौनपुरा	780	-	-	-	-	-	-
13	बीकरलाई	922	-	प्रा वि	-	-	-	-
14	बेडकला	2242	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	जी एस एस
15	बेड खुर्द	375	-	-	-	-	-	-
16	भाखर वासनी	21	-	-	-	-	-	-
17	भाकटवास	787	-	प्रा वि	-	-	-	-
18	भूबालिया	2082	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
19	विरामपुरी	411	-	प्रा वि	-	-	-	-
20	बिरोल	1449	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	जी एस एस
21	बोगासनी	206	-	प्रा वि	-	-	-	-
22	जैतारणचक	195	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	चावण्डिया	2239	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	-	जी एस एस
24	यागला	421	-	प्रा वि	-	-	-	-
25	देवरिया	3286	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	जी एस एस
26	बेवरिया	171	-	प्रा वि	-	-	-	-
27	घनेरिया	1653	-	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
28	डिगरणा	1824	ग्रा प	उ मा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
29	फालका	2323	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस
30	गागलिया	295	-	प्रा वि	-	-	-	-
31	गरनिया	2043	ग्रा प	उ मा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	जी एस एस

1	2	3	4	5	6	7	8	9
32	थोडावर	1239	ग्रा प	प्रा वि	–	–	डाक/टेली	जी एस एस
33	ग्यास	5212	–	उ प्रा वि	–	–	–	–
34	हिंगोनिया	177	–	प्रा वि	–	–	–	–
35	हुनावासकला	612	–	प्रा वि	–	–	–	–
36	हुनावास खुर्द	414	–	प्रा वि	–	–	–	–
37	जाजनवास	901	–	उ प्रा वि	–	–	–	–
38	सनासनी	251	–	प्रा वि	–	–	–	–
39	जोधावाल	145	–	प्रा वि	–	–	–	–
40	जुज डा	1095	–	उ प्रा वि	चि आ	–	डाक	–
41	कानावास	305	–	प्रा वि	–	–	–	–
42	काणेचा राणावतान	1304	–	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
43	कावलिया	1545	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	जी एम एस
44	काटोलिया	439	–	प्रा वि	–	–	–	–
45	करम्टोर दयालपुरा	1055	–	प्रा वि	–	–	–	–
46	केकिन्दडा	1413	ग्रा प	प्रा वि	–	–	डाक/टेली	जी एस एस
47	खराडी	1657	–	प्रा वि	–	–	डाक	–
48	खारचिया	876	–	प्रा वि	–	–	–	–
49	खातीखेडा	39	–	–	–	–	–	–
50	खीन्दावास	273	–	प्रा वि	–	–	–	–
51	खेडा महाराजपुर	734	–	प्रा वि	–	–	–	–
52	खेडा मोलावास	1719	–	प्रा वि	–	–	–	–
53	खेडा नैनपुर	75	–	–	–	–	–	–
54	खिनवाडी	1176	–	प्रा वि	–	–	–	–
55	कुडकी	3329	ग्रा प	मा वि./क प्रा./प्रा वि	–	–	डाक/टेली	जी एस एस
56	लाखासनी	100	–	प्रा वि	–	–	–	–
57	लाम्बिया	4168	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	जी एस एस
58	लासनी	625	–	प्रा वि	–	–	–	–
59	लिखमणिया	163	–	प्रा वि	–	–	–	–
60	लितारिया	691	–	प्रा वि	–	–	–	–
61	लोटोती	2235	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	जी एस एस
62	लुम्बडावास	177	–	–	–	–	–	–
63	मालपुरिया	580	–	प्रा वि	–	–	–	–
64	मोहराई	1513	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	जी एस एस
65	मुण्डावा	546	–	प्रा वि	–	–	–	–
66	निम्बेडा खुर्द	680	–	प्रा वि	–	–	–	–
67	निम्बोल	2840	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
68	ओडावास	323	–	–	–	–	–	–

1	2	3	4	5	6	7	8	9
69	पालियास	604	–	प्रा वि	–	–	–	–
70	पातुस	298	–	प्रा वि	–	–	–	–
71	पाटवा	2791	–	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	जी एस एस
72	पीपलिया	1338	–	उ प्रा वि	–	–	–	–
73	पीपाडा	359	–	प्रा वि	–	–	–	–
74	फूलमाल	1152	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	जी एस एस
75	प्रतापपुरा	466	–	प्रा वि	–	–	–	–
76	पृथ्वीपुरा	814	–	उ प्रा वि	–	–	टेली	–
77	खाडियास	2060	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	जी एस एस
78	राजदाडा	1097	–	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
79	रामावास कलापूर्व	776	–	प्रा वि	–	–	डाक	–
80	रामावास खुर्द	765	–	प्रा वि	–	–	–	–
81	रानी बाल	905	–	प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	–
82	रास	7599	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
83	सागावास	1526	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	जी एस एस
84	समोरवी	597	–	प्रा वि	–	–	–	–
85	सेवरिया	2550	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	जी एस एस
86	सिनला	1033	–	प्रा वि	–	–	डाक	–
87	तालकिया	1051	–	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
88	टीवडी	324	–	उ प्रा वि	–	–	–	–
89	ठाकरवाल	719	–	प्रा वि	–	–	–	–
90	तिगरा	129	–	प्रा वि	–	–	–	–
91	टूकडा	1099	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक	जी एस एस
92	जैतारण	14532	न पा	उ मा वि./क उ वि./प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
93	नीमाज	14653	न पा	उ मा वि./क उ वि./प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
94	हनुमानजी की बावडी	195	–	प्रा वि	–	–	–	–
95	पटेलो की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
96	मालियों की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
97	काकडिया की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
98	हुगली की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
99	कोटडिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
100	चेनपुरा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
101	गुडा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
102	दयालपुरा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
103	पाटन	–	–	प्रा वि	–	–	–	–

1	2	3	4	5	6	7	8	9
104	भीमगढ	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
105	बगतपुरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
106	कान्याखेडी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
107	रावतों की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
108	ओडावास खर्द	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
109	बकतावर पुरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
110	बरसी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
111	गुजरों की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
112	लिलड़िया	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
113	भोखडा बेरा कालू	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
114	सम्कृत खेडा शम	-	-	प्रा वि		-	-	-
115	हालियों की बाड	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
116	ढोडावोरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
117	फीडर स्कूल बलून्दा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
118	हेम डाई	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
119	गणेशपुरा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
120	राइंकों की ढाणी	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
121	निम्बेडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
122	विजयगढ	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
123	सस्कृत खेडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-

"तुम्हारा नाम अमर है दिलो की दुनिया मे, तुम्हारे नाम को दुनिया मिटा नहीं सकती,
दीये जो जलाये हैं तुमने खून से अपने, उन्हे जमाने की आधी बुझा नही सकती।"

निम्बाज के वीर सेनानियो का हार्दिक अभिनन्दन ।

अध्यक्ष एव सदस्यगण

नगरपालिका, निम्बाज (पाली)

मारवाड लोक परिषद् ने उत्तरदायी शासन का सर्वप्रथम शख बजाया ग्राम खोड मे।
स्वतन्त्रता के लिए सकल्प बद्ध सेनानियो का शत् शत् नमन ।

सौजन्य

मोहनलाल मेहता (निवासी खोड)

मैसर्स श्रीपाल बिल्डर्स

51/53, विठ्ठलवाडी बम्बई-400 002 टेलीफोन 310078/255143

पचायत समिति, मारवाड जक्शन

क्रम सख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाकघर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	अरवावास	612	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
2	आगदोष	974	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
3	आसन डाकनिया	148	–	–	–	–	–	–
4	आसन जोधवाल	317	–	प्रा वि	–	–	–	–
5	आसन मेलडा	106	–	प्रा वि	–	–	–	–
6	आऊवा	4022	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	एम जी बी बी एस एस
7	बाडिया	850	–	प्रा वि	–	–	टेली	सह बै
8	बाडसा	1673	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
9	बाली	776	–	प्रा वि	–	–	–	–
10	बानियामाली	423	–	प्रा वि	–	–	–	–
11	बासोर	741	–	प्रा वि	–	–	–	–
12	बाता	3812	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	–	डाक/टेला	जी एस एस
13	बडी	778	–	प्रा वि	–	–	टेली	
14	बासनी	959	ग्रा प	प्रा वि	–	–	डाक	–
15	भगोडा	1265	ग्रा प	प्रा वि	–	–	टेली	जी एस एस
16	भीवली	449	–	प्रा वि	–	–	–	–
17	भोजावास	425	–	प्रा वि	–	–	–	–
18	भीमालिया	1963	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	जी एस एस
19	बिठोडा कला	2209	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
20	बिठोडा खुर्द	398	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
21	बोगला	535	–	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
22	बोपाटी	2572	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	–	चि	डाक/टेली	जी एस एस
23	बोटीमादा	1250	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
24	बोरनडी	765	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक	ग्रा स स
25	चौकडिया	1024	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक	ग्रा स स
26	चवाडिया	810	ग्रा प	प्रा वि	–	–	डाक/टेली	ग्रा स स
27	चेलावास	1654	–	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
28	चिरपटिया	2188	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
29	दादिया	725	–	प्रा वि	–	–	–	–
30	देवली	2942	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	मा ग्रा बै ग्रा स सं
31	ढाल	568	–	प्रा वि	–	–	–	–
32	धामली	2504	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	–	–	डाक/टेली	ग्रा स स

1	2	3	4	5	6	7	8	9
33	धनला	4080	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	-	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स सं
34	ढेलपुरा	343	-	प्रा वि	-	-	-	-
35	धुघला	2645	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
36	डिगोर	479	-	प्रा वि	-	-	-	-
37	दुदोड	3167	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	एम जी बी जी एस एस
38	गाधाना	1806	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
39	गोदावास	442	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
40	गोपावास	274	-	प्रा वि	-	-	-	-
41	गुडागडी	873	-	प्रा वि	-	-	-	-
42	गुडा अजवा	467	-	प्रा वि	-	-	-	-
43	गुडा माया	435	-	प्रा वि	-	-	-	-
44	गुडा पोपत	269	-	प्रा वि	-	-	-	-
45	गुडा धमावत	335	-	प्रा वि	-	-	-	-
46	गुडा दुर्जन	390	-	प्रा वि	-	-	-	-
47	गुडा गागा	258	-	प्रा वि	-	-	-	-
48	गुडा हिमता	184	-	-	-	-	-	-
49	गुडा हिन्दू	163	-	-	-	-	-	-
50	गुडा केसरसिंह	1863	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
51	गुडा मेहकरण	284	-	प्रा वि	-	-	-	-
52	गुडानवा	263	-	प्रा वि	-	-	-	-
53	गुडा रामसिंह	1328	ग्रा पं	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स सं
54	गुडा सूरसिंह	1022	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
55	हलावट	383	-	-	-	-	-	-
56	हमीर वास	471	-	प्रा वि	-	-	-	-
57	हेमलियावास कला	563	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
58	हेमलियावास खुर्द	1369	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
59	हिंगोला कला	606	-	प्रा वि	-	-	-	-
60	हिगोला खुर्द	528	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	ग्रा स स
61	ईसाली	1893	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स सं
62	जाडन जागीर	391	-	-	-	-	-	-
63	जाडन खालसा	2069	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
64	जैतपुरा	699	-	प्रा वि	-	-	टेली	मा ग्रा बैं
65	जाणुदा	1419	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
66	जोगडावास	855	-	प्रा वि	-	-	-	-
67	जोजावर	7150	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	ग्रा स म/का बैं

वन्दे मातरम्

1	2	3	4	5	6	7	8	9
68	जोडदुदोड	609	–	प्रा वि	–	–	–	–
69	कटालिया	6649	ग्रा प	मा वि./उ क प्रा वि	–	–	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
70	कराडी	1549	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	–
71	करमाल	515	–	प्रा वि	–	–	–	–
72	कारोलिया	525	–	प्रा वि	–	–	–	–
73	कारवाडा	497	–	–	–	–	–	–
74	खारची	4028	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा स स
75	खेडा कल्याणपुरा	134	–	–	–	–	–	–
76	कुशालपुरा	262	–	–	–	–	–	–
77	लीलावास	503	–	प्रा वि	–	–	–	–
78	मलसा/बावडी	2753	ग्रा प	प्रा वि	–	–	–	–
79	माडा	3411	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
80	मारवाड जक्शन	9637	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	एम जी बी
81	मेलाप	606	–	प्रा वि	–	–	–	–
82	मेलावास	1102	–	प्रा वि	–	–	–	–
83	मुसालिया	2270	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
84	नरसिह पुरा	760	–	उ प्रा वि	–	–	–	–
85	नया गाँव	470	–	प्रा वि	–	–	–	–
86	निमली माडा	2817	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
87	पाचेटिया	1640	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	–	डाक	–
88	फूलिया	608	–	प्रा वि	–	–	–	–
89	फुलाद	1765	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	–	–	डाक/टेली	ग्रा स स
90	रडावास	1719	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
91	राडकालरा	839	–	प्रा वि	–	–	–	–
92	राजकीयावास कला	636	–	प्रा वि	–	–	–	–
93	राजकीयावास खुर्द	353	–	–	–	–	–	–
94	राजोला खुर्द	925	–	प्रा वि	–	–	–	–
95	राणावास	4652	ग्रा प	उ मा वि./क उ प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
96	ससानिया	680	–	प्रा वि	–	–	–	–
97	खेडिया	276	–	प्रा वि	–	–	–	–
98	खाटडी	1848	–	प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
99	सारण	2923	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	–	–	डाक/टेली	ग्रा स स
100	सबसड	3879	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक/टेली	ग्रा स स
101	सीचियावास	657	–	प्रा वि	–	–	–	–
102	सिरियारी	3766	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	–	–	डाक/टेली	मा ग्रा बै ग्रा स सं

1	2	3	4	5	6	7	8	9
103	सेवाज	1916	ग्रा प	उ प्रा./क प्रा वि	–	–	डाक/टेली	–
104	शेखावास	1649	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक	–
105	सिघाना	941	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
106	सिनला	2026	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	ग्रा स स
107	सोडों की ढाणी	43	–	–	–	–	–	–
108	सुगालिया	301	–	प्रा वि	–	–	–	–
109	ठाकरवासा	1186	–	प्रा वि	–	–	–	–
110	तालका	234	–	प्रा वि	–	–	–	–
111	उपरली निम्बली	1007	–	प्रा वि	–	–	–	–
112	गुडा मोकम सिह	890	–	प्रा वि	–	–	–	–
113	गुडा प्रेमसिह	624	–	प्रा वि	–	–	–	–
114	राईकों की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
115	झोपडिया बाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
116	गोलाई की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
117	मुरडिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
118	बाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
119	झिझारी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
120	माँझीसा का खेडा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
121	गुडा रघुनाथसिह	482	–	प्रा वि	–	–	–	–
122	कोलपुरा धनला	–	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
123	मुकनपुरा	32	–	प्रा वि	–	–	–	–
124	गुगदुर्गा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
125	राणा नाडी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
126	अजनी की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
127	निचली निम्बली	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
128	पुराना गाँव फुलाद	511	–	प्रा वि	–	–	–	–
129	वाणिया माली	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
130	शिव सागर	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
131	आऊवा की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
132	काटू	477	–	प्रा वि	–	–	–	–
133	भगवान पुरा	789	–	प्रा वि	–	–	–	–
134	कोलपुरा थिखरिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
135	घारेश्वर	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
136	खेडिया खुर्द	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
137	पारडी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
138	समदडा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
139	बेश बिजोडिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
140	वेश जालिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–

1	2	3	4	5	6	7	8	9
141	सूरावास	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
142	बेरा डालिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
143	आसण आऊवा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
144	गुडाकला खावडा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
145	कटालिया सरकमालिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
146	ददोडा बेरा बजूडिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
147	खोडिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
148	फूलया बेरा जालिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
149	डालियों की ढाणी मूसालिया	–	–	प्रा वि	–	–	–	–

'हर दिल मे जिन्दा रहते है
आजादी पर मरने वाले'

आजादी के शहीदों को शत् शत् वन्दन ।

सौजन्य

मैसर्स भैरव टेक्सटाइल्स

औद्योगिक क्षेत्र प्रथम
पाली (राजस्थान)

''अज्ञानता, गरीबी और बेकारी से हमे लडना है,
क्योंकि ये ही स्वतत्रता की दुशमन हैं।
आइये, आजादी के वीर सेनानियो की तरह
हम यह लडाई भी जीतें।''

स्वागत है। अभिनन्दन है।

प्रधान, सरपच एव मदस्यगण

पचायत समिति, रानी (पाली)

फूटरमल के जैन, (देवली - पाबूजी) का
आजादी के वीरो को शत् शत् वन्दन ।

सौजन्य

पाली हार्डवेयर एण्ड इलेक्ट्रिक स्टोर्स

7, सिल्वर क्राफ्ट पाली मालरोड बान्द्रा बम्बई- 400 050
टेलीफोन 540 655

''झण्डा ऊँचा रहे हमारा,
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा''
घाणेराव के स्वातन्त्र्य वीरो की
पावन-स्मृति को लाखो वंदन ।

मैसर्स सिन्थेटिक्स सप्लायर्स

107 ताँबा काँटा बम्बई-2
टेलीफोन 326132/337121
रायचद पारेख (घाणेराव)

स्वतत्रता सेनानियो के बलिदानो से प्राप्त आजादी को सुरक्षित रखने हेतु
पाली जिले के सर्वागीण विकास के लिए कृत सकल्प

दी पाली सेन्ट्रल को ऑपरेटिव बेक लि पाली

प्रधान कार्यालय - पाली (मारवाड)

रघुवीर सिह भाटी
प्रबध सचालक

भवानी सिह
अध्यक्ष

पचायत समिति, पाली

क्रम सख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय मानव	चिकित्सालय पशु	डाकघर /टेलीफोन	बंक
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आईचिया	768	–	प्रा वि	–	–	–	–
2	आकडावास कला व खुर्द	616	–	प्रा वि	–	–	–	स बैं
3	आकेती	544	–	प्रा वि	–	–	–	–
4	बाला	1088	–	प्रा वि	चि	–	–	–
5	बालेलाव	592	–	प्रा वि	–	–	–	सह बैं
6	बाम्बोलाई	242	–	प्रा वि	–	–	–	–
7	वाणियावास	471	ग्रा प	प्रा वि	–	–	डाक	–
8	मागेसर	973	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	–	सह बैं
9	भालेलाव	665	–	प्रा वि	–	–	–	सह बै
10	भाँवरी	2324	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	मा ग्रा बैं सह बैं
11	भावनगर	287	–	प्रा वि	–	–	–	–
12	बुमादडा	640	–	प्रा वि	–	–	–	–
13	बुधवाडा	520	–	प्रा वि	–	–	–	–
14	डरी	1166	ग्रा प	क प्रा वि./उ प्रा	–	–	डाक	सह बं
15	दयालपुरा	1536	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	–	डाक/टेली	सह बैं
16	डीगाई	1828	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	–	डाक/टेली	सह बैं
17	डेन्डा	2299	ग्रा प	उ प्रा वि	चि	–	डाक/टेली	मा ग्रा बैं सह बैं
18	गिरादडा जागीर	1461	ग्रा प	उ प्रा वि	–	–	डाक	सह बैं
19	गिरदडा खानेला	–	–	उ प्रा वि	–	–	टेली	–
20	गोरावास	1042	–	प्रा वि	–	–	–	–
21	गुन्दोरा	4154	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेला	सह बैं
22	गुरडाई	1296	–	उ प्रा वि	चि आ	–	डाक/टला	–
23	गुज बिच्छु	511	–	प्रा वि	–	–	–	–
24	गुडा ऐंदला	4074	ग्रा प	मा वि./क उ प्रा वि	चि आ	–	डाक/टेली	मा ग्रा बैं सह बैं
25	गुडा गिरधारी	30	–	–	–	–	–	–
26	गुडानाखा	493	–	प्रा वि	–	–	–	–
27	गुडा प्रतापसिह	362	–	प्रा वि	–	–	–	–
28	गुडा सोनगिरा	226	–	प्रा वि	–	–	–	–
29	हेमावास	2321	ग्रा प	उ प्रा वि./प्रा क वि	–	–	डाक	सह बैं
30	जेतपुरा	1023	–	प्रा वि	–	–	–	–
31	जवडिया	1195	–	प्रा वि	–	–	–	–

1	2	3	4	5	6	7	8	9
68	सुन्देलाव	329	–	प्रा वि	–	–	–	–
69	टेवाली कला	1102	ग्रा प	क प्रा वि	–	–	–	–
70	टेपाली खुर्द	1288	ग्रा प	उ प्रा वि./क वि	चि आ	–	डाक	सह बैं
71	ठाकुरला	1200	ग्रा प	उ प्रा वि./प्रा क वि	–	–	टेली	–
72	उतवन	879	–	प्रा वि	–	–	–	–
73	पाली नगर	136842	नगर-परिषद्	स्ना म वि./सी हा से वि	चि मु चि./ ई एस आई	चि	मु डाक मु टेली	एस बी बी जे रा बैं बैं आफ ई सह बैं
74	हाथलाई	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
75	तोडावास	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
76	केनपुरा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
77	बठेरावास	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
78	शिवपुरा	–	–	प्रा वि	–	–	टेली	–
79	रामपुरा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
80	इन्द्रानगर मठ	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
81	निम्बाडा	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
82	आईजी की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
83	बरूदो की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
84	घून्दी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
85	भादो की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
86	चवरो जी की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
87	राहजी की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
88	एन्दलावास	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
89	रामपुरा ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
90	बाला की ढाणी	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
91	गिरवर	–	–	प्रा वि	–	–	–	–
92	सुभाषनगर सोडावास	–	–	प्रा वि	–	–	–	–

पचायत समिति, रोहट

क्रम संख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसंख्या 1991	ग्राम पंचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय		डाक घर /टेलीफोन	बैंक
					मानव	पशु		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आरण	442		प्रा वि				
2	अरटिया	1234		प्रा वि			टेली	
3	बागदियां	1264		प्रा वि				
4	बन्डाई	582	-	प्रा वि				
5	बस्सी	446		प्रा वि				
6	बयद	1470	ग्रा पं	उ प्रा वि	चि आ		डाक/टेली	सह बैं
7	बीटू	1581	ग्रा पं	उ प्रा वि			डाक	सह बैं
8	भखरी कला	1405	ग्रा पं	प्रा वि			टेली	सह बैं
9	बीजा	1223		प्रा वि				सह बैं
10	भीण्डर	353	-	प्रा वि				
11	भूरसायनी	317	-	प्रा वि	-	-		
12	चोटलीव	1005	-	प्रा वि				
13	चेन्डा	1841	ग्रा पं	उ प्रा वि/क प्रा	चि	-	डाक/टेली	सह बैं
14	चोटीला	1966	ग्रा पं	प्रा वि	-	-	डाक	सह बैं
15	दानासनी	306	-	प्रा वि		-	-	-
16	देवाण	729	-	प्रा वि	-	-	-	
17	डाबर कला व खुर्द	1514	ग्रा पं	मा वि/प्रा वि	चि आ		डाक/टेली	सह बैं
18	धर्मधारी	792	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
19	धिगाना	620	-	उ प्रा वि	-	-		-
20	धोलेरीया जागीर	694	-	प्रा वि	-	-	-	-
21	धोलेरीया शासन	688	-	प्रा वि	-	-	-	-
22	धुधली	387	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	दिवान्दी	1325	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	-	-	डाक	सह बैं
24	दुदीया	829	-	प्रा वि/क प्रा वि	-	-	डाक	-
25	दूदली	738	-	प्रा वि	-	-	-	-
26	गठवाडा	1625	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा वि	-	-	डाक	सह बैं
27	गरवालिया	494	-	प्रा वि	-	-	-	-
28	गैलावास	411	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा	-	-	डाक	सह बैं
29	हजाणा	236	-	प्रा वि	-	-	-	-
30	हीरावास	157	-	प्रा वि	-	-	-	-

1	2	3	4	5	6	7	8	9
31	जेलपुरा	1892	-	मा वि./प्रा.वि	-	-	डाक	-
32	झोवडा	2121	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	मा ग्रा ब सह बे
33	कलाली	1125	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	सह ब
34	कानावास	223	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
35	खाण्डा	977	ग्रा प	उ प्रा.वि	-	-	-	सह ब
36	खारडा	2037	-	प्रा वि	-	-	-	
37	खेड़ा खुर्द	303	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
38	गाण्डावास	886	-	प्रा वि	-	-	-	
39	खुराणी	1948	-	प्रा.वि	-	-	-	सह ब
40	कुलथाना	992	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	सह ब
41	कुण्डली चारनोन	141	-	प्रा वि	-	-	-	
42	लालकी	1068	-	प्रा वि	-	-		
43	लाम्वदा	423	-	प्रा.वि	-	-	-	
44	भाडमुरीया	1758	-	प्रा वि	-	-	-	
45	मालवा	421	-	प्रा.वि	-	-	-	-
46	माडावास	2731	ग्रा प	मा वि./प्रा.वि	वि	वि	डाक/टेली	मा ग्रा ब सह ब
47	मडली दरजोयान	1040	-	प्रा वि	-	-	-	
48	मुकनपुरा	472	-	प्रा वि	-	-	-	
49	मोटीया	524	-	प्रा वि	-	-	-	
50	मुरदीया	629	-	प्रा.वि	-	-	-	-
51	निम्बली बामणाट	473	-	प्रा वि	-	-	-	-
52	निम्बली पटेलान	631	-	प्रा वि	-	-	-	
53	नेहडा	410	-	प्रा.वि	-	-	-	
54	पचपदील	1057	-	उ प्रा.वि	-	-	-	
55	पाती	764	-	प्रा.वि	-	-	-	
56	फैकाणीया	580	-	प्रा.वि	-	-	-	
57	पुरखारा	291	-	प्रा.वि	-	-	-	
58	राखाना	357	-	प्रा.वि	-	-	-	
59	राणा	2028	-	उ प्रा.वि./क प्रा.वि	-	-	-	
60	रोहट	3414	ग्रा प	उ मा वि./क उ.प्रा.वि./प्रा	वि	वि	डाक टेली	[illegible]
61	माजी	472	-	प्रा.वि	-	-		

1	2	3	4	5	6	7	8	9
62	सखलाता कला	744		प्रा वि				-
63	सखलाता खुर्द	909	-	उ प्रा वि				-
64	सोदीया	626		उ प्रा वि				-
65	सिणगारी	805		प्रा वि				-
66	सिराणा	866		प्रा वि				
67	सोनाई लाखा	1706		प्रा वि				-
68	सुकरलाई	415		प्रा वि				
69	तिगरा उर्फ रामपुरा	873		प्रा वि				
70	उमरली	668		प्रा वि				
71	इन्दरा ढदरा	576		प्रा वि				
72	डूगरपुर			प्रा वि				
73	विश्नोई की ढाणी			प्रा वि				
74	विपलिया की ढाणी			प्रा वि				
75	दादोया	-		प्रा वि				
76	घवराम की ढाणी			प्रा वि				
77	केरला	-		प्रा वि				
78	काला पीपल ढाणी		-	प्रा वि				
79	सरदारसमद फार्म			प्रा वि				-
80	सरदारपुरा की ढाणी			प्रा वि				-
81	सारों की ढाणी	-		प्रा वि				
82	भीलों की ढाणा	-	-	प्रा वि				-
83	पार्टा की ढाणी	-	-	उ प्रा वि			-	-
84	इन्द्रोंका की ढाणी	-	-					

पंचायत समिति, रायपुर

क्रम सख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय मानव	चिकित्सालय पशु	डाकघर /टेलीफोन	बैंक
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आकेली	855	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
2	अमरगढ	101	-	-	-	-	-	-
3	अमरपुरा	541	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
4	आसन जिलेलाव	489	-	-	-	-	-	-
5	आसन विलारिया	326	-	-	-	-	-	-
6	बाबरा	8401	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं सह बैं
7	बगियाडा	1058	-	प्रा वि	-	-	डाक/टेली	-
8	बगडी	1846	-	प्रा वि	-	-	-	बैं
9	बासीया	2457	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
10	बर	4088	ग्रा प	मा वि./क प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
11	बासनी दूध वाडिवा	370	-	प्रा वि	चि आ	-	टेली	-
12	बासनी कवीया	611	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
13	बीर बासनी	-	-	-	-	-	-	-
14	बीसावास कला	16	-	-	-	-	-	-
15	बीसावास खुर्द	-	-	-	-	-	-	-
16	बेलपना	375	-	प्रा वि	-	-	-	-
17	मीचरडी	853	-	प्रा वि	-	-	-	-
18	बिरारिया कला	2149	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
19	बिरारिया खुर्द	3322	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	भा स बैं
20	बोगासनी	66	-	-	-	-	-	-
21	बूठीवास	1598	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
22	चैनपुरा	278	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	दीपावास	853	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
24	चाँग	3072	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	मा ग्रा बैं ग्रा स सं
25	चावन्डिया कला	165	-	-	-	-	टेली	-
26	चावंडिया खुर्द	538	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
27	चिताड	3210	ग्रा पं	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
28	दीपावास चक	94	-	-	-	-	-	-
29	देवली कला	5034	ग्रा प	मा वि./क प्रा./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	ग्रा मा बैं ग्रा स सं

1	2	3	4	5	6	7	8	9
30	दवली खुर्द	176	-	-	-	-	-	-
31	धोलिया	613	-	प्रा वि	-	-	-	-
32	धूलकोट	1168	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
33	गिरी	4598	ग्रा प	मा वि/क प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
34	फताखेड़ा	296	-	प्रा वि	-	-	-	-
35	गुडिया	980	-	प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
36	हाजोवास	1290	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
37	जमालपुरा	431	-	प्रा वि	-	-	-	-
38	जैतपुरा	404	-	प्रा वि	-	-	-	-
39	झूला	3359	ग्रा प	मा वि/क प्रा/प्रा वि	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
40	कालव कला	1466	-	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	-
41	कालब खुर्द	929	-	प्रा वि	-	-	-	-
42	काला कोट	373	-	प्रा वि	-	-	-	-
43	कलालियाँ	2067	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	-	-
44	काणेया खुर्द	301	-	प्रा वि	-	-	-	-
45	कानपुरा	338	-	प्रा वि	-		-	-
46	कानुजा	2566	ग्रा प	उ प्रा वि/क प्रा	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
47	करमावास	1586		उ प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
48	केसरपुरा	593	-	प्रा वि	-	-	-	-
49	खेड़ा सागनोतात	-	-	-	-	-	-	-
50	कोट कोराणा	1826	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	-	-	-	ग्रा स स
51	कोल्डी	-	-	-	-	-	-	-
52	कुशतीया	169	-	-	-	-	-	-
53	कुशालपुरा	7485	ग्रा प	मा वि/प्रा वि	चि	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
54	लाखीना पन्ना	-	-	-	-	-	-	ग्रा स स
55	लालपुरा	235	-	प्रा वि	-	-	-	-
56	लराचा	1268	-	प्रा वि	-	-	-	-
57	लाखामाली	44	-	-	-	-	-	-
58	लीलाम्बा	2033	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	ग्रा स स
59	माऊईवाली	253	-	-	-	-	-	-
60	माल्नी	466	-	प्रा वि	-	-	-	-
61	मानपुरा	489	-	-	-	-	-	-
62	मेगदड़ा	765	-	-	-	-	-	-
63	मेसीया	1188	-	उ प्रा	-	-	डाक	-
64	मोहरा कला	1491	ग्रा प	उ प्रा वि/प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स

1	2	3	4	5	6	7	8	9
65	मोहरा खुर्द	490	-	प्रा वि	-	-	-	-
66	नानणा	2260	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
67	नोख	477	-	प्रा वि	-	-	टेली	-
68	निम्बेडा कला	2945	ग्रा प	उ प्रा वि	आ	-	डाक/टेली	ग्रा स स
69	पचानपुरा	1171	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	ग्रा स स
70	पीपलिया	4275	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	ग्रा स स सह बैं
71	रामावास	653	-	प्रा वि	-	-	डाक	
72	रामगढ	395	-	प्रा वि	-	-	-	
73	रामगढ सेडोताल	906	-	-	-	-	-	-
74	रामपुरा कला	1385	ग्रा प	उ प्रा वि		-	डाक/टेली	-
75	रावणिया	502	-	प्रा वि	-	-	-	-
76	रेलडा	1075	ग्रा प	उ प्रा वि	-	-	डाक	-
77	सबलपुरा	745	ग्रा प	प्रा वि	-	-	डाक	-
78	सबलपुरा	364	-	प्रा वि	-		-	-
79	सराधना	410	-	प्रा वि	-	-		-
80	सींगला	1136	-	उ प्रा वि	-	-	-	-
81	सीरमा	877	-	प्रा वि	-	-	-	-
82	सैंदडा	1491	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	-	डाक/टेला	मा ग्रा बैं ग्रा स स
83	शाहपुरा	50	-	-	-	-	-	-
84	शेरगढ	63	-	-	-	-	-	-
85	सोडपुरा	1018	-	उ प्रा वि./क प्रा वि	-	-	-	-
86	सुमेल	6788	ग्रा प	उ प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
87	रायपुर	12582	न पा	उ मा वि./उ प्रा./क प्रा	चि	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं./ग्रा स स./रा बैं
88	रामसागर	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
89	घोली घोडा	490	-	प्रा वि	-	-	-	-
90	खेडा मामावास	755	-	प्रा वि	-	-	-	-
91	नाहरपुरा गिरी	720	-	प्रा वि	-	-	-	-
92	कुण्डाल	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
93	झाडली	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
94	झाला की चौकी	375	-	प्रा वि	-	-	-	-
95	भैंरू का नाका	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
96	काया भील	297	-	प्रा वि	-	-	-	-
97	भीतडा	-	-	प्रा वि	-	-	-	-
98	सादों की प्याऊ	-	-	प्रा वि	-	-	-	-

पचायत समिति, सोजत

क्रम सख्या	नाम ग्राम/नगर	जनसख्या 1991	ग्राम पचा या न पा	विद्यालय	चिकित्सालय मानव	चिकित्सालय पशु	डाकघर /टलीफोन	बैक
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	अबकाई की ढाणा	518	-	प्रा वि	-	-	-	-
2	अजीतपुरा	441	-	प्रा वि	-	-	-	-
3	आलावास	918	-	प्रा वि	-	-	-	-
4	अरबडा	4740	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	-	-	डाक/टेली	ग्रा स स
5	बागावास	1188	-	प्रा वि	-	-	-	-
6	बगडी नगर	9494	ग्रा प	उ मा वि./एस टी सी/क प्रा	चि आ	चि	डाक/टेली	मा ग्रा बैं ग्रा स स
7	बरियाला	225	-	प्रा वि	-	-	-	-
8	बासणा	1762	ग्रा प	प्रा वि	-	-	-	-
9	बासणी अनन्त	99	-	-	-	-	-	-
10	बासणी भदावतान	455	-	प्रा वि	-	-	डाक	-
11	बासणी जोधराज	677	-	प्रा वि	-	-	-	-
12	बासणी मूथा	239	-	प्रा वि	-	-	-	-
13	बासणी नरठींग	567	-	-	-	-	-	-
14	बासणी सुशयता	81	-	-	-	-	-	-
15	बासणी तिंपरडियान	176	-	प्रा वि	-	-	-	-
16	बीलावास	3370	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि आ	-	डाक/टेली	मा ग्रा बैं
17	भसाणा	1454	ग्रा प	प्रा वि	चि	-	डाक/टली	ग्रा स स
18	माणिया	730	-	प्रा वि	-	-	-	-
19	बिजलियावास	499	-	प्रा वि	-	-	-	-
20	बीजपुर	694	-	प्रा वि	-	-	-	-
21	बिरावास	249	-	-	-	-	-	-
22	बोपल	875	-	प्रा वि	-	-	-	-
23	बुटेलाल	785	-	प्रा वि	-	-	-	-
24	चामडियाक	468	-	प्रा वि	-	-	-	-
25	चन्दासनी	361	-	प्रा वि	-	-	-	-
26	चडावल	4796	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	चि	चि	डाक/टेली	ग्रा स स
27	चाडवास	1324	ग्रा प	मा वि./प्रा वि	-	-	डाक	ग्रा स स
28	छीतरिया	797	-	प्रा वि	-	-	-	-
29	चोपडा	1206	ग्रा पं	उ प्रा वि	चि	-	डाक	ग्रा स सं
30	चुन्दलाई	686	-	प्रा वि./क प्रा	-	-	-	-
31	दादी	323	-	प्रा वि	-	-	-	-
32	देवली हुल्ला	1036	-	उ प्रा वि	-	-	-	ग्रा स सं

"आजादी प्राप्त करना देशभक्तो का काम था तो आजादी की सुरक्षा हेतु ग्राम स्वावलम्बन और ग्राम स्वराज्य का कार्य करना कम देशभक्ति नही"
सभी कर्मवीरो को शत् शत् वन्दन करते हैं ।

अध्यक्ष एवं सदस्यगण
सघन क्षेत्र योजना समिति, खीमेल
पो विद्यावाडी (रानी) जिला- पाली

आजादी के सिपाही और अब
ग्राम विकास के कर्णधार

श्री मीठालाल आर जेन (कोसेलाव)
अध्यक्ष, जिला परिषद्, भाईंदर (जिला थाणा- महाराष्ट्र)

का

देश की आजादी के लिए बलिदान देने वालो का शत् शत् वन्दन ।

सादडी और गोडवाड़ के
वीर सेनानियो का अभिनन्दन ।

सोजन्य
मेसर्स नथमल निहालचंद
700, गोविन्द चौक, मूलजी जेठा मार्केट
बम्बई-2

विनीत कालीदास राठोड (सादड़ी)

'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'
- लोकमान्य तिलक की इस अमर वाणी पर बलिदान देने वालो का हार्दिक अभिनन्दन ।

मेसर्स रुपम ट्रेडर्स
10 विकास बिल्डिग सायन ट्राम्बे रोड चेम्बूर बम्बई-71
रायचद जी शाह जगदीश शाह उमेश कुमार शाह किशोर शाह
(जवाली निवासी)
टेली 526515/526508/525769

खीमेल ग्राम के परम राष्ट्र भक्त व स्वतत्रता सेनानी
स्वर्गीय प्रेमराज जी मेहता की पुण्य स्मृति मे

- सौजन्य -
चुन्नीलाल मेहता, नोरतन मेहता
मेसर्स एन सी मेहता एण्ड कम्पनी
रानी स्टेशन (पाली)
टेलीफोन 2040

'इकलाब जिन्दाबाद' उद्घोष के साथ हँसते हॅसते
फासी के फदे से लटकने वाले वीरो को शतश नमन।

मै वी शातिलाल एण्ड कम्पनी
48, मिर्जा स्ट्रीट, बम्बई-3
सौजन्य - विमलचद पन्नालाल राठौर (बिजोवा वाले)
105 धनजी स्ट्रीट, बम्बई-3
टेलीफोन 320498

सादडी के स्वतत्रता सघर्ष के वीर सपूतो को कोटि कोटि वन्दन ।

राष्ट्र की आजादी के लिए सर्वस्व समर्पित करने वालो का हार्दिक अभिनन्दन ।

आजादी के शहीदो का शत्-शत् वन्दन।

महान् स्वतत्रता सेनानी, साहित्यकार, कवि ओर समाज सुधारक स्वर्गीय श्री धीरजमल जी वच्छावत की पुण्य स्मृति मे

स्वतत्रता सेनानियो का हार्दिक अभिनदन ।

"शहीदो के बलिदान से मिली है महगी आजादी, अब सर्वागीण विकास से करनी हे उसकी सुरक्षा"

पाली जिले की प्रशासनिक व्यवस्था

उपखण्ड	चार	बाली, पाली, सोजत, जेतारण
तहसील	सात	जैतारण, रायपुर, सोजत, पाली, मारवाड-जक्शन, देसूरी, बाली
पचायत समिति	दस	बाली, पाली, सोजत, रानी, देसूरी, खारची (मारवाड जक्शन), रायपुर, जैतारण, रोहट, सुमेरपुर,
ग्राम पचायते		दो सो निन्नानवे
नगर पालिकाए	नो	बाली, सुमेरपुर, फालना, रानी, सोजत, जेतारण, नीमाज, सादडी, तखतगढ
नगर परिषद्	एक	पाली
बडे कस्बे	तीन	रायपुर, सोजत रोड, मारवाड-जक्शन

जिले का मानचित्र →